धर्म्म पुस्तक

अर्थात्

पुराने नियम का पहिला भाग।

इब्री भाषा से हिंदुई में उतारा गया।
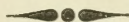
THE

HOLY BIBLE

IN THE

HINDI LANGUAGE.

Translated from the Hebrew.

VOL. I.
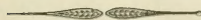
ALLAHABAD:
PRINTED AT THE PRESBYTERIAN MISSION PRESS.
REV. L. G. HAY, *Superintendent.*
1851.

Prof. J. A. Alexander

with affect.te regards of

an old pupil

J. C. Lowrie

Allahabad, North India
Nov. 10, 1852

पुराने नियम के पहिले भाग की पुस्तक।

NOTE.—The basis of this edition of the Hindí Old Testament is the invaluable translation of the late Rev. WILLIAM BOWLEY. The Hindí Sub-Committee of the North India Bible Society have carefully compared that version with the Hebrew, and made numerous alterations in the attempt to conform the work more to the original language. Although these prevent our placing the name of that venerable Missionary on the title page, it is hoped they will really enhance the usefulness of his great work. The present volume has been corrected and printed with great care, and the editor believes, from an actual inspection of various portions since printing, that few or no errors, beyond those almost inevitably incident to Nágarí printing, and which will readily correct themselves, will be found.

JOSEPH OWEN,
Secretary Hindí Sub-Committee,
North India Bible Society.

उत्पत्ति की पुस्तक।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा॥ २। और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव पर अंधियारा था और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था॥

३ और ईश्वर ने कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला हो गया॥ ४। और ईश्वर ने उंजियाले को देखा कि अच्छा है और ईश्वर ने उंजियाले को अंधियारे से विभाग किया॥ ५। और ईश्वर ने उंजियाले को दिन और अंधियारे को रात कहा और सांझ और विहान पहिला दिन हुआ॥ ६। और ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में आकाश होवे और पानियों को पानियों से विभाग करे॥ ७। तब ईश्वर ने आकाश को बनाया और आकाश के नीचे के पानियों को आकाश के ऊपर के पानियों से विभाग किया और ऐसा हो गया॥ ८। और ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ और विहान दूसरा दिन हुआ॥ ९। और ईश्वर ने कहा कि स्वर्ग के तले के पानी एकही स्थान में एकट्ठे होवें और सूखी दिखाई देवे और ऐसा हो गया॥ १०। और ईश्वर ने सूखी को भूमि कहा और एकट्ठे किये गये पानियों को समुद्र कहा और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ ११। और ईश्वर ने कहा कि भूमि घास को और साग पात को जिन में बीज होवें और

फलवंत पेड़ को जो अपनी अपनी भांति के समान फलें जिन के बीज भूमि पर उन में होवें उगावे और ऐसा हो गया॥ १२। और भूमि ने घास और साग पात को अपनी अपनी भांति के समान जिन में बीज होवें और फलवंत पेड़ को जिस का बीज उस में होवे उस की भांति के समान उगाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ १३। और सांझ और बिहान तीसरा दिन हुआ॥ १४। और ईश्वर ने कहा कि दिन और रात में बिभाग करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति होवें और वे चिन्हों और ऋतुन और दिनों और बर्षों के कारण होवें॥ १५। और वे पृथिवी को उंजियाली करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति के लिये होवें और ऐसा हो गया॥ १६। और ईश्वर ने दो बड़ी ज्योति बनाईं एक बड़ी ज्योति दिन पर प्रभुता के लिये और उस्से छोटी ज्योति रात पर प्रभुता के लिये और तारों को भी॥ १७। और ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग के आकाश में रक्खा कि पृथिवी पर उंजियाला करें। १८। और दिन पर और रात पर प्रभुता करें और उंजियाले को अंधियारे से बिभाग करें और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ १९। और सांझ और बिहान चौथा दिन हुआ॥ २०। और ईश्वर ने कहा कि पानी जीवधारी रेंगवैयों की बहुताई से भर जाय और पक्षी पृथिवी के ऊपर स्वर्ग के आकाश पर उड़ें॥ २१। सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों और हर एक रेंगवैये जीवधारी को जिन से पानी भरा है उन की भांति भांति के समान और हर एक पक्षी को उस की भांति के समान बहुताई से उत्पन्न किया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है॥ २२। और ईश्वर ने उन को आशीष देके कहा कि फलमान होओ और बढ़ो और समुद्रों के पानियों में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें। २३। और सांझ और बिहान पांचवां दिन हुआ। २४। और ईश्वर ने कहा कि पृथिवी हर एक जीवधारी को उस की भांति भांति के समान अर्थात् ढोर और रेंग-वैये जंतु को और बनैले पशु को उस की भांति के समान उपजावे और ऐसा हो गया॥ २५। और ईश्वर ने बनैले पशु को उस की भांति के समान और ढोर को उस की भांति के समान और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जंतु को उस की भांति के समान बनाया और ईश्वर ने देखा कि

अच्छा है॥ २६। तब ईश्वर ने कहा कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप में अपने समान बनावें और वे समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और ढोर और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर के हर एक रेंगवैये जंतु पर प्रधान होवें॥ २७। तब ईश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उन्हें नर और नारी बनाया॥ २८। और ईश्वर ने उन्हें आशीष दिया और ईश्वर ने उन्हें कहा कि फलवान होओ और बढ़ो और पृथिवी में भर जाओ और उसे बश में करो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी पर प्रभुता करो।

२९ और ईश्वर ने कहा लो मैं ने हर एक बीजधारी साग पात को जो सारी पृथिवी पर है और हर एक पेड़ को जिस में फल है जो बीज उपजावता है तुम्हें दिया यह तुम्हारे खाने के लिये होगा॥ ३०। और पृथिवी के हर एक पशु को और आकाश के हर एक पक्षी को और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी को हर एक प्रकार की हरियाली भी खाने को दिई और ऐसा हुआ॥ ३१। फिर परमेश्वर ने हर एक वस्तु पर जिसे उस ने बनाया था दृष्टि किई और देखा कि बहुत अच्छी है और सांझ और बिहान छठवां दिन हुआ॥

२ दूसरा पर्व्व॥

यों स्वर्ग और पृथिवी और उन की सारी सेना बन गई॥ २। और ईश्वर ने अपने कार्य को जो वुह करता था सातवें दिन समाप्त किया और उस ने सातवें दिन में अपने सारे कार्य से जो उस ने किया था विश्राम किया॥ ३। और ईश्वर ने सातवें दिन को आशीष दिई और उसे पवित्र ठहराया इस कारण कि उसी में उस ने अपने सारे कार्य से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया और बनाया विश्राम किया॥ ४। यह स्वर्ग और पृथिवी की उत्पत्ति है जब वे उत्पन्न हुये जिस दिन परमेश्वर ईश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को बनाया॥ ५। और खेत का कोई साग पात अब लों पृथिवी पर न था और खेत की कोई हरियाली अब लों न उगी थी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर ने पृथिवी पर मेंह न बर्साया था,

और कोई मनुष्य न था कि भूमि की खेती करे॥ ६। और पृथिवी से कुहासा उठता था और समस्त भूमि को सींचता था॥ ७। तब परमेश्वर ईश्वर ने भूमि की धूल से मनुष्य को बनाया और उस के नथुनों में जीवन का श्वास फूंका और मनुष्य जीवता प्राण हुआ।

८। और परमेश्वर ईश्वर ने अदन में पूरब की ओर एक बारी लगाई और उस मनुष्य को जिसे उस ने बनाया था उस में रक्खा॥ ९। और परमेश्वर ईश्वर ने हर एक पेड़ को जो देखने में सुन्दर और खाने में अच्छा है और उस बारी के मध्य में जीवन का पेड़ और भले बुरे के ज्ञान का पेड़ भूमि से उगाया॥ १०। और उस बारी को सींचने के लिये अदन से एक नदी निकली और वहां से बिभाग होके चार सोहाने हुए॥ ११। पहिली का नाम फ़ैसून जो हवील: की सारी भूमि को घेरती है जहां सोना होता है॥ १२। उस भूमि का सोना चोखा है वहां मोती और बिल्लौर होता है॥ १३। और दूसरी नदी का नाम जैहून है जो कूश की सारी भूमि को घेरती है॥ १४। और तीसरी नदी का नाम दिजल: है जो असूर की पूरब ओर जाती है और चौथी नदी फुरात है॥ १५। और परमेश्वर ईश्वर ने उस मनुष्य को लेके अदन की बारी में रक्खा जिसतें उसे सुधारे और उस की रखवाली करे॥ १६। और परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य को आज्ञा देके कहा कि तू इस बारी के हर एक पेड़ का फल खाया कर॥ १७। परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से मत खाना क्योंकि जिस दिन तू उस्से खायगा तू निश्चय मरेगा॥ १८ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि मनुष्य को अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उस के लिये एक उपकारिणी उस के समान बनाऊंगा॥ १९। और परमेश्वर ईश्वर भूमि से हर एक बनैले पशु और आकाश के सारे पक्षी बनाकर उन को मनुष्य के पास लाया कि देखे कि उन के क्या क्या नाम रखना है और जो कुछ कि मनुष्य ने हर एक जीते जंतु को कहा वही उस का नाम हुआ॥ २०। और मनुष्य ने हर एक ढोर और आकाश के पक्षी और हर एक बनैले पशु का नाम रक्खा पर आदम के लिये उस के समान कोई उपकारिणी न मिली॥ २१। और परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य को बड़ी नीन्द में डाला और वुह सो गया तब उस ने उस की

पसुलियों में से एक निकाली और उस की संती मांस भर दिया॥ २२ और परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य की उस पसुली से जो उस ने लिई थी एक नारी बनाई और उसे नर पास लाया॥ २३। तब नर बोला यह तो मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस वुह नारी कहलावेगी क्योंकि यह नर से निकाली गई॥ २४। इस लिये मनुष्य अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक मांस होंगे॥ २५ और मनुष्य और उस की पत्नी दोनों के दोनों नग्न थे और लज्जित न थे॥

३ तीसरा पर्ब्ब।

अब सर्प्प भूमि के हर एक पशु से जिसे परमेश्वर ईश्वर ने बनाया था धूर्त्त था और उस ने स्त्री से कहा क्या निश्चय ईश्वर ने कहा है कि तुम इस बारी के हर एक पेड़ से न खाना?॥ २। स्त्री ने सर्प्प से कहा कि हम तो इस बारी के पेड़ों का फल खाते हैं॥ ३। परन्तु उस पेड़ का फल जो बारी के बीच में है ईश्वर ने कहा है कि तुम उस्से न खाना और न छूना न हो कि मर जाओ॥ ४। तब सर्प्प ने स्त्री से कहा कि तुम निश्चय न मरोगे॥ ५। क्योंकि ईश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उस्से खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी और तुम भले और बुरे की पहिचान में ईश्वर के समान हो जाओगे॥ ६। और जब स्त्री ने देखा कि वुह पेड़ खाने में सुखाद और दृष्टि में सुन्दर और बुद्धि देने के योग्य है तो उस के फल में से लिया और खाया और अपने पति को भी दिया और उस ने खाया॥ ७। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और वे जान गये कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने गूलर के पत्तों को मिला के सीआ और अपने लिये ओढ़ना बनाया॥ ८। और दिन के ठंढे में उन्हों ने परमेश्वर ईश्वर का शब्द जो बारी में चलता था सुना तब मनुष्य और उस की पत्नी ने अपने को परमेश्वर ईश्वर के आगे से बारी के पेड़ों में छिपाया॥ ९। तब परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य को पुकारा और कहा कि तू कहां है॥ १०। वुह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बारी में सुना और डरा क्योंकि मै नंगा था इस कारण मैं ने अपने को छिपाया॥ ११।

और उस ने कहा कि किस ने तुझे जताया कि तू नंगा है क्या तू ने उस पेड़ से खाया जो मैं ने तुझे खाने से बरजा था॥ १२। और मनुष्य ने कहा कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग रक्खी मुझे उस पेड़ से दिया और मैं ने खाया॥ १३। तब परमेश्वर ईश्वर ने उस स्त्री से कहा कि यह तू ने क्या किया है स्त्री बोली कि सर्प्प ने मुझे बहकाया और मैं ने खाया॥ १४। तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प्प से कहा कि जो तू ने यह किया है इस कारण तू सारे ढोर और हर एक बन के पशुन से अधिक स्रापित होगा तू अपने पेट के बल चलेगा और अपने जीवन भर धूल खाया करेगा॥ १५। और मैं तुझ में और स्त्री में और तेरे बंश और उस के बंश में बैर डालोंगा वुह तेरे सिर को कुचिलेगा और तू उस की एड़ी को कुचिलेगा॥ १६। और उस ने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और गर्भ धारण को बज्जत बढाऊंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा तेरे पति पर होगी और वुह तुझ पर प्रभुता करेगा॥ १७। और उस ने आदम से कहा कि तू ने जो अपनी पत्नी का शब्द माना है और जिस पेड़ का मैं ने तुझे खाने से बरजा था तू ने खाया है इस कारण भूमि तेरे लिये स्रापित है अपने जीवन भर तू उस्से पीड़ा के साथ खायगा॥ १८। वुह कांटे और ऊंटकटारे तेरे लिये उगायेगी और तू खेत का साग पात खायगा॥ १९। अपने मुंह के पसीने से तू रोटी खायगा जब लों तू भूमि में फिर न मिल जाय क्योंकि तू उस्से निकाला गया इस लिये कि तू धूल है और धूल में फिर जायगा॥ २०। और आदम ने अपनी पत्नी का नाम हवः रक्खा इस कारण कि वुह समस्त जीवतों की माता थी॥ २१। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम और उस की पत्नी के लिये चमड़े के ओढ़ने बनाये और उन्हें पहिनाये॥ २२। और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो मनुष्य भले बुरे के जान्ने में हम में से एक की नाईं ज़आ और अब ऐसा न होवे कि वुह अपना हाथ डाले और जीवन के पेड़ में से भी लेकर खावे और अमर हो जाय॥ २३। इस लिये परमेश्वर ईश्वर ने उस को अदन की बारी से बाहर किया जिसतें वुह भूमि की किसनई करे जिस्से वुह लिया गया था॥ २४। सो उस ने मनुष्य को निकाल दिया और अदन की बारी की पूर्ब ओर करो-

बीच ठहराये और चमकते ज़ए खड्ग को जो चारों ओर घूमता था जिसतें जीवन के पेड़ के मार्ग की रखवाली करें।

४ चौथा पर्ब्ब।

और आदम ने अपनी पत्नी हवः को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी ज़ई और उस्से क़ाइन उत्पन्न ज़आ और बोली कि मैं ने परमेश्वर से एक पुरुष पाया॥ २। और फिर वुह उस के भाई हाबील को जनी और हाबील भेड़ों का चरवाहा ज़आ परन्तु क़ाइन किसनई करता था॥ ३। और कितने दिनों के पीछे यों ज़आ कि क़ाइन भूमि के फलों में से परमेश्वर के लिये भेंट लाया॥ ४। और हाबील भी अपनी झुंड में से पहिलौंठी और मोटी मोटी लाया और परमेश्वर ने हाबील का और उस की भेंट का आदर किया॥ ५। परन्तु क़ाइन का और उस की भेंट का आदर न किया इस लिये क़ाइन अति कोपित ज़आ और अपना मुंह फुलाया॥ ६। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कहा तू क्यों क्रुड्ड है और तेरा मुंह क्यों फूल गया॥ ७। यदि तू भला करे तो क्या तू ग्राह्य न होगा और यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर है और वुह तेरे वश में होगा और तू उस पर प्रभुता करेगा॥ ८। तब क़ाइन ने अपने भाई हाबील से बातें किईं और यों ज़आ कि जब वे खेत में थे तब क़ाइन अपने भाई हाबील पर झपटा और उसे घात किया॥ ९। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कहा तेरा भाई हाबील कहां है वुह बोला मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाई का रखवाल ज़ं॥ १०। तब उस ने कहा तू ने क्या किया तेरे भाई के लोह्र का शब्द भूमि से मुझे पुकारता है॥ ११। और अब तू पृथिवी से स्रापित है जिस ने तेरे भाई का लोह्र तेरे हाथ से लेने को अपना मुंह खोला है॥ १२। जब तू किसनई करेगा तो वुह तेरे बश में न होगी तू पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू रहेगा॥ १३। तब क़ाईन ने परमेश्वर से कहा कि मेरा दण्ड मेरे सहाव से अधिक है॥ १४। देख तू ने आज देश में से मुझे खदेर दिया है और मैं तेरे आगे से गुप्त होजंगा और मैं पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू होजंगा और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पावेगा मार डालेगा॥ १५। तब

परमेश्वर ने उसे कहा इस लिये जो कोई काइन को मार डालेगा तो उस्से सात गुन पलटा लिया जायगा और परमेश्वर ने काइन पर एक चिन्ह रक्खा न हो कि कोई उसे पाके मार डाले॥ १६। तब काइन परमेश्वर के आगे से निकल गया और अदन की पूर्ब ओर नूद की भूमि में जा रहा॥ १७। और काइन ने अपनी पत्नी को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी हुई और उस्से हनूक उत्पन्न हुआ तब उसने एक नगर बनाया और अपने बेटे हनूक का नाम उस पर रक्खा॥ १८। और हनूक से ईराद उत्पन्न हुआ और ईराद से महूयाएल और महूयाएल से मतूसाएल और मतूसाएल से लमक उत्पन्न हुआ॥ १९। और लमक ने दो पत्नियां किईं पहिली का नाम अदः और दूसरी का नाम ज़िल्लः था॥ २०। और अदः से याबल उत्पन्न हुआ जो तंबूओं के निवासियों और ढोर के चरवाहों का पिता था॥ २१। और उस के भाई का नाम यूबल था वुह बीन और अरगन के सारे बजनियों का पिता था॥ २२। और ज़िल्लः से तूबलकाइन उत्पन्न हुआ जो ठठेरों और लोहारों का शिक्षक था और तूबलकाइन की बहिन नअमः थी॥ २३। और लमक ने अपनी पत्नी अदः और ज़िल्लः से कहा कि हे पत्नियो मेरा शब्द सुनो और मेरे बचन पर कान धरो क्योंकि मैं ने एक पुरुष को अपने घाव के लिये और एक तरुण को अपने दुःख के लिये मार डाला॥ २४। यदि काइन सात गुन प्रतिफल लेवे तो लमक सतहत्तर गुन॥

२५। और आदम ने अपनी पत्नी को फिर ग्रहण किया और वुह बेटा जनी उस का नाम सेत रक्खा क्योंकि ईश्वर ने हाबील की संती जिस को काइन ने मार डाला मेरे लिये दूसरा वंश ठहराया॥ २६। और सेत को भी एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस ने उस का नाम अनूस रक्खा उस समय से लोग परमेश्वर का नाम लेने लगे॥

५ पांचवां पर्ब्ब।

आदम की वंशावली का पत्र यह है जिस दिन में ईश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में बनाया॥ २। उस ने उन्हें नर और नारी बनाया और जिस दिन वे सिरजे गये उस ने

उन्हें आशीष दिया और उन का नाम मनुष्य रक्खा॥ ३। और एक सौ तीस बरस की बय में आदम से उसी के स्वरूप और रूप में एक बेटा उत्पन्न ज़आ और उस का नाम सेत रक्खा॥ ४। और सेत की उत्पत्ति के पीछे आदम की बय आठ सौ बरस की ज़ई और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न ज़ईं॥ ५। और आदम की सारी बय नव सौ तीस बरस की ज़ई और वुह मर गया॥ ६। और सेत जब एक सौ पांच बरस का ज़आ तब उस्से अनूस उत्पन्न ज़आ॥ ७। और अनूस की उत्पत्ति के पीछे सेत आठ सौ सात बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न ज़ईं॥ ८। और सेत की सारी बय नव सौ बारह बरस की ज़ई और वुह मर गया॥ ९। और अनूस जब नब्बे बरस का ज़आ तब उस्से क़ीनान उत्पन्न ज़आ॥ १०॥ और क़ीनान की उत्पत्ति के पीछे अनूस आठ सौ पंद्रह बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न ज़ईं॥ ११। और अनूस की सारी बय नव सौ पांच बरस की ज़ई और वुह मर गया॥ १२। और क़ीनान सत्तर बरस का ज़आ और उस्से महललिएेल उत्पन्न ज़आ॥ १३। और महललिएेल की उत्पत्ति के पीछे क़ीनान आठ सौ चालीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न ज़ईं॥ १४। और क़ीनान की सारी बय नव सौ दस बरस की ज़ई और वुह मर गया॥ १५। और महललिएेल जब पैंसठ बरस का ज़आ तब उस्से यिरद उत्पन्न ज़आ॥ १६। और महललिएेल यिरद की उत्पत्ति के पीछे आठ सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न ज़ईं॥ १७। और महललिएेल की सारी बय आठ सौ पंचानवे बरस की ज़ई और वुह मर गया॥ १८। जब यिरद एक सौ बासठ बरस का ज़आ तब उस्से हनूक उत्पन्न ज़आ॥ १९। और हनूक की उत्पत्ति के पीछे यिरद आठ सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न ज़ईं॥ २०। और यिरद की सारी बय नव सौ बासठ बरस की ज़ई और वुह मर गया॥ २१। जब हनूक पैंसठ बरस का ज़आ तो उस्से मतूसिलह उत्पन्न ज़आ॥ २२। और हनूक मतूसिलह की उत्पत्ति के पीछे तीन सौ बरस लों ईश्वर के साथ साथ चला और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न ज़ईं॥ २३। और हनूक की सारी बय तीन सौ पैंसठ बरस की ज़ई॥ २४। और हनूक ईश्वर के साथ साथ चलता था और वुह न मिला

क्योंकि ईश्वर ने उसे लेलिया॥ २५। और जब मतूसिलह एक सौ सतासी बरस का हुआ तब उस्से लमक उत्पन्न हुआ॥ २६। और लमक की उत्पत्ति के पीछे मतूसिलह सात सौ बयासी बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २७। और मतूसिलह की सारी बय नव सौ उनहत्तर बरस की हुई और वुह मर गया॥ २८। और लमक जब एक सौ बयासी बरस का हुआ तब उस का एक बेटा उत्पन्न हुआ॥ २९। और उस ने उस का नाम नूह रक्खा और कहा कि यह हमारे हाथों के परिश्रम और कार्य के बिषय में जो पृथिवी के कारण से हैं जिस पर परमेश्वर ने स्राप दिया है हमें शांत देगा॥ ३०। और नूह की उत्पत्ति के पीछे लमक पांच सौ पंचानवे बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ ३१। और लमक की सारी बय सात सौ सतहत्तर बरस की हुई और वुह मर गया॥ ३२। और नूह जब पांच सौ बरस का हुआ तब नूह से सिम और हाम और याफत उत्पन्न हुए।

६ छठवां पर्ब्ब।

और यों हुआ कि जब मनुष्य पृथिवी पर बढ़ने लगे और उन से बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २। तो ईश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुंदरी हैं और उन में से जिन्हें उन्हों ने चाहा उन्हें ब्याहा॥ ३। और परमेश्वर ने कहा कि मेरा आत्मा मनुष्य में उन के अपराध के कारण सदा लों न्याय न करेगा वुह मांस है और उस के दिन एक सौ बीस बरस के होंगे॥ ४। और उन दिनों में पृथिवी पर दानव थे और उस के पीछे जब ईश्वर के पुत्र मनुष्यों की पुत्रियों से मिले तो उन से बालक उत्पन्न हुए जो बलवान हुए जो आगे से नामी थे॥ ५। और ईश्वर ने देखा कि मनुष्य की दुष्टता पृथिवी पर बहुत हुई और उन के मन की चिंता और भावना प्रतिदिन केवल बुरी होती हैं॥ ६। तब मनुष्य को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पछताया और उसे अति शोक हुआ॥ ७। तब परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य को जिसे मैं ने उत्पन्न किया मनुष्य से लेके पशु लों और रेंगवैयों को और आकाश के पक्षियों को पृथिवी पर से नष्ट करूंगा क्योंकि उन्हें बनाने से मैं पछताता हूं॥

८। पर नूह ने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया॥ ९। नूह की बंशावली यह है कि नूह अपने समय में धर्मी और सिद्ध पुरुष था और ईश्वर के साथ साथ चलता था॥ १०। और नूह से तीन बेटे सिम और हाम और याफ़त उत्पन्न हुए॥ ११। और पृथिवी ईश्वर के आगे बिगड़ गई थी और पृथिवी अंधेर से भरपूर हुई॥ १२। और ईश्वर ने पृथिवी पर दृष्टि किई और क्या देखता है कि वुह बिगड़ गई है क्योंकि सारे शरीर ने पृथिवी पर अपनी चाल को बिगाड़ दिया था॥ १३। और ईश्वर ने नूह से कहा कि सारे शरीर का अंत मेरे आगे आ पहुंचा है क्योंकि उन से पृथिवी अंधेर से भर गई है और देख मैं उन्हें पृथिवी समेत नष्ट करूंगा॥ १४। तू गोफर लकड़ी की अपने लिये एक नाव बना और उस नाव में कोठरियां और उस के बाहर भीतर राल लगा॥ १५। और उसे इस डौल की बना उस नाव की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे॥ १६। उस नाव में एक खिड़की बना और ऊपर ऊपर उसे हाथ भर में समाप्त कर और उस के अलंग में द्वार बना और उस में नीचे की और दूसरी और तीसरी अटारी बना॥ १७। और देख कि सारे शरीर को जिन में जीवन का श्वास है आकाश के तले से नाश करने को मैं अर्थात् मैं ही बाढ़ के पानी पृथिवी पर लाता हूं और पृथिवी पर हर एक वस्तु नष्ट हो जायगी॥ १८। परन्तु मैं तुझ से अपनी बाचा स्थिर करूंगा तू नाव में जाना तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और तेरे बेटों की पत्नियां तेरे साथ॥ १९। और सारे शरीरों में से जीवता जंतु दो दो अपने साथ नाव में लेना जिसतें वे तेरे साथ जीते रहें वे नर और नारी होवें॥ २०। पंछी में से उस के भांति भांति के और ढोर में से उस के भांति भांति के और पृथिवी के हर एक रेंगवैये में से भांति भांति के हर एक में से दो दो तुझ पास आवें जिसतें जीते रहें॥ २१। और तू अपने लिये खाने को सब सामग्री अपने पास एकट्ठा कर वुह तुम्हारे और उन के लिये भोजन होगा सो ईश्वर की सारी आज्ञा के समान नूह ने किया।

७ सातवां पर्ब्ब ।

और परमेश्वर ने नूह से कहा कि तू अपने सारे घराने समेत नाव में प्रवेश कर क्योंकि इस पीढ़ी में मैं ने अपने आगे तुझे धर्मी देखा है॥ २। हर एक पवित्र पशु में से सात सात नर और उस की जोड़ी और पशु में से जो पवित्र नहीं दो दो नर और उस की जोड़ी अपने साथ लेना॥ ३। और आकाश के पक्षियों से भी सात सात नर और उस की जोड़ी जिसतें सारी पृथिवी पर वंश जीता रक्खे॥ ४। क्योंकि मैं सात दिन के पीछे पृथिवी पर चालीस रात दिन मेंह बरसाऊंगा और हर एक जीवते जंतु को जिसे मैं ने बनाया है पृथिवी पर से मिटा देऊंगा॥ ५। और नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञा के समान किया॥ ६। और जब पानियों का बाढ़ पृथिवी पर हुआ नूह छः सौ बरस का था॥

७। तब नूह और उस के बेटे और उस की पत्नी और उस के बेटों की पत्नियां पानियों के बाढ़ के कारण से उस के संग नाव पर चढ़ीं॥ ८। पवित्र पशुन से और उन में से जो पवित्र नहीं हैं और पंछियों से और पृथिवी के हर एक रेंगवैयों में से॥ ९। दो दो नर और उस की जोड़ी जैसा ईश्वर ने नूह को आज्ञा किई थी नाव में गए॥ १०। और जब सात दिन बीत गये तो यूं हुआ कि बाढ़ के पानी पृथिवी पर हुए॥ ११। और नूह की बय के छः सौ बरस के दूसरे मास की सत्तरहवीं तिथि में उसी दिन महा गहिराव के सारे सोते फूट निकले और स्वर्ग के द्वार खुल गये॥ १२। और पृथिवी पर चालीस रात दिन मेंह बरसा॥ १३। उसी दिन नूह और नूह के बेटे सिम और हाम और याफत और नूह की पत्नी और उस के बेटों की तीनों पत्नियां उस के साथ नाव में गईं॥ १४। वे और हर एक पशु अपनी अपनी भांति के समान और सारे ढोर और भूमि पर के हर एक रेंगवैये जंतु अपनी अपनी भांति के समान और हर एक पंछी अपनी अपनी भांति के समान हर एक भांति की हर एक चिड़ियां॥ १५। और वे नूह के पास सारे शरीरों में से दो दो जिन में जीवन का श्वास था नाव में गये॥ १६। और जिन्हों ने प्रवेश किया सो सारे शरीरों में से जोड़ा जोड़ा थे जैसा कि ईश्वर ने उसे आज्ञा

किई थी और परमेश्वर ने उस के पीछे बंद किया॥ १७। और बाढ़ का पानी चालीस दिन तांईं पृथिवी पर ज़ुआ और पानी बढ़ गया और नाव को उभार लिया और वुह भूमि पर से ऊपर उठ गई॥ १८। और जब पानी बढ़े और पृथिवी पर बज़ताई से बढ़ गए तब नौका पानी के ऊपर उतराने लगी॥ १९। और जब कि पानी पृथिवी पर अत्यंत बढ़ गये तो सारे ऊंचे पहाड़ जो सारे आकाश के नीचे थे ढंप गये॥ २०। और ढंपे ज़ुए पहाड़ों पर पानी पंदरह हाथ बढ़ गये॥ २१। और सारे शरीर जो पृथिवी पर चलते थे पंछी और ढोर और पशु और भूमि पर के हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक मनुष्य मर गये॥ २२। और सब जिन के नथुनों में जीवन का श्वास था और सब जो सूखी पर थे मर गये॥ २३। और हर एक जीवता जंतु जो पृथिवी पर था मनुष्य से लेके ढोर और कीड़े मकोड़े और आकाश के पंछियों लों नष्ट ज़ुए केवल नूह और जो उस के साथ नौका में थे बच रहे॥ २४। और पानी डेढ़ सौ दिन लों पृथिवी पर बढ़ते गये।

८ आठवां पर्ब्ब।

और ईश्वर ने नूह को और हर एक जीवते जंतु को और सारे ढोर को जो उस के संग नाव में थे स्मरण किया और ईश्वर ने पृथिवी पर एक पवन बहाया और जल ठहर गये॥ २। और गहिराव के सोते भी और आकाश के झरोखे बंद हो गये और आकाश से मेंह थम गया॥ ३। और जल पृथिवी पर से घटे चले जाते थे और डेढ़ सौ दिनों के बीते पर जल घट गये॥ ४। और सातवें मास की सत्तरह तिथि में नौका अरारात के पहाड़ों पर टिक गई॥ ५। और जल दसवें मास लों घटते गये और दसवें मास के पहिले दिन पहाड़ों की चोटियां दिखाई दिईं॥ ६। और चालीस दिन के पीछे यूं ज़ुआ कि नूह ने अपने बनाये ज़ुए नाव के झरोखे को खोला॥ ७। और उस ने एक काग को उड़ा दिया और जब लों पृथिवी पर के जल सूख न गये वुह आया जाया करता था॥ ८। फेर उस ने अपने पास से एक पंडुकी को छोड़ दिया जिसतें जाने कि पानी भूमि पर से घट गये अथवा नहीं॥

९। परन्तु उस पंडुकी ने अपना चंगुल टिकने का ठिकाना न पाया और वुह उस के पास नौका पर फिर आई क्योंकि जल सारी पृथिवी पर था तब उस ने अपना हाथ बढ़ाके उसे लेलिया और अपने पास नाव में लेलिया॥ १०। फिर वुह और सात दिन ठहर गया और फिर उस ने उस पंडुकी को नाव से उड़ा दिया॥ ११। और वुह पंडुकी सांझ को उस पास फिर आई और क्या देखता है कि जलपाई की एक पत्ती उस के मुंह में है तब नूह ने जाना कि अब जल पृथिवी पर से घट गया॥ १२। और वुह और भी सात दिन ठहरा उस के पीछे उस ने उस पंडुकी को छोड़ दिया वुह उस के पास फिर न आई॥ १३। और छः सौ एक बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में यों ऊआ कि जल पृथिवी पर से सूख गया और नूह ने नाव की छत उठा दिई और क्या देखता है कि पृथिवी ऊपर से सूखी है॥ १४। और दूसरे मास की सत्ताईसवीं तिथि में पृथिवी सूखी थी॥ १५। तब ईश्वर नूह को यह कहके बोला॥ १६। कि अब तू नौका से निकल आ और तेरी पत्नी और तेरे बेटे और तेरे बेटों की पत्नियां तेरे संग नाव पर से उतर जायें॥ १७। हर एक जीवते जंतु सारे शरीर में से क्या पंछी क्या ढोर और क्या कीड़े मकोड़े जो भूमि पर रेंगते चलते हैं सब को अपने संग ले निकल जिसतें उन के बंश पृथिवी पर बऊत बढ़ें और फलवंत हों और पृथिवी पर फैलें॥ १८। तब नूह निकला और उस के बेटे और उस की पत्नी और उस के बेटों की पत्नियां उस के संग॥ १९। हर एक पशु हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक पंछी जो कुछ कि पृथिवी पर रेंगते हैं सब अपने अपने भांति के समान नाव से निकल गये॥

२०। और नूह ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और सारे पवित्र पशु और हर एक पवित्र पंछियों में से लिये और होम की भेंट उस बेदी पर चढ़ाई॥ २१। और परमेश्वर ने सुगंध सूंघा और परमेश्वर ने अपने मन में कहा कि मनुष्य के लिये मैं पृथिवी को फिर कधी स्राप न देऊंगा इस कारण कि मनुष्य के मन की भावना उस की लड़काई से बुरी है और जिस रीति से मैं ने सारे जीवधारियों को मारा फिर कभी न मारूंगा॥ २२। जब लों पृथिवी है बोना और काटना

और ठंड और तपन और ग्रीष्म और शीत और दिन और रात थम न जायंगे।

९ नवां पर्ब्ब।

और ईश्वर ने नूह को और उस के बेटों को आशीष दिया और उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और पृथिवी को भरो॥ २। और तुम्हारा डर और भय पृथिवी के हर एक पशु पर और आकाश के हर एक पंछियों पर उन सभों पर जो पृथिवी पर चलते हैं और समुद्र की सारी मछलियों पर पड़ेगा वे तुम्हारे हाथ में सौंपे गये॥ ३। हर एक जीता चलता जंतु तुम्हारे भोजन के लिये होगा मैं ने हरी तरकारी के समान सारी वस्तु तुम्हें दिईं॥ ४। केवल मांस उस के जीव अर्थात् उस के लोहू समेत मत खाना॥ ५। और केवल तुम्हारे लोहू का तुम्हारे शरीरों के लिये मैं पलटा लेऊंगा हर एक पशु से और मनुष्य के हाथ से मैं पलटा लेऊंगा हर एक मनुष्य के भाई से मनुष्य के प्राण का मैं पलटा लेऊंगा॥ ६। जो कोई मनुष्य का लोहू बहावेगा मनुष्य से उस का लोहू बहाया जायगा क्योंकि ईश्वर के रूप में मनुष्य बनाया गया है॥ ७। और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी पर बहुताई से जन्मो और उस में बढ़ो॥ ८। और ईश्वर ने नूह को और उस के साथ उस के बेटों को कहा॥ ९। कि देखो मैं अपना नियम स्थिर करता हूं तुम से और तुम्हारे वंश से तुम्हारे पीछे॥ १०। और हर एक जीवते जंतु से जो तुम्हारे संग है क्या पंछी और क्या ढोर और पृथिवी के सारे चौपायों से और सभों से जो नाव से बाहर जाते हैं पृथिवी के हर एक पशु लों॥ ११। और मैं अपना नियम तुम से स्थिर करूंगा फिर सारे शरीर बाढ़ के पानियों से नष्ट न किये जायंगे और फिर पृथिवी को नष्ट करने के लिये जलमय न होगा॥ १२। और ईश्वर ने कहा कि यह उस नियम का चिन्ह है जो मैं अपने और तुम्हारे और हर एक जीवते जंतु के मध्य में जो तुम्हारे संग है परंपरा की पीढ़ी लों बांधता हूं॥ १३। मैं अपने धनुष को मेघ पर रखता हूं और वुह मेरे और पृथिवी के मध्य में नियम का चिन्ह होगा॥ १४। और जब मैं मेघ को पृथिवी के

ऊपर फैलाऊंगा तो धनष मेघ में दिखाई देगा॥ १५। और मैं अपने नियम को जो मेरे और तुम्हारे और सारे शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है स्मरण करूंगा और फिर सारे शरीर को नष्ट करने को जल मय न होगा॥ १६। और धनष मेघ में होगा और मैं उसे देखूंगा जिसतें मैं उस सनातन के नियम को जो ईश्वर के और पृथिवी के सारे शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है स्मरण करूं॥ १७। और ईश्वर ने नूह से कहा कि जो नियम मैं ने अपने और पृथिवी पर के सारे शरीरों से स्थिर किया है उस का यह चिन्ह है॥ १८। और नूह के बेटे जो नौका से उतरे सिम और हाम और याफत थे और हाम कनआन का पिता था॥ १९। नूह के यही तीन बेटे थे और उन्हीं से सारी पृथिवी बस गई॥ २०। फिर नूह खेतीबारी करने लगा और उस ने एक दाख की वाटिका लगाई॥ २१। और उस ने उस का रस पीया और उसे अमल हुआ और अपने तंबू में नग्न रहा॥ २२। और कनआन के पिता हाम ने अपने पिता की नंगापन देखी और बाहर अपने भाइयों को जनाया॥ २३। तब सिम और याफ़त ने एक ओढ़ना लिया और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के बल जाके अपने पिता की नंगापन ढांपी सो उन के मुंह पीछे थे और उन्हों ने अपने पिता की नंगापन न देखी॥ २४। जब नूह अपने अमल से जागा तो जो उस के छोटे बेटे ने उस से किया था उसे जान पड़ा॥ २५। और उस ने कहा कि कनआन स्रापित होगा वुह अपने भाइयों के दासों का दास होगा॥ २६। और उस ने कहा कि सिम का परमेश्वर ईश्वर धन्य होवे और कनआन उस का दास होगा॥ ईश्वर याफत को फैलावेगा और वुह सिम के तंबुओं में बास करेगा और कनआन उस का दास होगा॥ २८। और जलमय के पीछे नूह साढ़े तीन सौ बरस जीआ॥ २९। और नूह की सारी वय नव सौ पचास बरस की हुई और वुह मर गया।

१० दसवां पर्ब्ब।

अब नूह के बेटों की वंशावली यही है सिम और हाम और याफत और जलमय के पीछे उन से बेटे उत्पन्न हुए॥ २॥ याफ़त के

बेटे जुम्र और माजूज और माद़ी और यूनान और तबल और मसक और तीरास॥ ३। और जुम्र के बेटे अकनाज़ और रिफास और तजरमः। ४। और यूनान के बेटे इलीसः और तरशीश और कित्ती और दूदानी॥ ५। इन्हीं से अन्यदेशियों के टापू हर एक अपनी अपनी भाषा के और अपने अपने परिवार के समान अपनी अपनी जाति में बंट गये॥

६। और हाम के बेटे कूश और मिस्र और फ़त और कनआ़न ७। और कूश के बेटे सबा और हवीलः और सबतः और रग़मः और सबतिका और रग़मः के बेटे सिबा और ददान॥ ८। और कूश से निमरूद उत्पन्न हुआ वह पृथिवी पर एक महाबीर होने लगा॥ ९। वह ईश्वर के आगे बलवान व्याधा हुआ इसी लिये कहा जाता है जैसा कि परमेश्वर के आगे निमरूद बलवंत व्याधा॥ १०। और उस के राज्य का आरंभ बाबुल और अरक और अक्कद और कलनः सिनआ़र देश में हुआ॥ ११। और उसी देश में से अश्शूर निकला और नीनवः और रिहाबात और कलः के नगर बनाये॥ १२। और नीनवः और कलः के मध्य में रसन बनाया जो बड़ा नगर है॥ १३। और मिस्र से लोदीम और अनामीम और लिहाबी और नफ़तूह उत्पन्न हुए॥ १४। और फतरूस और कसलूही जिन से फिलिस्ती और कफ़तूर निकले॥ १५। और कनआ़न से उस का पहिलौठा सैदा और हित्त उत्पन्न हुए॥ १६। और यबूस और अमूरी और जिरजाश॥ १७। और हवी और अरकी और सीनी॥ १८। और अरवाद और ज़मारी और हमासी उस के पीछे कनआ़न के घराने फैल गये॥ १९। और कनआ़न के सिवाने सैदा से जिरार के मार्ग में उज्ज़ः लों सदूम और अमूरः और अदमः और ज़िबियान और लसअ़ लों हुए॥ २०। हाम के बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने देशों और अपनी जाति गणों में ये हैं॥ २१। और सिम से भी बालक उत्पन्न हुए वह सारे इब्र के बंश का पिता था और याफ़त उस का बड़ा भाई था॥ २२। और सिम के बंश ऐलाम और अश्शूर और अरफ़कसद और लूद [illegible] अराम थे॥ २३। और अराम के बंश ऊज़ और हूल और जतर और मश थे॥

२४। और अरफ़कसद से सिलह उत्पन्न ऊआ और सिलह से इब्र॥ २५। और इब्र से दो बेटे उत्पन्न ऊए एक का नाम फ़लज था क्योंकि उस के दिनों में पृथिवी बांटी गई और उस के भाई का नाम युकतान था॥ २६। और युकतान से अलमूदाद और सलफ और हसरि मैात और इरख॥ २७। और हद्राम और ऊज़ाल और दिकलह॥ २८। और ऊवल और अबीमायल और सिबा॥ २९। और ओफ़ीर और हवीलः और यूबाब उत्पन्न ऊए ये सब युकतान के बेटे थे॥ ३०। और उन के निवास मेसा के मार्ग से जो पूरब के पहाड़ सिफ़ार लों था॥ ३१॥ सिम के बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने अपने देशों और अपने अपने जातिगणों में ये थे॥ ३२। नूह के बेटों के घराने उन की पीढ़ी और उन के जातिगणों के समान ये हैं और जलमय के पीछे पृथिवी में जातिगण इन्हीं से बांटे गये॥

११ गयारहवां पर्ब्ब।

और सारी पृथिवी पर एकही बोली और एकही भाषा थी॥ २। और ज्यों उन्हों ने पूरब से यात्रा किई तो ऐसा ऊआ कि उन्हों ने सिनआर देश में एक चौगान पाया और वहां ठहरे॥ ३। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि चलो हम ईंटें बनावें और आग में पकावें सो उन के लिये ईंट पत्थर की संती और गारा की संती शिलाजतु था॥ ४। फिर उन्हों ने कहा कि आओ हम एक नगर और एक गुम्मट जिसकी चोटी स्वर्ग लों पऊंचे अपने लिये बनावें और अपना नाम करें न हो कि हम सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न हो जायें॥ ५। तब परमेश्वर उस नगर और उस गुम्मट को जिसे मनुष्य के संतान बनाते थे देखने को उतरा॥ ६। तब परमेश्वर ने कहा कि देखो लोग एक ही हैं और उन सब की एक ही बोली है अब वे ऐसा ऐसा कुछ करने लगे सो वे जिस पर मन लगावेंगे उस्से अलग न किये जावेंगे॥ ७। आओ हम उतरें और वहां उन की भाषा को गड़बड़ावें जिसतें एक दूसरे की बोली न समुझे॥ ८। तब परमेश्वर ने उन्हें वहां से सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया और वे उस नगर के बनाने से अलग रहे॥ ९। इस लिये उस का नाम

बाबुल कहावता है क्योंकि परमेश्वर ने वहां सारे जगत की भाषा को गड़बड़ किया और परमेश्वर ने वहां से उन को सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया॥

१०। सिम की बंशावली यह है कि सिम सौ बरस का होके जलमय के दो बरस पीछे उस्से अरफ़कसद उत्पन्न हुआ॥ ११। और अरफ़कसद की उत्पत्ति के पीछे सिम पांच सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १२। और जब अरफ़कसद पैंतीस बरस का हुआ उस्से सिलह उत्पन्न हुआ॥ १३। और सिलह की उत्पत्ति के पीछे अरफ़कसद चार सौ तीन बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १४। सिलह जब तीस बरस का हुआ उस्से इब्र उत्पन्न हुआ। १५। और सिलह इब्र की उत्पत्ति के पीछे चार सौ तीन बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १६। और इब्र से चौंतीस बरस के बय में फ़लज उत्पन्न हुआ॥ १७। और फ़लज की उत्पत्ति के पीछे इब्र चार सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ १८। तीस बरस की बय में फ़लज से रऊ उत्पन्न हुआ॥ १९। और रऊ की उत्पत्ति के पीछे फ़लज दो सौ नव बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २०। बत्तीस बरस के बय में रऊ से सरूज उत्पन्न हुआ॥ २१। और सरूज की उत्पत्ति के पीछे रऊ दो सौ सात बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २२। सरूज जब तीस बरस का हुआ उस्से नहूर उत्पन्न हुआ॥ २३। और नहूर की उत्पत्ति के पीछे सरूज दो सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २४। नहूर जब उंतीस बरस का हुआ उस्से तारह उत्पन्न हुआ॥ २५। और तारह की उत्पत्ति के पीछे नहूर एक सौ उंतीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं॥ २६। तारह जब सत्तर बरस का हुआ उस्से अबिराम और नहूर और हारन उत्पन्न हुए॥ २७। तारह की बंशावली यह है कि तारह से अबिराम और नहूर और हारन उत्पन्न हुए और हारन से लूत उत्पन्न हुआ॥ २८। और हारन अपने पिता तारह के आगे अपनी जन्म भूमि अर्थात् कलदानियों के ऊर में मर गया॥ २९। और अबिराम और नहूर ने पत्नियां किईं अबिराम की

पत्नी का नाम सरी था और नहूर की पत्नी का नाम मिलकः जो हारन की बेटी थी वही मिलकः और इसकाह का पिता था॥ ३०। परन्तु सरी बांझ थी उस का कोई संतान न था॥ ३१। और तारह ने अपने बेटे अबिराम को और अपने पोते हारन के बेटे लूत को और अपनी बहू अबिराम की पत्नी सरी को लिया और उन्हें अपने साथ कलदानियों के ऊर से कनआन देश में लेचला और वे हारन में आये और वहां रहे॥ ३२। और तारह दो सौ पांच बरस का होके हारन में मर गया॥

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

अब परमेश्वर ने अबिराम से कहा था कि तू अपने देश और अपने कुनबे से और अपने पिता के घर से उस देश को जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा॥ २। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू एक आशीर्बाद होगा॥ ३। और जो तुझे आशीष देगे मैं उन्हें आशीष देऊंगा और जो तुझे धिक्कारेगा मैं उसे धिक्कारूंगा और पृथिवी के सारे घराने तुझ से आशीष पावेंगे॥ ४। सो परमेश्वर के कहने के समान अबिराम चला गया और लूत भी उस के संग गया और जब अबिराम हारन से निकला तब वुह पचहत्तर बरस का था॥ ५। फिर अबिराम ने अपनी पत्नी सरी को और अपने भतीजे लूत को और उन की सारी संपत्ति को जो उन्हों ने प्राप्ति किई थी और उन के सारे प्राणियों को जो हारन में मिले थे साथ लिया और कनआन देश को जाने के लिये चल निकले सो वे कनआन देश में आये॥ ६। और अबिराम उस देश में होके सिकम के स्थान लों चला गया मोरिः के बलूत लों तब कनआनी उस देश में थे॥ ७। फिर परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन देके कहा कि यह देश मैं तेरे बंश को देऊंगा तब उस ने परमेश्वर के लिये जिस ने उसे दर्शन दिया था वहां एक बेदी बनाई॥ ८। फिर वुह वहां से बैतएल की पूरब एक पहाड़ की ओर गया और अपना तंबू बैतएल की पच्छिम ओर खड़ा किया और अई पूरब ओर था और वहां

उस ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया॥ ९। और अबिराम ने जाते जाते दक्खिन की ओर यात्रा किई॥ १० और उस देश में अकाल पड़ा और अबिराम बास करने के लिये मिस्र को उतर गया क्योंकि उस देश में बड़ा अकाल था॥ ११। और यों हुआ कि जब वुह मिस्र के निकट पहुंचा उस ने अपनी पत्नी सरी से कहा कि देख मैं जानता हूं कि तू देखने में सुन्दर स्त्री है॥ १२। इस लिये यों होगा कि जब मिसरी तुझे देखें वे कहेंगे कि यह उस की पत्नी है और मुझे मार डालेंगे परन्तु तुझे जीती रक्खेंगे॥ १३। तू कहियो कि मैं उस की बहिन हूं जिसतें तेरे कारण मेरा भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतु से जीता रहे॥ १४। और जब अबिराम मिस्र में जा पहुंचा तब मिस्रियों ने उस स्त्री को देखा कि अत्यंत सुन्दरी है॥ १५। और फिरऊन के अध्यक्षों ने भी उसे देखा और फिरऊन के आगे उस का सराहना किया सो उस स्त्री को फिरऊन के घर में ले गये॥ १६। और उस ने उस के कारण अबिराम का उपकार किया और भेड़ बकरी और बैल और गदहे और दास और दासी और गधियां और ऊंट उस ने पाये॥ १७। तब परमेश्वर ने फिरऊन पर और उस के घराने पर अबिराम की पत्नी सरी के कारण बड़ी बड़ी मरियां डालीं॥ १८। तब फिरऊन ने अबिराम को बुला के कहा कि तू ने मुझ से यह क्या किया तू ने मुझे क्यों न जताया कि वुह मेरी पत्नी है॥ १९। क्यों कहा कि वुह मेरी बहिन है यहांलों कि मैं ने उसे अपनी पत्नी कर लिया होता देख यह तेरी पत्नी है तू उसे ले और चला जा॥ २०। तब फिरऊन ने अपने लोगों को उस के विषय में आज्ञा किई और उन्हों ने उसे और उस की पत्नी को उस सब समेत जो उस का था जाने दिया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

और अबिराम मिस्र से अपनी पत्नी और सारी सामग्री समेत और लूत को अपने संग लिये हुये दक्खिन को चला॥ २। और अबिराम ढोर और सोना चांदी में बड़ा धनी था॥ ३। और वुह

यात्रा करते दक्खिन से बैतएल लों उसी स्थान को आया जहां आरंभ में उस का तंबू था बैतएल और अई के मध्य में॥ ४। उस बेदी के स्थान में जिसे उस ने पहिले वहां बनाया था और वहां अबिराम ने परमेश्वर का नाम लिया॥ ५। और अबिराम के संगी लूत के भी झुंड और गाय बैल और तंबू थे॥ ६। और साथ रहने में उस देश में उन की समाई न ऊई क्योंकि उन की सामग्री बऊत थी इस लिये वे एकट्ठे निवास न कर सके॥ ७। और अबिराम के ढोर के चरवाहों में और लूत के ढोर के चरवाहों में झगड़ा ऊआ तब कनआनी और फरज़ी उस भूमि में रहते थे॥ ८। तब अबिराम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों में और तेरे चरवाहों में झगड़ा न होने पावे क्योंकि हम भाई हैं॥ ९। क्या सारा देश तेरे आगे नहीं मुझ से अलग हो जो तू बाईं ओर जाय तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा अथवा जो तू दहिनी ओर जाय तो मैं बाईं ओर जाऊंगा॥ १०। तब लूत ने अपनी आंख उठाके अर्दन के सारे चौगान को देखा कि ईश्वर के सदूम और अमूरः को नष्ट करने से आगे वुह सर्वत्र अच्छी रीति से सींचा ऊआ था अर्थात् परमेश्वर की बारी के समान सुग़् के मार्ग के मिस्र की नाईं था॥ ११। तब लूत ने अर्दन का सारा चौगान चुना और पूरब की ओर चला और वे एक दूसरे से अलग ऊए॥ १२। अबिराम कनआन देश में रहा और लूत ने चौगान के नगरों में बास किया और सदूम की ओर तंबू खड़ा किया॥ १३। पर सदूम के लोग परमेश्वर के आगे अत्यंत दुष्ट और पापी थे॥ १४। तब लूत के अलग होने से पीछे परमेश्वर ने अबिराम से कहा कि अब अपनी आंखें उठा और उस स्थान से जहां तू है उत्तर और दक्खिन और पूरब और पच्छिम की ओर देख॥ १५। क्योंकि मैं यह सारा देश जिसे तू देखता है तुझे और तेरे बंश को सदा के लिये देऊंगा॥ १६ और मैं तेरे बंश को पृथिवी की धूल के तुल्य करूंगा यहां लों कि यदि कोई पृथिवी की धूल को गिन सके तो तेरा बंश भी गिना जायगा॥ १७। उठके देश की लंबाई और चौड़ाई में होके फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा॥ १८। तब अबिराम ने तंबू उठाया और ममरे के

बलूतों में जो हबरून में है आ रहा और वहां परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

और सिनआर के राजा अमराफिल के और इल्लासर के राजा अरयूक के और ऐलाम के राजा किदरलाउमर के और जाति गणों के राजा तिदआल के दिनों में यों हुआ॥ २। उन्हों ने सदूम के राजा बरअ से और अमूरः के राजा बिरशअ से और अदमः के राजा सिन्निअब से और जिबीआन के राजा शिमिबर से और बालिग के राजा से जो सुग्र है संग्राम किया॥ ३। ये सब सिद्दीम की तराई में जो खारी समुद्र है एकट्ठे हुए॥ ४। उन्हों ने बारह बरस लों किदरलाउमर की सेवा किई और तेरहवें बरस उस्से फिर गये॥ ५। और चौदहवें बरस में किदरलाउमर और उस के साथी राजा आये और इसताराात क़रनैन में रिफाइम को और हाम में ज़ज़ीयों को और सवी क़रयातैन में ऐमियों को॥ ६। और उन के सईर पर्वत में हूरियों को फारान के चौगान लों जो बन के पास है मारा॥ ७। और फिरे और इनमिशपाट को जो क़ादिस है फिरे और अमालीक़ के सारे देश को और अमूरी को भी जो हस्सूनतमर में रहते थे मार लिया॥ ८। और सिद्दीम का राजा और अमूरः का राजा और अदमः का राजा और जिबिआन का राजा और बालिग का राजा जो सुग्र है निकला॥ ९। ऐलाम के राजा किदरलाउमर के संग और जातिगणों के राजा तिदआल के संग और शिनआर के राजा अमराफ़िल और इल्लासर के राजा अरियूक ने चार राजा पांच के संग युद्ध के लिये॥ १०। और सिद्दीम की तराई में चहले के गढ़हे थे और सिद्दीम और मूअरः के राजा भागे और वहां गिरे और बचे हुए लोग भाग के पहाड़ पर गये॥ ११। उन्हों ने सिद्दीम और अमरः की सारी संपत्ति और उन के सारे भोजन लूट लिए और अपने मार्ग पकड़े॥ १२। और अबिराम के भतीजे लूत को जो सदूम में रहता था और उस की संपत्ति को लेके चले गये॥ १३। तब किसी ने बचके इबरानी अबिराम को संदेश दिया

क्योंकि वुह इसकाल और अनेर का भाई अमूरी ममरे के बलूतों के नीचे रहता था और वे अबिराम के सहायक थे॥ १४। और अबिराम ने अपने भाई के ले जाने की बात सुन के अपने घर के तीन सौ अठारह दासों को लिया और दान लों उन का पीछा किया॥ १५। और उस ने और उस के सेवकों ने आप को रात को बिभाग किया और उन्हें मारा और खूबः लों जो दमिश्क की बाईं ओर है उन्हें रगेदे चले गये॥ १६। और वुह सारी संपत्ति को और अपने भाई लूत को भी और उस की संपत्ति को और स्त्रियों को भी और लोगों को फेर लाया॥

१७। और किदरलाउमर को और उस के संगी राजाओं को मारके फिर आने के पीछे सदूम का राजा उस्से भेंट करने को सवी की तराई लों जो राजा की तराई है निकला॥ १८। और सालिम का राजा मलिकिसिदक रोटी और दाख रस लाया और वुह अति महान ईश्वर का याजक था॥ १९। और उस ने उसे आशीष दिया और बोला कि आकाश और पृथिवी के प्रभू अति महान ईश्वर का अबिराम धन्य होवे॥ २०। और अति महान ईश्वर को धन्य जिस ने तेरे बैरियों को तेरे हाथ में सौंप दिया और उस ने सब का दसवां भाग उसे दिया॥ २१। और सदूम के राजा ने अबिराम से कहा कि प्राणियों को मुझे दीजिये और संपत्ति आप रखिये॥ २२। तब अबिराम ने सदूम के राजा से कहा कि मैं ने अपना हाथ अति महान ईश्वर परमेश्वर के आगे जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु है उठाया है॥ २३। कि मैं एक तागे से लेके जूते के बंद लों आप का कुछ न लेऊंगा सो मत कहियो कि मैं ने अबिराम को धनमान किया॥ २४। परन्तु केवल वुह जो तरुणों ने खाया और उन मनुष्यों के भाग जो मेरे संग अर्थात् अनेर और इसकाल और ममरेः के वे अपने भाग लेवें।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

इन बातों के पीछे परमेश्वर का वचन यह कहते हुए दर्शन में अबिराम पर पहुंचा कि हे अबिराम मत डर मैं तेरी ढाल और तेरा बड़ा प्रतिफल हूं॥ २। तब अबिराम ने कहा कि हे प्रभु ईश्वर तू

मुझे क्या देगा मैं तो निर्बंश जाता हूं और मेरे घर का भंडारी दमिश्की इलिअज़र है॥ ३। फिर अबिराम ने कहा कि देख तू ने मुझे कोई बंश न दिया और देख जो मेरे घर में उत्पन्न हुआ वही मेरा अधिकारी है॥ ४। और देखो परमेश्वर का बचन उसे यूं कहते हुए पहुंचा कि यह तेरा अधिकारी न होगा परन्तु जो तुझी से उत्पन्न होगा सो तेरा अधिकारी होगा॥ ५। फिर उस ने उसे बाहर ले जाके कहा अब स्वर्ग की ओर देख और जो तारों को तू गिन सके तो उन्हें गिन फिर उस ने उसे कहा कि तेरा बंश ऐसा ही होगा॥ ६। तब वुह परमेश्वर पर बिश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म गिना गया॥ ७। फिर उस ने उसे कहा कि मैं परमेश्वर हूं जो तुझे यह भूमि अधिकार में देने को कलदानियों के ऊर से निकाल लाया॥ ८। तब उस ने कहा कि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं क्योंकर जानों कि मैं उस का अधिकारी होऊंगा॥ ९। तब उस ने उसे कहा कि तू तीन बरसी एक कलोर और तीन बरसी एक बकरी और तीन बरसी एक मेढ़ा और एक पंडुक और कपोत का एक बच्चा मेरे लिये ले॥ १०। सो उस ने ये सब अपने लिये लिया और उन्हें मध्य से दो दो भाग किये और हर एक भाग को उस के दूसरे भाग के साम्ने धरा परन्तु पंछियों का भाग न किया॥ ११। और जब हिंसक पंछी उन लोथों पर उतरे अबिराम ने उन्हें हांक दिया॥ १२। और सूर्य अस्त होते हुए अबिराम पर भारी नींद पड़ी और क्या देखता है कि बड़ा भयंकर अंधकार उस पर पड़ा॥ १३। तब उस ने अबिराम को कहा निश्चय जान कि तेरे बंश औरों के देश में परदेशी होंगे और उन की सेवा करेंगे और वे उन्हें चार सौ बरस लों सतावेंगे॥ १४। परन्तु जिन की वे सेवा करेंगे मैं उस जाति का भी बिचार करूंगा और वे पीछे बड़ी संपत्ति लेके निकलेंगे॥ १५। और तू अपने पितरों में कुशल से जायगा और बहुत पुरनिया होके गाड़ा जायगा॥ १६। परन्तु चौथी पीढ़ी में वे इधर फिर आवेंगे क्योंकि अमूरियों का अधर्म अब लों भरपूर नहीं हुआ॥ १७। और जब सूर्य अस्त हुआ तो यों हुआ कि अंधियारा हुआ कि देखो एक धूआं उठता भट्ठा और एक आग का दीपक उन टुकड़ों के मध्य में से होके चला गया॥ १८।

उसी दिन परमेश्वर ने अबिराम से नियम करके कहा कि मैं ने मिस्र की नदी से फुरात की बड़ी नदी लों यह देश तेरे बंश को दिया है॥ १९। अर्थात् क़ैनी और क़नज़ी और क़द्मूनी॥ २०। और हित्ती और फ़रिज़्ज़ी और रिफ़ाइमी॥ २१। और अमूरी और कनआनी और जिर्जाशी और यबूसी का देश।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

अब अबिराम की पत्नी सरी कोई लड़का उस के लिये न जनी और उस की एक मिसरी लौंड़ी थी जिस का नाम हाजिरः था॥ २। तब सरी ने अबिराम से कहा कि देख परमेश्वर ने मुझे जन्ने से रोका है मैं तेरी बिनती करती हूं कि अब मेरी लौंड़ी पास जाइये क्या जाने मेरा घर उस्से बस जाय और अबिराम ने सरी की बात मानी॥ ३। सो अबिराम के कनआन देश में दस बरस निवास करने के पीछे उस की पत्नी सरी ने अपनी लौंड़ी मिसरी हाजिरः को लिया और अपने पति अबिराम को उस की पत्नी होने को दिया॥ ४। और उस ने हाजिरः को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी हुई और जब उस ने आप को गर्भिणी देखा तो उस की स्वामिनी उस की दृष्टि में निंदित हुई॥ ५। तब सरी ने अबिराम से कहा कि मेरा दोष आप पर मैं ने अपनी लौंड़ी आप को दिई और जब उस ने अपने को गर्भिणी देखा तो मैं उस की दृष्टि में निंदित हुई मेरे और आप के बीच परमेश्वर न्याय करे॥ ६। तब अबिराम ने सरी से कहा कि देख तेरी लौंड़ी तेरे हाथ में है जो तुझे अच्छा लगे सो उस्से कर और जब सरी ने उस से कठिनता किई वुह उस के आगे से भाग गई॥ ७। और परमेश्वर के दूत ने एक पानी के सोते के पास बन में उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में है उसे पाया॥ ८। और उसे कहा कि हे सरी की लौंड़ी हाजिरः तू कहां से आई है और किधर जायगी वुह बोली कि मैं अपनी स्वामिनी सरी के आगे से भागती हूं॥ ९। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि अपनी स्वामिनी के पास फिर जा और उस के बश में रह॥ १०। फिर परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि मैं तेरा बंश अत्यंत बढ़ाऊंगा ऐसा कि वुह बहुताई

के मारे गिना न जायगा॥ ११। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि देख तू गर्भिणी है और एक बेटा जनेगी और उस का नाम इसमअएल रखना क्योंकि परमेश्वर ने तेरा दुख सुना॥ १२। और वुह एक बन मनुष्य होगा उस का हाथ हर एक मनुष्य के बिरुद्ध और हर एक का हाथ उस के बिरुद्ध होगा और वुह अपने सारे भाइयों के साम्ने निवास करेगा॥ १३। तब उस ने उस परमेश्वर का नाम जिस ने उस्से बातें किईं यूं लिया कि हे ईश्वर तू मुझे देखता है क्योंकि उस ने कहा कि मैं ने अपने दर्शी का पीछा यहां भी देखा है॥ १४। इस लिये उस कूएं का नाम बीअर्लहैराई रक्खा देखो वुह कादिस और बिरद के मध्य में है॥ १५। सो हाजिरः अबिराम के लिये एक बेटा जनी और अबिराम ने अपने बेटे का नाम जिसे हाजिरः जनी इसमअएल रक्खा॥ १६। और जब हाजिरः से अबिराम के लिये इसमअएल उत्पन्न हुआ तब अबिराम छियासी बरस का था।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

और जब अबिराम निन्नावे बरस का हुआ तब परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन दिया और कहा कि मैं सर्ब्ब सामर्थी ईश्वर हूं तू मेरे आगे चल और सिद्ध हो॥ २। और मैं अपने और तेरे मध्य में अपना नियम बांधूंगा और मैं तुझे अत्यंत बढ़ाऊंगा॥ ३। तब अबिराम औंधा गिरा और ईश्वर ने उस्से बातें करके कहा॥ ४। कि मैं जो हूं मेरा नियम तेरे संग है और तू बहुत सी जातिगणों का पिता होगा॥ ५। और तेरा नाम फिर अबिराम न होगा परन्तु तेरा नाम अबिरहाम होगा क्योंकि मैं ने तुझे बहुत सी जातिगणों का पिता बनाया है॥ ६। और मैं तुझे अत्यन्त फलमान करूंगा और तुझ्से जातिगण बनाऊंगा और राजा तुझ्से निकलेंगे॥ ७। और मैं अपना नियम अपने और तेरे मध्य में और तेरे पीछे तेरे बंश के उन की पीढ़ियों में सदा के लिये एक नियम जो उन के साथ सदा लों रहे ठहराऊंगा कि मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का ईश्वर हूंगा॥ ८। और मैं तुझे और तेरे पीछे सर्ब्बदा अधिकार के लिये तेरे बंश को तेरे टिकाव का देश देऊंगा अर्थात्

कनश्रान का सारा देश और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥ ९। फिर ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा बंश उन की पीढ़ियों में मेरे नियम को मानें॥ १०। सो मेरा नियम जो मुझ्से और तुम से और तेरे पीछे तेरे बंश से है उसे मानियो यह है कि तुम में से हर एक बालक का खतनः किया जाय॥ ११। और तुम अपने शरीर की खलड़ी काटो और वुह मेरे और तुम्हारे मध्य में नियम का चिह्न होगा॥ १२। और तुम्हारी पीढ़ियों में हर एक आठ दिन के बालक का खतनः किया जाय जो घर में उत्पन्न होय अथवा जो किसी परदेशी से जो तेरे बंश का न हो दाम से मोल लिया जाय॥ १३। जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो और जो तेरे दाम से मोल लिया गया हो अवश्य उस का खतनः किया जाय और मेरा नियम तुम्हारे मांस में सर्बदा नियम के लिये होगा॥ १४। और जो अखतनः बालक जिस की खलड़ी का खतनः न हुआ हो सो प्राणी अपने लोग से कट जाय कि उस ने मेरा नियम तोड़ा है॥ १५। फिर ईश्वर ने अबिरहाम से कहा तेरी पत्नी सरी जो है तू उसे सरी न कह परन्तु उस का नाम सरः रख॥ १६। और मैं उसे आशीष देऊंगा और तुझे एक बेटा उस्से भी देऊंगा निश्चय मैं उसे आशीष देऊंगा और वुह जातिगण होगी और राजा लोग उस्से होंगे॥ १७। तब अबिरहाम औंधे मुंह गिरा और हंसा और अपने मन में कहा क्या सौ बरस के वृद्ध से लड़का उत्पन्न होगा और क्या सरः जो नब्बे बरस की है जनेगी॥ १८। फिर अबिरहाम ने ईश्वर से कहा कि हाय कि इसमअएल तेरे आगे जीता रहे॥ १९। तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सरः तेरे लिये निश्चय एक बेटा जनेगी और तू उस का नाम इज़हाक रखना और मैं सर्बदा नियम के लिये अपना नियम उस्से और उस के पीछे उस के बंश से स्थिर करूंगा॥ २०। और इसमअएल जो है मैं ने उस के बिषय में तेरी सुनी है देख अब मैं ने उसे आशीष दिया और उसे फलमान करूंगा और उसे अत्यंत बढ़ाऊंगा उस्से बारह अध्यक्ष उत्पन्न होंगे और उसे बड़ी मंडली बनाऊंगा॥ २१। परन्तु इज़हाक के साथ जिसे सरः तेरे लिये दूसरे बरस इसी ठहराये हुए समय में जनेगी मैं अपना नियम स्थिर करूंगा॥ २२। तब उस्से बात करने से रह गया और अबिरहाम के

पास से ईश्वर ऊपर जाता रहा॥ २३। तब अबिरहाम ने अपने बेटे इसमअऐल को और सब जो उस के घर में उत्पन्न ऊए थे और सब जो उस के दाम से मोल लिये गये थे अर्थात् अबिरहाम के घराने के हर एक पुरुष को लेके उसी दिन उन की खलड़ी का ख़तनः किया जैसा कि ईश्वर ने उसे कहा था॥ २४। और जब उस की खलड़ी का ख़तनः ऊआ तब अबिरहाम निन्नावे बरस का था॥ २५। और जब उस के बेटे इसमअ़ऐल की खलड़ी का ख़तनः ऊआ तब वुह तेरह बरस का था॥ २६। उसी दिन अबिरहाम और उस के बेटे इसमअऐल का ख़तनः किया गया॥ २७। और उस के घराने के सारे पुरुषों का जो घर में उत्पन्न ऊए और जो परदेशियों से मोल लिये गये उस के साथ ख़तनः किये गये।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर उसे ममरे के बलूतों में दिखाई दिया और वुह दिन को घाम के समय में अपने तंबू के द्वार पर बैठा था॥ २। और उस ने अपनी आंखें उठाईं तो क्या देखता है कि तीन मनुष्य उस के पास खड़े हैं उन्हें देखके वुह तंबू के द्वार पर से उन की भेंट को दौड़ा॥ ३। और भूमि लों दंडवत किई और कहा हे मेरे स्वामी यदि मैं ने अब आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं आप की बिनती करता ऊं कि अपने दास के पास से चले न जाइये॥ ४। इच्छा होय तो थोड़ा जल लाया जाय और अपने चरण धोइये और पेड़ तले बिश्राम कीजिये॥ ५। और मैं एक कौर रोटी लाऊं और आप तृप्त ऊजिये उस के पीछे आगे बढ़िये क्योंकि आप इसी लिये अपने दास के पास आये हैं तब वे बोले कि जैसा तू ने कहा तैसा कर॥ ६। सो अबिरहाम तंबू में सरः पास उतावली से गया और उसे कहा कि फुरती कर और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूंध और उस के फुलके पका॥ ७। फिर अबिरहाम झुंड की ओर दौड़ा गया और एक अच्छा कोमल बछड़ा लेके दास को दिया उस ने भी उसे सिद्ध करने में चटक किया॥ ८। तब उस ने मखन और दूध और वुह बछड़ा जो पकाया था लिया और उन के आगे धरा और आप उन के पास पेड़ तले खड़ा रहा और उन्हों ने खाया॥ ९। तब उन्हों ने उसे पूछा कि तेरी

पत्नी सरः कहां है वुह बोला कि देखिये तंबू में है॥ १०। और उस ने कहा कि जीवन के समय के समान निश्चय मैं तुझ पास फिर आऊंगा और देख तेरी पत्नी सरः एक बेटा जनेगी और सरः उस के पीछे तंबू के द्वार पर सुनती थी॥ ११। और अबिरहाम और सरः बूढ़े और पुरनिये थे और सरः से स्त्री का व्यवहार जाता रहा॥ १२। तब सरः हंसके अपने मन में बोली कि क्या अब मुझे बुढ़ापे में और मेरा स्वामी भी पुरनिया है फिर आनंद होगा॥ १३। तब परमेश्वर ने अबिरहाम से कहा कि सरः क्यों यह कहिके मुसकुराई कि मैं जो बुढ़िया हूं सच मुच बालक जनूंगी॥ १४। क्या परमेश्वर के लिये कोई बात असाध्य है जीवन के समय के समान मैं ठहराये हुए समय में तुझ पास फिर आऊंगा और सरः को बेटा होगा॥ १५। तब सरः यह कहके मुकर गई कि मैं तो नहीं हंसी क्योंकि वुह डर गई थी तब उस ने कहा नहीं परन्तु तू हंसी है॥ १६। तब वे मनुष्य वहां से उठ के सदूम की ओर देखने लगे और अबिरहाम उन्हें बिदा करने को उन के साथ साथ चला॥ १७। फिर परमेश्वर ने कहा कि जो मैं करता हूं सो क्या अबिरहाम से छिपाऊं॥ १८। अबिरहाम तो निश्चय एक बड़ा और बलवान जाति होगा और पृथिवी के सारे जातिगण उस में आशीष पावेंगे॥ १९। क्योंकि मैं उसे जानता हूं कि वुह अपने पीछे अपने बालकों और अपने घराने को आज्ञा करेगा और वे न्याय और बिचार करने को परमेश्वर का मार्ग पालन करेंगे जिसतें जो कुछ परमेश्वर ने अबिरहाम के विषय में कहा है सो उस पर पहुंचावे॥ २०। फिर परमेश्वर ने कहा इस कारण कि सदूम और अमूरः का चिल्लाना बड़ा है और इस कारण कि उन के पाप अत्यंत गरू हुए॥ २१। मैं अब उतरके देखूंगा जो उस के चिल्लाने के समान जो मुझलों पहुंची है उन्हों ने किया है और यदि नहीं तो मैं जानूंगा॥ २२। तब उन मनुष्यों ने वहां से अपने मुंह फेरे और सदूम की ओर गये परन्तु अबिरहाम तद भी परमेश्वर के आगे खड़ा रहा॥ २३। और अबिरहाम ने पास जाके कहा कि क्या तू दुष्ट के संग धर्म्मी को भी नष्ट करेगा॥ २४। यदि नगर में पचास धर्म्मी होयें क्या तद भी नष्ट करेगा और उस के पचास धर्म्मियों के लिये उस स्थान को न

छोड़ेगा॥ २५। दुष्ट के संग धर्मी को मारना ऐसी बात तुझ से परे होय और कि धर्मी को दुष्ट के समान करना तुझ से दूर होय क्या सारी पृथिवी का न्यायी यथार्थ न करेगा॥ २६। तब परमेश्वर ने कहा यदि मैं सदूम नगर में पचास धर्मी पाऊं तो मैं उन के लिये सारे स्थान को छोड़ देऊंगा॥ २७। फिर अबिरहाम ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के आगे बोलने में ढिठाई किई यद्यपि मैं धूल और राख हूं॥ २८। यदि पचास धर्मियों से पांच घट होवें तो क्या पांच के लिये सारे नगर को नाश करेगा तब उस ने कहा यदि मैं उस में पैंतालीस पाऊं तो उसे नाश न करूंगा॥ २९। फिर उस ने उसे कहा यदि चालीस वहां पाये जावें तब उस ने कहा मैं चालीस के कारण ऐसा न करूंगा॥ ३०। फिर उस ने कहा हाय कि परमेश्वर क्रुद्ध न होवे तो मैं कहूं यदि वहां तीस होवें तब उस ने कहा यदि मै वहां तीस पाऊं तो ऐसा न करूंगा॥ ३१। फिर उस ने कहा कि देख मैं ने प्रभु के आगे बोलने में ढिठाई किई यदि बीस ही वहां पाये जायें तब उस ने कहा मैं बीस के कारण उसे नाश न करूंगा॥ ३२। फिर उस ने कहा हाय कि परमेश्वर क्रुद्ध न होवे तो मैं अब की बार फिर कहूं यदि वहां दस ही पाये जावें तब उस ने कहा मैं दस के कारण उसे नाश न करूंगा॥ ३३। तब परमेश्वर अबिरहाम से बात चीत समाप्त करके चला गया और अबिरहाम अपने स्थान को फिरा।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब॥

फिर सांझ को दो दूत सदूम में आये और लूत सदूम के फाटक पर बैठा था उन्हें देखकर लूत उन से भेंट करने को गया और भूमि लों दंडवत किई॥ २। और कहा कि हे स्वामियो अपने दास के घर की ओर चलिये और रात भर ठहरिये और चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग लीजिये तब उन्हों ने कहा कि नहीं परन्तु हम रात भर सड़क में रहेंगे॥ ३। पर जब उस ने उन्हें बहुत दबाया तब वे उस की ओर फिरे और उस के घर में आये तब उस ने उन के लिये जेवनार किया और अखमीरी रोटी उन के लिये पकाई और उन्हों ने खाई॥

४। उन के लेटने से आगे सदूम के नगर के मनुष्यों ने क्या तरुण क्या बूढ़े सब लोगों ने चारों ओर से आके उस घर को घेरा॥ ५। ओर लूत को पुकारके कहा कि जो पुरुष तेरे यहां आज रात आये हैं सो कहां हैं हमारे पास उन्हें बाहर ला जिसतें हम उन से संगम करें॥ ६। ओर लूत द्वार से उन पास बाहर गया ओर अपने पीछे द्वार बंद किया॥ ७। ओर कहा कि हे भाइयो ऐसी दुष्टता न करना॥ ८। देखो मेरी दो बेटियां हैं जो पुरुष से अज्ञान हैं कहो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर लाऊं ओर जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उन से करो केवल उन मनुष्यों से कुछ न करो क्योंकि वे इस लिये मेरी छत की छाया तले आये हैं॥ ९। उन्हों ने कहा कि हट जा ओर कहा कि यह एक जन हम्में टिकने को आया सो अब न्यायी होने चाहता है अब हम तेरे साथ उन से अधिक बुराई करेंगे तब वे उस पुरुष पर अर्थात् लूत पर ऊलर करके आये ओर द्वार तोड़ने को झपटे॥ १०। परन्तु उन पुरुषों ने अपने हाथ बढ़ाके लूत को घर में खींच लिया ओर द्वार बंद किया॥ ११। ओर क्या छोटे क्या बड़े सारे मनुष्यों को जो घर के द्वार पर थे अंधापन से मारा यहां लों कि वे द्वार ढूंढते ढूंढते थक गये॥ १२। तब उन पुरुषों ने लूत से कहा कि तेरा कोई ओर यहां है जवांई अथवा तेरे बेटे अथवा तेरी बेटियां जो कोई इस नगर में तेरा है उन्हें लेकर इस स्थान से निकल जा॥ १३। क्योंकि हम इस स्थान को नाश करेंगे इस लिये कि इन का चिल्लाना परमेश्वर के आगे बड़ा है ओर परमेश्वर ने हमें इसे नाश करने को भेजा है॥ १४। तब लूत निकला ओर अपने जवांइयों से जिन्हों से उस की बेटियां ब्याही थीं बोला ओर कहा कि उठो इस स्थान से निकलो क्योंकि परमेश्वर इस नगर को नष्ट करता है परन्तु वुह अपने जवांइयों के आगे जैसा कोई ठठेलू दिखाई दिया॥ १५। ओर जब बिहान हुआ दूतों ने लूत को शीघ्र करवाके कहा कि उठ अपनी पत्नी ओर अपनी दो बेटियां जो यहां हैं ले जा न हो कि तू इस नगर के दंड में भस्म हो जाय॥ १६। ओर जब लों वुह बिलंब करता था उन पुरुषों ने उस का ओर उस की पत्नी का ओर उस की दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा क्योंकि परमेश्वर

की कृपा उस पर थी और उसे निकालकर नगर के बाहर डाल दिया ॥ १७। और उन्हें बाहर निकालके यों कहा कि अपने प्राण के लिये भाग और पीछे मत देखना और सारे चौगान में न ठहरना पहाड़ पर भाग जा न होवे कि तू भस्म होवे ॥ १८। तब लूत ने उन्हें कहा कि हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं ॥ १९। देखिये अब आप के दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और तू ने अपनी दया बढ़ाई है जो तू ने मेरे प्राण बचाने में दिखाई है मैं अब पहाड़ पर नहीं जा सक्ता न होवे कि कोई बिपत मुझ पर पड़े और मैं मर जाऊं ॥ २०। अब देखिये कि यह नगर भागने को समीप है और वुह छोटा है मुझे उधर जाने दीजिये वुह क्या छोटा नहीं सो मेरा प्राण बच जायगा ॥ २१। और उस ने उसे कहा कि देख इस बात के विषय में भी मैं ने तेरे मुंह को ग्रहण किया है कि मैं इस नगर को जिस की तू ने कही उलट न देऊंगा ॥ २२। शीघ्र कर और उधर भाग क्योंकि जबलों तू वहां न पहुंचे मैं कुछ कर नहीं सक्ता इस लिये उस नगर का नाम सुग़र रक्खा ॥ २३। सूर्य पृथिवी पर उदय हुआ था जब लूत सुग़र में पहुंचा ॥ २४। तब परमेश्वर ने सदूम और अमूरः पर गंधक और आग परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से बरसाया ॥ २५। और उन नगरों को और नगरों के सारे निवासियों को और सारे चौगान को और जो कुछ भूमि पर उगता था उलट दिया ॥ २६। परन्तु उस की पत्नी ने उस के पीछे से फिरके देखा और वुह लोन का खंभा बन गई ॥ २७। और अबिरहाम उठके बिहान को तड़के उस स्थान में जहां वुह परमेश्वर के आगे खड़ा था आ पहुंचा ॥ २८। और उस ने सदूम और अमूरः और चौगान की सारी भूमि की ओर दृष्टि किई तो क्या देखता है कि उस भूमि से भट्ठी का सा धूआं उठ रहा है ॥ २९। और यों हुआ कि जब ईश्वर ने चौगान के नगरों को नष्ट किया तब ईश्वर ने अबिरहाम को स्मरण किया और उन नगरों को जहां लूत रहता था नष्ट करते हुए लूत को उस विपत्ति से छुड़ाया ॥ ३०। और लूत अपनी बेटियों समेत सुग़र से पहाड़ पर जा रहा क्योंकि वुह सुग़र में रहने को डरा तब वुह और उस की दो बेटियां एक कंदला में जा रहे ॥ ३१। और पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि हमारा पिता वृद्ध है और

पृथिवी पर कोई पुरुष नहीं रहा जो जगत की रीति के समान हमें ग्रहण करे॥ ३२। सो आओ हम अपने पिता को दाख रस पिलावें और हम उस के साथ शयन करें कि हम अपने पिता से बंश जुगावें॥ ३३। तब उन्हों ने उस रात अपने पिता को दाख रस पिलाया और पहिलौंठी भीतर गई और अपने पिता के साथ शयन किया उस ने उस के शयन करते और उठते सुरत न किई॥ ३४। और जब दूसरा दिन हुआ पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि देख मैं ने कल रात अपने पिता के साथ शयन किया हम उसे आज रात भी दाख रस पिलावें और तू जाके उस के साथ शयन कर जिसतें हम अपने पिता का बंश जुगावें॥ ३५। तब उन्हों ने अपने पिता को उस रात भी दाख रस पिलाया और छुटकी ने उठके उस के साथ शयन किया उस ने उस के भी न शयन करते न उठते हुए सुरत किई॥ ३६। इस रीति से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भिणी हुईं॥ ३७। और पहिलौंठी एक बेटा जनी और उस का नाम मोअब रक्खा वही आज लों मोअबियों का पिता है॥ ३८। और छुटकी भी एक बेटा जनी और उस का नाम बिनअम्मी रक्खा और वही आज लों अमून के बंश का पिता है॥

२० बीसवां पर्ब्ब॥

फिर अबिरहाम ने वहां से दक्खिन के देश को यात्रा किई और कादिस और सूर के बीच ठहरा और जिरार में टिका॥ २। और अबिरहाम अपनी पत्नी सरः के बिषय में बोला कि यह मेरी बहिन है सो जिरार के राजा अबिमलिक ने भेजके सरः को लेलिया॥ ३। परन्तु रात को ईश्वर ने अबिमलिक पास स्वप्न में आके कहा कि देख तू इस स्त्री के कारण जिसे तू ने लिया है मर चुका क्योंकि वुह पति से ब्याही है॥ ४। परन्तु अबिमलिक उस पास न आया था तब उस ने कहा कि हे परमेश्वर क्या तू धर्म्मी जाति को भी मार डालेगा॥ ५। क्या उस ने मुझे नहीं कहा कि वुह मेरी बहिन है और वुह आपही बोली कि वुह मेरा भाई है मैं ने अपने मन की सच्चाई और हाथ की निर्दोषता से ऐसा किया है॥ ६। तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में कहा कि मैं भी जानता हूं कि तू ने अपने

मन की सच्चाई से ऐसा किया है क्योंकि मैं ने भी तुझे मेरे बिरुद्ध पाप करने से रोका इस लिये मैं ने तुझे उसे छूने न दिया॥ ७। सो अब उस पुरुष को उस की पत्नी फेर दे क्योंकि वुह भविष्यद्वक्ता है और वुह तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा परन्तु यदि तू उसे फेर न देगा तो यह जान कि तू और तेरे सारे जन निश्चय मरेंगे॥ ८। तब अबिमलिक ने बिहान को तड़के उठकर अपने सारे सेवकों को बुलाया और ये सारी बातें उन्हें सुनाईं तब वे बज़त डर गये॥ ९। तब अबिमलिक ने अबिरहाम को बुलाया और उसे कहा कि तू ने हम से क्या किया है और मैं ने तेरा क्या अपराध किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप लाया है तू ने मुझसे अनुचित काम किये॥ १०। फिर अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि तू ने क्या देखा जो तू ने यह काम किया है॥ ११। अबिरहाम बोला इस कारण कि मैं ने समझा कि निश्चय ईश्वर का भय इस स्थान में नहीं है और मेरी पत्नी के लिये वे मुझे मार डालेंगे॥ १२। और तथापि वुह मेरी बहिन निश्चय है वुह मेरे पिता की पुत्री है परन्तु मेरी माता की पुत्री नहीं सो मेरी पत्नी ज़ई॥ १३। और जब ईश्वर ने मेरे पिता के घर से मुझे भ्रमाया तो यूं ज़आ कि मैं ने उसे कहा कि मुझ पर तू यही अनुग्रह कर कि जहां कहीं जिधर हम जायें मेरे बिषय में कह कि वुह मेरा भाई है॥ १४। तब अबिमलिक ने भेड़ बकरी गाय बैल और दास दासियां लेकर अबिरहाम को दिया और उस की पत्नी सरः को भी उसे फेर दिया॥ १५। फिर अबिमलिक ने कहा कि देख मेरा देश तेरे आगे है जहां तेरा मन भावे तहां रह॥ १६। और उस ने सरः से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई को सहस्र टुकड़ा चांदी दिई है देख तेरे सारे संगियों के लिये और सभों के लिये वुह तेरी आंखों की ओट होगी सो वुह यों दपटी गई॥ १७। तब अबिरहाम ने ईश्वर की प्रार्थना किई और ईश्वर ने अबिमलिक और उस की पत्नी और उस की दासियों को चंगा किया और वे जन्ने लगीं॥ १८। क्योंकि परमेश्वर ने अबिरहाम की पत्नी सरः के लिये अबिमलिक की सारी कोखों को बंद कर दिया था।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब ।

और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सरः से भेंट किया और अपने वचन के समानपरमेश्वर ने सरः के विषय में किया ॥ २। क्योंकि सरः गर्भिणी ऊई और अबिरहाम के लिये उस के बुढ़ापे में ठीक उसी समय में जो ईश्वर ने उसे कहा था एक बेटा जनी ॥ ३। और अबिरहाम ने अपने बेटे का नाम जिसे सरः उस के लिये जनी थी ईज़हाक रक्खा ॥ ४। और ईश्वर की आज्ञा के समान अबिरहाम ने आठवें दिन अपने बेटे इज़हाक़ का ख़तनः किया ॥ ५। जब उस का बेटा इज़हाक़ उस्से उत्पन्न ऊआ तब अबिरहाम सौ बरस का दृद्ध था ॥ ६। तब सरः बोली की ईश्वर ने मुझे हंसाया सारे सुनवैये मेरे लिये हंसेंगे ॥ ७। फिर वुह बोली कि कौन अबिरहाम से कहता कि सरः बालक को दूध पिलावेगी क्योंकि उस के बुढ़ापे में मैं उस के लिये बेटा जनी ॥ ८। और वुह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इज़हाक़ के दूध छुड़ाने के दिन अबिरहाम ने बड़ा जेवनार किया ॥

९। और सरः ने मिस्री हाजिरः के बेटे को जिसे वुह अबिरहाम के लिये जनी थी चिढ़ाते देखा ॥ १०। उस ने अबिरहाम से कहा कि आप इस लौंडी को और उस के बेटे को निकाल दीजिये क्योंकि यह लौंडी का बेटा मेरे बेटे इज़हाक के साथ अधिकारी न होगा ॥ ११। और अपने बेटे के लिये यह बात अबिरहाम को बड़ी कड़वी लगी ॥ १२। तब ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि लड़के के और तेरी लौंडी के विषय में तुझे कड़वी न लगे सब जो सरः ने तुझे कहा मान ले क्योंकि तेरा वंश इज़हाक से गिना जायगा ॥ १३। और मैं उस लौंडी के बेटे से भी एक जाति उत्पन्न करूंगा क्योंकि वुह तेरा वंश है ॥ १४। तब अबिरहाम ने बड़े तड़के उठके रोटी और एक कुप्पे में पानी लिया और हाजिरः के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे सौंप के उसे बिदा किया वुह चल निकली और बिअरसबः के बन में भ्रमती फिरी ॥ १५। और जब कुप्पे का पानी चुक गया तब उस ने उस लड़के को एक झाड़ी के तले डाल दिया ॥ १६। और आप उस के सम्मुख

एक तीर के टप्पे पर दूर जा बैठी क्योंकि वुह बोली कि मैं इस बालक की मृत्यु को न देखूं और वुह उस के सन्मुख बैठ के चिल्ला चिल्ला रोई॥ १७। तब ईश्वर ने उस बालक का शब्द सुना और ईश्वर के दूत ने स्वर्ग में से हाजिरः को पुकारा और उसे कहा कि हे हाजिरः तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां वुह बालक है तहां ईश्वर ने उस के शब्द को सुना है॥ १८। उठ और उस लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से धर ले कि मैं उस्से एक बड़ी जाति बनाऊंगा॥ १९। और ईश्वर ने उस की आंखें खोलीं तब उस ने पानी का एक कूआं देखा और उस ने जाके उस कुप्पे को पानी से भरा और उस लड़के को पिलाया॥ २०। और ईश्वर उस लड़के के साथ था और वुह बढ़ा और बन में रहा किया और धनुषधारी हुआ॥ २१। फिर उस ने फ़ारान के बन में जाके निवास किया और उस की माता ने मिस्र देश से उस के लिये एक पत्नी लिई॥ २२। और उस समय में यों हुआ कि अबिमलिक् और उस की सेना के प्रधान फीकुल्ल ने अबिरहाम को कहा कि सब कार्यों में जो तू करता है ईश्वर तेरे संग है॥ २३। और अब मुझ्से ईश्वर की किरिया खा कि मैं तुझ्से और तेरे बेटों और तेरे पोतों से छल न करूंगा उस अनुग्रह के समान जो मैं ने तुझ पर किया है मुझ्से और उस भूमि से जहां तू टिका है करे॥ २४। तब अबिरहाम बोला कि मैं किरिया खाऊंगा॥ २५। और अबिरहाम ने पानी के एक कूएं के लिये जिसे अबिमलिक् के सेवकों ने बरबस्ती से लेलिया था अबिमलिक को दपटा॥ २६। तब अबिमलिक ने कहा कि मैं नहीं जानता किस ने यह काम किया है और आप ने भी तो मुझ्से न कहा और मैं ने भी तो आजही सुना॥ २७। फिर अबिरहाम ने भेड़ और गाय बैल लेके अबिमलिक् को दिये और उन दोनों ने आपुस में नियम बांधा॥ २८। तब अबिरहाम ने झुंड में से सात मेम्ने अलग रक्खे॥ २९। और अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि आप ने भेड़ के सात मेम्ने क्यों अलग रक्खे हैं॥ ३०। उस ने कहा इस कारण कि तू उन भेड़ के सात मेम्नों को मेरे हाथ से ले कि वे मेरी साक्षी होवें कि मैं ने यह कूआं खोदा है॥ ३१। इस कारण उस ने उस स्थान का नाम बीअरसबअ् रक्खा क्योंकि उन दोनों ने वहां आपुस

में किरिया खाई॥ ३२। सो उन्हों ने बीअरसबअ में नियम बांधा तब अबिमलिक और उस का प्रधान सेनापति फीकुल उठे और फिलिस्तीयों के देश में फिर गये॥ ३३। तब उस ने बीअरसबअ में कुंज लगाया और वहां सनातन के ईश्वर परमेश्वर का नाम लिया॥ ३४। और अबिरहाम फिलिस्ती के देश में बहुत दिन लों टिका॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

इन बातों के पीछे यूं हुआ कि ईश्वर ने अबिरहाम की परीक्षा किई और उसे कहा हे अबिरहाम वुह बोला कि देख इहां हूं॥ २। फिर उस ने कहा कि तू अपने बेटे को अपने एकलौते इज़्हाक को जिसे तू प्यार करता है ले और मोरिः के देश में जा और वहां पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं तुझे बताऊंगा उसे होम की भेंट के लिये चढ़ा॥ ३। तब अबिरहाम ने तड़के उठकर अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने तरुणों में से दो को और अपने बेटे इज़्हाक को साथ लिया और होम की भेंट के लिये लकड़ियां चीरीं और उठके जहां ईश्वर ने उसे आज्ञा किई थी तहां चला गया॥ ४। तीसरे दिन अबिरहाम ने अपनी आंखें ऊपर किईं तो उस स्थान को दूर से देखा॥ ५। तब अबिरहाम ने अपने तरुणों से कहा कि गदहे के साथ यहीं ठहरो और मैं इस लड़के के साथ वहां लों जाता हूं और सेवा करके फिर तुम्हारे पास आवेंगे॥ ६। तब अबिरहाम ने होम की भेंट की लकड़ियां लेकर अपने बेटे इज़्हाक पर लादीं और आग और छूरी अपने हाथ में लिई और दोनो साथ साथ गये॥ ७। और इज़्हाक अपने पिता अबिरहाम से बोला कि हे पिता वुह बोला हे बेटे मैं यहीं हूं उस ने कहा कि देखिये आग और लकड़ियां तो हैं पर होम की भेंट के लिये भेड़ कहां है॥ ८। और अबिरहाम बोला कि हे बेटे ईश्वर होम की भेंट के लिये भेड़ आपही सिद्ध करेगा सो वे दोनों साथ साथ चले गये॥ ९। और उस स्थान में जहां ईश्वर ने कहा था आये तब अबिरहाम ने वहां एक बेदी बनाई और उन लकड़ियों को वहां चुना और अपने बेटे इज़्हाक को बांधके उस बेदी में लकड़ियों पर धरा॥ १०। और अबिरहाम ने

छूरी लेके अपने बेटे को घात करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया॥ ११। तब परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग पर से उसे पुकारा कि अबिरहाम अबिरहाम वुह बोला यहीं हूं॥ १२। तब उस ने कहा कि अपना हाथ लड़के पर मत बढ़ा और उसे कुछ मत कर क्योंकि अब मैं जानता हूं कि तू ईश्वर से डरता है क्योंकि तू ने अपने बेटे अपने एकलौते को मुझ से न रख छोड़ा॥ १३। तब अबिरहाम ने अपनी आंखें ऊपर करके देखा और क्या देखता है कि अपने पीछे एक मेंढ़ा झाड़ी में सींगों से अटका हुआ है तब अबिरहाम ने जाके उस मेंढ़ को लिया और होम की भेंट के लिये अपने बेटे की संती चढ़ाया॥ १४। और अबिरहाम ने उस स्थान का यह नाम रक्खा कि परमेश्वर देखेगा जैसा कि आज लों कहा जाता है कि पहाड़ पर परमेश्वर देखा जायगा॥

१५। फिर परमेश्वर के दूत ने दोहराके स्वर्ग में से अबिरहाम को पुकारा॥ १६। और कहा कि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनी हीं किरिया खाई है इस कारण कि तू ने यह कार्य किया और अपने बेटे अपने एकलौते को न रख छोड़ा॥ १७। मैं तुझे आशीष पर आशीष देऊंगा और आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान तेरे बंश को बढ़ाऊंगा और तेरे बंश अपने बैरी के फाटक के अधिकारी होंगे॥ १८। और तेरे बंश में पृथिवी के सारे जातिगण आशीष पावेंगे इस कारण कि तू ने मेरा शब्द माना है॥ १९। और अबिरहाम अपने तरुणों के पास फिर आया और वे उठके एकट्ठे बीअरसबअ को गये और अबिरहाम बीअरसबअ में रहा॥ २०। और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिरहाम को संदेश पहुंचा कि मिलकः भी तेरे भाई नहूर से बालक जनी॥ २१। ऊज़ उस का पहिलौंठा और उस का भाई बूज़ और क़मूएल अराम का पिता॥ २२। और कसद और हज़ू और फिल्दास और इद्‌लाफ और बतूएल॥ २३। और बतूएल से रिबकः उत्पन्न हुई मिलकः अबिरहाम के भाई नहूर से ये आठ उत्पन्न हुए॥ २४। और उस की सुरैतिन से जिस का नाम रूमह था उससे तिबख़ और जहम और ताहाश और मअकः उत्पन्न हुए॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब॥

और सरः की बय एक सै। सताईस बरस की ऊई सरः के जीवन के बरस इतने थे॥ २। और सरः करयत अरबअ् में जो कनअ़ान देश में हबरून है मर गई तब अबिरहाम सरः के लिये बिलाप करने और रोने को आया॥ ३। फिर अबिरहाम अपने मृतक से उठ खड़ा ऊआ और हित्त के बेटों से यह कहिके बोला॥ ४। कि मैं परदेशी और तुम में टिकवैया ऊं तुम अपने यहां मुझे एक समाधि का स्थान अधिकार में दो जिसतें मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ूं॥ ५। हित्त के संतान ने अबिरहाम को उत्तर देके कहा॥ ६। कि हे स्वामी हमारी सुनिये आप हम्में ईश्वर के अध्यक्ष हैं सो आप हमारे समाधिन में से चुनके एक में अपने मृतक को गाड़िये हम्में कोई अपनी समाधि आप से न रख छोड़ेगा जिसतें आप अपने मृतक को गाड़ें॥ ७। तब अबिरहाम खड़ा ऊआ और उस देश के लोग अर्थात् हित्त के संतान को प्रणाम किया॥ ८। और उन से बात चीत करके कहा कि यदि तुम्हारा मन होवे कि मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ूं तो मेरी सुनो और मेरे लिये सुहर के बेटे इफ़रून से बिनती करो॥ ९। जिसतें वुह मकफीलः की कंदला मुझे देवे जो उस के खेत के सिवाने पर है उस का पूरा मोल लेके मेरे बश में करदे जिसतें मैं तुम्हों में एक समाधि का अधिकार रक्खों॥ १०। और इफरून हित्त के संतानों में बास करता था और इफरून हत्ती ने हित्त के संतानों के और सबके सुन्ने में जो नगर के फाटक में गये थे अबिरहाम को उत्तर में कहा॥ ११। नहीं मेरे प्रभु मेरी सुनिये मैं यह खेत आप को देता ऊं और वुह कंदला जो उस में है आप को देता ऊं मैं अपने लोगों के बेटों के आगे आप को देता ऊं अपना मृतक गाड़िये॥ १२। तब अबिरहाम ने उस देश के लोगों को प्रणाम किया॥ १३। फिर उस देश के लोगों के सुन्ने में वुह इफरून से यों कहिके बोला कि यदि तू देगा तो मेरी सुन ले मैं तुझे उस खेत के लिये रोकड़ देऊंगा मुझसे ले और मैं अपने मृतक को वहां गाड़ूंगा॥ १४। इफरून ने अबिरहाम

को उत्तर देके कहा॥ १५। मेरे प्रभु मेरी सुनिये उस भूमि का मोल चार सौ शैकल चांदी है यह मेरे और आप के आगे क्या वस्तु है सो आप अपने मृतक को गाड़िये॥ १६। और अबिरहाम ने इफरून की मान लिई और उस चांदी को इफरून के लिये तौल दिया जो उस ने हित्त के बेटों के सुन्ने में कही थी अर्थात् चार सौ शैकल चांदी जिन की चलन बैपारियों में थी॥ १७। सो इफरून का खेत जो मकफील: में ममरी के आगे था वुह खेत और कंदला जो उसमें थी और उस खेत में के सारे पेड़ जो चारों ओर उस के सिवाने में थे॥ १८। हित्त के संतानों के आगे और सभों के आगे जो नगर के फाटक में से भीतर जाते थे अबिरहाम के अधिकार के लिये दृढ़ किये गये॥ १९। इस के पीछे अबिरहाम ने अपनी पत्नी सरः को मकफील: के खेत की कंदला में जो ममरी के आगे है गाड़ा वही हबरून कनआन देश में है॥ २०। और वुह खेत और उस में की कंदला हित्त के संतानों से अबिरहाम के हाथ में समाधि स्थान के लिये दृढ़ किये गये॥

२४ चौबीसवां पर्व्व।

और अबिरहाम वृद्ध और दिनी हुआ और परमेश्वर ने सब बातों में अबिरहाम को बर दिया था॥ २। और अबिरहाम ने अपने घर के पुराने सेवक को जो उस की सारी संपत्ति का प्रधान था कहा कि अपना हाथ मेरी जांघ तले रख॥ ३। और मैं तुझ से परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर और पृथिवी के ईश्वर की किरिया लेऊंगा कि तू कनआनियों की लड़कियों में से जिन में मैं रहता हूं मेरे बेटे के लिये पत्नी न लेना॥ ४। परन्तु तू मेरे देश और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे इज़हाक के लिये पत्नी लीजियो॥ ५। परन्तु उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने वुह स्त्री इस देश में मेरे संग आने को न चाहे तो क्या अवश्य मैं आप के बेटे को उस देश में जहां से आप आये हैं फिर लेजाऊं॥ ६। अबिरहाम ने उसे कहा चौकस रह तू मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जाना॥ ७। परमेश्वर स्वर्ग का ईश्वर जो मेरे पिता के घर से और मेरे जन्म भूमि से मुझे निकाल लाया और जिस ने मुझे कहा और मुझ से किरिया

खाके बोला कि मैं तेरे बंश को यह देश देऊंगा वही तेरे आगे अपना दूत भेजेगा और वहीं से तू मेरे बेटे के लिये पत्नी लेना॥ ८। और यदि वुह स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट जायगा केवल मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जा॥ ९। उस सेवक ने अपना हाथ अपने स्वामी अबिरहाम की जांघ तले रक्खा और उस बात के बिषय में उस के आगे किरिया खाई॥ १०। और उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट लिये और चल निकला क्योंकि उस के स्वामी की सारी संपत्ति उस के हाथ में थी सो वुह उठा और अरामनहरी में नहूर के नगर को गया॥ ११। और उस ने अपने ऊंटों को नगर के बाहर पानी के कूएं के पास सांझ के समय में जब कि स्त्रियां पानी भरने को बाहर जाती हैं बैठाया॥ १२। और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर मैं आप की बिनती करता हूं आज मेरा कार्य्य सिद्ध कीजिये और मेरे स्वामी अबिरहाम पर दया कीजिये॥ १३। देख मैं पानी के कूएं पर खड़ा हूं और नगर के पुरुषों की बेटियां पानी भरने आती हैं॥ १४। ऐसा होवे कि वुह कन्या जिसे मैं कहूं कि अपना घड़ा उतार जिसतें मैं पीऊं और वुह कहे कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी वही हो जिसे तू ने अपने दास इज़हाक के लिये ठहराया है और इसी से मैं जानूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर दया किई है॥ १५। इतनी बात समाप्त न करते ही ऐसा हुआ कि देखो रिबकः जो अबिरहाम के भाई नहूर की पत्नी मिलकः के बेटे बतूएल से उत्पन्न हुई थी अपना घड़ा अपने कांधे पर धरे हुए बाहर निकली॥ १६। और वुह कन्या रूपवती और कुमारी थी जिस्से पुरुष अज्ञान था उस कूएं पर गई और अपना घड़ा भरके ऊपर आई॥ १७। वुह सेवक उस की भेंट को दौड़ा और बोला मैं तेरी बिनती करता हूं अपने घड़े से थोड़ा पानी पिला॥ १८। वुह बोली कि पीजिये मेरे प्रभु और उस ने फुरती करके घड़ा हाथ पर उतारके उसे पिलाया॥ १९। जब उसे पिला चुकी तो बोली मैं तेरे ऊंटों के लिये भी जबलों वे जल से तृप्त हों खींचती जाऊंगी॥ २०। और उस ने फुरती करके अपना घड़ा कठरे में उंडेला और फिर कूएं पर भरने को दौड़ी और

उस के सब ऊंटों के लिये खींचा॥ २१। और वुह पुरुष आश्चर्य करके देख रहा कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सफल किई है कि नहीं॥ २२। और यों ऊआ कि जब ऊंट पी चुके तो उस पुरुष ने आधे शैकल भर सोने की एक नथ और दस भर सोने के दो खड़वे उस के हाथों के लिये निकाले॥ २३। और कहा कि तू किसकी बेटी है मुझे बता तेरे पिता के घर में हमारे लिये रात भर टिकने का स्थान है॥ २४। और उस ने उसे कहा कि मैं मिलकः के बेटे बतूएल की कन्या हूं जिसे वुह नहूर के लिये जनी॥ २५। और उस ने उसे कहा कि हमारे यहां घास चारा भी बऊत है और रात भर टिकने का स्थान॥ २६। तब उस पुरुष ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की दंडवत किई॥ २७। और कहा कि परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम का ईश्वर धन्य है जिस ने मेरे स्वामी को अपनी दया और अपनी सच्चाई बिना न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के घर की ओर मेरी अगुआई किई॥ २८। तब वुह लड़की दौड़ी और अपनी माता के घर में ये बातें कहीं॥ २९। और लाबन नाम रिबकः का एक भाई था जो बाहर कूएं पर उस मनुष्य कने दौड़ा॥ ३०। और यों ऊआ कि जब उस ने वुह नथ और खड़वे अपनी बहिन के हाथों में देखे और जब उस ने अपनी बहिन रिबकः से ये बातें कहते सुनी कि इस मनुष्य ने मुझे यों कहा वुह उस पुरुष पास आया और क्या देखता है कि वुह ऊंटों के पास कूएं पर खड़ा है॥ ३१। और कहा कि हे ईश्वर के आशीषित तू भीतर आ तू किस लिये बाहर खड़ा है क्योंकि मैं ने तेरे और तेरे ऊंटों के लिये घर सिद्ध किया है॥ ३२। और वुह पुरुष घर में आया और उस ने अपने ऊंटों के पलान खोले और ऊंटों के लिये घास चारा और उस के और लोगों के जो उस के साथ थे चरण धोने को जल दिया॥ ३३। और भोजन उस के आगे रक्खा गया पर वुह बोला कि जब लों मैं अपना संदेश न पऊंचाऊं मैं न खाऊंगा वुह बोला कहिये॥ ३४। तब उस ने कहा कि मैं अबिरहाम का सेवक हूं॥ ३५। और परमेश्वर ने मेरे स्वामी को बऊत सा बर दिया है और वुह महान ऊआ है और उस ने उसे झुंड और ढोर और सोना चांदी और

दास और दासियां और ऊंट और गधे दिये हैं॥ ३६। और मेरे स्वामी की पत्नी सरः बुढ़ापे में उस के लिये बेटा जनी और उस ने अपना सब कुछ उसे दिया है॥ ३७। और मेरे स्वामी ने यह कहके मुझ से किरिया लिई कि तू कनआनियों की बेटियों में से जिन के देश में मैं रहता हूं मेरे बेटे के लिये पत्नी मत लीजियो॥ ३८। परन्तु मेरे पिता के घराने और मेरे कुटुंब में जाइयो और मेरे बेटे के लिये पत्नी लाइयो॥ ३९। और मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जाने वुह स्त्री मेरे साथ न आवे॥ ४०। उस ने मुझे कहा कि परमेश्वर जिस के आगे मैं चलता हूं अपना दूत तेरे संग भेजेगा और तेरी यात्रा सफल करेगा तू मेरे कुटुम्ब और मेरे पिता के घराने से मेरे बेटे के लिये पत्नी लीजियो॥ ४१। और जब तू मेरे कुटुंब में आवे तब तू मेरी किरिया से बाहर होगा और यदि वे तुझे न देवें तो तू मेरी किरिया से बाहर हो जायगा॥ ४२। सो मैं आज के दिन कूएं पर आया और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर यदि तू अब मेरी यात्रा सफल करे॥ ४३। देख मैं जलके कूएं पर खड़ा हूं और यों होगा कि जब कुमारी जल भरने निकले और मैं उसे कहूं कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने घड़े से मुझे थोड़ा पानी पिला॥ ४४। और वुह मुझे कहे कि तू भी पी और मैं तेरे ऊंटों के लिये भी भरूंगी तो वही वुह स्त्री होवे जिसे परमेश्वर ने मेरे स्वामी के बेटे के लिये ठहराया है॥ ४५। इतनी बात मेरे मन में समाप्त न होतेही देखो रिबकः अपने कांधे पर घड़ा लेके बाहर निकली और वुह कूएं पर उतरी और खींचा और मैं ने उसे कहा कि मुझे पिला॥ ४६। उस ने फुरती करके अपना घड़ा उतारा और बोली कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो मैं ने पीया और उस ने ऊंटों को भी पिलाया॥ ४७। फिर मैं ने उस्से पूछा और कहा कि तू किसकी बेटी है वुह बोली कि नहूर के बेटे बतूएल की लड़की जिसे मिलकः उस के लिये जनी और मैं ने नथ उस की नाक में और खड़वे उस के हाथों में डाले॥ ४८। और मैं ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की स्तुति किई और अपने स्वामी अबिरहाम के ईश्वर परमेश्वर का धन्य माना जिस ने मुझे ठीक

मार्ग में मेरी अगुआई किई कि अपने स्वामी के भाई की बेटी उस के बेटे के लिये लेऊं॥ ४९। सो अब यदि तुम कृपा और सच्चाई से मेरे स्वामी के साथ व्यवहार किया चाहो तो मुझ से कहो और यदि नहीं तो मुझ से कहो कि मैं दहिने अथवा बायें हाथ फिरूं॥ ५०। तब लाबन और बतूएल ने उत्तर दिया और कहा कि यह बात परमेश्वर की ओर से है हम तुझे बुरा अथवा भला नहीं कहि सक्ते॥ ५१। देख रिबक: तेरे आगे है इसे ले और जा और जैसा परमेश्वर ने कहा है अपने स्वामी के बेटे की पत्नी इसे कर दे॥ ५२। और ऐसा हुआ कि जब अबिरहाम के सेवक ने ये बातें सुनीं भूमि लों परमेश्वर के आगे दंडवत किई॥

५३। और सेवक ने चांदी और सोने के बर्तन और पहिरावा निकाला और रिबक: को दिया और उस ने उस के भाई और उस की माता को भी बहुमूल्य वस्तु दिई॥ ५४। और उस ने और उस के साथी मनुष्यों ने खाया और पीया और रात भर ठहरे और वे बिहान को उठे और उस ने कहा कि मुझे मेरे स्वामी पास भेजिये॥ ५५। और उस के भाई और उस की माता ने कहा कि कन्या को हमारे संग एक दस दिन रहने दीजिये उस के पीछे वुह जायगी॥ ५६। और उस ने उन्हें कहा कि मुझे मत रोको कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सफल किई है मुझे बिदा करो कि मैं अपने स्वामी पास जाऊं॥ ५७। वे बोले हम उस कन्या को बुलाके उसी से पूछते हैं॥ ५८। तब उन्हों ने रिबक: को बुलाया और उसे कहा कि तू इस पुरुष के साथ जायगी और वुह बोली कि जाऊंगी॥ ५९। सो उन्हों ने अपनी बहिन रिबक: और उस की दाई और अबिरहाम के सेवक और उस के लोगों को बिदा किया॥ ६०। और उन्हों ने रिबक: को आशीष दिया और उसे कहा कि तू हमारी बहिन है कड़ोरों की माता हो और तेरा वंश उन के द्वारों का जो उस्से बैर रखते हैं अधिकारी होवे॥ ६१। और रिबक: और उस की सहेलियां उठीं और ऊंटों पर चढ़के उस मनुष्य के पीछे हुईं और उस सेवक ने रिबक: को लिया और अपना मार्ग पकड़ा॥ ६२। और इजहाक सजीवन देखनेवाले के कूएं पर मार्ग में आ निकला था क्योंकि वुह दक्खिन देश में रहता था॥ ६३। और इजहाक संध्याकाल को ध्यान करने के

लिये खेत को निकला उस ने अपनी आंखें ऊपर किईं और क्या देखता है कि ऊंट चले आते हैं॥ ६४। रिबक़: ने अपनी आंखें उठाईं और जब उस ने इज़हाक़ को देखा तो ऊंट पर से उतर पड़ी॥ ६५। और उस ने सेवक से पूछा कि यह जन जो खेत से हमारी भेंट को चला आता है कौन है सेवक ने कहा कि मेरा स्वामी है इस लिये उस ने घूंघट लेके अपने तईं ढांपा॥ ६६। तब सेवक ने सब कुछ जो उस ने किया था इज़हाक़ से कहा॥ ६७। और इज़हाक़ उसे अपनी माता सर: के तंबू में लाया और रिबक़: को लिया वह उस की पत्नी ऊई उस ने उसे प्यार किया और इज़हाक़ ने अपनी माता के मरने के पीछे शांति पाई॥

२५ पचीसवां पर्व्व ।

तब अबिरहाम ने क़तूर: नाम की एक पत्नी लिई॥ २। और उस्से ज़िमरान और युक़सान और मिदान और मिदयान और इसबाक़ और सूख़ उत्पन्न ऊए॥ ३। और युक़सान से सिबा और ददान उत्पन्न ऊए और ददान के बेटे असूर और लतूसी और लोमी॥ ४। और मिदयान के बेटे ऐफ: और गिफ़र और हनूक और अबिदा: और इल्दाआ उत्पन्न ऊए ये सब क़तूर: के लड़के थे॥ ५। और अबिरहाम ने अपना सब कुछ इज़हाक़ को दिया॥ ६। परन्तु दासियों के बेटों को अबिरहाम ने दान दिये और अपने जीते जी उन्हें अपने बेटे इज़हाक़ पास से पूरब देश में भेज दिया॥ ७। और अबिरहाम के जीवन के दिन जिन में वुह जीता रहा एक सौ पचहत्तर बरस थे॥ ८। तब अबिरहाम ने अच्छे वृद्ध बय में परिपूर्ण और वृद्ध मनुष्य होके प्राण त्यागा और अपने लोगों में बटोरा गया॥ ९। और उस के बेटे इज़हाक़ और इसमअएल ने मकफ़ील: की कंदला में हित्ती सुग़ के बेटे ईफ़रून के खेत में जो ममरी के आगे है उसे गाड़ा॥ १०। यही खेत अबिरहाम ने हित्त के बेटों से मोल लिया था अबिरहाम और उस की पत्नी सर: वहीं गाड़े गये॥ ११। और अबिरहाम के मरने के पीछे यों ऊआ कि ईश्वर ने उस के बेटे इज़हाक़ को आशीष दिया और इज़हाक़ सजीवन देखवैया के कूएं के पास रहता था॥ १२। और अबिरहाम के बेटे इसमअएल की

वंशावली जिसे सरः की लौंडी मिस्री हाजिरः अबिरहाम के लिये जनी थी ये हैं॥ १३। उन की वंशावली की रीति के समान इसमअएल के बेटों के नाम ये हैं इसमअएल का पहिलौंठा नबीत और कीदार और अदबिएल और मिबसाम॥ १४। और मिसमाअ और दूमः और मस्सा॥ १५। और हदर और तैमा और इतूर और नफीस और क़िदिमः॥ १६। ये इसमअएल के बेटे हैं और उन के नाम उन की बसतियों और उन की गढ़ियों में ये हैं और ये अपनी जातिगणों के बारह अध्यक्ष थे॥ १७। और इसमअएल के जीवन के बरस एक सौ सैं तीस थे कि उस ने अपना प्राण त्यागा और मर गया और अपने लोगों में बटुर गया॥ १८। और वे हवीलः से सूर लों जो असूर के मार्ग में मिस्र के आगे है बसते थे उस ने अपने सारे भाइयों के आगे बास किया॥

१९। और अबिरहाम के बेटे इज़हाक की वंशावली यह है कि अबिरहाम से इज़हाक उत्पन्न हुआ॥ २०। इज़हाक ने चालीस बरस की बय में रिबक़ः से बिवाह किया वुह फद्दानअराम के सुरियानी बतूएल की बेटी और सुरियानी लाबन की बहिन थी॥ २१। और इज़हाक ने अपनी पत्नी के लिये परमेश्वर से बिनती किई क्योंकि वुह बांझ थी और परमेश्वर ने उस की बिनती मानी और उस की पत्नी रिबक़ः गर्भिणी हुई॥ २२। और उस के पेट में बालक आपुस में छेड़ा छेड़ी करने लगे तब उस ने कहा यदि यों तो ऐसा क्यों हों और वुह परमेश्वर से बूझने को गई॥ २३। परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में दो जातिगण हैं और तेरी कोख से दो रीति के लोग अलग होंगे और एक लोग दूसरे लोग से बलवंत होगा और जेठ कनिष्ठ की सेवा करेगा॥ २४॥ और जब उस के जन्ने के दिन पूरे हुए तो क्या देखते हैं कि उस के गर्भ जमल थे॥ २५। सो पहिला ऐसा जैसा रोम का पहिरावा होता है बालों में छिपा हुआ लाल रंग का निकला और उन्हों ने उस का नाम एसौ रक्खा॥ २६। उस के पीछे उस का भाई निकला और उस का हाथ एसौ की एड़ी से लगा हुआ था और उस का नाम यअक़ूब रक्खा गया जब वुह उन्हें जनी तो इज़हाक की बय साठ बरस की थी॥ २७। और लड़के बढ़े और एसौ खेत का रहवैया

और चतुर अहेरी था और यअक़ूब सूधा मनुष्य तंबू में रहा करता था॥ २८। और इज़्हाक़ एसौ को प्यार करता था क्योंकि वुह उस के अहेर से खाता था परन्तु रिबक़: यअक़ूब को चाहती थी॥ २९। और यअक़ूब ने लपसी पकाई और एसौ खेत से आया और वुह थक गया था॥ ३०। और एसौ ने यअक़ूब से कहा मैं तेरी बिनती करता हूं कि इस लाल लाल में से मुझे खिला क्योंकि मैं मूर्छित हूं इस लिये उस का नाम अदूम हुआ॥ ३१। तब यअक़ूब ने कहा कि आज अपना जन्म पद मेरे हाथ बेच॥ ३२। तब एसौ ने कहा देख मैं मरने पर हूं और इस जन्म पद से मुझे क्या लाभ होगा॥ ३३। तब यअक़ूब ने कहा कि आज मुझ से किरिया खा उस ने उस्से किरिया खाई और अपना जन्म पद यअक़ूब के हाथ बेचा॥ ३४। तब यअक़ूब ने रोटी और मसूर की दाल की लपसी दिई उस ने खाया और पीया और उठके चला गया यों एसौ ने अपने जन्म पद की निंदा किई।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब॥

और उस देश में पहिले अकाल को छोड़ जो अबिरहाम के दिनों में पड़ा था फिर अकाल पड़ा तब इज़्हाक़ अबिमलिक पास जो फिलिस्तियों का राजा था जिरार को गया॥ २। और परमेश्वर ने उस पर प्रगट होके कहा मिस्र को मत उतरजा जहां मैं तुझे कहूं उस देश में निवास कर॥ ३। तू इस देश में टिक और मैं तेरे साथ होऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा क्योंकि मैं तुझे और तेरे बंश को इन सारे देशों को देऊंगा और मैं उस किरिया को जो मैं ने तेरे पिता अबिरहाम से खाई है पूरी करूंगा॥ ४। और मैं तेरे बंश को आकाश के तारों की नाईं बढ़ाऊंगा और ये समस्त देश तेरे बंश को देऊंगा और पृथिवी के सारे जातिगण तेरे बंश से आशीष पावेंगे॥ ५। इस लिये कि अबिरहाम ने मेरे शब्द को माना और मेरी आज्ञाओं और मेरी बातों और मेरी बिधिन और मेरी व्यवस्था को पालन किया॥ ६। सो इज़्हाक़ जिरार में रहा॥ ७। और वहां के बासियों ने उस्से उस की पत्नी के विषय में पूछा तब वुह बोला कि

वुह मेरी बहिन है क्योंकि वुह उसे अपनी पत्नी कहते ऊए डरा न हो कि वहां के लोग रिबकः के लिये उसे मार डालें क्योंकि वुह देखने में सुंदरी थी॥ ८। और यों ऊआ कि जब वुह वहां बऊत दिन लों रहा तो फिलस्तियों के राजा अबिमलिक ने झरोखे से दृष्टि किई और देखा तो क्या देखता है कि इज़हाक अपनी पत्नी रिबकः से कलोल करता है॥ ९। तब अबिमलिक ने इज़हाक को बुलाके कहा देख वुह निश्चय तेरी पत्नी है फिर तू ने क्योंकर कहा कि वुह मेरी बहिन है इज़हाक ने कहा इस लिये मैं ने कहा न हो कि मैं उस के लिये मारा जाऊं॥ १०। और अबिमलिक बोला यह क्या है जो तू ने हम से किया है यदि लोगों में से कोई तेरी पत्नी के साथ अकर्म्म करता तब तू यह दोष हम पर लाता॥ ११। तब अबिमलिक ने अपने सब लोगों को यह आज्ञा किई कि जो कोई इस पुरुष को अथवा उस की पत्नी को छूयेगा निश्चय घात किया जायगा॥ १२। तब इज़हाक ने उस देश में खेती किई और उस बरस सौ गुना प्राप्त किया और परमेश्वर ने उसे आशीष दिया॥ १३। और वुह मनुष्य बढ़ गया और उस की बढ़ती होती चली जाती थी यहां लों कि वुह अत्यंत बड़ा धनी हो गया॥ १४। क्योंकि वुह झुंड और ढोर और बऊत से सेवकों का स्वामी ऊआ और फिलिस्तियों ने उस्से डाह किया॥ १५। और सारे कूएं जो उस के पिता के सेवकों ने उस के पिता अबिरहाम के समय में खोदे थे फिलिस्तियों ने ढांप दिये और उन्हें मट्टी से भर दिये॥ १६। सो अबि-मलिक ने इज़हाक से कहा कि हमारे पास से जा क्योंकि तू हम से भी सामर्थी है॥ १७। और इज़हाक वहां से गया और अपना तंबू जिरार की तराई में खड़ा किया और वहीं रहा॥ १८। और इज़हाक ने उन जल के कूओं को जो उन्हों ने उस के पिता अबिरहाम के दिनों में खोदे थे फिर खोदा क्योंकि फिलिस्तियों ने अबिरहाम के मरने के पीछे उन्हें ढांप दिया था और उस ने उन के वही नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे थे॥ १९। और इज़हाक के सेवकों ने तराई में खोदा और वहां एक कूआं जिस में जल का सोता था पाया॥ २०। और जिरार के अहीरों ने इज़हाक के अहीरों से यह कहके झगड़ा किया कि यह जल हमारा है और उन के

झगड़ा करने के लिये उस ने उस कूएं का नाम झगड़ रक्खा॥ २१। और उन्हों ने दूसरा कूआं खोदा और उस के लिये भी झगड़ा और उस ने उसका नाम विरोध रक्खा॥ २२। और वुह वहां से आगे चला और दूसरा कूआं खोदा उन्हों ने उस के लिये झगड़ा न किया और उस ने उस का नाम ठिकाना रक्खा और उस ने कहा कि अब परमेश्वर ने हमारे लिये ठिकाना किया है और हम इस भूमि में फलवंत होंगे॥ २३। और वुह वहां से बीअरसबअ को गया॥ २४। और परमेश्वर ने उसी रात उसे दर्शन देके कहा कि मैं तेरे पिता अबिरहाम का ईश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और तुझे आशीष देऊंगा और अपने दास अबिरहाम के लिये तेरा बंश बढ़ाऊंगा॥ २५। और उस ने वहां एक बेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया और वहां अपना तंबू खड़ा किया और इज़हाक के सेवकों ने वहां एक कूआं खोदा॥ २६। तब जिरार से अबिमलिक और एक उस के मित्रों में से अख़ूजत और उस के सेनापति फीकुल उस पास गये॥ २७। और इज़हाक ने उन्हें कहा कि तुम किस लिये मुझ पास आये हो यद्यपि तुम मुझ से बैर रखते हो और तुम ने मुझे अपने पास से निकाल दिया है॥ २८। और वे बोले कि देखते हुए हम ने देखा कि परमेश्वर निःसन्देह तेरे संग है सो हम ने कहा कि हम और तू आपुस में किरिया खावें और तेरे साथ बाचा बांधें॥ २९। जैसा हम ने तुझे नहीं छूआ और तुझ से भलाई छोड़ कुछ नहीं किया और तुझे कुशल से भेजा तू भी हमें न सता तू अब परमेश्वर का आशीषित है॥ ३०। और उस ने उन के लिये जेवनार बनाया और उन्हों ने खाया पीया॥ ३१। और बिहान को तड़के उठे और आपुस में किरिया खाई और इज़हाक ने उन्हें बिदा किया और वे उस पास से कुशल से गये॥ ३२। और उसी दिन यों हुआ कि इज़हाक के सेवक आये और अपने खोदे हुए कूएं के विषय में कहा और बोले कि हम ने जल पाया॥ ३३। सो उस ने उस का नाम सबअ रक्खा इस लिये वुह नगर आज लों बीअरसबअ कहलाता है॥ ३४। और एसौ जब चालीस बरस का हुआ तब उस ने हत्तीबीअरी की बेटी यहूदियत को और हत्ती एलून की बेटी बशामत

को पत्नी किया॥ ३५। जो इजहाक और रिबक: के लिये मन के कड़वाहट का कारण ऊई।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब।

और यों ऊआ कि जब इजहाक बूढ़ा ऊआ और उस की आंखें धुन्धला गईं ऐसा कि वुह देख न सक्ता था तो उस ने अपने जेठे बेटे एसौ को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे वुह बोला देखो यहीं हूं॥ २। तब उस ने कहा कि देख मैं बूढ़ा हूं और मैं अपने मरने का दिन नहीं जानता॥ ३। सो अब तू अपना हथियार और तरकस और अपना धनुष ले और बन को जा और मेरे लिये मृग मांस अहेर कर॥ ४। और मेरी रुचि के समान स्वादित भोजन पका के मेरे पास ला जिसतें खाऊं और अपने मरने के आगे मन से तुझे आशीष देऊं॥ ५। और जब इजहाक अपने बेटे एसौ से बातें करता था तब रिबक: ने सुना और जब एसौ मृग मांस अहेरने बन को गया॥ ६। तब रिबक: ने अपने बेटे यअकूब से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई एसौ से तेरे पिता को यह कहते सुना॥ ७। कि मेरे लिये मृग मांस मार ला और मेरे लिये स्वादित भोजन पका जिसतें खाऊं और अपने मरने से पहिले परमेश्वर के आगे तुझे आशीष देऊं॥ ८। सो अब हे मेरे बेटे मेरी आज्ञा के समान मेरी बात को मान॥ ९। अब झुंड में जा और वहां से बकरी के दो मेम्ने मुझ पास ला और मैं तेरे पिता की रुचि के समान उस के लिये स्वादित भोजन बनाऊंगी॥ १०। और तू अपने पिता के पास ले जाइयो जिसतें वुह खाय और अपने मरने से आगे तुझे आशीष देवे॥ ११। तब यअकूब ने अपनी माता रिबक: से कहा देख मेरा भाई एसौ रोंआर मनुष्य है और मैं चिकना हूं॥ १२। क्या जाने मेरा पिता मुझे टटोले और मैं उस पास छली की नाईं ठहरूं और आशीष नहीं परन्तु अपने ऊपर स्राप लाऊं॥ १३। उस की माता ने उसे कहा कि तेरा स्राप मुझ पर होवे हे मेरे बेटे तू केवल मेरी बात मान और मेरे लिये जाके ला॥ १४। सो वुह गया और अपनी माता पास लाया और उस की माता ने उस के पिता की रुचि के समान

स्वादित भोजन बनाया॥ १५। श्रोर रिबक: ने घर में से अपने जेठे बेटे एसै का अच्छा पहिरावा लिया श्रोर अपने छोटे बेटे यअकूब को पहिनाया॥ १६। श्रोर बकरी के मेम्नें का चमड़ा उस के हाथें श्रोर उस के गले की चिकनाई पर लपेटा॥ १७। श्रोर अपना बनाया हुआ स्वादित भोजन श्रोर रोटी अपने बेटे यअकूब के हाथ दिई॥

१८। श्रोर वुह अपने पिता के पास जाके बोला हे मेरे पिता श्रोर वुह बोला मैं यहां हूं तू कैान है हे मेरे बेटे॥ १९। तब यअकूब अपने पिता से बोला कि मैं आप का पहिलैांठा एसै हूं आप के कहने के समान मैं ने किया है उठ बैठिये श्रोर मेरे म्टग मांस में से कुछ खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे॥ २०। तब इज़हाक ने अपने बेटे से कहा कि यह क्योंकर है जो तू ने ऐसा बेग पाया हे मेरे बेटे श्रोर वुह बोला इस लिये कि परमेश्वर आप का ईश्वर मेरे आगे लाया॥ २१। तब इज़हाक ने यअकूब से कहा कि हे बेटे मेरे पास आ जिसतें मैं तुझे टटोलें कि निश्चय तू मेरा बेटा एसै है कि नहीं॥ २२। तब यअकूब अपने पिता इज़हाक पास गया श्रोर उस ने उसे टटोल के कहा कि शब्द तो यअकूब का शब्द है पर हाथ एसै के हाथ हैं॥ २३। श्रोर उस ने उसे न पहिचाना इस लिये कि उस के हाथ उस के भाई एसै के हाथें की नाईं रोंआर थे सो उस ने उसे आशीष दिया॥ २४। श्रोर कहा कि तू मेरा वही बेटा एसै ही है वुह बोला कि मैं वही हूं॥ २५ श्रोर उस ने कहा कि तू मेरे पास ला कि मैं अपने बेटे के म्टग मांस से कुछ खाऊं जिसतें जी से तुझे आशीष देऊं सो वुह उस पास लाया श्रोर उस ने खाया श्रोर वुह उस के लिये दाख रस लाया श्रोर उस ने पीया॥ २६। फिर उस के पिता इज़हाक ने उसे कहा कि बेटे अब पास आ श्रोर मुझे चूम॥ २७। वुह पास आया श्रोर उसे चूमा श्रोर उस ने उस के पहिरावा की बास पाई श्रोर उसे आशीष दिया श्रोर कहा कि देख मेरे बेटे का गंध उस खेत के गंध की नाईं है जिस पर परमेश्वर ने आशीष दिया है॥ २८। श्रोर ईश्वर तुझे आकाश की श्रोस श्रोर पृथिवी की चिकनाई श्रोर बहुत से अन्न श्रोर दाख रस देवे॥ २९। लोग तेरी सेवा करें श्रोर जातिगण तेरे आगे झुकें तू अपने भाइयें का

प्रभु हो और तेरी मा के बेटे तेरे आगे झुकें जो तुझे स्त्रापे सो स्त्रापित और जो तुझे आशीर्बाद देवे सो आशीषित होवे॥ ३०। और यों हुआ कि जोंहीं इज़हाक यअक़ूब को आशीष दे चुका और यअक़ूब के अपने पिता इज़हाक के आगे से बाहर जाते ही उस का भाई एसौ अपनी अहेर से फिरा॥ ३१। और उस ने भी स्वादित भोजन बनाया और अपने पिता पास लाया और अपने पिता से कहा मेरे पिता उठिये और अपने बेटे का मृग मांस खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे॥ ३२। उस के पिता इज़हाक ने उसे पूछा कि तू कौन है वुह बोला कि मैं आप का बेटा आप का पहिलौंठा एसौ हूं॥ ३३। तब इज़हाक बड़ी कंपकंपी से कांपा और बोला वुह तो कौन था और कहां है जो मृग मांस अहेर करके मुझ पास लाया और मैं ने सब में से तेरे आने के आगे खाया है और उसे आशीष दिया है हां वुह आशीषित होगा॥ ३४। एसौ अपने पिता की ये बातें सुनके बहुत चिल्लाया और फूट फूटके रोया और अपने पिता से कहा मुझे भी मुझे हे मेरे पिता आशीष दीजिये॥ ३५। और वुह बोला कि तेरा भाई छल से आया और तेरा आशीष ले गया॥ ३६। तब उस ने कहा क्या वुह यअक़ूब ठीक नहीं कहावता क्योंकि उस ने दोहराके मुझे अड़ंगा मारा उस ने मेरा जन्म पद लेलिया और देखो अब उस ने मेरा आशीष लिया है और उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीष नहीं रख छोड़ा॥ ३७। तब इज़हाक ने एसौ को उत्तर देके कहा कि देख मैं ने उसे तेरा प्रभु किया और उस के सारे भाइयों को उस की सेवकाई में दिया और अन्न और दाख रस से उस का सहारा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये मैं क्या करूं॥ ३८। तब एसौ ने अपने पिता से कहा हे पिता क्या आप पास एकही आशीष है हे मेरे पिता मुझे भी मुझे आशीष दीजिये और एसौ चिल्ला चिल्ला रोया॥ ३९। तब उस के पिता इज़हाक ने उत्तर दिया और उसे कहा कि देख भूमि की चिकनाई और ऊपर से आकाश की ओस में तेरा तंबू होगा॥ ४०। और तू अपने खड्ग से जीयेगा और अपने भाई की सेवा करेगा और यों होगा कि जब तू राज्य पावेगा तो उस का जूआ अपने कांधे पर से तोड़ फेंकेगा॥ ४१।

सो उस आशीष के कारण जिसे उस के पिता ने उसे दिया था एसौ ने यअकूब का वैर रक्खा और एसौ ने अपने मन में कहा कि मेरे पिता के शोक के दिन आते हैं कि मैं अपने भाई यअकूब को मार डालूंगा॥ ४२। और रिबकः को उस के जेठे बेटे एसौ की ये बातें कही गईं तब उस ने अपने छुटके बेटे यअकूब को बुला भेजा और कहा कि देख तेरा भाई एसौ तुझे घात करने को तेरे विषय में अपने को शांति देता है॥ ४३। सो इस लिये हे मेरे बेटे तू अब मेरा कहा मान उठ और मेरे भाई लावन पास हरान को भाग जा॥ ४४। और थोड़े दिन उस के साथ रह जबलों तेरे भाई का कोप जाता रहे॥ ४५। जबलों तेरे भाई का क्रोध तुझ से न फिरे और जो तू ने उस्से किया है सो भूल जाय तब मैं तुझे वहां से बुला भेजूंगी किस लिये एकही दिन मैं तुम दोनों को खोऊं॥ ४६। तब रिबकः ने इज़हाक से कहा कि मैं हित्त की बेटियों के कारण अपने जीवन से सखेत हूं सो यदि यअकूब हित्त की बेटियों में से जैसी उस देश की लड़कियां हैं लेवे तो मेरे जीवन से क्या फल है॥

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

और इज़हाक ने यअकूब को बुलाया और उसे आशीष दिया और उसे कहा कि तू कनआनी लड़कियों में से पत्नी न लेना॥ २। उठ और फद्दानअराम में अपने नाना बतूएल के घर जा और वहां से अपने मामू लाबन की लड़कियों में से पत्नी ले॥ ३। और सर्बसामर्थी ईश्वर तुझे आशीष देवे और तुझे फलमान करे और तुझे बढ़ावे जिसतें तू लोगों की मंडली होवे॥ ४। और अबिरहाम का आशीष तुझे और तेरे संग तेरे वंश को देवे जिसतें तू अपनी टिकाव की भूमि में जो ईश्वर ने अबिरहाम को दिई अधिकार में पावे॥ ५। फिर इज़हाक ने यअकूब को बिदा किया और वुह फद्दानअराम में सूरियानी बतूएल के बेटे लाबन पास गया जो यअकूब और एसौ की माता रिबकः का भाई था॥ ६। और एसौ ने जब देखा कि इज़हाक ने यअकूब को आशीष दिया और उसे फद्दानअराम से पत्नी लेने को वहां भेजा और कि उस ने

उसे आशीष देके कहा कि तू कनआन की लड़कियों में से पत्नी न लेना॥ ७। और कि यअकूब ने अपने माता पिता की बात मानी और फद्दानआराम को गया॥ ८। और एसी ने यह भी देखा कि कनआनी लड़की मेरे पिता की दृष्टि में बुरी हैं॥ ९। तब एसौ इसमअएल कने गया और अबिरहाम के बेटे इसमअएल की बेटी महलत को जो नबीत की बहिन थी अपनी पत्नियों में लिया॥ १०। और यअकूब बीअरसबअ से निकल के हरान की ओर गया॥ ११। और एक स्थान में टिका और रात भर रहा क्योंकि सूर्य अस्त हुआ था और उस ने उस स्थान के पत्थरों को लिया और अपना उसीसा किया और वहां सोने को लेट गया॥ १२। और वुह स्वप्न में क्या देखता है कि एक सीढ़ी पृथिवी पर धरी है और उस की टोंक स्वर्ग से लगी थी और क्या देखता है कि ईश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं॥ १३। और क्या देखता है की परमेश्वर उस के ऊपर खड़ा है और यों बोला कि मैं परमेश्वर तेरे पिता अबिरहाम और इज़हाक का ईश्वर हूं मैं यह भूमि जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरे वंश को देऊंगा॥ १४। और तेरे वंश पृथिवी की धूल की नाईं होंगे और तू पश्चिम पूर्ब उत्तर दक्षिण को फूट निकलेगा और तुझ में और तेरे वंश में पृथिवी के सारे घराने आशीष पावेंगे॥ १५। और देख मैं तेरे साथ हूं और सर्वत्र जहां कहीं तू जायगा तेरी रखवाली करूंगा और तुझे इस देश में फिर लाऊंगा और जबलों मैं तुझ से अपना कहा हुआ पूरा न कर लेऊं तुझे न छोड़ूंगा॥ १६। तब यअकूब अपनी नींद से जागा और कहा कि निश्चय परमेश्वर इस स्थान में है और मैं न जानता था॥ १७। तब वुह डर गया और बोला कि यह क्याही भयानक स्थान है ईश्वर के मंदिर को छोड़ यह और कुछ नहीं है और स्वर्ग का फाटक है॥

१८। और यअकूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को जिसे उस ने अपना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया और उस पर तेल ढाला॥ १९। और उस स्थान का नाम बैतएल रक्खा पर उस्से पहिले उस नगर का नाम लौज़ था॥ २०। और यअकूब ने मनौती मानी और कहा कि यदि ईश्वर मेरे साथ रहे और मेरे जाने के मार्ग में मेरा रखवाल हो

और मुझे खाने को रोटी और पहिन्ने को कपड़ा देवे॥ २१। ऐसा कि मैं अपने पिता के घर कुशल से फिर आऊं तब परमेश्वर मेरा ईश्वर होगा॥ २२। और यह पत्थर जो मैं ने खंभा सा खड़ा किया ईश्वर का मंदिर होगा और सब में से जो तू मुझे देगा दसवां भाग अवश्य तुझे देऊंगा।

२९ उन्तीसवां पर्ब्ब।

तब यअकूब ने पांव उठाया और पूर्बी पुत्रों के देश में आया॥ २। उस ने दृष्टि किई और खेत में एक कूआं देखा और लो कि कूएं के लग भेड़ों के तीन झुंड बैठे हुए हैं क्योंकि वे उसी कूएं से झुंडों को पानी पिलाते थे और कूएं के मुंह पर बड़ा पत्थर धरा था॥ ३। और वहां सारी झुंड एकट्ठी होती थी और वे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर से ढुलका देते थे और भेड़ों को पानी पिलाके पत्थर को उस के मुंह पर फिर रखते थे॥ ४। तब यअकूब ने उन से कहा कि मेरे भाइयो तुम कहां के हो और वे बोले कि हम हरान के हैं॥ ५। फिर उस ने उन से पूछा कि तुम नहूर के बेटे लाबन को जानते हो और वे बोले जानते हैं॥ ६। और उस ने उन्हें कहा कि वह कुशल से है और वे बोले कि कुशल से है और देख उस की बेटी राखिल भेड़ों के साथ आती है॥ ७। तब वुह बोला देखो दिन अब भी बहुत है और ढोरों के एकट्ठे करने का समय नहीं तुम भेड़ों को पानी पिलाके चराई पर ले जाओ॥ ८। वे बोले हम नहीं सक्ते जब लों कि सारे झुंड एकट्ठे न होवें और पत्थर को कूएं के मुंह पर से न ढुलकावें तब हम भेड़ों को पानी पिलाते हैं॥ ९। वुह उन से यह कहि रहा था कि राखिल अपने पिता की भेड़ों को लेके आई॥ १०। क्योंकि वुह उन की रखवालनी थी और यों हुआ कि यअकूब अपने मामू लाबन की बेटी राखिल को और अपने मामू लाबन की भेड़ों को देखके पास गया और पत्थर को कूएं के मुंह पर से ढुलकाया और अपने मामू लाबन की भेड़ों को पानी पिलाया॥ ११ और यअकूब ने राखिल को चूमा और चिल्ला के रोया॥ १२॥ और यअकूब ने राखिल से कहा कि मैं तेरे पिता का कुटुम्ब और रिबक:

का बेटा हूं उस ने दौड़के अपने पिता से कहा ॥ १३ । और यों हुआ कि लाबन अपने भांजे यअ़क़ूब का समाचार सुनके उस्से मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और उसे अपने घर लाया और उस ने ये सारी बातें लाबन से कहीं ॥ १४ । तब लाबन ने उसे कहा कि निश्चय तू मेरी हड्डी और मांस है और वुह एक मास भर उस के यहां रहा ॥ १५ । तब लाबन ने यअ़क़ूब से कहा कि मेरा भाई होने के कारण क्या तू सेंत से मेरी सेवा करेगा सो कह मैं तुझे क्या देऊं ॥ १६ । और लाबन की दो बेटियां थीं जेठी का नाम लियाह और लहुरी का नाम राख़िल था ॥ १७ । और लियाह की आंखें चुन्धली थीं परन्तु राख़िल सुन्दरी और रूपवती थी ॥ १८ । और यअ़क़ूब राख़िल को प्यार करता था और उस ने कहा कि तेरी लहुरी बेटी राख़िल के लिये मैं सात बरस तेरी सेवा करूंगा ॥ १९ । तब लाबन बोला कि उसे दूसरे के देने से तुझी को देना भला है सो तू मेरे साथ रह ॥ २० । और यअ़क़ूब ने सात बरस लों राख़िल के लिये सेवा किई और उस प्रीति के मारे जो वुह उस्से रखता था थोड़े दिन की नाईं समझ पड़े ॥ २१ । और यअ़क़ूब ने लाबन से कहा कि मेरे दिन पूरे हुए मेरी पत्नी मुझे दीजिये जिसतें मैं उसे ग्रहण करूं ॥ २२ । तब लाबन ने वहां के सारे मनुष्यों को एकट्ठा करके जेवनार किया ॥ २३ । और सांझ को यों हुआ कि वुह अपनी बेटी लियाह को उस पास लाया और उस ने उसे ग्रहण किया ॥ २४ । और दासी के लिये लाबन ने अपनी दासी ज़ीलफः को अपनी बेटी लीयाह को दिया ॥ २५ । और ऐसा हुआ कि बिहान को क्या देखता है कि लियाह है तब उस ने लाबन को कहा कि आप ने यह मुझ से क्या किया क्या मैं ने आप की सेवा राख़िल के लिये नहीं किई फिर आप ने किस लिये मुझे छला ॥ २६ । तब लाबन ने कहा कि हमारे देश का यह ब्यवहार नहीं कि लहुरी को जेठी से पहिले ब्याह देवें ॥ २७ । उस का अठवारा पूरा कर और तेरी और भी सात बरस की सेवा के लिये हम इसे भी तुझे देंगे ॥ २८ । और यअ़क़ूब ने ऐसाही किया और उस का अठवारा पूरा किया तब उस ने अपनी बेटी राख़िल को भी उसे पत्नी में दिया ॥ २९ । और लाबन ने अपनी दासी बिलहः

को अपनी बेटी राख़िल की दासी होने के लिये दिया॥ ३०। तब यअ़क़ूब ने राख़ील को भी ग्रहण किया और वुह राख़िल को लियाह से अधिक प्यार करता था और सात बरस अधिक उसने उस की सेवा किई॥ ३१। और जब परमेश्वर ने देखा कि लियाह घिनित ऊई उस ने उस की कोख खोली और राख़िल बांझ रही॥ ३२। और लियाह गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और उस ने उस का नाम रूबिन रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि निश्चय परमेश्वर ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई है कि अब मेरा पति मुझे प्यार करेगा॥ ३३। और वुह फिर गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और बोली इस लिये कि परमेश्वर ने मेरा घिनित होना सुनके मुझे इसे भी दिया सो उस ने उस का नाम समऊ़न रक्खा॥ ३४। और फिर वुह गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और बोली कि इस बार मेरा पति मुझ से मिल जायगा क्योंकि मैं उस के लिये तीन बेटे जनी इस लिये उस का नाम लावी रक्खा गया॥ ३५। और वुह फिर गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और बोली कि अब मैं परमेश्वर की स्तुति करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदाह रक्खा और जन्ने से रह गई॥

३० तीसवां पर्ब्ब।

और जब राख़िल ने देखा कि यअ़क़ूब का वंश मुझ से नहीं होता तो उस ने अपनी बहिन से डाह किया और यअ़क़ूब को कहा कि मुझे बालक दे नहीं तो मैं मर जाऊंगी॥ २। तब राख़िल पर यअ़क़ूब का क्रोध भड़का और उस ने कहा क्या मैं ईश्वर की संती हूं जिस ने तुझे कोख के फल से अलग रक्खा॥ ३। और वुह बोली कि मेरी दासी बिलहः को देख और उसे ग्रहण कर और वह मेरे घुठनों पर जनेगी जिसतें मैं भी उस्से बन जाऊं॥ ४। और उस ने उसे अपनी दासी बिलहः को पत्नी के लिये दिया और यअ़क़ूब ने उसे ग्रहण किया॥ ५। और बिलहः गर्भिणी ऊई और यअ़क़ूब के लिये बेटा जनी॥ ६। तब राख़िल बोली कि ईश्वर ने मेरा बिचार किया और मेरा शब्द भी सुना और मुझे एक बेटा दिया इस लिये उस ने

उस का नाम दान रक्खा॥ ७। और राखिल की दासी बिलहः फिर गर्भिणी ऊई और यअकूब के लिये दूसरा बेटा जनी॥ ८। और राखील बोली कि मैं ने अपनी बहिन से ईश्वरीय मल्ल युद्ध किया और जीता और उस ने उस का नाम नफ़ताली रक्खा॥ ९। और जब लियाह ने देखा कि मैं जन्ने से रह गई तो उस ने अपनी दासी ज़िलफः को लेके यअकूब को पत्नी के लिये दिया॥ १०। सो लियाह की दासी ज़िलफः भी यअकूब के लिये एक बेटा जनी॥ ११। तब लियाह बोली कि जथा आती है और उस ने उस का नाम जद रक्खा॥ १२। फिर लियाह की दासी ज़िलफः यअकूब के लिये एक दूसरा बेटा जनी॥ १३। और लियाह बोली कि मैं आनंदित ऊं पुत्रियां मुझे धन्य कहेंगी और उस ने उस का नाम यशर रक्खा॥ १४। और गेऊं के लवने के समय में रूबिन घर से निकला और खेत में दूदाफल पाया और उन्हें अपनी माता लियाह के पास लाया तब राखिल ने लियाह से कहा कि अपने बेटे का दूदाफल मुझे दे॥ १५। उस ने कहा क्या यह छोटी बात है जो तू ने मेरे पति को ले लिया और मेरे पुत्र के दूदाफल को भी लिया चाहती है राखिल बोली कि वुह आज रात तेरे बेटे के दूदाफल की संती तेरे साथ रहेगा॥ १६। और जब यअकूब सांझ को खेत में से आया लियाह उसे आगे से मिलने को गई और कहा कि आज आप को मुझ पास आना होगा क्योंकि निश्चय मैं ने अपने बेटे का दूदाफल देके आप को भाड़े में लिया है सो वुह उस रात उस के साथ रहा॥ १७। और ईश्वर ने लियाह की सुनी और वुह गर्भिणी ऊई और यअकूब के लिये पांचवां बेटा जनी॥ १८। और लियाह बोली कि ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि मैं ने अपने पति को अपनी दासी दिई है और उस ने उस का नाम इशकार रक्खा॥ १९। और लियाह फिर गर्भिणी ऊई और यअकूब के लिये छठवां बेटा जनी॥ २०। और बोली कि ईश्वर ने मुझे अच्छा दैजा दिया है अब मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि मैं उस के लिये छः बेटे जनी और उस ने उस का नाम ज़बूलून रक्खा॥ २१। और अंत में वुह बेटी जनी और उस का नाम दीनाह रक्खा॥ २२। और ईश्वर ने

राखिल को स्मरण किया और उस की सुनके उस की कोख को खोला॥ २३। वुह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली कि ईश्वर ने मेरी निन्दा दूर किई॥ २४। और उस ने उस का नाम यूसुफ़ रक्खा और बोली कि परमेश्वर मुझे दूसरा बेटा भी देवेगा॥ २५। और जब राखिल से यूसुफ़ उत्पन्न हुआ तो यों हुआ कि यअ़क़ूब ने लाबन से कहा कि मुझे मेरे स्थान और मेरे देश को बिदा कीजिये॥ २६। मेरी स्त्रियां और मेरे लड़के जिन के लिये मैं ने आप की सेवा किई है मुझे दीजिये और बिदा करिये क्योंकि आप जानते हैं कि मैं ने आप की कैसी सेवा किई है॥ २७। लाबन ने उसे कहा कि जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो रह जा क्योंकि मैं ने देख लिया है कि परमेश्वर ने तेरे कारण से मुझे आशीष दिया है॥ २८। और उस ने कहा कि अब तू अपनी बनी मुझ से ठहरा ले मैं तुझे देऊंगा॥ २९। उस ने उसे कहा आप जानते हैं कि मैं ने क्योंकर आप की सेवा किई है और आप के ढोर कैसे मेरे साथ थे॥ ३०। क्योंकि मेरे आने से आगे वे थोड़े थे और अब झुंड के झुंड हो गये और मेरे आने से परमेश्वर ने आप को आशीष दिया है अब मैं अपने घर के लिये भी कब ठिकाना करूंगा॥ ३१। और वुह बोला कि मैं तुझे क्या देऊं और यअ़क़ूब ने कहा कि आप मुझे कुछ न दीजिये जो आप मेरे लिये ऐसा करेंगे तो मैं आप के झुंड को फिर चराऊंगा और रखवाली करूंगा॥ ३२। मैं आज आप के सारे झुंड में से चल निकलूंगा और भेड़ों में से सारी फुटफुटियों और चितकबरियों और भूरियों को और बकरियों में से फुटफुटियो और चितकबरियों को अलग करूंगा और मेरी बनी वैसी होगी॥ ३३। और कल को मेरा धर्म मेरा उत्तर देगा जब कि मेरी बनी आप के आगे आवे तो वुह जो बकरियों में चितकबरी और फुटफुटिया और भेड़ों में भूरी न हो तो वुह मेरे पास चोरी की गिनी जाय॥ ३४। तब लाबन बोला देख मैं चाहता हूं कि जैसा तू ने कहा तैसाही होवे॥ ३५। और उस ने उस दिन पट्टेवाले और फुटफुटिया बकरे और सब चितकबरी और फुटफुटिया बकरियां अर्थात् हर एक जिस में कुछ उजलाई थी और भेड़ों में से भूरी अलग किई

और उन्हें अपने बेटों के हाथ सैांप दिया॥ ३६। और उस ने अपने और यअक़ूब के मध्य में तीन दिन की यात्रा का बीच ठहराया और यअक़ूब लाबन के उबरे हुए झुंडों को चराया किया॥ ३७। और यअक़ूब ने हरे लुबने लूस और अरमन की हरी छड़ियां ले ले उन्हें गंडेवाल किया ऐसा कि छड़ियों की उजलाई प्रगट हुई॥ ३८। और जब झुंड पानी पीने को आती थीं तब वुह उन छड़ियों को जिन पर गंडे बनाये थे झुंडों के आगे कठरों और नालियों में धरता था कि जब वे सब पीने आवें तो गर्भिणी होवें॥ ३९। और छड़ियों के आगे झुंड गर्भिणी हुईं और वे गंडेवाले और फुटफुटियां और चितकबरे बच्चे जनीं॥ ४०। और यअक़ूब ने मेम्नों को अलग किया और झुंड के मुंह को चितकबरों के और भूरों के और जो लाबन की झुंड में थे किया और उस ने अपने झुंड को अलग किया और लाबन के झुंड में न मिलाया॥ ४१। और यों हुआ कि जब पुष्ट ढोर गर्भिणी होती थी तो यअक़ूब छड़ियों को नालियों में उन के आगे रखता था कि वे उन छड़ियों के आगे गर्भिणी होवें॥ ४२। पर जब दुर्बल ढोर आते थे वुह उन्हें वहां न रखता था सो दुर्बल दुर्बल लाबन की और मोटी मोटी यअक़ूब की हुईं और उस पुरुष की अत्यंत बढ़ती हुई और वुह बहुत पशु और दास और दासियों और ऊंटों और गदहों का स्वामी हुआ।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब॥

और उस ने लाबन के बेटों को ये बातें कहते सुना कि यअक़ूब ने हमारे पिता का सब कुछ ले लिया और हमारे पिता की संपत्ति से यह सब विभव प्राप्त किया॥ २। और यअक़ूब ने लाबन का रूप देखा और क्या देखता है कि कल परसों की नाईं वुह मेरी ओर नहीं है॥ ३। और परमेश्वर ने यअक़ूब से कहा कि तू अपने पितरों और अपने कुटुम्बों के देश को फिर जा और मैं तेरे संग होऊंगा॥ ४। तब यअक़ूब ने राखिल और लियाह को अपनी झुंड पास खेत में बुला भेजा॥ ५। और उन्हें कहा कि मैं देखता हूं कि

तुम्हारे पिता का रूप आगे की नाईं मेरी ओर नहीं है परन्तु मेरे पिता का ईश्वर मुझ पर प्रगट हुआ॥ ६। और तुम जानती हो कि मैं ने अपने सारे बल से तुम्हारे पिता की सेवा किई है॥ ७। और तुम्हारे पिता ने मुझे छला है और दस बार मेरी बनी बदल दिई पर ईश्वर ने मुझे दुख देने को उसे न छोड़ा॥ ८। यदि वुह यों बोला कि फुटफुटियां तेरी बनी होंगी तो सारे ढोर फुटफुयिां जने और यदि उस ने यों कहा कि पट्टेवाली तेरी बनी में होंगी तो ढोर पट्टेवाले जने॥ ९। यों ईश्वर ने तुम्हारे पिता के ढोर लिये और मुझे दिये॥ १०। और यों हुआ कि जब ढोर गर्भिणी हुए तो मैं ने स्वप्न में अपनी आंख उठाके देखा और क्या देखता हूं कि मेढ़े जो ढोर पर चढ़ते हैं सो पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे थे॥ ११। और ईश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझे कहा कि हे यअकूब मैं बोला कि यहीं हूं॥ १२। तब उस ने कहा कि अब अपनी आंखे उठा और देख कि सारे मेंढे जो भेड़ों पर चढ़ते हैं पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे हैं क्योंकि जो कुछ लाबन ने तुझ से किया मैं ने देखा है॥ १३। बैतएल का ईश्वर जहां तू ने खंभे पर तेल डाला और जहां तू ने मेरे लिये मनौती मानी मैं हूं अब उठ इस देश से निकल जा और अपने कुटुम्ब के देश को फिर जा॥ १४। तब राखिल और लियाह ने उत्तर देके उसे कहा क्या अब लों हमारे पिता के घर में हमारा कुछ भाग अथवा अधिकार है॥ १५। क्या हम उस के लेखे पराये नहीं गिने जाते हैं क्योंकि उस ने तो हमें बेच डाला है और हमारी रोकड़ भी खा बैठा है॥ १६। परन्तु ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और हमें दिया वही हमारा और हमारे बालकों का है सो अब जो कुछ कि ईश्वर ने आप से कहा है सो करिये॥ १७। तब यअकूब ने उठके अपने बेटों और पत्नियों को ऊंटों पर बैठाया॥ १८। और अपने सब चौपाए और सामग्री जो उस ने पाई थी अपनी कमाई के चौपाए जो उस ने फद्दानअराम में पाए थे ले निकला जिसतें कनआन देश में अपने पिता इज़हाक पास जावे॥ १९। और लाबन अपने भेड़ों का रोम कतरने को गया और राखिल ने अपने पिता की कई एक मूर्त्ति चुरा लिई॥ २०। और

यअ्क़ूब अरामी लाबन से अचानक चुराके भागा यहां लों कि वुह उस्को न कहिके भागा॥ २१। सो वुह अपना सब कुछ लेके भागा और उठके नदी पार उतर गया और अपना मुंह जिलिअ़द पहाड़ की ओर किया॥ २२। और यअ्क़ूब के भागने का संदेश लाबन को तीसरे दिन पहुंचा॥ २३। सो वुह अपने भाइयों को लेके सात दिन के मार्ग लों उस के पीछे गया और जिलिअ़द पहाड़ पर उसे जा लिया॥ २४। परन्तु ईश्वर अरामी लाबन कने स्वप्न में रात को आया और उसे कहा कि चौकस रह तू यअ्क़ूब को भला बुरा मत कहना॥ २५। तब लाबन ने यअ्क़ूब को जा लिया और यअ्क़ूब ने अपना डेरा पहाड़ पर किया था और लाबन ने अपने भाइयों के साथ जिलिअ़द पहाड़ पर डेरा खड़ा किया॥ २६। तब लाबन ने यअ्क़ूब से कहा कि तू ने क्या किया जो तू एका एक मुझ से चुरा निकला और मेरी पुत्रियों को खड्ग में की बंधुआई की नाईं ले चला॥ २७। तू किस लिये चुपके से भागा और चोरी से मुझ से निकल आया और मुझे नहीं कहा जिसतें मैं तुझे आनंद मंगल से भेरी और ढोल के साथ बिदा करता॥ २८। और तू ने मुझे अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमने न दिया अब तू ने मूर्खता से यह किया है॥ २९। तुझे दुःख देने को मेरे बश में है परन्तु तेरे पिता के ईश्वर ने कल रात मुझे यों कहा कि चौकस रह तू यअ्क़ूब को भला बुरा मत कहना॥ ३०। और अब तुझे तो जाना है क्योंकि तू अपने पिता के घर का निपट अभिलाषी है पर तू ने किस लिये मेरे देवों को चुराया है॥ ३१। और यअ्क़ूब ने उत्तर दिया और लाबन से कहा कि डरके मैं ने कहा क्या जाने आप अपनी पुत्रियां बरबस मुझ से छीन लेंगे॥ ३२। जिस किसी के पास आप अपने देवों को पावें उसे जीता मत छोड़िये और हमारे भाइयों के आगे देख लीजिये कि आप का मेरे पास क्या क्या है और अपना लीजिये क्योंकि यअ्क़ूब न जानता था कि राख़िल ने उन्हें चुराया था॥ ३३। और लाबन यअ्क़ूब के तंबू में गया और लियाह के तंबू में और दोनो दासियों के तंबू में परन्तु न पाया तब वुह लियाह के तंबू से बाहर जाके राख़िल के तंबू में गया॥ ३४। और राख़िल मूर्त्तिन को लेकर ऊंट की सामग्री में रखके उन

पर बैठी थी और लाबन ने सारे तंबू को देख लिया और न पाया॥ ३५। तब उसने अपने पिता से कहा कि मेरे प्रभु इस्से उदास न होवें कि मैं आप के आगे उठ नहीं सक्ती क्योंकि मुझ पर स्त्रियों की रीति है सो उस ने ढूढ़ा पर मूर्त्तिन को न पाया॥ ३६। और यअ़कूब क्रुद्ध हुआ और लाबन से विवाद करके उत्तर दिया और लाबन को कहा कि मेरा क्या पाप और क्या अपराध है कि आप इस रीति से मेरे पीछे झपटे॥ ३७। आप ने जो मेरी सारी सामग्री ढूंढ़ी आप ने अपने घर की सामग्री से क्या पाई मेरे भाइयों और अपने भाइयों के आगे रखिये जिसतें वे हम दोनों के मध्य में विचार करें॥ ३८। यह बीस बरस जो मैं आप के साथ था आप की भेड़ों और बकरियों का गर्भ न गिरा और मैं ने आप की झुंड के मेंढे नहीं खाये॥ ३९। वुह जो फाड़ा गया मैं आप पास न लाया उस की घटी मैं ने उठाई वुह जो दिन को अथवा रात को चोरी गया आप ने मुझ से लिया॥ ४०। मेरी यह दशा थी कि दिन को घाम से भस्म हुआ और रात को पाला से और मेरी आंखों से मेरी नींद जाती रही॥ ४१। यों मुझे आप के घर में बीस बरस बीते मैं ने चौदह बरस आप की दोनों बेटियों के लिये और छः बरस आप के पशु के लिये आप की सेवा किई और आप ने दस बार मेरी बनी बदल डाली॥ ४२। यदि मेरे पिता का ईश्वर और अबिरहाम का ईश्वर और इज़हाक का भय मेरे साथ न होता तो आप निश्चय मुझे अब छूछे हाथ निकाल देते ईश्वर ने मेरी विपत्ति और मेरे हाथों के परिश्रम को देखा है और कल रात आप को डांटा॥ ४३। लाबन ने उत्तर दिया और यअ़कूब से कहा कि ये बेटियां मेरी बेटियां और ये बालक मेरे बालक और ये चौपाए मेरे चौपाए और सब जो तू देखता है मेरे हैं और आज के दिन अपनी इन बेटियों अथवा इन के लड़कों से जो वे जनी हैं क्या कर सक्ता हूं॥ ४४। सो अब आ मैं और तू आपुस में एक बाचा बांधें और वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी रहे॥ ४५। तब यअ़कूब ने एक पत्थर लेके खंभा सा खड़ा किया॥ ४६। और यअ़कूब ने अपने भाइयों से कहा कि पत्थर एकट्ठा करो उन्हों ने पत्थर एकट्ठा करके एक ढेर किया और उन्हों ने उसी ढेर पर खाया॥

४७। और लाबन ने उस का नाम साक्षी का ढेर रक्खा परन्तु यअ़क़ूब ने उस का नाम जिलिअ़द रक्खा॥ ४८। और लाबन बोला कि यह ढेर आज के दिन मुझ में और तुझ में साक्षी है इस लिये उस का नाम जिलिअ़द॥ ४९। और चौकस का गुम्मट ड़आ क्योंकि उस ने कहा कि जब हम आपुस से अलग होवें तो परमेश्वर मेरे तेरे मध्य में चौकसी करे॥ ५०। जो तू मेरी बेटियों को दुख देवे अथवा उन से अधिक स्त्रियां करे देख हमारे साथ कोई दूसरा नहीं ईश्वर मेरे और तेरे मध्य में साक्षी है॥ ५१। और लाबन ने यअ़क़ूब से कहा देख यह ढेर और खंभा जो मैं ने अपने और आपके मध्य में रक्खा है॥ ५२। यही ढेर और खंभा साक्षी है कि मैं इस ढेर से पार तुझे और तू इस ढेर और इस खंभे से पार मुझे दुख देने को न आवेगा॥ ५३। अबिरहाम का ईश्वर और नहूर का ईश्वर और उन के पिता का ईश्वर हमारे मध्य में विचार करे और यअ़क़ूब ने अपने पिता इज़हाक के भय की किरिया खाई॥ ५४। तब यअ़क़ूब ने उस पहाड़ पर बलि चढ़ाया और अपने भाईयों को रोटी खाने को बुलाया और उन्हों ने रोटी खाई और सारी रात पहाड़ पर रहे॥ ५५। और भोर को तड़के लाबन उठा और अपने बेटों और बेटियों को चूमा और उन्हें आशीष दिया और लाबन बिदा ड़आ और अपने स्थान को फिरा॥

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब ।

और यअ़क़ूब अपने मार्ग चला गया और ईश्वर के दूत उसे आ मिले॥ २। और यअ़क़ूब ने उन्हें देख के कहा कि यह ईश्वर की सेना है और उस ने उस स्थान का नाम दो सेना रक्खा॥ ३। और यअ़क़ूब ने अपने आगे अदूम के देश और शईर की भूमि में अपने भाई एसौ पास दूतों को भेजा॥ ४। और उस ने यह कहिके उन्हें आज्ञा किई कि मेरे प्रभु एसौ को यों कहियो कि आप का दास यअ़क़ूब यों कहता है कि मैं लाबन कने टिका और अब लों वहीं रहा॥ ५। और मेरे बैल और गदहे और झुंड और दास और दासियां हैं और मैं ने अपने प्रभु को कहला भेजा है जिसतें मैं आप की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥ ६। और दूतों ने

यअक़ूब पास फिर आके कहा कि हम आप के भाई एसौ पास गये और वुह और उस के साथ चार सौ मनुष्य आप की भेंट को भी आते हैं॥ ७। तब यअक़ूब निपट डर गया और व्याकुल हुआ और उस ने अपने साथ के लोगों और झुंडों और ढोरों और ऊंटों के दो जथा किये॥ ८। और कहा कि यदि एसौ एक जथा पर आवे और उसे मारे तो दूसरा जथा जो बच रहा है भागेगा॥ ९। फिर यअक़ूब ने कहा कि हे मेरे पिता अबिरहाम के ईश्वर और मेरे पिता इज़हाक के ईश्वर वुह परमेश्वर जिस ने मुझे कहा कि अपने देश और अपने कुनबे में फिर जा और मैं तेरा भला करूंगा॥ १०। मैं तो उन सब दया और उन सब सत्यता से जो तू ने अपने दास के संग किईं तुच्छ हूं क्योंकि मैं अपने डंडे से इस यरदन पार गया और अब मैं दो जथा बना हूं॥ ११। मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे मेरे भाई के हाथ अर्थात् एसौ के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस्से डरता हूं न होवे कि वुह आके मुझे और लड़कों को माता समेत मार लेवे॥ १२। और तू ने कहा कि मैं निश्चय तुझ से भलाई करूंगा और तेरे बंश को समुद्र के बालू की नाईं बनाऊंगा जो बहुताई के मारे गिना नहीं जायगा॥ १३। और वुह उस रात वहीं टिका और जो उस के हाथ लगा अपने भाई एसौ के भेंट के लिये लिया॥ १४। दो सौ बकरियां और बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस मेंढ़े॥ १५। और तीस दूधवाली ऊंटिनियां उन के बच्चे समेत चालीस गाय और दस बैल बीस गदहियां और दस बच्चे॥ १६। और उस ने उन्हें अपने सेवकों के हाथ हर जथा को अलग अलग सौंपा और अपने सेवकों को कहा कि मेरे आगे पार उतरो और जथा को जथा से अलग रक्खो॥ १७। और पहिले को उस ने कहा कि जब मेरा भाई एसौ तुझे मिले और पूछे कि तू किस का है और किधर जाता है और ये जो तेरे आगे हैं किस के हैं॥ १८। तो कहियो कि आप के सेवक यअक़ूब के हैं यह अपने प्रभु एसौ के लिये भेंट है और देखिये वुह आप भी हमारे पीछे है॥ १९। और वैसा उस ने दूसरे और तीसरे को और उन सब को जो जथा के पीछे जाते थे यह कहिके आज्ञा किई कि जब तुम एसौ को पाओ तो इस रीति से कहियो॥ २०। और अधिक यह कहियो कि

देखिये आप का सेवक यअकूब हमारे पीछे आता है क्योंकि उस ने कहा है कि मैं उस भेंट से जो मुझ से आगे जाती है उसे मिलाप कर लेऊंगा तब उस का मुंह देखूंगा क्या जाने वुह मुझे ग्रहण करे॥ २१। सो वुह भेंट उस के आगे आगे पार गई और वुह आप उस रात जथा में टिका॥ २२। और उसी रात उठा और अपनी दो पत्नियों और दो सहेलियों और ग्यारह बेटों को लेके याह यबूक से पार उतरा॥ २३। और उस ने उन्हें लेके नाली पार करवाया और अपना सब कुछ पार भेजा॥ २४। और यअकूब अकेला रह गया और वहां पौ फटेलों एक जन उसे मल्ल युद्ध करता रहा॥ २५। और जब उस ने देखा कि वुह उस पर प्रबल न हुआ तो उस की जांघ को भीतर से छूआ तब यअकूब के जांघ की नस उस के संग मल्ल युद्ध करने में चढ़ गई॥ २६। तब वुह बोला कि मुझे जाने दे क्योंकि पौ फटती है वुह बोला कि मैं तुझे जाने न देऊंगा जब लों तू मुझे आशीष न देवे॥ २७। तब उस ने उसे कहा कि तेरा नाम क्या वुह बोला कि यअकूब॥ २८। तब उस ने कहा कि तेरा नाम आगे को यअकूब न होगा परन्तु इसराएल क्योंकि तू ने ईश्वर के और मनुष्य के आगे राजा की नाईं मल्ल युद्ध किया और जीता॥ २९। तब यअकूब ने यह कहिके उसे पूछा कि अपना नाम बताइये वुह बोला कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है और उस ने उसे वहां आशीष दिया॥ ३०। और यअकूब ने उस स्थान का नाम फनुएल रक्खा क्योंकि मैं ने ईश्वर को प्रत्यक्ष देखा और मेरा प्राण बचा है॥ ३१। और जब वुह फनुएल से पार चला तो सूर्य्य की ज्योति उस पर पड़ी और वुह अपनी जांघ से लंगड़ाता था॥ ३२। इस लिये इसराएल के वंश उस जांघ की नस को जो चढ़ गई थी आजलों नहीं खाते क्योंकि उस ने यअकूब के जांघ की नस को जो चढ़ गई थी छूआ था॥

३३ तैंतीसवां पर्ब्ब।

और यअकूब ने आंखें ऊपर उठाईं और क्या देखता है कि एसौ और उस के साथ चार सौ मनुष्य आते हैं तब उस ने लियाह को और राखिल को और दो सहेलियों को लड़के बाले बांट दिये॥ २।

ओर उस ने सहेलियों ओर उन के लड़कों को सब से आगे रक्खा ओर लियाह ओर उस के लड़कों को पीछे ओर राखिल ओर यूसुफ़ को सब के पीछे ॥ ३। ओर वुह आप उन के आगे पार उतरा ओर अपने भाई पास पहुंचते पहुंचते सात बार भूमि लों दंडवत किई ॥ ४। ओर एसौ उसे मिलने को दौड़ा ओर उसे गले लगाया ओर उस के गले से लिपटा ओर उसे चूमा ओर वे रोये ॥ ५। फिर उस ने आंखें उठाईं ओर स्त्रियों को ओर लड़कों को देखा ओर कहा कि ये तेरे साथ कौन हैं ओर वुह बोला संतान जो ईश्वर ने अपनी कृपा से आप के सेवक को दिये ॥ ६। तब सहेलियां ओर उन के लड़के पास आये ओर दंडवत किई ॥ ७। फिर लियाह ने भी अपने लड़के समेत पास आके दंडवत किई अंत को यूसुफ़ ओर राखिल पास आये ओर दंडवत किई ॥ ८। ओर उस ने कहा कि इस जथा से जो मुझ को मिली तुझे क्या ओर वुह बोला कि अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं ॥ ९। तब एसौ बोला कि हे भाई मुझ पास बहुत हैं तेरे तेरे ही लिये होवें ॥ १०। तब यअ़क़ूब बोला कि मैं आप की बिनती करता हूं यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मेरी भेंट मेरे हाथ से ग्रहण कीजिये क्योंकि मैं ने जो आप का मुंह देखा है जानों मैं ने ईश्वर का मुंह देखा ओर आप मुझ से प्रसन्न हुए ॥ ११। मेरे आशीष को जो आप के आगे लाया गया है ग्रहण कीजिये कि ईश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है ओर इस लिये कि मुझ पास सब कुछ है सो वुह यहां लों गिड़गिड़ाया कि उस ने ले लिया ॥ १२। ओर कहा कि आओ कूच करें ओर चलें ओर मैं तेरे आगे आगे चलूंगा ॥ १३। तब उस ने उसे कहा कि मेरे प्रभु जानते हैं कि बालक कोमल हैं ओर झुंड ओर ढोर दूध पिलानेवालियां मेरे साथ हैं ओर जो वे दिन भर हांके जायें तो सारे झुंड मर जायेंगे ॥ १४। सो मेरे प्रभु अपने सेवक से पहिले पार जाइये ओर मैं धीरे धीरे जैसा कि ढोर आगे चलेंगे ओर बालक सह सकेंगे चलूंगा यहां लों कि शईर को अपने प्रभु पास आ पहुंचों ॥ १५। तब एसौ बोला अपने संग के कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं वुह बोला कि किस लिये मैं अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं ॥ १६।

तब एसौ उसी दिन शईर के मार्ग लौट गया ॥ १७। और यअकूब चलते चलते सुक्कात को आया और अपने लिये एक घर बनाया और अपने ढोर के लिये पतछप्पर बनाये इसी लिये उस स्थान का नाम सुक्कात हुआ ॥ १८। और यअकूब फद्दानअराम से बाहर होके कनआन देश के सालिम के नगर सिकम में आया और नगर के बाहर अपना तंबू खड़ा किया ॥ १९। और जिस पर उस का तंबू खड़ा था उस ने उस खेत को हमूर के पिता सिकम के सन्तान से सौ टुकड़े रोकड़ पर मोल लिया ॥ २०। और उस ने वहां एक बेदी बनाई और उस का नाम ईश्वर इसराएल का ईश्वर रक्खा ।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब ।

और लियाह की बेटी दीनः जिसे वह यअकूब के लिये जनी थी उस देश की लड़कियों के देखने को बाहर गई ॥ २। और जब उस देश के अध्यक्ष हवी हमूर के बेटे सिकम ने उसे देखा तो उसे ले गया और उस्से मिल बैठा और उसे तुच्छ किया ॥ ३। और उस का मन यअकूब की बेटी दीनः से अटका और उस ने उस लड़की को प्यार किया और उस के मन की कही ॥ ४। और सिकम ने अपने पिता हमूर से कहा कि इस लड़की को मुझे पत्नी में दिलाइये ॥ ५। और यअकूब ने सुना कि उस ने मेरी बेटी दीनः को अशुद्ध किया उस समय में उस के बेटे उस के ढोर के साथ खेत में थे और उन के आने लों यअकूब चुप रहा ॥ ६। और सिकम का पिता हमूर बातचीत करने को यअकूब पास आया ॥ ७। और सुनते ही यअकूब के बेटे खेत से आ पहुंचे और वे उदास होके बड़े कोपित हुए क्योंकि उस ने इसराएल में अपमान किया कि यअकूब की बेटी के साथ अनुचित रीति से मिल बैठा ॥ ८। और हमूर ने उन के साथ यों बातचीत किई कि मेरे बेटे सिकम का मन तुम्हारी बेटी से लालसित है सो उसे उस को पत्नी में दीजिये ॥ ९। और हमारे साथ समधियाना कीजिये अपनी बेटियां हमें दीजिये और हमारी बेटियां आप लीजिये ॥ १०। और तुम हमारे साथ बास करोगे और यह भूमि तुम्हारे आगे होगी

उस में रहो और व्यापार करो और इस में अधिकार प्राप्त करो॥ ११। और सिकम ने उस के पिता और भाइयों से कहा कि तुम्हारी दृष्टि में मैं अनुग्रह पाऊं और जो कुछ तुम लोग मुझे कहोगे मैं देऊंगा॥ १२। जितना दैजा और भेंट चाहो मैं तुम्हारे कहने के समान देऊंगा पर लड़की को मुझे पत्नी में देओ॥ १३। तब यअ़कूब के बेटों ने सिकम और उस के पिता हमूर को छल से उत्तर दिया क्योंकि उस ने उन की बहिन दीनः को अशुद्ध किया था॥ १४। और कहा कि हम यह नहीं कर सक्ते कि एक अख़तनः को अपनी बहिन देवें क्योंकि इस्से हमारी निन्दा होगी॥ १५। केवल इस में हम तुम्हारी बात मानेंगे कि तुम में हर पुरुष हमसरीखा ख़तनः करावे॥ १६। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें देंगे और तुम्हारी बेटियां लेंगे और हम तुम में निवास करेंगे और हम सब एक लोग होंगे॥ १७। परन्तु जो ख़तनः कराने में तुम लोग हमारी न सुनोगे तो हम अपनी लड़की ले लेंगे और चले जायेंगे॥ १८। और उन की बातें सिकम और उस के पिता हमूर को प्रसन्न हुईं॥ १९। और उस तरुण ने उस बात में अबेर न किया क्योंकि वुह यअ़कूब की बेटी से प्रसन्न था और वुह अपने पिता के सारे घराने से अधिक कुलीन था॥ २०। और हमूर और उसका बेटा सिकम अपने नगर के फाटक पर आये और उन्हों ने अपने नगर के लोगों से यों बातचीत किई॥ २१। कि इन मनुष्यों से हम से मेल है सो उन्हें इस देश में रहने देओ और इस में व्यापार करें क्योंकि देखो यह देश उन के लिये बड़ा है सो आओ हम उनकी बेटियों को पत्नियों के लिये लेवें और अपनी बेटियां उन्हें देवें॥ २२। परन्तु हमारे साथ रहने को और एक लोग होने को केवल इसी बात से मानेंगे कि ख़तनः जैसा उन का किया गया है हम में हर पुरुष ख़तनः करावे॥ २३। क्या उन के ढोर और उन की संपत्ति और उन का हर एक चौपाया हमारा न होगा केवल हम उन की उस बात को मान लेवें और वे हम में निवास करेंगे॥ २४। और सभों ने जो नगर के फाटक से आते जाते थे हमूर और उस के बेटे सिकम की बात को माना और उस के नगर के फाटक से सब जो बाहर जाते थे उन में से हर पुरुष ने ख़तनः करवाया॥ २५। और तीसरे दिन जब लों वे

घाव में पड़े थे यों हुआ कि यअ़क़ूब के बेटों में से दीनः के दो भाई समऊन और लावी हर एक ने अपनी अपनी तलवार लिई और साहस से नगर पर आ पड़े और सारे पुरुषों को मार डाला॥ २६। और उन्हों ने हमूर और उस के बेटे सिकम को तलवार की धार से मार डाला और सिकम के घर से दीनः को लेके निकल गये॥ २७। और यअ़क़ूब के बेटे जूझे हुए पर आये और नगर को लूट लिया क्योंकि उन्हों ने उन की बहिन को अशुद्ध किया था॥ २८। उन्हों ने उन की भेड़ और उन की गाय बैल और उन के गदहे और जो कुछ कि नगर में और खेत में था लूट लिया॥ २९। और उन के सब धन और उन के सारे बालक और उन की पत्नियां बन्धुआई में लाये और घर में का सब कुछ लूट लिया॥ ३०। और यअ़क़ूब ने समऊन और लावी से कहा कि तुम ने मुझे दुख दिया कि इस भूमि के बासियों में कनआनियों और फरिज्जीयों के मध्य में मुझे घिनौना कर दिया और मैं गिनती में थोड़ा हूं और वे मेरे सन्मुख एकट्ठे होंगे और मुझे मार डालेंगे और मैं और मेरा घराना नष्ट होवेगा॥ ३१। तब वे बोले क्या उसे उचित था कि हमारी बहिन के साथ बेश्या की नाईं ब्यवहार करे।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

और ईश्वर ने यअ़क़ूब से कहा कि उठ बैतएल को जा और वहीं रह और उस ईश्वर के लिये जिसने तुझे दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसौ के आगे से भागा था एक बेदी बना॥ २। तब यअ़क़ूब ने अपने घराने से और अपने सब संगियों से कहा कि उपरी देवों को जो तुम में हैं दूर करो और शुद्ध होओ और अपने कपड़े बदलो॥ ३। और आओ हम उठें और बैतएल को जायें और मैं वहां उस ईश्वर के लिये बेदी बनाऊंगा जिस ने मेरी सकेती के दिन मुझे उत्तर दिया और जिस मार्ग में मैं चला वुह मेरे साथ साथ था॥ ४। और उन्हों ने सारे उपरी देवों को जो उन के हाथों में थे और कुंडल जो उन के कानों में थे यअ़क़ूब को दिये और यअ़क़ूब ने उन्हें बलूत पेड़ तले सिकम के लग गाड़ दिया॥ ५। और उन्हों ने कूच किया

और उन के आस पास के नगरों पर ईश्वर की डर पड़ी और उन्हों ने यअ़क़ूब के बेटों का पीछा न किया॥ ६। सो यअ़क़ूब और जितने लोग उस के साथ थे कनआन की भूमि में लौज़ को जो बैतएल है आये॥ ७ और उस ने वहां एक बेदी बनाई और इस लिये कि जब वुह अपने भाई के पास से भागा तो वहां उसे ईश्वर दिखाई दिया उस ने उस का नाम बैतएल का ईश्वर रक्खा॥ ८। और रिबक़ः की दाई दबूरः मर गई और बैतएल के लग बलूत पेड़ तले गाड़ी गई और उस का नाम रोने का बलूत रक्खा॥ ९। और जब कि यअ़क़ूब फ़द्दानअराम से निकला ईश्वर ने उसे फेर दर्शन दिया और उसे आशीष दिया॥ १०। और ईश्वर ने उसे कहा कि तेरा नाम यअ़क़ूब है तेरा नाम आगे को यअ़क़ूब न होगा परन्तु तेरा नाम इसराएल होगा सो उस ने उस का नाम इसराएल रक्खा॥ ११। फिर ईश्वर ने उसे कहा कि मैं ईश्वर सर्वसामर्थी हूं तू फलमान हो और बढ़ तुझ से एक जाति और जातिन की जाति और तेरी कटि से राजा निकलेंगे॥ १२। और यह भूमि जो मैं ने अबिरहाम और इज़हाक़ को दिई है तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को देऊंगा॥ १३॥ और ईश्वर उस स्थान से जहां उस ने उस्से बातें किईं थीं उस पास से उठ गया॥ १४। और यअ़क़ूब ने उस स्थान में जहां उस ने उस्से बातें किईं पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस पर पीने की भेंट चढ़ाई और उस पर तेल डाला॥ १५। और यअ़क़ूब ने उस स्थान का नाम जहां ईश्वर उस्से बोला था बैतएल रक्खा॥ १६। और उन्हों ने बैतएल से कूच किया और वहां से इफ़रातः बहुत दूर न था और राख़िल को पीर लगी और उस पर बड़ी पीड़ा हुई॥ १७। और उस पीड़ा की दशा में जनाई दाई ने उसे कहा कि मत डर अब की भी तेरे बेटा होगा॥ १८। और यों हुआ कि जब उस का प्राण जाने पर था क्योंकि वुह मर ही गई तो उस ने उस का नाम अपने उदास का पुत्र रक्खा पर उस के पिता ने उस का नाम बिनयमीन रक्खा॥ १९। सो राख़िल मर गई और इफ़रातः के मार्ग में जो बैतलहम है गाड़ी गई॥ २०। और यअ़क़ूब ने उस के समाधि पर एक खंभा खड़ा किया वही खंभा राख़िल के समाधि का खंभा आज लों है॥ २१। फिर इसराएल

ने कूच किया और अपना तंबू अद्र के गुम्मट के उस पार खड़ा किया॥ २२। और जब इसराएल उस देश में जा रहा तो यों हुआ कि रूबिन गया और अपने पिता की सुरैतिन के संग अकर्म्म किया और इसराएल ने सुना अब यअक़ूब के बारह बेटे थे॥ २३। लीयाह के बेटे रूबिन यअक़ूब का पहिलौंठा और समऊन और लावी और यहूदाह और इशकार और ज़बूलून॥ २४। और राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन॥ २५। और राख़िल की सहेली बिलहः के बेटे दान और नफताली॥ २६। और लियाह की सहेली ज़िलफः के बेटे जद और यसर यअक़ूब के बेटे जो फद्दानअराम में उत्पन्न हुए ये हैं॥ २७। और यअक़ूब अरबः के नगर में जो हबरून है ममरी के बीच अपने पिता इज़हाक पास जहां अबिरहाम और इज़हाक ने निवास किया था आया॥ २८। और इज़हाक एक सौ अस्सी बरस का हुआ॥ २९। और इज़हाक ने प्राण त्यागा और बूढ़ा और दिनी होके अपने लोगों में जा मिला और उस के बेटे एसौ और यअक़ूब ने उसे गाड़ा।

३६ छतीसवां पर्ब्ब ।

एसौ की जो अदूम है वंशावली यह है। २। एसौ ने कनआन की लड़कियों में से ऐलून हत्ती की बेटी आदः को और अहलिबामः को जो अनाह की बेटी हवी सबऊन की बेटी थी। ३। और इसमअएल की बेटी नबायोत की बहिन बशामत को ब्याह लाया। ४। और एसौ के लिये आदः इलीफ़ज़ को जनी और बशामत से रऊएल उत्पन्न हुआ॥ ५। और अहलिबामः से यऊश और यअलाम और क़रह उत्पन्न हुए ये एसौ के बेटे हैं जो उस के लिये कनआन की भूमि में उत्पन्न हुए॥ ६। और एसौ अपनी पत्नियों और बेटों और बेटियों और अपने घर के हर एक प्राणी और अपने ढार को और अपने सारे पशु को और अपनी सारी संपत्ति को जो उस ने कनआन देश में प्राप्त किई थी लेके अपने भाई यअक़ूब पास से देश को निकल गया। ७। क्योंकि उन का धन ऐसा बढ़ गया था कि वे एकट्ठे न रह सक्ते थे और उन के पशु के कारण से उन के परदेश की भूमि उन का भार न उठा

सती थी॥ ८। और एसौ जो अदूम है शईर पहाड़ पर जा रहा॥ ९। सो एसौ की बंशावली जो शईर पहाड़ के मनुष्यों का पिता है यह है॥ १०। एसौ के बेटों के नाम यह हैं एसौ की पत्नी आदः का बेटा इलीफ़ज़ एसौ की पत्नी बशामत का बेटा रऊएल॥ ११। इलीफ़ज़ के बेटे तैमन और ओमर और सफ़ू और जअताम और क़नज़॥ १२। और एसौ के बेटे इलीफ़ज़ की सहेली तिमनअ थी सो वुह इलीफ़ज़ के लिये अमालीक़ को जनी सो एसौ की पत्नी आदः के बेटे ये थे॥ १३। और रऊएल के बेटे ये हैं नहत और ज़ारिक़ और सम्माह और मिज़्ज़ः जो एसौ की पत्नी बशामत के बेटे थे॥ १४। और एसौ की पत्नी सबऊन की बेटी अनाह की बेटी अहलिबामः के बेटे ये थे और वुह एसौ के लिये यऊस और यअलाम और क़ूरह जनी॥ १५। एसौ के बेटों में जो अध्यक्ष हुए ये हैं एसौ के पहिलौठे इलीफ़ज़ के बेटे अध्यक्ष तैमन अध्यक्ष ओमर अध्यक्ष सफ़ू अध्यक्ष क़नज़॥ १६। अध्यक्ष क़ूरह अध्यक्ष जअताम अध्यक्ष अमालीक़ ये वे अध्यक्ष हैं जो इलीफ़ज़ से अदूम की भूमि में उत्पन्न हुए और आदः के बेटे थे॥ १७। और एसौ के बेटे रऊएल के बेटे ये हैं अध्यक्ष नहत अध्यक्ष ज़ारिक़ अध्यक्ष शम्माह अध्यक्ष मिज़्ज़ः ये वे अध्यक्ष हैं जो रऊएल से अदूम देश में उत्पन्न हुए और एसौ की पत्नी बशामत के बेटे थे॥ १८। और एसौ की पत्नी अहलिबामः के ये बेटे हैं अध्यक्ष यऊस अध्यक्ष यअलाम अध्यक्ष क़ूरह ये वे अध्यक्ष हैं जो एसौ की पत्नी अनाह की बेटी अहलिबामः से थे॥ १९। सो एसौ के जो अदूम है ये बेटे हैं ये उन के अध्यक्ष हैं॥ २०। शईर के बेटे हूरी जो इस भूमि के बासी थे ये हैं लौतान और सोबल और सबऊन और अनाह॥ २१। और दैसून और असर और दैसान ये सब हूरियों के अध्यक्ष हैं और अदूम की भूमि में शईर के बेटे हैं॥ २२। और लौतान के सन्तान हूरी और हैमान और लौतान की बहिन का नाम तिमनअ था॥ २३। और सोबल के सन्तान ये हैं अलवान और मनहत और ऐबाल और सफ़ू और औनाम॥ २४। और सबऊन के सन्तान ये हैं ऐयाह और अनाह यह वुह अनाह है जिस ने बन में जब वुह अपने पिता सबऊन के गदहों को चराता था खच्चर पाये॥

२५। और अनाह के सन्तान ये हैं दैसून और अहलिबामः अनाह की बेटी॥ २६। और दैसून के सन्तान हमदान और इश्बान और यथरान और करान॥ २७। असर के सन्तान ये हैं बिलहाम जुअवान और अकन॥ २८। दैसून के सन्तान ऊज़ और अरान॥ २९। वे अध्यक्ष जो हूरियों में के थे ये हैं अध्यक्ष लीतान अध्यक्ष सोबल अध्यक्ष सबऊन अध्यक्ष अनाह॥ ३०। अध्यक्ष दैसून अध्यक्ष असर अध्यक्ष दैसान ये उन हूरियों के अध्यक्ष हैं जो शईर की भूमि में थे॥ ३१। और राजा जो अदूम पर राज्य करता था उस्से पहिले कि इसराएल के बंश का कोई राजा ऊआ ये हैं॥ ३२। बऊर का बेटा बालिग जो अदूम में राज्य करता था और उस के नगर का नाम दिनहबः था॥ ३३। और बालिग मर गया और शारिक़ के बेटे यूबाब ने जो बूसरः था उस की संती राज्य किया॥ ३४। और यूबाब मर गया और हूशाम ने जो तमनी की भूमि का था उस की संती राज्य किया॥ ३५। और हूशाम मर गया और बिद्द का बेटा हदद जिस ने मोअब के चौगान में मिदयानियों को मार डाला उस की संती राज्य किया और उस के नगर का नाम गवीत था॥ ३६। और हदद मर गया और मसरीकः के समलः ने उस की संती राज्य किया॥ ३७। और समलः मर गया और नदी के लग के रहूबात के साऊल ने उस की संती राज्य किया॥ ३८। और साऊल मर गया और अकबूर के बेटे बअलहनान ने उस की संती राज्य किया॥ ३९। और अकबूर का बेटा बअलहनान मर गया और हदर ने उस की संती राज्य किया उस के नगर का नाम फ़ागू था और उस की पत्नी का नाम मुहैतबिएल था जो मतरिद की बेटी मेज़हब की बेटी थी॥ ४०। सो उन के घरानों और उन के स्थानों और उन के नाम के समान एसौ के अध्यक्षों के ये नाम हैं अध्यक्ष तिमनः अध्यक्ष अलियाह अध्यक्ष यतीत॥ ४१। अध्यक्ष अहलिबामः अध्यक्ष इलाह अध्यक्ष फ़ैनून॥ ४२। अध्यक्ष क़नज अध्यक्ष तीमान अध्यक्ष मिबसार॥ ४३। अध्यक्ष मजदिएल अध्यक्ष ईराम ये अपने अपने स्थान में अपने अपने निवास के समान अदूम के अध्यक्ष थे जो अदूमियों का पिता एसौ है॥

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब ।

और यअ्क़ूब ने कनआन देश में अपने पिता के टिकने की भूमि में बास किया॥ २। यअ्क़ूब की बंशावली यह है यूसुफ़ सत्रह बरस का होके अपने भाइयों के साथ झुंड चराता था और वुह तरुण अपने पिता की पत्नी बिलह: और ज़िलफ: के बेटों के संग था और यूसुफ़ ने उन के पिता के पास उन के बुरे कामों का संदेश पहुंचाया॥ ३। अब इसराएल यूसुफ़ को अपने सारे लड़कों से अधिक प्यार करता था इस लिये कि वुह उस के बुढ़ापे का बेटा था और उस ने उस के लिये रंग रंग का पहिरावा बनाया॥ ४। और जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हमारे सब भाइयों से उसे अधिक प्यार करता है तो उन्हों ने उस्से बैर किया और उस्से कुशल से न कह सक्ते थे॥ ५। और यूसुफ ने एक स्वप्न देखा और अपने भाइयों से कहा और उन्हों ने उस्से अधिक बैर रक्खा॥ ६। और उस ने उन्हें यूं कहा कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो सुनिये॥ ७। क्योंकि देखिये कि हम खेत में गट्ठियां बांधते थे और क्या देखता हूं कि मेरी गट्ठी उठी और सीधी खड़ी हुई और क्या देखता हूं कि तुम्हारी गट्ठियां आस पास खड़ी हुईं और मेरी गट्ठी को दंडवत किईं॥ ८। तब उस के भाइयों ने उसे कहा क्या तू सच मुच हम पर राज्य करेगा अथवा तू हम पर प्रभुता करेगा और उन्हों ने उस के स्वप्न और उस की बातों के कारण उस्से अधिक बैर किया॥ ९। फिर उस ने दूसरा स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि देखो मैं ने एक और स्वप्न देखा और क्या देखता हूं कि सूर्य्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारों ने मुझे दंडवत किई॥ १०। और उस ने यह अपने पिता और भाइयों से कहा पर उस के पिता ने उसे डपटा और कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या मैं और तेरी माता और तेरे भाई सच मुच तेरे आगे भूमि पर झुकके तुझे दंडवत करेंगे॥ ११। और उस के भाइयों ने डाह किया परन्तु उस के पिता ने उस बात को सोच रक्खा॥ १२। फिर उस के भाई अपने पिता की झुंड चराने सिकम को गये॥ १३। तब इसराएल ने यूसुफ़

से कहा क्या तेरे भाई सिकम में नहीं चराते आ मैं तुझे उन के पास भेजूं और उस ने उसे कहा कि मैं यहीं हूं॥ १४। फिर उस ने उसे कहा कि जा अपने भाइयों और झुंडों की कुशलता देख और मुझ पास संदेश ला सो उस ने उसे हबरून की तराई से भेजा और वुह सिकम में आया॥ १५। तब किसी जन ने उसे पाया और उसे खेत में भ्रमते देखा तब उस पुरुष ने उस्से पूछा कि तू क्या ढूंढ़ता है॥ १६। वुह बोला मैं अपने भाइयों को ढूंढता हूं मुझे बताइये कि वे कहां चराते हैं॥ १७। और वुह पुरुष बोला वे यहां से चले गये क्योंकि मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ दूतैन को जावें तब यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे चला और उन्हें दूतैन में पाया॥ १८। और ज्योंहीं उन्हों ने उसे दूर से देखा तो अपने पास आने से पहिले उस के मार डालने को जुगत किई॥ १९। और वे आपुस में बोले देखो वुह स्वप्नदर्शी आता है॥ २०। सो आओ अब हम उसे मार डालें और किसी कूएं में डाल देवें और कहें कि कोई बन्य पशु ने उसे भक्ष किया और देखेंगे कि उस के स्वप्नों का क्या होगा॥ २१। तब रूबिन ने सुनके उसे उन के हाथों से छुड़ाया और बोला कि हम उसे मार न डालें॥ २२। और रूबिन ने उन्हें कहा कि लोहू मत बहाओ परन्तु उसे बन के इस कूएं में डाल देओ और उस पर हाथ न डालो जिसतें वुह उसे उन के हाथों से छुड़ाके उस के पिता पास फिर पहुंचावे॥ २३। और यों हुआ कि जब यूसुफ़ अपने भाइयों पास आया तो उन्हों ने उस का बहुरंगी वस्त्र उस्से उतार लिया॥ २४। और उन्हों ने उसे लेके कूएं में डाल दिया और वुह कूआं अंधा था उस में कुछ पानी न था॥ २५। तब वे रोटी खाने बैठे और अपनी आंख उठाई और क्या देखते हैं कि इसमअएलियों का एक जथा जिलिअद से सुगंध द्रव्य और बलसाम और मुर ऊंटों पर लादे हुए मिस्र को उतर जाते हैं॥ २६। और यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा कि अपने भाई को मारके उस का लोहू छिपाने से क्या लाभ होगा॥ २७। आओ उसे इसमअएलियों के हाथ बेचें और उस पर अपने हाथ न डालें क्योंकि वुह हमारा भाई और हमारा मांस है और उस के भाइयों ने मान लिया॥ २८। उस समय मिदयानी

व्यापारी उधर से जाते थे सो उन्हों ने यूसुफ़ को कूएं से बाहर निकाल के इसमएलियों के हाथ बीस टुकड़े चांदी पर बेंचा और वे यूसुफ़ को मिस्र में लाये॥ २९। तब रूबिन कूएं पर फिर आया और यूसुफ़ को कूएं में न देखके उस ने अपने कपड़े फाड़े॥ ३०। और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा कि लड़का तो नहीं अब मैं कहां जाऊं॥ ३१। फिर उन्हों ने यूसुफ़ का पहिरावा लिया और एक बकरी का मेम्ना मारा और उसे उस के लोहू में चुभोड़ा॥ ३२। और उन्हों ने उस बहुरंगी वस्त्र को भेजा और अपने पिता के पास पहुंचाया और कहा कि हम ने इसे पाया आप इसे पहिचानिये कि यह आप के बेटे का पहिरावा है कि नहीं॥ ३३। और उस ने उसे पहिचाना और कहा कि यह तो मेरे बेटे का पहिरावा है किसी बन पशु ने उसे फाड़ा है यूसुफ़ निःसन्देह फाड़ा गया॥ ३४। तब यअक़ूब ने अपने कपड़े फाड़े और टाट वस्त्र अपनी कटि पर डाला और बहुत दिन लों अपने बेटे के लिये शोक किया॥ ३५। और उस के सारे बेटे बेटियां उसे शांति देने उठीं पर उस ने शांति ग्रहण न किई पर बोला कि मैं अपने बेटे के पास रोता हुआ समाधि में उतरूंगा सो उस का पिता उस के लिये रोया किया॥ ३६। और मिदयानियों ने उसे मिस्र में फ़िरऊन के एक प्रधान सेना पति फ़ूतिफ़र के हाथ बेंचा

३८ अठतीसवां पर्व्व।

और उस समय में यों हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से अलग होकर हीरः नाम एक अदूलामी के पास गया॥ २। और यहूदाह ने वहां एक कनआनी की लड़की को देखा जिस का नाम सूआ था उस ने उसे लिया और उस के साथ संगम किया॥ ३। वुह गर्भिणी हुई और एक बेटा जनी और उस ने उस का नाम एर रक्खा॥ ४। और वुह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उस का नाम ओनान रक्खा॥ ५। और वुह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम सेलः रक्खा और जब वुह उसे जनी तो वुह कज़ीब में था॥ ६। और यहूदाह अपने पहिलौंठे एर के लिये एक स्त्री ब्याह लाया जिस का नाम तमर

था॥ ७। और यहूदाह का पहिलौंठा एर परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट था सो परमेश्वर ने उसे मार डाला॥ ८। तब यहूदाह ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी पास जा और उस्से ब्याह कर और अपने भाई के लिये बंश चला॥ ९। और ओनान ने जाना कि यह बंश मेरा न होगा और यों हुआ कि जब वुह अपने भाई की पत्नी पास गया तो बीर्य को भूमि पर गिरा दिया न होवे कि उस का भाई उस्से बंश पावे॥ १०। और उस का वुह कार्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था इस लिये उस ने उसे भी मार डाला॥ ११। तब यहूदाह ने अपनी पतोह तमर को कहा कि अपने पिता के घर में रांड बैठी रह जब लों कि मेरा बेटा सेलः बढ़ जाय क्योंकि उस ने कहा न होवे कि वुह भी अपने भाइयों की नाईं मर जाय सो तमर अपने पिता के घर जा रही॥ १२। और बहुत दिन बीते सूअः की बेटी यहूदाह की पत्नी मर गई और यहूदाह उस के शोक को भूला तब वुह और उस का मित्र अदूलामी हीरः अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को गया॥ १३। और तमर से यह कहा गया कि देख तेरा ससुर अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को जाता है॥ १४। तब उस ने अपने रंडसाले के कपड़ों को उतार फेंका और घूंघट ओढ़ा और अपने को लपेटा और तिमनास के मार्ग में एक खुले हुए स्थान में बैठ गई क्योंकि उस ने देखा था कि सेलः सयाना हुआ और मुझे उस की पत्नी न कर दिया॥ १५। जब यहूदाह ने उसे देखा तो समझा कि कोई बेश्या है क्योंकि वुह अपना मुंह छिपाये हुए थी॥ १६। और मार्ग से उस की ओर फिरा और उसे कहा कि मुझे अपने पास आने दे और न जाना कि वुह मेरी पतोह है वुह बोली कि मेरे पास आने में तू मुझे क्या देगा॥ १७। वुह बोला मैं झुंड में से एक मेम्ना भेजूंगा उस ने कहा कि तू उसे भेजने लों मुझे कुछ बंधक दे॥ १८। वुह बोला मैं तुझे क्या बंधक देऊं वुह बोली अपनी छाप और अपने बिजायठ और लाठी जो तेरे हाथ में है उस ने दिया और उस के पास गया और वुह उस्से गर्भिणी हुई॥ १९। फिर वुह उठी और चली गई और घूंघट उतार रक्खा और रंडसाले का वस्त्र पहिन लिया॥ २०। और यहूदाह ने अपने मित्र अदूलामी के हाथ मेम्ना भेजा कि उस स्त्री के

हाथ से अपना बंधक फेर लेवे परन्तु उस ने उसे न पाया॥ २१। तब उस ने वहां के लोगों से पूछा कि जो बेश्या मार्ग में बैठी थी सो कहां है वे बोले कि यहां बेश्या न थी॥ २२। तब वुह यहूदाह के पास फिर आया और कहा कि मैं उसे नहीं पा सक्ता और वहां के लोगों ने भी कहा कि बेश्या वहां न थी॥ २३। यहूदाह बोला कि उसे लेने दे न हो कि हम निन्दित होवें देख मैं ने यह मेम्ना भेजा और तू ने उसे न पाया॥ २४। और तीन मास के पीछे यूं हुआ कि यहूदाह से कहा गया कि तेरी पतोह तमर ने बेश्याई किई और देख कि उसे छिनाले का गर्भ भी है यहूदाह बोला कि उसे बाहर लाओ और जला देओ॥ २५। जब वुह निकाली गई तो उस ने अपने ससुर को कहला भेजा कि मुझे उस जन का पेट है जिस की ये वस्तें हैं और कहा कि देखिये यह छाप और बिजायठ और लाठी किस की है॥ २६। तब यहूदाह ने मान लिया और कहा कि वुह मुझ से अधिक धर्म्मी है इस लिये कि मैं ने उसे अपने बेटे सेलः को न दिया पर वुह आगे को उस्से अज्ञान रहा॥ २७। और उस के जन्ने के समय में यूं हुआ कि उस की कोख में जमल थे॥ २८। और जब वुह पीड़ में हुई तो एक का हाथ निकला और जनाई दाई ने उस के हाथों में नारा बांध के कहा कि यह पहिले निकला॥ २९। और यूं हुआ कि उस ने अपना हाथ फिर खींच लिया और क्या देखता है कि वहीं उस का भाई निकल पड़ा तब वुह बोली कि तू ने यह दरार क्यों किया इस लिये उस का नाम फारस हुआ॥ ३०। उस के पीछे उस का भाई जिस के हाथ में नारा बंधा था निकला और उस का नाम शारिक़ रक्खा।

३९ उन्तालीसवां पर्ब्ब।

और यूसुफ़ को मिस्र में लाये और फ़ूतीफ़र मिस्री ने जो फ़िरऊन का एक प्रधान और राजा का सेनापति था उस को इसमअएलियों के हाथ से जो उसे वहां लाये थे मोल लिया॥ २। परन्तु परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और वुह भाग्यमान हुआ और वुह अपने मिस्री स्वामी के घर में रहा किया॥ ३। और उस के स्वामी ने यह देखा कि

परमेश्वर उस के साथ है और यह कि परमेश्वर ने उस के सारे कार्यों में उसे भाग्यमान किया॥ ४। और यूसुफ़ ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया और उस ने उस की सेवा किई और उस ने उसे अपने घर पर करोड़ा किया और सब जो कुछ कि उस का था उस के हाथ में कर दिया॥ ५। और यों हुआ कि जब से उस ने उसे अपने घर पर और अपनी सब बस्तुन पर करोड़ा किया परमेश्वर ने उस मिस्री के घर पर यूसुफ़ के कारण बढ़ती दिई और उस की सारी बस्तुन में जो घर में और खेत में थीं परमेश्वर की ओर से बढ़ती हुई॥ ६। और उस ने अपना सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में कर दिया और उस ने रोटी से अधिक जिसे खा लेता था कुछ न जानता था और यूसुफ़ रूपमान और देखने में सुंदर था॥ ७। और उस के पीछे यों हुआ कि उस के स्वामी की पत्नी की आंख यूसुफ़ पर लगी और वुह बोली कि मुझे ग्रहण कर॥ ८। परन्तु उस ने न माना और अपने स्वामी की पत्नी से कहा कि देख मेरा स्वामी अपनी रोटी से अधिक जिसे खा लेता है किसी बस्तु को नहीं जानता और उस ने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सैांप दिया॥ ९। इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने तुझ को छोड़ कोई बस्तु मुझ से अलग नहीं रक्खी क्योंकि तू उस की पत्नी है भला फिर मैं ऐसी महा दुष्टता कर क्यों ईश्वर का अपराधी होऊं॥ १०। और ऐसा हुआ कि वुह यूसुफ़ को प्रतिदिन कहती रही पर वुह उसे ग्रहण करने को अथवा उस के पास रहने को उस की न मानता था॥ ११। और एक समय ऐसा हुआ कि वुह अपने कार्य के लिये घर में गया और घर के लोगों में से वहां कोई न था॥ १२। तब उस ने उस का पहिरावा पकड़के कहा कि मुझे ग्रहण कर तब वुह अपना पहिरावा उस के हाथ में छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया॥ १३। अब जो उस ने देखा कि वुह अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़गया और भाग निकला॥ १४। तो उस ने अपने घर के लोगों को बुलाया और कहा कि देखो वुह एक इबरानी को हमारे घर में लाया कि हम से ठठोली करे वुह मुझे अपत करने को भीतर घुस आया और मैं चिल्ला उठी॥ १५। और यों हुआ कि जब उस ने देखा कि मैं शब्द उठा

के चिल्लाई तो अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़ भागा और बाहर निकल गया॥ १६। सो जब लों उस का पति घर में न आया उस ने उस का पहिरावा अपने पास रख छोड़ा॥ १७। तब उस ने ऐसी ही बातें उस्से कहीं कि यह इबरी दास जो तू ने हम पास ला रक्खा घुस आया कि मुझ से ठट्ठा करे॥ १८। और जब मैं चिल्ला उठी तो वुह अपना पहिरावा मेरे पास छोड़ कर बाहर निकल भागा॥ १९। जब उस के स्वामी ने ये बातें सुनी जो उस की पत्नी ने कहीं कि तेरे दास ने मुझ से यों किया तो उस का क्रोध भड़का॥ २०। और यूसुफ़ के स्वामी ने उसे लेके बंदीगृह में जहां राजा के बंधुए बंद थे बंधन में डाला और वुह वहां बंदीगृह में था॥ २१। परन्तु परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और उस पर कृपा किई और बंदीगृह के प्रधान को उस पर दयाल किया॥ २२। और बंदीगृह के प्रधान ने बंदीगृह के सारे बंधुओं को यूसुफ़ के हाथ में सौंपा और जो कुछ वे करते थे उन का प्रधान वही था॥ २३। और बंदीगृह का प्रधान उस के सारे कार्य्यों से निश्चिंत था इस लिये कि परमेश्वर उस के साथ था और उस के कार्य्यों में जो उस ने किये ईश्वर ने भाग्यमान किया॥

४० चालीसवां पर्ब्ब।

और इन बातों के पीछे यों हुआ कि मिस्र के राजा के पियाऊ ने और रसोइंया ने अपने प्रभु मिस्र के राजा का अपराध किया॥ २। और फ़िरऊन अपने दो प्रधानों पर अर्थात् प्रधान पियाऊ पर और प्रधान रसोइंया पर क्रुद्ध हुआ॥ ३। और उस ने उन्हें पहरू के प्रधान के घर में जहां यूसुफ़ बंद था बंदीगृह में डाला॥ ४। और पहरू के प्रधान ने उन्हें यूसुफ़ को सौंप दिया और उस ने उन की सेवा किई और वे कितने दिन लों बंद रहे॥ ५। और हर एक ने उन दोनों में से बंदीगृह में अर्थात् मिस्र के राजा के पियाऊ और रसोइंया ने एक ही रात एक एक स्वप्न अपने अपने अर्थ के समान देखा॥ ६। और बिहान को यूसुफ़ उन पास आया और उन पर दृष्टि करके क्या देखता है कि वे उदास हैं॥ ७। तब उस ने फ़िरऊन के प्रधानों से जो उस

के साथ उस के प्रभु के घर में बंद थे पूछा कि आज तुम क्यों कुरूप हो॥ ८। वे बोले कि हम ने स्वप्न देखा है जिस का अर्थ करवैया नहीं तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा क्या अर्थ करना ईश्वर का कार्य्य नहीं मुझ से कहो॥ ९। तब पियाऊ के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसुफ़ से कहा और उसे बोला कि अपने स्वप्न में क्या देखता हूं कि एक लता मेरे आगे है॥ १०। और उस लता में तीन डालियां थीं उन में कलियां निकलीं और उस में फूल लगे और उस के गुच्छों में पक्के दाख निकले॥ ११। और फ़िरऊन का कटोरा मेरे हाथ में था और मैं ने दाखों को लेके फ़िरऊन के कटोरे में निचोड़ा और मैं ने उस कटोरे को फ़िरऊन के हाथ में दिया॥ १२। तब यूसुफ़ ने उसे कहा कि इस का यह अर्थ है कि ये तीन डालियां तीन दिन हैं॥ १३। फ़िरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर उभाड़ेगा और तुझे अपना पद फिर देगा और तू आगे की नाईं जब तू फ़िरऊन का पियाऊ था उस के हाथ में फिर कटोरा देगा॥ १४। परन्तु जब तेरा भला होय तो मुझे स्मरण कीजियो और मुझ पर दयाल हूजियो और फ़िरऊन से मेरी चर्चा करियो और मुझे इस घर से छुड़वाइयो॥ १५। क्योंकि निश्चय मैं इबरानियों के देश से चुराया गया था और यहां भी मैं ने ऐसा काम नहीं किया कि वे मुझे इस बंदीगृह में रक्खें॥ १६। जब रसोइयों के प्रधान ने देखा कि अर्थ अच्छा हुआ तो यूसुफ़ से कहा कि मैं भी स्वप्न में था और क्या देखता हूं कि मेरे सिर पर तीन श्वेत टोकरियां हैं॥ १७। और ऊपर की टोकरी में फ़िरऊन के लिये समस्त रीति का भोजन था और पंछी मेरे सिर पर उस टोकरी में से खाते थे॥ १८। तब यूसुफ़ ने उत्तर दिया और कहा उस का अर्थ यह है की ये तीन टोकरियां तीन दिन हैं॥ १९। फ़िरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर तेरे देह से अलग करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा और पंछी तेरा मांस नोच नोच खायेंगे॥ २०। और यों हुआ कि तीसरे दिन फ़िरऊन के जन्म गांठ का दिन था और उस ने अपने सारे सेवकों का नेउंता किया और उस ने अपने सेवकों में पियाऊ के प्रधान और रसोइयों के प्रधान को उभाड़ा॥ २१। और उस ने पियाऊ के प्रधान को पियाऊ

का पद फिर दिया और उस ने फ़िरऊन के हाथ में कटोरा दिया॥ २२। परन्तु उस ने यूसुफ़ के अर्थ करने के समान रसोइयों के प्रधान को फांसी दिई॥ २३। तथापि पियाऊ के प्रधान ने यूसुफ़ को स्मरण न किया परन्तु उसे भूल गया॥

४१ एकतालीसवां पर्व्व।

फिर दो बरस बीते यों हुआ कि फ़िरऊन ने स्वप्न देखा और क्या देखता है कि आप नदी के तीर पर खड़ा है॥ २। और क्या देखता है कि नदी से सात सुंदर और मोटी मोटी गायें निकलीं और चराव पर चरने लगीं॥ ३। और क्या देखता है कि उन के पीछे और सात गायें कुरूप और डांगर नदी से निकलीं और नदी के तीर पर उन सात गायों के पास खड़ी हुईं॥ ४। और उन कुरूप और डांगर गायों ने उन सुंदर और मोटी सात गायों को खा लिया तब फ़िरऊन जागा॥ ५। और फिर सो गया और दुहराके स्वप्न देखा कि अन्न से भरी हुई और अच्छी सात बालें एक डांटी में निकलीं॥ ६। और क्या देखता है कि और सात बालें छितरी और पुरबी पवन से मुरझाई हुईं उन के पीछे निकलीं॥ ७। और वे छितरी सात बालें उन अच्छी भरी हुईं सात बालों को निगल गईं और फ़िरऊन जागा और क्या देखता है कि स्वप्न है॥ ८। और बिहान को यों हुआ कि उस का जीव व्याकुल हुआ तब उस ने मिस्र के सारे टोनहों और बुद्धिमानों को बुला भेजा और अपना स्वप्न उन से कहा परन्तु उन में से कोई फ़िरऊन के स्वप्न का अर्थ न कर सका॥ ९। तब प्रधान पियाऊ ने फ़िरऊन से कहा कि मेरा अपराध आज मुझे चेत आता है॥ १०। फ़िरऊन अपने दासों पर क्रुद्ध था और मुझे और रसोइयों के प्रधान को बंदीगृह के पहरू के घर में बंद किया था॥ ११। और एकी रात हम ने अर्थात् मैं ने और उस ने एक एक स्वप्न देखा हम में से हर एक ने अपने स्वप्न के अर्थ समान स्वप्न देखा॥ १२। और एक इबरानी तरुण पहरू के प्रधान का सेवक हमारे साथ था और हम ने उस्से कहा और उस ने हमारे स्वप्न का अर्थ किया और उस ने हर एक के स्वप्न समान अर्थ किया॥ १३। और जैसा उस ने हमारे

लिये अर्थ किया तैसा ऊआ मुझे आप ने पद फिर दिया और उसे फांसी दिई॥ १४। तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा और उन्हों ने उसे बंदीगृह से दौड़ाया और उस ने बाल बनवाया और कपड़े बदल फ़िरऊन के आगे आया॥ १५। तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा जिस का अर्थ कोई नहीं कर सक्ता और मैं ने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न को समुझके अर्थ कर सक्ता है॥ १६। और यूसुफ़ ने उत्तर में फ़िरऊन से कहा कि मुझ से नहीं ईश्वर ही फ़िरऊन को कुशल का उत्तर देगा॥ १७। तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि मैं ने स्वप्न देखा कि मैं नदी के तीर पर खड़ा ऊं॥ १८। और क्या देखता ऊं कि मोटी और सुंदर सात गायें नदी से निकलीं और चराई पर चरने लगीं॥ १९। और क्या देखता ऊं कि उन के पीछे अत्यंत कुरूप और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी बुरी जो मैं ने मिस्र के सारे देश में कभी न देखा॥ २०। और वे डांगर और कुरूप गायें अगिली मोटी सात गायों को खा गईं॥ २१। और जब वे उन के उदर में पड़ीं तब समुझ न पड़ा कि वे उन्हें खा गईं और वे वैसी ही कुरूप थीं जैसी पहिले थीं तब मैं जागा॥ २२। और फिर स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी सात बालें एक डांठी में निकलीं॥ २३। और क्या देखता ऊं कि और सात बालें मुरझाई ऊईं और पतली पुरवी पवन से कुम्हलाई ऊईं उन के पीछे उगीं॥ २४। और उन पतली बालों ने उन अच्छी सात बालों को निगल लिया और मैं ने यह टोनहों से कहा परन्तु कोई अर्थ न कर सका॥ २५। तब यूसुफ़ ने फ़िरऊन से कहा कि फ़िरऊन का स्वप्न एक ही है जो कुछ ईश्वर को करना है सो उस ने फ़िरऊन को दिखाया है॥ २६। वे सात अच्छी गायें सात बरस हैं और वे अच्छी सात बालें सात बरस हैं स्वप्न एक ही है॥ २७। और वे डांगर और कुरूप सात गायें जो उन के पीछे निकलीं सात बरस हैं और वे सात छूछी बालें जो पुरवी पवन से कुम्हलाई ऊईं हैं सो अकाल के सात बरस हैं॥ २८। यही बात है जो मैं ने फ़िरऊन से कही ईश्वर जो कुछ किया चाहता है फ़िरऊन को दिखाया॥ २९। देखिये कि सात बरस लों मिस्र के सारे देश में बड़ी बढ़ती होगी॥ ३०। और उन

के पीछे सात बरस का अकाल होगा और मिस्र देश की सारी बढ़ती भुला जायगी और अकाल देश को नष्ट करेगा॥ ३१। और उस अकाल के मारे वुह बढ़ती देश में जानी न जायगी क्योंकि वुह बड़ा भारी अकाल होगा॥ ३२। और फ़िरऊ़न पर जो स्वप्न दोहराया गया सो इस लिये है कि वुह ईश्वर से ठहराया गया है और ईश्वर थोड़े दिन में उसे करेगा॥ ३३। सो अब फ़िरऊ़न एक चतुर बुद्धिमान मनुष्य ढूंढे और उसे मिस्र देश पर ठहरावे॥ ३४। फ़िरऊ़न यही करे और देश पर करोड़ा ठहरावे और सात बढ़ती के बरसों में मिस्र देश का पांचवां भाग लिया करे॥ ३५। और वे अवैये अच्छे बरसों का सारा भोजन एकट्ठा करें और फ़िरऊ़न के बश में अन्न धर रक्खें और वे अन्न नगरों में धर रक्खें॥ ३६। और वही भोजन मिस्र के देश में अकाल के अवैये सात बरसों के लिये देश के भंडार के लिये होगा जिसतें अकाल के मारे देश नष्ट न हो॥ ३७। तब यह बात फ़िरऊ़न की दृष्टि में और उस के सारे सेवकों की दृष्टि में अच्छी लगी॥ ३८। तब फ़िरऊ़न ने अपने सेवकों से कहा क्या हम इस जन के समान पा सक्ते हैं जिस में ईश्वर का आत्मा है॥ ३९। और फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा जैसा कि ईश्वर ने ये सारी बातें तुझे दिखाई हैं सो तेरे तुल्य बुद्धिमान और चतुर कोई नहीं है॥ ४०। तू मेरे घर का करोड़ा हो और मेरी सारी प्रजा तेरी आज्ञा में होगी केवल सिंहासन पर मैं तुझ से बड़ा हूंगा॥ ४१। फिर फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा कि देख मैं ने तुझे मिस्र के सारे देश पर करोड़ा किया॥ ४२। और फ़िरऊ़न ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकाल के यूसुफ़ के हाथ में पहिना दिई और उसे झीना वस्त्र से विभूषित किया और सोने की सिकरी उस के गले में डाली॥ ४३। और उस ने उसे अपने दूसरे रथ में चढ़ाया और उस के आगे प्रचारा गया कि सन्मान करो और उस ने उसे मिस्र के सारे देश पर अध्यक्ष किया॥ ४४। और फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा कि मैं फ़िरऊ़न हूं और तुझ बिना मिस्र के सारे देश में कोई मनुष्य अपना हाथ पांव न उठावेगा॥ ४५। और फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ का नाम सफ़नथफ़ानिअख़ रक्खा और उस ने ओन के नगर

के याजक फ़ूतिफरअ की बेटी आसनाथ को उसे व्याह दिया और यूसुफ़ मिस्र देश में सर्व्वत्र फिरा॥ ४६। और जब यूसुफ़ मिस्र के राजा फ़िरऊन के आगे खड़ा हुआ तब वुह तीस बरस का था और यूसुफ़ फ़िरऊन के आगे से निकलके मिस्र के सारे देश में सर्व्वत्र फिरा॥ ४७। और बढ़ती के सात बरसों में भूमि से मुट्ठी भर भर उत्पन्न हुआ॥ ४८। तब उस ने उन सात बरसों का सारा भोजन जो मिस्र देश में हुआ एकट्ठे किया और भोजन को नगरों में धर रक्खा हर नगर के आस पास के खेतों का अन्न उसी बस्ती में रक्खा॥ ४९। और यूसुफ़ ने समुद्र की बालू की नाईं बहुत अन्न बटोरा यहां लों कि गिन्ना छोड़ दिया क्योंकि अगणित था॥ ५०। और अकाल के बरसों से आगे यूसुफ़ के दो बेटे उत्पन्न हुए जो ओन के याजक फ़ूतीफरअ की बेटी आसनाथ उस के लिये जनी॥ ५१। सो यूसुफ़ ने पहिले का नाम मुनस्सी रक्खा इस लिये कि उस ने कहा ईश्वर ने मेरा और मेरे पिता के घर का सब परिश्रम भुलाया॥ ५२। और दूसरे का नाम इफ़रायम रक्खा इस लिये कि ईश्वर ने मुझे मेरे दुख के देश में फलमान किया॥ ५३। और मिस्र देश के बढ़ती के सात बरस बीत गये॥ ५४। और यूसुफ़ के कहने के समान अकाल के सात बरस आने लगे और सारे देशों में अकाल पड़ा परन्तु मिस्र के सारे देश में अन्न था॥ ५५। पर जब कि मिस्र के सारे देश भूख से मरने लगे तो लोग रोटी के लिये फ़िरऊन के आगे चिल्लाये तब फ़िरऊन ने सारे मिस्रियों से कहा कि यूसुफ़ पास जाओ और उस का कहा मानो॥ ५६। और सारी भूमि पर अकाल था और यूसुफ़ ने खत्ते खोल खोल मिस्रियों के हाथ बेंचा और मिस्र के देश में कठिन अकाल पड़ा था॥ ५७। और सारे देशगण मिस्र में यूसुफ़ से मोल लेने आये क्योंकि सारे देशों में बड़ा अकाल था।

४२ बयालीसवां पर्व्व।

और जब यअक़ूब ने देखा कि मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने बेटों से कहा कि क्यों एक एक को ताकते हो॥ २। तब उस ने

कहा देखो मैं सुनता हूं कि मिस्र में अन्न है उधर जाओ और वहां से हमारे लिये मोल लेओ जिसतें हम जीवें और न मरें॥ ३। सो यूसुफ के दस भाई अन्न मोल लेने को मिस्र में आये॥ ४। पर यअकूब ने यूसुफ के भाई बिनयमीन को उस के भाइयों के साथ न भेजा क्योंकि उस ने कहा कहीं ऐसा न हो कि उस पर कुछ बिपत पड़े॥ ५। और इसराएल के बेटे और आनेवालों के साथ मोल लेने आये क्योंकि कनआन देश में अकाल था॥ ६। और यूसुफ तो देश का अध्यक्ष था और वह देश के सारे लोगों के हाथ बेंचा करता था सो यूसुफ के भाई आये और उन्हों ने उस के आगे भूमि लों प्रणाम किया॥ ७। और यूसुफ ने अपने भाइयों को देखके उन्हें पहिचाना पर उस ने आप को अन पहिचान किया और उन से कठोरता से बोला और उस ने उन्हें पूछा कि तुम लोग कहां से आते हो और वे बोले अन्न लेने को कनआन देश से॥ ८। यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहिचाना पर उन्हों ने उसे न पहिचाना॥ ९। और यूसुफ ने उन के बिषय के स्वप्नों को जो उस ने देखे थे स्मरण किया और उन्हें कहा कि देश की कुदशा देखने को भेदिये होकर आये हो॥ १०। तब उन्हों ने उसे कहा नहीं मेरे प्रभु परन्तु आप के सेवक अन्न लेने आये हैं॥ ११। हम सब एक ही जन के बेटे हैं हम सच्चे हैं आप के सेवक भेदिये नहीं हैं॥ १२। तब वुह उन से बोला कि नहीं परन्तु देश की कुदशा देखने आये हो॥ १३। तब उन्हों ने कहा कि आप के सेवक बारह भाई कनआन देश में एक ही जन के बेटे हैं और देखिये छुटका आज के दिन हमारे पिता पास है और एक नहीं है॥ १४। तब यूसुफ ने उन्हें कहा सोई जो मैं ने तुम्हें कहा कि तुम लोग भेदिये हो॥ १५। इसी से तुम जांचे जाओगे फिरऊन के जीवन की किरिया जब लों तुम्हारा छोटा भाई न आवे तुम जाने न पाओगे॥ १६। अपना भाई लाने को अपने में से एक को भेजो और तुम लोग बंदीगृह में रहोगे जिसतें तुम्हारी बातें जांची जावें कि तुम सच्चे हो कि नहीं नहीं तो फिरऊन के जीवन की किरिया तुम लोग निश्चय भेदिये हो॥ १७। फिर उस ने उन को तीन दिन लों बंधन में रक्खा॥ १८। और तीसरे दिन यूसुफ ने उन्हें कहा यों करके जीते रहो मैं ईश्वर से डरता हूं॥

१९। जो सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में से बंदीगृह में बंद रहने देओ और तुम अकाल के लिये अपने घर में अन्न ले जाओ॥ २०। परन्तु अपने छोटे भाई को मुझ पास लाओ सो तुम्हारी बातें यों ठहर जायंगी और तुम न मरोगे सो उन्हों ने ऐसा ही किया॥ २१। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि हम निश्चय उस बात के विषय में दोषी हैं कि जब हमारे भाई ने बिनती किई और हम ने उस के प्राण के कष्ट को देखा तो उस की न सुनी इस लिये यह बिपत्ति हम पर पड़ी है॥ २२। तब रूबिन ने उत्तर में उन्हें कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा कि इस लड़के के बिरुद्ध पाप न करो और तुम ने न सुना इस लिये देखो उस के लोहू का यही पलटा है॥ २३। और वे न जानते थे कि यूसुफ़ समुझता है क्योंकि उन के मध्य में एक दोभाषिया था॥ २४। तब वुह उन में से अलग गया और रोया और फिर उन पास आया और उन से बात चीत किई और उन में से समऊन को लेके उन की आंखों के आगे बांधा॥

२५। तब यूसुफ़ ने उन के बोरों को अन्न से भरने की और हर जन का रोकड़ उस के बोरे में फेरने की और मार्ग के लिये उन्हें भोजन देने की आज्ञा किई और उस ने उन्हें ऐसा ही किया॥ २६। और वे अपने गदहों पर अन्न लादके चल निकले॥ २७। और जब उन में से एक ने टिकान में अपने गदहे को दाना घास देने को अपना बोरा खोला तो उस ने अपना रोकड़ देखा क्योंकि वुह बोरे के मुंह पर था॥ २८। तब उस ने अपने भाइयों से कहा कि मेरा रोकड़ फेरा गया है और देखो कि वुह मेरे बोरे में है सो उन के जी में जी न रहा और वे डरके एक दूसरे को कहने लगे कि ईश्वर ने हम से यह क्या किया॥ २९। और वे कनआन देश में अपने पिता यअक़ूब पास पहुंचे और सब जो उन पर बीता था उस के आगे दोहराया॥ ३०। जो जन उस देश का स्वामी है सो हम से कठोरता से बोला और हमें देश का भेदिया ठहराया॥ ३१। और हम ने उसे कहा कि हम तो सच्चे मनुष्य हैं हम भेदिये नहीं हैं॥ ३२ हम बारह भाई एक पिता के बेटे हैं एक नहीं है और सब से छोटा आज अपने पिता के पास कनआन देश में है॥ ३३। तब उस जन ने अर्थात्

उस देश के स्वामी ने हम से कहा इस्से मैं तुम्हारी सच्चाई जांचूंगा अपना एक भाई मुझ पास छोड़ा और अपने घराने के लिये अकाल का भोजन ले जाओ॥ ३४। और अपने छुटके भाई को मेरे पास ले आओ तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं परन्तु सच्चे हो फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंपूंगा और तुम देश में ब्यापार कीजियो॥

३५। और यों हुआ कि जब उन्हों ने अपना अपना बोरा छूछा किया तो देखा कि हर जन का रोकड़ उस के बोरे में है और जब उन्हों ने और उन के पिता ने रोकड़ की थैलियां देखीं तो डर गये॥ ३६। और उन के पिता यअक़ूब ने उन्हें कहा कि तुम ने मुझे निःसंतान किया यूसुफ़ तो नहीं है और समऊन भी नहीं और तुम लोग बिनयमीन को ले जाने चाहते हो ये सब बातें मुझ से बिरुद्ध हैं॥ ३७। तब रूबिन अपने पिता से कहके बोला जो मैं उसे आप पास न लाऊं तो मेरे दोनों बेटों को मार डालियो उसे मेरे हाथ में सौंपिये और मैं उसे फिर आप पास पहुंचाऊंगा॥ ३८। और उस ने कहा मेरा बेटा तुम्हारे संग न जायगा क्योंकि उस का भाई मर गया है और यह अकेला रह गया जो जाते जाते मार्ग में उस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के बालों को शोक के साथ समाधि में उतारोगे॥

४३ तेंतालीसवां पर्ब्ब।

और देश में बड़ा अकाल था॥ २। और यों हुआ कि जब वे मिस्र से लाये हुए अन्न को खा चुके तो उन के पिता ने उन्हें कहा कि फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ॥ ३। तब यहूदाह ने उसे कहा कि उस पुरुष ने हमें चिता चिता कहा कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो मेरा मुंह न देखोगे॥ ४। सो जो आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजियेगा तो हम जायेंगे और आप के लिये अन्न मोल लेंगे। ५। परन्तु जो आप न भेजेंगे तो हम न जा सकेंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो तुम मेरा मुंह न देखोगे। ६। तब इसराएल ने कहा कि तुम ने मुझ से क्यों ऐसा बुरा ब्यवहार किया कि उस पुरुष से कहा कि हमारा और एक भाई है

७। तब वे बोले कि उस पुरुष ने हमें संकेती से हमारा और हमारे कुटुम्ब का समाचार पूछा कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारा और कोई भाई है सो हम ने बातों के व्यवहार के समान उसे कहा क्या हम निश्चय जानते थे कि वुह हमें कहेगा कि अपने भाई को ले आओ॥ ८ तब यहूदाह ने अपने पिता इसराएल से कहा कि इस तरुण को मेरे साथ कर दीजिये और हम उठ चलेंगे जिसतें हम और आप और हमारे बालक जीवें और न मरें॥ ९। मैं उस का बिचवई हूंगा आप मेरे हाथ से उसे लीजियो जो मैं उसे आप पास न लाऊं और आप के आगे न धरूं तो आप यह दोष मुझ पर सदा धरिये॥ १०। क्योंकि जो हम बिलंब न करते तो निश्चय अब लों दोहरा के फिर आये होते॥ ११। तब उन के पिता इसराएल ने उन्हें कहा कि जो अब योंहीं है तो यों करो कि इस देश के अच्छे से अच्छे फल अपने पात्रों में रख लेओ और उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ थोड़ा निर्यास थोड़ा मधु कुछ सुगंध द्रब्य और बोल और बतम और बदाम॥ १२। और दूना रोकड़ हाथ में लेओ और वुह रोकड़ जो तुम्हारे बोरों में फेर लाया गया है अपने हाथ में फेर ले जाओ क्या जाने वुह भूल से हुआ हो॥ १३। अपने भाई को भी लेओ उठो और उस पुरुष पास जाओ॥ १४। और सामर्थी ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयालु करे जिसतें वुह तुम्हारे दूसरे भाई और बिनयमीन को छोड़ देवे और जो मैं निर्बंश हुआ तो हुआ॥ १५। तब उन्हों ने वुह भेंट लिया और दूने रोकड़ को अपने हाथ में बिनयमीन समेत लिया और उठे और मिस्र को उतर चले और यूसुफ़ के आगे जा खड़े हुए॥ १६। जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उन के संग देखा तो उस ने अपने घर के प्रधान को कहा कि इन पुरुषों को घर में ले जा और कुछ मारके सिद्ध कर क्योंकि ये मनुष्य दो पहर को मेरे संग खायेंगे॥ १७। सो जैसा कि यूसुफ़ ने कहा था उस पुरुष ने वैसाही किया और वुह उन्हें यूसुफ़ के घर में लाया॥ १८। तब वे यूसुफ़ के घर में पहुंचाये जाने से डर गये और उन्हों ने कहा कि उस रोकड़ के कारण जो पहिले बार हमारे बोरों में फिर गया हम यहां पहुंचाये गये हैं जिसतें वुह हमारे बिरुद्ध एक कारण ढूंढ़े और हम पर लपके और हमें पकड़के दास बनावे और हमारे गदहों को छीन लेवे॥

१९। तब उन्हों ने यूसुफ के घर के प्रधान पास आके घर के द्वार पर उस्से बात चीत किई॥ २०। और कहा कि महाशय हम निश्चय पहिले बेर अन्न मोल लेने आये थे॥ २१। तो यों हुआ कि जब हम ने टिकाश्रय पर उतरके अपने बोरों को खोला तो क्या देखते हैं कि हर जन का रोकड़ उस के बोरों के मुंह पर है हमारा रोकड़ सब पूरा था सो हम उसे अपने हाथ में फिर लाये हैं॥ २२। और अन्न लेने को और हम रोकड़ अपने हाथों में लाये हैं और हम नहीं जानते कि हमारा रोकड़ किस ने हमारे बोरों में रख दिया॥ २३। तब उस ने कहा कि तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारे ईश्वर और तुम्हारे पिता के ईश्वर ने तुम्हारे बोरों में तुम्हें धन दिया है तुम्हारा रोकड़ मुझे मिल चुका फिर वुह समऊन को उन पास निकाल लाया॥ २४। और उस जन ने उन्हें यूसुफ के घर में लाके पानी दिया और उन्हों ने अपने चरण धोये और उस ने उन के गदहों को दाना घास दिया॥ २५। फिर उन्हों ने दो पहर को यूसुफ के आने पर भेंट सिद्ध किया क्योंकि उन्हों ने सुना था कि हमें भोजन यहीं खाना है॥ २६। और जब यूसुफ घर आया तो वे अपने हाथ की उस भेंट को भीतर लाये और उस के आगे भूमि लों दंडवत किई॥ २७। और उस ने उन से कुशल छेम पूछा और कहा कि तुम्हारा पिता कुशल से है वुह वृद्ध जिस की चर्चा तुम ने किई थी अब लों जीता है॥ २८। और उन्हों ने उत्तर दिया कि आप का सेवक हमारा पिता कुशल से है वुह अब लों जीता है फिर उन्हों ने सिर झुकाके दंडवत किई॥ २९। फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं और अपनी माता के बेटे अपने भाई बिनयमीन को देखा और कहा कि तुम्हारा छुटका भाई जिस की चर्चा तुम ने मुझ से किई थी यही है फिर कहा कि हे मेरे बेटे ईश्वर तुझ पर दयाल रहे॥ ३०। तब यूसुफ ने उतावली किई क्योंकि उस का जी अपने भाई के लिये भर आया और रोने चाहा और वुह कोठरी में गया और वहां रोया॥ ३१। फिर उस ने अपना मुंह धोया और बाहर निकला और आप को रोका और आज्ञा किई कि भोजन परोसो॥ ३२। तब उन्हों ने उस के लिये अलग और उन के लिये अलग और मिस्रियों के लिये जो उस के संग खाते थे अलग परोसा इस लिये कि मिस्री

इबरानियों के संग भोजन नहीं खा सक्ते क्योंकि वुह मिस्रियों के लिये घिन है॥ ३३। और पहिलौंठा अपनी पहिलौंठाई के और छुटका अपनी छोटाई के समान वे उस के आगे बैठ गये तब वे आश्चर्य से एक दूसरे को देखने लगे॥ ३४। और उस ने अपने आगे से भोजन उन पास भेजा परन्तु बिनयमीन का भोजन हर एक के भोजन से पंच गुन था और उन्हों ने उस के साथ जी भर के पीया॥

४४ चौंतालीसवां पर्ब्ब ।

और उस ने अपने घर के प्रधान को यह कहके आज्ञा किई कि उन मनुष्यों के बोरों को जितना वे ले जा सकें अन्न से भर दे और हर एक जन का रोकड़ उस के बोरे में डाल दे॥ २। और मेरा रूपे का कटोरा छुटके के बोरे के मुंह पर उस के अन्न के दाम समेत रख दे सो उस ने यूसुफ की आज्ञा के समान किया॥

३। और ज्योंहीं दिन निकला वे अपने गदहे समेत बिदा किये गये॥ ४। जब वे नगर से थोड़ी दूर बाहर गये यूसुफ ने अपने घर के प्रधान को कहा कि उठ और उन लोगों का पीछा कर और जब तू उन्हें जा लेवे तो उन्हें कह कि किस लिये तुम लोगों ने भलाई की संती बुराई किई है॥ ५। क्या यह वुह नहीं जिस में मेरा प्रभु पीता है उस की नाईं कोई आगम का सच्चा संदेश देता है तुम ने इस में बुरा किया है॥ ६। और उस ने उन्हें जा लिया और ये बातें उन्हें कहीं॥ ७। तब उन्हों ने उसे कहा कि हमारा प्रभु ऐसी बातें क्यों कहता है ईश्वर न करे कि आप के सेवक ऐसा काम करें॥ ८। देखिये यह रोकड़ जो हमने अपने थैलों में ऊपर पाया सो हम कनआन देश से आप पास फिर लाये थे सो क्योंकर होगा कि हम ने आप के प्रभु के घर से रूपा अथवा सोना चुराया हो॥ ९। आप के सेवकों में से वुह जिस के पास निकले वुह मार डाला जाय और हम भी अपने प्रभु के दास होंगे॥ १०। तब उस ने कहा कि तुम्हारी बातों के समान होगा जिस के पास वुह निकले सो मेरा दास होगा और तुम निर्दोष ठहरोगे॥ ११। तब हर एक पुरुष ने तुरंत अपना अपना बोरा भूमि पर उतारा और

हर एक ने अपना बोरा खोला॥ १२। और वुह बड़के से आरंभ करके छुटके लों ढूंढ़ने लगा और कटोरा बिनयमीन के थैले में पाया गया॥ १३। तब उन्हों ने अपने कपड़े फाड़े और हर एक पुरुष ने अपना गदहा लादा और नगर को फिरा॥ १४। और यहूदाह और उस के भाई यूसुफ़ के घर आये क्योंकि वुह अब लों वहीं था और वे उस के आगे भूमि पर गिरे॥ १५। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा कि तुम ने यह कैसा काम किया क्या तुम न जानते थे कि मेरे ऐसा जन निश्चय गणना कर सक्ता है॥ १६ तब यहूदाह बोला कि हम अपने प्रभु से क्या कहें और क्या बोलें अथवा क्योंकर अपने को निर्दोष ठहरावें ईश्वर ने आप के सेवकों की बुराई प्रगट किई देखिये कि हम और वुह भी जिस पास कटोरा निकला अपने प्रभु के दास हैं॥ १७। तब वुह बोला ईश्वर न करे कि मैं ऐसा करूं जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम अपने पिता पास कुशल से जाओ॥ १८। तब यहूदाह उस पास आके बोला कि हे मेरे प्रभु आप का सेवक अपने प्रभु के कान में एक बात कहने की आज्ञा पावे और अपने सेवक पर आप का कोप भड़कने न पावे क्योंकि आप फ़िरऊन के समान हैं॥ १९। मेरे प्रभु ने अपने सेवकों से यों कहके प्रश्न किया कि तुम्हारा पिता अथवा भाई है॥ २०। और हम ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक वृद्ध पिता है और उस का बुढ़ापे का एक छोटा पुत्र है और उस का भाई मर गया और वुह अपनी माता का एक ही रह गया और वुह अपने पिता का अति प्रिय है॥ २१। तब आप ने अपने सेवकों से कहा कि उसे मेरे पास लाओ जिसतें मेरी दृष्टि उस पर पड़े॥ २२। तब हम ने अपने प्रभु से कहा कि वुह तरुण अपने पिता को छोड़ नहीं सक्ता क्योंकि जो वुह अपने पिता को छोड़ेगा तो उस का पिता मर जायगा॥ २३। फिर आप ने अपने सेवकों से कहा कि जब लों तुम्हारा छुटका भाई तुम्हारे साथ न आवे तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे॥ २४। और यों हुआ कि जब हम आप के सेवक अपने पिता पास गये तो हम ने अपने प्रभु की बातें उस्से कहीं॥ २५। तब हमारा पिता बोला फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ॥ २६। तब हम बोले कि हम नहीं जा सक्ते जो हमारा छुटका भाई

हमारे साथ होवे तो हम जायेंगे क्योंकि जब लों हमारा छुटका भाई हमारे साथ न हो हम उस जन का मुंह न देखने पावेंगे॥ २७। और आप के सेवक मेरे पिता ने हमें कहा कि तुम जानते हो कि मेरी पत्नी मुझ से दो बेटे जनी॥ २८। और एक मुझ से अलग हुआ और मैं ने कहा निश्चय वुह फाड़ा गया और मैं ने उसे तब से न देखा॥ २९। अब जो तुम इसे भी मुझ से अलग करते हो और इस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के बालों को शोक से समाधि में उतारोगे॥ ३०। अब इस लिये जब मैं आप का सेवक अपने पिता पास पहुंचूं और वुह तरुण हमारे साथ न हो और इस कारण से कि उस का जीव इस तरुण के जीव से बंधा है॥ ३१। तो अंत को यही होगा कि वुह यह देख कर कि तरुण नहीं है मरही जायगा और आप के सेवक अपने पिता के पक्के बालों को शोक से समाधि में उतारेंगे॥ ३२। क्योंकि आप के सेवक ने अपने पिता पास इस तरुण का बिचवई होके कहा कि यदि मैं इसे आप पास न पहुंचाऊं तो मैं सर्बदा लों अपने पिता का अपराधी हूंगा॥ ३३। इस लिये अब मेरी बिनती सुनिये कि आप का सेवक तरुण की संती अपने प्रभु का दास होके रहे और तरुण को उस के भाइयों के संग जाने दीजिये॥ ३४। क्योंकि जो तरुण मेरे साथ न होवे मैं अपने पिता पास कैसे जाऊं ऐसा न होवे कि जो बिपत्ति मेरे पिता पर पड़े मैं उसे देखूं॥

४५ पैंतालीसवां पर्ब्ब ।

तब यूसुफ़ उन सब के आगे जो उस पास खड़े थे अपने को रोक न सका और चिल्लाया कि हर एक को मुझ पास से बाहर करो सो जब यूसुफ़ ने अपने को अपने भाइयों पर प्रगट किया तब कोई उस के संग न था॥ २। और वुह चिल्लाके रोया और मिस्रियों और फ़िरऊन के घराने ने सुना॥ ३। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों को कहा कि मैं यूसुफ़ हूं क्या मेरा पिता अब लों जीता है तब उस के भाई उसे उत्तर न दे सके क्योंकि वे उस के आगे घबरा गये॥ ४। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा कि मेरे पास आइये वे पास आये वुह बोला मैं तुम्हारा भाई

यूसुफ़ हूं जिसे तुम ने मिस्र में बेंचा॥ ५। सो इस लिये कि तुम ने मुझे यहां बेंचा उदास न होओ और व्याकुल मत होओ क्योंकि ईश्वर ने तुम से आगे मुझे प्राण बचाने को भेजा॥ ६। क्योंकि दो बरस से भूमि पर अकाल है और अभी और पांच बरस लों बोना लवना न होगा॥ ७॥ तुम्हारे बंश की पृथिवी पर रक्षा करने को और बड़े उद्धार से तुम्हारे प्राण बचाने को ईश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा॥ ८। सो अब तुम ने नहीं परन्तु ईश्वर ने मुझे यहां भेजा और उस ने मुझे फिरऊन के पिता के तुल्य बनाया और उस के सारे घर का प्रभु और सारे मिस्र देश का अध्यक्ष बनाया॥ ९। फुरती करो और मेरे पिता पास जाओ और उसे कहियो कि आप का बेटा यूसुफ़ यों कहता है कि ईश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी किया मुझ पास चले आइये ठहरिये मत॥ १०। और आप जश्न की भूमि में रहियेगा और आप और आप के लड़के और आप के लड़कों के लड़के और आप के झुंड और जन और जो कुछ आप का है मेरे पास रहेंगे॥ ११। और यहां मैं आप का प्रति-पाल करूंगा क्योंकि अब भी अकाल के पांच बरस हैं न हो कि आप और आप का घराना और सब जो आप के हैं कंगाल हो जायं॥ १२। और देखो तुम्हारी आंखें और मेरे भाई बिनयमीन की आंखें देखती हैं कि मैं आपही तुम से बोलता हूं॥ १३। और तुम मेरे पिता से मेरे विभव की जो मिस्र में है और सब कुछ की जो तुम ने देखा है चर्चा कीजियो और फुरती करो और मेरे पिता को यहां ले आओ॥ १४। और वुह अपने भाई बिनयमीन के गले लगके रोया और बिनयमीन भी उस के गले लगके रोया॥ १५। और उस ने अपने सब भाइयों को चूमा और उन से मिल के रोया उस के पीछे उस के भाइयों ने उस्से बातें किईं॥ १६। और इस बात की कीर्त्ति फ़िरऊन के घर में सुनी गई कि यूसुफ़ के भाई आये हैं और उस्से फिरऊन और उस के सेवक बहुत आनन्दित हुए॥ १७। और फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि अपने भाइयों से कह कि यह करो अपने पशुन को लादो और कनआन देश में जा पहुंचो॥ १८। और अपने पिता और अपने घरानों को लेओ और मुझ पास आओ और मैं तुम्हें मिस्र देश की अच्छी

वस्तें दूंगा ग्रोर तुम इस देश का पदारथ खाग्रोगे॥ १९। सो ग्रब तुझे यह ग्राज्ञा है यह करो कि मिस्र देश से ग्रपने लड़केबालों ग्रोर ग्रपनी पत्नियों के लिये गाड़ियां ले जाग्रो ग्रोर ग्रपने पिता को ले ग्राग्रो॥ २०। ग्रोर ग्रपनी सामग्री की कुछ चिंता न करो क्योंकि मिस्र देश के सारे पदारथ तुम्हारे हैं॥ २१। ग्रोर इसराएल के संतानों ने वैसाही किया ग्रोर यूसुफ़ ने फ़िरऊन के कहे के समान उन्हें गाड़ियां दिईं ग्रोर मार्ग के लिये भोजन दिया॥ २२। ग्रोर उस ने उन सब में से हर एक को वस्त्र दिये परन्तु उस ने बिनयमीन को तीन सो टुकड़े चांदी ग्रोर पांच जोड़े वस्त्र दिये॥ २३। ग्रोर ग्रपने पिता के लिये इस रीति से भेजा दस गदहे मिस्र की ग्रच्छी वस्तुन से लदे ज़ए ग्रोर दस गदहियां ग्रनाज ग्रोर रोटी ग्रोर भोजन से लदी ज़ईं ग्रपने पिता की यात्रा के लिये॥ २४। सो उस ने ग्रपने भाइयों को बिदा किया ग्रोर वे चल निकले तब उस ने उन्हें कहा कि देखो मार्ग में कहीं ग्रापुस में बिगड़ो मत॥ २५। ग्रोर वे मिस्र से सिधारे ग्रोर ग्रपने पिता यग्रकूब पास कनग्रान देश में पज़ंचे॥ २६। ग्रोर यह कहके उसे बोले कि यूसुफ़ तो ग्रब लों जीता है ग्रोर वुह सारे मिस्र देश का ग्रध्यक्ष है ग्रोर यग्रकूब का मन सनसना गया क्योंकि उस ने उन की प्रतीति न किई॥ २७। ग्रोर उन्हों ने यूसुफ़ की कही ज़ई सारी बातें उस से दुहराईं ग्रोर जब उस ने गाड़ियां जो यूसुफ़ ने उसे ले जाने के लिये भेजी थीं देखीं तो उन के पिता यग्रकूब का नया जीवन ज़ग्रा॥ २८। ग्रोर इसराएल बोला यह बस है कि मेरा बेटा यूसुफ़ ग्रब लों जीता है मैं जाऊंगा ग्रोर ग्रपने मरने से ग्रागे उसे देखूंगा।

४६ छियालिसवां पर्ब्ब।

ग्रोर इसराएल ने ग्रपना सब कुछ लेके यात्रा किई ग्रोर बिग्ररसबः में ग्राके ग्रपने पिता इज़हाक के ईश्वर के लिये बलिदान चढ़ाया॥ २। ग्रोर ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराएल से बातें करके कहा कि हे यग्रकूब यग्रकूब ग्रोर वुह बोला मैं यहां ज़ं तब उस ने कहा कि मैं ईश्वर तेरे पिता का ईश्वर ज़ं मिस्र में जाते ज़ए मत डर क्योंकि मैं तुझे वहां

बड़ी जाति बनाऊंगा॥ ४। मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊंगा मैं तुझे अवश्य फिर ले आऊंगा और यूसुफ़ तेरी आंखें मूंदेगा॥ ५। तब यअ़क़ूब बिअरसबः से उठा और इसराएल के बेटे अपने पिता यअ़क़ूब को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों को गाड़ियों पर जो फ़िरऊ़न ने उस के पहुंचाने को भेजी थीं ले चले॥ ६। और उन्हों ने अपना ढोर और अपनी सामग्री जो उन्हों ने कनआ़न देश में पाई थी ले लिई और यअ़क़ूब अपने सारे बंश समेत मिस्र में आया॥ ७। वुह अपने बेटों और बेटों के बेटों और बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने सारे बंश को मिस्र में लाया॥

८। और इसराएल के बेटों के नाम जो मिस्र में आये अर्थात् यअ़क़ूब के बेटे ये हैं यअ़क़ूब का पहिलौंठा रूबिन॥ ९। रूबिन के बेटे हनूक और फ़लू और हसरून और करमी॥ १०। समऊ़न के बेटे यमूएल और यमीन और अहद और यकीन और सुहर और कनआ़नी स्त्री का बेटा साऊल॥ ११। और लावी के बेटे जैरसुन क़िहात और मिरारी॥ १२। और यहूदाह के बेटे एर और ओनान और सेलः और फ़ाड़स और ज़ारिह परन्तु एर और ओनान कनआ़न देश में मर गये और फ़ाड़स के बेटे हसरून और हमूल हुए॥ १३। और इशकार के बेटे तोलअ़ और फ़ूवः और यूब और समरून॥ १४। और ज़बुलून के बेटे सरद और एलून और यहलिएल ये लियाह के बेटे हैं जिन्हें वुह फद्दानअराम में यअ़क़ूब के लिये जनी उस के सारे बेटे बेटियां तैंतीस प्राणी उस की बेटी दीनः के संग थे॥ १६। और जद के बेटे सिफयून और हज्जी और शूनी और इसबून और एरी और अरूदी और अरेली॥ १७। और यसर के बेटे यिमनः और इसवाह और इसवी और बरीअ़ः और उन की बहिन सिरह और बरीअ़ः के बेटे हिब्र और मलकिएल॥ १८। ये उस ज़िलफ़ः के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था और इन्हें वुह यअ़क़ूब के लिये जनी अर्थात् सोलह प्राणी॥ १९। और यअ़क़ूब की पत्नी राख़िल से यूसुफ़ और बिनयमीन॥ २०। और मिस्र देश में यूसुफ़ के लिए मुनस्सी और इफरायम उत्पन्न हुए जिन्हें ऊन के अध्यक्ष फ़ूती-

फ़र की बेटी आसनाथ जनी॥ २१। और बिनयमीन के बेटे वालिग और बकर और असबील और जैरा और नअमान और अखी और रूस और मफिम और ऊफ़्फ़ीम और अरद॥ २२। इन्हें राखिल यअकूब के लिये जनी सब चौदह प्राणी॥ २३। और दान का बेटा हाशीम॥ २४। और नफ़ताली के बेटे यहसीएल और जूनी और यिस्र और सलीम॥ २५। ये बिलहः के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया सो ये सब सात प्राणी हैं जिन्हें वुह यअकूब के लिये जनी॥ २६। सो सारे प्राणी जो यअकूब के साथ मिस्र में आये और उस की कटि से उत्पन्न हुए उन से अधिक जो यअकूब के बेटों की स्त्रियां थीं छियासठ प्राणी थे॥ २७। और यूसुफ़ के बेटे जो मिस्र में उत्पन्न हुए दो थे सो सारे प्राणी जो यअकूब के घराने के थे और मिस्र में आये सत्तर थे॥ २८। और उस ने यहूदाह को अपने आगे आगे जश्न लों अपनी अगुआई करने को यूसुफ़ कने भेजा और वे जश्न की भूमि में आये॥ २९। और यूसुफ़ ने अपना रथ सिद्ध किया और अपने पिता इसराएल से भेंट करने के लिये जश्न को गया और उस पास पहुंचा और उस के गले पर गिरके अबेर लों रोया किया॥ ३०। और इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि अब मैं मरने को सिद्ध हूं कि मैं ने तेरा मुंह देखा क्योंकि तू अब भी जीता है॥ ३१। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने से कहा कि मैं संदेश देने को फ़िरऊन पास जाता हूं और उसे कहता हूं कि मेरे भाई और मेरे पिता का घराना जो कनआन देश में थे मेरे पास आये हैं॥ ३२। और वे गड़रिये हैं क्योंकि ढोर चराना उन का उद्यम है और वे अपनी झुंड और ढोर और सब कुछ जो उन का है ले आये हैं॥ ३३। और यों होगा कि जब फ़िरऊन तुम्हें बुला के तुम्हारा उद्यम पूछे॥ ३४। तो कहियो कि आप के दास लड़काई से अब लों चरवाही करते रहे हैं क्या हम और क्या हमारे बाप दादे जिसतें तुम लोग जश्न की भूमि में रहो क्योंकि मिस्रियों को हर एक गड़रिये से घिन है।

४७ सैंतालीसवां पर्ब्ब ।

तब यूसुफ़ आया और फ़िरऊन से कहके बोला कि मेरा पिता और मेरे भाई और उन की झुंड और ढोर और सब जो उन के हैं कनआन देश से निकल आये और देखिये कि जश्न की भूमि में हैं॥ २। और उस ने अपने भाइयों में से पांच जन लेके उन्हें फ़िरऊन के आगे किया॥ ३। और फ़िरऊन ने उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारा उद्यम क्या उन्हों ने फ़िरऊन को कहा कि आप के सेवक क्या हम और क्या हमारे बाप दादे गड़ेरिये हैं॥ ४। फिर उन्हों ने फ़िरऊन से कहा कि हम इस देश में रहने को आये हैं क्योंकि कनआन देश में अकाल के मारे आप के सेवकों की झुंड के लिये चराई नहीं है अब इस लिये अपने सेवकों को जश्न की भूमि में रहने दीजिये॥ ५। तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि तेरा पिता और तेरे भाई तुझ पास आये हैं॥ ६। मिस्र देश तेरे आगे है अपने पिता और अपने भाइयों को सब से अच्छी भूमि में बसा जश्न की भूमि में रहें और जो तू उन में चालाक मनुष्य जानता है तो उन्हें मेरे ढोरों पर प्रधान कर॥ ७। तब यूसुफ़ अपने पिता यअ़क़ूब को भीतर लाया और उसे फ़िरऊन के आगे खड़ा किया और यअ़क़ूब ने फ़िरऊन को आशीष दिया॥ ८। और फ़िरऊन ने यअ़क़ूब से पूछा कि तेरे जीवन के बय के बरसों के दिन कितने हैं॥ ९। तब यअ़क़ूब ने फ़िरऊन से कहा कि मेरी यात्रा के दिनों के बरस एक सौ तीस हैं मेरे जीवन के बरसों के दिन थोड़े और बुरे हुए हैं और मेरे पितरों के जीवन के बरसों के दिनों को जब वे यात्रा करते थे नहीं पहुंचे॥ १०। और यअ़क़ूब ने फ़िरऊन को आशीष दिया और फ़िरऊन के आगे से बाहर गया॥ ११। और यूसुफ़ ने अपने पिता और भाइयों को मिस्र देश में सब से अच्छी भूमि में रामसीस की भूमि में जैसा फ़िरऊन ने कहा था रक्खा और अधिकारी किया॥ १२। और यूसुफ़ ने अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के सारे घराने का उन के लड़के बालों के समान प्रतिपाल किया।

१३। और सारे देश में रोटी न थी क्योंकि ऐसा कठिन अकाल था

कि मिस्र देश और कनआन देश अकाल के मारे झौंस गया था॥ १४। और यूसुफ़ ने सारे रोकड़ को जो मिस्र देश और कनआन देश में था उस अन्न की संती जो लोगों ने मोल लिया बटोरा और यूसुफ़ उस रोकड़ को फ़िरऊन के घर में लाया॥ १५। और जब मिस्र देश और कनआन देश में रोकड़ हो चुका तो सारे मिस्रियों ने आके यूसुफ़ से कहा कि हमें रोटी दीजिये कि आप के होते ज़ए हम क्यों मरें क्योंकि रोकड़ हो चुका है॥ १६। तब यूसुफ़ ने कहा कि जो रोकड़ न होय तो अपने ढोर देओ मैं तुम्हारे ढोर की संती दूंगा॥ १७। वे अपने ढोर यूसुफ़ के पास लाये और यूसुफ़ ने उन्हें घोड़ों और झुंड़ों और ढोरों के चौपाये और गदहों की संती रोटियां दिईं और उस ने उन के ढोर की संती उन्हें उस बरस पाला॥ १८। और जब वुह बरस बीत गया वे दूसरे बरस उस पास आये और उसे कहा कि हम अपने प्रभु से नहीं छिपावेंगे कि हमारा रोकड़ उठ गया हमारे प्रभु ने हमारे ढोरों की झुंड भी लिई सो हमारे प्रभु की दृष्टि में हमारे देह और भूमि से अधिक कुछ न बचा॥ १९। सो हम अपनी भूमि समेत आप की आंखों के आगे क्यों नष्ट होवें हमें और हमारी भूमि को रोटी पर मोल लीजिये और हम अपनी भूमि समेत फ़िरऊन के दास होंगे और अन्न दीजिये जिसतें हम जीवें और न मरें जिसतें देश उजड़ न जाय॥ २०। और यूसुफ़ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरऊन के लिये मोल लिई क्योंकि मिस्रियों में से हर एक ने अपना अपना खेत बेंचा इस कारण कि अकाल ने उन्हें निपट सकेत किया था सो वुह भूमि फ़िरऊन की ज़ई॥ २१। रहे लोग सो उस ने उन्हें नगरों में मिस्र के एक सिवाने से दूसरे सिवाने लों भेजा॥ २२। उस ने केवल याजकों की भूमि मोल न लिई क्योंकि याजकों ने फ़िरऊन से एक भाग पाया था और फ़िरऊन के दिये ज़ए भाग से खाते थे इस लिये उन्हों ने अपनी भूमि को न बेंचा॥ २३। तब यूसुफ़ ने लोगों से कहा कि देखो मैं ने आज के दिन तुम्हें और तुम्हारी भूमि को फ़िरऊन के लिये मोल लिया है सो यह बीज तुम्हारे लिये है खेत में बोओ॥ २४। और उस की बढ़ती में ऐसा होगा कि तुम पांचवां भाग फ़िरऊन को देना और चार भाग खेत के बीज

के लिये और तुम्हारे और तुम्हारे घराने के और तुम्हारे बालकों के भोजन के लिये होंगे॥ २५। तब वे बोले कि आप ने हमारे प्राण बचाये हैं हम अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पावें और हम फ़िरऊ़न के दास होंगे॥ २६। और यूसुफ़ ने मिस्र देश के लिये आज लों यह व्यवस्था बांधी कि फ़िरऊ़न पांचवां भाग पावे परन्तु केवल याजकों की भूमि फ़िरऊ़न की न ऊई॥ २७। और इसराएल ने मिस्र की भूमि में जश्न के देश में निवास किया और वे वहां अधिकारी थे और वे बढ़े और बऊत अधिक ऊए॥ २८। और यअ़क़ूब मिस्र देश में सत्रह बरस जीया सो यअ़क़ूब के जीवन के बरसों के दिन एक सौ सैंतालीस ऊए॥ २९। और इसराएल के मरने का समय आ पऊंचा तब उस ने अपने बेटे यूसुफ़ को बुलाके कहा कि अब जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है अपना हाथ मेरी जांघ तले रख और दया और सच्चाई से मेरे संग व्यवहार कर मुझे मिस्र में मत गाड़ियो॥ ३०। परन्तु मैं अपने पितरों में पड़ रहूंगा और तू मुझे मिस्र से बाहर ले जाइयो और उन के समाधि स्थान में गाड़ियो तब वुह बोला कि आप के कहने के समान मैं करूंगा॥ ३१। और उस ने कहा कि मेरे आगे किरिया खा और उस ने उस के आगे किरिया खाई और इसराएल खाट के सिरहाने पर झुक गया।

४८ अठतालीसवां पर्ब्ब।

और इन बातों के पीछे यों ऊआ कि किसी ने यूसुफ़ से कहा कि देखिये आप का पिता रोगी है तब उस ने अपने दो बेटे मुनस्सी और इफ़रायम को अपने साथ लिया॥ २। और यअ़क़ूब को संदेश दिया गया कि देख तेरा बेटा यूसुफ़ तुझ पास आता है और इसराएल खाट पर संभल बैठा॥ ३। और यअ़क़ूब ने यूसुफ़ से कहा कि सर्ब सामर्थी ईश्वर ने कनआ़न देश के लौज़ में मुझे दर्शन दिया और मुझे आशीष दिया॥ ४। और मुझे कहा कि देख मैं तुझे फलमान करूंगा और बढ़ाऊंगा और तुझ से बऊत सी जाति उत्पन्न करूंगा और तेरे पीछे इस देश को तेरे बंश के लिये सर्बदा का अधिकार करूंगा॥ ५। और अब तेरे दो बेटे इफ़रायम और मुनस्सी जो मिस्र में मेरे आने से आगे

तुझ से मिस्र देश में उत्पन्न ऊए हैं मेरे हैं रूबिन और समऊन की नाईं वे मेरे होंगे॥ ६। और तेरा बंश जो उन के पीछे उत्पन्न होगा तेरा होगा और अपने अधिकार में वे अपने भाइयों के नाम पावेंगे॥ ७। और मैं जो हूं सो जब फद्दान से आया और इफ़रातः थोड़ी दूर रह गया था तब कनआन देश के मार्ग में राखिल मेरे पास मर गई और मैं ने इफ़रातः के मार्ग में उसे वहीं गाड़ा वही बैतलहम है॥

८। तब इसराएल ने यूसुफ़ के बेटों को देखके कहा ये कौन हैं॥ ९। यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा कि ये मेरे बेटे हैं जिन्हें ईश्वर ने मुझे यहां दिया है वुह बोला उन्हें मुझ पास ला मैं उन्हें आशीष दूंगा॥ १०। [अब इसराएल की आंखें बुढ़ापे के मारे धुंधली ऊईं थीं कि वुह न देख सका] और वुह उन्हें उस के पास लाया और उस ने उन्हें चूमा और उन्हें गले लगाया॥ ११। और इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि मुझे तो तेरे मुंह देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने तेरा बंश भी मुझे दिखाया॥ १२। और यूसुफ़ ने उन्हें अपने घुठनों में से निकाला और अपने को भूमि पर झुकाया॥ १३। और यूसुफ़ ने उन दोनों को लिया इफ़रायम को अपने दहिने हाथ में इसराएल के बाएं हाथ की ओर और मुनस्सी को अपने बाएं हाथ में इसराएल के दहिने हाथ की ओर और उस के पास लाया॥ १४। तब इसराएल ने अपना दहिना हाथ लंबा किया और इफ़रायम के सिर पर जो छुटका था रक्खा और अपना बायां हाथ मुनस्सी के सिर पर जान बूझके अपने हाथ को यों रक्खा क्योंकि मुनस्सी पहिलौंठा था॥ १५। और उस ने यूसुफ़ को बर दिया और कहा कि वुह ईश्वर जिस के आगे मेरे पिता अबिरहाम और इज़हाक़ चलते थे और वुह ईश्वर जिस ने जीवन भर आज लों मेरी रखवाली किई॥ १६। वुह दूत जिस ने मुझे सारी बुराई से बचाया इन लड़कों को आशीष देवे और मेरा नाम और मेरे पिता अबिरहाम और इज़हाक़ का नाम उन पर होवे और उन्हें पृथिवी पर मछलियों की नाईं बढ़ावे॥ १७। और जब यूसुफ़ ने अपने पिता को अपना दहिना हाथ इफ़रायन के सिर पर रखते देखा तो उसे बुरा लगा और उस ने अपने पिता का हाथ उठा लिया जिसतें उसे इफ़रायन के सिर पर से मुनस्सी

के सिर पर रखे॥ १८। और यूसफ़ ने अपने पिता से कहा कि हे मेरे पिता ऐसा नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना दहिना हाथ उस के सिर पर रखिये॥ १९। पर उस के पिता ने न माना और कहा कि मैं जानता हूं हे बेटे मैं जानता हूं वुह भी एक जातिगण बन जायगा और वुह भी बड़ा होगा परन्तु निश्चय उस का छुटका भाई उस्से भी बड़ा होगा और उस के बंश भरपूर जातिगण बन जायेंगे॥ २०। और उस ने उन्हें उस दिन यह कहके आशीष दिया कि इसराएल तेरा नाम लेके यह आशीष देंगे कि ईश्वर तुझे इफ़रायम और मुनस्सी की नाईं बनावे सो उस ने इफरायम को मुनस्सी से आगे किया॥ २१। और इसराएल ने यूसुफ़ को कहा कि देख मैं मरता हूं परन्तु ईश्वर तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे पितरों के देश में फेर ले जायगा॥ २२। इस्से अधिक मैं ने तुझे तेरे भाइयों से एक भाग जो मैं ने अमूरियों के हाथ से अपने तलवार और धनुष से निकाला अधिक दिया है॥

४९ उंचासवां पर्ब्ब।

और यअ़क़ूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा कि एकट्ठे होओ जिसतें जो तुम पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुम से कहूं॥ २। हे यअ़क़ूब के बेटो बटुर जाओ और सुनो और अपने पिता इसराएल की ओर कान धरो॥ ३। हे रूबिन तू मेरा पहिलौंठा मेरा बूता और मेरे सामर्थ्य का आरंभ महिमा की उत्तमता और पराक्रम की उत्तमता॥ ४। जल की नाईं अस्थिर तू श्रेष्ठ न होगा इस कारण कि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा तब मेरे बिछौने पर चढ़के उसे अशुद्ध किया॥ ५। समऊ़न और लावी भाई हैं अंधेर के हथियार उन के निवासों में हैं॥ ६। हे मेरे प्राण तू उन के भेद में मत जा मेरी प्रतिष्ठा तू उन की सभा में मत मिल क्योंकि उन्हों ने अपने क्रोध से एक मनुष्य को घात किया है और अपनी ही इच्छा से नगर की भीत ढा दिई॥ ७। उन की प्रचंडरिस के लिये और उन के क्रूर कोप के लिये धिक्कार मैं उन्हें यअ़क़ूब में अलग करूंगा और इसराएल में छिन्न भिन्न करूंगा॥ ८। यहूदाह तेरे भाई तेरी स्तुति करेंगे तेरा हाथ

तेरे बैरियों के गले पर होगा तेरे पिता के बंश तेरे आगे दंडवत करेंगे॥ ९। यहूदाह सिंह का बच्चा मेरे बेटे तू अहेर पर से उठ चला वुह सिंह की हां बड़े सिंह की नाईं झुका और बैठा उसे कौन छेड़ेगा॥ १०। यहूदाह से राजदंड अलग न होगा और न व्यवस्थादायक उस के बंश से जायगा जब लों सैला न आवे और लोग उस के पास एकट्ठे होंगे॥ ११। उस ने अपना गदहा दाख से और अपनी गदही का बच्चा चुने हुए दाख से बांध के अपने कपड़े दाखरस में और अपना पहिरावा दाख के लोहू में धोया॥ १२। उस की आंखें दाखरस से लाल और उस के दांत दूध से श्वेत होंगे॥

१३। ज़बूलून समुद्र के घाट पर निवास करेगा और जहाजों के लिये घाट होगा और उस का सिवाना सैदा तक॥

१४। इशकार बली गदहा है जो दो बोझ तले झुका है॥ १५। और उस ने देखा कि बिश्राम अच्छा है और भूमि सुहाव्य है उस ने अपना कांधा बोझ उठाने को झुकाया और कर देने का दास हुआ॥ १६। दान इसराएल की गोष्ठियों में के एक की नाईं अपने लोगों का न्याय करेगा॥ १७। दान मार्ग का सर्प और पथ का नाग होगा जो घोड़े की नलियों को ऐसा डसेगा कि उस का चढ़वैया पछाड़ा जायगा॥ १८। हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति की बाट जोहता हूं॥ १९। एक सेना जद को जीतेगी परन्तु वुह अंत को आप जीतेगा॥ २०। यसर की रोटी चिकनी होगी और वुह राजीय पदारथ प्राप्त करेगा॥

२१। नफताली एक छोड़ा हुआ हरिन है वुह सुबचन कहता है॥

२२। यूसुफ एक फलमय डाल है वुह फलदायक डाल जो सोते के लग है जिस की डालियां भीत पर फैलती हैं॥ २३। धनुषधारियों ने उसे निपट सताया और मारा और उस्से डाह रक्खा॥ २४। और उस का धनुष बल में दृढ रहा और उस के हाथों की भुजाओं ने यअकूब के सर्वशक्तिमान के हाथों से बल पाया वहां से गड़रिया इसराएल का चटान है॥ २५। तेरे पिता का ईश्वर तेरी सहाय करेगा और सर्व सामर्थी जो तुझे ऊपर से स्वर्गीय आशीष और नीचे गहिराव के आशीष और स्तनों का और कोख का आशीष देगा॥ २६। तेरे पिता के

आशीष मेरे माता पिता के आशीषों से इतने अधिक हैं कि सनातन पर्ब्बतों के अंत लों बढ़ गये और ये यूसुफ के सिर पर और उस के सिर के मुकुट पर होंगे जो अपने भाइयों से अलग था॥

२७॥ बिनयमीन फड़वैये हुंडार की नाईं होगा बिहान को अहेर भखेगा और सांझ को लूट बांटेगा॥ २८। ये सब इसराएल की बारह गोष्ठी हैं और उन के पिता ने उन्हें यह कहके आशीष दिया और अपने आशीष के समान हर एक को बर दिया॥ २९। फिर उस ने उन्हें आज्ञा किई और कहा कि मैं अपने लोगों में एकट्ठे होने पर हूं मुझे अपने पितरों में उस कंदला में जो हित्ती इफ़रून के खेत में है गाड़ियो॥ ३०। उस कंदला में जो मकफीलः के खेत में ममरी के आगे कनआन देश में है जिसे अबिरहाम ने समाधि स्थान के अधिकार के लिये खेत समेत इफ़रून हित्ती से मोल लिया था॥ ३१। वहां उन्हों ने अबिरहाम को और उस की पत्नी सरः को गाड़ा वहां उन्हों ने इज़हाक को और उस की पत्नी रिबक़: को गाड़ा और वहां मैं ने लियाह को गाड़ा॥ ३२। उन्हों ने वुह खेत उस कंदला समेत जो उस में था हित्त के बेटों से मोल लिया॥ ३३। और जब यअ़कूब अपने बेटों को आज्ञा कर चुका तो उस ने बिछौने पर अपने पांव को समेट लिया और प्राण त्यागा और अपने लोगों में जा मिला॥

५० पचासवां पर्ब्ब।

तब यूसुफ़ अपने पिता के मुंह पर गिर पड़ा और उस पर रोया और उसे चूमा॥ २। तब यूसुफ़ ने अपने पिता में सुगंध भरने के लिये अपने बैद्य सेवकों को आज्ञा किई और बैद्यों ने इसराएल में सुगंध भरा॥ ३। और उस के लिये चालीस दिन बीत गये क्योंकि जिस में सुगंध भरा जाता है उतने दिन बीत्ते हैं और मिस्रियों ने उस के लिये सत्तर दिन लों बिलाप किया॥ ४। और जब रोने के दिन उस के लिये बीत गये तो यूसुफ ने फ़िरऊन के घराने से कहा कि जो मैं ने तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो फ़िरऊन के कानों में कह देओ॥ ५। कि मेरे पिता ने मुझ से किरिया लिई कि देख मैं

मरता हूं तू मुझे मेरी समाधि में जो मैं ने कनआन देश में अपने लिये खोदी है गाड़ियो सो मेरे पिता के गाड़ने को मुझे कुट्टी दीजिये और मैं फिर आऊंगा॥ ६। फिरऊन ने कहा कि जा और तुझ से किरिया लेने के समान अपने पिता को गाड़॥ ७। सो यूसुफ़ अपने पिता को गाड़ने गया और फ़िरऊन के सारे सेवक और उस के घर के प्राचीन और मिस्र देश के सारे प्राचीन उस के संग गये॥ ८। और यूसुफ़ का सारा घराना और उस के भाई और उस के पिता का घराना सब उस के संग गये उन्हों ने केवल अपने बालक और झुंड और ढोर जश्न की भूमि में छोड़ दिये॥ ९। और रथ और घोड़ चढ़े उस के साथ गये और वुह एक अति बड़ी मंडली थी॥ १०। और वे अतद के खलिहान पर जो यरदन पार है आये और वहां उन्हों ने अति बड़े बिलाप से बिलाप किया और उस ने अपने पिता के लिये सात दिन लों शोक किया॥ ११। जब देश के बासी कनआनियों ने अतद के खलिहान का बिलाप देखा तो बोले कि यह मिस्रियों के लिये बड़ा बिलाप है सो इस लिये उस का नाम मिस्रियों का बिलाप कहलाया और वुह यरदन के पार है॥ १२। और उस की आज्ञा के समान उस के बेटों ने उस से किया॥ १३। क्योंकि उस के बेटे उसे कनआन देश में ले गये और उसे उस मकफील: के खेत की कंदला में जिसे अबिरहाम ने समाधि स्थान के अधिकार के लिये इफ़रून हित्ती से ममरी के साम्ने मोल लिया था गाड़ा।

१४। और यूसुफ़ आप और उस के भाई और सब जो उस के साथ उस के पिता को गाड़ने गये थे उस के पिता को गाड़के मिस्र को फिरे॥ १५। और जब युसुफ़ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया तो उन्हों ने कहा क्या जाने यूसुफ़ हम से बैर करेगा और सारी बुराई का जो हम ने उस से किई है निश्चय पलटा लेगा॥ १६। तब उन्हों ने यूसुफ़ को यों कहला भेजा आप के पिता ने मरने से पहिले आज्ञा किई॥ १७। कि यूसुफ़ से कहियो कि अपने भाइयों के पाप और उन के अपराध क्षमा कर क्योंकि उन्हों ने तुझ से बुराई किई सो अब अपने पिता के ईश्वर के दासों के पाप क्षमा कीजिये और जब उन्हों ने यह

कहा तो यूसुफ़ रोया॥ १८। और उस के भाई भी गये और उस के आगे गिर पड़े और उन्हों ने कहा कि देखिये हम आप के सेवक हैं॥ १९। यूसुफ़ ने उन्हें कहा कि मत डरो कि क्या मैं ईश्वर की संती हूं॥ २०। पर तुम जो हो तुम ने मुझ से बुराई करने की इच्छा किई परन्तु ईश्वर ने उसे भलाई कर दिई कि बहुत से लोगों का प्राण बचावे जैसा कि आज है॥ २१। इस लिये तुम मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालकों का प्रतिपाल करूंगा और उस ने उन्हें धीरज दिया और उन से शांति की बातें कहीं॥ २२। और यूसुफ़ और उस के पिता के घराने ने मिस्र में निवास किया और यूसुफ़ एक सौ दस बरस जीया॥ २३। और यूसुफ़ ने इफ़रायम की तीसरी पीढ़ी देखी और मुनस्सी के बेटे मकीर के भी लड़के यूसुफ़ के घुठनों पर जनाये गये॥ २४। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा कि मैं मरता हूं और ईश्वर तुम से निश्चय भेंट करेगा और तुम्हें इस देश से बाहर उस देश में जिस के विषय में उस ने अबिरहाम और इज़हाक और यअ़क़ूब से किरिया खाई थी ले जायगा॥ २५। और यूसुफ़ ने इसराएल के संतानों से यह किरिया लेके कहा कि ईश्वर निश्चय तुम से भेंट करेगा और तुम मेरी हड्डियों को यहां से ले जाइयो॥ २६। सो यूसुफ़ एक सौ दस बरस का होके मर गया और उन्हों ने उस में सुगंध भरा और उसे मिस्र में मंजूषा में रक्खा।

यात्रा की पुस्तक मूसा रचित।

पहिला पर्ब्ब।

अब इसराएल के संतानों के नाम ये हैं हर एक जो अपने घराने को लेके यअकूब के साथ मिस्र में आया॥ २। रूबिन समऊन लावी यहूदाह॥ ३। इशकार ज़बुलून बिनयमीन॥ ४। दान और नफ़ताली जद और यसर॥ ५। और समस्त प्राणी जो यअकूब की जांघ से उत्पन्न हुए सत्तर थे और यूसुफ़ तो मिस्र में था॥ ६। और यूसुफ़ और उस के सारे भाई और वुह समस्त पीढ़ी मर गई॥ ७। परंतु इसराएल के संतान फलमान हुए और बहुताई से अधिक हुए और बढ़ गये और अत्यंत सामर्थी हुए और देश उन से भर गया॥ ८। तब मिस्र में एक नया राजा उठा जो यूसुफ़ को न जानता था॥ ९। और उस ने अपने लोगों से कहा कि देखो इसराएल के संतानों के लोग हम से अधिक और बलवंत हैं॥ १०। आओ हम उन से चतुराई से व्यवहार करें न हो कि वे बढ़ जायें और ऐसा होय कि जब युद्ध पड़े तो वे हमारे बैरियों से मिल जावें और हम से लड़ें और देश से निकल जायें॥ ११। इस लिये उन्हों ने उन पर करोड़ों को बैठाया कि उन्हें अपने बोझों से सतावें और उन्हों ने फ़िरऊन के लिये भंडार नगरों को अर्थात् पितोम और रामसीस को बनाया॥ १२। परंतु ज्यों ज्यों वे उन्हें दुख देते थे त्यों त्यों वे बढ़ते गये और बहुत हुए और वे इसराएल के संतान के कारण से दुखी थे॥ १३। और इसराएल के संतानों से मिस्रियों ने क्लेश से सेवा कराई॥ १४ और उन्हों ने

कठिन सेवा से गारा ग्रोर ईंट का कार्य ग्रोर खेत की भांति भांति की सेवा कराके उन के जीवन को कडुआ कर डाला उन की सारी सेवा जो वे कराते थे क्लेश के साथ थी॥

१५। तब मिस्र के राजा ने इबरानी जनाई दाइयों को जिनमें एक का नाम सिफ़रः ग्रोर दूसरी का नाम फूग्रः था यों कहा॥ १६। कि जब इबरानी स्त्री तुम से जनाई दाई का कार्य करावें ग्रोर तुम उन्हें ग्रासनों पर देखो यदि पुत्र होय तो उसे मार डालो ग्रोर यदि पुत्री होय तो जीने दो॥ १७। परंतु जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं ग्रोर जैसा कि मिस्र के राजा ने उन्हें ग्राज्ञा किई थी वैसा न किया परंतु पुत्रों को जीता छोड़ा॥ १८। फिर मिस्र के राजा ने जनाई दाइयों को बुलवाया ग्रोर उन्हें कहा कि तुम ने ऐसा क्यों किया ग्रोर पुत्रों को क्यों जीता छोड़ा॥ १९। जनाई दाइयों ने फ़िरऊन से कहा इस कारण कि इबरानी स्त्री मिस्र की स्त्रियों के समान नहीं क्योंकि वे फुरतीली हैं ग्रोर उस्से पहिले कि जनाई दाई उन पास पहुंचे वे जन बैठती हैं॥ २०। इस लिये ईश्वर ने जनाई दाइयों से सुव्यवहार किया ग्रोर लोग बढ़ गये ग्रोर ग्रत्यंत बलवंत हुए॥ २१। ग्रोर इस कारण कि जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं यों हुग्रा कि उस ने उन को बसाया॥ २२। ग्रोर फ़िरऊन ने ग्रपने समस्त लोगों को ग्राज्ञा किई कि हरएक पुत्र जो उत्पन्न होय तुम उसे नदी में डाल देग्रो ग्रोर हरएक पुत्री को जीती छोड़ो॥

२ दूसरा पर्ब्ब।

ग्रोर लावी के घराने के एक मनुष्य ने जाकर लावी की एक पुत्री ग्रहण किई॥ २। वुह स्त्री गर्भिणी हुई ग्रोर बेटा जनी ग्रोर उस ने उसे सुन्दर देख के तीन मास लों छिपा रक्खा॥ ३। ग्रोर जब ग्रागे को छिपा न सकी तो उस ने सरकंडों का एक टोकरा बनाया ग्रोर उस पर लासा ग्रोर राल लगाया ग्रोर उस बालक को उस में रक्खा ग्रोर उस ने उसे नदी के तीर पर झाऊ में रख दिया॥ ४। ग्रोर उस की बहिन दूर से खड़ी देखती थी कि उस का क्या होगा॥ ५। तब फ़िरऊन की

पुत्री स्नान करने को नदी पर उतरी और उस की सहेलियां नदी के तीर पर फिरती थीं और उस ने झाऊ में टोकरा देखकर अपनी सहेली को भेजा कि उसे लावे ॥ ६। जब उस ने उसे खोला तो बालक को देखा और देखो कि बालक रोता है वुह उस पर दया करके बोली कि यह किसी इबरानियों के बालकों में से है॥ ७। तब उस की बहिन ने फ़िरऊन की पुत्री को कहा कि मैं जाके इबरानी स्त्रियों में से एक दाई तुझ पास ले आऊं जिस्तें वुह तेरे लिये इस बालक को दूध पिलावे॥ ८। फ़िर-ऊन की पुत्री ने उसे कहा कि जा वुह कन्या गई और बालक की माता को बुलाया॥ ९। फ़िरऊन की पुत्री ने उसे कहा कि इस बालक को ले और मेरे लिये उसे दूध पिला और मैं तुझे महिनवारी दूंगी और उस स्त्री ने उस लड़के को लिया और दूध पिलाया॥ १०। और जब बालक बढ़ा वुह उसे फ़िरऊन की पुत्री पास लाई और वुह उस का पुत्र हुआ तब उस ने उस का नाम मूसा रक्खा इस कारण कि उस ने उसे पानी से निकाला॥ ११। और उन दिनों में यों हुआ कि जब मूसा सयाना हुआ वुह अपने भाइयों पास बाहर गया और उन के बोझों को देखा और अपने भाइयों में से एक इबरानी को देखा कि मिस्री उसे मार रहा है॥ १२। फिर उस ने इधर उधर दृष्टि किई और देखा कि कोई नहीं तब उस ने उस मिस्री को मार डाला और बालू में उसे छिपा दिया॥ १३। जब वुह दूसरे दिन बाहर गया तो क्या देखता है कि दो इबरानी आपुस में झगड़ रहे हैं तब उस ने उस अंधेरी को कहा कि तू अपने परोसी को क्यों मारता है॥ १४। उस ने कहा कि किस ने तुझे हम पर अध्यक्ष अथवा न्यायी ठहराया क्या तू चाहता है कि जिस रीति से तू ने मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डाले तब मूसा डरा और समझा कि यह बात खुल गई॥ १५। जब फ़िरऊन ने यह बात सुनी तो चाहा कि मूसा को मार डाले परन्तु मूसा फ़िरऊन के आगे से भाग निकला और मदियान के देश में जा रहा और एक कूएं के निकट बैठ गया॥ १६। और मदियान के याजक की सात पुत्री थीं वे आईं और खींचने लगीं और कठरों को भरा कि अपने बाप के झुंड को पानी पिलावें॥ १७। तब गड़रियों ने उन्हें हांक दिया परन्तु मूसा ने खड़े

होके उन की सहाय किई और उन की झुंड को पिलाया॥ १८। और जब वे अपने पिता रऊएल पास आईं उस ने पूछा कि आज तुम क्योंकर सबेरे फिरीं॥ १९। वे बोलीं कि एक मिस्री ने हमें गड़रियों के हाथ से बचाया और हमारे लिये जितना प्रयोजन था पानी भरा और झुंड को पिलाया॥ २०। तब उस ने अपनी पुत्रियों से कहा कि वुह कहां है उस मनुष्य को क्यों छोड़ा उसे बुलाओ कि रोटी खावे॥ २१। तब मूसा उस जन के घर में रहने पर प्रसन्न हुआ और उस ने अपनी बेटी सफूरः मूसा को दिई॥ २२। वुह पुत्र जनी उस ने उस का नाम गेरसुम रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी हूं॥ २३। और कितने दिन के पीछे मिस्र का राजा मर गया और इसराएल के वंश सेवा के कारण आह भरने लगे और रोये और उन का रोना जो उन की सेवा के कारण से था ईश्वर लों पहुंचा॥ २४। ईश्वर ने उन का कहरना सुना और ईश्वर ने अपनी बाचा को जो अबिरहाम और इज़हाक और यअकूब के साथ किई थी स्मरण किया। २५। और ईश्वर ने इसराएल के संतान पर दृष्टि किई और उन की दशा को बूझा।

३ तीसरा पर्ब्ब।

और मूसा अपने ससुर यितरू की जो मदियान का याजक था झुंड को चराता था तब वुह झुंड को बन की पछी ओर ले गया और ईश्वर के पहाड़ होरेब के पास आया॥ २। तब परमेश्वर का दूत एक झाड़ी के मध्य आग की लौर में उस पर प्रगट हुआ और उस ने दृष्टि किई तो क्या देखता है कि झाड़ी आग से जलती है और झाड़ी भस्म नहीं होती॥ ३। तब मूसा ने कहा कि मैं अब एक अलंग फिरूंगा और यह महा दर्शन देखूंगा कि यह झाड़ी क्यों नहीं जल जाती॥ ४। जब परमेश्वर ने देखा कि वुह देखने को एक अलंग फिरा तो ईश्वर ने झाड़ी के मध्य में से उसे पुकारके कहा कि हे मूसा हे मूसा तब वुह बोला मैं यहां हूं॥ ५। तब उस ने कहा कि इधर पास मत आ अपने पाओं से जूता उतार क्योंकि यह स्थान जिस पर तू खड़ा है

पवित्र भूमि है॥ ६। और उस ने कहा कि मैं तेरे पिता का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर इज़्हाक का ईश्वर और यअ़क़ूब का ईश्वर हूं तब मूसा ने अपना मुंह छिपाया क्योंकि वुह ईश्वर पर दृष्टि करने से डरा॥ ७। और परमेश्वर ने कहा कि मैं ने अपने लोगों के कष्ट को जो मिस्र में हैं निश्चय देखा और उन का चिल्लाना जो करोड़ों के कारण से है सुना क्योंकि मैं उन के दुखों को जानता हूं॥ ८। और मैं उतरा हूं कि उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और उस भूमि से निकालके अच्छी बड़ी भूमि में जहां दूध और मधु बहता है कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और फरज़ियों और हवियों और यबूसियों के स्थान में लाऊं॥ ९। और अब देख इसराएल के संतान का चिल्लाना मुझ लों आया और मैं ने वुह अंधेर जो मिस्री उन पर करते हैं देखा॥ १०। सो अब तू आ और मैं तुझे फ़िरऊन पास भेजूंगा और तू मेरे लोग इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल ला॥ ११। तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि मैं कौन हूं कि फ़िरऊन पास जाऊं और इसराएल के संतानों को मिस्र से निकालूं॥ १२। वुह बोला निश्चय मैं तेरे संग हूंगा और तुझे भेजने का यह चिन्ह होगा कि जब तू इन लोगों को मिस्र से निकाले तो तुम इस पहाड़ पर ईश्वर की सेवा करोगे॥ १३। तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि देख जब मैं इसराएल के संतान पास पहुंचूं और उन्हें कहूं कि तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और वे मुझे कहें कि उस का क्या नाम है तो मैं उन्हें क्या बताऊं॥ १४। ईश्वर ने मूसा को कहा कि मैं हूं जो हूं और उस ने कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि वुह जो है उस ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है॥ १५। फिर ईश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर अबिरहाम के ईश्वर इज़्हाक के ईश्वर और यअ़क़ूब के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है सनातन लों मेरा यही नाम है और समस्त पीढ़ियों में यही मेरा स्मरण है॥ १६। जा और इसराएलियों के प्राचीनों को एकट्ठा कर और उन्हें कह कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर अबिरहाम और इज़्हाक और यअ़क़ूब का ईश्वर यों कहता हुआ मुझे

दिखाई दिया कि मैं ने निश्चय तुम्हारी सुधि लिई और जो कुछ तुम पर मिस्र में ज़आ सो देखा॥ १७। और मैं ने कहा है कि मैं तुम्हें मिस्रियों के दुखों से निकालके कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और फ़रज़ियों और हवियों और यबूसियों के देश में जहां दूध और मधु बहता है लाऊंगा॥ १८। और वे तेरा शब्द मानेंगे और तू और इसराएलियों के प्राचीन मिस्र के राजा पास आओगे और उसे कहोगे कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई और अब हम तेरी बिनती करते हैं कि हमें बन में तीन दिन के मार्ग जाने दे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान करें॥ १९। और मैं निश्चय जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम्हें जाने न देगा हां बड़े बल से भी नहीं॥ २०। और मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा और अपने समस्त आश्चर्यों से जो मैं उन के बीच दिखाऊंगा मिस्रियों को मारूंगा उस के पीछे वुह तुम्हें जाने देगा॥ २१। और मैं उन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में अनुग्रह दूंगा और यों होगा कि जब तुम जाओगे तो छूछे न जाओगे॥ २२। परन्तु हर एक स्त्री अपनी परोसिन से और उस से जो उस के घर में रहती है रूपे के गहने और सोने के गहने और बस्त्र मांग लेगी और तुम अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों को पहिनाओगे और मिस्रियों को लूटोगे।

४ चौथा पर्ब्ब।

तब मूसा ने उत्तर दिया और कहा कि देख वे मेरी प्रतीति न करेंगे और मेरा शब्द न मानेंगे क्योंकि वे कहेंगे कि परमेश्वर तुझ पर प्रगट न ज़आ॥ २। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे हाथ में क्या है वुह बोला कि छड़ी॥ ३। फिर उस ने कहा कि उसे भूमि पर डाल दे उस ने भूमि पर डाल दिया और वुह सर्प्प बन गई और मूसा उस के आगे से भागा॥ ४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ बढ़ा और उस की पूंछ पकड़ ले तब उस ने हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया वुह उस के हाथ में छड़ी हो गई॥ ५। जिसतें वे बिश्वास करें कि परमेश्वर उन के पितरों का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर इज़हाक का ईश्वर और यअकूब

का ईश्वर तुझ पर प्रगट हुआ॥ ६। फिर परमेश्वर ने उसे कहा कि तू अपना हाथ अपनी गोद में कर और उस ने अपना हाथ अपनी गोद में किया और जब उस ने उसे निकाला तो देखो कि उस का हाथ हिम के समान कोढ़ी था॥ ७। और उस ने कहा कि अपना हाथ फिर अपनी गोद में कर उस ने फिर अपने हाथ को अपनी गोद में किया और अपनी गोद से निकाला तो देखा कि जैसी उस की सारी देह थी वुह वैसा फिर हो गया॥ ८। और एसा होगा कि यदि वे तेरी प्रतीति न करें और पहिले आश्चर्य को न मानें तो वे दूसरे आश्चर्य के बिश्वासी होंगे॥ ९। और एसा होगा कि यदि वे दोनों आश्चर्यों पर बिश्वास न लावें और तेरे शब्द के श्रोता न हों तो तू नदी का जल लेके सूखी पर डालियो और वुह जल जो तू नदी से निकालेगा सूखी पर लोहू हो जायगा॥ १०। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि हे मेरे प्रभु मैं सुबक्ता नहीं न तो आगे से और न जब से कि तू ने अपने दास से बात चीत किई परंतु मैं भारी मुंह और भारी जीभ का हूं॥ ११। तब ईश्वर ने उसे कहा कि मनुष्य के मुंह को किस ने बनाया और कौन गूंगा अथवा बहिरा अथवा दर्शी अथवा अंधा बनाता है क्या मैं परमेश्वर नहीं॥ १२। अब तू जा और मैं तेरे मुंह के साथ हूंगा और जो कुछ तुझे कहना है तुझे सिखाऊंगा॥ १३। फिर उस ने कहा कि हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं कि जिसे चाहे तू उसे भेज॥ १४। तब परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का और उस ने कहा कि क्या तेरा भाई हारून लावी नहीं है मैं जानता हूं कि वुह सुबक्ता है और देख कि वुह भी तेरी भेंट को आता है और तुझे देखके अपने मन में हर्षित होगा॥ १५। और तू उसे कहेगा और उस के मुंह में बात डालेगा और मैं तेरे और उस के मुंह के संग हूंगा और जो कुछ तुम्हें करना है सो तुम्हें सिखाऊंगा॥ १६। और लोगों पर वुह तेरा बक्ता होगा और वुह तेरे मुंह का संती होगा और तू उस के लिये ईश्वर के स्थान होगा॥ १७। और यह छड़ी जिस्से तू आश्चर्य दिखावेगा अपने हाथ में रखियो।

१८। तब मूसा अपने ससुर यितरू के पास फिर आया और उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे छुट्टी दे कि मिस्र में अपने भाइयों

पास फिर जाऊं और देखूं कि वे अब लों जीते हैं कि नहीं यितरू ने मूसा को कहा कि कुशल से जा॥ १९। तब परमेश्वर ने मदियान में मूसा को कहा कि मिस्र में फिर जा क्योंकि वे सब जो तेरे प्राण के गाहक थे सो मर गये॥ २०। तब मूसा ने अपनी पत्नी को और अपने पुत्रों को लिया और उन्हें गदहे पर बैठाया और मिस्र के देश में फिर आया और मूसा ने ईश्वर की छड़ी हाथ में लिई॥ २१। और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि जब तू मिस्र में फिर जाय तो देख कि सब आश्चर्य जो मैं ने तेरे हाथ में रक्खे हैं फ़िरऊन के आगे दिखाइयो परंतु मैं उस के मन को कठोर करूंगा कि वुह उन लोगों को जाने न देगा॥ २२। तब फ़िरऊन को यों कहियो कि परमेश्वर ने यों कहा है कि इसराएल मेरा पुत्र मेरा पहिलौठा है॥ २३। सो मैं तुझे कहता हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वुह मेरी सेवा करे और यदि तू उसे रोकेगा तो देख मैं तेरे पहिलौठे को मार डालूंगा॥

२४। और मार्ग के एक टिकाव में यों हुआ कि परमेश्वर उसे मिला और चाहा कि उसे मार डाले॥ २५। तब सफ़ूरः ने एक चोखा पत्थर उठाया और अपने बेटे की खलड़ी काट डाली और उसे उस के पाओं पर फेंका और कहा कि तू निश्चय मेरे लिये रक्तपातीपति है॥ २६। तब उस ने उसे छोड़ दिया और वुह बोली कि ख़तने के कारण तू रक्तपातीपति है॥

२७। और परमेश्वर ने हारून को कहा कि बन में जाके मूसा से मिल वुह गया और उसे ईश्वर के पहाड़ पर मिला और उसे चूमा॥ २८। और ईश्वर ने जो उसे भेजा था मूसा ने उस की सारी बातें और आश्चर्य जो उस ने उसे आज्ञा किई थी हारून से कह सुनाये॥ २९। तब मूसा और हारून गये और इसराएल के संतानों के प्राचीनों को एकट्ठा किया॥ ३०। और जो सारी बातें परमेश्वर ने मूसा को कही थीं हारून ने कहीं और लोगों के आगे प्रत्यक्ष आश्चर्य किये॥ ३१। तब लोग बिश्वास लाये और सुनके कि परमेश्वर ने इसराएल के संतान की सुधि लिई और उन के दुख पर दृष्टि किई झुके और दंडवत किई।

५ पांचवां पर्ब्ब।

और उस के पीछे मूसा और हारून ने जाके फ़िरऊ़न से कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे अरण्य में मेरे लिये पर्ब करें॥ २। तब फ़िरऊ़न ने कहा कि परमेश्वर कौन है कि मैं उस के शब्द को मानके इसराएल को जाने दूं मैं परमेश्वर को नहीं जानता और मैं इसराएल को जाने न दूंगा॥ ३। तब उन्हों ने कहा कि इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई है हमें छुट्टी दीजिये कि हम तीन दिन के पथ अरण्य में जायें और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वुह हमें मरी अथवा खड्ग से मारे॥ ४। तब मिस्र के राजा ने उन्हें कहा कि हे मूसा और हारून तुम लोगों को उन के कार्य से क्यों रोकते हो तुम अपने बोझों को जाओ॥ ५। और फ़िरऊ़न ने कहा कि देखो देश के लोग अब बज्जत हैं और तुम उन्हें उन के बोझों से रोकते हो॥ ६। और उसी दिन फ़िरऊ़न ने लोगों के करोड़ों को और अपने अध्यक्षों को आज्ञा किई॥ ७। कि अब आगे की नाईं उन लोगों को ईंटें बनाने के लिये पुआल मत देओ वे जाके अपने लिये पुआल बटोरें॥ ८। और आगे की नाईं ईंटें उन से लिया करो उस में से कुछ मत घटाओ वे आलसी हैं इसी लिये वे रो रोके कहते हैं हमें जाने देओ कि हम अपने ईश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें॥ ९। उन मनुष्यों का काम बढ़ाया जाय कि वे उस में परिश्रम करें और छथा बातों की ओर मन न लगावें॥ १०। तब लोगों के करोड़े और उन के अध्यक्ष निकले और लोगों से यों कहा कि फ़िरऊ़न कहता है कि मैं तुम्हें पुआल न दूंगा॥ ११। तुम जाओ और जहां मिले तहां से पुआल लाओ तथापि तुम्हारा कार्य न घटे॥ १२। सो लोग मिस्र के सारे देश में छिन्न भिन्न ज्जए कि पुआल की संती खूंटी एकट्ठी करें॥ १३। और करोड़ों ने शीघ्रता करके कहा कि जैसा पुआल पाते ज्जए करते थे वैसा अपने प्रतिदिन के कार्य उसी दिन देओ॥ १४। और इसराएल के संतानों के प्रधान जिन्हें फ़िरऊ़न के करोड़ों ने उन पर करोड़े किये थे मारे गये और पूछे गये कि अपनी

ठहराई ऊई सेवा को जो ईंटें बनाने की है कल और आज आगे की नाईं क्यों नहीं पूरा किया॥ १५। तब इसराएल के संतानों के प्रधान फ़िरऊन के आगे आके चिल्लाये और कहा कि अपने दासों से ऐसा व्यवहार क्यों करता है॥ १६। तेरे दासों को पुआल नहीं मिला है और वे हमें कहते हैं कि ईंटें बनाओ और देख कि तेरे सेवकों ने मार खाई है परंतु अपराध तेरे लोगों का है॥ १७। उस ने कहा कि तुम आलसी हो आलसी हो इस लिये तुम कहते हो कि हमें जाने दे कि परमेश्वर के लिये बलिदान करें॥ १८। सो अब तुम जाओ काम करो पुआल तुम को न दिया जायगा तथापि तुम गिनती की ईंटें दोगे॥ १९। इस कहने से कि तुम अपनी प्रतिदिन की ईंटों में से न घटाओगे इसराएल के संतान के प्रधानों ने देखा कि उन की दुर्दशा है॥ २०। और वे फ़िरऊन पास से निकलके मूसा और हारून को जो मार्ग में खड़े थे मिले॥ २१। और उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हें देखे और न्याय करे इस लिये कि तुम ने हमें फ़िरऊन की और उस के सेवकों की दृष्टि में ऐसा घिनौना किया है कि हमारे मारने के कारण उन के हाथ में खड्ग दिया है॥ २२। तब मूसा परमेश्वर पास फिर गया और कहा कि हे प्रभु तू ने उन लोगों को क्यों क्लेश में डाला और मुझे क्यों भेजा॥ २३। इस लिये कि जब से तेरे नाम से मैं फ़िरऊन को कहने आया उस ने उन लोगों पर बुराई किई और तू ने अपने लोगों को न बचाया॥

६ छठवां पर्ब्ब।

तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अब तू देखेगा मैं फ़िरऊन से क्या करूंगा क्योंकि वुह बलवंत भुजा से उन्हें जाने देगा और बलवंत भुजा से उन्हें अपने देश से निकालेगा॥ २। और ईश्वर मूसा से कहके बोला कि मैं परमेश्वर हूं॥ ३। और मैं अबिरहाम और इज़हाक और यअ़क़ूब को सर्वशक्तिमान ईश्वर करके दिखाई दिया परंतु मेरा नाम यहोवा उन पर प्रगट न ऊआ॥ ४। और मैं ने उन के साथ अपना नियम भी बांधा है कि मैं उन को कनआन का देश जो उन के प्रवास का देश है जिस में वे परदेशी थे दूंगा॥ ५। और मैं ने इसराएल के संतानों का

कुढ़ना भी सुना है जिन्हें मिस्री बंधुआई में रखते हैं और अपने नियम को स्मरण किया है॥ ६। सो तू इसराएल के संतानों से कह कि मैं परमेश्वर हूं और मैं तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से निकालूंगा और मैं तुम्हें उन की दासता से छुड़ाऊंगा और मैं अपना हाथ बढ़ाके बड़े बड़े न्याय से तुम्हें मोक्ष दूंगा॥ ७। और तुम्हें अपने लोग बनाऊंगा और मैं तुम्हारा ईश्वर हूंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से निकालता हूं॥ ८। और मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा जिस के विषय में मैं ने हाथ उठाया है कि उसे अबिरहाम और इज़हाक और यअकूब को दूं और मैं उसे तुम्हारा अधिकार करूंगा परमेश्वर मैं हूं॥ ९। मूसा ने इसराएल के संतानों को योंहीं कहा परंतु उन्हों ने मन के क्लेश के मारे और परिश्रम के कष्ट से मूसा की न सुनी॥ १०। फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा॥ ११। जा और मिस्र के राजा फ़िरऊन से कह कि इसराएल के संतानों को अपने देश से जाने दे॥ १२। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे कहा कि देख इसराएल के संतानों ने तो मेरी बात नहीं मानी है तो मैं जो होंठ का अख़तनः हूं फ़िरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा॥ १३। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा और उन्हें इसराएल के संतान और मिस्र के राजा फ़िरऊन के विषय में आज्ञा किई कि इसराएल के संतान को मिस्र के देश से बाहर ले जावें॥ १४। उन के पितरों के घराने के प्रधान ये थे इसराएल के पहिलौठे रूबिन के पुत्र हनूख और पलू और हज़रून और करमी थे ये रूबिन के घराने॥ १५। शमऊन के पुत्र जमुएल और यामन और ओहाद और जाख़ीन और ज़ोहर और शावल कनआनी स्त्री का पुत्र ये शमऊन के घराने॥ १६। और लावी के पुत्रों के नाम उन के पीढ़ियों के समान ये जीरशून और कुहास और मरारी और लावी के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे॥ १७। जीरशून के पुत्र उन के घराने के समान लबनी और शमई थे॥ १८। कुहास के पुत्र अमराम और इज़हार और हिबरून और अज़ीएल और कुहास के जीवन के बरस एक सौ तैंतीस थे॥ १९। और मरारी के पुत्र महली और मुशी उन की पीढ़ियों के समान लावी के घराने ये थे॥ २०। अमराम ने अपने

पिता की बहिन यकीबद से ब्याह किया वुह उस के लिये हारून और मूसा को जनी अमराम के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे ॥

२१। इज़हार के पुत्र क़रह और नाफग़ और जखरी थे॥ २२। अज़िएल के पुत्र मीसाएल और इलज़ाफ़ान और सथरी॥ २३। और हारून ने नखशन की बहिन अमीनादाब की पुत्री अलीशबा को पत्नी किया उस्से नादाब और अबीहू और इलिअज़र और एतामार उत्पन्न हुए॥ २४। क़रह के पुत्र असीर और इलक़ाना और अबियासाफ़ ये करीहू के घराने थे॥ २५। हारून के पुत्र इलिअज़र ने पुतिएल की पुत्रियों में से पत्नी किई उस्से फीनीहाज़ उत्पन्न हुआ लावियों के बाप दादों के घरानों में ये प्रधान थे॥ २६। ये वे हारून और मूसा हैं जिन्हें परमेश्वर ने कहा कि इसराएल के संतानों को उन की सेना की रीति मिस्र के देश से निकाल लाओ॥ २७। ये वे हैं जिन्हों ने मिस्र के राजा फ़िरऊन से इसराएल के संतानों को मिस्र से निकाल ले जाने को कहा ये वे ही मूसा और हारून हैं॥

२८। और जिस दिन परमेश्वर ने मूसा को कहा॥ २९। कि मैं परमेश्वर हूं सब जो मैं तुझे कहता हूं मिस्र के राजा फ़िरऊन से कह॥ ३०। मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख मैं होंठ का अख़तनः हूं फ़िरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा॥

७ सातवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं ने तुझे फ़िरऊन के लिये ईश्वर बनाया और तेरा भाई हारून तेरा आगमज्ञानी होगा॥ २। सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करूंगा अपने भाई हारून से कहियो और वुह फ़िरऊन से कहेगा कि इसराएल के संतानों को मिस्र के देश से जाने दे॥ ३। और मैं फ़िरऊन के मन को कठोर करूंगा और अपने लक्षण और आश्चर्य को मिस्र के देश में अधिक करूंगा॥ ४। परंतु फ़िरऊन तुम्हारी न सुनेगा जिसतें मैं अपना हाथ मिस्र पर धरूं और अपनी सेनाओं को जो मेरे लोग इसराएल के संतान हैं बड़े न्याय दिखाके देश से मिस्र के निकाल लाऊं॥ ५। और जब मैं मिस्र पर हाथ चलाऊंगा

श्रीर इसराएल के संतानों को उन में से निकालूंगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥ ६। जैसा परमेश्वर ने उन्हें कहा मूसा श्रीर हारून ने वैसाही किया॥ ७। श्रीर जिस समय में उन दोनों ने फ़िरजन से बात चीत किई मूसा अस्सी बरस का श्रीर हारून तिरासी बरस का था।

८। श्रीर परमेश्वर ने मूसा श्रीर हारून से कहा॥ ९। कि जब फ़िरजन तुम्हें कहे कि अपने लिये आश्चर्य दिखाश्रो तो हारून को कहियो कि अपनी छड़ी ले श्रीर फ़िरजन के आगे डाल दे वुह एक सर्प्प बन जायेगी॥ १०। तब मूसा श्रीर हारून फ़िरजन कने गये श्रीर जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही किया हारून ने अपनी छड़ी फ़िरजन के श्रीर उस के सेवकों के आगे डाल दिई श्रीर वुह सर्प्प हो गई॥ ११। तब फ़िरजन ने भी पण्डितों श्रीर टोन्हों को बुलवाया सो मिस्र के टोन्हों ने भी टोना से ऐसा ही किया॥ १२। क्योंकि उन में से हर एक ने अपनी अपनी छड़ी डाल दिई श्रीर वे सर्प्प हो गईं परंतु हारून की छड़ी उन की छड़ियों को निंगल गई॥ १३। श्रीर फ़िरजन का मन कठोर रहा जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी॥ १४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरजन का अंतःकरण कठोर है वुह उन लोगों को जाने नहीं देता॥ १५। अब तू बिहान फ़िरजन के पास जा देख कि वुह जल की श्रोर जाता है तू नदी के तट पर जिधर से वुह आवे उस के सन्मुख खड़ा हूजियो श्रीर वुह छड़ी जो सर्प्प हुई थी अपने हाथ में लीजियो॥ १६। श्रीर उसे कहियो कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने मुझे तेरे पास भेजा है श्रीर कहा है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे अरण्य में मेरी सेवा करें श्रीर देख कि तू ने अब लों न सुना॥ १७। परमेश्वर ने यों आज्ञा किई कि इस्से तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूं देख कि मैं यह छड़ी जो मेरे हाथ में है नदी के पानियों पर मारूंगा श्रीर वे लोहू हो जायेंगे॥ १८। श्रीर मछलियां जो नदी में हैं मर जायेंगी श्रीर नदी बसाने लगेगी श्रीर मिस्र के लोग नदी का पानी पीने को घिन करेंगे॥ १९। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी ले श्रीर अपना हाथ मिस्र के पानियों पर श्रीर उन की धारों श्रीर उन की नदियों श्रीर उन के कुण्डों

और उन के सब पानियों पर चला कि वे लोहू बन जायें और मिस्र के सारे देश में हर एक पत्थर और काठ के पात्र में लोहू हो जाय॥ २०। जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा और हारून ने वैसाही किया मूसा ने छड़ी उठाई और नदी के पानी पर फ़िरऊन के और उस के सेवकों के साम्ने मारी और नदी के सब पानी लोहू हो गये॥ २१। और नदी की मछलियां मर गईं और नदी बसाने लगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पी न सके और मिस्र के सारे देश में लोहू ऊआ॥ २२। तब मिस्र के टोन्हों ने भी अपने टोना से ऐसाही किया और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और जैसा कि परमेश्वर ने कहा था वैसा उस ने उन की न सुनी॥ २३। फ़िरऊन फिरा और अपने घर को गया और उस ने अपना मन इस बात पर भी न लगाया॥ २४। और सारे मिस्रियों ने नदी के आस पास खोदे कि उन से पानी पीवें क्योंकि वे नदी का पानी पी न सके॥ २५। और परमेश्वर के नदी को मारने से पीछे सात दिन बीत गये॥

८ आठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन पास जा और उसे यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें॥ २। और यदि तू उन्हें जाने न देगा तो देख मैं तेरे समस्त सिवानों को मेंड़ुकों से मारूंगा॥ ३। और नदी बऊताई से मेंड़ुकों को उत्पन्न करेगी और वे निकलके तेरे घर में और तेरे शयन स्थान में और तेरे बिछौनों पर और तेरे सेवकों के घरों में और तेरी प्रजा पर और तेरी भट्ठियों में और तेरे आटे गूंधने के कठरों में जायेंगे॥ ४। और मेंड़ुक तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे समस्त सेवकों पर चढ़ेंगे॥ ५। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि छड़ी से अपना हाथ धारों पर और नदियों पर और कुण्डों पर बढ़ा और मेंड़ुकों को मिस्र के देश पर चढ़ा॥ ६। तब हारून ने मिस्र के पानियों पर हाथ बढ़ाया और मेंड़ुकों ने निकलके मिस्र के देश को ढांप लिया॥ ७। और टोन्हों ने भी अपने टोना से ऐसाही किया और मिस्र के देश पर मेंड़ुक चढ़ाये॥ ८। तब फ़िरऊन ने मूसा और हारून को

बुलाया और कहा कि परमेश्वर से बिनती करो कि मेंडुकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे और मैं उन लोगों को जाने देऊंगा कि वे परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें॥ ९। और मूसा ने फ़िरऊन को कहा कि तुझे मुझ पर यह महत्व हो मैं तेरे और तेरे सेवकों के और तेरी प्रजा के लिये प्रार्थना करूं कि मेंडुक तुझ से और तेरे घरों से दूर किये जावें और नदीही में रहें॥ १०। वुह बोला कि कल तब उस ने कहा कि तेरे बचन के अनुसार जिसतें तू जाने कि परमेश्वर हमारे ईश्वर के तुल्य कोई नहीं॥ ११। और मेंडुक तुझ से और तेरे घरों से और तेरे दासों और तेरी प्रजा से जाते रहेंगे वे केवल नदी में रहेंगे॥ १२। फिर मूसा और हारून फ़िरऊन पास से निकल गये और मूसा ने परमेश्वर के आगे मेंडुकों के लिये जो उस ने फ़िरऊन के कारण भेजे थे प्रार्थना किई॥ १३। और परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना के अनुसार किया और मेंडुक घरों और गांओं और खेतों में से मर गये॥ १४। और उन्हों ने उन्हें जहां तहां एकट्ठे कर कर ढेर कर दिये और देश बसाने लगा॥ १५। परंतु जब फ़िरऊन ने देखा कि सावकाश मिला तो उस ने अपना मन कठोर किया और जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसा उन की न सुनी॥ १६। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी छड़ी बढ़ा और देश की धूल पर मार जिसतें वुह मिस्र के समस्त देश में जुईं बन जायें॥ १७। उन्हों ने वैसा ही किया क्योंकि हारून ने अपना हाथ छड़ी के साथ बढ़ाया और पृथिवी की धूल को मारा और वहीं मनुष्य पर और पशु पर जुईं बन गईं समस्त धूल मिस्र के सारे देश में जुईं बन गईं। १८। और टोन्हों ने भी चाहा कि अपने टोनों से जुईं निकालें पर निकाल न सके सो मनुष्य पर और पशु पर जुईं थीं॥ १९। तब टोन्हों ने फ़िरऊन से कहा कि यह ईश्वर की अंगुली है और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा था उस ने उन की न सुनी॥ २०। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि बिहान को उठ और फ़िरऊन के आगे खड़ा हो देख वुह जल पर आता है तू उसे कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें॥ २१। नहीं तो यदि तू मेरे लोग को जाने न देगा तो

देख मैं तुझ पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर और तेरे घरों में झुंड के झुंड मच्छड़ भेजूंगा और मिस्रियों के घर में और समस्त भूमि में जहां जहां वे हैं उन झुंडों से भर जायेंगे॥ २२। और मैं उस दिन जश्न की भूमि को जिस में मेरे लोग बास करते हैं अलग करूंगा कि मच्छड़ों के झुंड वहां न होंगे जिसतें तू जाने कि पृथिवी के मध्य में परमेश्वर मैं हूं॥ २३। और मैं तेरे लोग में और अपने लोग में बिभाग करूंगा और यह आश्चर्य कल होगा॥ २४। तब परमेश्वर ने योंहीं किया और फ़िरऊन के घर में और उस के सेवकों के घरों में और मिस्र के समस्त देश में मच्छड़ों के झुंड आये और मच्छड़ों के मारे देश नाश हुआ।

२५। तब फ़िरऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि जाओ और अपने ईश्वर के लिये देश में बलि चढ़ाओ॥ २६। मूसा ने कहा कि यों करना उचित नहीं क्योंकि हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये वुह बलि चढ़ावेंगे जिस से मिस्री घिन रखते हैं क्या हम मिस्रियों के घिन का बलि उन की दृष्टि के आगे चढ़ावें क्या वे हमें पत्थरवाह न करेंगे॥ २७। सो हम बन में तीन दिन के पथ में जायेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये जैसा वुह हमें आज्ञा करेगा बलिदान करेंगे॥ २८। फ़िरऊन बोला कि मैं तुम्हें जाने दूंगा जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बन में बलि चढ़ाओ केवल बहुत दूर मत जाओ मेरे लिये बिनती करो॥ २९। मूसा बोला देख मैं तेरे पास से बाहर जाता हूं और मैं परमेश्वर के आगे बिनती करूंगा कि मच्छड़ों के झुंड फ़िरऊन से और उस के सेवकों से और उस की प्रजा से कल जाते रहें परन्तु ऐसा न हो कि फ़िरऊन फिर छल करके लोगों को परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को जाने न देवे॥ ३०। तब मूसा फ़िरऊन पास से बाहर गया और परमेश्वर से बिनती किई॥ ३१। परमेश्वर ने मूसा की बिनती के समान किया और उस ने मच्छड़ों के झुंडों को फ़िरऊन से और उस के सेवकों से और उस की प्रजा पर से दूर किया और एक भी न रहा॥ ३२। फ़िरऊन ने इस बार भी अपना मन कठोर किया और उन लोगों को जाने न दिया।

९ नवां पर्व्व।

तब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि फ़िरऊन पास जा और उसे कह कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें॥ २। क्योंकि यदि तू जाने न देगा और अब की भी उन्हें रोकेगा॥ ३। तो देख परमेश्वर का हाथ तेरे खेत के पशुन पर घोड़ों पर गदहों पर ऊंटों पर बैलों पर और भेड़ों पर अत्यंत मरी पड़ेगी॥ ४। और परमेश्वर इसराएल के और मिस्रियों के पशुन में विभाग करेगा और उन में से जो इसराएल के संतानों के हैं कोई न मरेगा॥ ५। और परमेश्वर ने एक समय ठहराया और कहा कि परमेश्वर यह कार्य्य देश में कल करेगा॥ ६। और दूसरे दिन परमेश्वर ने वैसाही किया और मिस्र के समस्त पशु मर गये परंतु इसराएल के संतानों के पशुन में से एक भी न मरा॥ ७। तब फ़िरऊन ने भेजा तो क्या देखता है कि इसराएलियों के पशुन में से एक न मरा और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और उस ने लोगों को जाने न दिया॥ ८। और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा कि भट्ठी में से मुट्ठी भर भर के राख लो और मूसा उसे फ़िरऊन के साम्ने आकाश की ओर उड़ा दे॥ ९। और वुह मिस्र की समस्त भूमि में सूक्ष्म धूल हो जायगी और मिस्र के समस्त देश में मनुष्यों पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकलेंगे॥ १०। और उन्हों ने भट्ठी की राख लिई और फ़िरऊन के आगे खड़े हुए और मूसा ने उसे स्वर्ग की ओर उड़ाया और तुरंत मनुष्यों पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकले॥ ११। और फोड़ों के मारे टोन्हे मूसा के आगे खड़े न रह सके क्योंकि टोन्हों पर और सारे मिस्रियों पर फोड़े थे॥ १२। और परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा था वैसा उस ने उन की बात न मानी॥ १३। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कल तड़के उठ और फ़िरऊन के आगे खड़ा हो और उसे कह कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें॥ १४। इस लिये कि मैं अब की अपनी

सारी विपत्ति तेरे मन पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर डालूंगा कि तू जाने कि समस्त पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं॥ १५। क्योंकि अब मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा जिसतें मैं तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारूं और तू पृथिवी पर से नष्ट हो जायगा॥ १६। और निश्चय मैं ने तुझे इस लिये उठाया है कि अपना पराक्रम तुझ पर दिखाऊं और अपना नाम सारे संसार में प्रगट करूं॥ १७। अब लों तू मेरे लोगों पर अहंकार करता जाता है और उन्हें जाने नहीं देता॥ १८। देख मैं कल इसी समय में ऐसे बड़े बड़े ओले बरसाऊंगा जो मिस्र में उस के आरंभ से अबलों न पड़े थे॥ १९। सो अभी भेज और अपने पशु और जो कुछ कि खेत में तेरा है सभों को एकट्ठे कर क्योंकि हर एक मनुष्य पर और पशु पर जो खेत में होगा और घर में लाया न जायगा ओले पड़ेंगे और वे मर जायेंगे॥ २०। जो परमेश्वर के बचन से डरता था फ़िरऊ़न के सेवकों में से हर एक ने अपने सेवकों को और अपने पशुन को घर में भगाया॥ २१। और जिस ने परमेश्वर के बचन को न माना अपने सेवकों और अपने पशुन को खेत में रहने दिया॥ २२। और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के सारे देश में मनुष्य पर और पशु पर और खेत के हर एक साग पात पर जो मिस्र की भूमि में है ओले पड़ें॥ २३। और मूसा ने अपनी छड़ी स्वर्ग की ओर बढ़ाई और परमेश्वर ने गर्ज्जन और ओले भेजे और आग भूमि पर चलती थी और ईश्वर ने मिस्र की भूमि पर ओले बरसाये॥ २४। सो मिस्र की भूमि पर ओले थे और ओले से आग अति कष्टित मिली ऊई थी यहां लों कि मिस्र के समस्त देश में जब से कि वुह देशी ऊआ था ऐसा न पड़ा था॥ २५। और ओलों ने मिस्र के समस्त देश में क्या मनुष्य को और क्या पशु सब को जो खेत में थे मारा और ओलों से खेत के सब साग पात मारे गये और खेत के सारे वृक्ष टूट गये॥ २६। केवल जश्न की भूमि में जहां इसराएल के संतान थे ओले न पड़े॥ २७। तब फ़िरऊ़न ने भेजा और मूसा और हारून को बुलवाया और उन्हें कहा कि मैं ने इस बार अपराध किया परमेश्वर न्यायी है मैं और मेरी प्रजा दुष्ट हैं॥ २८।

परमेश्वर से बिनती करो कि अब आगे को परमेश्वर का शब्द और ओला न हो और मैं तुम्हें जाने दूंगा फिर आगे न रहोगे॥ २९। तब मूसा ने उसे कहा कि मैं नगर से बाहर निकलते हुए परमेश्वर के आगे अपने हाथ उठाऊंगा और गर्ज्जना थम जायेगी और ओले भी न बरसेंगे जिसतें तू जाने कि पृथिवी परमेश्वर ही की है॥ ३०। परंतु मैं जानता हूं कि तू और तेरे सेवक अब भी परमेश्वर ईश्वर से न डरेंगे॥ ३१। सो ओलों से सन और जव मारे पड़े क्योंकि जव की बालें आ चुकी थीं और सन बढ़ चुका था॥ ३२। पर गोहूं और जोंधरी मारे न पड़े क्योंकि वे बढ़े न थे॥ ३३। और मूसा ने फ़िरऊन पास से नगर के बाहर जाके परमेश्वर के आगे हाथ फैलाये और गर्ज्जना और ओले थम गये और भूमि पर दृष्टि थम गई॥ ३४। जब फ़िरऊन ने देखा कि मेंह और ओले और गर्ज्जना थम गया तो फेर दुष्टता किई और उस ने और उस के सेवकों ने अपना मन कठोर किया॥ ३५। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था वैसा फ़िरऊन का अंतःकरण कठोर रहा और उस ने इसराएल के संतानों को जाने न दिया॥

१० दसवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन पास जा क्योंकि मैं ने उस के अंतःकरण को और उस के सेवकों के अंतःकरण को कठोर कर दिया है जिसतें मैं अपने ये लक्षण उन के आगे प्रगट करूं॥ २। और जिसतें तू अपने पुत्र और पौत्रों को मेरे लक्षण और जो जो मैं ने मिस्र में किया वर्णन कर सुनावे जिसतें तुम जानो कि परमेश्वर मैं ही हूं॥ ३। सो मूसा और हारून ने फ़िरऊन पास आके उसे कहा कि परमेश्वर इब्रानियों का ईश्वर यों कहता है कि कब लों तू मेरे आगे आप को नम्र करने से अलग रहेगा मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें ४। क्योंकि यदि तू मेरे लोगों के जाने से नाह करेगा तो देख कल मैं तेरे सिवानों में टिड्डी भेजूंगा॥ ५। और वे पृथिवी को ढांप लेंगी कि कोई पृथिवी को देख न सकेगा और वे उस बचे हुए को जो ओलों से तेरे लिये बच रहे हैं खा जायेंगी और हर एक वृक्ष को जो तुम्हारे लिये खेत

में उगता है चट करेंगी॥ ६। और वे तेरे घर में और तेरे सेवकों के घर में और सारे मिस्त्रियों के घर में भर जायेंगी जिन्हें तेरे पितरों ने और तेरे पितरों के पितरों ने जिस दिन से कि वे पृथिवी पर आये आज लों नहीं देखा तब वुह फिरा और फिरऊन पास से निकल गया।

७। फिरऊन के सेवकों ने उसे कहा कि यह पुरुष कबलों हमारे लिये फंदा होगा उन लोगों को जाने दे जिसतें वे परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें अबताईं तू नहीं जानता कि मिस्र नष्ट ज्ञआ॥ ८। तब मूसा और हारून फिरऊन पास फिर पड़ंचाये गये और उस ने उन्हें कहा कि जाओ परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो परंतु वे कौन से लोग हैं जो जायेंगे॥ ९। मूसा बोला कि हम अपने तरुणों और अपने वृद्ध और अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों और अपने झुंडों और अपने बैलों समेत जायेंगे क्योंकि हमें आवश्यक है कि अपने ईश्वर का पर्ब्ब मानें॥ १०। तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर यों हीं तुम्हारे संग रहे जो मैं तुम्हें और तुम्हारे बालकों को जाने दूं तुम जानो क्योंकि बुराई तुम्हारे आगे है॥ ११। ऐसा नहीं अब पुरुषगण जाओ और परमेश्वर की सेवा करो क्योंकि तुम ने यही चाहा सो वे फिरऊन के आगे से निकाले गये।

१२। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ टिड्डी के लिये मिस्र की भूमि पर बढ़ा जिसतें वे मिस्र के देश पर आवें और देश के हर-एक साग पात जो ओलों से बच रहा है खा लेवें॥ १३। सो मूसा ने मिस्र के देश पर अपनी छड़ी बढ़ाई और परमेश्वर ने उस सारे दिन और सारी रात पुरवी पवन चलाई और जब बिहान ज्ञआ तो वुह पुरवी पवन टिड्डी लाई॥ १४। और टिड्डी मिस्र के सारे देश पर आईं और मिस्र के समस्त सिवाने पर उतरीं वे अति थीं कि उन के आगे ऐसी टिड्डी न आई थीं न उन के पीछे फिर आवेंगी॥ १५। क्योंकि उन्हों ने समस्त पृथिवी को छा लिया यहां लों कि देश अंधियारा हो आया और उन्हों ने देश की हर एक हरियाली को और वृक्षों के फलों को जो ओलों से बच गये थे चाट लिया और मिस्र के समस्त देश में किसी वृक्ष पर अथवा खेत के साग पात में हरियाली न बची॥ १६। तब फिरऊन ने मूसा और हारून को बेग बुलाया कि मैं परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर का और तुम्हारा

अपराधी हूं॥ १७। सो अब मैं तुम्हारी बिनती करता हूं केवल इस बार मेरा अपराध क्षमा करो और परमेश्वर अपने ईश्वर से बिनती करो कि केवल इसी मरी को मुझ से दूर करे॥ १८। सो वुह फिरऊन के पास से निकल गया और परमेश्वर से बिनती किई॥ १९। और परमेश्वर ने बड़ी पछवां भेजी जो टिड्डी को ले गई और उन्हें लाल समुद्र में डाल दिया और मिस्र के समस्त सिवानों में एक टिड्डी न रही॥ २० परंतु परमेश्वर ने फिरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने इसराएल के संतान को जाने न दिया॥ २१। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के देश पर अंधकार छा जाय ऐसा अंधकार जो टटोला जावे॥ २२। तब मूसा ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ाया और तीन दिन लों सारे मिस्र के देश में गाढ़ा अंधियारा रहा॥ २३। उन्हों ने एक दूसरे को न देखा कोई तीन दिन भर के अपने स्थान से न उठा परंत सारे इसराएल के संतान के निवासों में उंजियाला था॥ २४। तब फिरऊन ने मूसा को बुलाया और कहा कि जाओ परमेश्वर की सेवा करो केवल तुम्हारे झुंड और तुम्हारे बैल यहीं रहें तुम्हारे बालक भी तुम्हारे संग जायें॥ २५। मूसा ने कहा कि तुझे अवश्यक है कि हमें बलिदान और होम की भेंट देवे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बलि चढ़ावें॥ २६। हमारे पशु भी हमारे संग जायेंगे एक खुर छोड़ा न जायगा क्योंकि हमें अवश्यक है कि उन में से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा के लिये लेवें और जब लों उधर न जावें हम नहीं जानते कि कौनसी वस्तुन से परमेश्वर की सेवा करें॥ २७। परंतु परमेश्वर ने फिरऊन के अंतःकरण को कठोर कर दिया और उस ने उन्हें जाने न दिया॥ २८। और फिरऊन ने उसे कहा कि मेरे आगे से दूर हो आप को चौकस रख और फिर मेरा मुंह मत देख क्योंकि जिस दिन मेरा मुंह देखेगा तू मर जायगा॥ २९। तब मूसा ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखूंगा॥

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं फ़िरऊन पर और मिस्रियों पर एक मरी और लाऊंगा उस के पीछे वुह तुम्हें यहां से जाने देगा और जब वुह तुम्हें जाने दे तो निश्चय तुम्हें सर्ब्बथा धकिआवेगा॥ २। सो अब लोगों के कानों कान कह कि हर एक पुरुष अपने परोसी से और हर एक स्त्री अपनी परोसिन से रूपे के और सोने के गहने मांग लेवे॥ ३। और परमेश्वर ने उन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में प्रतिष्ठा दिई और मूसा भी मिस्र की भूमि में फ़िरऊन के सेवकों की और लोगों की दृष्टि में महान था॥ ४। और मूसा ने कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं आधी रात को निकल के मिस्र के बीचोंबीच जाऊंगा॥ ५। और मिस्र के देश में सारे पहिलौंठे फ़िरऊन के पहिलौंठे से लेके जो सिंहासन पर बैठा है उस सहेली के पहिलौंठे लों जो चक्की के पीछे है और सारे पशु के पहिलौंठे मर जायेंगे॥ ६। और मिस्र के समस्त देश में ऐसा बड़ा रोना पीटना होगा जैसा कि कभी न हुआ था न कभी फिर होगा॥ ७। परन्तु सारे इसराएल के संतान पर एक कुक्कर भी अपनी जीभ न हिलावेगा न तो मनुष्य पर और न पशु पर जिसतें तुम जानो कि परमेश्वर क्योंकर मिस्रियों में और इसराएलियों में बिभाग करता है॥ ८। और यह तेरे समस्त सेवक मुझ पास आवेंगे और मुझे प्रणाम करके कहेंगे कि तू निकल जा और सब लोग जो तेरे पश्चाद्गामी हैं जावें और उस के पीछे मैं निकल जाऊंगा फिर वुह फ़िरऊन के पास से निपट रिसियाके निकल गया।

९। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जिसतें मेरे आश्चर्य मिस्र के देश में बढ़ जायें फ़िरऊन तुम्हारी न सुनेगा॥ १०। और मूसा और हारून ने ये सब आश्चर्य फ़िरऊन के आगे दिखाये और परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने अपने देश से इसराएल के संतान को जाने न दिया।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

तब परमेश्वर ने मिस्र के देश में मूसा और हारून को कहा॥ २। कि यह मास तुम्हारे लिये मासों का आरंभ होगा और यह तुम्हारे बरस का पहिला मास होगा॥ ३। इसराएलियों की सारी मंडली से कहो कि इस मास के दसवें में हर एक पुरुष से अपने पितरों के घर के समान एक मेम्ना घर पीछे मेम्ना अपने लिये लेवें॥ ४। और यदि वुह घर मेम्ना के लिये छोटा हो तो वुह और उस का परोसी जो उस के घर से लगा हुआ हो प्राणी की गिनती के समान लेखे में मेम्ना को ठहरावे॥ ५। तुम्हारा मेम्ना निष्खोट होवे पहिले बरस का नरूख भेड़ों से अथवा बकरियों से लीजियो॥ ६। और तुम उसे उसी मास के चौदहवें दिन लों रख छोड़ियो और इसराएलियों की समस्त मंडली सांझ को उसे मारें॥ ७। और वे लोहू को लेवें और उन घरों के जहां वे खायेंगे द्वार की दोनों ओर और ऊपर की चौखट पर छापा देवें॥ ८। और वे उसी रात को आग में भुना हुआ उस का मांस अखमीरी रोटी कड़वी तरकारी के साथ खावें॥ ९। उसे कच्चा और पानी में उसन के न खावें परंतु उस के सिर पांव और उदर समेत आग पर भून के खावें॥ १०। और उस में से बिहान लों कुछ न रहने दीजियो यदि कुछ उस में से बिहान लों रह जाय आग से जला दीजियो॥ ११। और उसे यों खाइयो कटि बंधे हुए अपनी जूतियां पाओं में पहिने हुए अपना लठ अपने हाथों में लिये हुए और उसे बेग खा लीजियो कि परमेश्वर का फसह है॥ १२। इस लिये कि मैं आज रात मिस्र के देश में होके निकलूंगा और सब पहिलौंठे मनुष्य के और पशुन के जो उस में हैं मारूंगा और मिस्र के समस्त देवताओं पर न्याय करूंगा मैं परमेश्वर हूं॥ १३। और वुह लोहू तुम्हारे घरों पर जहां जहां तुम हो तुम्हारे लिये एक चिन्ह होगा और मैं वुह लोहू देख के तुम पर से बीत जाऊंगा और जब मिस्र के देश को मारूंगा तब मरी तुम पर नाश करने को न आवेगी॥ १४। और यह दिन तुम्हारे लिये एक स्मरण के लिये होगा और तुम अपनी समस्त पीढ़ियों के लिये उसे परमेश्वर के लिये पर्ब्ब

रखियो तुम नित्य उस बिधि से पर्ब रखियो॥ १५। सात दिन लों अखमीरी रोटी खाइयो पहिले ही दिन खमीर अपने घरों से उठा डालियो इस लिये कि जो कोई पहिले दिन से लेके सातवें दिन लों खमीरी रोटी खायगा सो प्राणी इसराएल से काटा जायगा॥ १६। और पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा और सातवें दिन भी पवित्र बुलावा होगा उस में कोई कार्य न होगा केवल भोजन ही का कार्य हर एक मनुष्य से किया जाय॥ १७। और इस अखमीरी रोटी के पर्ब को मानोगे क्योंकि उसी दिन में तुम्हारी सेनाओं को मिस्र के देश से निकाल लाया हूं इस लिये इस दिन को अपनी पीढ़ियों में बिधि से नित्य मानो॥ १८। पहिले मास की चौदहवीं तिथि से सांझ को इक्कीसवीं तिथि लों अखमीरी रोटी खाइयो॥ १९। सात दिन लों तुम्हारे घरों में खमीर न पाया जावे क्योंकि जो कोई खमीरी खायेगा वही प्राणी इसराएल की मंडली से काटा जायगा चाहे परदेशी हो चाहे देशी॥ २०। तुम कोई वस्तु खमीरी मत खाइयो तुम अपने समस्त बस्तियों में अखमीरी रोटी खाइयो॥ २१। तब मूसा ने इसराएल के समस्त प्राचीनों को बुलाया और उन्हें कहा कि अपने अपने घर के समान एक एक मेम्ना लेओ और फसह का मेम्ना मारो॥ २२। और एक मुट्ठी जूफा लेओ और उसे उस लोहू में जो बासन में है बोर के द्वार की दोनों ओर उस्से छापो और तुम में से कोई बिहान लों अपने घर के द्वार से बाहर न जावे॥ २३। क्योंकि परमेश्वर मिस्रियों को मारने के लिये आरपार जायगा और जब वुह पटाव पर और दोनों द्वार की ओर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार पर से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में जाने न देगा कि मारे॥ २४। और अपने और अपने संतानों के लिये बिधि करके इसे नित्य मानियो॥ २५। और ऐसा होगा कि जब तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हें अपनी बाचा के समान देगा प्रवेश करोगे तब इस सेवा का पालन करियो॥ २६। और ऐसा होगा कि जब तुम्हारे संतान तुम से कहें कि इस सेवा का क्या अर्थ है॥ २७। तब कहियो कि यह परमेश्वर के फसह का बलिदान है जो मिस्र में इसराएल के संतानों के घरों पर से बीत गया

जब उस ने मिस्रियों को मारा और हमारे घरों को बचाया तब लोगों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये॥ २८। और इसराएल के संतान चले गये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसाही किया॥ २९। और यों हुआ कि परमेश्वर ने आधी रात को मिस्र के देश में सारे पहिलौंठे को फिरऊन के पहिलौंठे से लेके जो अपने सिंहासन पर बैठता था उस बंधुआ के पहिलौंठे लों जो बंदीगृह में था पशुन के पहिलौंठों समेत नाश किये॥ ३०। और रात को फिरऊन उठा वुह और उस के सब सेवक और सारे मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा बिलाप था क्योंकि कोई घर न रहा जिस में एक न मरा॥ ३१। तब उस ने मूसा और हारून को रात ही को बुलाया और कहा कि उठो मेरे लोगों में से निकल जाओ तुम और इसराएल के संतान जाओ और अपने कहेके समान परमेश्वर की सेवा करो॥ ३२। जैसा तुम ने कहा है अपना झुंड और बैल भी लेओ और बिदा होओ और मेरे लिये भी आशीष चाहो॥ ३३ और मिस्री उन लोगों पर शीघ्रता करते थे कि वे मिस्र के देश से बेग निकाले जायं क्योंकि उन्हों ने कहा कि हम सब मरे॥ ३४। और उन लोगों ने आटा गूंधा हुआ उस से आगे कि वुह खमीर हो गूंधने के कठरे समेत कपड़ों में बांध के अपने कांधों पर उठा लिया॥ ३५। और इसराएल के संतानों ने मूसा के कहने के समान किया और उन्हों ने मिस्रियों से रूपे के और सोने के गहने और बस्त्र मांग लिये॥ ३६। और परमेश्वर ने उन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में ऐसा अनुग्रह दिया कि उन्हों ने उन्हें दिया और उन्हों ने मिस्रियों को लूट लिया।

३७। और इसराएल के संतान रामसीस से सुक्कात को पांव पांव चल निकले जो बालकों को छोड़ छः लाख पुरुष थे॥ ३८। और एक मिली जुली मंडली भी और झुंड और बैल और बहुत पशु उन के साथ गये॥ ३९। और उन्हों ने उस गूंधे हुए आटे के जो वे मिस्र से ले निकले थे फुलके पकाये क्योंकि वुह खमीर न हुआ था इस कारण कि वे मिस्र से खदेड़े गये थे और ठहर न सके और अपने लिये कुछ भोजन सिद्ध न किया।

४०। अब इसराएल के संतानें का निवास जो मिस्र में रहते थे चार सौ तीस बरस था॥ ४१। और चार सौ तीस बरस के अंत में यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर की समस्त सेना मिस्र के देश से निकल गई॥ ४२। उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाने के कारण यह रात परमेश्वर के लिये पालन करने के योग्य है कि वह उन्हें मिस्र के देश से बाहर लाया यह परमेश्वर की वुह रात है जिसे चाहिये कि इसराएल के संतान अपनी पीढ़ी पीढ़ी पालन करें॥ ४३। फिर परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा कि फसह की बिधि यह है कि उस्से कोई परदेशी न खावे॥ ४४॥ परंतु हर एक का मोल लिया हुआ दास जब तू ने उस का खतनः किया तब वुह उस्से खावे॥ ४५। बिदेशी और बनिहार सेवक उस्से न खावें॥ ४६। यह एक ही घर में खाया जावे उस का मांस कुछ घर से बाहर न निकाला जावे और न उस की हड्डी तोड़ी जावे॥ ४७। इसराएल के संतान की समस्त मंडली उसे पालन करे॥ ४८। और जब कोई परदेशी तुझ्में बास करे और परमेश्वर के लिये फसह चाहे तो उस के सब पुरुष खतनः करावें तब वुह समीप आवे और उसे पालन करे और वुह ऐसा होगा जैसा कि देश में जन्म पाया हो क्योंकि कोई अखतनः जन उस्से न खावे॥ ४९। देश के उत्पन्न हुओं के और देशी और बिदेशी के लिये एक ही व्यवस्था होगी॥ ५०। सारे इसराएल के संतानें ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई वैसा ही किया॥ ५१। और यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर ने इसराएल के संतानें को सेना सेना मिस्र के देश से बाहर निकाला॥

१३ तेरहवां पर्ब्ब॥

और परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। कि सब पहिलौंठे मेरे लिये पवित्र कर जो कुछ कि इसराएल के संतानें में गर्भ को खोले क्या मनुष्य और क्या पशु सो मेरा है॥ ३। और मूसा ने लोगों से कहा कि इस दिन को जिस में तुम मिस्र से बाहर आये और बंधुआई के घर से निकले स्मरण रखियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें बाहु बल से निकाल लाया खमीरी रोटी खाई न जावे॥ ४। तुम अबिब के मास में आज के दिन

बाहर निकलो॥ ५। और यों होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और हवियों और यबूसियों के देश में लावे जिसे उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई कि तुम्हें देगा जहां दूध और मधु बहता है तब तू इस मास में इस सेवा को पालन करियो॥ ६। सात दिन लों तू अखमीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन परमेश्वर के लिये पर्ब होगा॥ ७। अखमीरी रोटी सात दिन खाई जावे और कोई खमीरी रोटी तुझ पास दिखाई न देवे और न खमीर तेरे समस्त देश में तेरे आगे दिखाई देवे॥ ८। और तू उसी दिन अपने पुत्र को समझाइयो कि यह इस कारण है कि जब हम मिस्र से बाहर निकले तब परमेश्वर ने हम से यह किया॥ ९। और यह एक लक्षण तुझ पास तेरे हाथ में और तेरी दोनों आंखों के बीच स्मरण के लिये होगा जिसते परमेश्वर की व्यवस्था तेरे मुंह में हो क्योंकि परमेश्वर तुझे भुजा के बल से मिस्र से निकाल लाया॥ १०। इस लिये तू यह विधि इस रितु में बरस बरस पालन करियो॥ ११। और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों के देश में लावे जैसा उस ने तुझ से और तेरे पितरों से किरिया खाई है और उसे तुझे देवे॥ १२ तू सभों को जो कि गर्भ को खोलता है और हर एक पशु के पहिलौंठे नर परमेश्वर का॥ १३। और गधे के हर एक पहिलौंठे को एक मेम्ना से छुड़ाइयो और यदि तू उसे न छुड़ावे तो उस का गला तोड़ दीजियो और अपने संतानों में से मनुष्य के सारे पहिलौंठों को छुड़ा लीजियो॥ १४। और यों होगा कि जब तेरा पुत्र कल को तुझे पूछे कि यह क्या है तब उसे कहियो कि परमेश्वर हमें अपनी भुजा के बल से मिस्र से और बधुआई के घर से निकाल लाया॥ १५। और यों हुआ कि जब फिरऊन ने हमें कठिनता से छोड़ा कि परमेश्वर ने मिस्र के देश में सब पहिलौंठे मनुष्य के पहिलौंठों से लेके पशुन के पहिलौंठों लों मार डाला इस कारण मैं उन सब नरों को जो गर्भ खोलते हैं परमेश्वर के लिये बलि करता हूं परंतु अपने संतानों के सब पहिलौंठों को छुड़ाता हूं॥ १६। और यह तेरे हाथ में और तेरी आंखों के बीच में एक चिह्नानी होगी क्योंकि परमेश्वर अपने बाहु बल से हमें मिस्र से निकाल

लाया ॥ १७। और यों हुआ कि जब फ़िरऊन ने उन लोगों को जाने दिया तब ईश्वर उन्हें फ़िलिसतियों के देश के मार्ग से ले न गया यद्यपि वुह समीप था क्योंकि ईश्वर ने कहा कि न हो कि लोग लड़ाई देख के पछतावें और मिस्र को फिर जावें॥ १८। परंतु ईश्वर उन लोगों को लाल समुद्र के बन की ओर ले गया और इसराएल के संतान पांती पांती मिस्र के देश से निकले चले गये॥ १९। और मूसा ने यूसुफ़ की हड्डियां साथ ले लिईं क्योंकि उस ने इसराएल के संतान को किरिया देके कहा था कि निश्चय ईश्वर तुम से भेंट करेगा और तुम यहां से मेरी हड्डियां अपने साथ लेजाइयो॥ २०। फिर वे सुक्कात से चल निकले और बन के छोर पर छावनी किई॥ २१। और परमेश्वर उन के आगे आगे दिन को मेघ के खंभे में होके उन्हें मार्ग बताता था और रात को आग के खंभे में होके कि उन्हें प्रकाश करे जिसतें रात दिन चले जावें॥ २२। वुह दिन में मेघ के खंभे को और रात में आग के खंभे को उन लोगों के आगे से न उठाता था॥

१४ चौदहवां पर्व्व।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। कि इसराएल के संतान से कह कि फिरें और मिजदाल के आगे फीउलहीरात और समुद्र के मध्य में छावनी करें तुम बअलसफून के सन्मुख जो समुद्र के तीर पर है डेरा करो॥ ३। क्योंकि फिरऊन इसराएल के संतानों के विषय में कहेगा कि वे इस देश में बझे हैं और बन ने उन्हें छेंक लिया है॥ ४। और मैं फ़िरऊन के मन को कठोर करूंगा कि वुह उन का पीछा करेगा और मैं फ़िरऊन और उस की समस्त सेना पर प्रतिष्ठित होऊंगा जिसतें मिस्री जानें कि परमेश्वर मैं हूं और उन्हों ने ऐसाही किया॥ ५। और मिस्र के राजा को कहा गया कि लोग भाग गये तब फ़िरऊन का और उस के सेवकों का मन लोगों के विरोध में फिर गया और वे बोले कि हम ने यह क्या किया कि इसराएल को अपनी सेवा से जाने दिया॥ ६। तब उस ने अपना रथ जोता और अपने लोग साथ लिये॥ ७। और उस ने छः सौ चुने हुए रथ और मिस्र के समस्त रथ साथ लिये

ग्रैार उन सभों पर प्रधान बैठाये॥ ८। ग्रैार परमेश्वर ने मिस्र के राजा फिरऊन के मन को कठोर कर दिया ग्रैार उस ने इसराएल के संतानों का पीछा किया परंतु इसराएल के संतान हाथ बढ़ाये हुए निकले॥ ९। परंतु मिस्री उन का पीछा किये चले गये ग्रैार फिरऊन के सारे घोड़ों ग्रैार रथों ग्रैार उस के घोड़ चढ़ों ग्रैार उस की सेना ने समुद्र के तीर फीउलहीरात के समीप बअलसफून के सन्मुख उन्हें छावनी खड़ी करते जा ही लिया॥ १०। ग्रैार जब फिरऊन पास ग्राया इसराएल के संतानों ने ग्रांखें ऊपर किईं ग्रैार मिस्रियों को ग्रपने पीछे ग्राते हुए देखा ग्रैार ग्रत्यंत डर गये तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की दोहाई दिई॥ ११। ग्रैार मूसा से कहा कि क्या मिस्र में समाधें न थीं कि तू हमें मरने के लिये वहां से बन में लाया तू ने हम से यह क्या व्यवहार किया कि हमें मिस्र से निकाल लाया॥ १२। क्या यह वही बात नहीं जो हम ने मिस्र में तुझ से कही थी कि हम से हाथ उठा जिसतें हम मिस्रियों की सेवा करें कि हमारे लिये मिस्रियों की सेवा करनी बन में मरने से ग्रच्छी थी॥ १३। तब मूसा ने लोगों को कहा कि मत डरो खड़े रहो ग्रैार परमेश्वर की मोक्ष देखो जो ग्राज के दिन वुह तुम्हें दिखावेगा क्योंकि उन मिस्रियों को जिन्हें तुम ग्राज देखते हो उन्हें फिर कधी न देखोगे॥ १४। परमेश्वर तुम्हारे लिये युद्ध करेगा ग्रैार तुम चुप चाप रहोगे॥ १५। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू क्यों मेरी ग्रोर विलाप करता है इसराएल के संतान से कह कि वे ग्रागे बढ़ें॥ १६। परंतु तू ग्रपनी छड़ी उठा ग्रैार समुद्र पर ग्रपना हाथ बढ़ा ग्रैार उसे दो भाग कर ग्रैार इसराएल के संतान समुद्र के बीचोंबीच में से सूखी भूमि पर होके चले जायेंगे॥ १७। ग्रैार देख कि मैं मिस्रियों के ग्रंतःकरण को कठोर कर दूंगा ग्रैार वे उन का पीछा करेंगे ग्रैार मैं फिरऊन ग्रैार उस की सेना ग्रैार उस के रथ ग्रैार उस के घोड़ चढ़ों पर ग्रपनी महिमा प्रगट करूंगा॥ १८। ग्रैार जब मैं फिरऊन ग्रैार उस के रथों ग्रैार उस के घोड़ चढ़ों पर ग्रपनी महिमा प्रगट करूंगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥ १९। ग्रैार ईश्वर का दूत जो इसराएल की छावनी के ग्रागे चला जाता था सो फिरा ग्रैार

उन के पीछे आ रहा और मेघ का खंभा उन के सन्मुख से गया और उन के पीछे जा ठहरा ॥ २० । और मिस्त्रियों की छावनी और इसराएल की छावनी के मध्य में आया और वुह एक अंधियारा मेघ मिस्त्रियों के लिये हो गया परंतु रात को इसराएल को उंजियाला देता था से रात भर एक दूसरे के पास न आया। २१ । फिर मूसा ने समुद्र पर हाथ बढ़ाया और परमेश्वर ने बड़ी प्रचंड पुरबी आंधी से रात भर समुद्र को चलाया और समुद्र को सुखा दिया और पानी को दो भाग किया ॥ २२ । और इसराएल के संतान समुद्र के बीच में से सूखे पर होके चले गये और पानी की भीत उन के दहिने और बायें ओर थी ॥ २३ । और मिस्त्रियों ने पीछा किया और फिरऊन के सब घोड़े और उस के रथ और उस के घोड़ चढ़े उस का पीछा किये ऊए समुद्र के मध्य लों आये ॥ २४ । और यों ऊआ कि परमेश्वर ने पिछले पहर उस आग और मेघ के खंभे में से मिस्त्रियों की सेना पर दृष्टि किई और मिस्त्रियों की सेना को घबराया ॥ २५ । और उन के रथों के पहियों को निकाल डाला कि वे भारी से हांके जाते थे से मिस्त्रियों ने कहा कि आओ इसराएलियों के सन्मुख से भागें क्योंकि परमेश्वर उन के लिये मिस्त्रियों से लड़ता है ॥ २६ । और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र पर बढ़ा जिसतें पानी मिस्त्रियों पर और उन के रथों और उन के घोड़ चढ़ों पर फिर आवे ॥ २७ । तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया और समुद्र बिहान होते अपनी सामर्थ्य पर फिरा और मिस्त्री उस के आगे भागे और परमेश्वर ने मिस्त्रियों को समुद्र में नाश किया ॥ २८ । और पानी फिरा और रथों और घोड़ चढ़ों और फिरऊन की सब सेना को जो उन के पीछे समुद्र के बीच में आई थी छिपा लिया और एक भी उन में से न बचा ॥ २९ । परंतु इसराएल के संतान सूखी से समुद्र के बीच में से चले गये और पानी की भीत उन के बायें और दहिने थी ॥ ३० । से परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को मिस्त्रियों के हाथ से यों बचाया और इसराएलियों ने मिस्त्रियों की लोथें समुद्र के तीर पर देखीं ॥ ३१ । और जो बड़ा कार्य कि परमेश्वर ने मिस्त्रियों पर प्रगट किया

इसराएलियों ने देखा और लोग परमेश्वर से डरे तब परमेश्वर पर और उस के दास मूसा पर बिश्वास लाये।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब।

तब मूसा और इसराएल के संतान ने परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति इस रीति से गाया और कहके बोला कि मैं परमेश्वर का भजन करूंगा क्योंकि उस ने बिभव से जय पाया उस ने घोड़े को उस के चढ़वैया समेत समुद्र में नष्ट किया॥ २। परमेश्वर मेरी सामर्थ्य और मेरा गान है और वुह मेरी मुक्ति ऊआ वुह मेरा ईश्वर है मैं उस के लिये निवास सिद्ध करूंगा मेरे पिता का ईश्वर है मैं उस की महिमा करूंगा॥ ३। परमेश्वर योड्डा है परमेश्वर उस का नाम है॥ ४। उस ने फिरऊन के रथ और उस की सेना को समुद्र में डाल दिया उस के चुने ऊए प्रधान भी लाल समुद्र में डूबे हैं॥ ५। गहिरापों ने उन्हें ढांप लिया वे पत्थर के समान नीचे लों डूब गये॥ ६। हे परमेश्वर तेरा दहिना हाथ सामर्थ्य में महान ऊआ हे परमेश्वर तेरे दहिने हाथ ने बैरियों को टुकड़ा टुकड़ा किया॥ ७। तू ने अपनी महिमा के महत्व से अपने बिरोधियों को उलट डाला तू ने अपने कोप को भेजके उन्हें खूंटी की नाईं भस्म किया॥ ८। और तेरे नथुनों के खास से जल एकट्ठे ऊए और बाढ़ ढेर होके खड़े हो गये और समुद्र के अंतःकरण में गहिरापे जम गये॥ ९। बैरी बोला कि मैं पीछा करूंगा मैं जा ही लेऊंगा मैं लूट को बांट लूंगा उन से मैं अपनी लालसा को संतुष्ट करूंगा मैं अपना खड्ग खींचूंगा मेरा हाथ उन को नाश करेगा॥ १०। तू ने अपनी पवन से फूक मारी समुद्र ने उन्हें छिपा लिया वे सीसे की नाईं महा जलों में डूब गये॥ ११। हे परमेश्वर देवों में तेरे तुल्य कौन है पवित्रता में तेरे तुल्य तेजोमय कौन है तेरी नाईं आश्चर्य करते स्तुति में भयंकर॥ १२। तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया पृथिवी उन्हें निगल गई॥ १३। तू ने अपनी दया से अपने छोड़ाये ऊए लोगों की अगुआई किई तू ने अपनी सामर्थ्य से उन्हें अपने पवित्र निवास लों पऊंचाया॥ १४। लोग सुनके डरेंगे और फिलिसतीया के निवासियों को भय पकड़ेगा॥ १५।

तब अदूम के प्रधान बिस्मित होंगे मोअब के बलवंतों को थर्थराहट पकड़ेगी कनआन के समस्त बासी गल जायेंगे॥ १६। उन पर भय और डर पड़ेगा तेरी भुजा के महत्व से वे पत्थर की नाईं रह जायेंगे जब लों तेरे लोग पार न जावें हे परमेश्वर जब लों तेरे लोग जिन्हें तू ने मोल लिया पार न जावें॥ १७। तू उन्हें भीतर लावेगा और अपने अधिकार के पहाड़ पर जो हे परमेश्वर तू ने अपने निवास के लिये बनाया है और पवित्र स्थान हे परमेश्वर जिसे तेरे हाथों ने स्थापा है उस स्थान में तू उन्हें बोयेगा॥ १८। परमेश्वर सनातन सनातन राज्य करेगा॥ १९। क्योंकि फ़िरऊन का घोड़ा उस के रथों और उस के घोड़चढ़े समेत समुद्र में पैठा परंतु इसराएल के संतान समुद्र के मध्य से सूखे सूखे चले गये॥ २०। तब हारून की बहिन मिरयम आगमज्ञानिनी ने मृदंग अपने हाथ में लिया और सब स्त्री ढोलों के साथ नाचती हुईं उस के पीछे चलीं॥ २१। और मिरयम ने उन्हें उत्तर दिया कि परमेश्वर का गान करो क्योंकि वुह अति महान है उस ने घोड़े को उस के चढ़वैये समेत समुद्र में नष्ट किया॥ २२। और मूसा इसराएल को लाल समुद्र से ले गया और वे सूर के बन में गये और वे तीन दिन लों बन में चले गये और पानी न पाया॥ २३। और जब वे मारः में आये तब मारः का पानी पी न सके क्योंकि वुह कड़ुआ था इस कारण वुह मारः कहाया॥ २४। तब लोग यह कहिके मूसा के बिरोध में कुड़कुड़ाने लगे कि हम क्या पीयें॥ २५। उस ने परमेश्वर से दोहाई दिई और परमेश्वर ने उसे एक पेड़ दिखाया जब उस ने उसे पानियों में डाला तब पानी मीठे हो गये वहां उस ने उन के लिये एक बिधि और ब्यवस्था बनाई और वहां उस ने उन्हें परखा॥ २६। और कहा कि यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से सुने और जो उस की दृष्टि में अच्छा है उसे करे और उस की आज्ञा पर कान धरे और उस की बिधि को चेत में रक्खे तो मैं उन रोगों को जो मिस्रियों पर लाया तुझ पर न दूंगा क्योंकि मैं वुह परमेश्वर हूं जो तुझे चंगा करता है॥ २७। वे फिर एलीम को जहां जल के बारह कूएं और खजूर के सत्तर वृक्ष थे आये और उन्हों ने जल के तीर डेरा किया॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

फिर उन्हों ने एलीम से यात्रा किई और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली मिस्र देश से निकलने के पीछे दूसरे मास की पंद्रहवीं तिथि को सीना के बन में जो एलीम और सीना के मध्य में है पहुंची॥ २। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून पर बन में कुड़कुड़ाई॥ ३। और इसराएल के संतानों ने उन्हें कहा कि हाय कि हम परमेश्वर के हाथ से मिस्र के देश में मारे जाते जब हम मांस की हांड़ियों के लग बैठते थे और रोटी मन मनती खाते थे क्योंकि तुम हमें इस बन में निकाल लाये हो जिसतें सारी मंडली को भूख से मार डालो॥ ४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं स्वर्ग से तुम्हारे लिये भोजन बरसाऊंगा और लोग प्रति दिन बंधेज से जाके बटोरें जिसतें मैं उन्हें जांचूं कि वे मेरी व्यवस्था पर चलेंगे अथवा नहीं॥ ५। और यों होगा कि वे छठवें दिन और दिन से दूना बटोरें और भीतर ला के पकावें॥ ६। सो मूसा और हारून ने इसराएल के समस्त संतानों से कहा कि सांझ को तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया॥ ७। और बिहान को परमेश्वर का ऐश्वर्य देखोगे क्योंकि परमेश्वर के बिरोध में वुह तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुनता है हम कौन कि तुम हम पर कुड़कुड़ाते हो॥ ८। और मूसा ने कहा कि यों होगा कि संध्याकाल को परमेश्वर तुम्हें खाने को मांस और बिहान को रोटी मनमनती देगा क्योंकि तुम्हारा झुंझलाना जो तुम उस पर झुंझलाते हो परमेश्वर सुनता है और हम क्या हैं तुम्हारी झुझलाहट हम पर नहीं परंतु परमेश्वर पर है॥ ९। फिर मूसा ने हारून से कहा कि इसराएल के संतान की सारी मंडली से कह कि परमेश्वर के समीप आओ क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना॥ १०। और यों हुआ कि जब हारून इसराएल के संतान की सारी मंडली को कह रहा था तब उन्हों ने बन की ओर दृष्टि किई और क्या देखते हैं कि परमेश्वर की महिमा मेघ में प्रगट हुई॥ ११। और परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ १२। कि मैं ने इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना सुना

उन्हें कह कि तुम सांझ को मांस खाओगे और बिहान को रोटी से तृप्त होओगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ १३। और यों हुआ कि सांझ को बटेरें ऊपर आईं और छावनी को ढांप लिया और बिहान को सेना के आस पास ओस पड़ी॥ १४। और जब ओस पड़के ऊपर गई तब क्या देखते हैं कि बन में छोटी छोटी गोल वस्तु ऐसी श्वेत जैसे पाला का टुकड़ा पृथिवी पर पड़ा हो॥ १५। और इसराएल के संतानों ने देख के आपुस में कहा कि यह क्या है क्योंकि उन्हों ने न जाना कि वुह क्या है तब मूसा ने उन्हें कहा कि यह रोटी जिसे परमेश्वर ने तुम्हें खाने को दिया है॥ १६। यह वुह बात है जो परमेश्वर ने तुम्हें कही थी कि हर एक उस में से अपने खाने के समान मनुष्य पीछे एक ओमर एकट्ठे करे अपने प्राणियों की गिनती के समान उन के लिये जो उस के तंबू में हैं लेवे॥ १७। तब इसराएल के संतानों ने योंहीं किया और किसी ने थोड़ा और किसी ने बहुत एकट्ठा किया॥ १८। और जब हरएक ने अपने को दूसरे से तौला तो जिस ने बहुत एकट्ठा किया था कुछ अधिक न पाया और उस का जिस ने थोड़ा एकट्ठा किया था कुछ न घटा हर एक ने उन में से अपने खाने भर बटोरा॥ १९। और मूसा ने उन से कहा कि कोई उस में से बिहान लों रख न छोड़े॥ २०। तथापि उन्हों ने मूसा की बात को न माना परंतु कितनों ने बिहान लों कुछ रख छोड़ा और उस में कीड़े पड़ गये और बसाने लगा मूसा उन पर क्रुद्ध हुआ॥ २१। और उन में से हर एक ने हर बिहान को अपने खाने के समान बटोरा और जब सूर्य्य की घाम पड़ी तब वुह पिघल गया।

२२। और यों हुआ कि छठवें दिन उन्हों ने दूना भोजन बटोरा जन पीछे दो ओमर और मंडली के समस्त अध्यक्षों ने आके मूसा को जनाया॥ २३। तब उस ने उन्हें कहा कि यह वही है जो परमेश्वर ने कहा है कि कल बिश्राम परमेश्वर का पवित्र बिश्राम है तुम्हें भूंजना हो सो भूंज लेओ और जो पकाना हो सो पका लेओ और जो बच रहे सो अपने लिये बिहान लों यत्न से रक्खो॥ २४। सो जैसा मूसा ने कहा था वैसा उन्हों ने बिहान लों रहने दिया वुह न सड़ा न उस में कीड़े पड़े॥ २५।

श्रीर मूसा ने कहा कि उसे आज खाश्रो क्योंकि आज परमेश्वर का विश्राम है आज तुम खेत में न पाओगे॥ २६। छः दिन लों उसे बटोरो परंतु सातवां दिन विश्राम है उस में कुछ न पाओगे॥ २७। और ऐसा हुआ कि बहुतेरे उन लोगों में से सातवें दिन बटोरने को गये और कुछ न पाया॥ २८। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कब लों तुम मेरी आज्ञाओं को और मेरी व्यवस्था को पालन न करोगे॥ २९। देखो कि परमेश्वर ने तुम्हें विश्राम दिया इस लिये वह तुम्हें छठवें दिन में दो दिन का भोजन देता है हर एक तुम्ह से अपने स्थान से बाहर न जावे॥ ३०। तब लोगों ने सातवें दिन विश्राम किया॥ ३१। और इसराएल के घराने ने उस का नाम मन्न रक्खा और वुह धनिआं की नाईं खेत और उस का स्वाद मधु सहित टिकिया की नाईं था॥ ३२। और मूसा ने कहा कि यह वुह बात है जो परमेश्वर आज्ञा करता है कि उस्से एक ऊमर भर अपनी पीढ़ियों के लिये धर रक्खो जिसतें वे उस रोटी को देखें जो मैं ने तुम्हें बन में खिलाई जब मैं तुम्हें मिस्र के देश से बाहर लाया॥ ३३। और मूसा ने हारून को कहा कि एक हांड़ी ले और एक ऊमर मन्न उस में भर और परमेश्वर के आगे रख छोड़ जिसतें वुह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये धरा जाय॥ ३४। सो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को कहा था वैसा हारून ने साक्षी के आगे उसे धर रक्खा॥ ३५। और इसराएल के संतान चालीस बरस जब लों कि वे बस्ती में न आये मन्न खाते रहे जब लों कि वे कनआन की भूमि के सिवाने में न आये मन्न खाते रहे॥ ३६। अब एक ऊमर ईफा का दसवां भाग है।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

तब इसराएल के संतान की समस्त मंडली ने अपने पात्र में परमेश्वर की आज्ञा के समान सीन के बन से यात्रा किई और रफीदीम में डेरा किया वहां लोगों के पीने को पानी न था॥ २। सो लोग मूसा से झगड़ने लगे और कहा कि हमें पानी दे कि पीयें मूसा ने उन्हें कहा कि मुझ से क्यों झगड़ते हो परमेश्वर की क्यों परीक्षा करते हो॥ ३। और लोग पानी के पियासे थे और मूसा पर कुड़कुड़ाये और कहा कि

तू हमें मिस्र से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे लड़कों को और हमारे पशुन को पियास से मारे॥ ४। और मूसा ने पुकारके परमेश्वर से कहा कि मैं इन लोगों से क्या करूं वे मुझ पर पत्थरवाह करने को सिद्ध हैं॥ ५। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे जा और इसराएल के संतान के प्राचीनों को अपने साथ ले और अपनी छड़ी जिस्से तू ने समुद्र को मारा था अपने हाथ में ले और जा॥ ६। देख मैं वहां होरेब के पहाड़ पर तेरे आगे खड़ा हूंगा तू उस पहाड़ को मारेगा और उस्से जल निकलेगा कि लोग पीयें सो मूसा ने इसराएल के प्राचीनों की दृष्टि में यही किया॥ ७। और इसराएल के संतानों के बिबाद के कारण और इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की परीक्षा करके कहा था कि परमेश्वर हमारे मध्य में है कि नहीं उस ने उस स्थान का नाम मस्सः और मरीबः रक्खा॥ ८। तब अमालीक् चढ़ आये और रफीदीम में इसराएल से लड़े॥ ९। तब मूसा ने यहूसूअ् से कहा कि हमारे लिए लोग चुन और निकल कर अमालीक् से लड़ कल मैं ईश्वर की छड़ी अपने हाथ में लेके पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूंगा॥ १०। सो जैसा मूसा ने उसे कहा था यहूसूअ् ने वैसा किया और अमालीक् से लड़ा मूसा और हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़े॥ ११। और यों हुआ कि जब मूसा अपना हाथ उठाता था तब इसराएल के संतान जय पाते थे और जब हाथ लटका देता था तब अमालीक् जय पाते थे॥ १२। परंतु मूसा के हाथ भारी हो रहे थे तब उन्हों ने एक पत्थर लेके उस के नीचे रक्खा वुह उस पर बैठा और हारून और हूर एक एक ओर और दूसरा दूसरी ओर उस के हाथों को संभाले रहे और उस के हाथ सूर्य्य के अस्त लों स्थिर रहे॥ १३। और यहूसूअ् ने अमालीक् और उस की सेना को खड्ग की धार से जीत लिया॥ १४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि स्मरण के लिये पुस्तक में इसे लिख रख और यहूसूअ् के कान में कह दे कि मैं अमालीक् का नाम और चिह्न स्वर्ग के नीचे से मिटा देऊंगा॥ १५। और मूसा ने यज्ञबेदी बनाई और उस का नाम यह रक्खा कि परमेश्वर मेरी धूजा॥ १६। क्योंकि उस ने कहा कि परमेश्वर ने किरिया खाके कहा है कि मैं अमालीक् के साथ पीढ़ी से पीढ़ी लों लड़ता रहूंगा॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

जब मिदयान के याजक मूसा के ससुर यितरू ने यह सब सुना कि ईश्वर ने मूसा और अपने लोग इसराएल के लिये क्या किया कि परमेश्वर इसराएल को मिस्र से बाहर लाया॥ २। तो यितरू मूसा के ससुरे ने सफूरः मूसा की पत्नी को उस के पीछे कि उस ने उसे फिर भेजा था लिया॥ ३। और उस के दो बेटों को जिन में से एक का नाम गैरसुन इस लिये कि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी हूं॥ ४। और दूसरे का नाम इलिअज़र क्योंकि मेरे पिता का ईश्वर मेरा सहायक है और उस ने मुझे फ़िरऊन के खड्ग से बचाया है॥ ५। और मूसा का ससुर यितरू उस के पुत्र और उस की पत्नी को लेके मूसा पास बन में आया जहां उस ने ईश्वर के पहाड़ पर डेरा किया था॥ ६। और मूसा को कहला भेजा कि मैं तेरा ससुर यितरू तेरी पत्नी और उस के पुत्र तुझ पास आये हैं॥ ७। तब मूसा अपने ससुर की भेंट को निकला और उसे प्रणाम किया और उसे चूमा और आपुस में एक ने दूसरे का क्षेम कुशल पूछा और तंबू में आये॥ ८। और जो कुछ परमेश्वर ने इसराएल के लिये फ़िरऊन और मिस्रियों से किया था और समस्त कष्ट जो मार्ग में उन पर पड़े थे और कि परमेश्वर ने उन्हें क्योंकर बचाया मूसा ने अपने ससुर यितरू से सब कुछ वर्णन किया॥ ९। और यितरू उन सब उपकारों के कारण से जिसे परमेश्वर ने इसराएल पर किया जिन्हें उस ने मिस्रियों के हाथ से बचाया आनंदित हुआ॥ १०। और यितरू बोला कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुम्हें मिस्रियों के हाथ और फ़िरऊन के हाथ से बचाया जिस ने लोगों को मिस्रियों के बश से छुड़ाया॥ ११। अब मैं जानता हूं कि परमेश्वर सब देवों से बड़ा है क्योंकि वुह उन कामों में जो उन्हों ने अहंकार से किये उन पर प्रबल हुआ॥ १२। और मूसा का ससुर यितरू जलाने की भेंट और बलिदान ईश्वर के लिये लाया और हारून और इसराएल के समस्त प्राचीन मूसा के ससुर के साथ रोटी खाने के लिये ईश्वर के आगे आये।

१३। और दूसरे दिन यों हुआ कि मूसा लोगों का न्याय करने को

बैठा और लोग मूसा के आगे बिहान से सांझ लों खड़े रहे॥ १४। तब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो उस ने लोगों से किया देख के कहा कि यह तू लोगों से क्या करता है तू क्यों आप अकेला बैठा है और सब लोग बिहान से सांझ लों तेरे आगे खड़े हैं॥ १५। तब मूसा ने अपने ससुर से कहा कि यह इस लिये है कि लोग ईश्वर को ढूंढ़ने के लिये मुझ पास आते हैं॥ १६। जब उन में कुछ बिबाद होता है तब वे मेरे पास आते हैं और मैं मनुष्य में और उस के संगी के मध्य में न्याय करता हूं और मैं उन्हें ईश्वर की विधि और उस की व्यवस्था से चिता देता हूं॥ १७। तब मूसा के ससुर ने उसे कहा कि तू अच्छा काम नहीं करता॥ १८। तू निश्चय क्षीण हो जायगा और यह मंडली भी जो तेरे साथ है क्योंकि यह काम तुझ पर निपट भारी है यह तुझ से अकेले न बन पड़ेगा॥ १९। अब मेरा कहा मान मैं तुझे मंत्र देता हूं और ईश्वर तेरे साथ रहे तू उन लोगों के पास ईश्वर के आगे हो और ईश्वर के पास उन का बचन लाया कर॥ २०। और तू व्यवहार और व्यवस्था की बातें उन्हें सिखा और वुह मार्ग जिस पर चलना और वुह काम जिसे करना उन्हें उचित है उन्हें बता॥ २१। सो तू समस्त लोगों में से योग्य मनुष्य चुन ले जो ईश्वर से डरते हैं और सत्यबादी हों और लोभी न होवें और उन्हें सहस्रों और सैकड़ों और पचास पचास और दस दस पर आज्ञाकारी कर॥ २२। कि हर समय में उन लोगों का न्याय करें और ऐसा होगा कि वे हर एक बड़ा कार्य्य तुझ पास लावें पर हर एक छोटे कार्य्य का बिचार आप करें यों तेरे लिये सहज हो जायगा और वे बोझ उठाने में तेरे साथी रहेंगे॥ २३। यदि तू यह काम करे और ईश्वर तुझे आज्ञा करे तो तू सहि सकेगा और ये लोग भी अपने अपने स्थान पर कुशल से जायेंगे॥ २४। सो मूसा ने अपने ससुर का कहा सुना और जो उस ने कहा था उस ने सब किया और मूसा ने समस्त इसराएलियों में से योग्य मनुष्य चुने और उन्हें लोगों का प्रधान किया सहस्रों का प्रधान सैकड़ों का प्रधान पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान॥ २५। वे हर समय में लोगों का न्याय करते थे कठिन कार्य मूसा पास लाते थे॥ परंतु हर एक छोटी बात आप ही चुका लेते थे॥

२६। फिर मूसा ने अपने ससुर को बिदा किया और वुह अपने देश को चला गया॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

इसराएल के संतान मिस्र की भूमि से बाहर होके तीसरे मास के उसी दिन सीना के बन में आये॥ २। क्योंकि वे रफीदीम से चलके सीना में आये और बन में डेरा किया और इसराएल ने पहाड़ के आगे तंबू खड़ा किया॥

३। तब मूसा ईश्वर पास चढ़ गया और परमेश्वर ने उसे पहाड़ पर से बुलाया और कहा कि तू यअकूब के घराने को यों कहियो और इसराएल के संतानों से यों बोलियो॥ ४। कि तुम ने देखा कि मैं ने मिस्रियों से क्या किया और तुम्हें गिड्ड के डैनों पर बैठा के अपने पास ले आया॥ ५। और अब यदि मेरे शब्द को निश्चय मानोगे और मेरी बाचा का पालन करोगे तो तुम समस्त लोगों से विशेष धनिक होओगे क्योंकि सारी पृथिवी मेरी है॥ ६ और तुम मेरे लिये याजकमय राज्य और एक पवित्र जाति होओगे ये बात तू इसराएल के संतान को कहियो॥

७। तब मूसा आया और लोगों के प्राचीनों को बुलाया और उन के सन्मुख सारी बातें जो परमेश्वर ने उसे कही थीं कह सुनाईं॥ ८। और सब लोगों ने एक साथ उत्तर देके कहा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो हम करेंगे और मूसा ने लोगों का उत्तर परमेश्वर कने ले पहुंचाया॥ ९। और परमेश्वर ने मूसा से कहा देख मैं अंधियारे मेघ में तुझ पास आता हूं कि जब मैं तुझ से बातें करूं लोग सुनें और सदा लों प्रतीति करें और मूसा ने लोगों की बातें परमेश्वर से कहीं॥ १०। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों पास जा और आज कल में उन्हें पवित्र कर और उन के कपड़े धुलवा॥ ११। और तीसरे दिन सिद्ध रहें कि परमेश्वर तीसरे दिन सारे लोगों की दृष्टि में सीना के पहाड़ पर उतरेगा॥ १२। और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांधियो और कहियो कि आप से चौकस रहो पहाड़ पर न चढ़ो और उस के खूंट को न छूओ जो कोई पहाड़ को छूयेगा सो निश्चय प्राण से मारा जायगा॥

१३। कोई हाथ उसे न छूये नहीं तो वुह निश्चय पत्थरवाह किया जायगा अथवा बाण से मारा जायगा चाहे मनुष्य हो चाहे पशु जीता न बचेगा जब तुरही शब्द अबर करे तो पहाड़ पर चढ़ें॥ १४। तब मूसा ने पहाड़ पर से उतर के लोगों को पवित्र किया उन्हों ने अपने कपड़े धोये॥ १५। और उस ने लोगों से कहा कि तीसरे दिन सिद्ध रहो स्त्रियों से अलग रहियो॥ १६। और यों ऊआ कि तीसरे दिन बिहान को मेघ गर्ज्जने लगे और बिजलियां चमकीं और पहाड़ पर काली घटा उमड़ी और तुरही का अति बड़ा शब्द ऊआ यहां लों कि सब लोग छावनी में थर्थरा उठे॥ १७। और मूसा लोगों को तंबू के भीतर से बाहर लाया कि ईश्वर से भेंट करावे और वे पहाड़ की नीचाई में जा खड़े ऊए॥ १८। और सीना का पहाड़ धूआं से भर गया क्योंकि परमेश्वर लौर में होके उस पर उतरा और भट्ठी का सा धूआं उस पर से उठा और सारा पहाड़ अति कांप गया॥ १९। और जब तुरही का शब्द बढ़ता जाता था तब मूसा ने कहा और ईश्वर ने उसे शब्द से उत्तर दिया॥ २०। और परमेश्वर सीना पहाड़ पर उतरा पहाड़ की चोटी पर और परमेश्वर ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया और मूसा चढ़ गया॥ २१। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा और लोगों को चिता ऐसा न हो कि वे मेड़ तोड़ के परमेश्वर को देखने आवें और बऊतेरे उन में नाश हो जावें॥ २२। और याजक भी जो परमेश्वर के पास आये हैं अपने को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन पर चपेट करे॥ २३। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि लोग सीना पहाड़ पर आ नहीं सक्ते क्योंकि तू ने तो हमें चिता दिया है कि पहाड़ के आस पास बाड़ा बांधें और उसे पवित्र करें॥ २४। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि चल नीचे जा और तू हारून समेत फिर ऊपर आ परंतु याजक और लोग मेड़ तोड़ के परमेश्वर पास ऊपर न आवें न होवे कि वुह उन पर चपेट करे॥ २५। सो मूसा लोगों के पास नीचे उतरा और उन से कहा।

२०. बीसवां पर्ब्ब ।

फिर ईश्वर ने ये सब बातें कहीं॥ २। कि तेरा परमेश्वर ईश्वर जो तुझे मिस्र की भूमि से और बंधुआई के घर से निकाल लाया मैं हूं॥ ३। मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा॥ ४। अपने लिये खोद के किसी की मूर्ति और किसी बस्तु की प्रतिमा जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में अथवा जल में जो पृथिवी के नीचे है मत बनाइयो॥ ५। तू उन को प्रणाम मत कीजियो न उन की सेवा कीजियो इस लिये कि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित ईश्वर हूं पितरों के अपराध का दंड उन के पुत्रों को जो मेरा बैर रखते हैं उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी लों देवैया हूं॥ ६। और उन में से सहस्रों पर जो मुझे प्रेम करते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं।

७। परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लीजियो क्योंकि परमेश्वर उसे जो उस का नाम अकारथ लेता है निष्पाप न ठहरावेगा॥ ८। बिश्राम के दिन को पवित्र रखने के लिये स्मरण कीजियो॥ ९। छः दिन लों अपने समस्त कार्य्य कीजियो॥ १०। परंतु सातवां दिन तेरे परमेश्वर ईश्वर का है उस में कोई कुछ कार्य्य न करे न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरे पशु न तेरा पाहुन जो तेरे फाटक के भीतर है॥ ११। इस लिये कि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया और सातवें दिन बिश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने बिश्राम दिन को आशीसमय और पवित्र ठहराया॥ १२। अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जिसतें तेरी बय जिसे तेरा परमेश्वर ईश्वर तुझे पृथिवी पर देता है अधिक होवे॥ १३। हत्या मत कर॥ १४। परस्त्री गमन मत कर॥ १५। चोरी मत कर॥ १६। अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे॥ १७। अपने परोसी के घर का लालच मत कर अपने परोसी की स्त्री और उस के दास और उस की दासी और उस के बैल और उस के गदहे और किसी बस्तु का जो तेरे परोसी की है लालच मत कर॥ १८। और सब लोगों ने

गर्ज्जना श्रीर बिजली का चमकना श्रीर तुरही का शब्द श्रीर पर्बत से धूश्रां उठना देखा सब लोगें ने जब यह देखा तो हटे श्रीर दूर जा खड़े रहे॥ १९। तब उन्हें ने मूसा से कहा कि तूही हम से बोल श्रीर हम सुनें परंतु ईश्वर हम से न बोले न हो कि हम मर जायें॥ २०। तब मूसा ने लोगें से कहा कि भय मत करो इस लिये कि ईश्वर श्राया है कि तुम्हें परखे श्रीर जिसतें उस का भय तुम्हारे सन्मुख प्रगट होय जिसतें तुम पाप न करो॥ २१। तब लोग दूर खड़े रहे श्रीर मूसा उस गाढ़े श्रंधकार के समीप गया जहां ईश्वर था॥ २२। श्रीर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कह कि तुम ने देखा मैं ने स्वर्ग से बातें किई॥ २३। तुम मेरे सन्मुख चांदी का ईश्वर श्रीर सोने का ईश्वर मत बनाइयो॥ २४। तू मेरे लिये मट्टी की यज्ञबेदी बना श्रीर उस पर श्रपने होम की भेंट चढ़ा श्रीर कुशल की भेंट श्रीर बलिदान श्रपनी भेड़ां श्रीर श्रपने बैलें से श्रीर जिस स्थान में श्रपना नाम प्रगट करूंगा वहां मैं तुझ पास श्राऊंगा श्रीर तुझे श्राशीष दूंगा॥ २५। श्रीर यदि तू मेरे लिये पत्थर की यज्ञबेदी बनावे तो गढ़े हुए पत्थर से मत बना क्योंकि यदि तू उस पर हथियार उठावे तो उसे श्रपवित्र करेगा॥ २६। श्रीर तू मेरी यज्ञबेदी पर सीढ़ी से मत चढ़ जिसतें तेरा नंगापन उस पर प्रगट न होवे॥

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

श्रब बिचार जिन्हें तू उन के श्रागे धरे ये हैं॥ २। कि यदि तू इब्री दास को मोल लेवे तो वुह छः बरस सेवा करे श्रीर सातवें में सेंत से छोड़ दिया जायगा॥ ३। यदि वुह श्रकेला श्राया तो श्रकेला जायगा यदि वुह बिवाहित था तो उस की पत्नी उस के साथ निकल जायगी॥ ४। यदि उस के स्वामी ने उसे पत्नी दीई है श्रीर उस की पत्नी उस्से बेटे श्रीर बेटियां जनी तो उस की पत्नी श्रीर उस के बालक उस के स्वामी के होंगे श्रीर वुह श्रकेला चला जायगा॥ ५। श्रीर यदि वुह दास खोल के कहे कि मैं श्रपने स्वामी श्रीर श्रपनी पत्नी को श्रीर श्रपने बालक को प्यार करता हूं मैं निर्बंध न हूंगा॥ ६। तो उस का स्वामी उसे न्यायियों के

पास ले जाय फिर उसे द्वार पर अथवा द्वार की चैाखट पर लावे चैार सुतारी से उस का कान छेदे चैार वुह सदा उस की सेवा करे॥ ७। चैार यदि कोई मनुष्य अपनी कन्या को बेंचे जिसतें वुह दासी होय तो वुह दासों की नाईं बाहर न जा सकेगी॥ ८। यदि वुह अपने स्वामी की दृष्टि में जिस ने उस्से बिवाह किया बुरी होय तब वुह उसे छुड़वावे परंतु उसे सामर्थ्य नहीं कि किसी अन्यदेशी के हाथ बेंच डाले क्योंकि उस ने उस्से छल किया॥ ९। चैार यदि वुह उसे अपने बेटे से ब्याह देवे तो वुह उस्से बेटियों का ब्यवहार करे॥ १०। यदि वुह दूसरी को लेवे तो उस का अन्न चैार बस्त्र चैार बिवाह का ब्यवहार न घटावे॥ ११। चैार यदि वुह ये तीन उस्से न करे तो वुह सेंत से बिना दाम दिये चली जाय॥ १२। जो कोई किसी मनुष्य को मारे चैार वुह मर जाय वुह निश्चय घात किया जाय॥ १३। चैार यदि वुह मनुष्य घात में न लगा हो परंतु ईश्वर ने उस के हाथ में सैांप दिया हो तब मैं तुझे उस के भागने का स्थान बता दूंगा॥ १४। परंतु यदि कोई मनुष्य अपने परोसी पर साहस से चढ़ आवे जिसतें उसे छल से मारे तो उसे तू मेरी यज्ञबेदी से ले जिसतें वुह मारा जाय॥ १५। चैार वुह जो अपने पिता अथवा अपनी माता को मारे निश्चय घात किया जायगा॥ १६। चैार जो मनुष्य को चुरावे चैार उसे बेंच डाले अथवा वुह उस के हाथ में पाया जाय तो वुह निश्चय घात किया जायगा॥ १७। चैार वुह जो अपने पिता अथवा अपनी माता पर धिक्कार करे निश्चय घात किया जायगा॥ १८। चैार यदि दो मनुष्य झगड़ें चैार एक दूसरे को पत्थर से अथवा मुक्का मारे चैार वुह न मरे परंतु बिछैाने पर पड़ा रहे॥ १९। तो यदि वुह उठ खड़ा होय चैार लाठी लेके चले तो जिस ने मारा सो निर्दोष ठहरेगा केवल उस के समय की घटी के लिये भर देवे चैार चंगा करावे॥ २०। चैार यदि कोई अपने दास अथवा दासी को छड़ी मारे चैार वुह मार खाती ऊई मर जाय तो निश्चय उस का पलटा लिया जाय॥ २१। तथापि यदि वुह एक दिन अथवा दो दिन जीवे तो उसे दंड न दिया जावे इस लिये कि वुह उस का धन है॥ २२। यदि लोग झगड़ें चैार गर्भिणी को दुःख पऊंचावें ऐसा कि उस का गर्भ-

पात हो जाय परंतु वुह आप न मरे तो जिस रीति का दंड उस का पति कहे दिया जावे और न्यायियों के बिचार के समान उसे डांड़ देवे॥ २३। और यदि उसे कुछ हानि होवे तो तू प्राण की संती प्राण दे॥ २४॥ आंख की संती आंख दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती पांव॥ २५। जलाने की संती जलाना घाव की संती घाव चोट की संती चोट॥ २६। और यदि कोई अपने दास अथवा अपनी दासी की आंख में मारे कि उस की आंख फूट जाय तो उस की संती में उसे छोड़ देवे॥ २७। और यदि वुह अपने दास का अथवा अपनी दासी का दांत तोड़े तो दांत की संती उसे छोड़ देवे॥ २८। यदि मनुष्य को अथवा स्त्री को बैल सींग मारे ऐसा कि वुह मर जाय तो वुह बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का मांस खाया न जावे परंतु बैल का स्वामी निर्दोष है॥ २९। परंतु यदि वुह बैल आगे से सींग मारने की बान रखता था और उस के स्वामी को संदेश दिया गया और उस ने उसे बांध न रक्खा परंतु उस ने पुरुष अथवा स्त्री को मार डाला तो बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का स्वामी भी घात किया जाय॥ ३०। और यदि उस पर डांड़ ठहराया जाय तो अपने प्राण के प्रायश्चित्त के लिये जो उस के लिये ठहराया गया हो वुह देवे॥ ३१। चाहे उस ने सींग से पुत्र को मारा हो अथवा पुत्री को इसी आज्ञा के समान उस के लिये बिचार किया जावे॥ ३२। यदि किसी के दास अथवा दासी को बैल सींग मार बैठे तो वुह उस के स्वामी को तीस शैकल रूपा देवे और बैल पत्थरवाह किया जाय॥ ३३। और यदि कोई गड़हा खोले अथवा खोदे और उस का मुंह न ढांपे और बैल अथवा गधा उस में गिरे॥ ३४। तो उस गड़हे का स्वामी उसे भर देवे और उन के स्वामी को दाम दे और लोथ उसी की होगी॥ ३५। और यदि किसी का बैल दूसरे के बैल को सतावे ऐसा कि वुह मर जाय तो वुह जीते बैल को बेंचे और उस के दाम को आधा आध आपुस में बांट लेवें और वुह मरा हुआ भी उन में आधा आध बांटा जाय॥ ३६। और यदि जाना जाय कि उस बैल को सींग मार बैठने की बान थी और उस के स्वामी ने उसे बांध न रक्खा तो वुह निश्चय बैल की संती बैल देवे

और मरा ऊआ उस का होगा॥ ३७। यदि कोई बैल अथवा भेड़ चुरावे और उसे मारे अथवा बेंचे तो वुह एक बैल के पांच बैल और एक भेड़ की चार भेड़ें देगा॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

यदि चोर सेंध मारते ऊए पाया जाय और कोई उसे मार डाले तो उस की संती लोहू न बहाया जायगा॥ २। यदि सूर्य उदय होवे तो उस की संती लोहू बहाया जायगा उचित था कि वुह उसे भर देता यदि वुह कंगाल हो तो अपनी चोरी के लिये बेचा जायगा॥ ३। यदि चोरी की वस्तु निश्चय उस के हाथ में जीवत पाई जाय चाहे बैल हो चाहे गदहा चाहे भेड़ बकरी तो वुह दूना देगा॥ ४। यदि कोई खेत अथवा दाख की बारी खिलावे और अपने पशु उस में छोड़े और दूसरे के खेत में चरावे तो अपना अच्छे से अच्छा खेत और सुंदर से सुंदर दाख की बारी उस की संती देगा॥ ५। यदि आग फूट निकले और कांटों में जा लगे ऐसा कि अनाज के ढेर अथवा बढ़ा ऊआ अन्न अथवा खेत जल जाय तो जिस ने आग बारी निश्चय वुह भर देगा॥ ६। यदि कोई अपने परोसी को रूपा अथवा पात्र रखने को सौंपे और उस के घर से चोरी जाय तो जब वुह चोर हाथ लगे तो वुह दूना भर देगा॥ ७। यदि चोर पकड़ा न जाय तो उस घर का स्वामी न्यायियों के आगे लाया जाय उस ने अपने परोसी की संपत्ति पर अपना हाथ बढ़ाया कि नहीं॥ ८। समस्त प्रकार के अपराध में चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़ चाहे कपड़े चाहे किसी खोई ऊई वस्तु को जिसे दूसरा अपनी कहता है दोनों की बात न्यायियों के पास लाई जावे और जिस को न्यायी दोषी ठहरावे वुह अपने परोसी को दूना देगा॥ ९। यदि कोई अपने परोसी पास गदहा अथवा बैल अथवा भेड़ अथवा कोई पशु थाती रक्खे और वुह मर जाय अथवा अंग भंग हो जाय अथवा हांका जाय और कोई न देखे॥ १०। तो उन दोनों के मध्य में परमेश्वर की किरिया लिई जाय कि उस ने अपने परोसी की संपत्ति में हाथ नहीं बढ़ाया और उस का स्वामी मान ले तब वह उसे भर न देगा॥ ११। और यदि वुह उस के पास से चुराया जाय

तो वुह उस के स्वामी को भर दे॥ १२। यदि वुह फाड़ा जाय तो वुह उसे साक्षी के लिये लावे और भर न देगा॥ १३। यदि कोई मनुष्य अपने परोसी से कुछ भाड़ा लेवे और वुह अंग भंग हो जाय अथवा मर जाय यदि स्वामी उस के साथ न था तो वुह निश्चय उसे भर देगा॥ १४। पर यदि उस का स्वामी उस के साथ था तो वुह भर न देगा यदि भाड़े का होय तो उस के भाड़े के लिये जायगा॥ १५। यदि कोई किसी कन्या को फुसलावे जिस की बचनदत्त न ऊई और उस के संग शयन करे वुह अवश्य उसे दैजा देके पत्नी करे॥ १६। यदि उस का पिता उस के देने में सर्व्वथा नाह करे तो वुह कुआंरियों के दान के समान उसे दैजा देगा॥ १७। तू टोनहिन को जीने मत दे॥ १८। जो कोई पशु से रत करे निश्चय घात किया जायगा॥ १९। जो कोई परमेश्वर को छोड़ किसी देवता को बलिदान देगा वुह निश्चय नाश किया जायगा॥ २०। परदेशी को मत खिजा और उसे मत सता इस लिये कि तुम मिस्र के देश में परदेशी थे॥ २१। किसी बिधवा को अथवा अनाथ लड़के को दुःख मत देओ॥ २२। यदि तू उसे किसी रीति से दुःख देवे और वुह मेरी दोहाई देवे तो मैं निश्चय उन का रोना सुनूंगा॥ २३। और मेरा क्रोध भड़केगा मैं तुम्हें खड्ग से मारूंगा और तुम्हारी पत्नियां बिधवा और तुम्हारे संतान अनाथ हो जायेंगे॥ २४। यदि तू मेरे लोग में के कंगाल को कुछ ऋण देवे तो उस पर ब्याज ग्राहक के समान मत हो और उस्से ब्याज मत ले॥ २५। यदि तू अपने परोसी का बस्त्र बंधक रक्खे तो चाहिये कि तू सूर्य्य अस्त होते ऊए उसे पऊंचा दे॥ २६। क्योंकि उस का केवल यही ओढ़ना है यह उस के देह का बस्त्र है जिस में वुह सो रहता है और यों होगा कि जब वुह मेरे आगे दोहाई देगा तब मैं उस की सुनूंगा क्योंकि मैं दयाल हूं॥ २७। तू अध्यक्षों को दुर्व्वचन मत कह और अपनी मंडली के प्राचीनों को स्राप मत दे॥ २८। अपने पक्के फलों की बढ़ती में से और अपने दाखरस में से देने में बिलंब मत कर अपने पुत्रों में से पहिलौंठा मुझे दे॥ २९। ऐसा ही तू अपने बैलों से और भेड़ों से कीजियो सात दिन लों वुह अपनी मा के साथ रहे आठवें दिन उसे मुझे दीजियो॥ ३०। और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होओगे और जो

पशु खेत में फाड़ा जाय उस का मांस मत खाइयो तुम उसे कुत्तों को दीजियो॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

तू मिथ्या संदेश मत फैलाइयो अधर्म्म की साक्षी में दुष्टों का साथी मत हो॥ २। बुराई में मंडली का पीछा मत कर और तू किसी झगड़े में बहुतों की ओर होके अन्याय का उत्तर मत दीजियो॥ ३। और न कंगाल पर उस के व्यवहार पद में दृष्टि कीजियो॥ ४। यदि तू अपने बैरी के बैल अथवा गदहे को बहकते देखे तो उसे आवश्यक उस पास पहुंचाइयो॥ ५। यदि तू अपने बैरी के गदहे को देखे कि बोझ के नीचे बैठ गया क्या उस की सहाय न करेगा तू निश्चय उस की सहाय कीजियो॥ ६। तू अपने कंगाल के व्यवहार पद में न्याय से अलग मत रहियो॥ ७। झूठी बात से दूर रहियो और निर्दोषियों और धर्म्मियों को घात मत कीजियो क्योंकि मैं दुष्टों को निर्दोष न ठहराऊंगा॥ ८। तू अकोर मत लेना क्योंकि अकोर दृष्टिमानों को अंधा करता है और धर्म्मियों के वचन को फेर देता है॥ ९। बिदेशियों पर भी अंधेर मत कीजियो क्योंकि तुम परदेशी के मन को जानते हो इस लिये कि तुम आप भी मिस्र के देश में परदेशी थे॥ १०। अपनी भूमि में छः बरस बो और उस के फल एकट्ठे कर॥ ११। पर सातवें में उसे चैन में पड़ा रहने दे जिसतें तेरे लोग के कंगाल उसे खावें और जो उन से बचे खेत के पशु चरें इसी रीति अपनी द्राक्षा और जलपाई की बारी से व्यवहार कीजियो॥ १२। छः दिन अपना काम काज करना और सातवें दिन बिश्राम कीजियो जिसतें तेरे बैल और तेरे गदहे चैन करें और तेरी दासियों के बेटे और परदेशी सुस्तावें॥ १३। और सब बात में जो मैं ने तुझे आज्ञा दिई है चौकस रह उपरी देवता का नाम लों मत ले और तेरे मुंह से सुना न जाय॥ १४। तू बरस दिन में तीन बार मेरे लिये पर्ब्ब मान तू अखमीरी रोटी का पर्ब्ब मान॥ १५। सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है अखमीरी रोटी खा आबिब के मास में कोई मेरे आगे छूंछा न आवे॥ १६। लवने का पर्ब्ब तेरे परिश्रम के प्रथम ही फल जो

तू ने अपने खेत में बोये और एकट्ठा करने का पर्ब बरस के अंत जब तू खेत से अपने परिश्रम के फल एकट्ठा कर ले ॥ १७। तेरे समस्त पुरुष बरस बरस तीन बार परमेश्वर ईश्वर के सन्मुख होवें ॥ १८। तू मेरे बलिदान का लोहू जो मेरे लिये है खमीरी रोटी के साथ मत चढ़ा और मेरे बलि की चिकनाई बिहान लों रहने न पावे ॥ १९। अपनी भूमि के पहिले फलों के पहिले को परमेश्वर अपने ईश्वर के मंदिर में ला तू बकरी का मेम्ना उस की माता के दूध में मत सिझा ॥ २०। देख मैं एक दूत तेरे आगे भेजता हूं कि मार्ग में तेरी रक्षा करे और तुझे उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है ले जाय ॥ २१। उस्से चौकस रह और उस का कहा मान उसे मत खिजा क्योंकि वुह तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेगा इस लिये कि मेरा नाम उस में है ॥ २२। यदि तू सच मुच उस का कहा माने और सब जो मैं कहता हूं माने तो मैं तेरे शत्रुन का शत्रु और तेरे बैरियों का बैरी हूंगा ॥ २३। क्योंकि मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे अमूरियों और हित्तियों और फरजियों और कनआनियों और हब्वियों और यबूसियों के देश में लावेगा और मैं उन्हें नाश करूंगा ॥ २४। तू उन के देवतों के आगे मत झुकियो न उन की सेवा करना न उन के ऐसा कार्य्य करना परंतु उन्हें ढा दे और उन की मूर्त्तिन को तोड़ डाल ॥ २५। और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो और वुह तुम्हारे अन्न जल में आशीष देगा और मैं तुम्हारे बीच में से रोग उठा लूंगा ॥ २६। तेरे देश में कोई गर्भपात और बांझ न रहेगी मैं तेरे दिनों की गिनती को पूरा करूंगा ॥ २७। मैं अपने भय को तेरे आगे भेजूंगा मैं उन लोगों को जिन पास तू आवेगा नाश करूंगा और मैं ऐसा करूंगा कि तेरे बैरी तेरे आगे पीठ फेर देंगे ॥ २८। मैं तेरे आगे बर्रय को भेजूंगा जो हव्वी और कनआनी और हित्ती को तेरे साम्ने से भगावेगी ॥ २९। मैं उन्हें एक ही बरस में तेरे आगे से दूर न करूंगा ऐसा न हो कि देश उजाड़ होवे और बन के पशु तेरे बिरोध में बढ़ जायें ॥ ३०। मैं उन्हें थोड़े थोड़े कर के तेरे आगे से दूर करूंगा यहां लों कि तू बढ़ जाय और देश का अधिकारी हो जाय ॥ ३१। लाल समुद्र से लेके फिलस्तियों के समुद्र लों और बन से नदी लों तेरा सिवाना बांधूंगा क्योंकि मैं देश के

बासियों को तेरे बश में करूंगा और तू उन्हें अपने आगे से निकाल देगा॥ ३२। तू न उन से न उन के देवतो से बाचा बांधना॥ ३३। वे तेरे देश में न रहेंगे ऐसा न हो कि वे मेरे बिरोध में तुझ से पाप करावें क्योंकि यदि तू उन के देवों की सेवा करे तो यह तेरे लिये निश्चय फंदा होगा॥

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

और उस ने मूसा से कहा कि परमेश्वर पास चढ़ आ तू और हारून और नदब और अबिहू और इसराएल के संतान के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य सहित और तुम दूर से दण्डवत करो॥ २। और मूसा अकेला परमेश्वर के पास जायगा पर वे पास न आवें और लोग उस के साथ न चढ़ जायें।

३। और मूसा ने आके परमेश्वर की सारी बातें और न्याय लोगों से कहे और सारे लोगों ने एक शब्द से उत्तर देके कहा कि सारी बातें जो परमेश्वर ने कहीं हैं हम करेंगे॥ ४। और मूसा ने परमेश्वर की सारी बातें लिखीं और बिहान को तड़के उठा और पहाड़ के नीचे एक बेदी बनाई और इसराएल की बारह गोष्ठी के समान बारह खंभे खड़े किये॥ ५। और उस ने इसराएल के संतानों के तरुण मनुष्यों को भेजा और उन्हों ने होम का और कुशल का बलिदान बैलों से परमेश्वर के लिये चढ़ाया॥ ६। और मूसा ने आधा लोहू ले के पात्रों में रक्खा और आधा रुधिर बेदी पर छिड़का॥ ७। फिर उस ने नियम की पत्री लिई और लोगों को पढ़ सुनाई वे बोले कि सब कुछ जो परमेश्वर ने कहा है हम करेंगे और अधीन रहेंगे॥ ८। मूसा ने उस लोहू को लेके लोगों पर छिड़का और कहा कि यह लोहू उस नियम का है जिसे परमेश्वर ने उन बातों के कारण तुम्हारे साथ किया है॥ ९। तब मूसा और हारून और नदब और अबिहू और इसराएल के सत्तर प्राचीन ऊपर गये॥ १०। और उन्हों ने इसराएल के ईश्वर को देखा और उस के चरण के नीचे जैसे नीलमणि की गच के कार्थ स्वर्ग की आकृति की नाईं थे॥ ११। और इसराएल के संतानों के अध्यक्षों

पर उस ने अपना हाथ न रक्खा और उन्हों ने ईश्वर को देखा और खाया पीया भी।

१२। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि पहाड़ पर मुझ पास आ और वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियों में व्यवस्था और आज्ञा जो मैं ने लिखी है दूंगा जिसतें तू उन्हें सिखावे॥ १३। और मूसा और उस का सेवक यहूसूअ उठे और ईश्वर के पहाड़ के ऊपर गये॥ १४। और उस ने प्राचीनों से कहा कि हमारे लिये यहां ठहरो जब लों तुम पास हम फिर न आवें और देखो कि हारून और हूर तुम्हारे साथ हैं यदि किसी को कुछ काम होवे तो उन पास जाय॥ १५। तब मूसा पहाड़ के ऊपर गया और एक मेघ ने पहाड़ को ढांप लिया॥ १६। और परमेश्वर का विभव सीना के पहाड़ पर ठहरा और मेघ उसे छः दिन लों ढांपे रहा और सातवें दिन उस ने मेघ के मध्य में से मूसा को बुलाया॥ १७। और परमेश्वर का विभव इसराएल की दृष्टि में पहाड के ऊपर धधकती ऊई आग की नाईं देख पड़ता था॥ १८। और मूसा मेघ के मध्य में चला गया और पहाड़ पर चढ़ गया और मूसा पहाड़ पर चालीस दिन रात रहा।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

और परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। कि इसराएल के संतान से कह कि वे मेरे लिये भेंट लेवें हर एक से जो अपनी इच्छा और अपने मन से मुझे देवे तुम मेरी भेंट ले लीजियो॥ ३। और भेंट जो तुम उन से लेओगे सो ये हैं सोना रूपा और पीतल॥ ४। नीला और बैंजनी और लाल और झीना कपड़ा और बकरी के रोम॥ ५। और मेढ़ों का रंगा ऊआ लाल चमड़ा और नील बर्ण और शमशाद की लकड़ी॥ ६। और दीपक के लिये तेल और लगाने के तेल के लिये और धूप के लिये सुगंध द्रव्य॥ ७। और सूर्यकांत मणि और पटु का और चपरास पर जड़ने के लिये मणि॥ ८। और वे मेरे लिये एक पवित्र स्थान बनावें और मैं उन के मध्य में बास करूंगा॥ ९। तंबू और उस के समस्त पात्रों को जैसा मैं तुझे दिखाऊं वैसा ही बनाइयो॥

१०। और शमशाद की लकड़ी की एक मंजूषा बनावे जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ होवे॥ ११। और तू उस के भीतर और बाहर निर्मल सोना मढ़ियो और उस के ऊपर आस पास सोने के कलस बनाइयो॥ १२। और उस के लिये सोने के चार कड़े ढालके उस के चारों कोनों पर दो कड़े एक अलंग दो कड़े दूसरी अलंग लगाइयो॥ १३। और शमशाद की लकड़ी के बहंगर बनाइयो और उन पर सोना मढ़ियो॥ १४। और उस मंजूषा के अलंग अलंग के कड़ें में उन बहंगरों को डाल दीजियो जिसतें उन से मंजूषा उठाई जाय॥ १५। मंजूषा के कड़ों में बहंगर डाले जायें वे उससे अलग न होें॥ १६। और तू उस साक्षी को जो मैं तुझे देऊंगा उस मंजूषा में रखियो॥ १७। और तू निर्मल सोने का दया का एक आसन बनाइयो जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे॥ १८। और पीटे हुए सोने के दो करोबी उस दया के आसन के दोनों खूंटों में बनाइयो॥ १९। एक करोबी एक में और दूसरा दूसरे खूंट में दया के आसन में से दो करोबी उस के दोनों खूंट में बनाइयो॥ २०। और वे करोबी पर फैलाये हुए हों ऐसे कि दया का आसन उन के पंखों के नीचे ढंप जाय और उन के मुंह आम्ने साम्ने दया के आसन की ओर होवें॥ २१। और तू उस दया के आसन को उस मंजूषा के ऊपर रखियो और वुह साक्षी जो मैं तुझे देऊं उस मंजूषा में रखियो॥ २२। वहां मैं तुझ से भेंट करूंगा और मैं दया के आसन पर से दोनों करोबियों के मध्य से जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर होंगे उन सब बस्तुन के कारण जो मैं इसराएल के संतानों के लिये तुझे आज्ञा करूंगा तुझ से बातचीत करूंगा।

२३। और तू शमशाद की लकड़ी का दो हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ ऊंचा मंच बनाइयो॥ २४। और उसे निर्मल सोने से मढ़ियो और उस पर चारों ओर सोने का एक कलस बनाइयो॥ २५। और उस के लिये चार अंगुल झालर चारों ओर बनाइयो और उस झालर के चारों ओर सोने के मुकुट बनाइयो॥ २६। और उस के लिये सोने के चार कड़े बनाइयो और उस के चार पायों के चार कोनों

में लगाइयो॥ २७। झालर के आगे कड़े वहंगर के कारण हों कि मंच उठाया जाय॥ २८। और तू वहंगर शमशाद की लकड़ी का बनाना और उन्हें सोने से मढ़ना कि मंच उन से उठाया जाय॥ २९। और उस के पात्रों और करछुल और ढकने और उंडेलने के कटोरे निर्मल सोने से बनाइयो॥ ३०। और मंच पर भेंट की रोटियां मेरे सन्मुख सदा रखियो॥ ३१। और तू दीपक का एक झाड़ निर्मल सोने का बना पीटे हुए कार्य का झाड़ बने और उस की डंडी और उस की डालियां और उस की कली और उस के फल और उस के फूल एकही के होवें॥ ३२। और छः डालियां उस की अलंगों से निकलें एक अलंग से तीन दूसरी अलंग से तीन हों॥ ३३। और चाहिये कि तीन कली वदामी एक डाली में और फूल फल के साथ हों और उसी रीति से तीन कली बदामी दूसरी डाली में अपने फूल फल के साथ हों इसी रीति से छः डालियों में जो दीअट से निकली हुई हों॥ ३४। और दीअट में चाहिये कि चार कली बदामी फूल फल के साथ हों॥ ३५। और एक एक कली उस की दो दो डालियों के नीचे होवें छः डालियां जो दीअट से निकली हैं उन के नीचे ऐसी ही हों॥ ३६। उन की कली और उन की डालियां उसी से हों और सब के सब गढ़े हुए निर्मल सोने के हों॥ ३७। और तू उस के लिये सात दीपक बना और उन्हें जला जिसतें उस के सन्मुख उंजियाला होवे॥ ३८। और तू उस की कतरनी और उस का पात्र निर्मल सोने के बना॥ ३९। वुह उसे इन समस्त पात्र समेत मन सवा एक निर्मल सोने के बनावे॥ ४०। चोकस हो कि जैसा मैं ने तुझे पहाड़ पर दिखाया तू उसी डौल का बना।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

और तू बटे हुए झीने सूती कपड़े के दस ओटों का तंबू बना नीला और बैंजनी और लाल और तू उन्हें चित्रकारी से करोबीम बना॥ २। और हर एक ओट की लंबाई अट्ठाईस हाथ और हर एक ओट की चोड़ाई चार हाथ की हो और हर एक ओट एक ही नाप की हो॥ ३।

और पांचों ओट एक दूसरे से जोड़ी ऊई हो और पांच एक दूसरे से जोड़ी ऊई हो॥ ४। और एक ओट के अंचल में मिलाने के खूंट में नीले तुकमे बना और ऐसे ही दूसरी ओट के अंत खूंट में मिलाने की ओर बना॥ ५। एक ओट में पचास तुकमे बना और पचास तुकमे दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में बना जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट जावें॥ ६। और सोने की पचास घुण्डी बना और उन्हीं घुण्डियों से ओट को जोड़ जिसतें एक तंबू हो जाय॥ ७॥ और बकरी के बालों की ओट बना जिसतें तंबू के लिये ढांपन हो ग्यारह ओटें तू बना॥ ८। एक ओट की लंबाई तीस हाथ और एक ओट की चौड़ाई चार हाथ होय ग्यारहों ओट एक ही नाप की हों॥ ९। और पांच ओट को अलग जोड़ और छः ओट को अलग जोड़ और छठवीं ओट को तंबू के साम्ने दोहराव॥ १०। और पचास तुकमे एक ओट के खूंट में जो अंत के जोड़ में है और पचास तुकमे दूसरी ओट के जोड़ में बना॥ ११। और पीतल की पचास घुण्डियां बना और घुण्डियों को तुकमों में डाल और तंबू को मिला जिसतें एक होवे॥ १२। और तंबू की ओटों के बचे ऊए को आधी ओट जो बची ऊई है तंबू के पिछली ओर लटकी रहे॥ १३। और तंबू को ओटों की लंबाई से जो बचा ऊआ हाथ भर इधर और हाथ भर उधर है तंबू के घटाटोप के लिये बना॥ १४। और तंबू के लिये एक घटाटोप मेढ़ों के लाल रंगे ऊए चमड़ों से और एक घटाटोप सब के ऊपर नीले चमड़ों का बना॥ १५। और तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट बना॥ १६। हरएक पाट की लंबाई दस हाथ चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे॥ १७। और हर एक पाट में दो दो चूल हों कि एक दूसरे में किया जाय और यों तंबू के समस्त पाटों में कर॥ १८। और तंबू के लिये दक्षिण की ओर बीस पाट बना॥ १९। और बीस पाटों के नीचे चांदी के चालीस पाए दो दो पाए हर एक पाट के नीचे उस की दोनों चूलों के लिये बना। २०। और तंबू की दूसरी ओर के लिये जो उत्तर की है बीस पाट॥ २१। और उन के लिये चांदी के चालीस पाए एक पाट के नीचे दो पाए और दूसरे पाट के लिये दो पाए बना॥ २२। और तंबू की पश्चिम ओर छः पाट बना। २३।

और दो पाट तंबू के कोनों के लिये दोनों ओर बना॥ २४। और वे नीचे में मिलाये जावें और ऊपर से एक कड़ी में जोड़े जावें ऐसा ही दोनों कोनों के लिये होय॥ २५। सो आठ पाट और उन के सोलह चांदी के पाए होंगे दो पाए एक पाट के नीचे और दो पाए दूसरे पाट के नीचे॥ २६। और तू शमशाद की लकड़ी के अड़ंगे बना तंबू के एक अलंग के पाट के लिये पांच॥ २७। और पांच अड़ंगे तंबू की दूसरी ओर के पाट के लिये और पांच अड़ंगे तंबू के अलंग के पाटों के लिये पश्चिम के दोनों अलंग के लिये॥ २८। और पाटों के मध्य के बीच का अड़ंगा एक ओर से दूसरी ओर लों पहुंचे॥ २९। और पाटों को सोने से मढ़ और अड़ंगों के लिये सोने के कड़े बना और अड़ंगों को सोने से मढ़॥ ३०। और तंबू को जैसा कि मैं ने तुझे पहाड़ पर दिखाया है वैसा ही खड़ा कर॥ ३१। और बटे हुए झीने बूटे काढ़े हुए सूती कपड़े से नीला और बैंजनी और लाल घूंघट और करोबी समेत बना॥ ३२। और उसे सोने से मढ़े हुए शमशाद की लकड़ी के चार खंभे पर लटका उन के सोने के अंकुरे चांदी की चार चूलों पर होवें॥ ३३। और घूंघट को घुण्डी के नीचे लटका जिसतें तू घूंघट के भीतर साक्षी की मंजूषा लावे और वुह घूंघट पवित्र और महा पवित्र स्थान में बिभाग करेगा॥ ३४। और दया का आसन साक्षी की मंजूषा पर महा पवित्र स्थान में रख॥ ३५। और मंच को घूंघट के बाहर रख और दीअट को मंच के सन्मुख तंबू की एक ओर दक्षिण अलंग और मंच को उत्तर अलंग रख॥ ३६। और तंबू के द्वार के लिये नीला और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने वस्त्र से बूटा काढ़ी हुई एक ओट बना॥ ३७। और ओट के लिये शमशाद के पांच खंभे बना और उन्हें सोने से मढ़ उन के अंकुरे सोने के हों और तू उन के लिये पीतल के पांच पाए ढाल के बना॥

२७ सत्ताईसवां पर्व्व।

और तू शमशाद की लकड़ी की एक यज्ञबेदी पांच हाथ लंबी और पांच हाथ चौड़ी बना यज्ञबेदी चौकोर होवे और उस की ऊंचाई तीन हाथ हो॥ २। और उस के चारों कोनों के लिये सींग

बना और उस की सींग उसी से हों और उसे पीतल से मढ़॥ ३। और उस की राख के लिये पात्र बना उस की फावड़ियां और उस के कटोरे और उस का त्रिशूल और अंगेठियां बना उस के समस्त पात्र पीतल के बना॥ ४। और उस के लिये पीतल के जाल की एक झंझरी बना और उस जाल में पीतल के चार कड़े उस के चारों कोनों में बना॥ ५। और उसे बेदी के घेरा के नीचे रख जिसतें बेदी के मध्य लों पहुंचे॥ ६। और यज्ञबेदी के लिये शमशाद की लकड़ी का बहंगर बना और उन्हें पीतल से मढ़॥ ७। और उन बहंगरों को कड़ों में डाल और बहंगर यज्ञबेदी के उठाने के लिये दोनों अलंग में होवें॥ ८। उस के पाट यों पोले बनाइयो जैसा कि तुझे पहाड़ में दिखाया गया वैसाही उन्हें बनाइयो॥ ९। और तंबू के कारण एक आंगन बना दक्षिण दिशा के आंगन के कारण बटे हुए झीने सूती कपड़े से सौ हाथ लंबा एक अलंग के लिये ओट बना॥ १०। और उस के बीस खंभे और उन के बीस पाए पीतल के हों और खंभों के अंकुरे और उन के डंडे रूपे के बना॥ ११। और ऐसे ही उत्तर की ओर की लंबाई के लिये सौ हाथ की लंबी ओट और उस के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए और खंभों के अंकुरे और उन के डंडे रूपे के हों॥ १२। और पश्चिम अलंग के आंगन की चौड़ाई में पचास हाथ की ओट हों और उन के दस खंभे और उन के दस पाए हों॥ १३। और पूर्ब अलंग के आंगन की चौड़ाई पचास हाथ हो॥ १४। एक ओर की ओट पंद्रह हाथ होय उन के तीन खंभे और उन के तीन पाए हों॥ १५। और दूसरी ओर की ओट पंद्रह हाथ उन के तीन खंभे और उन के तीन पाए॥ १६। और आंगन के फाटक के लिये नीला और बैंजनी और लाल रंग का बटे हुए झीने सूती कपड़े से बूटे काढ़े हुए का बीस हाथ की एक ओट बना उन के खंभे चार और उन के पाए चार॥ १७। और आंगन के चारों ओर के समस्त खंभे रूपे के डंडों से हों उन के अंकुरे रूपे के और उन के पाए पीतल के॥ १८। आंगन की लंबाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई पांच हाथ झीने बटे हुए सूती कपड़े से और उन के पाए पीतल के॥ १९। तंबू

की समस्त सेवा के लिये समस्त पात्र और उस के सब खूंटे उस के और आंगन के समस्त खूंटे पीतल के हों॥ २०। और इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि तेरे पास कूटे ज़ुए जलपाई का निर्मल तेल लावें जिसतें दीपक सदा बरा करे॥ २१। घूंघट के बाहर जो साक्षी के आगे है मंडली के तंबू में हारून और उस के बेटे सांझ से ले के बिहान ताईं परमेश्वर के आगे नित्य उन की पीढ़ी से पीढ़ी लों इसराएल के संतानों के लिये यह बिधि है।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

और इसराएल के संतानों में से अपने भाई हारून को अपने पास ले जिसतें वुह और उस के बेटे नदब और अबिहू और इलिअज़र और ईतमर याजक के पद में मेरी सेवा करें॥ २। और अपने भाई हारून के लिये और बिभव के लिये पवित्र बस्त्र बना॥ ३। और उन समस्त बुद्धिमानों से जिन्हें मैं ने बुद्धि का आत्मा दिया है कह कि वे हारून को पवित्र करने के लिये बागा बनावें जिसतें वुह याजक मेरे लिये हो॥ ४। और वे ये बस्त्र बनावें चपरास और एफोद और बागा और बूटा काढ़ी ज़ुई कुरती और मुकुट और कटिबंध और वे पवित्र बस्त्र तेरे भाई हारून और उस के बेटों के लिये बनावें कि मेरे लिये याजक होवें॥ ५। और वे सोना और नीला और बैंजनी और लाल झीना कपड़ा लेंगे॥ ६। और वे एफोद को सोने और नीले और बैंजनी और लाल और बटे ज़ुए झीने कपड़े से बूटा काढ़ा ज़ुआ बनावें॥ ७। दो कंधे का जोड़ा उस की दोनों ओरों से मिले ज़ुए हों जिसतें यों मिलाया जाय॥ ८। और बूटा काढ़ा ज़ुआ एफोद का पटुका जो उस पर है उसी के कार्य के समान उसी से हो सोने और नीले और बैंजनी और लाल और झीने बटे ज़ुए सूती कपड़े से हो॥ ९। और दो बैदूर्यमणि ले और उन पर इसराएल के संतानों के नाम खोद॥ १०। उन में से छः के नाम एक मणि पर और शेष के छः नाम दूसरे मणि पर उन की उत्पत्ति के बिधि से होवें॥ ११। मणि के खोदवैये के कार्य से छापा के खोदने के समान दोनों मणि पर इसराएल

के संतानों के नाम खोद उन्हें सोने के ठिकानों में जड़॥ १२। और दोनों मणि को एफोद के दोनों मोंढ़ों पर रख कि इसराएल के संतानों के स्मरण के लिये होवें और हारून उन के नाम परमेश्वर के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये उठावेगा॥ १३। और सोने के ठिकाने बना॥ १४। और दोनों सीकरें निर्मल सोने से खूंटों में गथने के कार्य से उन्हें बना और गुथी ऊई सीकरों को उन ठिकानों में जड़॥ १५। और चित्रकारी से न्याय के लिये एक चपरास बना एफोद के कार्य के समान सोने और बैंजनी और लाल और झीने बटे ऊए सूती कपड़े से बना॥ १६। यह चौकोर दोहरा होवे उस की लंबाई एक बित्ता और उस की चौड़ाई एक बित्ता॥ १७। और मणि की चार पांती उस में भर दे पहिली पांती में मणि का और पद्मराग और लालड़ी॥ १८। दूसरी पांती में मर्कत और नीलमणि और हीरे॥ १९। तीसरी पांती में लशम और सूर्यकांत और नीलिम॥ २०। चौथी पांती में बैदूर्य और फिरोज़ा और चंद्रकांत वे सोने के ठिकाने में जड़े जावें॥ २१। और मणि इसराएल के वंश के नाम के संग हैं छापे के खोदे ऊए उन के नाम के संतान भेद बारह गोष्ठी के समान हर एक अपने नाम के संग होवे॥ २२। और चपरास के ऊपर निर्मल सोने की गुथी ऊई सीकरें खूंट में बना॥ २३। और चपरास पर सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास के दोनों खूंटों में लगा॥ २४। और सोने की गुथी ऊई सीकर उन दोनों कार्यों में जो चपरास के दोनों खूंटों में हैं लगा॥ २५। और गुथे ऊए दोनों के दोनों खूंट उन के दो ठिकाने में जड़ और उन्हें एफोद के कंधों पर आगे रख॥ २६। और सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास के किनारे के खूंट पर जो एफोद के भीतर है और उस के जोड़ने के साम्ने एफोद के पटुके के ऊपर रख॥ २७। और सोने की दो कड़ियां एफोद के नीचे दोनों अलंग में रख उस के आगे की ओर जोड़ के साम्ने चित्रकारी के एफोद के ऊपर रख॥ २८। और वे चपरास को उस की कड़ियों से एफोद की कड़ियों में नीले गाटे से बांधें कि एफोद के पटुके के ऊपर हों जिसतें चपरास एफोद से न हटे॥ २९। और हारून नित्य परमेश्वर के आगे

स्मरण के लिये जब वुह पवित्र स्थान में जावे इसराएल के संतानों के नाम न्याय की चपरास पर अपनी छाती पर उठावे॥ ३०। और तू ऊरिम और थम्मिम को न्याय की चपरास में रख यह हारून की छाती पर परमेश्वर के आगे जाने पर होगा और हारून इसराएल के संतानों के न्याय को अपनी छाती पर परमेश्वर के आगे सदा लिये रहे॥ ३१। और एफोद का बागा सर्व्वत्र नीला बना॥ ३२। और उस के ऊपर मध्य में एक छेद होवे और उस छेद की चारों ओर बिने ऊए कार्य के गोटे हों जैसा झिलम का मुंह होता है जिसतें फटने न पावे॥ ३३। और उस के खूंट के घेरे में नीले और बैंजनी और लाल रंग के अनार बना और घेरे में सोने की घुण्डी उन के मध्य में बना॥ ३४। सो एक सोने की घुण्डी और एक अनार और एक सोने की घुंण्डी और एक अनार बागे के खूंट के घेरे में लगा॥ ३५। और सेवा के समय हारून उसे पहिने और जब वुह पवित्र स्थान में परमेश्वर के आगे जावे और जब निकले तब उस का शब्द सुना जायगा जिसतें वुह मर न जाय॥ ३६। और निर्मल सोने की एक पटरी बना और उस पर खोदे ऊए छाप की नाईं खोद कि परमेश्वर के लिये पवित्रमय॥ ३७। और उस पर नीले गोटे लगा जिसतें वुह मुकुट पर होवे सो मुकुट आगे की ओर होवे॥ ३८। और वुह हारून के ललाट पर होय कि हारून पवित्र वस्तु के पापों को जिसे इसराएल के संतान अपनी समस्त पवित्र भेंटों में पवित्र करेंगे और वही उस के ललाट पर सदा हो जिसतें वे परमेश्वर के आगे ग्राह्य होवें॥ ३९। और बागे पर झीने सूती कपड़े से बूटा काढ़ और मुकुट को झीने वस्त्र से बना और कटिबंध को चित्रकारी से बना॥ ४०। और हारून के बेटों के लिये बागे बना और उन के लिये कटिबंध और पगड़ी उन की शोभा और बिभव के लिये बना। ४१। और उन्हें अपने भाई हारून पर और उस के संग उस के बेटों पर पहिना और उन्हें अभिषेक कर और उन्हें स्थापित और पवित्र कर जिसतें कि वे मेरे लिये याजक होवें॥ ४२। और उन के लिये सूती जांघिया बना कि उन की नग्नता ढांपी जाय और चाहिये कि यह कटि से जांघ लों हो॥ ४३। और वे हारून और उस के बेटों पर होवें जब वे मंडली के मंदिर में प्रवेश करें अथवा जब वे पवित्र स्थान में

यज्ञबेदी के पास सेवा को आवें कि वे पाप न उठावें और मर जायें यह बिधि उस के और उस के पीछे उस के बंश के लिये सदा को है।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब ।

और वुह जो तू उन के लिये करेगा जिसतें उन्हें पवित्र करे कि वे मेरे लिये याजक होवें याजक के पद में मेरी सेवा यह है कि तू एक बछड़ा और दो निष्कलंक मेंढ़े ले॥ २। और अख़मीरी रोटी और फुलके और अख़मीरी फुलके तेल से चुपड़े हुए और अख़मीरी टिकरी तेल में चुपड़ी हुई श्वेत गेहूं के पिसान की बना॥ ३। और उन्हें एक टोकरी में रख और उन्हें टोकरी में बछड़े और दोनों मेंढ़ों समेत आगे ला॥ ४। और हारून और उस के बेटों को मंडली के तंबू के द्वार पर ला और उन्हें जल से नहला॥ ५। और बस्त्र ले और हारून को कुरती और पटुके का बागा पहिना और एफोद और चपरास एफोद का पटुका उस पर बांध॥ ६। और मुकुट को उस के सिर पर रख और पवित्र किरीट मुकुट पर धर॥ ७। तब अभिषेक करने का तेल ले और उस के सिर पर ढाल और उसे अभिषेक कर॥ ८। फिर उस के बेटों को आगे ला और उन्हें कुरती पहिना॥ ९। और हारून और उस के बेटों पर कटिबंध लपेट और उन पर पगड़ी बांध जिसतें याजक का पद सनातन की बिधि के लिये उन्हीं का होवे और हारून और उस के बेटों को स्थापित कर॥ १०। फिर उस बैल को मंडली के तंबू के आगे ला और हारून और उस के बेटे अपने हाथ उस के सिर पर रक्खें॥ ११। और उस बैल को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे बलिदान कर॥ १२। और उस के लोहू में से कुछ ले और अपनी अंगुली से यज्ञबेदी के सींगों पर लगा और बचा हुआ लोहू यज्ञबेदी के नीचे ढाल॥ १३। और उस की समस्त चिकनाई जो उस के अंतर को ढांपती है और जो कलेजे के ऊपर है और दोनों गुर्दे और जो चिकनाई उन पर है ले और उन्हें यज्ञबेदी पर जला॥ १४। परंतु उस बैल का मांस और खाल और गोबर छावनी के बाहर आग से जला यह पापों का बलिदान है॥ १५।

एक मेंढ़े को भी ले और हारून और उस के बेटे अपने हाथ उस के सिर पर रक्खें॥ १६। और उसे बलिदान कर और तू उस के लोहू को यज्ञबेदी पर और उस के चारों ओर छिड़क॥ १७। और मेंढ़े को टुकड़ा टुकड़ा कर और उस के अंतर और उस के पांव धो और उस के टुकड़े सिर के साथ एकट्ठे कर॥ १८। और उस समस्त मेंढ़े को यज्ञबेदी पर जला यह होम की भेंट परमेश्वर के लिये अग्नीय सुगंध बास परमेश्वर के लिये है।

१९। फिर दूसरा मेंढ़ा ले और हारून और उस के बेटे अपने हाथ उस के सिर पर रक्खें॥ २०। तब तू उस मेंढ़े को बलिदान कर और उस के लोहू में से ले और हारून के और उस के बेटों के दहिने कान की लहर पर और उन के दहिने हाथ के अंगूठे पर और दहिने पांव के अंगूठे पर लगा और यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़क॥ २१। और उस लोहू में से जो यज्ञबेदी पर है और अभिषेक का तेल ले और हारून पर और उस के बस्त्र पर और उस के बेटों पर और उन के बस्त्रों पर उस के साथ छिड़क तब वुह और उस के बस्त्र और उस के बेटे और उन के बस्त्र उस के संग पवित्र होंगे॥ २२। और मेंढ़े की चिकनाई और पूंछ और वुह चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और जो कलेजे को ढांपती है और दोनों गुर्दे को और वुह चिकनाई जो उन्हों पर है और दहिना मोंढा ले इस लिये कि यह मेंढ़ा स्थापने का है॥ २३। और एक रोटी और तेल में चुपड़ी हुई रोटी का फुलका और अख़मीरी रोटी के टोकरे में से एक टिकरी जो परमेश्वर के सन्मुख है॥ २४। और यह सब हारून के और उस के बेटों के हाथ पर रख और उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने के बलिदान के लिये हिला॥ २५। और उन्हें उन के हाथ से ले और यज्ञबेदी पर जलाने के बलिदान के लिये जला कि परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये हो यह आग का बलिदान परमेश्वर के लिये है॥ २६। और तू हारून के स्थापित मेंढ़े की छाती ले और उसे परमेश्वर के आगे हिलाने के बलिदान के लिये हिला और वुह तेरा भाग होगा॥ २७। और तू हिलाने के बलिदान की छाती को और उठाने के पुट्ठे को जो हारून और उस के बेटों को स्थापित करने

का मेंढ़ा हिलाया और उठाया गया है पवित्र कर॥ २८। और हारून और उस के बेटों के लिये और सब इसराएल के संतानों में यह विधि सदा होगी इस लिये कि ये उठाये हुए बलिदान हैं और चाहिये कि सदा इसराएल के संतानों से उस के कुशल के बलिदानों में से उठाये हुए बलिदान हों और यह उठाया हुआ बलिदान परमेश्वर के लिये है॥ २९। और हारून के पवित्र वस्त्र उस के पीछे उस के बेटों के कारण उन के अभिषेक के लिये हों कि वे उन में स्थापित होवें॥ ३०। जो बेटा उस की संती याजक होवे जब वुह मंडली के तंबू में पवित्र सेवा करने को आवे तब वुह उन्हें सात दिन पहिने॥ ३१। और स्थापने का मेंढ़ा ले और उस का मांस पवित्र स्थान में उसिन॥ ३२। और हारून और उस के बेटे मेंढ़े का मांस और वुह रोटी जो टोकरी में मंडली के तंबू के द्वार पर है खावें॥ ३३। और जिन बस्तुन से प्रायश्चित्त हुआ कि उन्हें स्थापित और पवित्र करें वे खावें परंतु परदेशी न खावे क्योंकि पवित्र है॥ ३४। और यदि स्थापित के मांस में से अथवा रोटी में से बिहान लों रह जाय तो वुह खाया न जाय परंतु जला देवें इस लिये कि पवित्र है॥ ३५। और तू हारून और उस के बेटों को मेरी समस्त आज्ञा के समान यों कीजियो सात दिन उन्हें स्थापित कीजियो॥ ३६। और तू प्रतिदिन पाप के प्रायश्चित्त के कारण एक बैल को चढ़ाइयो और यज्ञबेदी को पवित्र करने को जब तू उस के लिये प्रायश्चित्त करे तो उसे पावन करने को अभिषेक कर॥ ३७। तू बेदी के लिये सात दिन प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र कर और वुह अत्यंत पवित्र हो जायगी जो कुछ उसे छूये सो पवित्र हो जायगा॥ ३८। यह तू यज्ञबेदी पर कीजियो पहिले बरस का दो मेम्ना प्रतिदिन नित्य चढ़ाइयो॥ ३९। एक मेम्ना बिहान को और दूसरा मेम्ना सांझ को बलिदान कर॥ ४०। गोहूं के पिसान का दसवां भाग जो जलपाई के कूटे हुए तीन पाव तेल से मिला हुआ हो और तीन पाव दाख रस एक मेम्ना के साथ पीने की भेंट के लिये होय॥ ४१। और दूसरा मेम्ना सांझ की भेंट का और उसे बिहान के मांस की भेंट के समान और पीने की भेंट के समान परमेश्वर के सुगंध की बासना के लिये होम कर॥ ४२। होम की भेंट तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी लों मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे

नित्य होगी जहां मैं तुम से वार्त्ता करने के लिये भेंट करूंगा ॥ ४३ । और मैं इसराएल के संतान से वहां भेंट करूंगा और वुह मेरी महिमा के लिये पवित्र होगा ॥ ४४ । और मैं मंडली के तंबू को और यज्ञबेदी को पवित्र करूंगा और हारून और उस के बेटों को पवित्र करूंगा कि वे मेरे लिये याजक होवें ॥ ४५ । और मैं इसराएल के संतानों में बास करूंगा और मैं उन का ईश्वर हूंगा ॥ ४६ । और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं जो उन्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया जिसतें मैं उन में बास करूं मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं ॥

३० तीसवां पर्ब्ब ।

और तू शमशाद की लकड़ी से धूप जलाने के लिये एक यज्ञबेदी बना ॥ २ । उस की लंबाई और चौड़ाई एक एक हाथ चौकोर होवे और उस की ऊंचाई दो हाथ उस के सींग उसी से हों ॥ ३ । और उसे निर्मल सोने से मढ़ उस की छत और उस के चारों ओर के मुकुट और उस के सींगों को और उस के चारों ओर सोने का मुकुट बना ॥ ४ । और सोने के दो कड़े उस के मुकुट के नीचे उस के दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंग पर बना और वे उठाने के बहंगर के स्थान होंगे ॥ ५ । और बहंगर को शमशाद की लकड़ी से बना और उसे सोने से मढ़ ॥ ६ । और उसे ओम्भल के आगे जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर है रख दया के आसन के सान्हे जो साक्षी के ऊपर है जहां मैं तुझ से भेंट करूंगा ॥ ७ । और हर बिहान को हारून उस पर सुगंध द्रव्य का धूप जलावे जब वुह दीपकों को सुधारे वुह उस पर धूप जलावे ॥ ८ । और जब हारून संध्या के समय में दीपक को बारे वुह उस पर तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में परमेश्वर के आगे धूप जलावे ॥ ९ । तुम उस पर उपरी धूप और होम का बलिदान और मांस की भेंट न चढ़ाइयो और उस पर पीने की भेंट न चढ़ाइयो ॥ १० । और हारून बरस भर में एक बार उस के सींगों पर पाप की भेंट के प्रायश्चित्त के लोहू से प्रायश्चित्त करे तुम्हारे समस्त पीढ़ियों में बरस में एक बार उस पर प्रायश्चित्त करे यह परमेश्वर के लिये अति पवित्र है ॥

११। और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ १२। कि जब तू इसराएल के संतानों को गिने तब उन में से हर मनुष्य अपने प्राण के छुड़ाने के लिये परमेश्वर को देवे जब तू उन की गिनती करे जिसतें गिनती करने में उन पर मरी न आवे॥ १३। जो कोई गिनती किये गये होवे सो पवित्र स्थान के शैकलों के समान आधा शैकल देवे एक शैकल बीस गिरह सो आधा शैकल परमेश्वर की भेंट है॥ १४। जो कोई गिनती किये गये में होवें बीस बरस का और जो ऊपर होवे सो परमेश्वर के लिये भेंट देवे॥ १५। अपने प्राण का प्रायश्चित्त करने को परमेश्वर की भेंट देने में धनी कंगाल से अधिक न देवे और कंगाल आधे शैकल से न घटावे॥ १६। और तू इसराएल के संतानों के प्रायश्चित्त का दाम ले और उसे मंडली के तंबू के कार्य कि सेवा के लिये ठहरा और यह इसराएल के संतानों के लिये परमेश्वर के आगे स्मरण और उन के प्राणों का प्रायश्चित्त होगा॥

१७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १८। कि पीतल का एक स्नान पात्र बना और उस का पाया स्नान करने के लिये पीतल का बना और उस को मंडली के तंबू और यज्ञबेदी के मध्य में रख और उस में जल डाल॥ १९। और हारून और उस के बेटे अपने हाथ पांव उस्से धोवें। २०। जब वे मंडली के तंबू में जावें वे जल से धोवें जिसतें नाश न होवें अथवा जब वे सेवा के लिये यज्ञबेदी के पास जावें और परमेश्वर के लिये होम की भेंट जलावें॥ २१। वे अपने हाथ पांव धोवें जिसतें वे न मरें यह व्यवहार उन के लिये अर्थात् उस के और उस के बंश की समस्त पीढ़ी लों सदा के लिये होवे॥ २२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २३। कि तू अपने लिये पांच सौ शैकल के चोखे गंधरस का प्रधान सुगंध द्रव्य और उस की आधी अर्थात् अढ़ाई सौ की मीठी दारचीनी और अढ़ाई सौ का सुगंध बच अपने लिये ले। २४। और पवित्र स्थान कि शैकल के तौल पांच सौ शैकल भर तज ले और जलपाई का तेल हीन सेर॥ २५। और इन्हें पवित्र लेपन का तेल बना गंधी की रीति के समान मिला के लेपन बना यही पवित्र के अभिषेक का तेल होवे॥ २६। और उस्से मंडली के

तंबू को और साक्षी की मंजूषा को अभिषेक कर॥ २७। और मंच और उस के समस्त पात्र और दीअट और उस के पात्र और धूप की वेदी॥ २८। और भेंट के होम करने की वेदी उस के समस्त पात्र सहित और स्नान पात्र और उस का पाया॥ २९। और उन्हें पवित्र कर कि वे अति पवित्र हो जायें जो उन्हें छूवे सो पवित्र होगा॥ ३०। और हारून और उस के बेटों को अभिषेक करके उन्हें स्थापित कर कि मेरे लिये याजक होवें॥ ३१। और इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि यह पवित्र अभिषेक का तेल मेरे लिये तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में होय॥ ३२। किसी मनुष्य के शरीर पर न डाला जाय और तुम वैसा और उसी के मेल में न बनाइयो कि यह पवित्र है तुम्हारे लिये पवित्र होगा॥ ३३। जो कोई उस के समान बनावे अथवा जो कोई उसे किसी परदेशी पर लगावे सो अपने लोगों से कट जायगा॥ ३४। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू अपने लिये सुगंध द्रव्य अर्थात् बोल और नखी और शुद्ध कुंदुरू और सुगंध द्रव्य और चोखा लोबान लीजियो और हर एक को समान लीजियो॥ ३५। और उन का सुगंध बनाइयो गंधी के कार्य के समान मिलाया हुआ पवित्र और शुद्ध होवे॥ ३६। और उस में से कुछ बुकनी कर और उस में से कुछ मंडली के तंबू की साक्षी के आगे रख जहां मैं तुझ से भेंट करूंगा वह तुम्हारे लिये अति पवित्र होगा॥ ३७। और सुगंध द्रव्य अथवा धूप को जिसे तू बनावे तो तुम उस की मिलावट के समान अपने लिये मत बनाओ वही तुम्हारे पास परमेश्वर के लिये पवित्र होगा॥ ३८। जो कोई सूंघने के लिये उस के समान बनावेगा सो अपने लोगों में से कट जायगा॥

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ २। कि देख मैं ने जरी के पुत्र बज़लिएल को जो हूर का पोता यहूदाह के कुल में का है नाम लेके बुलाया॥ ३। और मैं ने उसे बुद्धि में और समझ में और ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में परमेश्वर के आत्मा से भर दिया॥ ४। कि सोने और रूपे और पीतल के कार्य करने में अपनी बुद्धि से हथौटी का

कार्य निकाले॥ ५। मणि के खोदने और जड़ने में और काष्ठ के खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की हथौटी का कार्य करे॥ ६। और देख में ने उस के संग अहलिअब को जो अखिसम्क का पुत्र और दान के कुल में का है दिया और मैं ने समस्त बुद्धिमानों के अंतःकरणों में बुद्धि दिई कि सब जो मैं ने तुझे आज्ञा किई है बनावे॥ ७। मंडली का तंबू और साक्षी की मंजूषा और दया का आसन जो उस पर है और तंबू के समस्त पात्र॥ ८। और मंच और उस के पात्र और पवित्र दीअट उस के पात्र सहित और धूप की बेदी॥ ९। और भेंट के होम की बेदी उस के समस्त पात्र समेत और स्नान पात्र और उस का पाया॥ १०। और सेवा के बस्त्र और हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र और उस के बेटों के बस्त्र जिसतें याजक की सेवा में सेवा करे॥ ११। और अभिषेक का तेल और पवित्र स्थान के लिये सुगंध धूप उस समस्त आज्ञा के समान जो मैं ने तुझ से किई है वे करें॥ १२। फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ १३। कि तू इसराएल के संतानों को यह कहके बोल कि निश्चय तुम मेरे विश्रामों का पालन करो इस लिये कि वुह मेरे और तुम्हारे मध्य में और तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में एक चिन्ह है जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूं॥ १४। इस कारण बिश्राम का पालन करो क्योंकि वुह तुम्हारे लिये पवित्र है हर एक जो उसे अशुद्ध करेगा निश्चय बध किया जायगा क्योंकि जो कोई उस में कार्य करे सो अपने लोगों में से काट डाला जायगा॥ १५। छः दिन कार्य होवे परंतु सातवां चैन का बिश्राम परमेश्वर के लिये पवित्र है सो जो कोई बिश्राम के दिन में कार्य करे वुह निश्चय मार डाला जायगा॥ १६। इस कारण इसराएल के संतान बिश्राम का पालन करें कि सनातन नियम के लिये उन की समस्त पीढ़ियों में बिश्राम का पालन होवे॥ १७। मेरे और इसराएल के संतानों के मध्य में यह सदा के लिये चिन्ह है क्योंकि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन अवकाश पाया और तृप्त हुआ॥ १८। और जब वुह मूसा से सीना के पहाड़ पर बार्त्ता कर चुका तब साक्षी के पत्थर की दो पटियां ईश्वर की अंगुलियों से लिखी हुईं उस ने उसे दिईं॥

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब ।

और जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में बिलंब किया तब वे हारून के पास एकट्ठे हुए और उसे कहा कि उठ और हमारे लिये ईश्वर बना कि हमारे आगे चले क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस्र के देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि क्या हुआ॥ २। तब हारून ने उन्हें कहा कि अपनी पत्नियों और पुत्रों और पुत्रियों के कानों से सोने की बालियां तोड़ तोड़ के मुझ पास लाओ॥ ३। सो समस्त लोग सोने की बालियां तोड़ तोड़ के जो उन के कानों में थीं हारून के पास लाये॥ ४। और उस ने उन के हाथों से लिया और ढाला हुआ एक बछड़ा बना के टांकी से उस का डौल किया और उन्हें कहा कि हे इसराएल यह तेरा ईश्वर है जो तुझे मिस्र के देश से निकाल लाया॥ ५। और जब हारून ने देखा तो उस के आगे बेदी बनाई और यह कहके प्रचार कराया कि कल परमेश्वर के लिये पर्व है॥ ६। फिर वे बिहान को तड़के उठे और होम की भेंट चढ़ाई और कुशल का बलिदान लाये और लोग खाने पीने को बैठे और लीला करने को उठे।

७। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिस्र के देश से निकाल लाया आप को भ्रष्ट किया है॥ ८। वे उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें बताया था शीघ्र फिर गये और अपने लिये ढाला हुआ बछड़ा बनाया और उसे पूजा और उस के लिये बलिदान चढ़ा के कहा कि हे इसराएल यह तेरा ईश्वर है जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया॥ ९। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं ने इन लोगों को देखा और देखो कि ये लोग एक कठोर गले लोग हैं॥ १०। सो अब तू मुझे छोड़ कि मेरा क्रोध उन पर अत्यंत भड़के और मैं उन्हें भस्म करूं और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा॥ ११। फिर मूसा ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बिनती किई और कहा कि हे परमेश्वर किस लिये तेरा क्रोध अपने लोगों पर भड़का जिन्हें तू मिस्र देश से महा पराक्रम और सामर्थी हाथ से निकाल लाया॥ १२। किस लिये मिस्री कह के बोलें कि वुह बुराई के लिये उन्हें यहां से निकाल

ले गया जिसतें उन्हें पहाड़ों में नाश करे और पृथिवी पर से भस्म करे अपने अत्यंत क्रोध से फिर जा और अपने लोगों पर बुराई पहुंचाने से फिर जा॥ १३। अपने दास अबिरहाम इजहाक और इसराएल को स्मरण कर जिन से तू ने अपनी ही किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हारे बंश को स्वर्ग के तारों के समान बढ़ाऊंगा और यह समस्त देश जिस के बिषय में मैं ने कहा है कि मैं तुम्हारे बंश को देऊंगा और वे उस के सनातन के अधिकारी होंगे॥ १४। तब परमेश्वर उस बुराई से जो चाही थी कि अपने लोगों पर करे फिरा॥ १५। और मूसा फिरा और पहाड़ से उतरा और साक्षी की दोनों पटियां उस के हाथ में थीं और पटियां दोनों ओर लिखी हुई थीं॥ १६। और वे पटियां ईश्वर के कार्य थीं और जो लिखा हुआ सो ईश्वर का लिखा पटियों पर खोदा हुआ॥ १७। और जब यहूसूअ ने लोगों के कोलाहल का शब्द सुना तो मूसा से कहा कि छावनी में लड़ाई का शब्द है॥ १८। फिर कहा कि यह आपुस में जो शब्द होता है सो हार जीत का नहीं है न यह दुर्बलता का शब्द है परंतु गीत का शब्द है॥ १९। और यों हुआ कि जब वुह छावनी के पास आया तब उस ने उस बछड़े को और नाचना देखा तब मूसा का क्रोध भड़का तब उस ने पटियां अपने हाथों से फेंक दिईं और उन्हें पहाड़ के नीचे तोड़ डाला॥ २०। फिर उस ने उस बछड़े को जिसे उन्हों ने बनाया था लिया और उसे आग में जलाया और उसे बुकनी किया और पानी पर बिथराया और इसराएल के संतानों को पिलाया॥ २१। फिर मूसा ने हारून को कहा कि इन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तू उन पर ऐसा महा पाप लाया॥ २२। और हारून ने कहा कि मेरे प्रभु का क्रोध न भड़के तू लोगों को जानता है कि वे बुराई पर हैं॥ २३। क्योंकि उन्हों ने मुझे कहा कि हमारे लिये ईश्वर बना कि हमारे आगे चले इस लिये कि यह मूसा जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि क्या हुआ॥ २४। तब मैं ने उन्हें कहा कि जिस किसी के पास सोना हो सो तोड़ लावे सो उन्हों ने मुझे दिया तब मैं ने उसे आग में डाला उससे यह बछड़ा निकला ।

२५। और मूसा ने लोगों को निरङ्कुश देखा क्योंकि हारून ने उन

की निरङ्कुशता उन की लाज के लिये उन के शत्रुन के सन्मुख खोल दिई॥ २६। तब मूसा छावनी के निकास पर खड़ा ऊआ और कहा कि जो परमेश्वर की ओर है सो मेरे पास आवे तब समस्त संतान लावी के उस पास एकट्ठे ऊए॥ २७। और उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने यह कहा है कि हर मनुष्य अपना खड्ग बांधे और एक फाटक से दूसरे फाटक लों छावनी के एक निकास से दूसरे निकास लों और हर एक मनुष्य अपने भाई को और अपने संगी को और अपने परोसी को घात करे॥ २८। और मूसा ने जैसा लावी के संतानों को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसाही किया सो उस दिन लोगों में से तीन सहस्र मनुष्य मारे पड़े॥ २९। और मूसा ने कहा कि आज परमेश्वर के लिये अपने हाथ भरो हर एक मनुष्य अपने पुत्र और अपने भाई से और आज अपने ऊपर आशीष लाओ॥ ३०। और दूसरे दिन सवेरे यों ऊआ कि मूसा ने लोगों से कहा कि तुम ने महा पाप किया और अब मैं परमेश्वर के पास ऊपर जाता ऊं क्या जाने मैं तुम्हारे पाप के लिये प्रायश्चित्त करूं॥ ३१। और मूसा परमेश्वर की ओर फिर गया और कहा कि हाय इन लोगों ने महा पाप किया और अपने लिये सोने का देवता बनाया॥ ३२। और अब यदि तू उन के पाप क्षमा करे नहीं तो मैं तेरी बिनती करता ऊं कि मुझे अपनी उस पुस्तक से जो लिखी है मेट दे॥ ३३। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जिस ने मेरा अपराध किया है मैं उसी को अपनी पुस्तक से मेट देऊंगा॥ ३४। और अब तू लोगों के साथ उस स्थान को जो मैं ने तुझे बताया है जा और देख कि मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा तथापि मैं अपने विचार के दिन में उन से उन के अपराध का विचार करूंगा॥ ३५। तब परमेश्वर ने बछड़ा बनाने के कारण जिसे हारून ने बनाया लोगों पर मरी भेजी।

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा कि यहां से जा तू और वुह लोग जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया उस देश को जा जिसके विषय में

अबिरहाम और इजहाक और यअकूब से यह कहके मैं ने किरिया खाई है कि मैं उसे तेरे बंश को देऊंगा॥ २। और मैं तेरे साम्ने दूत भेजूंगा और कनआनियों और अमूरियों और हित्तियों और फरजियों और हवियों और यबूसियों को हांक देऊंगा॥ ३। एक देश में जहां दूध और मधु बहता है क्योंकि मैं तेरे मध्य में न जाऊंगा इस लिये कि तुम लोग कठोर न हो कि मैं तुम्हें मार्ग में भस्म कर डालूं॥ ४। और जब लोगों ने यह बुरा समाचार सुना तो बिलाप किया और किसी ने अपना आभूषण न पहिना॥ ५। क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के संतान से कह कि तुम एक कठोर लोग हो मैं तेरे मध्य एक पलमात्र में आके तुझे भस्म करूंगा इस कारण अपना आभूषण उतारो जिसतें मैं जानूं कि तुम से क्या करूं॥ ६। तब इसराएल के संतानों ने होरेब के पहाड़ पर अपना आभूषण उतार डाला॥ ७। और मूसा ने तंबू ले के छावनी के बाहर दूर खड़ा किया और उस का नाम मंडली का तंबू रक्खा और यों हुआ कि हर एक जो परमेश्वर का खोजी था सो भेंट के तंबू के पास जो छावनी के बाहर था जाता था॥ ८। और यों हुआ कि जब मूसा बाहर तंबू के पास गया तो सब लोग खड़े हुए और हर एक पुरुष अपने तंबू के द्वार पर खड़ा होके मूसा के पीछे देखता था यहां लों कि वुह तंबू में गया॥ ९। और जब मूसा ने तंबू में प्रवेश किया तो मेघ का खंभा उतरा और तंबू के द्वार पर ठहरा और उस ने मूसा से बार्त्ता किई॥ १०। और समस्त लोगों ने मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर ठहरा हुआ देखा और सब के सब अपने अपने तंबू के द्वार पर उठे और दंडवत किई॥ ११। और परमेश्वर ने मूसा से आम्ने साम्ने बार्त्ता किई जैसे कोई अपने मित्र से बार्त्ता करता है और वुह छावनी को फिरा परन्तु उस का सेवक नून का बेटा यहूसूअ एक तरुण मनुष्य तंबू के बाहर न निकला॥ १२। फिर मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख तू मुझ से कहता है कि उन लोगों को ले जा और मुझे नहीं बताया कि किसे मेरे साथ भेजेगा तथापि तू ने कहा है कि मैं नाम सहित तुझे जानता हूं और तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है॥ १३। सो यदि मैं ने तेरी दृष्टि में

अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपना मार्ग मुझे बता जिसतें मुझे निश्चय होवे कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और देख कि ये जाति तेरे लोग हैं॥ १४। तब उस ने कहा कि मैं ही जाऊंगा और मैं तुझे बिश्राम देऊंगा॥ १५। मूसा ने कहा कि यदि आप न जायं तो हमें यहां से मत ले जाइये॥ १६। क्योंकि किस रीति से जाना जायगा कि मैं ने और तेरे लोगों ने तुझ से अनुग्रह पाया है क्या इस में नहीं कि तू हमारे साथ जाता है सो मैं और तेरे लोग समस्त लोगों से जो पृथिवी पर हैं अलग किये जायेंगे॥ १७। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जो बात तू ने कही है मैं ने उसे भी मान लिया क्योंकि तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और मैं तुझे नाम सहित जानता हूं॥ १८। तब मूसा ने कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे अपनी महिमा दिखा॥ १९। उस ने कहा कि मैं अपनी सब भलाई को तेरे आगे चलाऊंगा और मैं परमेश्वर के नाम का प्रचार तेरे आगे करूंगा और जिस पर कृपालु हूं उसी पर कृपा करूंगा और जिस पर दयालु हूं उसी पर दया करूंगा॥ २०॥ और बोला कि तू मेरा रूप नहीं देख सक्ता क्योंकि मुझे देख के कोई न जीयेगा॥ २१। और परमेश्वर ने कहा कि देख एक स्थान मेरे पास है और तू उस टीले पर खड़ा रह॥ २२। और यों होगा कि जब मेरी महिमा चल निकलेगी तो मैं तुझे पहाड़ के दरार में रक्खूंगा और जब लों जा निकलों तुझे अपने हाथ से ढांपूगा॥ २३। और अपना हाथ उठा लूंगा और तू मेरा पीछा देखेगा परंतु मेरा मुंह दिखाई न देगा॥

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये पहिली पटियों के समान पत्थर की दो पटियां चीर और मैं उन पटियों पर वे बातें लिखूंगा जो पहिली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला॥ २। और तड़के सिद्ध हो और बिहान को सीना के पहाड़ पर चढ़ आ और वहां पहाड़ की चोटी पर मेरे आगे हो जा॥ ३। और कोई मनुष्य तेरे साथ न आवे और समस्त पहाड़ पर कोई देखा न जावे झुंड और लेहंड़ा पहाड़ के

आगे चराई न करें॥ ४। तब अगिली पटियों के समान पत्थर की दो पटियां चीरीं और जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी बिहान को मूसा पत्थर की दोनों पटियां अपने हाथ में लिये हुए सीना के पहाड़ पर चढ़ गया॥ ५। और परमेश्वर मेघ में उतरा और उस के साथ वहां खड़ा रहा और परमेश्वर के नाम का प्रचार किया॥ ६। और परमेश्वर उस के आगे से चला और प्रचार किया कि परमेश्वर परमेश्वर ईश्वर दयालु और कृपालु और धीर और भलाई और सच्चाई में भरपूर है॥ ७। सहस्रों के लिये दया रखता है पाप और अपराध और चूक का क्षमा करता और जो किसी भांति से अपराधी को निर्दोषी न ठहरावेगा और जो पितरों के पाप का उन के पुत्रों और पोत्रों पर तीसरी और चौथी पीढ़ी लों प्रतिफलदायक है॥ ८। तब मूसा ने शीघ्रता से भूमि की ओर सिर झुका के दंडवत किई॥ ९। और बोला कि हे परमेश्वर यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो हे मेरे प्रभु मैं तेरी बिनती करता हूं कि हम्में होके चल क्योंकि ये कठोर लोग हैं और हमारे पाप और अपराध क्षमा कर और हमें अपना अधिकार ठहरा॥ १०। तब वुह बोला कि देख मैं तेरे समस्त लोगों के आगे एक बाचा बांधता हूं कि मैं ऐसा आश्चर्य करूंगा जैसा कि समस्त पृथिवी पर और किसी देश में न हुआ है और सब लोग जिन में तू है परमेश्वर के कार्य देखेंगे क्योंकि मैं तुझ से भयंकर कार्य करूंगा॥ ११। जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं उसे मानियो देख मैं अमूरियों और कनआनियों और हित्तियों और फ़रज़ियों और हवियों और यबूसियों को तेरे आगे से हांकता हूं॥ १२। आप से चौकस रह ऐसा न हो कि तू उस भूमि के बासियों के साथ जिस में तू जाता है कुछ बाचा बांधे और तेरे मध्य में फंदा होवे॥ १३। परंतु तुम उन की यज्ञवेदियों को नाश करो और उन की मूर्त्तिन को तोड़ डालो और उन की बाटिका को काट डालो॥ १४। इस लिये किसी देव की पूजा न करो क्योंकि वुह परमेश्वर जिस का नाम ज्वलन है ज्वलित ईश्वर है॥ १५। ऐसा न होवे कि तू उस देश के बासियों से कुछ बाचा बांधे और वे अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और अपने देव के लिये बलिदान करें और तुझे बुलावें और तू उस के बलिदान से खा

लेवे॥ १६। और तू उन की बेटियां अपने बेटों के लिये लावे और उन की बेटियां अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और तेरे बेटों को भी अपने देवों के पीछे व्यभिचार करावें॥ १७। तू अपने लिये ढाले ज़ए देव मत बनाइयो॥ १८। अखमीरी रोटी के पर्ब्ब का पालन कीजियो सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है आबिब के मास के समय में ठहरा के अखमीरी रोटी खाइयो इस लिये कि तू आबिब के मास में मिस्र से बाहर आया॥ १९। सब जो गर्भ को खोलते हैं और तेरे पशुन के समस्त पहिलौंठे बैल अथवा भेड़ के मेरे हैं॥ २०। परंतु गदहे के पहिलौंठे को मेम्ना देके छुड़ाइयो और यदि न छुड़ावे तो उस का गला तोड़ डालियो अपने पुत्रों के समस्त पहिलौंठों को छुड़ाइयो और मेरे आगे कोई छूछे हाथ न आवे। २१। छः दिन लों कार्य करना परंतु सातवें दिन बिश्राम करना हल जोतने और लवने का समय हो बिश्राम करना॥ २२। और अठवारों का पर्ब्ब गोहूं के पहिले फल लवने के समय और संबत के अंत में एकट्ठा करने का पर्ब्ब करना॥ २३। और तुम्हारे समस्त पुत्र बरस में तीनबार परमेश्वर ईश्वर के आगे जो इसराएल का ईश्वर है आवें॥ २४। इस लिये कि मैं देशियों को तेरे आगे से बाहर निकालूंगा और तेरे सिवानों को बढ़ाऊंगा जब कि तू बरस में तीन बार अपने परमेश्वर ईश्वर के आगे जायगा तब कोई तेरे देश को बांछा न करेगा॥ २५। तू मेरी यज्ञबेदी पर लोहू खमीर के साथ बलिदान मत चढ़ाना और पर्ब्ब का बलिदान कधी बिहान लों रहने न पावे॥ २६। तू अपने देश के पहिले फलों का पहिला अपने परमेश्वर ईश्वर के मंदिर में लाना मेम्ना को उस की माता के दूध में मत सिझाना॥ २७। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू ये बातें लिख क्योंकि इन बातों के समान मैं ने तुझ से और इसराएल से बाचा बांधी है॥ २८। और मूसा चालीस दिन रात वहां परमेश्वर के पास था उस ने न रोटी खाई न पानी पीया और उस ने उस नियम की बातें वे दस आज्ञा पटियों पर लिखीं॥ २९। और जब मूसा नियम की पटिया अपने दोनों हाथ में लिये ज़ए सीना के पहाड़ से नीचे उतरा तो ऐसा ज़आ कि उस ने पहाड़ से उतरते न जाना कि जब वुह उस के साथ बात करता

था उस का रूप चमकता था ॥ ३० । ग्रीर जब हारून ग्रीर इसराएल के समस्त संतानें ने मूसा को देखा तो क्या देखते हैं कि उस का रूप चमकता था ग्रीर वे उस के पास ग्राने में डरते थे ॥ ३१ । मूसा ने उन्हें बुलाया ग्रीर हारून ग्रीर लोगों के समस्त प्रधान उस पास उलटे फिरे ग्रीर मूसा ने उन से बातें किईं ॥ ३२ । ग्रीर ग्रंत को इसराएल के समस्त संतान पास ग्राये ग्रीर उस ने उन सब बातें की जो परमेश्वर ने उसे सीना के पहाड़ पर कही थीं उन्हें ग्राज्ञा किई ॥ ३३ । ग्रीर जब मूसा उन से बातें कर चुका तो उस ने ग्रपने मुंह पर घूंघट डाला ॥ ३४ । पर जब मूसा परमेश्वर के ग्रागे उस्से बार्त्ता करने जाता था तो जब लों बाहर न ग्राता था घूंघट को उतार देता था ग्रीर जो ग्राज्ञा होती थी वुह बाहर ग्राके इसराएल के संतानें को कहता था ॥ ३५ । ग्रीर इसराएल के संतानें ने मूसा का मुंह देखा कि उस का मुंह चमकता था ग्रीर मूसा ने मुंह पर घूंघट डाला जब लों कि ईश्वर से बातें करने गया ॥

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब ।

ग्रीर मूसा ने इसराएल के संतानें की समस्त मंडली को एकट्ठा करके कहा कि परमेश्वर ने इन बातें की ग्राज्ञा किई है कि तुम उन्हें पालन करो ॥ २ । छः दिन लों कार्य किया जावे परंतु सातवां दिन तुम्हारे लिये पवित्र दिन होवे परमेश्वर के चैन का विश्राम दिन होगा जो कोई उस में कार्य करेगा मार डाला जायगा ॥ ३ । बिश्राम के दिन ग्रपने समस्त निवासें में ग्राग मत बारियो ॥ ४ । ग्रीर मूसा ने इसराएल के संतानें की समस्त मंडली को कहा वुह ग्राज्ञा जो परमेश्वर ने किई यह है ॥ ५ । तुम ग्रपने में से परमेश्वर के लिये भेंट लाग्रो ग्रीर जो कोई मन से चाहे सो परमेश्वर के लिये भेंट लावे सोना ग्रीर रूपा ग्रीर पीतल ॥ ६ । ग्रीर नीला ग्रीर बैंजनी ग्रीर लाल ग्रीर भीने सूती वस्त्र ग्रीर बकरियों के बाल ॥ ७ । ग्रीर लाल रंगे हुए मेंढ़ों के चमड़े ग्रीर तखसें के चमड़े ग्रीर शमशाद की लकड़ी ॥ ८ । ग्रीर जलाने का तेल ग्रीर ग्रभिषेक के तेल के लिये ग्रीर धूप के लिये सुगंध द्रव्य ॥ ९ । ग्रीर सूर्यकांतमणि ग्रीर एफोद ग्रीर चपरास पर जड़ने के लिये मणि ॥ १० ।

और तुम में से जो बुद्धिमान है आवे और जो कुछ परमेश्वर ने आज्ञा किई है बनावे॥ ११। निवास और तंबू और उस का घटाटोप और उस की घुंडियां और उस के पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस के पाए॥ १२। और मंजूषा और उस के बहंगर और दया का आसन और ढांपने का घूंघट॥ १३। मंच और उस के बहंगर और उस के समस्त पात्र और भेंट की रोटी॥ १४। और ज्योति के लिये दीअट और उस की सामग्री और प्रकाश के लिये तेल के संग उस के दीपक॥ १५। और धूप की यज्ञवेदी और उस के बहंगर और अभिषेक का तेल और धूप और सुगंध द्रव्य और तंबू में प्रवेश करने के द्वार की ओट॥ १६। यज्ञवेदी पीतल की झंझरी और उस के बहंगर और उस के समस्त पात्र और स्नानपात्र उस के पाए समेत॥ १७। आंगन की ओट और उस के खंभे और उन के पाए और आंगन के द्वार की ओट॥ १८। तंबू के खूंटे और आंगन के खूंटे और उन की डोरियां॥ १९। सेवा के वस्त्र जिसतें पवित्र स्थान में सेवा करें हारून याजक के लिये पवित्र वस्त्र और उस के बेटों के पवित्र वस्त्र जिसतें याजक के पद में सेवा करें॥ २०। तब इसराएल के संतानों की समस्त मंडली मूसा के आगे से चली गई॥ २१। और हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा और हर एक अपने मन के अभिलाष से जिस ने जो चाहा मंडली के तंबू के कार्य्य के कारण और उस के नैवेद्य और उस की समस्त सेवा और पवित्र वस्त्र के लिये परमेश्वर की भेंट लाया॥ २२। और वे आये क्या स्त्री क्या पुरुष जितनों को वांछा हुई और खड़वे और बालियां और कुंडल और अंगूठियां ये सब सोने के गहने थे और हर एक मनुष्य जिस ने परमेश्वर के लिये सोने की भेंट दिई॥ २३। और हर एक मनुष्य जिस के पास नीला और बैंजनी और लाल सूत के झीने वस्त्र और बकरियों के रोम और मेंढ़ों के लाल चमड़े और तखसों के चमड़े लाया॥ २४। हर एक जिस ने कि परमेश्वर को रूपे की अथवा पीतल की भेंट दिई अपनी भेंट परमेश्वर के लिये लाया और जिस किसी के पास शमशाद की लकड़ी थी सो उसे सेवा के कार्य के लिये लाया॥ २५। और समस्त स्त्रियों ने जो बुद्धिमान थीं अपने अपने हाथों से काता

और अपना काता हुआ नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूत का वस्त्र लाईं ॥ २६ । और समस्त स्त्रियों ने जिन के मनों ने उन्हें बुद्धि में उभाड़ा बकरियों के रोम काते ॥ २७ । और प्रधान सूर्यकांत एफ़ाद और चपरास पर जड़ने का मणि लाय ॥ २८ । और सुगंध द्रव्य और जलाने का तेल और अभिषेक का तेल और सुगंध लाय ॥ २९ । और क्या पुरुष और क्या स्त्री जिस का मन चाहा सो समस्त कार्य के लिये जो परमेश्वर ने बनाने को मूसा की ओर से कहा था इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये बांछित भेंट लाये ॥

३० । तब मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा कि देखो परमेश्वर ने ऊरी के पुत्र बजि़लिएल को जो हूर का पोता और यहूदाह के कुल का है नाम लेके बुलाया ॥ ३१ । और उस ने उसे बुद्धि और समझ में ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में परमेश्वर के आत्मा से भर दिया ॥ ३२ । और अपनी बुद्धि से हथौटी का कार्य निकाले जिसतें सोने और रूपे और पीतल के कार्य करे ॥ ३३ । और मणि के खोदने और जड़ने में और काठ के खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की हथौटी के कार्य करे ॥ ३४ । और उस ने उस के और अखिसमक के बेटे अहलिअब को जो दान के कुल से है मन में डाला ॥ ३५ । और उन के अंतःकरणों में ऐसा ज्ञान दिया कि खोदक के और हथौटक के और बूटाकाढ़क के समस्त कार्य में और नीला और बैंजनी और लाल और झीने वस्त्र में और जोलाहे के कार्य में और हथौटी के कार्य में जो बुद्धि से निकालते हैं ॥

३६ छतीसवां पर्ब्ब ।

तब बजि़लिएल और अहलिअब और सब बुद्धिमानों ने जिन में परमेश्वर ने बुद्धि और समुझ रक्खी थी कि मंदिर के शरण स्थान की सेवा के समस्त प्रकार के कार्य जैसा कि परमेश्वर ने समस्त आज्ञा उन्हें दिई वैसा उन्हों ने किया ॥ २ । सो मूसा ने बजि़लिएल और अहलिअब और हर एक बुद्धिमान को जिस के हृदय में परमेश्वर ने बुद्धि और समझ डाली थी और हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा था कि कार्य करने के लिये पास आवे ॥ ३ । और उन्हों ने मूसा के हाथ से समस्त भेंट जिसे इसरा-

एल के संतान शरण स्थान की सेवा के कार्य के लिये लाये थे पाई और वे हर बिहान उस के पास मन मनती भेंट लाते थे॥ ४। यहां लों कि सब विद्यमानों ने शरण स्थान के कार्य किये हर एक मनुष्य अपने अपने काम से जो उन्हों ने बनाया था आये॥ ५। और मूसा को कहके बोले कि कार्य की सेवा से जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है लोग अधिक लाते हैं॥ ६। तब मूसा ने आज्ञा किई और समस्त छावनी में प्रचार कराया कि क्या पुरुष और क्या स्त्री अब कोई शरण स्थान की भेंट के कार्य के लिये और न बनावे सो लोग लाने से रोके गये॥ ७। क्योंकि जो सामग्री उन के पास थी समस्त कार्य बनाने के लिये बहुत और अधिक थी॥ ८। और तंबू के कार्यकारियों में से हर एक ने जो बुद्धिमान था बटे हुए सूती बस्त्र के नीले और बैंजनी और लाल हथौटी के कार्य से करोबीम के साथ दस ओट बनाईं॥ ९। हर ओट की लंबाई अठाइस हाथ और उस की चौड़ाई चार हाथ सब ओट एक नाप की॥ १०। और पांच ओट को ए॰ दूसरे में मिलाया और पांच ओट एक दूसरे में मिलाया॥ ११। और उस ने एक ओट के कोर पर अनबंट से लेके जोड़ पर नीले तुकमे बनाये इसी रीति से दूसरी ओट के अत्यंत अलंग में दूसरे के जोड़ पर बनाये॥ १२। और उस ने एक ओट के अंचल में पचास तुकमे बनाये और पचास तुकमे दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में बनाये जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट जायें॥ १३। और उस ने सोने की पचास घुण्डी बनाईं और उन घुण्डियों से ओट को जोड़ा जिसतें एक तंबू हो गया॥ १४। और उस ने बकरी के रोम के ग्यारह ओट बनाये जिसतें तंबू के लिये ढपना हो॥ १५। एक ओट की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ ग्यारहो ओट एकही परिमाण की बनाईं॥ १६। और उस ने पांच ओट को अलग जोड़ा और छः ओट को अलग॥ १७। और उस में पचास तुकमें एक ओट के खूंट में जो अंत के खूंट के जोड़ में है और पचास तुकमे दूसरी ओट के खूंट में बनाये॥ १८। और उस ने तंबू को जोड़ने के लिये जिसतें एक होजावे पीतल की पचास घुण्डियां बनाईं॥ १९। और उस ने मेंढ़ों के रंगे हुए लाल चमड़ों से और तखसों के चमड़ों से तंबू के लिये ढांपन बनाया॥

२०। और उस ने तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट बनाये॥ २१। हर पाट की लंबाई दस हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ॥ २२। हर पाट में दो दो पाए जो एक दूसरे से समान अंतर में थे उस ने तंबू के समस्त पाटों के लिये योंही बनाया॥ २३। और उस ने तंबू के लिये पाट बनाया बीस दक्षिण की ओर के लिये॥ २४। और उस ने उन बीस पाटों के नीचे के लिये रूपे के चालीस पाए बनाये हर पाट के नीचे के लिये दो दो उस के फलों के समान॥ २५। और दूसरे पाट की पाए के लिये तंबू की दूसरी अलंग जो उत्तर की ओर है बीस पाट बनाये॥ २६। और चालीस रूपे के पाए हर एक पाट के नीचे दो पाए एक पाट के और उस में तंबू की पश्चिम अलंग के लिये छः पाट बनाये॥ २७। और तंबू की दोनों अलंग में कोने के लिये दो पाट बनाये॥ २८। और वे नीचे जोड़े गये और एक कड़ी में ऊपर से जोड़े गये इसी रीति से उस ने दोनों के दोनों कोनों में जोड़ा॥ ३०। और आठ पाट और उन की चांदी के सोलह पाए थे एक पाट के नीचे दो दो पाए॥ ३१। और शमशाद काष्ठ से अड़ंगे बनाये तंबू की एक अलंग के पाटों के लिये पांच॥ ३२। और तंबू की दूसरी अलंग के पाट के लिये पांच अड़ंगे और तंबू की पश्चिम अलंगों के लिये पांच॥ ३३। और उस ने मध्य का अड़ंगा ऐसा बनाया कि एक सिरे से दूसरे सिरों के पाटों में प्रवेश होवे॥ ३४। और पाटों को सोने से मढ़ा और उन के कड़े सोने के बनाये अड़ंगों के लिये स्थान और अड़ंगों को सोने से मढ़ा॥ ३५। और नीला और बैंजनी और लाल रंग और बटे ज़ए भीने सूती वस्त्र से एक घूंघट बनाया हथौटी के कार्य से उसे करोबीम के साथ बनाया॥ ३६। और उस के लिये शमशाद के चार खंभे बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा और उन के आंकड़े सोने के और उन के लिये चार पाए चांदी के ढाल कर बनाये॥ ३७। और वुह नीला और बैंजनी और लाल और बटा ज़ुआ भीने सूत से बूटा काढ़ी ज़ई तंबू के द्वार के लिये एक ओट बनाई॥ ३८। और उस के पांच खंभे आंकड़े सहित बनाये और उन के सिरे और कंगनी सोने से मढ़े परंतु उन के पांच पाए पीतल के।

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब ।

और बज़िलिएल ने शमशाद काष्ठ से मंजूषा को बनाया जिस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ की॥ २। और उसे चोखे सोने से भीतर बाहर मढ़ा और उस की चारों ओर के लिये एक सोने की कंगनी बनाई॥ ३। और उस ने उस के चार कोनों के लिये सोने के चार कड़े ढाले दो कड़े उस की एक अलंग और दो कड़े उस की दूसरी अलंग॥ ४। और शमशाद की लकड़ी के बहंगर बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा॥ ५। और उस ने बहंगरों को मंजूषा की अलंग के कड़ों में डाला कि मंजूषा को उठावें॥ ६। और उस ने दया के आसन को चोखे सोने से बनाया उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ॥ ७। और सोने के दो करोबी बनाये एक टुकड़े से पीट के दया के आसन के दोनों खूंट में उन्हें बनाया॥ ८। एक करोबी इस खूंट में और एक करोबी उस खूंट में दया के आसन में से उस ने करोबियों को दोनों खूंट में बनाया॥ ९। और करोबियों ने अपने पंख ऊपर फैलाये और अपने पंख से दया के आसन को ढांप लिया उन के मुंह एक दूसरे की ओर थे दया के आसन की ओर उन के मुंह थे॥ १०। और उस ने मंच को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई दो हाथ और चौड़ाई एक हाथ और उस की ऊंचाई डेढ़ हाथ॥ ११। और उसे चोखे सोने से मढ़ा और उस के लिये चारों ओर सोने का एक कलस बनाया॥ १२। और उस ने उस के लिये चार अंगुल की एक कंगनी बनाई और उस कंगनी के लिये चारों ओर सोने के कलस बनाये॥ १३। और उस ने उस के लिये सोने के चार कड़े ढाले और उन्हें उस के चारों पायों के चारों कोनों में लगाया॥ १४। कंगनी के सन्मुख कड़े थे बहंगर के स्थान मंच उठाने के लिये॥ १५। और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी का बनाया और उन्हें सोने से मढ़ा मंच उठाने के लिये॥ १६। और मंच पर के पात्र और उस के थाल और उस के कटोरे और उस की थालियां और उस की कटोरियां ढपने के लिये निर्म्मल सोने के बनाये॥ १७। और उस ने

दीअट को निर्म्मल सोने से गढ़ के बनाया और उस की डंडो और डाली और कटोरियां और कलियां और उस के फूल एक ही से थे॥ १८। और उस के अलंगों से छः डालियां निकलती थीं दीअट की एक अलंग से तीन डालियां और दीअट की दूसरी अलंग से तीन डालियां॥ १९। तीन कटोरियां बदाम की नाईं हर एक डाली में थीं और कली और फूल उसी छओ डालियों में जो दीअट से निकलती थीं॥ २०। और दीअट में चार कटोरियां बदाम की नाईं बनी हुई थीं उस की कलियां और फूल॥ २१। और उस की दो दो डालियों के नीचे एक एक कली थी छः डालियों के समान जो उस्से निकलती थीं॥ २२। कलियां और डालियां उन की उसी से थीं ये सब के सब निर्म्मल सोने से गढ़े हुए थे॥ २३। और उस के लिये सात दीपक और उस के फूल की कतरनियां और उस के पात्र निर्म्मल सोने से बनाये॥ २४। और उस ने उस के समस्त पात्रों को एक तोड़ा निर्म्मल सोने का बनाया॥ २५। और धूप बेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया जिस की लंबाई एक हाथ और चैाड़ाई एक हाथ चैाकोर बनाया और उस की ऊंचाई दो हाथ और उस के सींग उसी से थे॥ २६। और उस का ढपना और उस की चारों ओर की अलंग और उस के सींग निर्म्मल सोने से मढ़े और उस के लिये सोने के चारों ओर कलस बनाये॥ २७। और उस ने उस के कलस के नीचे के लिये उस के दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंगों पर जिसतें उस के उठाने के बहंगर के स्थान होवें सोने के दो कड़े बनाये॥ २८। और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया और उन्हें सोने से मढ़ा।

२९। और अभिषेक का पवित्र तेल और गंधी के कार्य के समान सुगंध द्रब्य से चोखी धूप बनाई।

३८ अठतीसवां पर्ब्ब॥

और उसने यज्ञबेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की लंबाई पांच हाथ और चैाड़ाई पांच हाथ चैाखूंटी और उस की ऊंचाई तीन हाथ॥ २। और उस के चारों कोनों पर सींग बनाये उस के सींग उस में से थे और उस ने उन्हें पीतल से मढ़ा॥ ३। और उस ने

यज्ञबेदी के समस्त पात्र बटलोही और फावड़ियां और कटोरे और मांस के कांटे और अंगेठियां उस के समस्त पात्र पीतल से बनाये॥ ४। और उस ने बेदी के नीचे के लिये पीतल की एक झंझरी बनाई॥ ५। और उस ने पीतल की झंझरी के चारों कोनों के लिये बहंगर के स्थान पर चार कड़े बनाये॥ ६। और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया और उन्हें पीतल से मढ़ा॥ ७। और उस ने बहंगरों को बेदी के उठाने के लिये अलंगों के कड़ों में डाला उस ने बेदी को पटियों से पोला बनाया॥ ८। और उस ने स्नान पात्र और उस की चौकी पीतल से बनाई उन स्त्रियों के दर्पण से जो मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी होती थीं॥ ९। और उस ने आंगन बनाया उस के दक्षिण दिशा के दक्षिण ओर झीने बटे हुए सूती वस्त्र से ओट सौ हाथ की बनाई॥ १०। उन के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए और खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की॥ ११। और उत्तर दिशा के लिये सौ हाथ उन के बीस खंभे उन के पीतल के बीस पाए खंभों के आंकड़े और सामी चांदी की॥ १२। और पश्चिम की ओर पचास हाथ की ओट और उन के दस खंभे और उन के दस पाए और खंभों के आंकड़े और सामी उन की चांदी की॥ १३। और पूर्व दिशा की पूर्व ओर के लिये पचास हाथ॥ १४। ओट पंदरह हाथ की आंगन पर उन के खंभे तीन और उन के पाए तीन॥ १५। और आंगन के द्वार की दूसरी अलंग के लिये इधर उधर पंदरह हाथ की ओट उन के तीन खंभे और उन के तीन पाए॥ १६। आंगन की चारों ओर की समस्त ओट बटे हुए झीने सूती वस्त्र की थी॥ १७। और खंभों के पाए पीतल के और खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की और उन के माथे चांदी से मढ़े हुए और आंगन के सब खंभे चांदी के शलाके के थे॥ १८। और आंगन के द्वार की ओट बूटा कढ़े हुए नीले और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने सूती वस्त्र की थी उस की लंबाई बीस हाथ और चौड़ाई पांच हाथ आंगन की ओट से मिलती थी॥ १९। और उन के चार खंभे और उन के चार पाए पीतलके उन के आंकड़े चांदी के और उन के माथे और सामी चांदी से मढ़े हुए थे॥ २०। और

तंबू की ओर आंगन की चारों ओर के सब खूंटे पीतल के॥ २१। हारून याजक के पुत्र ईतमर के हाथ से लावियों की सेवा के लिये मूसा की आज्ञा के समान साक्षी के तंबू का लेखा यह है॥ २२। यहूदा के कुल से हूर के नाती ऊरी के बेटे बजिलिएल ने सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी बनाया॥ २३। और उस के साथ दान के कुल का अखिसमक का बेटा अहलिअब था जो खोदने के और हथौटी के कार्य में और नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ने में और झीने वस्त्र में॥ २४। समस्त सोना जो जो पवित्र कार्यों में उठा था अर्थात् भेंट का सोना सो उंतीस तोड़े और सात सो तीस शेकल शरण स्थान के शेकल से था॥ २५। और मंडली की गिनती में की चांदी एक सो तोड़े और एक सहस्र सात सो पछहत्तर शेकल शरण स्थान के शेकल के समान था॥ २६। हर मनुष्य के लिये एक बीका अर्थात् आधा शेकल शरण स्थान के शेकल के समान हर एक के लिये बीस बरस से और ऊपर जिस की गिनती ऊई छः लाख तीन सहस्र साढ़े पांच सो थे॥ २७। और चांदी के सो तोड़े से शरण स्थान के पाए और घूंघट के पाए ढाले गये सो तोड़े के सो पाए एक तोड़े का एक पाया॥ २८। और एक सहस्र सात सो पछहत्तर शेकल से उस ने खंभों के आंकड़े बनाये और उन के माथे मढ़े और उन में सामी लगाईं॥ २९। और भेंट का पीतल जो सत्तर तोड़े और दो सहस्र चार सो शेकल थे॥ ३०। और उस ने उस्से मंडली के तंबू के द्वार के लिये पाए और पीतल की यज्ञबेदी और उस की पीतल की झंझरी और बेदी के समस्त पात्र बनाये॥ ३१। और आंगन की चारों ओर के पाए और आंगन के द्वार के पाए और तंबू के सब खूंटे और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे।

३९ उंतालीसवां पर्ब्ब॥

और नीले और बैंजनी और लाल से उन्हों ने पवित्र सेवा के लिये सेवा के कपड़े बनाये और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी हारून के लिये पवित्र वस्त्र बनाये॥ २। और उस ने एफोद को सोने और नीले और बैंजनी और लाल और झीने बटे ऊए सूत से बनाया॥

३। और उन्हों ने सोने के पतीले पतीले पत्तर गढ़े और तार खींचे जिसतें उन्हें नीले में और बैंजनी में और लाल में और झीने सूती बस्त्र के साथ चित्रकारी की क्रिया से बनावें॥ ४। और उस के लिये कंधो के टुकड़े बनाये कि जोड़े वुह दोनों खूंट से जोड़ा ज़ुआ था॥ ५। और उस के एफोद का पटुका जो उस के कार्य के समान सोने का और नीले और बैंजनी और लाल और बटे ज़ुए झीने सूत से जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उसी में से था॥ ६। और वे बैदूर्य मणि को और उन्हें सोने के ठिकानों में जड़ा और उन में इसराएल के सतानों के नाम खोदे जैसा कि अंगूठी खोदी जाती है॥ ७। कि मणि इसराएल के संतानों के स्मरण के लिये उन्हें एफोद के कंधों में रक्खा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ ८। और चपरास को हथैाटी के कार्य से एफोद की नाईं सोने और नीले और बैंजनी और लाल और बटे ज़ुए झीने सूती बस्त्र से बनाया॥ ९। वुह चैाकार था उन्हों ने चपरास को दोहरा बनाया उस की लंबाई और चैाड़ाई बित्ता भरकी दोहरी थी॥ १०। और उन्हों ने उस में मणि की चार पांती जड़ीं पहिली पांती में माणिक्य और पद्मराग और लालड़ी॥ ११। दूसरी पांती में एक पन्ना एक नीलम एक हीरा॥ १२। तीसरी पांती में एक लशम एक सूर्यकांत और एक नीलमणि॥ १३। चैाथी पांती में एक बैदूर्य और एक फीरोजा चंद्रकांत सोने के घरों में जड़े ज़ुए थे॥ १४। इन मणिन में इसराएल के संतानों के नाम के समान बारहों के नाम के समान बारह भेद के समान हर एक का नाम खोदा ज़ुआ था जैसी अंगूठी खोदी जाती है॥ १५। और चपरास की कोरों में निर्मल सोने की गुथी ज़ुई सीकरें बनाईं॥ १६। और उन्हों ने सोने के दो घर और सोने के दो कड़े बनाये और दोनों कड़ों को चपरास के दोनों कड़ों में लगाया॥ १७। और उन्हों ने गुथी ज़ुई सोने की दो सीकरें चपरास की कोरों के दोनों कड़ों में लटकाईं॥ १८। और गुंथी ज़ुई दो सीकरों के दोनों खूंट को उन्हों ने दोनों घरों में दृढ़ किया और उन्हें एफोद के दोनों पुट्ठों के टुकड़ों के आगे लगाया॥ १९। और उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें चपरास की दो कोरों में लगाया उस खूंट पर जो एफोद के भीतर की ओर था॥ २०। और उन्हों

ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें एफोद के नीचे की दो अलंग में उस के आगे की ओर उस के जोड़ के सन्मुख एफोद के पटुके के ऊपर लगाये॥ २१। जिसतें वुह एफोद के पटुके के ऊपर होवे और जिसतें एफोद से चपरास खुल न जाय जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने चपरास को उस के कड़ों से एफोद के कड़ों में नीले गोटों से बांधा॥ २२। और उस ने एफोद के वस्त्र को बिना बटे नीले कार्य से बनाया॥ २३। और उसी वस्त्र के मध्य में एक छेद हो और उस छेद की चारों ओर और उस के घेरे के घर में बिने हुए कार्य के गोटे हों जैसा कि झिलम का मुंह होता है जिसतें फटने न पावे॥ २४। और उन्हों ने उस वस्त्र के खूंट के घेरे में नीले और बैंजनी और लाल रंग और बटे हुए सूत के अनार बनाये॥ २५। और उन्हों ने चोखे सोने की घंटियां बनाईं और घंटियों को उस वस्त्र के अनार के मध्य में लगाया अनार के मध्य में चारों ओर लगाया २६। घंटी और अनार घंटी और अनार बागे के अंचल की चारों ओर सेवा के लिये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ २७। और झीने सूत की कुरतियां हारून और उस के बेटों के लिये बिने हुए कार्य से बनीं॥ २८। झीने सूती पगड़ी और मुकुट और बटे हुए झीने सूती सुथना॥ २९। और बटे हुए झीने सूती वस्त्र का पटुका और नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ा हुआ जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी बनाया॥ ३०। और पवित्र मुकुट के पत्र को निर्मल सोने से बनाया और उस में खोदी हुई अंगूठी की नाईं यह खोदा परमेश्वर के लिये पवित्रता॥ ३१। और उस में एक नीला गोटा बांधा जिसतें मुकुट के ऊपर हो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ ३२। इस रीति से मंडली के तंबू का कार्य बन गया और इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही किया॥ ३३। और वे तंबू को और उस की समस्त सामग्री को और उस की घुण्डियों को उस की पटिया और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस के पाए मूसा के पास लाये॥ ३४। रंगे हुए लाल चमड़े का घटाटोप और तखसों के चमड़े का घटाटोप और घटाटोप का घूंघट॥ ३५। साक्षी की मंजूषा और उस के बहंगर और दया का आसन॥

३६। मंच और उस के समस्त पात्र और भेंट की रोटी॥ ३७। पवित्र दीअट उस के दीपक समेत और दीपक जो बिधि से रक्खे जायें और उस के समस्त पात्र और जलाने का तेल॥ ३८। और सोने की बेदी और अभिषेक का तेल और सुगंध धूप और तंबू के द्वार की ओट॥ ३९। पीतल की बेदी और उस की पीतल की झंझरी और उस के बहंगर और उस के समस्त पात्र स्नान पात्र और उस की चौकी॥ ४०। आंगन की ओट उस के खंभे उस के पाए और आंगन के द्वार की ओट उस की रस्सियां और खूंटे और मंडली के तंबू के लिये तंबू की सेवा के समस्त पात्र॥ ४१। पवित्र स्थान में सेवा के लिये सेवा के बस्त्र और हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र और उस के बेटों के बस्त्र कि याजक के पद में सेवा करें॥ ४२। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसे ही इसराएल के संतानों ने सब काम किये॥ ४३। और मूसा ने सब काम को देखा और देखो कि जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसाही उन्हों ने किया तब उस ने उन्हें आशीष दिई॥

४० चालीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि पहिले मास के पहिले दिन तंबू को जो मंडली का तंबू है खड़ा कर॥ ३। और उस में साक्षी की मंजूषा रख और मंजूषा पर घूंघट डाल॥ ४। और मंच को भीतर ले जा और उस पर की वस्तु उस पर बिधि से रख फिर दीअट भीतर ले जा और उस के दीपक बार॥ ५। और धूप के लिये सोने की बेदी को साक्षी की मंजूषा के आगे रख और तंबू के द्वार पर ओट रख॥ ६। और यज्ञबेदी को तंबू के द्वार के आगे रख मंडली के तंबू के आगे॥ ७। फिर स्नान पात्र मंडली के तंबू और बेदी के बीच में रख और उस में पानी डाल॥ ८। फिर आंगन की चारों ओर खड़ा कर और ओट को आंगन के द्वार पर टांग॥ ९। फिर अभिषेक का तेल ले और तंबू को और सब जो उस में है अभिषेक कर और उसे पवित्र कर और उसे और उस के समस्त पात्र को और वुह पवित्र किया जायगा॥ १०। और बेदी को और उस के समस्त पात्र को अभिषेक कर और बेदी को पवित्र

कर तब बेदी अति पवित्र होगी ॥ ११। और स्नान पात्र और उस की चौकी को भी अभिषेक कर और उसे पवित्र कर ॥ १२। और हारून और उस के बेटों को मंडली के तंबू के द्वार के समीप ला और उन को पानी से नहला ॥ १३। और हारून को पवित्र वस्त्र पहिना और उसे अभिषेक कर और उसे पवित्र ठहरा जिसतें वुह मेरे लिये याजक के पद में सेवा करे ॥ १४। और उस के बेटों को समीप ला और उन्हें कुरतियां पहिना ॥ १५। और उन्हें अभिषेक कर जैसे उन के पिता को अभिषेक किया जिसतें वे मेरे लिये याजक होवें क्योंकि उन के अभिषेक का होना निश्चय सनातन की याजकता उन की समस्त पीढ़ियों में होगी ॥ १६। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसाही किया ॥

१७। और दूसरे बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में तंबू खड़ा हो गया ॥ १८। और मूसा ने तंबू को खड़ा किया और उस के पाए दृढ़ किये और उस के पाट खड़े किये और उस के अड़ंगे प्रवेश किये और उस के खंभे खड़े किये ॥ १९। और उस ने तंबू को तंबू पर फैलाया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने तंबू के घटाटोप को उस के ऊपर रक्खा ॥

२०। उस ने साक्षी को मंजूषा में रक्खा और बहंगर को मंजूषा के ऊपर रक्खा और दया के आसन को मंजूषा के ऊपर रक्खा ॥ २१। और वुह मंजूषा को तंबू के भीतर लाया और घूंघट टांग दिये और साक्षी की मंजूषा को ढांप दिया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥ २२। और घूंघट के बाहर तंबू की उत्तर अलंग उस ने मंडली के तंबू में मंच को रक्खा ॥ २३। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसाही उस ने रोटी को बिधि से उस पर परमेश्वर के आगे रक्खा ॥ २४। फिर उस ने दीअट को मंडली के तंबू में मंच के सन्मुख तंबू की दक्षिण अलंग रक्खा ॥ २५। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने परमेश्वर के आगे दीपक को बारा ॥ २६। और उस ने सोने की बेदी को मंडली के तंबू में घूंघट के आगे रक्खा ॥ २७। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस

पर सुगंध धूप जलाया॥ २८। फिर तंबू के द्वार पर ओट को टांगा॥ २९। और यज्ञबेदी को तंबू के द्वार पर मंडली के तंबू के पास खड़ा किया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस पर होम की भेंट और मांस की भेंट चढ़ाई॥ ३०। और उस ने स्नान पात्र को मंडली के तंबू के और यज्ञबेदी के मध्य में रक्खा और नहाने के लिये उस में पानी डाला॥ ३१। तब उस्से मूसा और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ पांव धोये॥ ३२। जब वे मंडली के तंबू में प्रवेश करते और यज्ञबेदी के पास आते जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी नहाते॥ ३३। फिर उस ने तंबू की और बेदी की चारों ओर आंगन पर और आंगन के द्वार पर ओट टांगी सो मूसा ने सब कार्य्य पूरा किया॥ ३४। तब मेघ ने मंडली के तंबू को ढांपा और तंबू में परमेश्वर का तेज भर गया॥ ३५। और मूसा मंडली के तंबू में प्रवेश न कर सका इस लिये कि मेघ उस पर ठहरा था और तंबू परमेश्वर के तेज से भरा था॥ ३६। और जब मेघ तंबू पर से ऊपर उठाया जाता था तब इसराएल के संतान अपनी समस्त यात्रा में बढ़ जाते थे॥ ३७। परंतु जब मेघ ऊपर उठाया न जाता था तब वे यात्रा न करते थे॥ ३८। क्योंकि दिन को परमेश्वर का मेघ और रात को आग तंबू पर इसराएल के सारे घरानों की दृष्टि में उन की समस्त यात्रों में ठहरता था॥
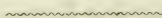
मूसा की तीसरी पुस्तक जो लैव्यव्यवस्था कहावती है।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मंडली के तंबू में से यह वचन उसे कहा॥ २। कि इसराएल के संतानों से बोल और उन्हें कह कि यदि कोई तुम्में से परमेश्वर के लिये भेंट लावे तो तुम ढोर में से अर्थात् गाय बैल और भेड़ बकरी में से अपनी भेंट लाओ॥ ३। यदि उस की भेंट गाय बैल में से होम का बलिदान होवे तो निष्खोट नर होवे वुह मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे अपनी प्रसन्नता के लिये लावे॥ ४। और वुह होम की भेंट के सिर पर अपना हाथ रक्खे और वुह उस के प्रायश्चित्त के लिये ग्रहण किया जायगा॥ ५। और वुह उस बैल को परमेश्वर के आगे बलि करे और हारून के बेटे याजक लोहू को निकट लावें और उस लोहू को बेदी के चारों ओर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है छिड़कें॥ ६। तब वुह उस होम के बलिदान की खाल निकाले और उसे टुकड़ा टुकड़ा करे॥ ७। फिर हारून के बेटे याजक बेदी पर आग रक्खें और उस पर लकड़ी चुनें॥ ८। और हारून के बेटे याजक उस के टुकड़ों को और सिर और चिकनाई को उन लकड़ियों पर जो बेदी की आग पर हैं विधि से धरें॥ ९। परंतु उस का ओझ और पगों को पानी से धोवे और याजक सभों को बेदी पर जलावे जिसतें होम का बलिदान होवे जो आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट किया गया॥ १०। और यदि उस की भेंट झुंड में से अर्थात् भेड़ बकरी में से होम के बलिदान के

लिये होवे तो वुह निष्खोट नरूख लावे॥ ११। श्रीर उसे परमेश्वर के आगे बेदी की उत्तर दिशा में बलि करे श्रीर हारून के बेटे याजक उस के लोहू को बेदी पर चारों श्रीर छिड़कें॥ १२। फिर वुह उस के टुकड़ों श्रीर सिर श्रीर चिकनाई को अलग अलग करे श्रीर याजक उन्हें उन लकड़ियों पर जो बेदी की आग पर हैं चुने॥ १३। परंतु श्रोझ श्रीर पगों को पानी में धोवे श्रीर याजक सभों को लेके बेदी पर जलावे यह होम का बलिदान जो परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट किया गया॥ १४। श्रीर यदि उस के होम का बलिदान परमेश्वर की भेंट के लिये पक्षियों में से होवे तो वुह पिण्डुकी अथवा कपोत के बच्चों में से भेंट लावे॥ १५। श्रीर याजक उसे बेदी पर लाके उस का सिर मरोड़ डाले श्रीर उसे बेदी पर जला दे श्रीर उस के लोहू को बेदी की अलंग पर निचोड़े॥ १६। श्रीर उस के झोझ को पर सहित निकाल के बेदी की पूर्व अलंग राख के स्थान में फेंक दे॥ १७। श्रीर वुह उसे उस के डैनों सहित काटे परंतु अलग न कर डाले तब याजक बेदी की आग पर की लकड़ियों पर उसे जलावे यह होम का बलिदान जो परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से भेंट किया गया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

श्रीर जब कोई भोजन की भेंट परमेश्वर के लिये लावे तो उस की भेंट चोखा पिसान हो श्रीर वुह उस पर तेल डाल के उस के ऊपर गंधरस रक्खे॥ २। श्रीर वुह उसे हारून के बेटों के पास जो याजक हैं लावे श्रीर वुह उस पिसान में से श्रीर तेल में से श्रीर समस्त गंधरस सहित मुट्ठी भर लेवे श्रीर याजक उस के स्मरण को बेदी पर जलावे यह आनंद का सुगंध परमेश्वर की भेंट के लिये है॥ ३। श्रीर भोजन की भेंट का उबरा हुआ हारून श्रीर उस के बेटों का होगा यह होम की भेंट में से परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है॥ ४। यदि तुम्हारी भेंट भोजन की भेंट भट्ठी में की पक्की हुई होवे तो अखमीरी पिसान अथवा अखमीरी चपातियां तेल से चुपड़ी हुई होवें॥ ५। श्रीर यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट तवे की होवे अखमीरी तेल से मिली हुई चोखे

पिसान की होवे॥ ६। उसे टुकड़ा टुकड़ा करना ओर उस पर तेल डालना यह भोजन की भेंट है॥ ७। ओर यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट कराही में की होवे ते चोखा पिसान तेल सहित बने॥ ८। ओर तू भोजन की भेंट को जो परमेश्वर के लिये इन बस्तुन से बनी है ला ओर याजक के आगे धर दे ओर वुह उसे यज्ञबेदी के आगे लावे॥ ९। ओर याजक उस भोजन की भेंट में से उस के स्मरण के लिये कुछ लेवे ओर बेदी पर जलावे यह परमेश्वर के लिये सुगंध की भेंट आग से बनी है॥ १०। ओर जो कुछ भोजन की भेंट में से बच रहा है सो हारून ओर हारून के बेटों का है यह भेंट अत्यंत पवित्र परमेश्वर के लिये आग से बनी है॥ ११। कोई भोजन की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये लाओ खमीर से न बने क्योंकि खमीर ओर नई मधु परमेश्वर के लिये किसी भेंट में न जलाया जावे॥ १२। पहिले फलों की भेंट जो है तुम उन्हें परमेश्वर के आगे लाओ परंतु सुगंध के लिये बेदी पर जलाई न जावे॥ १३। ओर तू अपने भोजन की हर एक भेंट को नोन से लोनी कीजियो ओर तेरे भोजन की भेंट अपने ईश्वर के नियम के नोन से रहित न होने पावे अपनी समस्त भेंटों में नोन की भेंट लाइयो॥ १४। ओर यदि तू पहिले फलों से परमेश्वर के लिये भोजन की भेंट लावे तो अपने पहिले फलों के भोजन की भेंट अन्न की हरी बालें भुनी ऊई अर्थात् भरी बालों में से अन्न पीटा ऊआ॥ १५। उस पर तेल डालियो ओर गंधरस ऊपर रखियो यह भोजन की भेंट है॥ १६। ओर पीटे ऊए अन्न में से ओर उस के तेल में से ओर उस के समस्त गंधरस सहित याजक जलावे यह आग से परमेश्वर के लिये भेंट है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

ओर यदि उस की भेंट कुशल का बलिदान होवे ओर वुह गाय बैल में से लावे चाहे नर अथवा स्त्री वर्ग होवे परमेश्वर के आगे निष्खोट लावे॥ २। ओर वुह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे ओर मंडली के तंबू के द्वार पर उसे बलि करे ओर हारून के बेटे जो याजक हैं उस के लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें॥ ३। ओर वुह कुशल

की भेंट के बलिदान में से परमेश्वर के लिये आग की भेंट लावे चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है॥ ४। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे॥ ५। और हारून के बेटे उन्हें बेदी के ऊपर होम के बलिदान पर आग की लकड़ियों पर जलावें यह परमेश्वर के लिये सुगंध जो आग से भेंट किया गया॥ ६। और यदि उस की भेंट कुशल की भेंट का बलिदान परमेश्वर के लिये भेड़ बकरी से नरख अथवा स्त्री वर्ग से होवे तो वह उसे निष्खोट चढ़ावे॥ ७। और यदि वुह अपनी भेंट के लिये मेम्ना लावे वुह उसे परमेश्वर के आगे भेंट देवे॥ ८। और वुह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उस के लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें॥ ९। और वुह कुशल के बलिदान में से कुछ होम का बलिदान परमेश्वर के लिये लावे उस की चिकनाई और समस्त पूंछ रीढ़ से अलग करके और चिकनाई जो ओझों को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझों पर है॥ १०। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे॥ ११। याजक उसे बेदी पर जलावे यह भेंट का भोजन आग से बना हुआ परमेश्वर के लिये है॥ १२। और यदि उस का बलिदान बकरी होय तो परमेश्वर के आगे लावे॥ १३। वुह अपना हाथ उस के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उस के लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें॥ १४। तब वुह उस में से अपनी भेंट लावे जो भेंट परमेश्वर के लिये होम से बने चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है॥ १५। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे॥ १६। और याजक उन्हें बेदी पर जलावे वुह भेंट का भोजन आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये बना है सारी चिकनाई परमेश्वर की॥ १७। यह तुम्हारी बस्तियों में तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सनातन की बिधि है जिसतें तुम कुछ चिकनाई और लोहू न खाओ॥

४ चैाथा पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कह कि यदि कोई प्राणी परमेश्वर की आज्ञाओं के बिरोध में अज्ञानता से पाप करे जिस का होना अनुचित था। ३॥ यदि वुह अभिषेक किया हुआ याजक लोगों के पाप के समान पाप करे तो वुह अपने पाप के कारण जो उस ने किया है अपने पाप की भेंट के लिये निष्खोट एक बछिया परमेश्वर के लिये लावे॥ ४। और वुह उस बछिया को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे लावे और बछिया के सिर पर अपना हाथ रक्खे और बछिया को परमेश्वर के आगे बलि करे॥ ५। और वुह याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछिया के लोहू से कुछ लेवे और मंडली के तंबू में लावे॥ ६। और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबो के परमेश्वर के आगे पवित्र स्थान के घूंघट के साम्ने उस लोहू से सात बार छिड़के॥ ७। और याजक लोहू से सुगंध बेदी के सींगों पर जो मंडली के तंबू में है परमेश्वर के आगे लगावे और उस बछिया के उबरे हुए लोहू को होम की भेंट की बेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है ढाले॥ ८। और सारी चिकनाई को पाप की भेंट के बछड़े से अलग करे और जो चिकनाई ओझ को ढांपती है और सब चिकनाई जो ओझ पर है॥ ९। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे॥ १०। जिस रीति से कुशल के बलिदान की भेंट के बछड़े से अलग किया जाता है और याजक उन्हें होम की भेंट की बेदी पर जलावे॥ ११। और उस बछड़े की खाल और उस का समस्त मांस और उस के सिर पांव समेत और उस के ओझ और उस का गोबर॥ १२। अर्थात् समस्त बछड़ा तंबू के बाहर निर्मल स्थान में जहां राख डाली जाती है ले जावे और उसे लकड़ियों पर आग से जलावे राख डाल ने के स्थान पर जलाया जावे॥ १३। और यदि इसराएल के संतानों की सारी मंडली अज्ञानता से ऐसा पाप करे जो मंडली की दृष्टि से छिप जावे और वे परमेश्वर की आज्ञाओं में से ऐसा

कुछ करें जो विपरीत है और अपराधी हो जायें॥ १४। तो जब वुह पाप जो उन्हों ने किया जाना जावे तब मंडली एक बछड़ा पाप के बलिदान के लिये लेवे और मंडली के तंबू के साम्ने लावे॥ १५। और मंडली के प्राचीन अपने हाथ परमेश्वर के आगे उस बछड़े के सिर पर रक्खें और बछड़ा परमेश्वर के आगे बलि किया जावे॥ १६। और याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछड़े के लोहू में से मंडली के तंबू में लावे॥ १७। और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबो के परमेश्वर के आगे घूंघट के साम्ने सात बार छिड़के॥ १८। और लोहू से बेदी के सींगों पर जो परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू में है लगावे और उबरा हुआ लोहू होम की भेंट की बेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है ढाल दे॥ १९। और उस की सारी चिकनाई निकाल के बेदी पर जलावे॥ २०। और जैसे अपराध के बलिदान के बछड़े से किया था वैसाही इस बछड़े से करे और याजक उन के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह उन के लिये क्षमा किया जायगा॥ २१। और उस बछड़े को छावनी से बाहर ले जाय और जैसा उस ने पहिली बछिया को जलाया था वैसा इसे भी जलावे यह मंडली के लिये पाप की भेंट है॥ २२। जब कोई अध्यक्ष पाप करे और अज्ञानता से अपने परमेश्वर की किसी आज्ञा में से कोई ऐसा कार्य करे जो उचित न था और अपराधी होवे॥ २३। अथवा यदि उस का पाप जिसे उस ने किया जाना जावे तब वुह बकरी का निष्खोट नर मेम्ना अपनी भेंट के लिये लावे॥ २४। और अपना हाथ उस बकरे के सिर पर रक्खे और उसे उस स्थान में जहां होम की भेंट बलि होती है परमेश्वर के आगे बलि करे यह पाप की भेंट है॥ २५। और याजक पाप की भेंट के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेके भेंट के बलिदान के सींगों पर लगावे और उस का लोहू होम की भेंट की बेदी की जड़ पर ढाले॥ २६। और उस की सब चिकनाई कुशल की भेंट के बलिदान की बेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के कारण प्रायश्चित्त करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा॥ २७। और यदि उस देश के लोगों में से अज्ञानता से कोई पाप करे और परमेश्वर की आज्ञा के

बिरुद्ध अनुचित करे और दोषी होवे॥ २८। अथवा यदि उस का पाप जो उस ने किया है उसे जान पड़े तब वुह अपने पाप के लिये जो उस ने किया है अपनी भेंट के लिये एक स्त्री बर्ग निष्खोट बकरी का एक मेम्ना लावे॥ २९। और अपना हाथ पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और पाप की भेंट को भेंट के बलिदान के स्थान में बलि करे॥ ३०। और याजक उस के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेवे और जलाने की भेंट की बेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू बेदी की जड़ पर ढाले॥ ३१। और उस की सब चिकनाई जिस रीति से कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक उसे परमेश्वर के सुगंध के लिये बेदी पर जलावे और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह उस के लिये क्षमा किया जायगा॥ ३२। और यदि वुह अपने पाप की भेंट के लिये मेम्ना लावे तो वुह एक स्त्री बर्ग निष्खोट लावे॥ ३३। और वुह अपना हाथ अपने पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और उसे जहां जलाने की भेंट बलि किई जाती है वहां पाप के लिये बलिदान करे॥ ३४। और याजक पाप की भेंट के लोहू से अपनी अंगुली पर लेके होम की भेंट की बेदी के सींगों पर लगावे और उस का समस्त लोहू बेदी की जड़ पर ढाले॥ ३५। और उस की समस्त चिकनाई जिस रीति से कि कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई उस मेम्ना से अलग किई जाती है अलग करे और याजक उन्हें परमेश्वर की आग की भेंट के समान बेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के लिये जो उस ने किया है यह प्रायश्चित्त करे और वुह उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

५ पांचवां पर्ब्ब।

यदि कोई प्राणी पाप करे और किरिया का शब्द सुने और साक्षी होवे चाहे देखा अथवा जाना हो यदि वुह न बतावे तो वुह दोषी होगा॥ २। अथवा यदि कोई प्राणी कोई अपवित्र बस्तु छूये चाहे अपवित्र पशु की लोथ अथवा अपवित्र ढोर की लोथ अथवा अपवित्र रेंगवैया जंतु की लोथ छूये और उस्से अज्ञान होवे तो वुह अपवित्र और

दोषी होगा॥ ३। अथवा यदि वुह मनुष्य की अपवित्रता को छूये हो जिस्से मनुष्य अशुद्ध होता है जब उसे जान पड़े तब वुह दोषी होगा॥ ४। अथवा यदि कोई प्राणी मुंह से बुरा अथवा भला करने को उच्चारे अथवा किरिया खाय और जो कुछ वुह किरिया खाके उच्चारण करे और वुह उस्से गुप्त हो जब उसे जान पड़े तब एक इन में से दोषी होगा॥ ५। और यों होगा कि जब वुह उन में से एक बात का दोषी होवे तो वुह मान लेवे कि मैं ने यह पाप किया है॥ ६। तब वुह अपने अपराध की भेंट अपने पाप के लिये जो उस ने किया है झुंड में से स्त्री वर्ग एक भेड़ अथवा बकरी में से एक मेम्ना अपने अपराध की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे लावे और याजक उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ७। और यदि उसे भेड़ लाने की पूंजी न हो तो वुह अपने किये हुए अपराध के लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे परमेश्वर के लिये लावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरा होम की भेंट के लिये॥ ८। फिर वुह उन्हें याजक पास लावे और वुह पहिले पाप की भेंट चढ़ावे और उस का सिर गले के पास से मरोड़ डाले परंतु अलग न करे॥ ९। और पाप की भेंट के लोहू को बेदी के अलंग पर छिड़के और उबरा हुआ लोहू बेदी की जड़ पर निचोड़े यह पाप की भेंट है॥ १०। और दूसरे को व्यवहार के समान होम की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के किये हुए अपराध का प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा॥

११। पर यदि उसे दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लाने की पूंजी न हो तो वुह अपने पाप की भेंट के लिये सेर भर चोखा पिसान पाप की भेंट के लिये लावे उस पर तेल न डाले न गंधरस रक्खे यह पाप की भेंट है॥ १२॥ तब वुह उसे याजक पास लावे और याजक उस में से स्मरण के लिये अपनी मुट्ठी भर के उस भेंट के समान जो परमेश्वर के लिये आग से होती है बेदी पर जलावे यह पाप की भेंट है॥ १३। और याजक उस पाप के कारण जो उस ने किया इन बातों में से प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा और भोजन की भेंट के समान याजक का होगा॥ १४। फिर परमेश्वर मूसा से बोला॥ १५। कि यदि कोई प्राणी अपराध करे और परमेश्वर की पवित्र बस्तुन में से अज्ञानता से

पाप करे तो वुह अपने अपराध के लिये झुंड में से एक निष्खोट मेढ़ा पवित्र स्थान के शेकल के समान चांदी के शेकल तेरे मोल के ठहराने के समान अपराध की भेंट के लिये ईश्वर के आगे लावे॥ १६। और वुह उस अपराध के कारण जो उस ने पवित्र वस्तु में किया है पलटा देवे और उस में से पांचवां भाग मिलाके याजक को देवे और याजक उस अपराध की भेंट में से उस का प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा॥ १७। और यदि कोई प्राणी पाप करे और वही करे जो परमेश्वर की आज्ञाओं से वर्जित है और यद्यपि वुह नहीं जानता था तथापि वुह अपराधी है वुह अपने पाप को भोगेगा॥ १८। और तेरे ठहराये हुए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये एक निष्खोट मेढ़ा झुंड में से याजक पास लावे और याजक उस की अज्ञानता के कारण जिस में उस ने अंजान की चूक किई और न जाना उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा॥ १९। यह अपराध की भेंट है उस ने निश्चय परमेश्वर के विरुद्ध अपराध किया है॥

६ छठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि यदि कोई प्राणी पाप करे और परमेश्वर के बिरुद्ध में अपराध करे और अपने परोसी की थाती में जो उस पास रक्खी गई थी अथवा साझे में अथवा किसी वस्तु में जो बरबस लिई जाय अथवा अपने परोसी को छल दिया है॥ ३। अथवा कोई वस्तु जो खोई गई थी पावे और उस के विषय में झूठ बोले और झूठी किरिया खाय इन सारी बातों से जो मनुष्य करके पापी होता है॥ ४। सो इस कारण कि उस ने पाप किया है और दोषी है वुह उसे जिसे उस ने बरबस लिया है अथवा जो उस ने छल से पाया है अथवा वुह जो उस पास थाती थी अथवा खोई हुई जो उस ने पाई है फेर देवे॥ ५। अथवा सब जिस के कारण उस ने झूठी किरिया खाई है वुह मूल को भर देवे और पांचवां भाग उस में मिलावे और जिस का आता हो वुह अपने अपराध की भेंट के दिन में उस को फेर देवे॥ ६। और परमेश्वर के लिये वह अपने पाप की भेंट झुंड में से एक निष्खोट

मेढ़ा तेरे ठहराये ऊए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये याजक पास लावे॥ ७। और याजक उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे और उस बात में उस ने जो कोई अपराध किया है उस के लिये क्षमा किया जायगा॥ ८। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ९। कि हारून और उस के बेटों को आज्ञा कर कि यह होम की भेंट की व्यवस्था है होम की भेंट इस लिये है कि बेदी पर रात भर बिहान लों जलाने के कारण है॥ १०। और याजक अपने सूती वस्त्र पहिने और सूती जांघिया से अपना शरीर ढांपे और राख को उठा लेवे जिसे आग ने होम की बेदी पर भस्म किया है और उसे बेदी के पास रक्खे॥ ११। फिर वुह अपने वस्त्र उतारके दूसरे वस्त्र पहिने और उस राख को छावनी के बाहर एक पावन स्थान पर ले जावे॥ १२। और बेदी की आग उस में जलती रहे वुह कभी बुझने न पावे और याजक उस पर लकड़ी हर बिहान जलाया करे और उस पर होम की भेंट चुने और उस पर कुशल की भेंट की चिकनाई जलावे॥ १३। अवश्य है कि आग बेदी पर सदा जलती रहे और बुझने न पावे॥ १४। भोजन की भेंट की व्यवस्था यह है कि उसे हारून के बेटे बेदी के आगे परमेश्वर के लिये चढ़ावें॥ १५। और भोजन की भेंट में से एक मुट्ठी भर पिसान और कुछ तेल में से और सब गंधरस जो उस भोजन की भेंट पर है उठा लेवे और उन्हें स्मरण के कारण परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये बेदी पर जलावे॥ १६। और उस का उबरा ऊआ हारून और उस के बेटे खावें वुह अखमीरी रोटी के साथ पवित्र स्थान में खाया जावे मंडली के तंबू के आंगन में उसे खावे॥ १७। वुह खमीर के साथ न पकाया जावे मैं ने अपनी भेंट से जो आग से बनी है उन के भाग में दिया है जैसी पाप की और अपराध की भेंट अत्यंत पवित्र है वैसी यह भी है॥ १८। हारून के संतान में से पुरुष उसे खावे यह परमेश्वर की भेंट के विषय में जो आग से बनी है तुम्हारी सदा की पीढ़ियों में यह अत्यंत पवित्र है॥

१९। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २०। कि हारून और उस के बेटे की भेंट जिसे वे अपने अभिषेक होने के दिन परमेश्वर के आगे भेंट लावें सो यह है ईफा का दसवां भाग चोखा पिसान भोजन की भेंट

उस का आधा बिहान को और उस का आधा सांझ को नित्य हुआ करे॥ २१। और यह तेल से बनके तवे पर पकाया जावे पकी हुई भीतर लाओ भोजन की भेंट पके हुए टुकड़े टुकड़े परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाओ॥ २२। उस के बेटों में का याजक जो उस के स्थान पर अभिषेक हो वुह उसे चढ़ावे यह बिधि परमेश्वर के कारण सदा होवे वुह संपूर्ण जलाया जावे॥ २३। याजक के हर एक भोजन की भेंट सब की सब जलाई जावे सो कभी खाई न जावे॥ २४। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २५। कि हारून और उस के बेटों से कह पाप की भेंट की व्यवस्था यह है कि जिस स्थान में जलाने की भेट बलि किई जाती है वहीं पाप की भेट भी परमेश्वर के आगे बलि किई जाय यह अत्यंत पवित्र है॥ २६। जो याजक पाप के लिये उसे चढ़ावे सो उसे खाय वुह पवित्र स्थान में मंडली के तंबू के आंगन में खाया जावे॥ २७। जो कोई उस के मांस को छूयेगा सो पवित्र होगा और जब उस का लोहू किसी बस्त्र पर छिड़का जाय उसे पवित्र स्थान में धो॥ २८। परंतु जिस मिट्टी के पात्र में वुह सिझाया जावे सो तोड़ा जाय और यदि वुह पीतल के पात्र में सिझाया जावे तब वुह मांजा जाके पानी में खंगारा जाय॥ २९। याजकों में से समस्त पुरुष उसे खावें वुह अत्यंत पवित्र है॥ ३०। और पाप की कोई भेंट जिस का कुछ भी लोहू मंडली के तंबू में मिलाप के कारण लाया जाय सो खाया जायगा आग से जलाया जावे॥

७ सातवां पर्ब्ब ।

और अपराध की भेट की व्यवस्था भी यह है वुह अत्यंत पवित्र है॥ २। जिस स्थान में वे होम की भेट को बलि करें उसी स्थान में अपराध की भेंट को बलि करें और उस के लोहू को बेदी के चारों ओर पर छिड़कें॥ ३। और वुह उस की सारी चिकनाई को चढ़ावे उस की पूंछ और वुह चिकनाई जो ओझ को ढांपती है॥ ४। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजी पर की झिल्ली गुर्दों समेत अलग करे॥ ५। और याजक उन्हें परमेश्वर की आग की भेंट के लिये होम की बेदी पर जलावे यह अपराध की भेंट है॥

६। याजकों में से हर एक पुरुष उस्से खावे वुह पवित्र स्थान में खाई जावे वुह अत्यंत पवित्र है॥ ७। जैसे पाप की भेंट वैसे ही अपराध की भेंट की एक ही व्यवस्था है जो याजक उस्से प्रायश्चित्त करता है उसी की होगी॥ ८। और जो याजक किसी मनुष्य के होम की भेंट चढ़ाता है सो उसी होम की खाल उसी याजक की होगी जिसे उस ने चढ़ाया॥ ९। और समस्त भोजन की भेंट जो भट्ठे में पकाई जावे और सब जो कड़ाही में अथवा तवे पर सो उसी याजक की होगी जो उसे चढ़ाता है॥ १०। और हर एक भोजन की भेंट जो तेल से मिली हुई हो अथवा सूखी हो सो सब हारून के बेटों के लिये समान होगी॥ ११। और कुशल की भेंट के बलिदान जो वुह परमेश्वर के लिये चढ़ावे उस की यह रीति है॥ १२। यदि वुह धन्यबाद के लिये चढ़ावे तो उस के साथ तेल से मिले हुए अखमीरी फुलके और अखमीरी तेल से चुपड़ी हुई और तेल में पकी हुई चोखे पिसान की पूरी धन्यबाद के लिये चढ़ावे॥ १३। और फुलके से अधिक वुह खमीरी रोटी की अपनी भेंट धन्यबाद के बलिदान के और अपनी कुशल की भेंट के साथ लावे॥ १४। और वुह समस्त नैवेद्य में से एक को परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट चढ़ावे और यह उस याजक का होगा जो कुशल की भेंट के लोहू को छिड़कता है॥ १५। और कुशल की भेंट और बलिदान का मांस जो धन्यबाद के लिये है उसे चढ़ाये जाने के दिन में खाया जावे और वुह उस में से बिहान लों कुछ न छोड़े॥ १६। परंतु यदि भेंट का बलिदान मनौती का अथवा उस के बांछित का हो तो वुह चढ़ाने के दिन खाया जाय और उबरे हुये से दूसरे दिन भी खाया जाय॥ १७। परंतु बलिदान का उबरा हुआ मांस तीसरे दिन आग से जला दिया जाय॥ १८। और यदि कुशल के बलिदान के मांस में से कुछ तीसरे दिन खाया जाय तो वुह ग्रहण न किया जायगा न भेंट दायक के लिये लेखा किया जायगा वुह घिनित होगा जो प्राणी उस में से खावे सो अपने पाप को भोगेगा॥ १९। और वुह मांस जो किसी अशुद्ध बस्तु को छूये सो खाया न जायगा परंतु जलाया जावे और मांस जो है सो हर एक जो पवित्र हो सो उस में से खावे॥ २०। परंतु जो अशुद्ध प्राणी

परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान का मांस खावे सोई प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा॥ २१। और अधिक जो प्राणी किसी अशुद्ध वस्तु को छूये चाहे मनुष्य का अथवा पशु का अथवा किसी घिनित वस्तु को छूवे और परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान से मांस खावे वही प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा।

२२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २३। कि इसराएल के संतानों से कह कि बैल और भेड़ और बकरी की कोई चिकनाई न खावे॥ २४। और उस लोथ की चिकनाई जो आप से आप मर गया हो अथवा उस की चिकनाई जो पशुन से फाड़ा गया हो और किसी कार्य में उठाया जाय परंतु उस में से किसी भांति से मत खाइयो॥ २५। क्योंकि जो मनुष्य ऐसे पशु की चिकनाई खावे जिस्से आग के बलिदान परमेश्वर के आगे चढ़ाये जाते हैं सोई प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा॥ २६। और तुम किसी पक्षी का अथवा पशु का किसी भांति का लोहू अपने सब स्थानों में मत खाइयो॥ २७। और जो प्राणी किसी भांति का लोहू खावे सोई प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा॥ २८। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २९। कि इसराएल के संतानों से कह कि जो कोई अपने कुशल के बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो अपने कुशल के बलिदान में से परमेश्वर के आगे नैबेद्य लावे॥ ३०। वुह उस बलिदान को जो परमेश्वर के लिये जलाया जाता है और छाती की चिकनाई को अपने हाथों में लावे जिसतें छाती के हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया जावे॥ ३१। और याजक चिकनाई को बेदी पर जलावे परंतु छाती हारून की और उस के बेटों की होगी॥ ३२। और तुम कुशल की भेंट के बलिदानों से दहिना कांधा याजक को हिलाने की भेंट के लिये दीजियो॥ ३३। हारून के बेटों में से जो कुशल के बलिदान का लोहू और चिकनाई चढ़ाता है सो दहिना कांधा अपने भाग के लिये लेवे॥ ३४। क्योंकि कुशल की भेंटों के बलिदानों में से हिलाने की छाती और उठाने का कांधा मैं ने इसराएल के संतानों से लिया और हारून याजक और उस के बेटों को सनातन की बिधि के

लिये दिया॥ ३५। हारून और उस के बेटों के अभिषेक का जिस दिन में वुह उन्हें आगे धरे कि याजक के पद में परमेश्वर की सेवा करे परमेश्वर के लिये आग की भेंटों में का भाग होगा॥ ३६। उसे परमेश्वर ने इसराएल के संतान को जिस दिन में उस ने उन्हें अभिषेक किया उन्हें देने को आज्ञा किई कि उन की पीढ़ियों में सनातन के लिये विधि होवे॥ ३७। होम की भेंट और भोजन की भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट और स्थापित करने की भेंट और कुशल की भेंट के बलिदान की यह व्यवस्था है॥ ३८। जिस दिन उस ने इसराएल के संतानों को आज्ञा किई थी कि परमेश्वर के आगे सीना के बन में अपना नैवेद्य चढ़ावें जिसे परमेश्वर ने सीना पर्वत पर मूसा को आज्ञा किई थी॥

८ आठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि हारून और उस के साथ उस के बेटों को और वस्त्र को और अभिषेक का तेल और पाप की भेंट का एक बैल और दो मेढ़े और एक टोकरी अखमीरी रोटी ले॥ ३। और तू सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठा कर॥ ४। सो जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने वैसाही किया और सारी मंडली मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी ऊई॥ ५। तब मूसा ने मंडली से कहा कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने पालन करने को आज्ञा किई है॥ ६। फिर मूसा हारून को और उस के बेटों को आगे लाया और उन्हें पानी से नहलाया॥ ७। और उस पर कुरती पहिनाई और उस की कटि में पटुका लपेटा और उसे बागा पहिनाया और उस पर एफोद रक्खा और एफोद के अनोखे पटुके से उस की कटि बांधी और उसे उस पर लपेटा॥ ८। और उस पर चपरास रक्खी और उसी चपरास पर यरीम और तमीम जड़े॥ ९। और उस के सिर पर मुकुट रक्खा और मुकुट पर और ललाट की ओर सोने का पत्तर पवित्र मुकुट पर लगाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ १०। और मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और तंबू को और उस के समस्त पात्रों को अभिषिक्त करके पवित्र किया और उस में से कुछ बेदी पर सात

बार छिड़का और बेदी और उस के सारे पात्र और स्नान पात्र और उस की चौकी को अभिषेक करके शुद्ध किया॥ १२। और अभिषेक के तेल में से हारून के सिर पर ढाला और उस को अभिषेक करके पवित्र किया। १३॥ और मूसा हारून के बेटों को आगे लाया और उन्हें कुरती पहिनाई और उन की कटि पर पटुके बांधे और उन के सिर पर पगड़ी रक्खी जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥ १४। फिर पाप की भेंट के लिये बैल लाया और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ पाप की भेंट के बैल के सिर पर रक्खे॥ १५। और उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू को लिया और अपनी अंगुली से बे ी के सींगों पर चारों ओर लगाया और बेदी को पवित्र किया और लोहू को बेदी की जड़ पर ढाला और उसे पवित्र किया जिसतें उस के लिये प्रायश्चित्त करे॥ १६। और उस ने सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे और उन की चिकनाई लिई और मूसा ने बेदी पर जलाया॥ १७। परंतु बैल को और उस की खाल को और मांस को और गोबर को छावनी के बाहर आग से जलाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥ १८। फिर उस ने होम की भेंट के लिये मेंढ़ा लिया और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खे॥ १९। फिर उसे बलि किया और मूसा ने बेदी के चारों ओर लोहू छिड़का॥ २०। और उस ने मेंढ़े को टुकड़ा टुकड़ा किया और मूसा ने सिर को और टुकड़ों को और चिकनाई को जलाया॥ २१। और उस ने ओझ और पांव पानी से धोया और मूसा ने सारे मेंढ़े को बेदी पर जलाया यह आग की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये होम का बलिदान है जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई।

२२। फिर वुह दूसरा मेंढ़ा अर्थात् स्थापित का मेंढ़ा लाया और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खे॥ २३। और उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू में से लिया और हारून के दाहिने कान की लहर पर और दाहिने हाथ के अंगूठे और दाहिने पांव के अंगूठे पर लगाया॥ २४। फिर वुह हारून के बेटों को लाया

और लोहू में से उन के दहिने कानों की लहर पर और दहिने हाथों के अंगठों पर और दहिने पांव के अंगठों पर मूसा ने लगाया और मूसा ने लोहू को बेदी के चारों ओर छिड़का॥ २५। और चिकनाई और पूंछ और सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे उन की चिकनाई और दहिना कांधा लिया॥ २६। और उस अखमीरी रोटी की टोकरी में से जो परमेश्वर के सन्मुख थी एक अखमीरी फुलका और एक फुलका तेल में चुपड़ा हुआ और एक लिट्टी निकाली और उन्हें चिकनाई पर और दहिने कांधे पर रक्खा॥ २७। और उस ने सब को हारून और उस के बेटों के हाथों पर रक्खा और उन को परमेश्वर के सन्मुख हिलाने की भेंट के लिये हिलाया॥ २८। फिर मूसा ने उन्हें उन के हाथों से लिया और होम की भेंट की बेदी पर जलाया यह स्थापना सुगंध के लिये थी यह परमेश्वर के लिये होम की भेंट है॥ २९। फिर मूसा ने छाती लिई और उसे हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया स्थापित करने के मेंढ़े से मूसा का भाग था जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥ ३०। फिर मूसा ने अभिषेक का तेल और बेदी पर के लोहू में से लिया और हारून पर और उस के बस्त्रों पर और उस के साथ उस के बेटों पर और उन के बस्त्रों पर छिड़का और हारून को और उस के बस्त्रों को और उस के बेटों को और उन के बस्त्रों को पवित्र किया॥ ३१। और मूसा ने हारून से और उस के बेटों से कहा कि मांस को मंडली के तंबू के द्वार पर उसिन और उसे उस स्थान में उस रोटी के साथ जो स्थापित करने की टोकरी में है खाओ जैसे मैं ने यह कहके आज्ञा किई कि हारून और उस के बेटे उसे खावें॥ ३२। और मांस और रोटी में से जो उबरे उसे आग से जलाओ॥ ३३। और तुम मंडली के तंबू के द्वार से सात दिन लों बाहर न जाओ जब लों स्थापित करने के दिन पूरे न होवें क्योंकि वुह तुम्हें सात दिन में स्थापित करेगा॥ ३४। जैसा उस ने आज के दिन किया है परमेश्वर ने आज्ञा किई है कि तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त होवे॥ ३५। इस कारण मंडली के तंबू के द्वार पर सात रात दिन ठहरो और परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करो जिसतें न मरो क्योंकि मुझे योंही आज्ञा है॥ ३६। सो सब कुछ

जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई थी हारून और उस के बेटों ने किया॥

९ नवां पर्ब्ब।

और जब आठवां दिन हुआ तब मूसा ने हारून को और उस के बेटों को और इसराएल के प्राचीनों को बुलाया॥ २। और हारून से कहा कि तू एक बछड़ा पाप की भेंट के लिये और एक निष्खोट मेंढ़ा होम की भेंट के लिये ले और परमेश्वर के आगे चढ़ा॥ ३। और इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि एक बकरी पाप की भेंट के लिये और एक बछड़ा और पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये लेओ॥ ४। और एक बैल और एक मेंढ़ा कुशल की भेंट के लिये लाओ जिसतें परमेश्वर के आगे बलि किये जावें और तेल से मिली हुई भोजन की भेंट क्योंकि आज के दिन परमेश्वर तुम्हों पर प्रगट होगा॥ ५। जैसा कि मूसा ने आज्ञा किई थी वे मंडली के तंबू के आगे लाये और सारी मंडली आगे बढ़के परमेश्वर के आगे खड़ी हुई॥ ६। और मूसा ने कहा कि यह वुह बात है जिस की आज्ञा परमेश्वर ने तुम्हें दिई तुम उसे पालन करो और परमेश्वर की महिमा तुम्हों पर प्रगट होगी॥ ७। और मूसा ने हारून से कहा कि बेदी पास जा और अपने पाप की भेंट और होम की भेंट चढ़ा और अपने और लोगों के लिये प्रायश्चित्त कर और लोगों की भेंट चढ़ा और उन के लिये प्रायश्चित्त कर जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई॥ ८। इस लिये हारून बेदी पर गया और पाप की भेंट का बछड़ा जो अपने लिये था बलि किया॥ ९। और हारून के बेटे उस पास लोहू लाये और उस ने अपनी अंगुली उस में डुबोई और बेदी के सींगों पर लगाया और लोहू को बेदी की जड़ पर ढाला॥ १०। परंतु चिकनाई और गुर्दे और कलेजे पर की झिल्ली अपराध की भेंट से लेके बेदी पर जलाये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥ ११। और मांस और खाल को छावनी के बाहर आग से जलाया॥ १२। और उस ने होम की भेंट को बलि किया और हारून के बेटों ने उसे लोहू दिया जिसे उस ने बेदी के चारों ओर छिड़का॥ १३

फिर उन्हों ने होम की भेंट को उस के टुकड़े और सिर समेत उसे दिये और उस ने बेदी पर जलाये॥ १४। और उस ने ओझ को और पांव को धोया और होम की भेंट पर बेदी के ऊपर बेदी पर जलाया॥

१५। फिर वुह लोगों की भेंट को लाया और लोगों के पाप की भेंट के लिये बकरी को लिया और उसे बलि किया और उसे पहिली के समान पाप के लिये चढ़ाया॥ १६। और उस ने होम की भेंट को लाके उसी रीति के समान चढ़ाया॥ १७। और बिहान के होम के बलिदान से वुह भोजन की भेंट लाया और उस्से एक मुट्ठी भर लिया और बेदी पर जलाया॥ १८। और उस ने बैल और मेंढ़ा लोगों के कुशल की भेंट के बलिदान को बलि किया और हारून बेटे उस के पास लोहू ले आये जिसे उस ने बेदी की चारों ओर छिड़का॥ १९। और बैल की और मेंढ़े की चिकनाई और पूंछ और जो ओझ को ढांपती है और गुर्दे को और कलेजे पर की चिकनाई॥ २०। और उन्हों ने चिकनाई को छातियों पर रक्खा और उस ने चिकनाई को बेदी पर जलाया॥ २१। छातियों को और दहिने कांधे को जैसे परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई हारून ने परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलाया॥ २२। फिर हारून ने मंडली की ओर अपना हाथ उठाया और उन्हें आशीष दिई और पाप की भेंट और होम की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ा के नीचे उतरा॥ २३। फिर मूसा और हारून मंडली के तंबू में गये और बाहर निकल के लोगों को आशीष दिई और सारी मंडली पर परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥ २४। और परमेश्वर के आगे से आग निकली और बेदी पर जलाने की भेंट और चिकनाई को भस्म किया जब सारे लोगों ने देखा वे चिल्ला के औंधे मुंह गिरे॥

१० दसवां पर्ब्ब।

और नदब और अबिहू हारून के बेटों ने अपना अपना धूप पात्र लिया और उस में आग भरके उस पर धूप रक्खा और परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई जिसे परमेश्वर ने उन्हें बरजा था॥ २। तब परमेश्वर की ओर से आग निकली और उन्हें भस्म किया और वे परमेश्वर

के आगे मर गये॥ ३। तब मूसा ने हारून से कहा कि यह वुह है जो परमेश्वर ने कहा था कि जो जो मेरे पास आवे मैं उन से पवित्र किया जाऊंगा और तब मैं सारे लोगों के आगे महिमा पाऊंगा तब हारून चुप हो रहा॥ ४। फिर मूसा ने हारून के चाचा उज्ज़िएल के बेटे मीसाएल और इलज़ाफ़ान को बुलाया और कहा कि पास आओ और अपने भाइयों को पवित्र स्थान के साम्ने से तंबूओं के बाहर उठा ले जाओ॥ ५। सो वे पास आये और उन्हें अपने सूती कपड़ों में उठाके जैसा मूसा ने कहा था वैसा तंबूओं से बाहर ले गये॥ ६। फिर मूसा ने हारून और उस के बेटे इलिअज़र और ईतमर को कहा कि अपने सिर को मत उघारो और अपने कपड़े मत फाड़ो न हो कि मर जाओ और सारे लोगों पर परमेश्वर का कोप पड़े परंतु तुम्हारे भाई इसराएल के घराने उस ज्वलन के लिये बिलाप करें जिसे परमेश्वर ने बारा है॥ ७। और तुम मंडली के तंबू के द्वार से बाहर न जाओ जिसतें न हो कि मर जाओ क्योंकि परमेश्वर के अभिषेक का तेल तुम पर है सो उन्हों ने मूसा के कहने के समान किया॥ ८। फिर परमेश्वर कहके हारून से बोला॥ ९। कि जब तुम मंडली के तंबू में प्रवेश करो तो न तू न तेरे संग तेरे बेटे दाखरस अथवा तीक्षण मदिरा पीजियो जिस में नाश न हो यह सनातन के लिये तुम्हारी पीढ़ियों में बिधि है॥ १०। और जिसतें तुम पावन और अपावन और शुद्ध और अशुद्ध में ब्यवरा करो॥ ११। और जिसतें तुम सारी बिधि जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से उन्हें आज्ञा किई है इसराएल के संतानों को सिखाओ॥ १२। फिर मूसा ने हारून और उस के बेटे इलिअज़र और ईतमर से जो बचे थे कहा कि परमेश्वर की भेंटों में से आग से बनी हुई जो भोजन की भेंट बच रही है लेओ और उसे बेदी के पास बिना ख़मीर से खाओ क्योंकि अत्यंत पवित्र है॥ १३। और उसे पवित्र स्थान में खाओ इस लिये कि परमेश्वर की आग के बलिदानों में से तेरा और तेरे बेटों का यह भाग है क्योंकि मुझे योंही आज्ञा हुई है॥ १४। और हिलाने की छाती और उठाने के कांधे को किसी पवित्र स्थान में तू और तेरे पुत्र और तेरी पुत्रियां तेरे साथ खावें क्योंकि यह तेरा और तेरे पुत्रों का भाग है

जो इसराएल के संतानों के कुशल की भेंटों के बलिदानों में से दिया जाता है॥ १५। और उठाने का कांधा और हिलाने की छाती भेंटों के साथ जो चिकनाई आग से चढ़ाई जाती है जिसतें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलाया जावे तेरे और तेरे बेटों के कारण सनातन के लिये बिधि होगी जैसा कि परमेश्वर ने कहा है॥ १६। फिर मूसा ने पाप की भेंट की बकरी को बजत ढूंढ़ा तो क्या देखता है कि वुह जल गई तब उस ने हारून के बचे ऊए बेटे इलिअज़र और ईतमर पर रिसियाके कहा॥ १७। कि तुम ने पाप की भेंट को क्यों नहीं पवित्र स्थान में खाया है वुह अत्यंत पवित्र है तुम्हें दिया गया है जिसतें तुम मंडली का पाप उठा लेओ और उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करो॥ १८। देखो उस का लोह्र पवित्र स्थान में न पऊंचाया गया अवश्य था तुम उसे पवित्र स्थान में खाते जैसा मैं ने आज्ञा किई है॥ १९। तब हारून ने मूसा से कहा कि देख आज ही उन्हों ने अपने पाप की भेंट और अपने होम की भेंट परमेश्वर के आगे चढ़ाई है और मुझ पर ऐसी बातें बीतीं यदि मैं पाप की भेंट आज खाता तो क्या परमेश्वर की दृष्टि में ग्राह्य होता॥ २०। और मूसा ने यह सुनके मान लिया।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। कि तुम इसराएल के संतानों से कहो कि समस्त पशुन में से जो पृथिवी पर हैं इन पशुन को खाइयो॥ ३। पशुन में से जिन का खुर विभाग हो और जिन का पांव चीरा ऊआ हो और जो पागुर करते हों उन्हें खाइयो॥ ४। तथापि उन में से इन्हें न खाइयो जो पागुर करते हैं अथवा जिन का खुर बिभाग हो ऊंट को इस कारण कि वुह पागुर करता है परंतु उस का खुर बिभाग नहीं है वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध है॥ ५। और साफन इस कारण कि वुह पागुर करता है परंतु उस का खुर बिभाग नहीं वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध॥ ६। और खरहा इस कारण कि वुह पागुर करता है परंतु उस का खुर बिभाग नहीं है वुह

तुम्हारे लिये अशुद्ध ॥ ७। और सूअर यद्यपि उस का खुर विभाग है और उस का पांव चीरा तथापि वुह पागुर नहीं करता वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध ॥ ८। तुम उन के मांस में से कुछ न खाइयो और उन की लोथों को न छूइयो क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।

९ और समस्त पानियों में का खाइयो नदियों में और समुद्रों में और पानियों में जिस किसी के पंख अथवा छिलके हों उन्हें खाइयो॥ १०। और सब जो समुद्रों में और नदियों में और सब जो पानियों में चलते हैं और कोई जीवधारी जो पानियों में हैं जिन के पंख और छिलके नहीं हैं घिनित होंगे॥ ११। और वे तुम्हारे लिये घिनित होंगे तुम उन के मांस में से न खाओ परंतु उन की लोथ को घिनित समुझो॥ १२। जिन के पानियों में पंख और छिलके नहीं हैं वे सब तुम्हारे लिये घिनित होंगे॥ १३। और पक्षियों में से तुम उन्हें घिनित समुझो और उन्हें न खाइयो वे घिनित हैं गिद्ध और हड़फोड़ और कुरल॥ १४। और शकुन और भांति भांति की चील्ह॥ १५। और भांति भांति के हर एक काग॥ १६। और शुतुरमुर्ग और तखमस और कोकिल और भांति भांति की तुरमती॥ १७। और छोटा उल्लू और हाड़गील और बड़ा उल्लु॥ १८। और राजहंस और पनिडुब्बी और रखम॥ १९। और सारस और भांति भांति के बगला और टिटिहिरी और चमगुदड़ी॥ २०। और सारे कीट जो उड़ते और चार पांव से रेंगते हैं तुम्हारे लिये वे घिनित हैं॥ २१। तथापि तुम सब पक्षियों में से जो चारों पांव से रेंगते हैं जिन की पिछली टांगें अगले पांव से लपटी ऊई हैं जिसे वे फांद कर पृथिवी पर चलें तुम उन्हें खाइयो॥ २२। तुम उन्हों में से इन्हें खाइयो जैसे भांति भांति की टिड्डी और भांति भांति के फनगे और भांति भांति के खरगोल और भांति भांति के किल्लिके॥ २३। परंतु सब रेंगवैये पक्षियों में से जिन के चार पांव हैं वे तुम्हारे लिये घिनित हैं॥ २४। और उन के लिये तुम अशुद्ध होगे जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २५। और जो कोई उन में से किसी की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २६। हर एक पशु जिन के

खुर बिभाग हों और पांव चीरा न हो और पागुर करता न हो सो तुम्हारे लिये अशुद्ध है जो कोई उन्हें छूयेगा सो अशुद्ध होगा॥ २७। और समस्त प्रकार के पशु जो चार पांव और थाप पर चलते हैं तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ २८। और जो कोई उन की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और वुह सांझ लों अशुद्ध रहेगा ये तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। २९। और पृथिवी पर के रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं नेउर और चूहा और भांति भांति का कछुआ॥ ३०। और टिक्टिकी और गिरगिटान और बम्हनी और छछूंदर और घोंघा॥ ३१। सब रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं जो कोई उन की लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ३२। और जिस किसी पर इन्हों में से मरके गिर पड़े सो अशुद्ध होगा चाहे लकड़ी का पात्र अथवा वस्त्र अथवा खाल अथवा टाट जो पात्र होवे जिस्से काम होता हो सो अवश्य जल में डाला जावे और सांझ लों अपवित्र रहेगा और इसी रीति से पवित्र होगा॥ ३३। और सब मिट्टी के पात्र जिन में उन में से गिरे जो उस में होवे सो अशुद्ध होगा तुम उसे तोड़ डालियो॥ ३४। समस्त भोजन जो खाया जाता है जो उस में उन से पानी पड़े सो अशुद्ध होगा और जो कुछ ऐसे पात्रों में पीया जाता है सो अशुद्ध होगा॥ ३५। और जिस पर उन की लोथ पड़े सो अपवित्र होगा चाहे भट्ठी चाहे चूल्हा होय तोड़ा जायगा वे अपवित्र हैं और तुम्हारे लिये अशुद्ध होंगे॥ ३६। तथापि सोता और कूआ जिस में बहुत जल होवे वुह शुद्ध होगा परन्तु जो कोई उन की लोथ को छूवेगा सो अशुद्ध होगा॥ ३७। और यदि उस की लोथ किसी बोने के बीज पर गिरे सो पवित्र रहेगा॥ ३८। परन्तु यदि उस बीज पर पानी पड़ा हो और उन की लोथ से कुछ उस पर गिरे सो तुम्हारे लिये अशुद्ध होगा॥ ३९। और यदि तुम्हारे खाने के पशुन में से कोई मरे जो कोई उस की लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ४०। और जो कोई उस की लोथ में से खावे सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा और जो उस की लोथ को उठाता है सो भी अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ४१। और हर एक जो पृथिवी पर

रेंगता है सो घिनित है उस्से खाया न जायगा॥ ४२। जो पेट के बल चलता है और जो चार पाओं पर चलते हैं और रंगवैये में से जो अधिक पांव रखते हैं और पृथिवी पर रेंगते हैं तुम उन्हें न खाइयो क्योंकि वे घिनित हैं॥ ४३। तुम किसी रेंगवैये से जो पृथिवी पर रेंगता है अपने को घिनित मत करो और न आप को उन के कारन से अपवित्र करो यहां लों कि तुम उस्से अशुद्ध हो जाओ॥ ४४। क्योंकि मैं तुम्हारा ईश्वर परमेश्वर हूं इस लिये तुम आप को शुद्ध करो और तुम पवित्र होगे क्योंकि मैं पवित्र हूं और अपने को किसी रंगवैये जन्तु से जो पृथिवी पर रेंगता है अशुद्ध न करो॥ ४५। क्योंकि मैं परमेश्वर हूं जो मिस्र के देश से तुम्हें ले जाता हूं जिसतें तुम्हारा ईश्वर हूं सो तुम शुद्ध होओ क्योंकि मैं पवित्र हूं॥ ४६। चारपाये और पक्षी और सब जीवधारी जो पानी में चलते हैं और हर एक जन्तु जो पृथिवी पर रंगते हैं उन की यही व्यवस्था है॥ ४७। कि शुद्ध और अशुद्ध में और उन पशुन में जो खाये जावें और उन में जो न खाये जावें तुम बिभेद करो।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कह कि जब स्त्री गर्भिणी होवे और बेटा जने तब वुह सात दिन अशुद्ध होगी जैसे दुर्बलता के कारण अलग होने के दिनों में होती है॥ ३। और आठवें दिन लड़के का खतनः किया जावे॥ ४। और वुह रुधिर से पवित्र होने के लिये तेंतीस दिन पड़ी रहे वुह किसी पवित्र बस्तु को न छूये और जब लों उस के पवित्र होने के दिन पूर्ण न होवें तब लों वुह पवित्र स्थान में न जावे॥ ५। और यदि लड़की जने तो वुह दो अठवारे अशुद्ध होगी जैसे अपने अलग किये जाने के दिनों में थी और वुह अपने रुधिर की पवित्रता के लिये छियासठ दिन पड़ी रहेगी॥ ६। और जब उस के पवित्र होने के दिन पुत्र के अथवा पुत्री के पूर्ण होवें तब वुह पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये लेवे और एक कपोत का बच्चा अथवा पिण्डुकी पाप की भेंट के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे॥ ७। वुह उसे परमेश्वर के आगे चढ़ावे और उस के

काला होवे तो उसे सात दिन लों बंद करे॥ २७। और सातवें दिन याजक उसे देखे यदि वुह चमड़े पर बड़त फैल गया हो तब याजक उसे अपवित्र कहे वुह कोढ़ की मरी है॥ २८। और यदि वुह चकचकिया बिंदु अपने स्थान पर हो और चमड़े पर न फैले परंतु कुछ काला होय तो वुह केवल जलने का उभरना है याजक उसे शुद्ध ठहरावे क्योंकि जलने की जलन है॥

२९। यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के सिर अथवा डाढ़ी में मरी होय॥ ३०। तब याजक उस मरी को देखे यदि वुह देखने में चमड़े से गहिरी देख पड़े और उस पर पीला बाल हो तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे यह सेंड़आं सिर अथवा डाढ़ी का कोढ़ है॥ ३१। और यदि याजक उस सेंड़आं की मरी को देखे और चमड़े से गहिरी न सूझ पड़े और उस पर काला बाल भी न हो तो याजक उस सेंड़आं मरी जन को सात दिन लों बंद करे॥ ३२। और सातवें दिन याजक उस मरी को देखे और यदि सेंड़आं को फैला न देखे और उस पर पीला बाल न हो और सेंड़आं देखने में चमड़े से गहिरा न हो॥ ३३। वुह मुड़ाये जावें परंतु सेंड़आं को न मुंड़ावे और जिस पर सेंड़आं है याजक उस को और सात दिन बंद करे॥ ३४। फिर सातवें दिन याजक उसे देखे यदि सेंड़आं को चमड़े पर फैलते देखे चमड़े से गहिरा होय तो याजक उसे पवित्र ठहरावे वुह अपने कपड़े धोवे और पवित्र होवे॥ ३५। और यदि उस के पवित्र होने के पीछे वुह सेंड़आं चमड़े पर बड़त फैल जावे॥ ३६। तो याजक उसे देखे और यदि सेंड़आं चमड़े पर फैला देखे तो याजक पीले बाल को न ढूंढ़े वुह अपवित्र है॥ ३७। परंतु यदि उस के देखने में सेंड़आं वैसाही है और उस में काला बाल निकला हो तो वुह सेंड़आं चंगा ड़आ वुह पवित्र है याजक उसे पवित्र ठहरावे॥ ३८। यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के शरीर के चमड़े पर उजला अथवा चकचकिया बिंदु होय॥ ३९। तब याजक देखे उस के शरीर के चमड़े पर के चकचकिया बिंदु तनिक काला उजला सूझ पड़ें वह छीप है जो चमड़े से निकलता है वुह पवित्र है॥ ४०। और जिस मनुष्य के सिर के बाल गिर गये हों वुह चंदुला है वुह पवित्र है॥ ४१। और जिस मनुष्य के सिर के बाल मुंह की ओर से गिर गये हों वुह चंदुला है पवित्र है॥

४२ । यदि उस चंदुले सिर अथवा माथे में उजला लाल सा घाव होवे वुह कोढ़ है जो उस के चंदुले सिर अथवा माथे में फैला हुआ है॥ ४३। सो याजक उसे देखे और यदि घाव के ऊपर उजला लाल सा उस के चंदुले सिर अथवा चंदुले माथे में दिखाई देवे जैसा कि शरीर के चमड़े में कोढ़ दिखाई देता है ॥ ४४ । तो वह मनुष्य कोढ़ी अपवित्र है याजक उसे सर्व्वथा अपवित्र ठहरावे उस की मरी उस के सिर पर है॥ ४५। और जिस कोढ़ी पर मरी है उस के कपड़े फाड़े जायें और सिर नंगा किया जाय तब वुह अपनी ऊपरी होंठ पर आड़ करे और चिल्ला चिल्ला के कहे कि अपवित्र अपवित्र॥ ४६ । जितने दिन लों मरी उस पर रहे वुह अशुद्ध रहेगा वुह अपावन है वुह अकेला रहा करे उस का निवास छावनी के बाहर होवे॥ ४७। वुह वस्त्र भी जिस में कोढ़ की मरी हो ऊन का अथवा सूत का वस्त्र हो॥ ४८। उस वस्त्र के ताने में अथवा बाने में सूत का हो अथवा ऊन का और चाहे चमड़े पर हो चाहे किसी वस्तु पर जो चमड़े की हो॥ ४९। और यदि वुह मरी वस्त्र में अथवा हरी सी अथवा लाल सी हो अथवा चमड़े में अथवा ताने में अथवा बाने में हो अथवा किसी चमड़े की वस्तु में हो वुह मरी का कोढ़ है याजक को दिखाया जाय॥ ५०। और याजक उस मरी को देखे और उसे सात दिन बंद करे॥ ५१। और सातवें दिन उस मरी को देखे यदि वुह मरी कपड़े पर अथवा ताने बाने में अथवा चमड़े पर अथवा किसी वस्तु पर जो चमड़े से बनी हुई है फैल जाये वुह मरी कटाव का कोढ़ है वुह अपवित्र है॥ ५२। सो वुह उस वस्त्र को जो ऊन का अथवा सूत का हो जिस के ताने में है अथवा बाने में और चमड़े की कोई वस्तु जिस में मरी है उसे जला देवे क्योंकि वुह कटाव का कोढ़ है वुह आग से जलाया जाय॥ ५३। और यदि याजक देखे कि वुह मरी जो वस्त्र में ताने में अथवा बाने में अथवा चमड़े की किसी वस्तु में है फैली नहीं॥ ५४। तो याजक आज्ञा करे कि उस वस्तु को जिस में मरी होवे धोवें और फिर उसे और सात दिन लों रख छोड़े॥ ५५। फिर उसे धोने के पीछे उस मरी को देखे यदि उस मरी का रंग बदला न देखे और मरी न फैली हो तो वुह अपवित्र है उसे आग में जलावे कि वुह

कटाव चाहे भीतर चाहे बाहर हो॥ ५६। और यदि याजक दृष्टि करे और देखे कि मरी धोने के पीछे कुछ काली हो तो वुह उस बस्त्र से और चमड़े से ताने से अथवा बाने से फाड़ फेंके॥ ५७। और यदि वुह मरी वस्त्र में ताने में अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में प्रगट बनी रहे तो वुह फैलती है तू उसे जिस में मरी है आग से जला देना॥ ५८। और यदि मरी उस बस्त्र से ताने से अथवा बाने से अथवा चमड़े की वस्तु से जिसे तू धोयेगा यदि मरी उन से जाती रहे तो वुह दो बार धोया जाये और पवित्र हो जायगा॥ ५९। यह कोढ़ की मरी की व्यवस्था है जो ऊन अथवा सूत के बस्त्र में ताने अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में पवित्र अथवा अपवित्र ठहरावे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि उस के लिये जिस दिन कोढ़ी पवित्र किया जावे यह व्यवस्था है उसे याजक पास लावें॥ ३। और याजक छावनी से बाहर जाके देखे यदि वुह कोढ़ी कोढ़ की मरी से चंगा हो गया हो॥ ४। तो याजक आज्ञा करे कि जो पवित्र किया जाता है सो अपने लिये दो पवित्र जीते पच्ची और शमशाद की लकड़ी और लाल और ज़ूफ़ा लेवे॥ ५। फिर याजक आज्ञा करे कि उन पच्छियों में से एक मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर मारा जाय॥ ६। और वुह जीते पच्ची को और शमशाद की लकड़ी और लाल और ज़ूफ़ा समेत लेके उस पच्ची के लोहू में जो बहते पानी पर मारा गया है चभोरे॥ ७। और जो कोढ़ से पवित्र किया जाता है उस पर सातबार छिड़के और उसे पवित्र ठहरावे और उस जीते पच्ची को खुले चौगान की ओर उड़ा देवे॥ ८। और जो पवित्र किया जाता है सो अपने कपड़े धोवे और अपने सारे बाल मुंड़ावे और पानी में स्नान करे जिसतें पवित्र होवे उस के पीछे वह छावनी में आवे और सात दिन लों अपने तंबू के बाहर ठहरे॥ ९। और सातवें दिन अपने सिर के सब बाल और अपनी डाढ़ी और अपनी भौंहें अर्थात् अपने सारे बाल मुंड़ावे और अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर भी पानी से धोवे तब वुह पवित्र होगा॥ १०।

और आठवें दिन दो निष्खोट मेम्ना और पहिले बरस की एक निष्खोट मेढ़ा और चोखा पिसान तीन दसवे भाग तेल से मिला हुआ और एक नपुआ तेल भोजन की भेंट के लिये लेवे॥ ११। तब याजक जो पवित्र करता है उस मनुष्य को जो पवित्र किया जाता है उन वस्तुन सहित परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर ले आवे॥ १२। और याजक एक मेम्ना पाप के बलिदान के कारण उस नपुआ तेल समेत पास लावे और उन्हें हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे॥ १३। और उस मेम्ना को उस स्थान पर जहां पाप की भेंट और होम की भेंट बलि किई जाती है पवित्र स्थान में बलि करे क्योंकि जैसी पाप की भेंट याजक की है वैसी अपराध की भेंट है वुह अत्यंत पवित्र है॥ १४। और याजक पाप की भेंट का कुछ लोहू लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और दहिने हाथ के अंगूठे पर और दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे॥ १५। और याजक उस नपुआ का कुछ तेल लेके अपने बाएं हाथ की हथेली पर डाले॥ १६। और याजक अपनी दहिनी अंगुली उस तेल में जो उस की बाईं हथेली पर है डुबोवे और परमेश्वर के आगे सात बार अपनी अंगुली से कुछ तेल छिड़के॥ १७। और उस तेल में से जो उस की हथेली पर उबरा है उस मनुष्य के दहिने कान की लहर पर जो पवित्र किया जाता है और उस के दहिने हाथ के अंगूठे पर और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर अपराध की भेंट के लोहू को लगावे॥ १८। और याजक उस उबरे हुए तेल को जो उस की हथेली पर है उस मनुष्य के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाल देय और याजक उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥ १९। और याजक पाप की भेंट चढ़ावे और उस के लिये जो अपवित्रता से पवित्र किया जाता है प्रायश्चित्त करे उस के पीछे होम की भेंट को बलि करे॥ २०। और होम की भेंट और भोजन की भेंट याजक बेदी पर चढ़ावे और उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह पवित्र होगा॥ २१। और यदि वुह कंगाल होय और इतना ला न सके तो वुह अपराध की भेंट के कारण हिलाने के लिये एक मेम्ना लेवे जिसतें उस के लिये प्रायश्चित्त दिया जाय और एक दसवां भाग चोखा

पिसान तेल से मिला ज़ुआ भेंट के बलिदान के कारण और एक चोंगी तेल॥ २२। और दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे जैसा वुह पा सके लेवे उन में से एक पाप की भेंट और दूसरा होम की भेंट का होगा॥ २३। और वुह उन्हें आठवें दिन अपने पवित्र होने के कारण मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे याजक पास लावे॥ २४। और याजक अपराध की भेंट का मेम्ना और एक चोंगी तेल लेवे और वुह उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलावे॥ २५। फिर वुह पाप की भेंट के मेम्ने को बलि करे और याजक पाप की भेंट के लोहू में से कुछ लेके उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और दहिने हाथ के अंगूठे और दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे॥ २६। और उस तेल में से कुछ अपनी बांई हथेली पर डाले॥ २७। और याजक उस तेल में से जो उस की बांई हथेली पर है थोड़ा सा अपनी दहिनी अंगुली से परमेश्वर के आगे सात बार छिड़के॥ २८। और याजक उस तेल में से जो उस की हथेली पर है उस के जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के अंगूठे और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर पाप की भेंट के लोहू के स्थान पर लगावे॥ २९। और याजक उबरे ज़ुए तेल को जो उस की हथेली पर है उस के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाले कि उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे। ३०। और वुह उन पिण्डुकियों में से अथवा कपोत के बच्चों में से जो उस के हाथ लगे॥ ३१। एक तो पाप की भेंट के लिये और दूसरा होम की भेंट के लिये भोजन की भेंट के साथ चढ़ावे और याजक उस के लिये जो पवित्र किया जाता है परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥ ३२। यह उस कोढ़ी की मरी की व्यवस्था है जो अपने पवित्र करने की पूंजी न रखता हो॥ ३३। फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ ३४। कि जब तुम कनआन देश में पज़ंचो जो मैं तुम्हें अधिकार के लिये देता हूं और मैं तुम्हारे अधिकार के देश के किसी घर में कोढ़ की मरी लाओं॥ ३५। तब उस घर का स्वामी याजक पास आके कहे कि मुझे ऐसा दिखाई देता है कि घर में कुछ मरी सी है॥ ३६। तब याजक आज्ञा करे कि वे उस घर को उछो आगे कि याजक मरी को देखने जाय

छूछा करें जिसतें घर की समस्त सामग्री अपवित्र न हो जाय उस के पीछे याजक घर के भीतर देखने जाय॥ ३७। और वुह उस मरी पर दृष्टि करे यदि मरी उस घर की भीतों पर हरी सी अथवा लाल सी और गहिरी लकीर दिखाई देवे॥ ३८। तो याजक घर के द्वार से बाहर निकल के घर को सात दिन लों बंद करे॥ ३९। और याजक सातवें दिन फिर आके देखे यदि वुह मरी घर की भीतों पर फैली दिखाई देवे॥ ४०। तो याजक आज्ञा करे कि उन पत्थरों को जिन में मरी है निकाल डालें और नगर के बाहर अपवित्र स्थान पर फेंक देवें॥ ४१। फिर वुह घर के भीतर चारों ओर खुरचवावे और वे उस खुरची धूल को नगर के बाहर अपवित्र स्थान में फेंक देवें॥ ४२॥ और वे और पत्थर लेके उन पत्थरों के स्थान पर जोड़ें और वुह दूसरा खोआ लेकर घर की गच करे॥ ४३। और यदि पत्थर निकालने के और घर खुरचाने के पीछे और गच करने के पीछे मरी आवे और उस घर में फूट निकले॥ ४४। तब याजक आके देखे यदि वुह मरी घर में फैली देखे तो वुह घर कोढ़ी और अशुद्ध है॥ ४५। वुह उस घर को और उस के पत्थरों को और उस की लकड़ियों को और उस के सब खोये को गिरा देवे और वुह उन्हें नगर के बाहर अपवित्र स्थान में ले जाय॥ ४६। इसे अधिक जब लों वुह घर बंद होय जो कोई उस घर में जाय सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥ ४७। और जो कोई उस घर में सोये सो अपने कपड़े धोवे और जो कोई उस घर में कुछ खाय सो अपने कपड़े धोवे॥ ४८। और यदि घर के गच होने के पीछे याजक आते आते उस घर में आवे और देखे कि वुह मरी घर पर नहीं फैली तो याजक उस घर को पवित्र ठहरावे क्योंकि वुह मरी से चंगा हो गया॥ ४९। तब उस घर को पवित्र करने के लिये दो चिड़ियां और शमशाद की लकड़ी और लाल और जूफा लेवे॥ ५०। और उन चिड़ियों में से एक को मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर बलि करे॥ ५१। फिर वुह शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल और उस जीती चिड़िया को लेके उन्हें बलि किई हुई चिड़िया के लोहू में और उस बहते पानी में चभोरे और सात बेर उस घर पर छिड़के॥ ५२। और चिड़िया के लोहू और बहते पानी और जीती चिड़िया और शमशाद की

लकड़ी और जूफा और लाल से उस घर को पवित्र करे॥ ५३। परंतु वुह उस जीती चिड़िया को नगर के बाहर चैागान की ओर छोड़े और उस घर के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह पवित्र होा जायगा॥

५४। हर भांति के कोढ़ की मरी और सेज्ञओं के॥ ५५। और वस्त्र और घर के कोढ़ के लिये॥ ५६। और उभरना और घाव और चकचकिया बिंदु के लिये यह व्यवस्था है॥ ५७। अपवित्र और पवित्र होने के दिन सिखलावे क्योंकि कोढ़ के लिये यही व्यवस्था है॥

१५ पंद्रहवां पर्व्व॥

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कहके बोला कि यदि किसी मनुष्य के प्रमेह का रोग होवे तो वुह प्रमेह के कारण से अशुद्ध है॥ ३। और यदि उस का प्रमेह थम जाय अथवा बना रहे वुह अशुद्ध है॥ ४। हर एक बिछौना जिस पर प्रमेही लेटता है सो अशुद्ध होगा और हर एक वस्तु जिस पर वुह बैठता है अशुद्ध होगी॥ ५। और जो कोई उस के बिछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ ६। और जो कोई उस वस्तु पर जिस पर प्रमेही बैठता है बैठे सो अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ ७। और जो कोई उस के शरीर को जिसे प्रमेह है छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ ८। और यदि प्रमेही किसी पवित्र मनुष्य पर थूके तो वुह मनुष्य अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ ९। और जिस आसन पर वुह बैठे सो अपवित्र होगा॥ १०। और जो कोई उस वस्तु को जो उस प्रमेही के नीचे है छूवे सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जो कोई उन वस्तुन को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ ११। और बिन हाथ धोये जिस किसी को प्रमेही छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ १२। और जिस मिट्टी के पात्र को प्रमेही छूवे सो तोड़ा जाय और यदि काष्ठ का पात्र

होय तो पानी से धोया जाय॥ १३। और जब प्रमेही चंगा हो जाय तब वुह अपने पवित्र होने के लिये सात दिन गिने तब वुह अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर बहते पानी से धोवे तब वुह पवित्र होगा॥ १४। और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो बच्चे लेके परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर आवे और उन्हें याजक को सौंपे॥ १५। याजक उन्हें चढ़ावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरी होम की भेंट के लिये और याजक उस प्रमेही के कारण परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे॥ १६। और यदि किसी मनुष्य से रात को बीर्य जाय तब वुह अपना समस्त शरीर पानी से धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ १७। और जिस कपड़े अथवा चमड़े पर रतिका बीर्य पड़े सो पानी से धोया जाय और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ १८। और स्त्री भी जिस्से पुरुष रति करे दोनों पानी से स्नान करें और सांझ लों अपवित्र रहेंगे॥ १९। और यदि स्त्री रजखला हो तो वुह सात दिन अलग किई जाय जो कोई उसे छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २०। और सब बस्तें जिस पर वुह अपने अलग होने के दिन में लेटे अपवित्र होंगी और हर एक वस्तु जिस पर वुह बैठे सो अपवित्र होगी॥ २१। और जो कोई उस के बिछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २२। और जो कोई किसी वस्तु को छूवे जिस पर वुह बैठी थी सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २३। और यदि कोई बस्तु उस के बिछौनों पर अथवा किसी पर हो जिस पर वुह बैठती है और उस समय कोई उस बस्तु को छूवे तो वुह सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २४। और यदि पुरुष उस के साथ लेटे और वुह रजखला में होय तो वुह सात दिन लों अपवित्र रहेगा और हर एक बिछौना जिस पर वुह पुरुष लेटता है सो अपवित्र होगा॥ २५। और यदि स्त्री का रजोधर्म्म उस के ठहराये हुए दिनों से अधिक होवे अथवा यदि उस के अलग होने के समय से अधिक बहे तो उस की अपवित्रता के बहने से सब दिन उस के अलग होने के दिनों के समान होवें क्योंकि वुह अपवित्र है॥ २६। और उस के बहने के सब दिनों में हर एक बिछौना

जिस पर वुह लेटती है और जिस पर वुह बैठती है सो उस के अलग होने की अपवित्रता के समान अपवित्र होगा॥ २७। और जो कोई उन वस्तुन को छूवे सो अपवित्र होगा और अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा॥ २८। और जब वुह अपने रज से पविच होवे तब सात दिन गिने उस के पीछे वुह पवित्र होगी॥ २९। और आठवें दिन वुह दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लेवे और तंबू के द्वार पर याजक पास आवे॥ ३०। और याजक एक को पाप की भेंट और दूसरे को होम की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उस के रज की अपवित्रता के लिये परमेश्वर के आगे उस के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ३१। तुम इसराएल के संतानों को उन की अपवित्रता से यों अलग करो जिस में वे अपनी अपवित्रता से मर न जावें जब वे मेरे तंबू को जो उन के मध्य में है अपवित्र करें॥ ३२। उस के लिये जिसे प्रमेह का रोग होय और उस के लिये जो रति करने से अपवित्र होय और उस के लिये जो रजखला होय और उस पुरुष और स्त्री के लिये जिसे प्रमेह का रोग होय और उस पुरुष के लिये जो रजखला के साथ लेटता हो यही व्यवस्था है॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

और जब हारून के दो बेटे परमेश्वर के आगे नैवेद्य लाये और मर गये उस के पीछे परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने भाई हारून को कह कि वुह हर समय पवित्र स्थान के घूंघट के भीतर दया के आसन के आगे जो मंजूषा पर है न आया करे न हो कि मर जाय क्योंकि मैं मेघ में दया के आसन पर दिखाई दूंगा॥ ३। पवित्र स्थान में हारून यों आवे पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा और होम की भेंट के लिये एक मेंढ़ा लावे॥ ४। पवित्र सूती कुरती पहिने और उस के शरीर पर सूती सूथनी हो और सूती पटुके से उस की कटि बंधी हो और अपने सिर पर सूती पगड़ी रक्खे ये पवित्र वस्त्र हैं और वुह अपना शरीर पानी से धोवे और उन्हें पहिने॥ ५। और इसराएल के संतानों की मंडली से बकरी के दो मेम्नेपाप की भेंट

के लिये और एक मेंढ़ा होम की भेंट के लिये लेवे॥ ६। और हारून पाप की भेंट के उस बछड़े को जो उस के लिये है लावे और अपने लिये और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ७। फिर उन दोनों बकरों को लेके मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे ले आवे॥ ८। और हारून उन दोनों बकरों पर चिट्ठी डाले एक चिट्ठी परमेश्वर के लिये और दूसरी बकरा छुड़ाने के लिये॥ ९। और हारून उस बकरे को लावे जिस पर परमेश्वर के नाम की चिट्ठी पड़े और उसे पाप की भेंट के लिये बलि चढ़ावे॥ १०। परंतु छुड़ाने के लिये जिस बकरे पर चिट्ठी पड़े उसे परमेश्वर के आगे जीता लावे कि उस्से प्रायश्चित्त किया जाय और उस को छुड़ावन के लिये बन में छोड़ दे॥ ११। तब हारून अपने लिये पाप की भेंट के बछड़े को लावे और अपने और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे और पाप की भेंट के बछड़े को जो अपने लिये है बलि करे॥ १२। और वुह परमेश्वर के आगे बेदी पर से एक धूपावरी अंगारों से भरी ऊई और अपनी मुट्ठी भरी ऊई सुगंध लेवे और घूंघट के भीतर लावे॥ १३। और उस धूप को परमेश्वर के आगे आग में डाल देवे जिस में धूप का मेघ दया के आसन को जो साक्षी पर है छिपावे और आप न मरे॥ १४। फिर वुह बछड़े का लोहू लेके अपनी अंगुली से दया के आसन की पूर्ब ओर छिड़के और दया के आसन के आगे अपनी अंगुली से सात बेर लोहू छिड़के॥ १५। फिर वुह लोगों के लिये पाप की भेंट की बकरी को बलि करे और उस के लोहू को घूंघट के भीतर लाके जैसा उस ने बछड़े के लोहू से किया था वैसाही करे और दया के आसन के ऊपर और उस के आगे छिड़के॥ १६। और पवित्र स्थान के कारण इसराएल के संतानों की अपवित्रता के लिये और उन के पापों और उन के समस्त अपराधों के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह मंडली के तंबू के लिये भी जो उन के साथ उन की अपवित्रता के मध्य में है ऐसा ही करे॥ १७। और जब वुह प्रायश्चित्त करने के लिये मंडली के तंबू में जाय तो जब लों वुह बाहर न आवे और अपने लिये और अपने घराने के लिये और इसराएल की मंडली के लिये प्रायश्चित्त न देवे तब लों तंबू में कोई न जाय॥ १८। फिर वुह निकल के

उस बेदी पर आवे जो परमेश्वर के आगे है और उस के लिये प्रायश्चित्त करे और उस बछड़े और उस बकरे के लोहू में से लेके बेदी के सींगों की चारों ओर लगावे॥ १९। और अपनी अंगुली से उस पर सात बेर लोहू छिड़के और उसे इसराएल के संतानों की अपवित्रता से पावन और शुद्ध करे॥ २०। और जब वुह पवित्र स्थान के और मंडली के तंबू के और बेदी के लिये मिलाप कर चुका तब उस जीते बकरे को लावे॥ २१। और हारून अपने दोनों हाथ उस जीते बकरे के सिर पर रक्खे और इसराएल के संतानों की बुराइयों और उन के सारे पाप और अपराधों को मान लेके उन्हें इस बकरे के सिर पर धरे और उसे किसी मनुष्य के हाथ जो उस के लिये ठहरा हो बन को भिजवा दे॥ २२। और वुह बकरा उन की सारी बुराइयां अपने ऊपर उठाके दूर देश में ले जायगा और वुह उस बकरे को बन में छोड़ देवे॥ २३। फिर हारून मंडली के तंबू में आवे और सूती बस्त्रों को जो उस ने पवित्र स्थान में जाने के समय पहिने थे उतारे और उन्हें वहां रख देवे॥ २४। फिर वुह पवित्र स्थान में अपना शरीर पानी से धोवे और अपने बस्त्र पहिन के बाहर आवे और अपने होम की भेंट और लोगों के होम की भेंट चढ़ावे और अपने लिये और लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे॥ २५। और पाप की भेंट की चिकनाई बेदी पर जलावे॥ २६। और जिस ने छुड़ाया हुआ बकरा छोड़ दिया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से नहावे और उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे॥ २७। और पाप की भेंट को और बकरे को जिस का लोहू पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के लिये पहुंचाया गया छावनी से बाहर ले जावें और उन की खालें और उन का मांस और गोबर आग में जला देवें॥ २८। और जिस ने उन्हें जलाया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे उस के पीछे छावनी में आवे॥ २९। यह तुम्हारे लिये सनातन की बिधि होगी सातवें मास की दसवीं तिथि को तुम अपने प्राण को कष्ट देओ और कुछ कार्य न करो चाहे देशी चाहे परदेशी जो तुम्हों में बास करता है॥ ३०। क्योंकि उस दिन तुम्हारे कारण तुम्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त किया जायगा जिसतें तुम अपने समस्त पापों से परमेश्वर के

आगे पवित्र हो जाओ॥ ३१। यह तुम्हारे लिये स्मरण का बिश्राम होगा तुम उस दिन अपने प्राण को कष्ट दीजियो यह तुम्हारे लिये सदा की बिधि है॥ ३२। और वुह जिस याजक को अभिषेक करे और जिसे वुह याजक के पद में सेवा करने के लिये अपने पिता की संती सेवा के लिये स्थापित करे सोई प्रायश्चित्त करे और पवित्र सूती वस्त्र को पहिने॥ ३३। और पवित्र स्थान के लिये और मंडली के तंबू के लिये और बेदी के लिये और याजकों के लिये और मंडली के सब लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे॥ ३४। और यह तुम्हारे लिये सनातन की बिधि है जिसतें तुम इसराएल के संतानों के लिये उन के सब पापों के कारण बरस में एक बार प्रायश्चित्त करो सो जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा था उस ने वैसा ही किया।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि हारून और उस के बेटों और इसराएल के समस्त संतानों से कहके बोल कि यह वुह बात है जिसे परमेश्वर ने आज्ञा किई है॥ ३। जो मनुष्य इसराएल के घरानों में से बैल अथवा मेम्ना अथवा बकरी छावनी में अथवा छावनी के बाहर बलि करे॥ ४। और मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के तंबू के आगे भेंट चढ़ाने के लिये न लावे तो उस मनुष्य पर लोहू का दोष होगा क्योंकि उस ने लोहू बहाया और वुह मनुष्य अपने लोगों में से कट जायगा॥ ५। यह इस लिये है कि इसराएल के संतान अपने बलिदानों को जिन्हें वे चौगान में चढ़ाते हैं परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावें और उन्हें परमेश्वर के आगे कुशल की भेंट के लिये चढ़ावें॥ ६। और याजक वुह लोहू मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर की बेदी पर छिड़के और परमेश्वर के सुगंध के लिये चिकनाई को जलावे॥ ७। और आगे को पिशाचों के लिये जिन के पीछे वे बेश्यागामी थे न चढ़ावें उन की पीढ़ियों में यह सनातन की बिधि होगी॥

८। और तू उन्हें कह कि इसराएल के घराने में अथवा परदेशी में जो तुम्हों में बास करता है जो कोई होम की भेंट अथवा बलि की भेंट

चढ़ावे॥ ९। और उसे मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के लिये न चढ़ावे वही मनुष्य अपने लोगों में से काट डाला जायगा॥ १०। और इसराएल के घरानों में से अथवा परदेशियों में से जो तुम्हों में बास करता है जो कोई किसी रीति का लोहू खाय निश्चय मैं उसी लोहू के भक्षक का विरोधी हूंगा और उसे उस के लोगों में से काट डालूंगा॥ ११। क्योंकि शरीर का जीवन लोहू में है सो मैं ने उसे बेदी पर तुम्हें दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त होवे क्योंकि लोहू से प्राण के लिये प्रायश्चित्त होता है॥ १२। इस लिये मैं ने इसराएल के संतानों से कहा कि तुम्में से कोई प्राणी लोहू न खाय और कोई परदेशी जिस का बास तुम्में है लोहू न खाय॥ १३। और इसराएल के संतानों में से अथवा परदेशियों में से जिस का बास तुम्में है जो कोई खाने के योग्य पशु अथवा पक्षी अहेर करके पकड़े सो लोहू को बहा देवे और उसे धूल से ढांप देवे॥ १४। क्योंकि यह हर एक शरीर का जीव है उस का लोहू उस का जीव है इस लिये मैं ने इसराएल के संतानों को आज्ञा किई कि किसी रीति के मांस का लोहू मत खाओ क्योंकि लोहू हर एक मांस का जीव है जो कोई उसे खायेगा सो अपने लोगों में से कट जायगा॥ १५। जो कुछ मर जाय अथवा फाड़ा जाय चाहे देशी होवे चाहे परदेशी जो प्राणी उसे खाय सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहे तब वुह पवित्र होगा॥ १६। पर यदि वुह न धोवे और स्नान न करे तो वुह दोषी होगा॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ३। तुम मिस्र के देश की चालों पर जिस में तुम रहते थे न चलियो और कनआन के देश के से काम न करो जहां मैं तुम्हें ले जाता हूं और उन के व्यवहारों पर न चलियो॥ ४। मेरे बिचारों पर चलो और मेरी विधि को पालन करो और उन पर चलो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ५। सो मेरी विधि और मेरे बिचारों को पालन करो यदि मनुष्य उन्हें पालन करे तो

वुह उन से जीयेगा मैं परमेश्वर हूं॥ ६। उन का नंगापन उघारने के लिये तुम्में से कोई अपने कुटुम्ब के पास न जाय मैं परमेश्वर हूं॥ ७। अपने पिता का नंगापन अथवा अपनी माता का नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरी माता है तू उस का नंगापन मत उघार॥ ८। अपने पिता की पत्नी का नंगापन मत उघार वुह तेरे पिता का नंगापन है॥ ९। अपनी बहिन का नंगापन अपने पिता की बेटी का अथवा अपनी माता की बेटी का जो घर में अथवा बाहर उत्पन्न हुई हो नंगापन मत उघार॥ १०। अपने पुत्र की बेटी का अथवा अपनी बेटी का नंगापन मत उघार क्योंकि उन का नंगापन तेरा ही है॥ ११। तेरे पिता की पत्नी की बेटी जो तेरे पिता की जन्मी है तेरी बहिन है तू उस का नंगापन मत उघार॥ १२। अपने पिता की बहिन का नंगापन मत उघार वुह तेरे पिता की समीपी कुटुम्ब है॥ १३। अपनी माता की बहिन का नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरी माता की समीपी कुटुम्ब है॥ १४। अपने पिता के भाई का नंगापन मत उघार और उस की पत्नी पास मत जा वुह तेरी चाची है॥ १५। अपनी बहू का नंगापन मत उघार वुह तेरे बेटे की पत्नी है उस का नंगापन मत उघार॥ १६। अपने भाई की पत्नी का नंगापन मत उघार वुह तेरे भाई का नंगापन है॥ १७। किसी स्त्री का और उस की बेटी का नंगापन मत उघार उस के बेटे की बेटी का और उस की बेटी का नंगापन मत उघार क्योंकि वुह उस की समीपी कुटुम्ब है यह बड़ी दुष्टता है॥ १८। और तू किसी स्त्री को खिजाने के लिये उस के जीते जी उस की बहिन समेत मत ले जिसतें उस का नंगापन उघारे॥ १९। और जब लों स्त्री अपवित्रता के लिये अलग किई गई हो उस का नंगापन उघारने के लिये उस के पास मत जा॥ २०। और अपने परोसी की पत्नी के संग कुकर्म्म मत कर जिसतें आप को उस्से अपवित्र करे॥ २१। अपने पुत्रों में से मोलक को मत चढ़ा और अपने परमेश्वर के नाम को अनरीति से मत ले मैं परमेश्वर हूं॥ २२। तू पुरुष गमन मत कर वुह घिनित है॥ २३। पशु गामी होके आप को अशुद्ध मत कर और कोई स्त्री पशु गामिनी न हो यह गड़बड़ है॥ २४।

इन बातों में आप को अशुद्ध मत कर क्योंकि जिन जातिगणों को मैं तुम्हारे आगे निकालता हूं वे इन बातों में अशुद्ध हैं॥ २५। और देश अशुद्ध है इस कारण मैं उस के अपराध का पलटा लेता हूं और देश भी अपने बासियों को उगलता है॥ २६। सो तुम मेरी विधि और मेरे विचारों को पालन करो और इन घिनितों में से किसी को न करो न देशी न तुम्हारा परदेशी जो तुम्में बास करता है॥ २७। क्योंकि देशी ने जो तुम से आगे थे ये समस्त घिनित कार्य्य किये और देश अशुद्ध हुआ है॥ २८। जिसतें जब तुम देश को अशुद्ध करो वुह तुम्हें भी उगल न देवे जिस रीति से उन जातिगणों को जो तुम से आगे थे उगला॥ २९। जो कोई उन घिनौनी क्रियों में से कुछ करेगा ऐसा कुकर्म्मी प्राणी अपने लोगों में से कट जायेगा॥ ३०। सो तुम मेरी व्यवस्थों को पालन करो और उन घिनौनी क्रियों में से जो तुम से आगे किई गईं कोई क्रिया न करो और अपने को उन से अशुद्ध न करो मैं तुम्हारा परमेश्वर ईश्वर हूं॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। इसराएल के संतानों की सारी मंडली से कहके बोल कि पवित्र होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर पवित्र हूं॥ ३। तुम अपने अपने माता पिता से डरते रहो और मेरे विश्राम के दिनों को पालन करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ४। तुम मूर्तिन की ओर मत फिरो और न ढाल के अपने लिये देवता बनाओ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ५। और यदि तुम कुशल की भेंटों का बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाओ तो अपनी प्रसन्नता के लिये चढ़ाओ॥ ६। चाहिये कि जब उसे चढ़ाओ वुह उसी दिन और दूसरे दिन खाया जाय और यदि तीसरे दिन लों कुछ बच रहे तो आग में जला दिया जाय॥ ७। और यदि वुह तनिक भी तीसरे दिन खाया जाय तो घिनित है वुह ग्राह्य न होगा॥ ८। सो जो कोई उसे खायगा सो अपराधी होगा क्योंकि उस ने परमेश्वर की पवित्र वस्तु को अशुद्ध किया वुह मनुष्य अपने लोगों में से काटा जायगा॥

९। और जब तू अपना खेत काटे तब खत के कोने को सर्बत्र मत काट ले और न अपने खेत का बिन्ना कर॥ १०। और तू अपने दाख को मत बिन और न अपने हर एक अंगूर को बटोर उन्हें कंगालों और परदेशी के लिये छोड़ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ११। तुम चोरी मत करो और झुठाई से ब्यवहार न करो एक दूसरे से झूठ मत बोलो॥ १२। और मेरा नाम लेके झूठी किरिया मत खाओ तू अपने ईश्वर के नाम को अपवित्र मत कर मैं परमेश्वर हूं॥ १३। अपने परोसी से छल मत कर और उस्से कुछ मत चुरा बनिहारों की बनी रात भर बिहान लों तेरे पास न रह जाय॥ १४। बहिरे को दुर्बचन मत कह तू अंधे के आगे ठोकर खाने की बस्तु मत रख परंतु अपने ईश्वर से डरता रह मैं परमेश्वर हूं॥ १५। तुम न्याय में अधर्म्म मत करो तू कंगाल का पक्ष मत कर और बड़े को बड़ाई के लिये प्रतिष्ठा मत दे परंतु धर्म्म से अपने परोसी का न्याय कर॥ १६। अपने लोगों में लुतड़ा बन के मत आया जाया कर और अपने परोसी के लोहू के बिरोध में मत खड़ा हो मैं परमेश्वर हूं॥ १७। मन में अपने भाई से बैर मत रख तू अपने परोसी को किसी भांति से दपट दे और उस पर पाप मत छोड़॥ १८। तू अपने लोगों के संतानों से बैर मत रख और अपना पलटा मत ले परंतु अपने परोसी को अपने समान प्यार कर मैं परमेश्वर हूं॥ १९। तुम मेरी बिधि का पालन करो तू अपने ढोरों को और जातियों से मत मिलने दे तू अपने खेत में मिले हुए बीज मत बो और सूत का मिला हुआ बस्त्र मत पहिन॥ २०। जो कोई किसी स्त्री से जो बचन दत्त दासी हो और छुड़ाई न गई हो और निर्बंध न हुई हो ब्यभिचार करता है सो ताड़ना पावेगा वे मार डाले न जावेंगे इस लिये कि वुह निर्बंध न थी॥ २१। सो वुह परमेश्वर के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अपराध की भेंट लावे अपराध की भेंट एक मेढ़ा होवे॥ २२। और याजक उस के लिये अपराध की भेंट के मेढ़े को परमेश्वर के आगे उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे तब वुह अपराध जो उस ने किया है क्षमा किया जायगा॥ २३। और जब तुम उस देश में पहुंचो और खाने के लिये भांति भांति के पेड़ लगाओ तो तुम उस के फल को अखतनः

समझो तीन बरस लों तुम्हारे लिये अखतनः के तुल्य रहे वुह खाया न जायगा॥ २४। परंतु चौथे बरस उस के सारे फल परमेश्वर की स्तुति के लिये पवित्र होंगे॥ २५। और पांचवें बरस तुम उस का फल खाओ जिसतें तुम्हारे लिये अपनी बढ़ती देवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ २६। तुम लोहू सहित मत खाओ और टोना मत करो और समयों को न मानो॥ २७। तुम अपने सिरों के बालों को गोलाई से मत मुड़ाओ और अपनी दाढ़ी के कोनों को मत बिगाड़ो॥ २८। मृतकों के लिये अपने मांस को मत काटो और अपने ऊपर गोदने से चिन्ह मत करो मैं परमेश्वर हूं॥ २९। बेश्या बनाने के लिये अपनी कन्या से व्यभिचार मत करा ऐसा न होवे कि देश बेश्यागामी में पड़े और दुष्टता से परिपूर्ण होवे॥ ३०। मेरे बिश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान की प्रतिष्ठा करो मैं परमेश्वर हूं॥ ३१। ओझा को मत मानो और टोन्हों का पीछा करके आप को अशुद्ध मत करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ३२। पक्के बालों के आगे उठ खड़ा हो और पुरनिया के रूप को प्रतिष्ठा दे और अपने ईश्वर से डर मैं परमेश्वर हूं॥ ३३। यदि तुम्हारे देश में परदेशी टिके तो तुम उस को मत खिजाओ परंतु परदेशी को जो तुम्में बास करता है ऐसा जानो जैसा कि वुह तुम्में जन्मा और उसे अपने तुल्य प्यार करो इस लिये कि तुम मिस्र की भूमि में परदेशी थे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ३५। बिचार में परिमाण में तौल में मापने में अधर्म्म मत करो॥ ३६। धर्म्म का तुला धर्म्म का नपुआ धर्म्म की दससेरिया और धर्म्म की पसेरी तुम्में होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया॥ ३७। सो तुम मेरी समस्त बिधि और मेरे बिचारों को पालन करो और उन्हें मानो मैं परमेश्वर हूं॥

२० बीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि अब तू इसराएल के संतानों को कह कि जो कोई इसराएल के संतानों में से अथवा परदेशी जो उन में टिका है अपने बंश में से मोलक को भेंट चढ़ा

वेगा वुह निश्चय घात किया जायगा देश के लोग उस पर पत्थरवाह करें॥ ३। और मैं उस मनुष्य पर बैर की रुखाई करूंगा और उस के लोगों में से उसे काट दूंगा इस लिये कि उस ने अपने बंश में से मोलक को चढ़ाया जिसतें मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र और मेरे पवित्र नाम का अपमान करे। ४। और यदि देश के लोग किसी भांति से उस मनुष्य से आंख छिपावें जिस ने अपने बंश में से मोलक को भेंट चढ़ाया है और उसे घात न करें॥ ५। तो मैं उस मनुष्य पर और उस के घराने पर बैर की रुखाई करूंगा और उसे उन सब समेत जो मोलक से व्यभिचार करते हैं उन्हें अपने लोगों में से काट डालूंगा॥ ६। और उस मनुष्य पर जो ओझाओं और टोन्हों की ओर जाता है जिसतें उन के समान व्यभिचार करे मैं उस मनुष्य पर अपना क्रोध भड़काऊंगा और उसे उस के लोगों में से काट डालूंगा॥ ७। सो अब आप को पवित्र करो और पावन होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ८। और मेरी व्यवस्थों को स्मरण करो और उन्हें मानो मैं वुह परमेश्वर हूं जो तुम्हें पवित्र करता है॥ ९। जो कोई अपनी माता अथवा पिता को धिक्कारे सो निश्चय मार डाला जायगा क्योंकि उस ने अपने माता पिता को धिक्कारा है उस का लोहू उसी पर है॥ १०। और जो मनुष्य किसी की पत्नी से अथवा अपने परोसी की पत्नी से कुकर्म करे कुकर्म्मी और कुकर्म्मिणी दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे॥ ११। और जो मनुष्य अपने पिता की पत्नी से व्यभिचार करे सो दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे क्योंकि उस ने अपने पिता का नंगापन खोला उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १२। और जो मनुष्य अपनी बहू से कुकर्म्म करे वे दोनों निश्चय मार डाले जायेंगे उन्हों ने गड़बड़ किया है उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १३। और यदि कोई मनुष्य पुरुषगामी होवे तो उन दोनों ने घिनत कार्य किया है वे अवश्य मार डाले जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १४। और यदि कोई स्त्री को और उस की माता को भी रक्खे यह दुष्टता है वे तीनों के तीनों जलाये जायेंगे जिसतें तुम्हों में दुष्टता न रहे॥ १५। और यदि कोई मनुष्य पशु से कुकर्म्म करे वुह निश्चय मार डाला जायगा और उस पशु को घात करो। १६। और यदि स्त्री

पशु से कुकर्म्म करे और उस के तले होय तो उस स्त्री को और उस पशु को मार डालो वे निश्चय प्राण से मारे जावें उन का लोहू उन्हीं पर है॥ १७। और यदि कोई मनुष्य अपनी बहिन को अथवा अपने पिता की बेटी को अथवा अपनी माता की बेटी को लेके आपुस में एक दूसरे की नग्नता देखे यह दुष्ट कर्म्म है वे दोनों अपने लोगों के आगे मार डाले जायेंगे उस ने अपनी बहिन का नंगापन प्रगट किया वुह दोषी होगा॥ १८। और यदि मनुष्य रजस्वला स्त्री के साथ सोवे और उस की नग्नता उघारे तो उस ने उस का सोता उघारा है और उस ने अपने लोहू का सोता खुलवाया वे दोनों अपने लोगों से काटे जायेंगे॥ १९। और तू अपनी मौसी और अपनी फूफू की नग्नता मत उघार क्योंकि उस ने अपने समीपी कुटुम्ब का उघारा है वे दोषी होंगे॥ २०। और यदि कोई अपनी चाची के साथ कुकर्म्म करे उस ने अपने चाचा की नग्नता को उघारा है वे अपने पाप को भोगेंगे वे निर्बंश मरेंगे॥ २१। और यदि मनुष्य अपने भाई की पत्नी को लेवे यह अशुद्ध कर्म्म है उस ने अपने भाई की नग्नता उघारी है वे निर्बंश होंगे॥ २२। सो तुम मेरी समस्त बिधि का और मेरे न्यायों का पालन करो और उन पर चलो जिसतें जिस देश में मैं तुम्हें बसाने को ले जाता हूं सो तुम्हें उगल न देवे॥ २३। तुम उन लोगों के व्यवहारों पर जिन्हें मैं तुम्हारे आगे हांकता हूं मत चलो क्योंकि उन्हों ने ऐसे ही सब काम किये इसी लिये मैं ने उन से घिन किई॥ २४। परंतु मैं ने तुम्हें कहा कि तुम उन के देश के अधिकारी होओगे और मैं उस देश को तुम्हें दूंगा जहां दूध और मधु बहि रहा है मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें लोगों में से चुन लिया है॥ २५। सो तुम पवित्र और अपवित्र पशुन में और अपवित्र और पवित्र पक्षियों में ब्योरा करो और तुम पशुन और पक्षियों और जीवधारी के कारण से जो भूमि पर रेंगता है जिन्हें मैं ने तुम्हारे लिये अपवित्र ठहराया है आप को अपवित्र न करो॥ २६। और मेरे लिये पवित्र हो जाओ क्योंकि मैं परमेश्वर पवित्र हूं और मैं ने तुम्हें लोगों में से चुन लिया है जिसतें तुम मेरे होओ॥ २७। और जो मनुष्य अथवा स्त्री ओझा अथवा टोन्हा हो सो निश्चय मार डाला जाय वे पत्थरवाह किये जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर होवे॥

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि हारून के बेटे याजकों से कह और उन्हें बोल कि अपने लोगों की मृत्यु के कारण कोई अशुद्ध न होवे॥ २। परंतु अपने समीपी कुटुम्ब के लिये अपनी माता अपने पिता अपने पुत्र अपनी पुत्री और अपने भाई के लिये॥ ३। और अपनी कुंआरी बहिन के लिये जो अनब्याही है उस के कारण वुह अशुद्ध होवे॥ ४। जो अपने लोगों में प्रधान है सो आप को अशुद्ध न करे जिसतें आप को हलुक करे॥ ५। वे अपने सिरों के बाल न मुड़ावें और अपनी दाढ़ी के कोनों को न मुड़ावें और अपने मांस को न काटें॥ ६। वे अपने ईश्वर के लिये पवित्र बनें और अपने ईश्वर के नाम को हलुक न करें क्योंकि वे परमेश्वर के लिये आग की भेंट ईश्वर को भोग लगाते हैं सो वे पवित्र होंगे॥ ७। वे बेश्या को अथवा तुच्छ को पत्नी न करें और न उस स्त्री को जो पति से त्यागी गई है क्योंकि वे अपने ईश्वर के लिये पवित्र हैं॥ ८। इस लिये तू उसे पवित्र कर क्योंकि वुह तेरे ईश्वर का भोजन चढ़ाता है वुह तेरे लिये पवित्र होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा शुद्धकर्त्ता पवित्र हूं॥ ९। और यदि किसी याजक की पुत्री बेश्या का कर्म्म करके आप को तुच्छ करे वुह अपने पिता को तुच्छ करती है वुह आग से जलाई जायगी॥ १०। और वुह जो अपने भाइयों में प्रधान याजक है जिस के सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया और जो स्थापित किया गया कि वस्त्र पहिने सो अपना सिर नंगा न करे और अपने कपड़े न फाड़े॥ ११। वुह किसी लोथ के पास न जाय और न अपने पिता और न अपनी माता के लिये आप को अशुद्ध करे॥ १२। और कधी पवित्र स्थान से बाहर न जाय और अपने ईश्वर के पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि उस के ईश्वर के अभिषेक के तेल का मुकुट उस पर है मैं परमेश्वर हूं॥ १३। और वुह कुंआरी को पत्नी करे॥ १४। बिधवा अथवा त्यागी गई अथवा तुच्छ अथवा बेश्या को न लेवे परंतु वुह अपने ही लोगों के बीच में की कुंआरी से बिवाह करे॥ १५। अपने बंश को अपने लोगों में तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उसे पवित्र करता हूं। १६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके

बोला॥ १७। कि हारून से कह कि जो कोई तेरे बंश में से अपनी अपनी पीढ़ीयें। में खोट होय सो अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने को समीप न आवे॥ १८। क्योंकि वुह पुरुष जिस में कुछ खोट होवे सो समीप न आवे जैसे अंधा अथवा लंगड़ा अथवा वुह जिस की नाक चिपटी हो अथवा जिस पर कुछ उभड़ा है॥ १९। अथवा वुह जिसका पांव अथवा हाथ टूटा हो॥ २०। अथवा कुबड़ा अथवा बावना अथवा उस की आंख में कुछ खोट हो अथवा दाद अथवा खजुली अथवा अंड बृद्ध हो॥ २१। हारून याजक के बंश में से कोई मनुष्य जिस में खोट है निकट न आवे कि परमेश्वर के होम की भेंट चढ़ावे उस में खोट है वुह अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने को पास न आवे॥ २२। वुह अपने ईश्वर का नैवेद्य अति पावन और पवित्र खावे॥ २३। केवल वुह घूंघट के भीतर न जाय और बेदी के पास न आवे इस लिये कि उस में खोट है मेरे पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें शुद्ध करता हूं॥ २४। तब मूसा ने हारून और उस के बेटे और समस्त इसराएल के संतानों को यह सब कहा॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि हारून और उस के बेटों से कह कि वे इसराएल के संतान की पवित्र बस्तुन से आप को अलग रक्खें और मेरे नाम की उन बस्तुन के कारण जिन्हें वे मेरे लिये पवित्र करते हैं निंदा न करें मैं परमेश्वर हूं॥ ३। उन्हें कह कि तुम्हारी पीढ़ियों में और तुम्हारे बंशों में जो कोई उन पवित्र बस्तुन के पास जो इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये पवित्र करते हैं अपनी अपवित्रता रखके जाय वुह मनुष्य मेरे पास से काटा जायगा मैं परमेश्वर हूं॥ ४। जो कोई हारून के बंश में से कोढ़ी अथवा प्रमेही हो और जो मृतक के कारण से अपवित्र है और उसे जिस को प्रमेह है जब लों वुह पवित्र न हो ले तब लों पवित्र बस्तुन में से कुछ न खावे॥ ५। और जो कोई किसी रेंगवैया जंतु को छूवे जिस्से वुह अपवित्र होवे अथवा किसी मनुष्य को जिस्से वुह अपवित्र हो सके जो अपवित्रता उस में होवे॥ ६। वुह प्राणी

जिस ने ऐसा कुछ छूआ सांझ लों अपवित्र रहेगा और जब लों अपना शरीर पानी से धो न ले पवित्र वस्तु में से कुछ न खाय॥ ७। और जब सूर्य्य अस्त होवे तब वुह पवित्र होगा और उस के पीछे वुह पवित्र वस्तें खाय क्योंकि यह उस का आहार है॥ ८। जो कुछ आप से मरे अथवा फाड़ा जाय वुह उसे खाके आप को अशुद्ध न करे मैं परमेश्वर हूं॥ ९। इस लिये वे मेरी व्यवस्थों का पालन करें ऐसा न होवे की उस के लिये पापी होवें और मरें यदि वे उसे तुच्छ करें मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूं॥ १०। कोई परदेशी पवित्र वस्तु न खाय और न याजक का पाहुन और न बनिहार पवित्र वस्तु को खाय॥ ११। परंतु जिसे याजक ने अपने दाम से मोल लिया हो सो उसे खावे और वुह जो उस के घर में उत्पन्न हुआ है सो उस के भोजन में से खावे॥ १२। यदि याजक की कन्या किसी परदेशी से व्याही जाय तो वुह भी चढ़ाई हुई पवित्र वस्तुन में से न खाय॥ १३। पर यदि याजक की कन्या विधवा हो जाय अथवा त्यक्त होवे और निर्वंश हो और युवावस्था के समान अपने पिता के घर में फिर आवे तो वुह अपने पिता के भोजन में से खाय परंतु परदेशी उसे न खाय॥ १४। और यदि पवित्र वस्तुन में से कोई अनजान खा जावे तो वुह उस के पांचवें भाग को मिलावे और उसे उस पवित्र वस्तु सहित याजक को देवे॥ १५। और इसराएल के संतान की पवित्र वस्तुन को जो उन्हों ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया है वे निंदा न करें॥ १६। और आप पवित्र वस्तुन के खाने से पाप का बोझ उन से न उठवावें क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूं॥ १७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १८। कि हारून को और उस के बेटों को और इसराएल के समस्त संतान को कहके बोल कि इसराएल के घराने में से अथवा इसराएल के परदेशियों में से जो कोई अपनी समस्त मनौती के लिये भेंट और अपनी समस्त मनमंता की भेंट जो वे परमेश्वर के लिये होम की भेंट के लिये चढ़ावें॥ १९। सो अपनी ग्राह्यता के लिये ढोरों में से अथवा भेड़ बकरी में से निष्खोट नरख होवे॥ २०। और जिस पर दोष है उसे मत चढ़ाइयो क्योंकि तुम्हारे लिये ग्राह्य न होगा॥ २१। और जो कोई अपनी मनौती पूरी करने को अथवा वांछित भेंट ढोरों में से अथवा भेड़ में से कुशल की भेंट

परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो ग्राह्य होने के लिये निर्दोष होवे उस में कुछ खोट न होवे॥ २२। अंधा अथवा टूटा अथवा लंगड़ा लूला अथवा जिस पर मसा अथवा दाद अथवा खुजली होवे परमेश्वर के लिये भेंट मत चढ़ाइयो उन में से होम की भेंटों को परमेश्वर की बेदी पर मत चढ़ाइयो॥ २३। बैल अथवा मेम्ना जिस का कोई अंग अधिक अथवा घटा होवे उसे बांछित भेंट के लिये चढ़ावे परंतु मनौती के कारण ग्राह्य न होगा॥ २४। कुचला हुआ अथवा दबा हुआ अथवा टुंडा अथवा काटा हुआ परमेश्वर के लिये मत चढ़ाइयो अपने देश में ऐसों को मत चढ़ाइयो॥ २५। और इन्हों में से अपने ईश्वर को नैवेद्य किसी परदेशी की ओर से मत चढ़ाइयो इस लिये कि उन की सड़ाहट उन में है वे खोटे हैं वे तुम्हारे लिये ग्राह्य न होंगे॥ २६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २७॥ कि जब बैल अथवा भेड़ बकरी उत्पन्न होवे तब सात दिन लों अपनी माता के साथ रहे और आठवें दिन से और उस्से आगे परमेश्वर के होम की भेंट के लिये ग्राह्य होगा॥ २८। और गाय अथवा भेड़ को बच्चे समेत एक ही दिन मत मारियो॥ २९। और जब तुम परमेश्वर के लिये धन्यवाद के बलिदान भेंट चढ़ाओ तब अपनी ग्राह्यता के लिये उसे चढ़ाओ॥ ३०। उसी दिन खाया जाय तुम उस में से दूसरे दिन लों तनिक भी न छोड़ियो मैं परमेश्वर हूं॥ ३१। और मेरी आज्ञाओं को धारण करो और उन्हें पालन करो मैं परमेश्वर हूं॥ ३२। और मेरे पवित्र नाम को हलुक न करो परंतु मैं इसराएल के संतानों में पवित्र हूंगा मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूं॥ ३३। जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया कि तुम्हारा ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर हूं॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि परमेश्वर के पर्ब्ब जिन्हें तुम पवित्र बुलावा सभा के लिये प्रचारोगे ये मेरे पर्ब्ब हैं॥ ३। छः दिन काम काज किया जाय परंतु सातवां दिन जो बिश्राम का है उस में पवित्र सभा होगी कोई कार्य्य न करो यह तुम्हारे समस्त निवासों में परमेश्वर के बिश्राम का दिन है॥

४। ये परमेश्वर के पर्ब्ब और पवित्र सभा जिन्हें तुम उन के समय में प्रचारेगे॥ ५। पहिले मास की चोदहवीं तिथि की सांझ को परमेश्वर का फसह है॥ ६। और उसी मास की पंद्रवीं तिथि को परमेश्वर के अखमीरी रोटी का पर्ब्ब है सात दिन लों अवश्य अखमीरी रोटी खाइयो॥ ७। पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन कोई संसारिक कार्य्य मत करियो॥ ८। परंतु सात दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो और सातवें दिन पवित्र सभा है उस दिन कोई संसारिक कार्य्य मत कीजियो॥ ९। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १०। कि ईसराएल के संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देता हूं और उस का अन्न लेओ तब तुम अपनी बालों में से एक गट्ठा पहिले फल याजक पास लाओ॥ ११। वुह उसे परमेश्वर के आगे हिलावे कि तुम्हारी ओर से ग्राह्य होवे और विश्राम के दूसरे दिन बिहान को याजक उसे हिलावे॥ १२। और उस दिन जिस समय वुह गट्ठा हिलाया जाय पहिले बरस का एक निष्खोट मेम्ना होम की भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाओ॥ १३। और उस की भेंट और भोजन की भेंट दो दसवां भाग चोखा पिसान तेल मिलाके होम की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये होवे और उस के पीने की भेंट सेर भर दाखरस होवे॥ १४। और जिस दिन लों अपने ईश्वर के लिये भेंट चढ़ाओ रोटी और भुना हुआ अन्न अथवा हरी बालें मत खाइयो तुम्हारी पीढ़ियों में यह सनातन की विधि है॥ १५। और विश्राम दिन के बिहान से जब से हिलाने की भेंट के लिये तुम ने गट्ठा चढ़ाया है सात अठवारे गिन के पूरा करियो॥ १६। सातवें विश्राम के दिन के पीछे बिहान से पचास दिन गिन लो और परमेश्वर के लिये नये भोजन की भेंट चढ़ाओ॥ १७। अपने निवासों में से दो दसवें भाग की दो रोटी लाइयो वे चोखे पिसान की होवें और वुह खमीर के साथ पकाया जाय और परमेश्वर के लिये पहिला फल लाइयो॥ १८। और पहिले बरस के निष्खोट सात मेम्ने और एक बछड़ा और दो मेढ़े उन के साथ चढ़ाइयो यह परमेश्वर के होम की भेंट उन के भोजन की और पीने की भेंट सहित परमेश्वर के सुगंध के लिये होम की भेंट है॥ १९। फिर पाप की भेंट के लिये

बकरी का एक मेम्ना और कुशल की भेंट के लिये पहिले बरस के दो मेम्ने बलि कीजियो॥ २०। और याजक उन्हें पहिले फल की रोटी के संग परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये दो मेम्ना समेत हिलावे याजकों के लिये वे परमेश्वर के आगे पवित्र होंगे॥ २१। और उसी दिन प्रचारियो वुह तुम्हारे पवित्र बुलावा के लिये होवे कोई संसारिक कार्य्य मत करियो यह तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों बिधि होगी॥ २२। और जब अपने खेत लवो तब तू अपने खेत के कोनों को झाड़ के मत काटियो और लवने के पीछे मत बीनियो तू उसे कंगाल और परदेशी के लिये छोड़ियो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ २३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २४। कि इसराएल के संतान से कह कि सातवें मास की पहिली तिथि तुम्हारे लिये एक बिश्राम का दिन और नरसिंगे के शब्द से स्मारक पवित्र बुलावा है॥ २५। कोई संसारिक कार्य्य मत कीजियो परंतु परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो॥ २६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २७। सातवें मास की दसवीं तिथि प्रायश्चित्त देने का दिन है तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा उस दिन अपने प्राण में शोकित होओ और परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाओ॥ २८। उसी दिन कोई काम मत करियो क्योंकि वुह प्रायश्चित्त का दिन है तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने लिये प्रायश्चित्त करो॥ २९। क्योंकि जो प्राणी उस दिन में शोकित न होगा वुह अपने लोगों में से काटा जायगा॥ ३०। और जो प्राणी उस दिन में कोई काम करेगा मैं उसी प्राणी को उस के लोगों में से नाश करूंगा॥ ३१। किसी रीति का काम मत करना यह तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों सनातन के लिये बिधि होगी॥ ३२। यह तुम्हारे लिये एक बिश्राम का दिन होगा अपने प्राण को शोकित करियो तुम उस मास की नवीं तिथि को सांझ से सांझ लों अपने बिश्राम के लिये पालियो॥ ३३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ३४। इसराएल के संतानों से कह कि सातवें मास की पंद्रहवीं तिथि से सात दिन लों परमेश्वर के तंबू का पर्ब्ब है॥ ३५। पहिले दिन पवित्र बुलावा होवे उस दिन कोई संसारिक कार्य्य न करना॥ ३६। सात

दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाओ आठवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा है सो तुम परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो यह सभा का दिन है उस में संसारिक कार्य्य मत कीजियो॥ ३७। परमेश्वर के ये पर्ब्ब हैं जिन में तुम पवित्र बुलावा प्रचारियो जिसतें परमेश्वर के लिये होम की भेंट आग से बनाई हुई और भोजन की भेंट एक बलिदान और पीने की भेंट हर एक वस्तु अपने दिन में चढ़ाइयो॥ ३८। सो परमेश्वर के बिश्राम के दिनों के और अपनी भेंटों से अधिक और तुम्हारी समस्त मनौती से अधिक और तुम्हारे समस्त मनमंता भेंटों से अधिक जिन्हें तुम परमेश्वर के लिये चढ़ाते हो॥ ३९। सातवें मास की पंद्रहवीं तिथि जब खेतों का अनाज एकट्ठा कर लो तब तुम सात दिन लों परमेश्वर के लिये पर्ब्ब मानियो पहिला दिन बिश्राम का होगा और आठवां दिन बिश्राम का होगा॥ ४०। सो तुम पहिले दिन सुंदर वृक्षों का फल और खजूर की डाली और घने वृक्षों की डालियां और नालियों का बेंत लीजियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे सात दिन लों आनंद कीजियो॥ ४१। और बरस में परमेश्वर के लिये सात दिन भर पर्ब्ब के लिये पालन करियो यह तुम्हारी पीढ़ियों में सनातन की विधि होगी सातवें मास योंही स्मरण कीजियो॥ ४२। सात दिन लों डालियों की छान में रहियो जितने इसराएली हैं सब के सब डालियों की छान में रहें॥ ४३। जिसतें तुम्हारी पीढ़ी जाने कि जब मैं इसराएल के संतानों को मिस्र के देश से निकाल लाया मैं ने उन्हें डालियों की छान में बसाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ४४। सो मूसा ने इसराएल के संतानों से परमेश्वर के पर्ब्बों को कह सुनाया॥

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर कि दीपक को नित जलाने के कारण कूटे हुए जलपाई का निर्म्मल तेल तुझ पास लावें॥ ३। हारून उसे मंडली के तंबू में साक्षी के ओट के बाहर सांझ से बिहान लों परमेश्वर के आगे रीति से रक्खे

तुम्हारी पीढ़ियों के लिये यह बिधि सनातन की होगी॥ ४। वही दीपकों को पवित्र दीअट पर परमेश्वर के आगे रीति से सदा रक्खा करे॥ ५। और चोखे पिसान लेके उस्से बारह फुलके पका एक एक फुलका दो दसवें अंश का होवे॥ ६। और तू उन्हें परमेश्वर के आगे पवित्र मंच पर छः छः करके दो पांती में रख॥ ७। और हर एक पांती पर निराला गंधरस रखना जिसतें वुह रोटी स्मरण के लिये होवे अर्थात् होम की भेंट परमेश्वर के लिये॥ ८। यह सनातन की बाचा के लिये इसराएल के संतान से लेके हर बिश्राम दिन को परमेश्वर के आगे रीति से नित्य रक्खा करे॥ ९। और वुह हारून की और उस के बेटों की होंगी वे उन्हें पवित्र स्थान में खावें यह उस के लिये परमेश्वर के होम की भेंटों में से अत्यंत पवित्र विधि नित्य के लिये है॥ १०। तब एक इसराएली स्त्री का बेटा जिस का पिता मिस्री था निकल के इसराएलीयों में गया और उस इसराएली स्त्री का बेटा और इसराएल का एक जन छावनी में झगड़ रहेथे॥ ११। और इसराएली स्त्री के बेटे ने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई और धिक्कारा और उस की माता का नाम सलूमियत था जो दिबरी के पुत्र दान के कुल से थी तब वे उसे मूसा पास लाये॥ १२। और वुह बंधन में रक्खा गया जिसतें उन पर प्रगट करे कि परमेश्वर क्या आज्ञा करता है॥ १३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १४। जिस ने अपनिंदा किई है उसे छावनी के बाहर निकाल ले जा और जितनों ने सुना वे अपने हाथ उस के सिर पर रक्खें और सारी मंडली उसे पत्थरवाह करे॥ १५। और इसराएल के संतानों से कह कि जो कोई अपने ईश्वर की निंदा करेगा सो अपना पाप भोगेगा॥ १६। और जो परमेश्वर के नाम की अपनिंदा करे सो निश्चय प्राण से मारा जायगा समस्त मंडली उसे निश्चय पत्थरवाह करे चाहे वुह परदेशी होय चाहे देशी जब उस ने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई वुह प्राण से मारा जायगा॥

१७। और जो दूसरे को मार डालेगा सो निश्चय घात किया जायगा॥ १८। और जो कोई पशु को मार डाले सो उस की संती पशु देवे॥ १९। और यदि कोई अपने परोसी को खोटा करे जैसा करेगा वैसा ही उस

पर किया जायगा॥ २०। ताेड़ने की संती ताेड़ना आंख की संती आंख दांत की संती दांत जैसा उस ने मनुष्य काे खाेटा किया है उस्से वैसा ही किया जावे॥ २१। और वुह जाे पशु काे मार डाले वुह उस का पलटा देवे और वुह जाे मनुष्य काे मार डाले प्राण से मारा जाय॥ २२। तुम्हारी एक ही रीति की व्यवस्था हाेवे जैसी परदेशी की वैसी ही देशी के विषय में हाेवे क्याेंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ २३। तब मूसा ने इसराएल के संतान से कहा कि उस जन काे तंबू के बाहर निकाल ले जावें और उस पर पत्थरवाह करें साे इसराएल के संतानाें ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा काे आज्ञा किई थी वैसा ही किया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर सीना के पहाड़ पर मूसा से कहके बाेला॥ २। कि इसराएल के संतानाें काे कहके बाेल कि जब तुम उस देश में जाे मैं तुम्हें देता हूं पहुंचाे तब वुह भूमि परमेश्वर के लिये बिश्राम दिन काे बिश्राम करे॥ ३। छः बरस अपने खेताें काे बाेआे और छः बरस अपने दाखाें काे सवांर और उस का फल बटाेर॥ ४। परंतु सातवां बरस देश के लिये चैन का बिश्राम हाेगा परमेश्वर के लिये बिश्राम न ताे खेत काे बाेना और न अपने दाखाें काे सवांरना॥ ५। जाे कुछ आप से आप उगे तू उसे मत लव और बिनसवांरी हुई लता के दाखाें काे मत बटाेर कि देश के लिये चैन का बरस है॥ ६। साे भूमि का बिश्राम तुम्हारे लिये और तुम्हारे सेवकाें और तुम्हारे दास और दासी और तुम्हारे बनिहार और तुम्हारे परदेशियाें के लिये जाे तुम्में टिकते हैं॥ ७। और तुम्हारे ढाेर और जाे पशु तुम्हारे देश में है उस का सब प्राप्त उन के खाने के लिये हाेगा॥

८। और तू सात बिश्राम के बरसाें काे अपने लिये गिन सात गुने सात बरस और सात बरसाें के बिश्राम के समय तुम्हारे लिये उंचास बरस हाेंगे॥ ९। तब तू सातवें मास की दसवीं तिथि में आनंद का नरसिंगा फूंकवा और प्रायश्चित्त के दिन अपने सारे देश में नरसिंगा फूंकवा॥ १०। साे तुम पचासवें बरस काे पवित्र जानाे और देश में उस के सारे

बासियों में मुक्ति प्रचारो यह तुम्हारे लिये आनंद है और तुम्में से हर एक मनुष्य अपने अपने अधिकार को और अपने घराने को फिर जाय॥ ११। पचासवां बरस तुम्हारे लिये आनंद है तुम कुछ मत बोइयो न उसे जो उस में आप से उगे काटियो बिनसवांरी हुई दाख की लता के दाखों को मत बटोरो॥ १२। क्योंकि यह आनंद है यह तुम्हारे लिये पवित्र होगा खेतों में जो बढ़े तुम उसे खाओ॥ १३। उस आनंद के बरस तुम्में से हर एक अपने अपने अधिकार को फिर जाय॥ १४। और यदि तू अपने परोसी के हाथ बेचे अथवा अपने परोसी से मोल ले तो एक दूसरे पर अंधेर मत कीजियो॥ १५। आनंद के बरसों के पीछे के समान गिन के अपने परोसी से मोल लेना और बरसों के प्राप्त की गिनती के समान तेरे हाथ बेचे॥ १६। बरसों की बहुताई के समान उस का मोल बढ़ाइयो और बरसों की घटी के समान उस का मोल घटाइयो क्योंकि प्राप्त की गिनती के समान वुह तेरे हाथ बेंचता है॥ १७। इस लिये एक दूसरे पर अंधेर मत करो परंतु अपने ईश्वर से डरियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

सो तुम मेरी बिधि को मानो और मेरे न्याय को धारण और पालन करियो और देश में कुशल से बास करोगे॥ १९। और भूमि तुम्हें अपने फल देगी और तुम खाके तृप्त होओगे और उस पर कुशल से रहा करोगे॥ २०। और यदि तुम कहो कि हम सातवें बरस क्या खायेंगे क्योंकि न बोवेंगे न बटोरेंगे॥ २१। तब मैं छठवें बरस अपना आशीष तुम्हें देऊंगा और उस में तीन बरस का प्राप्त होगा॥ २२। आठवें बरस बोओ और नौवें बरस लों पुराना अनाज खाओ जब लों उस में अन्न फेर न होवे तब लों पुराना अन्न खाओ॥ २३। भूमि सदा के लिये बेंची न जावे क्योंकि भूमि मेरी है और तुम मेरे संग परदेशी और निवासी हो॥ २४। तुम अपने अधिकार की समस्त भूमि के लिये छुटकारा देना॥ २४। यदि तेरा भाई कंगाल होय और कुछ अपने अधिकार में से बेंचे और कोई उसे छुड़ाने आवे तब वुह अपने भाई की बेंचीहुई छुड़ा ले॥ २६। यदि उस मनुष्य के छुड़ाने को कोई न होवे और आप से छुड़ा सके॥ २७। तब उस के बेचने के बरस गिने जावें और जिस

पास बेंचा है उस को बढ़ती फेर देवे जिसतें वुह अपने अधिकार पर फिर जाय॥ २८। परंतु यदि वुह फेर देने पर खड़ा न हो तब जो बेंचा हुआ है सो आनंद के बरस लों उसी के हाथ में रहे जिस ने उसे मोल लिया और आनंद में वुह छूट जायगी तब वुह अपने अधिकार पर फिर जावे॥ २९। और यदि कोई घर को जो भीत नगर में है बेंचने के पीछे बरस भर में उसे छुड़ावे पूरे बरस में वुह उसे छुड़ावे॥ ३०। और यदि बरस भर में छुड़ाया न जाय तो वुह घर जो भीत नगर में है सो उस के लिये जिस ने मोल लिया है उस की समस्त पीढ़ियों में दृढ़ रहेगा और वुह आनंद के बरस में बाहर न जायगा॥ ३१। परंतु गांव के घर जिन के आस पास भीत न होवे देश के खेतों के समान गिने जावें वे छुड़ा सकें और आनंद में छूट जावेंगे॥ ३२। लावियों के नगर और उन के अधिकार के नगरों के घर जब चाहें तब लावी छुड़ावें॥ ३३। और यदि कोई मनुष्य लावियों से मोल लेवे तब जो घर बेचा गया और उस के अधिकार का नगर फिर आनंद के बरस में छूट जायगा क्योंकि लावियों के नगर के घर इसराएल के संतानों में उन के अधिकार हैं॥ ३४। परंतु वे खेत जो उन के नगरों के सिवाने में हैं बेंचे न जावें क्योंकि यह उन के सनातन का अधिकार है॥ ३५। और यदि तुम्हारा भाई दुःखी और कंगाल हो जावे तो तुम उस की सहाय करो चाहे वुह परदेशी होय चाहे पाहुन जिसतें वुह तुम्हारे साथ जीवन काटे॥ ३६। तू उस्से ब्याज और बढ़ती मत ले परंतु अपने ईश्वर से डर जिसतें तेरा भाई तेरे साथ जीवन काटे॥ ३७। तू उसे ब्याज पर ऋण मत दे और बढ़ती के लिये भोजन का ऋण मत दे॥ ३८। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम्हें कनआन का देश देऊं और तुम्हारा ईश्वर होऊं॥ ३९। और यदि तेरा भाई तुझ पास कंगाल हो जाय और तुझ पास बेंचा जाय तो तू उस्से दास की नाईं सेवा मत करवा॥ ४०। परंतु वुह बनिहार और पाहुन की नाईं तेरे साथ रहे और आनंद के बरस लों तेरी सेवा करे॥ ४१। और उस के पीछे वुह अपने लड़कों समेत तुझ से अलग हो जायगा और अपने घराने और अपने पिता के अधिकार को फिर जाय॥ ४२। इस लिये कि वे मेरे सेवक हैं जिन्हें मैं

मिस्र की भूमि से बाहर ले आया वे दासें की नाईं बेंचे न जावें ॥ ४३ । तू कठारता से उन से सेवा मत ले परंतु अपने ईश्वर से डर ॥ ४४ । तुम्हारे दास और तुम्हारी दासियां जिन्हें तुम अन्य देशियों में से जो तुम्हारे आस पास हैं रक्खोगे उन्हीं में से दास और दासियां मोल लेओ ॥ ४५ । और उन परदेशियों के लड़कों में से भी जो तुम्में बास करते हैं और उन के घराने में से जो तुम्हारी भूमि में उत्पन्न ज़ए हैं मोल लीजियो वे तुम्हारे अधिकार होंगे ॥ ४६ । और तुम उन्हें अपने पीछे अपने लड़कों के लिये अधिकार में लेओ वे सदा लों तुम्हारे दास हैं परंतु तुम अपने भाइयों पर जो इसराएल के संतान हैं एक दूसरे पर कठारता से सेवा मत लेओ ॥ ४७ । और यदि कोई पाज़न अथवा परदेशी तेरे पास धनी होवे और तेरा भाई जो उस के साथ है कंगाल हो जावे और उस परदेशी अथवा पाज़न के हाथ जो तेरे साथ है अथवा उस के हाथ जो परदेशी के घरानें में से होय किसी के हाथ आप को बेंच डाले ॥ ४८ । उस के बेंचे जाने के पीछे वह फेर छुड़ाया जा सके उस के भाइयों में से उसे छुड़ा सके ॥ ४९ । चाहे उस का चचा चाहे उस के चचा का पुत्र अथवा जो कोई उस के घराने में उस का गोती हो उस को छुड़ा सके और यदि उस्से हो सके तो वुह आप को छुड़ावे ॥ ५० । और वुह अपने बेंचे जाने के बरस से लेके आनंद के बरस लों गिने और उस के बेंचे जाने का मोल बरसें की गिनती के समान होवे वुह बनिहार के समय के समान उस के साथ रहेगा ॥ ५१ । यदि बज़त बरस रहे तो वुह अपने छुड़ाने को उस मोल से जिस्से वुह बेंचा गया उन बरसें के समान फेर दे ॥ ५२ । और यदि आनंद के थोड़े बरस रह जायें तो वुह लेखा करे और अपने छुटकारे का मोल अपने बरसें के समान उसे फेर दे ॥ ५३ । और वुह बरस बरस के बनिहार के समान उस के साथ रहे और उस पर कठारता से सेवा न करवावे ॥ ५४ । और यदि वुह इन में छुड़ाया न जावे तो आनंद के बरस में वुह अपने लड़कों समेत छूट जायगा ॥ ५५ । क्योंकि इसराएल के संतान मेरे सेवक हैं वे मेरे सेवक जिन्हें मैं मिस्र के देश से निकाल लाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं ॥

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

अपने लिये मूर्त्ति अथवा खोदी ऊई प्रतिमा मत बनाइयो और पूजित मूर्त्ति मत खड़ी कीजियो और दंडवत करने के लिये पत्थर की मूर्त्ति अपनी भूमि में स्थापित मत करियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ २। तुम मेरे बिश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान को प्रतिष्ठा देओ मैं परमेश्वर हूं॥ ३। यदि तुम मेरी बिधि पर चलोगे और मेरी आज्ञाओं को धारण करके उन पर चलोगे॥ ४। तो मैं तुम्हारे लिये समय पर मेंह बरसाऊंगा और देश अपनी बढ़ती उगावेगा और खेत के वृक्ष अपने फल देंगे॥ ५। यहां लों कि अन्न झाड़ने का समय दाख तोड़ने के समय लों पऊंचेगा और दाख तोड़ने के समय लों बोने का समय पऊंचेगा और तुम खाके संतुष्ट होओगे और अपने देश में चैन से रहोगे॥ ६। और मैं देश में कुशल दूंगा और तुम लेट जाओगे और कोई तुम्हें न डरावेगा और मैं बुरे पशुओं को देश से दूर करूंगा और तुम्हारे देश में तलवार न चलेगी॥ ७। और तुम अपने बैरियों को खदेड़ोगे और वे तुम्हारे आगे तलवार से गिर जायेंगे॥ ८। और पांच तुम्ह से सौ को खदेड़ेंगे और सौ तुम्में से दस सहस्र को भगावेंगे और तुम्हारे बैरी तुम्हारे आगे तलवार से गिर जायेंगे॥ ९॥ मैं तुम्हारा पक्ष करूंगा और तुम्हें फलवंत करूंगा और मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा और अपनी वाचा को तुम से पूरी करूंगा॥ १०। और तुम पुराना अन्न खाओगे और नये के कारण पुराना लाओगे॥ ११। और मैं अपना तंबू तुम्में खड़ा करूंगा और मैं तुम से घिन न करूंगा॥ १२। और मैं तुम्हों में फिरा करूंगा और तुम्हारा ईश्वर होऊंगा और तुम मेरे लोग होओगे॥ १३। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम उन के दास न बनो और मैं ने तुम्हारे कांधों के जूओं की लकड़ियों को तोड़ा और तुम्हें खड़ा चलाया॥ १४। परंतु यदि तुम मेरी न सुनोगे और उन सब आज्ञाओं को पालन न करोगे॥ १५। और मेरी बिधि की निंदा करोगे अथवा तुम्हारे मन मेरे न्यायों को घिन करें ऐसा कि तुम मेरी आज्ञाओं को पालन न करो

पर मेरी बाचा तोड़ दो॥ १६। तो मैं भी तुम से वैसाही करूंगा और भय और क्षय रोग और तप्त ज्वर जो तेरी आंखों को नाश करेगा और मन को उदास और तुम अपने बीज अकारथ बोओगे क्योंकि तुम्हारे बैरी उसे खायेंगे॥ १७। और मैं तेरा साम्ना करूंगा और तुम अपने बैरियों के साम्ने जूझ जाओगे जो तुम्हारे बैरी हैं सो तुम पर राज्य करेंगे और कोई तुम्हारा पीछा न करते हो तुम भाग जाओगे॥ १८। इन सभों पर भी यदि तुम मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के कारण सतगुण तुम्हें दंड देऊंगा॥ १९। और तुम्हारे घमंड के बल को तोड़ूंगा और तुम्हारा आकाश लोहा के समान और तुम्हारी पृथिवी पीतल की नाईं कर देऊंगा॥ २०। और तुम्हारा बल संत से जाता रहेगा क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी बढ़ती न देगी और देश के पेड़ फल न पहुंचावेंगे॥

२१। और यदि तुम मेरे बिपरीत चलोगे और मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापोंके समान तुम पर सतगुण मरी लाऊंगा॥ २२। और मैं बनैले पशु भी तुम्में भेजूंगा और वे तुम्हारे बंश का भक्षण करेंगे और तुम्हारे पशुन को नाश करेंगे और तुम्हें गिनती में घटा देंगे और तुम्हारे मार्ग सूने पड़े रहेंगे॥ २३। और यदि मेरी इन बातों से न सुधरोगे परंतु मुझ से बिपरीत चलोगे॥ २४। तो मैं भी तुम्हारे बिपरीत चलूंगा और तुम्हारे पापों के लिये तुम्हें सतगुण दंड देऊंगा॥ २५। और मैं तुम पर तलवार लाऊंगा जो मेरी बाचा के झगड़े का पलटा लेनेवाली है और जब तुम अपने नगरों में एकट्ठे होओगे मैं तुम्हों में मरी भेजूंगा और तुम बैरियों के हाथ में सौंपे जाओगे॥ २६। और जब मैं तुम्हारी रोटी की लाठी तोड़ डालूंगा तब दस स्त्री तुम्हारी रोटियां एक भट्ठी में पकावेंगी और तुम्हारी रोटियां तौल के तुम्हें देंगी और तुम खाओगे परंतु तृप्त न होओगे॥ २७। और यदि तुम उस पर भी न सुनोगे परंतु मुझ से बिपरीत चलोगे॥ २८। तो मैं भी कोप से तुम्हारे बिपरीत चलूंगा मैं हां मैं हीं तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सतगुण ताड़ना करूंगा॥ २९। और तुम अपने बेटों का और अपनी बेटियों का मांस खाओगे॥ ३०। और मैं तुम्हारे ऊंचे स्थानों को ढा दूंगा

और तुम्हारी मूर्त्तियों को काट डालूंगा और तुम्हारी लोथ तुम्हारी मूर्त्तियों की लोथों पर फेकूंगा और आप मैं तुम से घिन करूंगा॥ ३१। और तुम्हारे नगरों को उजाड़ करूंगा और तुम्हारे पवित्र स्थानों को सूना करूंगा और मैं तुम्हारे सुगंध को न सूंघूंगा॥ ३२। और मैं तुम्हारी भूमि को उजाड़ूंगा और तुम्हारे शत्रु उस के कारण आश्चर्य मानेंगे॥ ३३। और मैं तुम्हें अन्यदेशियों में छिन्न भिन्न करूंगा और तुम्हारे पीछे से तलवार निकालूंगा और तुम्हारी भूमि उजाड़ होगी और तुम्हारे नगर उजड़ जायेंगे॥ ३४। देश अपने समस्त उजाड़ के दिनों में जब तुम अपने शत्रुन के देश में रहोगे बिश्राम का भोग करेंगे तब देश चैन करेगा और अपने बिश्रामों को भोग करेगा॥ ३५। जब लों वुह उजाड़ रहेगा तब लों चैन करेगा इस कारण कि जब तुम उस में बास करते थे तुम्हारे बिश्रामों में चैन न किया॥ ३६। और तुम्में जो बच रहे हैं मैं उन के बैरियों के देश में उन के मन में दुर्बलता डालूंगा और पात खड़कने का शब्द उन्हें खदेड़ेगा और वे ऐसे भागेंगे जैसे तलवार से भागते हैं और बिना किसी के पीछा करने से वे गिर पड़ेंगे॥ ३७। और वे ऐसे एक पर एक गिरेंगे जैसे तलवार के आगे और कोई उन का पीछा न करेगा और तुम अपने बैरी के आगे ठहर न सकोगे॥ ३८। और तुम अन्यदेशियों में नष्ट होओगे और तुम्हारे बैरियों का देश तुम्हें खा जायगा॥ ३९। और वे जो तुम्में से बच जायेंगे सो तुम्हारे बैरियों के देश में और अपने पाप में और अपने पितरों के पाप में क्षीण हो जायेंगे॥ ४०। यदि वुह अपने पापों को और अपने पितरों के पापों को अपने अपराधों के संग जो उन्हों ने मेरा अपराध किया और यह कि वे मेरे बिपरीत चले हैं मान लेंगे॥ ४१। और मैं भी उन के बिपरीत चला और उन के बैरियों के देश में उन्हें लाया यदि उन के अखतनः मन दीन हो जायेंगे और अपने दंड को अपने अपराध के योग्य समझेंगे॥ ४२। तब मैं यअकूब के संग अपनी बाचा को स्मरण करूंगा और अपनी बाचा इज़हाक के साथ और अपनी बाचा अबिरहाम के साथ स्मरण करूंगा और उस को स्मरण करूंगा॥ ४३। वही देश उन से छोड़ा जायगा जब लों वुह उन दिनों में उजाड़ पड़ा रहा अपने बिश्रामों

को भोग करेगा और वे अपने पाप के दंड को मान लगे इसी कारण कि उन्हों ने मेरी आज्ञाओं को तुच्छ जाना और इसी कारण कि उन के अंतःकरणों ने मेरी विधिन से घिन किया॥ ४४। और इन सभों से अधिक जब वे अपने बैरी के देश में होंगे मैं उन्हें दूर न करूंगा और मैं उन से घिन न करूंगा कि उन्हें सर्वथा नाश कर देऊं और उन से बाचा तोड़ डालूं क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं॥ ४५। परंतु उन के कारण मैं उन के पितरों की बाचा को जिन्हें मैं ने मिस्र के देश से अन्य देशियों के आगे निकाल लाया स्मरण करूंगा कि मैं उन का ईश्वर परमेश्वर हूं॥ ४६। ये विधि और न्याय और व्यवस्था जो परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर आप में और इसराएल के संतानों में मूसा की ओर से ठहराये॥

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब॥

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों को कहके बोल जब मनुष्य विशेष मनौती माने तेरे ठहराने के समान जन परमेश्वर के होंगे॥ ३। और तेरा मोल बीस बरस से साठ बरस लों पुरुष के लिये तेरा मोल पवित्र स्थान के शेकल के समान पचास शेकल रूपा होंगे॥ ४। और यदि स्त्री होवे तो तेरा मोल तीस शेकल होंगे॥ ५। और यदि पांच से बीस बरस की बय होय तो तेरा मोल पुरुष के लिये बीस शेकल और स्त्री के लिये दस शेकल॥ ६। और यदि एक मास से पांच बरस की बय होय तो तेरा मोल पुरुष के लिये चांदी के पांच शेकल और स्त्री के लिये तेरा मोल चांदी के तीन शेकल॥ ७। और यदि वुह साठ बरस से ऊपर का होय तो पुरुष के लिये तेरा मोल पंद्रह शेकल और स्त्री के लिये दस शेकल॥ ८। परंतु यदि तेरे मोल से वुह कंगाल ठहरे तो वुह याजक के आगे आवे और याजक उस का मोल उस की सामर्थ्य के समान ठहरावे जिसने मनौती किई है याजक उस का मोल ठहरावे॥ ९। और यदि पशु होवे जिसे मनुष्य परमेश्वर के लिये भेंट लाते हैं तो वुह सब जो परमेश्वर के लिये चढ़ाया गया सो पवित्र होगा॥ १०। वुह उसे न फेरे भले के लिये बुरा और बुरे के लिये भला न पलटे और यदि वुह किसी भांति से पशु की संती पशु दे तो वुह

श्रीर उस का पलटा पवित्र होंगे॥ ११। श्रीर यदि वुह अपवित्र पशु होय जो परमेश्वर का बलिदान नहीं चढ़ाते तो वुह पशु को याजक के आगे लावे॥ १२। श्रीर याजक उस का मोल करे चाहे भला होवे चाहे बुरा जैसा याजक उस का मोल ठहरावे वैसा ही होवे॥ १३। परंतु यदि वुह किसी भांति से उसे छुड़ावे तो वुह उस मोल में पांचवां भाग मिलावे॥ १४। श्रीर जब मनुष्य अपने घर को परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो याजक उस का मोल ठहरावे चाहे भला होवे चाहे बुरा याजक के ठहराने के समान उस का मोल होगा॥ १५। श्रीर जिस ने उस घर को पवित्र किया है यदि वुह उसे छुड़ाया चाहे तो तेरे मोल का पांचवां भाग उस में मिलाके देवे श्रीर घर उस का होगा॥ १६। यदि कोई अपने अधिकार से कुछ खेत परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो तेरा मोल उस के अन्न के समान हो साड़े छः मन जव का मोल पचास शेकल चांदी होगा॥ १७। यदि वुह आनंद के बरस से अपना खेत पवित्र करे तो तेरे मोल के समान ठहरेगा॥ १८। परंतु यदि वुह आनंद के पीछे अपने खेत को पवित्र करे तो याजक उन बरसों के समान जो आनंद के बरस लों बचे हैं मोल का लेखा करे श्रीर तेरे मोल से उतना घटाया जाय॥ १९। श्रीर जिस ने खेत को पवित्र किया है यदि वुह उसे किसी भांति से छुड़ाया चाहे तो वुह तेरे मोल का पांचवां भाग उस में मिलावे तब वुह उस का हो जायगा॥ २०। श्रीर यदि वुह उस खेत को न छुड़ावे अथवा यदि वुह उस खेत को दूसरे के पास बेंचा हो तो वुह फिर कभी छुड़ाया न जायगा॥ २१। परंतु जब वुह खेत आनंद के बरस में छूटे तब जैसा सम्पूर्ण किया गया खेत वैसा परमेश्वर के लिये पावन होगा श्रीर वुह याजक का अधिकार होगा॥ २२। श्रीर कोई खेत जो उस ने मोल लिया है श्रीर उस के अधिकार के खेतों में का नहीं है परमेश्वर के लिये पवित्र करे॥ २३। तो याजक आनंद के बरसों के समान गिनके मोल ठहरावे श्रीर वुह तेरे ठहराने के समान उस दिन उस का मोल परमेश्वर के लिये पवित्र वस्तु के समान देवे॥ २४। श्रीर खेत आनंद के बरस में उस के पास फिर जायगा जिस्से मोल लिया गया जिस का वुह भूमि का अधिकार था॥ २५।

और तेरा मोल पवित्र स्थान के शेकल के समान होगा बीस गिरह का एक शेकल होगा॥ २६। और केवल पशुन में का पहिलोंठा जो परमेश्वर का पहिलोंठा ऊआ चाहे उसे कोई पवित्र न करे चाहे वुह गाय बैल से होवे चाहे भेड़ से वुह तो परमेश्वर का है॥ २७। और यदि वुह अपावन पशु का होवे तो वुह तेरे मोल के समान उसे छुड़ावे और उस में पांचवां भाग मिलावे अथवा यदि वुह छुड़ाया न जावे तो वुह तेरे मोल के समान बेंचा जाय॥ २८। तिस पर भी कोई सम्पूर्ण किई ऊई वस्तु जिसे मनुष्य समस्त बस्तुन में से परमेश्वर के लिये सम्पूर्ण करता है मनुष्य का पशु का और अपने अधिकार के खेत का बेचा अथवा छुड़ाया न जायगा हर एक सम्पूर्ण किई ऊई बस्तु परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है॥ २९। जो बस्तु मनुष्य सम्पूर्ण करता है सो छुड़ाई न जायगी निश्चय मार डाली जायगी॥ ३०। और देश का समस्त कर चाहे खेत का बीज चाहे पेड़ का फल परमेश्वर का वुह परमेश्वर के लिये पवित्र है॥ ३१। और यदि मनुष्य किसी भांति से अपने कर को छुड़ाया चाहे तो पांचवां भाग उस में मिलावे॥ ३२। लेहंड़े का अथवा झुंड का कर के विषय में जो कुछ लट्ठ के नीचे जाता है सो परमेश्वर के लिये दसवां भाग पवित्र होगा॥ ३३। वुह उस की खोज न करे चाहे भला अथवा बुरा वुह उसे न पलटे और यदि वुह किसी भांति से उसे पलटे तो वुह और उस का पलटा दोनों के दोनों पवित्र हो जायेंगे और वह छुड़ाया न जायगा॥ ३४। वे आज्ञा जो परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के लिये सीना के पहाड़ पर मूसा को किईं ये हैं।

मूसा की चौथी पुस्तक जो गिनती की कहाती है।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

मिस्र की भूमि से उन के निकलने के पीछे दूसरे बरस दूसरे मास की पहिली तिथि को सीना के पहाड़ के बन में मंडली के तंबू में परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। उन के पितरों के घराने के समान इसराएल के संतानों की समस्त मंडली के घराने के समान हर एक पुरुष के नामों का लेखा करे॥ ३। बीस बरस से ऊपर सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य होवें तू और हारून उन की सेना सेना गिन॥ ४। और हर एक गोष्ठी में से एक एक मनुष्य जो अपने अपने पितरों के घराने का प्रधान है तुम्हारे साथ होवे॥ ५। और जो जन तुम्हारे साथ खड़े होंगे उन के ये नाम हैं रूबिन में से शदेऊर के बेटे इलिसूर॥ ६। शमऊन में से सूरिसद्दी का बेटा सलूमिएल॥ ७। यहूदाह में से अम्मिनदब का बेटा नहशून॥ ८। इशकार में से सुग्र के बेटे नतनिएल॥ ९। जबलून में से हैलून के बेटे इलिअब॥ १०। यूसुफ़ के संतान इफ़रायम में से अम्मिहूद के बेटे इलिसमः और मुनस्सी में से फ़िदाहसूर के बेटे जमलीएल॥ ११। बिनयमीन में से जिदःऊनी के बेटे अबिदान॥ १२। दान में से अम्मिशद्दी के बेटे अखिअजर॥ १३। यसर में से अक़रून के बेटे फ़जअिएल॥ १४। जद में से दऊएल के बेटे इलयासफ़॥

१५। नफ़ताली में से ऐनान के बेटे अखिरअः॥ १६। अपने अपने पितरों की गोष्ठियों के अध्यक्ष मंडली में ये नामी थे इसराएल में सहस्रों

के प्रधान ये थे॥ १७। सो मूसा और हारून ने उन मनुष्यों को लिया जिन के नाम लिखे हैं॥ १८। और उन्हों ने दूसरे मास की पहिली तिथि में सारी मंडली एकट्ठी किई और उन्हों ने अपने अपने पितरों के घराने के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों अपनी अपनी पीढ़ी उन के नामों की गिनती के समान लिखाया॥ १९। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उन को सीना के बन में गिना॥ २०। सो रूबिन के संतान में वुह जो इसराएल का पहिलौंठा बेटा था अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ २१। जो रूबिन की गोष्ठी में से गिने गये छियालीस सहस्र पांच सो थे॥ २२। और समऊन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष बीस बरस से ऊपर लों जो सब लड़ाई के योग्य थे॥ २३। जो समऊन की गोष्ठी में से गिने गये सो उनसठ सहस्र तीन सो थे॥ २४। और जद के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों के समान बीस बरस से ऊपर लों जो लड़ाई के योग्य थे॥ २५। जो जद की गोष्ठी में से गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छः सो पचास थे॥ २६। और यहूदाह के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ २७। जो यहूदाह के घराने में से गिने गये सो चौहत्तर सहस्र छः सो थे॥ २८। और इशकार के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ २९। जो इशकार की गोष्ठी में से गिने गये सो चौअन सहस्र चार सो थे॥ ३०। और जबुलून के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ३१। जो जबुलून की गोष्ठी में से गिने गये सत्तावन सहस्र चार सो थे॥ ३२। यूसुफ के संतान में से इफ़रायम

के संतान में से अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। ३३। जो इफ़रायम की गोष्ठी में से गिने गये सो चालीस सहस्र पांच सौ थे। ३४। और मुनस्सी के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। ३५। जो मुनस्सी की गोष्ठी में से गिने गये बत्तीस सहस्र दो सौ थे। ३६। और बिनयमीन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। ३७। जो बिनयमीन की गोष्ठी में से गिने गये पैंतीस सहस्र चार सौ थे। ३८। और दान के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ३९। जो दान की गोष्ठी में से गिने गये बासठ सहस्र सात सौ थे॥ ४०। और यसर के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ४१। जो यसर की गोष्ठी में से गिने गये एकतालीस सहस्र पांच सौ थे॥ ४२। नफ़ताली के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे॥ ४३। जो नफ़ताली की गोष्ठी में से गिने गये तिरपन सहस्र चार सौ थे॥ ४४। सो सब जो गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून ने गिना थे हैं और इसराएल के संतानों के प्रधान हर एक अपने अपने पितरों के घरानों में प्रधान था बारह थे॥ ४५। सो वे सब जो इसराएल के संतानों में से अपने पितरों के घरानों में से बीस बरस से लेके ऊपर लों गिने गये सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य थे॥ ४६। अर्थात् सब जो गिने गये थे सो छः लाख तीन सहस्र पांच सौ थे॥ ४७। परंतु लावी अपने पितरों की गोष्ठी के समान उन्हों में गिने नहीं गये॥ ४८। और परमेश्वर मूसा से

कहके बोला॥ ४९। केवल लावी की गोष्ठी को मत गिन और उन्हें इसराएल के संतानों की गिनती में मत मिला॥ ५०। परंतु लावियों को साक्षी के तंबू और उस की समस्त बस्तु पर ठहरा वे तंबू को और उस के पात्रों को उठाया करें और उन की सेवा करें और तंबू के आस पास छावनी करें॥ ५१। और जब तंबू आगे बढ़े तब लावी उसे गिरावें और जब तंबू को खड़ा करना हो तब लावी उसे खड़ा करें और जो परदेशी उस के पास आवे सो प्राण से मारा जाय॥ ५२। और इसराएल के संतानों में हर एक अपनी अपनी छावनी में हर एक मनुष्य अपनी समस्त सेना में अपने ही झंडे के पास अपना अपना तंबू खड़ा करे॥ ५३। परंतु लावी साक्षी के तंबू के आस पास डेरा करें जिसतें इसराएल के संतानों की मंडली पर कोप न पड़े और लावी साक्षी के तंबू की रखवाली करें॥ ५४। सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने उन सभों के समान किया।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों में से हर एक जन अपना झंडा और अपने पितरों के घराने की ध्वजा के संग मंडली के तंबू के आस पास दूर डेरा करे॥ ३। पूर्ब दिशा में सूर्य्य के उदय की ओर यहूदाह की छावनी अपनी समस्त सेना में झंडा गाड़े और अम्मिनदब का बेटा नहशून यहूदाह के संतान का प्रधान होवे॥ ४। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो चौहत्तर सहस्र छः सौ थे॥ ५। और उन के पास इशकार की गोष्ठी डेरा करे और सुग्र का बेटा नतनिएल इशकार के संतान का प्रधान होवे॥ ६। और उस की सेना और वे जो उन में गिने गये सो चौवन सहस्र चार सौ थे॥ ७। फिर ज़बुलून की गोष्ठी और हेलून का पुत्र अलीयाब ज़बुलून के संतान का प्रधान होवे॥ ८। और उस की सेना और सब जो उन में गिने गये सो सत्तावन सहस्र चार सौ थे॥ ९। सो सब जो यहूदाह की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनों में एक लाख छियासी सहस्र चार सौ थे ये पहिले बढ़ें॥ १०। और दक्खिन दिशा की

श्रार रूबिन की छावनी के झंडे उन की सेना के समान होवे श्रीर शदेजर का पुत्र इलिसूर रूबिन के संतान का प्रधान होवे॥ ११। श्रीर उस की सेना श्रीर जो उन में गिने गये सो छियालीस सहस्र पांच सौ थे॥ १२। श्रीर उस के पास समऊन के संतान की गोष्ठी डेरा करे श्रीर सूरिशद्दी का बेटा सलूमिएल समऊन के संतान का प्रधान होवे॥ १३। श्रीर उस की सेना श्रीर जो उन में गिने गये सो उनसठ सहस्र तीन सौ थे॥ १४। फिर जद की गोष्ठी श्रीर रऊएल का बेटा इलियासफ़ जद के संतान का प्रधान होवे॥ १५। श्रीर उस की सेना श्रीर सब जो उन में गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छः सौ पचास थे॥ १६। सो सब जो रूबिन की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनाश्रों में एक लाख एकावन सहस्र चार सौ पचास थे वे दूसरी पांती में बढ़े॥ १७। तब मंडली के तंबू लावी की छावनी के मध्य में श्राग बढ़े जैसा वे डेरा करें वैसा श्रागे बढ़ें हर एक मनुष्य अपने स्थान में अपने अपने झंडे के पास॥ १८। पश्चिम दिशा में इफ़रायम की छावनी उन की सेनों के समान झंडा खड़ा होवे श्रीर श्रम्मिहूद का बेटा इलिसमः इफ़रायम के बेटों का प्रधान होवे॥ १९। श्रीर उस की सेना श्रीर जो उन में गिने गये सो चालीस सहस्र पांच सौ थे॥ २०। श्रीर उस के पास मुनस्सी की गोष्ठी श्रीर फिदाहसूर का बेटा जमलीएल मुनस्सी के संतान का प्रधान होवे॥ २१। श्रीर उस की सेना श्रीर जो उन में गिने गये सो बत्तीस सहस्र दो सौ थे॥ २२। फिर बिनयमीन की गोष्ठी श्रीर जिदःऊनी का बेटा अबिदान बिनयमीन के संतान का प्रधान होवे॥ २३। श्रीर उस की सेना श्रीर जो उन में गिने गये सो पैंतीस सहस्र चार सौ थे॥ २४। सो सब जो इफ़रायम की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनाश्रों में एक लाख श्राठ सहस्र एक सौ थे श्रीर वे तीसरी पांती में बढ़े॥ २५। श्रीर दान की छावनी का झंडा उन की सेना की उत्तर दिशा में होवे श्रीर श्रम्मिशद्दी का बेटा श्रखिश्रजर दान के संतान का प्रधान होवे॥ २६। श्रीर उस की सेना श्रीर जो उन में गिने गये सो बासठ सहस्र सात सौ थे॥ २७। श्रीर उस के पास यसर की गोष्ठी डेरा करे श्रीर अकरान का बेटा फ़जिश्रएल यसर के संतान का प्रधान होवे।

२८। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो एकतालीस सहस्र पांच सौ थे॥ २९। फिर नफ़ताली की गोष्ठी और ऐनान का बेटा अख़िरअः नफ़ताली के संतान का प्रधान होवे॥ ३०। और उस की सेना और जो उन में गिने गये सो तिरपन सहस्र चार सौ थे॥ ३१। सो सब जो दान की छावनी में गिने गये सो एक लाख सत्तावन सहस्र छः सौ थे वे अपने झंडों को लेके पीछे पीछे बढ़े॥ ३२। इसराएल के संतानों में जो उन के पितरों के घरानों में गिने गये थे ये हैं वे सब जो तंबू में उन की छावनियों की समस्त सेनों में जो गिने गये थे छः लाख तीन सहस्र पांच सौ पचास थे॥ ३३। परंतु जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी लावी इसराएल के संतानों में न गिने गये॥ ३४। और इसराएल के संतानों ने उन सब आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से कही थीं वैसा ही किया हर एक अपने कुल के समान और अपने पितरों के घरानों के समान उन्हों ने अपने अपने झंडों के पास डेरा किया और वैसा ही आगे बढ़े।

३ तीसरा पर्ब्ब।

जिस दिन परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर मूसा से बातें किईं हारून और मूसा की पीढ़ी ये हैं॥ २। और हारून के बेटों के ये नाम हैं नदब पहिलौंठा और अबिहू और इलिअज़र और ईतमर॥ ३। हारून याजक के बेटों के ये नाम हैं जिन्हें उस ने याजक के पद की सेवा के लिये स्थापा और अभिषेक किया॥ ४। और नदब और अबिहू जब उन्हों ने सीना के अरण्य में परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई तब परमेश्वर के आगे निर्बंश मर गये और इलिअज़र और ईतमर अपने पिता हारून के समीप याजक के पद में सेवा करते थे॥ ५। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ६। कि लावी की गोष्ठी को समीप ला और उन्हें हारून याजक के आगे कर जिसतें वे उस की सेवा करें॥ ७। और वे उस की आज्ञा की और मंडली के तंबू के आगे समस्त मंडली की रक्षा करें जिसतें तंबू की सेवा करें॥ ८। और वे मंडली के तंबू के सब पात्र और इसराएल के संतानों का पालन करें जिसतें तंबू की सेवा करें॥ ९।

और तू लावियों को हारून और हारून के बेटों को सौंप दे इसराएल के संतानों में से ये उसे सर्वथा दिये जायें॥ १०। और हारून को और उस के बेटों को ठहरा कि याजक के पद में लिप्त रहें और जो अन्यदेशी पास आवे सो मार डाला जाय॥ ११। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १२। देख मैं ने इसराएल के संतानों में से उन सब पहिलौंठों की संती जो इसराएल के संतानों में उत्पन्न होते हैं लावियों को ले लिया सो इस लिये लावी मेरे लिये होंगे॥ १३। इस लिये सारे लावी मेरे हैं कि जिस दिन मैं ने मिस्र की भूमि में सारे पहिलौंठे मारे मैं ने इसराएल के संतानों के सब पहिलौंठे क्या मनुष्य के क्या पशु के अपने लिये पवित्र किये वे मेरे होंगे मैं परमेश्वर हूं॥ १४। फिर परमेश्वर सीना के अरण्य में मूसा से कहके बोला॥ १५। कि लावी के संतानों को उन के पितरों के घराने और उन के कुल में गिन हर एक पुरुष एक मास से लेके ऊपर लों गिन॥ १६। सो परमेश्वर के बचन के समान जैसा उस ने आज्ञा किई थी मूसा ने उन्हें गिना॥ १७। सो लावी के पुत्रों के नाम ये हैं जैरसुन और किहात और मिरारी॥ १८। जैरसुन के बेटों के नाम उन के कुल में ये हैं लिबनी और शमई॥ १९। और किहात के बेटे अपने घराने में अमराम और इजहार और हबरून और उज्जिएल हैं॥ २०। और मिरारी अपने घराने में मुहली और मूशी हैं सो लावी के कुल उन के पितरों के घरानों के समान ये हैं॥ २१। जैरसुन से लिबनी का घराना और शमई का घराना ये जैरसुनियों के घराने हैं॥ २२। जैसा सारे पुरुषों के गिनने के समान जो उन से गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों सात सहस्र पांच सौ थे॥ २३। जैरसुनियों के घराने तंबू के पीछे पश्चिम दिशा में अपना डेरा खड़ा करें॥ २४। और लाएल का बेटा इलियासफ जैरसुनियों के पितरों के घराने का प्रधान होवे॥ २५। और मंडली के तंबू में जैरसुन के बेटों की रखवाली में तंबू और उस के ओहाल और मंडली के तंबू के द्वार के ओहाल॥ २६। और आंगन के ओहाल और उस के द्वार के ओहाल जो तंबू और यज्ञवेदी की चारों ओर हैं और उस की रस्सी और उस की सब सेवा उन की होगी॥ २७। और किहात से अमरामियों का घराना और इजहारियों का घराना

और हबरूनियों का घराना और अजिएलियों का घराना ये सब किहातियों के घराने हैं॥ २८। उन के सारे पुरुष अपनी गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब आठ सहस्र छः सौ थे पवित्र स्थान की रखवाली करते थे॥ २९। किहात के बेटों के घराने तंबू की दक्खिन दिशा में डेरा खड़ा करें॥ ३०। और अजिएल का बेटा इलिसफ़न किहात के घरानों का प्रधान हो॥ ३१। और मंजूषा और मंच और दीअट और बेदी और पवित्र स्थान के पात्र जिन से सेवा करते हैं ओझल और उन की समस्त सेवा की सामग्री उन की रखवाली में रहें॥ ३२। और हारून याजक का बेटा इलिअज़र लावी के प्रधानों का प्रधान जो पवित्र स्थान की रखवाली करे॥ ३३। मिरारी से मुहलियों का घराना और मूसियों का घराना ये मिरारी के घराने हैं॥ ३४। उन के पुरुषों की जो गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब जो गिने गये थे छः सहस्र दो सौ थे॥ ३५। और अबिख़ैल का पुत्र सूरिएल मिरारियों के घराने का प्रधान हो और ये तंबू की उत्तर दिशा में डेरा खड़ा करें॥ ३६। और तंबू का पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस की चुरगहनी और सब जो उस की सेवा में लगते हैं मिरारी के बेटों की रखवाली में होवे॥ ३७। और आंगन की चारों ओर के खंभे और उन की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की डोरियां॥ ३८। परंतु वे जो तंबू की पूर्ब ओर मंडली के तंबू के आगे पूर्ब दिशा को मूसा और हारून और उस के बेटे जो पवित्र स्थान की और इसराएल के संतानों की रखवाली करें और जो परदेशी पास आवे सो मार डाला जाय॥ ३९। सो लावियों में से सब जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से उन के घराने में गिना सब पुरुष एक मास से लेके ऊपर लों बाईस सहस्र थे॥ ४०। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौंठे पुत्रों को एक मास से लेके ऊपर लों गिने और उन के नामों की गिनती ले॥ ४१। और मेरे लिये जो परमेश्वर हूं लावियों को इसराएल के संतानों के सब पहिलौंठे बेटों की संती और लावियों के पशुओं को इसराएल के संतानों के सब पशुओं की संती जो पहिले उत्पन्न हुए हों ले॥ ४२। और जैसा परमेश्वर ने उसे

आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों के समस्त पहिलौंठों को गिना॥ ४३। सो सारे पहिलौंठे पुरुष वर्ग उन के नामों की गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर जो जो गिने गये बाईस सहस्र दो सौ तिहत्तर थे॥ ४४। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ४५। कि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौंठों की संती लावियों को और उन के पशुओं की संती लावियों के पशुओं को ले और लावी मेरे होंगे मैं परमेश्वर हूं॥ ४६। और दो सौ बहत्तर इसराएल के संतानों के पहिलौंठे जो छुड़ाया जाना है लावियों से अधिक हैं॥ ४७। पवित्र स्थान के शेकल के समान मनुष्य पीछे पांच शेकल ले एक शेकल बीस गिरह है॥ ४८। और तू उस का मोल जो गिनती से ऊपर छुड़ाया जाना है हारून और उस के बेटों को दे॥ ४९। सो मूसा ने उन के छुड़ाने का रोकड़ लिया जो लावियों से छुड़ाये जाने से उबरा था॥ ५०। इसराएल के संतानों के पहिलौंठे में से एक सहस्र तीन सौ पैंसठ पवित्र स्थान के शेकल से रोकड़ लिया॥ ५१। और मूसा ने उन के रोकड़ के जो छुड़ाये गये थे परमेश्वर की आज्ञा से हारून और उस के बेटों को दिया॥

४ चौथा पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। किहात के बेटों को लावी के बेटों में उन के पितरों के घराने की और उन के कुल की गिनती ले॥ ३। तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेना में पैठते हैं कि मंडली के तंबू में सेवा करें॥ ४। मंडली के तंबू में और उन वस्तुन में जो अति पवित्र हैं किहात के बेटों की सेवा यह है॥ ५। और जब छावनी आगे बढ़े तब हारून और उस के बेटे आवें और ढांपने के घटाटोप उतारें और उस्से साची की मंजूषा को ढांपें॥ ६। और उस पर नीली खालों का घटाटोप डालें और उस के ऊपर नीला कपड़ा बिछावें और उस का बहंगर उस में डालें॥ ७। भेंट की रोटी के मंच पर नीला कपड़ा बिछा और उस पर पात्र और करछुल और कटोरा और ढांपने के लिये ढपने उस पर रक्खें और नित्य की रोटी उस पर

होवे॥ ८। और उन पर लाल कपड़ा बिछावें और उसे नीली खालों से ढांपें और उस में बहंगर डालें॥ ९। फिर नीला कपड़ा लेके प्रकाश की दीअट और उस के दीपकों को और उस के फूल कतरनियों और उस के पात्र और उस के सब तेल के पात्रों पर जिन्से सेवा करते हैं ढांपें॥ १०। और उसे और उस के सब पात्रों को नीली खालों के आड़ में रक्खें और उसे अड़ंगा पर रक्खें॥ ११। और सोनैली यज्ञबेदी पर नीला बस्त्र बिछावें और उसे नीली खालों के ढपने से ढांपें और उस में बहंगर डालें॥ १२। और समस्त पात्रों को जो पवित्र स्थान की सेवा में आते हैं लेके नीले कपड़ों में लपेटें और उन्हें नीली खालों से ढांपें और बहंगर पर रक्खें॥ १३। और बेदी में से राख निकाल फेंकें और लाल कपड़ा उस पर बिछावें॥ १४। और उस के सारे पात्र जिन्से वे उस की सेवा करते हैं अर्थात् धूपावरी और मांस के कांटे और फावड़ियां और कटोरे और बेदी के समस्त पात्र उस पर रक्खें और उन्हें नीली खालों से ढांपें और उस में बहंगर डालें॥ १५। और जब हारून और उस के बेटे पवित्र स्थान को और उस की सामग्री को ढांप चुकें तब छावनी के आगे बढ़ने के समय में किहात के संतान उस के उठाने के लिये आवें परंतु वे पवित्र वस्तु को न छूवें न हो कि मर जावें मंडली के तंबू की बस्तें किहात के संतानों को उठाने पड़ेंगी॥ १६। और दीपकों के लिये तेल और सुगंध धूप और समस्त तंबू और सब जो उस में है और उस के पात्र हारून याजक का बेटा इलिअज़र देखा करे॥ १७। फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ १८। कि लावियों में से किहात के घराने की गोष्ठी को काट न डालियो॥ १९। परंतु उन से ऐसा करो कि वे जीवें और अति पवित्र बस्तुन के समीप आने से न मरें हारून और उस के बेटे भीतर जायें और उन में से हर एक को उस की सेवा पर और बोझ उठाने पर ठहरावें॥ २०। परंतु जब कि पवित्र बस्तें ढांपी जावें तो वे उन्हें देखने न आवें जिसतें मर न जावें॥ २१। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २२। कि जैरसून के बेटों की भी उन के पितरों के समस्त घराने उन के कुल कुल के समान गिनती करो॥ २३। तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेवा के लिये भीतर जाते हैं कि

मंडली के तंबू की सेवा करें उन की गिनती करो॥ २४। जैरसुनियों के कुल की सेवा और बोझ उठाने के लिये यही कार्य है॥ २५। और वे तंबू के ओहार और उस का घटाटोप और नीली खालों का घटाटोप जो उस पर है और मंडली के तंबू के द्वार का ओट उठावें॥ २६। और आंगन के ओट और आंगन के द्वार का ओट जो तंबू और बेदी के चारों ओर हैं और उन की रस्सियां और सब पात्र जो उन की सेवा के कारण हैं और सब काम जो उन के कारण अवश्य हैं वे करें॥ २७। जैरसुन के बेटों की सारी सेवा बोझ उठाने में और सब काम करने में हारून और उस के बेटों की आज्ञा के समान होवे और तुम उन में से हर एक का बोझ ठहरा दीजियो॥ २८। जैरसुन के संतान के कुल की सेवा मंडली के तंबू में यह है और वे हारून याजक के बेटे ईतमर की आज्ञा में हैं॥ २९। मिरारी के बेटे उन के पितरों के घरानों और उन के कुल के समान उन की गिनती करो॥ ३०। तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेवा में पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें गिन॥ ३१। और उस सेना के समान जो मंडली के तंबू में उन के लिये है उन के बोझ ये ठहरें तंबू के पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस की चुरगहनी॥ ३२। और आंगन के खंभे जो चारों ओर हैं और उन की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की रस्सियां और उन की समस्त सामग्री सेवा समेत और उन की सामग्री के बोझे का नाम ले लेके गिन॥ ३३। सो मिरारी के बेटे के कुल की सेवा जो मंडली के तंबू की समस्त सेवा के समान यह है वे हारून याजक के बेटे ईतमर के अधीन रहें॥ ३४। सो मूसा और हारून और मंडली के प्रधानों ने क़िहातियों के बेटों को उन के पितरों के घरानों के और उन के कुल के समान गिना॥ ३५। तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेवा के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें एक एक करके गिना॥ ३६। सो वे जो अपने घराने के समान गिने गये दो सहस्र सात सौ पचास थे॥ ३७। वे सब ये हैं जो क़िहात के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा की ओर से कही थी गिना।

३८। और जैरसुन के बेटे जो अपने पितरों के घरानों के समस्त कुल के समान गिने गये॥ ३९। तीस बरससेलेके पचासबरस लों सब जो सेवा के लिये पज्ञंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें॥ ४०। वे सब जो उन के पितरों के घरानों और उनके समस्त कुल के समान गिने गये दो सहस्र छः सौ तीस ज्ञए॥ ४१। वे सब ये हैं जो जैरसुन के बेटों के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से गिना॥ ४२। और मिरारी के बेटे के पितरों के घराने और उन के समस्त कुल जो गिने गये थे॥ ४३। तीस बरस से लेके पचास बरस लों हर एक जो सेवा के लिये पज्ञंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें॥ ४४। अर्थात् वे जो उन के कुल में गिने गये थे तीन सहस्र दो सौ थे॥ ४५। वे सब ये हैं जो मिरारी के बेटे के कुल में से जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा की ओर से कही थी गिना॥ ४६। सब जो लावियों में से गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून और इसराएल के प्रधानों ने उन के पितरों के घराने और उन के कुल के समान गिना॥ ४७। तीस बरस से लेके पचास बरस लों गिना जो सेवा के लिये पज्ञंचते हैं जिस में मंडली के तंबू की सेवा करें और बोझ उठावें॥ ४८। अर्थात् वे जो उन में गिने गये थे आठ सहस्र पांच सौ अस्सी थे॥ ४९। मूसा की ओर से परमेश्वर की आज्ञा के समान वे गिने गये हर एक अपनी सेवा और बोझ उठाने के समान जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही वे मूसा से गिने गये॥

५ पांचवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि हर एक कोढ़ी और प्रमेही को और जो मृत्यु से अशुद्ध है उन को छावनी से बाहर कर देवें॥ ३। क्या स्त्री और क्या पुरुष तुम उन्हें छावनी से बाहर करो जिसतें अपनी छावनियों को जिन के मध्य में मैं रहता ज्ञं वे अशुद्ध न करें॥ ४। सो इसराएल के संतानों ने ऐसा ही किया और उन्हें छावनी से बाहर कर दिया जैसा

परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही इसराएल के संतानों ने किया॥ ५। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ६। कि इसराएल के संतानों को कह कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री परमेश्वर से विरुद्ध होके ऐसा कोई पाप करे जो मनुष्य करते हैं और दोषी हो जाय॥ ७। तब अपने पाप को जो उन्हों ने किया है मान लेवें और वुह मूल के संग पांचवां अंश मिलावे और अपने अपराध के पलटा के लिये उसे देवे जिस का उस ने अपराध किया है॥ ८। परंतु यदि अपराध के पलटा देने को उस मनुष्य का कोई कुटुम्ब न होवे तो वुह प्रायश्चित्त के मेढ़े से अधिक जिस्से उस के लिये प्रायश्चित्त होवे॥ ९। उस अपराध की संती परमेश्वर के लिये याजक को देवे और इसराएल के संतानों की सारी पवित्र वस्तुन की सब भेंटें जो वे चढ़ाते हैं याजक की होंगी॥ १०। और हर एक मनुष्य की पवित्र वस्तें उस की होंगी जो कुछ याजक को देगा उस की होगी॥ ११। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १२। कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि यदि किसी की पत्नी अलग होके उस के विरुद्ध कोई अपराध करे॥ १३। और कोई उस्से व्यभिचार करे और यह उस के पति से छिपा हो और ढंपा हो और वुह अशुद्ध हो जाय और उस पर साक्षी न होवे और वह पकड़ी न जाय॥ १४। और उस के पति के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वुह अशुद्ध हो अथवा यदि उस के पति के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वुह स्त्री अशुद्ध न होय॥ १५। तब वुह मनुष्य अपनी पत्नी को याजक पास लावे और वुह उस के लिये एक ईफ़ा का दसवां भाग जव का पिसान उस की भेंट के लिये लावे और वुह उस पर तेल और लुबान न डाले क्योंकि वुह झल की भेंट पाप को चेत में लाने के लिये स्मरण की भेंट है॥ १६। तब याजक उस स्त्री को पास बुलावे और परमेश्वर के आगे उसे खड़ी करे॥ १७। और याजक मट्टी के एक पात्र में शुद्ध जल लेवे और तंबू के आंगन की धूल लेके उस पानी में मिलावे॥ १८। फिर याजक उस स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और उस का सिर उघारे और स्मरण की भेंट जो झल की भेंट है उस के हाथों पर रक्खे

और याजक उस कड़ुवे पानी को जो धिक्कार के लिये है अपने हाथ में लेवे॥ १९। और उस स्त्री को किरिया देके कहे कि यदि किसी ने तुझ से कुकर्म्म नहीं किया और तू केवल अपने पति को छोड़ अशुद्ध मार्ग में नहीं गई तो तू इस कड़ुवे पानी के गुण से जो धिक्कार के लिये है बची रहे॥ २०। परंतु यदि तू अपने पति को छोड़के भटक गई हो और अशुद्ध हुई हो और अपने पति को छोड़ किसी दूसरे से कुकर्म्म किया हो॥ २१। और याजक उस स्त्री को स्राप की किरिया देवे और उसे कहे कि परमेश्वर तेरे लोगों के मध्य में तुझे स्राप देवे कि परमेश्वर तेरी जांघ को सड़ावे और तेरे पेट को फुलावे॥ २२। और यह पानी जो स्राप के कारण होता है तेरी अंतड़ियों में जाके तेरा पेट फुलावे और तेरी जांघ को सड़ावे और वुह स्त्री कहे कि आमीन आमीन॥ २३। फिर याजक उन धिक्कारों को एक पुस्तक में लिखे और कड़ुवे पानी से उसे मिटा दे॥ २४। और याजक वुह कड़ुवा पानी जो स्राप के कारण होता है उस स्त्री को पिलावे तब वुह पानी जो स्राप के कारण होता है उस में कड़ुवा पैठेगा॥ २५। फिर याजक उस स्त्री के हाथ से झल की भेंट लेके परमेश्वर के आगे उसे हिलावे और यज्ञबेदी पर चढ़ावे॥ २६। और उस भेंट के स्मरण के लिये एक मुट्ठी लेके याजक बेदी पर जलावे उस के पीछे वुह पानी उस स्त्री को पिलावे॥ २७। और जब वुह पानी उसे पिलावेगा तब ऐसा होगा कि यदि वुह अशुद्ध होवे और वुह अपने पति के बिरुद्ध कुछ अपराध किया हो तो वुह पानी जो स्राप के कारण होता है उस के शरीर में पहुंचके कड़ुवा हो जायगा और उस का पेट फूलेगा और उस की जांघ सड़ जायगी और वुह स्त्री अपने लोगों में धिक्कारित होगी॥ २८। परंतु यदि वुह अशुद्ध न हो परंतु शुद्ध होवे तो वुह निर्दोष होगी और गर्भिणी होगी॥ २९। उस स्त्री के कारण जो अपने पति को छोड़के भटकती है और अशुद्ध है झल के लिये यह व्यवस्था है॥ ३०। अथवा जब पुरुष के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से संदेह रक्खे और स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और याजक उस पर ये सब व्यवस्था पूरी करे॥ ३१। तो पुरुष पाप से पवित्र होगा और वुह स्त्री अपना पाप भोगेगी॥

६ छठवां पर्व्व ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला ॥ २। कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री आप को अलग करने के लिये नसरानी की मनौती ईश्वर के लिये माने ॥ ३। तो वुह दाखरस से और तीक्ष्ण मदिरा से अलग रहे दाखरस का सिरका अथवा तीक्ष्ण मदिरा का सिरका न पीये और अंगूर का कोई रस न पीये और न भींगा अथवा सूखा अंगूर खावे ॥ ४। और अपने अलग होने के सब दिनों में कोई वस्तु जो दाखों से उत्पन्न होती है बीज से लेके उस के छिलके लों न खावे ॥ ५। और अपने अलग होने की मनौती के सब दिनों में सिर पर छुरा न फिरावे जब लों उस के अलग किये गये दिन बीत न जावें वुह ईश्वर के लिये पवित्र है अपने सिर के बालों को बढ़ने देवे ॥ ६। वुह परमेश्वर के लिये अपने सारे अलग होने के दिनों में लोथ के पास न जाये ॥ ७। वुह अपने माता पिता अथवा अपने भाई बहिन के लिये जब वे मर जावें आप को अशुद्ध न करे क्योंकि उस के ईश्वर की स्थापना उस के सिर पर है ॥ ८। वुह अपने अलग होने के सब दिनों में परमेश्वर के लिये पवित्र है ॥ ९। और यदि कोई मनुष्य अकस्मात् उस के पास मर जाय और उस के सिर के स्थापित को अपवित्र करे तो वुह अपने पवित्र होने के दिन अपना सिर मुड़ावे सातवें दिन सिर मुड़ावे ॥ १०। और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो बच्चे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे ॥ ११। और याजक एक को पाप की भेंट के कारण और दूसरे को होम की भेंट के लिये चढ़ावे और उस अपराध का जो मृतक के कारण से हुआ प्रायश्चित्त देवे और अपने सिर को उसी दिन पवित्र करे ॥ १२। फिर अपने अलग होने के दिनों को परमेश्वर के लिये स्थापित करे और पहिले बरस का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये लावे परंतु उस के आगे के दिन गिने न जायेंगे क्योंकि उस की भेंट अपवित्र हो गई ॥ १३। नसरानी होने के लिये यह व्यवस्था है जब उस के अलग होने के दिन पूरे हों तब वुह मंडली के तंबू के द्वार पर लाया जावे ॥ १४। और वुह परमेश्वर के लिये अपनी भेंट पहिले

बरस का एक निर्दोष मेम्ना होम की भेंट के लिये और पाप की भेंट के लिये पहिले बरस की एक भेड़ी और कुशल की भेंट के लिये एक निर्दोष मेढ़ा॥ १५। और एक टोकरी अखमीरी रोटियां और चोखे पिसान की पूरी और अखमीरी लिट्टी तेल में चुपड़ीं ऊईं उन के खाने की और उन के पीने की भेंट॥ १६। और याजक उन्हें परमेश्वर के आगे लाके उस के पाप की भेंट को और उस के होम की भेंट को चढ़ावे॥ १७। और परमेश्वर के कारण एक टोकरा अखमीरी रोटी के साथ उस मेढ़े को चढ़ावे और याजक उस के खाने की और पीने की भेंट भी चढ़ावे॥ १८। फिर वुह नसरानी मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अलग होने के लिये सिर मुड़ावे और उस के अलग होने के सिर के बालों को लेवे और उस आग में जो कुशल की भेंट के बलिदान के तले है डाल देवे॥ १९। जब अलग होने के लिये मुड़ाया जावे तब याजक उस मेंढ़े का सिझाया ऊआ कांधा और टोकरी में से एक अखमीरी फुलका और एक अखमीरी लिट्टी लेके उस नसरानी के हाथों पर रक्खे॥ २०। फिर याजक उन्हें हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे यह हिलाने की छाती और उठाने का कांधा याजक के लिये पवित्र है उस के पीछे नसरानी द्राक्षारस पी सके॥ २१। नसरानी की मनौती की व्यवस्था परमेश्वर के लिये उस के अलग होने की भेंट जो उस के हाथ पऊंचने से अधिक उस की मनौती के समान अपने अलग होने की व्यवस्था के पीछे अवश्य यों करे॥ २२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २३। कि हारून को और उस के बेटों को कह कि इसराएल के संतानों को यों आशीष देके उन्हें कहियो॥ २४। कि परमेश्वर तुझे आशीष देवे और तेरी रक्षा करे॥ २५। परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझ पर अनुग्रह करे॥ २६। परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझे कुशल देवे॥ २७। और वे मेरा नाम इसराएल के संतानों पर रक्खें और मैं उन्हें आशीष देऊंगा॥

७ सातवां पर्ब्ब॥

और ऐसा हुआ कि जिस दिन मूसा तंबू खड़ा कर चुका और उसे और उस की समस्त सामग्री को अभिषेक करके पवित्र किया बेदी को उस के समस्त पात्र सहित अभिषेक करके पवित्र किया॥ २। तब इसराएल के अध्यक्ष जो अपने पितरों के घरानों में प्रधान और गोष्ठियों के अध्यक्ष और उन में जो गिने गये उन के ऊपर थे भेंट लाये॥ ३। और ढांपी हुई छः गाड़ियां और बारह बधिया बैल अपनी भेंट परमेश्वर के आगे लाये दो दो अध्यक्षों के लिये एक एक गाड़ी और हर एक की ओर से एक एक बैल सो वे उन्हें तंबू के आगे लाये॥ ४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ ५। कि यह उन से ले जिसतें वे मंडली के तंबू की सेवा में आवें और उन्हें लावियों को दे हर एक को उस की सेवा के समान॥ ६। सो मूसा ने गाड़ियां और बैल लेके लावियों को दिये॥ ७। दो गाड़ियां और चार बैल उस ने जैरसुन के बेटों को उन की सेवा के समान दिये॥ ८। और चार गाड़ियां और आठ बैल मिरारी के संतान को जो हारून याजक के पुत्र ईतमर के अधीन थे उन की सेवा के समान दिये॥ ९। परंतु उस ने क़िहात के बेटों को कुछ न दिया इस लिये कि पवित्र स्थान की सेवा जो उन के लिये ठहराई गई यह थी कि वे अपने कांधों पर उठाके ले चलें॥ १०। और जिस दिन कि बेदी अभिषेक किई गई अध्यक्षों ने उस के स्थापित के लिये चढ़ाई अर्थात् अध्यक्षों ने बेदी के आगे भेंट चढ़ाई॥ ११। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हर एक अध्यक्ष बेदी को स्थापित करने के लिये एक एक दिन अपनी अपनी भेंट चढ़ावे॥ १२। सो पहिले दिन यहूदाह की गोष्ठी में से अम्मिनदब के पुत्र नहशून ने अपनी भेंट चढ़ाई॥ १३। और उस की भेंट ये थीं एक चांदी का थाल जिस की तौल पौने तीन सेर थी और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ १४। एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ १५। होम की भेंट के लिये

एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ १६। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ १७। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने ये अम्मिनदब के बेटे नहशून की भेंट॥ १८। दूसरे दिन सुग़ के बेटे नतनिएल ने जो इश्कार का अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई॥ १९। और उस की भेंट यह थी पौने तीन सेर भर चांदी का एक थाल और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ २०। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर धूप से भरी हुई॥ २१। एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये॥ २२। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ २३। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सुग़ के बेटे नतनिएल की भेंट थी॥ २४। तीसरे दिन हेलून के पुत्र इलिअब ने चढ़ाई जो ज़बुलून के बंश का अध्यक्ष था॥ २५। उस की भेंट यह थी पौने तीन सेर चांदी का एक थाल और एक सेर डेढ़ पाव का चांदी का कटोरा पवित्र स्थान की तौल से दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ २६। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर धूप से भरी हुई॥ २७। एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये॥ २८॥ बकरी का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये॥ २९। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने हेलून के पुत्र इलिअब की भेंट थी॥ ३०। चौथे दिन शदेऊर के बेटे इलिसूर ने चढ़ाई जो रूबिन के बंश का अध्यक्ष था॥ ३१। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ३२। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर धूप से भरी हुई॥ ३३। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले

बरस का एक मेम्ना॥ ३४। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ३५। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने शदेऊर के बेटे इलिसूर की भेंट थी॥ ३६। और पांचवें दिन सूरिसद्दी के बेटे सलूमिएल ने जो शमऊन के बंश का अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई॥ ३७। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ३८। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ३९। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ४०। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ४१। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सूरिसद्दी के बेटे सलूमिएल की भेंट थी॥ ४२। छठवें दिन दऊएल के बेटे इलयासफ ने चढ़ाई जो जद के बंश का अध्यक्ष था॥ ४३। उस की भेंट चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ४४। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ४५। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ४६। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ४७। और कुशल की भेंट के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने दऊएल के बेटे इलियासफ की भेंट थी॥ ४८। और सातवें दिन अम्मिहूद के बेटे इलिसमः ने जो इफ़रायम के बंश का अध्यक्ष था॥ ४९। उस की भेंट यह थी कि चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ५०। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ५१। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा

पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ५२। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ५३। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अम्मिहूद के बेटे इलिसमः की भेंट थी॥ ५४। आठवें दिन फिदाहसूर के बेटे जमलीएल ने जो मुनस्सी के बंश का अध्यक्ष था॥ ५५। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले ऊए चोखे पिसान से भरे ऊए॥ ५६। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी ऊई॥ ५७। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ५८। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ ५९। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने फिदाहसूर के बेटे जमलीएल की भेंट थी॥ ६०। नौवें दिन जिदःऊनी के बेटे अबिदान ने जो बिनयमीन के बंश का अध्यक्ष था॥ ६१। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले ऊए चोखे पिसान से भरे ऊए॥ ६२। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी ऊई॥ ६३। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ६४। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ६५। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने जिदःऊनी के बेटे अबिदान की भेंट थी॥ ६६। दसवें दिन अम्मिसद्दा के बेटे अखिअजर ने जो दान के बंश का अध्यक्ष था॥ ६७। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले ऊए चोखे पिसान से भरे ऊए॥ ६८। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पछत्तर भर की धूप से भरी ऊई॥ ६९। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ७०। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का

मेम्ना॥ ७१। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अम्मिसद्दा के बेटे अख़िअज़र की भेंट थी॥ ७२। ग्यारहवें दिन अक्रून के बेटे फ़जिएल ने जो यसर के वंश का अध्यक्ष था॥ ७३। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ७४। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पच्चत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ७५। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ७६। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ७७। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अक्रून के बेटे फ़जिएल की भेंट थी॥

७८। बारहवें दिन ऐनान के बेटे अख़िरअ: ने जो नफ़ताली के संतान के वंश का अध्यक्ष था॥ ७९। उस की भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए॥ ८०। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पच्चत्तर भर की धूप से भरी हुई॥ ८१। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना॥ ८२। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना॥ ८३। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने ऐनान के बेटे अख़िरअ: की भेंट थी॥ ८४। जिस दिन बेदी इसराएल के अध्यक्षों से अभिषेक किई गई उस की स्थापित यह चांदी के बारह थाल और चांदी के बारह कटोरे और सोने की बारह करछुल थीं॥ ८५। चांदी का हर एक थाल तौल में पौने तीन सेर का और हर एक कटोरा डेढ़ पाव सेर भर का सब चांदी के पात्र पवित्र स्थान की तौल से पैंतीस सेर के थे॥ ८६। सोने की बारह करछुल धूप से भरी हुई एक करछुल एक सौ सवा पच्चत्तर भर की पवित्र स्थान की तौल से करछुलों का सब सोना एक सौ बीस

प्रेकल था॥ ८७। होम की भेंट के लिये बारह बैल बारह मेंढ़े पहिले बरस के बारह मेम्ने उन की भोजन की भेंट सहित और पाप की भेंट के लिये बकरी के बारह मेम्ने॥ ८८। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये चौबीस बैल साठ मेंढे साठ बकरियां पहिले बरस के साठ मेम्ने बेदी के अभिषेक करने के पीछे उस के स्थापित के लिये यह था॥ ८९। और जब मूसा ने उस्से बात करने के लिये मंडली के तंबू में प्रवेश किया तब उस ने दया के आसन पर से जो साक्षी की मंजूषा पर था दोनों करोबियों के मध्य से किसी का शब्द सुना जो उस्से कहता था॥

८ आठवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ २। हारून से कह और उसे बोल जब तू दीपकों को बारे तो सातों दीपक का उंजियाला दीअट के झाड़ के सन्मुख होवे॥ ३। सो हारून ने ऐसा ही किया उस ने दीअट के झाड़ के सन्मुख दीपकों को बारा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ ४। और दीअट के झाड़ की बनावट पीटे ऊए सोने से थी उस के खंभे से उस के फूल लों पीटे ऊए सोने का था उस के समान जो परमेश्वर ने मूसा को दिखाया था उस ने वैसा ही झाड़ बनाया॥ ५। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा॥ ६। कि लावियों को इसराएल के संतानों में से अलग कर और उन्हें पवित्र कर॥ ७। और उन्हें पवित्र करने के लिये तू उन से मोल कीजियो की शुद्ध करने का जल उन पर छिड़क और वे अपने समस्त देह को मुड़ावें और अपने कपड़े धोवें और आप को पावन करें॥ ८। तब वे एक बछड़ा उस के मांस की भेंट के साथ तेल से मिला ऊआ चोखा पिसान लेवें और तू पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा लीजियो॥ ९। और लावियों को मंडली के तंबू के आगे लाइयो और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठी करियो॥ १०। और लावियों को परमेश्वर के आगे लाना और इसराएल के संतान अपने हाथ लावियों पर रक्खें॥ ११। और हारून लावियों को इसराएल के संतानों की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ावे जिस में वे

परमेश्वर की सेवा करें॥ १२। और लावी अपने हाथ बैलों के सिरों पर रक्खें और तू एक को पाप की भेंट और दूसरे को होम की भेंट के लिये जिसतें लावियों के लिये प्रायश्चित्त होवे परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो॥ १३। फिर तू लावियों को हारून और उस के बेटों के आगे खड़ा कर दीजियो और उन्हें परमेश्वर की भेंट के लिये चढ़ाइयो॥ १४। और तू लावियों को इसराएल के संतानों में से अलग करियो और लावी मेरे होंगे॥ १५। उस के पीछे लावी मंडली के तंबू में सेवा के निमित्त पहुंचे तू उन्हें पवित्र करियो और उन्हें भेंट के लिये चढ़ाइयो॥ १६। क्योंकि वे सब के सब इसराएल के संतानों में से मुझे दिये गये हर एक जो उत्पन्न होता है इसराएल के संतानों के सब पहिलौंठों की संती उन्हें ले लिया है॥ १७। क्योंकि इसराएल के संतानों के सारे पहिलौंठे क्या मनुष्य के क्या पशु के मेरे हैं जिस दिन मिस्र देश के हर एक पहिलौंठे को मारा मैं ने उन को अपने लिये पवित्र किया॥ १८। और इसराएल के संतानों के सारे पहिलौंठों की संती मैं ने लावियों को ले लिया है॥ १९। और मैं ने इसराएल के संतानों में से सब लावियों को हारून और उस के बेटों को दिया जिसतें मंडली के तंबू में इसराएल के संतानों की संती सेवा करें और इसराएल के संतानों के लिये प्रायश्चित्त देवें जिसतें इसराएल के संतानों पर जब वे पवित्र स्थान के पास आवें मरी न पड़े॥ २०। सो जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के विषय में मूसा को आज्ञा किई थी मूसा और हारून और इसराएल के संतानों की सारी मंडली ने लावियों से वैसा ही किया सो इसराएल के संतानों ने उन से वैसा ही किया॥ २१। और लावी पवित्र किये गये और उन्हों ने अपने कपड़े धोये और हारून ने उन्हें भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ाया और हारून ने उन के लिये प्रायश्चित्त दिया जिसतें उन्हें पवित्र करे॥ २२। उस के पीछे लावी अपनी सेवा करने को हारून और उस के संतानों के आगे मंडली के तंबू में गये जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के विषय में मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही उन से किया॥ २३। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २४। लावियों का व्यवहार यह रहे कि वे पचीस बरस से लेकर ऊपर लों मंडली के

तंबू में जाके सेवा में रहें॥ २५। और जब पचास बरस के हों तो सेवकाई से रहि जायें और फिर सेवा न करें॥ २६। परंतु मंडली के तंबू में अपने भाइयों के साथ रखवाली किया करें और सेवा न करें तू लावियों से रचा के विषय में योंहीं कीजियो॥

९ नौवां पर्ब्ब।

फिर मिस्र के देश से निकलने के दूसरे बरस के पहिले मास में परमेश्वर ने सीना के अरण्य में मूसा से कहा॥ २। कि इसराएल के संतान उस के ठहराये हुए समय में पार जाने का पर्ब्ब रक्खें॥ ३। इस मास के चौदहवीं तिथि की सांझ के ठहराये हुए समय में उसे करियो उस की विधि और आचार के समान पर्ब्ब रखियो॥ ४। सो मूसा ने इसराएल के संतानों को कहा कि वे पार जाने का पर्ब्ब रक्खें॥ ५। और उन्हों ने पहिले मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को सीना के अरण्य में पार जाने का पर्ब्ब रक्खा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया॥ ६। वहां कितने जन थे जो किसी मनुष्य की लोथ के कारण से अपवित्र हुए थे वे उस दिन पार जाने का पर्ब्ब न रख सके और वे मूसा और हारून के समीप आये॥ ७। और उन्हों ने उस्से कहा कि हम मनुष्य के लोथ के कारण से अपवित्र हैं किस लिये हम रोके गये कि इसराएल के संतानों में ठहराये हुए समय में परमेश्वर के लिये भेंट लावें॥ ८। मूसा ने उन्हें कहा कि ठहर जाओ और मैं सुनूंगा कि परमेश्वर तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा करता है॥ ९। तब परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १०। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि यदि कोई तुम्में से अथवा तुम्हारे बंश में से किसी लोथ के कारण से अशुद्ध होवे अथवा यात्रा में दूर होवे तथापि वुह परमेश्वर के लिये पार जाने का पर्ब्ब रक्खे॥ ११। दूसरे मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को वे पर्ब्ब रक्खें और अखमीरी रोटी कड़वी तरकारी के साथ खावें॥ १२। वे बिहान लों उस में से कुछ न छोड़ें और न उस की कोई हड्डी तोड़ी जाय पार जाने की समस्त विधि के समान उसे करें॥ १३। परंतु जो मनुष्य शुद्ध है और यात्रा

में नहीं है और यदि पार जाने का पर्ब्ब नहीं रक्खे वही प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा क्योंकि वुह ठहराये हुए समय में परमेश्वर की भेंट न लाया वुह अपना पाप भोगेगा॥ १४। और यदि कोई परदेशी तुम्में टिके और पार जाने का पर्ब्ब परमेश्वर के लिये रक्खा चाहे तो वुह पार जाने के पर्ब्ब को उस की रीति और बिधि के समान रक्खे तुम्हारे लिये क्या परदेशी और क्या देशी की एक ही बिधि होगी॥ १५। और जिस दिन तंबू खड़ा किया गया मेघ ने साक्षी के तंबू को ढांप लिया और सांझ से लेके बिहान लों तंबू पर आग सी दिखाई देती थी॥ १६। सो सदा ऐसा ही था कि मेघ उसे ढांपता था और रात को आग सी दिखाई देती थी॥ १७। और जब तंबू पर से मेघ उठाया जाता था तब इसराएल के संतान कूच करते थे और जहां मेघ आके ठहरता था तहां इसराएल के संतान डेरा करते थे॥ १८। इसराएल के संतान परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे और परमेश्वर की आज्ञा से डेरा करते थे जब लों तंबू पर मेघ रहता था वे डेरे में चैन करते थे॥ १९। और जब बहुत दिन लों तंबू पर मेघ ठहरता था इसराएल के संतान परमेश्वर की आज्ञा मानते और कूच न करते थे॥ २०। और ऐसे ही जब मेघ थोड़े दिन लों तंबू पर ठहरता था वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अपने डेरे में रहते थे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे॥ २१। और यों होता था कि जब सांझ से बिहान लों मेघ ठहरता था और बिहान को उठाया जाता था तब वे कूच करते थे चाहे दिन चाहे रात जब मेघ उठाया जाता था वे कूच करते थे॥ २२। अथवा दो दिन अथवा एक मास अथवा एक बरस मेघ तंबू पर रहता था तब इसराएल के संतान अपने डेरों में रहते थे और कूच न करते थे परंतु जब वुह ऊपर उठाया जाता था तब वे कूच करते थे॥ २३। परमेश्वर की आज्ञा से वे तंबू में चैन करते थे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे परमेश्वर की आज्ञा जो मूसा की ओर से होती थी वे परमेश्वर की आज्ञा को पालन करते थे।

१० दसवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि अपने लिये चांदी के दो नरसिंगे एक ही टुकड़े से बना कि मंडली के बुलाने के और छावनी के कूच करने के कार्य्य के लिये होवें॥ ३। और जब वे उन्हें फूंकें तब सारी मंडली तेरे पास मंडली के तंबू के द्वार पर आप को एकट्ठी करे॥ ४। और यदि एक ही फूंका जावे तब अध्यक्ष जो इसराएलियों के सहस्रों के प्रधान हैं तेरे पास एकट्ठे होवें॥ ५। और जब तुम छोटे बड़े शब्द से फूंको तो पूर्ब्ब दिशा की छावनी आगे बढ़े॥ ६। जब तुम दूसरी बेर छोटे बड़े शब्द से फूंको तो दक्खिन दिशा की छावनी कूच करे वे अपने कूच के लिये छोटे बड़े शब्द से फूंकें॥ ७। परंतु जब कि मंडली को एकट्ठी करना होवे तब फूंको परंतु छोटे बड़े शब्द मत करो॥ ८। और हारून याजक के बेटे नरसिंगे फूंका करें और तुम्हारे लिये तुम्हारे समस्त बंशों में यह विधि सनातन लों रहे॥ ९। और यदि तुम बैरियों से जो तुम्हें सताते हैं अपने देश से लड़ने को निकलो तो तुम नरसिंगे से छोटे बड़े शब्द फूंको और अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे स्मरण किये जाओगे और तुम अपने शत्रुन से बच जाओगे॥ १०। और अपने आनंद के दिन और अपने पर्ब्बों के दिन अपने मासों के आरंभों में अपनी होम की भेंट और अपने कुशल की भेंटों के बलिदानों पर नरसिंगे फूंको जिसतें तुम्हारे कारण ईश्वर के आगे तुम्हारे स्मरण के लिये होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ११। फिर यों हुआ कि दूसरे बरस के दूसरे मास की बीसवीं तिथि को मेघ साक्षी के तंबू से ऊपर उठाया गया॥ १२। इसराएल के संतान सीना के अरण्य से कूच किये और फ़ारान के अरण्य में मेघ ठहर गया॥ १३। सो मूसा की ओर से परमेश्वर की आज्ञा के समान उन्हों ने यात्रा किई॥ १४। पहिले यहूदाह के संतान की छावनी के झंडे उन के कटकों के समान चले उन पर अम्मिनदब का बेटा नहसून था॥ १५। और इशकार के संतान की गोष्ठी की सेना पर सुग्र का बेटा नतनिएल था॥ १६। और ज़बुलून के संतान की गोष्ठी की सेना पर हैलून का बेटा

इलिअब था॥ १७। फिर तंबू उतारा गया तब जैरसुन के बेटे और मिरारी के बेटों ने तंबू को उठाके यात्रा किई॥ १८। फिर रूबिन का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा शदेजर का बेटा इलिसूर उस के कटक का प्रधान था॥ १९। और समऊन के बंश की गोष्ठी की सेना पर सूरिशद्दी का बेटा सलमिएल था॥ २०। जद के बंश की गोष्ठी की सेना पर दऊएल का बेटा इलयासफ था॥ २१। फिर किहातियों ने पवित्र स्थान उठाके यात्रा किई और उन के पहुंचने लों तंबू खड़ा किया जाता था॥ २२। फिर इफ्रायम की छावनी का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा अम्मिहूद का बेटा इलिसमः उस के कटक का प्रधान था॥ २३। और मुनस्सी के बंश की गोष्ठी की सेनों पर फिदाहसूर का बेटा जमलीएल था॥ २४। और बिनयमीन के बंश की गोष्ठी की सेनों पर जिदःऊनी का बेटा अबिदान था॥ २५। सब छावनी के पीछे दान के संतान की छावनी का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा उन की सेना पर अम्मिशद्दी का बेटा अखिअजर था॥ २६। और यसर के बंश की गोष्ठी की सेनों पर अकरान का बेटा फजिएल था॥ २७। और नफ़ताली के बंश की गोष्ठी की सेनों पर ऐनान का बेटा अखिरअः था॥ २८। सो इसराएल के संतान की यात्रा जब वे आगे बढ़ते थे अपनी सेनाओं के समान ऐसी ही थी।

२९। तब मूसा ने मिदयानी रऊएल के बेटे ऊबाब को जो मूसा का ससुर था कहा कि हम उस स्थान को जाते हैं जिस के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि मैं तुम्हें देऊंगा सो तू हमारे साथ आ हम तुझ से भलाई करेंगे क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के विषय में अच्छा कहा है॥ ३०। उस ने उसे कहा कि मैं न जाऊंगा परंतु मैं अपने देश को और अपने कुटुम्बों में जाऊंगा॥ ३१। तब उस ने कहा कि हमें न छोड़िये क्योंकि आप जानते हैं कि अरण्य में हमें क्योंकर डेरा किया चाहिये सो आप हमारी आंखों की संती होंगे॥ ३२। और यों होगा कि यदि आप हमारे साथ चलें तो जो भलाई परमेश्वर हम से करेगा सो हम आप से करेंगे॥ ३३। फिर उन्हों ने परमेश्वर के पहाड़ से तीन दिन की यात्रा किई और परमेश्वर की वाचा की मंजूषा उन तीन दिन के मार्ग से आगे गई

जिसतें उन के लिये विश्राम का स्थान ढूंढे॥ ३४। और जब वे छावनी से बाहर जाते थे तब परमेश्वर का मेघ दिन को ऊपर ठहरता था॥ ३५। और जब मंजूषा आगे बढ़ती थी तब यों होता था कि मूसा कहता था कि उठ हे परमेश्वर तेरे शत्रु छिन्न भिन्न होवें और जो तुझ से बैर रखता है सो तेरे आगे से भागे और जब वुह ठहरता था वुह कहता था कि हे परमेश्वर सहस्रों इसराएलियों में फिर आ।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

और जब लोग कुड़कुड़ाने लगे तो परमेश्वर उदास हुआ और सुना और उस का क्रोध भड़का और परमेश्वर की आग उन में फूट निकली और छावनी के अंत्य को भस्म किया॥ २। तब लोग मूसा के पास चिल्लाये और जब मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना किई तब आग बुझ गई॥ ३। इस लिये कि परमेश्वर की आग उन में भड़की उस ने उस स्थान का नाम ज्वलन रक्खा॥ ४। और मिली जुली मंडली जो उन में थी कुइच्छा करने लगी और इसराएल के संतान भी विलाप करके कहने लगे कि कौन हमें मांस का भोजन देगा॥ ५। हमें वुह मछली की सुधि आती है जो हम सेंत से मिस्र में खाते थे और खीरे और खरबूजे और गंदना और पियाज़ और लहसुन॥ ६। परंतु अब तो हमारा प्राण सूख गया यहां तो हम मन्न को छोड़ कुछ भी नहीं देखते॥ ७। और मन्न धनिये की नाईं और उस का रंग मोती का सा था॥ ८। लोग इधर उधर जाके उसे एकट्ठा करते थे और चक्की में पीसते थे अथवा उखली में कूटते थे और फुलका बनाके तवे पर पकाते थे उस का स्वाद टटके तेल की नाईं था॥ ९। और रात को जब छावनी पर ओस पड़ती थी तब मन्न उस पर पड़ता था॥ १०। तब मूसा ने सुना कि लोगों के हर एक घराने का हर एक मनुष्य अपने अपने तंबू के द्वार पर विलाप कर रहा है तो परमेश्वर का क्रोध अत्यंत भड़का और मूसा भी उदास हुआ॥ ११। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि तू अपने दास को क्यों दुःख दे रहा है और तेरी दृष्टि में मैं ने क्यों नहीं अनुग्रह पाया कि तू ने इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डाला है॥ १२। क्या मैं ने

इन सारे लोगों को गर्भ में रक्खा क्या मैं ने उन्हें जना है कि तू मुझे कहता है कि उन्हें उस देश में जिस की तू ने उन के पितरों से किरिया खाई है अपनी गोद में ले जिस रीति से पिता दूध पीवक बालक को गोद में लेता है॥ १३। मैं कहां से मांस लाऊं कि उन सब लोगों को देऊं वे मुझे रो रोके कहते हैं कि हमें खाने को मांस दे॥ १४। मैं अकेला इन सब लोगों का भार उठा नहीं सक्ता इस कारण कि मेरे लिये बहुत बोझ है॥ १५। यदि तू मुझ से यों हीं करता है तो मुझे मार के अलग कर और यदि मैं तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाये हूं तो मैं अपनी विपत्ति न देखूं॥ १६। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के प्राचीनों में से सत्तर पुरुष जिन्हें तू प्राचीन और प्रधान जानता है मेरे लिये बटोर और उन्हें मंडली के तंबू पास ला वे तेरे संग वहां खड़े रहें॥ १७। मैं उतरूंगा और तेरे साथ बातें करूंगा और में उस आत्मा में से जो तुझ पर है कुछ लेकर उन पर डालूंगा कि तेरे साथ लोगों का बोझ उठावें जिसतें तू अकेला उसे न उठावे॥ १८। और लोगों से कह कि कल आप को पवित्र करो और तुम मांस खाओगे क्योंकि रो रोके तुम्हारा यह कहना परमेश्वर के कानों में पहुंचा कि कौन हमें मांस खाने को देगा क्योंकि हम तो मिस्र ही में भले थे सो परमेश्वर तुम्हें मांस देगा और तुम खाओगे॥ १९। और तुम एक ही दिन न खाओगे न दो दिन न पांच दिन न दस दिन न बीस दिन॥ २०। परंतु एक मास भर खाओगे जब लों कि वह तुम्हारे नथुनों से न निकले और तुम उस्से घिन न करो क्योंकि तुम ने ईश्वर की निंदा किई जो तुम्हों में है और उस के आगे यों कहके रोये कि हम मिस्र से क्यों बाहर आये॥ २१। तब मूसा ने कहा कि ये लोग जिन में मैं हूं छः लाख पगयत हैं और तू ने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस देऊंगा कि वे एक मास भर खावें॥ २२। क्या झुंड और लेहंड़े उन्हें तृप्त करने के लिये बधन किये जायेंगे अथवा समुद्र की सारी मछलियां उन के लिये एकट्ठी किई जायेंगी जिसतें वे तृप्त होवें॥ २३। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि क्या परमेश्वर का हाथ घट गया अब तू देखेगा कि मैं वचन का पूरा हूं कि नहीं॥ २४। तब मूसा ने बाहर जाके परमेश्वर

की बातें लोगों से कहीं और लोगों के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य एकट्ठे किये और उन्हें तंबू के आस पास खड़े किये॥ २५। तब परमेश्वर मेघ में उतरा और उसे बोला और उस के आत्मा में से कुछ लेके उन सत्तर प्राचीनों को दिया और जब आत्मा उन पर ठहरा वे भविष्य कहने लगे और न थमे॥ २६। परंतु दो मनुष्य छावनी में रह गये थे जिन में से एक का नाम इल्दाद और दूसरे का मेदाद सो आत्मा उन पर ठहरा और वे उन में लिखे गये थे परंतु तंबू के पास बाहर नहीं गये और वे तंबू ही में भविष्य कहने लगे॥ २७। तब एक तरुण ने दौड़के मूसा को संदेश दिया कि इल्दाद और मेदाद तंबू में भविष्य कहते हैं॥ २८। सो मूसा के सेवक नून के बेटे यहूसूअ ने जो उस के तरुणों में से था मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मूसा उन्हें बरज दे॥ २९। मूसा ने उसे कहा कि क्या तू मेरे कारण डाह रखता है हाय कि परमेश्वर के सारे लोग भविष्य बक्ता होते और परमेश्वर अपना आत्मा उन सभों पर डालता॥ ३०। और मूसा और इसराएल के प्राचीन छावनी में गये॥ ३१। तब परमेश्वर की ओर से एक पवन निकला और बटेर को समुद्र से लाया और छावनी पर ऐसा गिराया जैसा कि एक दिन के मार्ग इधर उधर छावनी की चारों ओर और जैसा कि दो हाथ भूमि के ऊपर॥ ३२। और लोग उस दिन और रात भर और उस के दूसरे दिन भी खड़े रहे और बटेर बटोरे जिस ने थोड़े से थोड़ा बटोरा उस ने आधमन के अटकल बटोरा और उन्हों ने अपने लिये तंबू के आस पास फैलाये॥ ३३। और जब लों उन के दांत तले मांस था चावने से पहिले परमेश्वर का क्रोध लोगों पर भड़का और परमेश्वर ने उन लोगों को बड़ी मरी से मारा॥ ३४। और उस ने उस स्थान का नाम कुइच्छा का समाधि रक्खा क्योंकि उन्हों ने उन लोगों को जिन्हों ने कुइच्छा किई थी वहीं गाड़ा फिर उन लोगों ने कुइच्छा समाधि से हसीरात को यात्रा किई सो वे हसीरात में रहे॥

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

मूसा की उस हबशी स्त्री से ब्याह करने के कारण मिरयम ओर हारून ने उस पर अपबाद किया क्योंकि उस ने एक हबशी स्त्री से ब्याह किया था॥ २। ओर बोले क्या परमेश्वर ने केवल मूसा ही से बातें किई हैं क्या उस ने हम से भी बात न किई ओर परमेश्वर ने सुना। ३। मूसा समस्त लोगों से जो पृथिवी पर थे अधिक कोमल था॥ ४। सो परमेश्वर ने तत्काल मूसा ओर हारून ओर मिरयम को कहा कि तुम तीनों मंडली के तंबू पास आओ सो वे तीनों आये॥ ५। तब परमेश्वर मेघ के खंभे में उतरा ओर तंबू के द्वार पर खड़ा हुआ ओर हारून ओर मिरयम को बुलाया वे दोनों आये॥ ६। तब उस ने कहा कि मेरी बातें सुनो यदि तुम्में कोई भविष्यद्वक्ता होवे तो मैं परमेश्वर आप को दर्शन में उस पर प्रगट करूंगा ओर उस्से स्वप्न में बातें करूंगा॥ ७। मेरा दास मूसा ऐसा नहीं वुह मेरे सारे घर में बिश्वासी है॥ ८। मैं उस्से आम्ने साम्ने अर्थात् प्रत्यक्ष बातें करूंगा ओर गुप्त बातों से नहीं ओर वुह परमेश्वर के आकार को देखेगा सो तुम मेरे सेवक मूसा पर अपबाद करते हुए क्यों न डरे॥ ९। ओर परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का ओर चला गया॥ १०। तब मेघ तंबू पर से जाता रहा ओर क्या देखता है कि मिरयम हिम की नाईं कोढ़ी हो गई ओर हारून ने मिरयम की ओर दृष्टि किई तो वह कोढ़ी थी॥ ११। तब हारून ने मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मैं तेरी बिनती करता हूं यह पाप हम पर मत लगा इस में हम ने मूर्खता किई ओर पापी हुए॥ १२। वुह उस मृतक के समान न हो जिस का आधा मांस अपनी माता के गर्भ से उत्पन्न होते ही गल जाय॥ १३। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे बिनती करके कहा कि हे ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं अब उसे चंगा कर॥

१४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यदि उस का पिता उस के मुंह पर थूकता तो क्या वुह सात दिन लों लज्जित न रहती सो सात दिन लों उसे छावनी से बाहर बंद कर उस के पीछे उसे मिला ले॥ १५। सो मिरयम छावनी के बाहर सात दिन लों बंद हुई ओर जब लों

मिरयम बाहर रही लोगों ने यात्रा न किई॥ १६। उस के पीछे लोगों ने हसीरात से यात्रा किई और फ़ारान के अरण्य में डेरा किया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर ने मूसा को बचन कहा॥ २। कि लोगों को भेज जिसतें वे कनआन के देश का भेद लेवें जो मैं इसराएल के संतानों को देता हूं एक एक मनुष्य उन के पितरों की हर एक गोष्ठी में से भेज उन में से हर एक प्रधान होवे॥ ३। और परमेश्वर की आज्ञा से मूसा ने फ़ारान के अरण्य से उन्हें भेजा वे सारे मनुष्य इसराएल के संतानों के प्रधान थे॥ ४। उन के ये नाम रूबिन की गोष्ठी में से ज़कूर का बेटा शमूअ॥ ५। और समऊन की गोष्ठी में से हूरी का बेटा सफ़त॥ ६। और यहूदाह की गोष्ठी में से यफ़ुन्नः का बेटा कालिब॥ ७। और इश्कार की गोष्ठी में से यूसुफ़ का बेटा इजाल॥ ८। और इफ़रायम की गोष्ठी में से नून का बेटा हूसीअ॥ ९। और बिनयमीन की गोष्ठी में से रफ़ू का बेटा फ़िलती॥ १०। और ज़बुलून की गोष्ठी में से सूदी का बेटा जदिएल॥ ११। और यूसुफ़ की गोष्ठी में से अर्थात् मुनस्सी की गोष्ठी में से सूसी का बेटा जद्दी॥ १२। दान की गोष्ठी में से जमली का बेटा अमिएल॥ १३। और यसर की गोष्ठी में से मीकाएल का बेटा शितूर॥ १४। और नफ़ताली की गोष्ठी में से वफ़सी का बेटा नख़बी॥ १५। जद की गोष्ठी में से माकी का बेटा जियूएल॥ १६। सो उन के नाम जिन्हें मूसा ने देश के भेद लेने के लिये भेजा ये हैं और मूसा ने नून के बेटे हूसीअ का नाम यहूशूअ रक्खा।

१७। और मूसा ने उन्हें भेजा कि कनआन के देश का भेद लेवें और उन्हें कहा कि तुम दक्षिण दिशा से चढ़ जाओ और पहाड़ के ऊपर चले जाओ॥ १८। और देश को और उन लोगों को जो उस में बसते हैं देखियो कि वे कैसे हैं प्रबल अथवा निर्बल थोड़े हैं अथवा बहुत॥ १९। और वुह देश जिस में वे रहते हैं कैसा है भला अथवा बुरा और कैसे कैसे नगर जिन में वे बसते हैं तंबूओं में हैं अथवा गढ़ों में॥ २०। और देश कैसा है फलवंत है अथवा निष्फल उस में पेड़ है अथवा नहीं तुम हियाव

करो और उस देश का कुछ फल ले आओ और वुह समय दाख के पहिले फलों का था॥ २१। सो वे चढ़ गये और भूमि के भेद को सीन के अरण्य में से रहूब लों जो हमात के मार्ग में है लिया॥ २२। और वे दक्षिण की ओर से चढ़े और हबरून को आये जहां अनाक् के वंश अख़िमान और सीसी और तलमी थे और मिस्र का ज़ुअन हबरून से सात बरस आगे बना था॥ २३। सो वे इसकाल की नाली में आये वहां से उन्हों ने दाख का एक गुच्छा काटा और उसे एक लट्ठ पर रख कर दो मनुष्यों ने उठाया और कुछ अनार और गूलर भी लिये॥ २४। उस स्थान का नाम उस गुच्छे के लिये जिसे इसराएल के संतान वहां से काटलाये थे नाली इसकाल रक्खा॥ २५। सो वे चालीस दिन के पीछे देश का भेद लेके फिर आये॥ २६। और फिर के मूसा और हारून और इसराएल के संतानों की सारी मंडली के पास फ़ारान के अरण्य में क़ादिस में आये और उन्हें और सारी मंडली के आगे संदेश दिया और उस भूमि का फल उन्हें दिखाया॥ २७। और उसे यह कहके बर्णन किया कि हम उस देश में जिधर तू ने हमें भेजा था गये उस में सच मुच दूध और मधु बहता है और यह वहां का फल है॥ २८। तथापि उस देश के बासी बलवंत हैं और उन के नगरों की भीतें अति ऊंची हैं और हम ने अनाक् के संतान को भी वहां देखा॥ २९। और उस भूमि में दक्षिण की ओर अमालीक् बसते हैं और हत्ती और यबूसी और अमूरी पहाड़ों पर रहते हैं और समुद्र के तीर और यरदन के तीर पर कनआनी रहते हैं॥ ३०। तब कालिब ने मूसा के आगे लोगों को धीमा करके कहा कि आओ एक साथ चढ़ जायें और बश में करें क्योंकि उस पर प्रबल होने में हम में शक्ति है॥ ३१। परंतु उस के संगियों ने कहा कि हम उन लोगों का साम्ना करने में दुर्बल हैं क्योंकि वे हम से अधिक बलवंत हैं॥ ३२। और वे इसराएल के संतानों के पास उस भूमि का जिस का भेद लेने को गये थे बुरा संदेश लाये और बोले कि वुह भूमि जिस का भेद लेने हम गये थे ऐसी भूमि है जो अपने बासियों को खा जाती है

और सब लोग जिन्हें हम ने देखा है बड़े डील के हैं॥ ३३। और हम ने वहां दानव अनाक् के बेटे दानवों को देखा और हम अपनी और उन की दृष्टि में फनगे की नाईं थे॥

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

तब सारी मंडली चिल्ला के रोई और लोग उस रात भर रोया किये॥ २। फिर सारे इसराएल के संतान मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाये और समस्त मंडली ने उन्हें कहा हाय कि हम मिस्र में मर जाते और हाय कि हम इसी अरण्य में नष्ट होते॥ ३। हमें किस लिये परमेश्वर इस देश में लाया कि खड्ग से मारे जायें और हमारी स्त्रियां और हमारे बालक पकड़े जावें क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि मिस्र को फिर जावें॥ ४। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि आओ एक को अपना प्रधान बनावें और मिस्र को फिर चलें॥ ५। तब मूसा और हारून इसराएल के संतानों की सारी मंडली के साम्ने औंधे मूंह गिरे॥ ६। और नून के बेटे यहूसूअ और यफुन्नः के बेटे कालिब ने जो उन में थे जो देश के भेद लेने गये थे अपने कपड़े फाड़े॥ ७। और उन्हों ने इसराएल के संतानों की सारी मंडली से कहा कि जिस देश के भेद लेने को हम आरंपार गये अति अच्छी भूमि है॥ ८। यदि ईश्वर हम से प्रसन्न होवे तो हमें उस देश में ले जायगा और वुह भूमि जिस पर दूध मधु बह रहा है हमें देगा॥ ९। अब तुम केवल ईश्वर से छल न करो और उस देश के लोगों से मत डरो क्योंकि वे तो हमारे लिये भोजन हैं उन के आड़ उन से जा चुके हैं और परमेश्वर हमारे साथ है उन की भय मत करो॥ १०। परंतु सारी मंडली ने कहा कि उन पर पत्थरवाह करो उस समय मंडली के तंबू में सारे इसराएल के संतानों के साम्ने परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥ ११। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि ये लोग कब लों मुझे खिझावेंगे और उन आश्चर्य्यों के कारण जो मैं ने उन में दिखाये हैं वे कब लों मुझ पर बिश्वास न करेंगे॥ १२ मैं उन्हें मारूंगा और उन्हें अधिकार रहित करूंगा और तुझे इन से एक बड़ी और बलवंत जाति बनाऊंगा॥ १३। मूसा ने परमेश्वर से

कहा कि मिस्र के लोग सुनेंगे क्योंकि तू अपनी सामर्थ्य से इन लोगों को उन के मध्य से निकाल लाया॥ १४। और वे इस देश के बासी से कहेंगे क्योंकि उन्हों ने तो सुना है कि तू परमेश्वर इन लोगों के बीच है कि तू हे परमेश्वर आम्ने साम्ने देखा जाता है और कि तेरा मेघ उन पर रहता है और कि तू दिन को मेघ के खंभे में और रात को आग के खंभे में उन के आगे आगे चलता है॥ १५। सो यदि तू इन लोगों को एक मनुष्य के समान मार डाले तब जातिगण जिन्हों ने तेरी कीर्ति सुनी हैं कहेंगे॥ १६। इस कारण कि परमेश्वर इन लोगों को उस देश में पहुंचा न सका जिसके बिषय में उन से किरिया खाई थी इस लिये उस ने उन्हें अरण्य में घात किया॥ १७। सो मैं तेरी बिनती करता हूं हे मेरे प्रभु अपनी सामर्थ्य को प्रगट कर जैसा तू ने कहा है॥ १८। कि परमेश्वर बड़ा धीर और महा दयाल है पापों और अपराधों को क्षमा करता है जो किसी भांति से न छोड़ेगा पितरों के पापों को उन के लड़कों से जो उन की तीसरी और चैाथी पीढ़ी हैं प्रतिफल देता है॥ १९। अब तू अपनी दया की अधिकाई से इन लोगों का पाप क्षमा कर जैसा तू मिस्र से लेके यहां लों क्षमा करता आया है॥ २०। परमेश्वर ने कहा कि मैं ने तेरे कहेके समान क्षमा किया॥ २१। परंतु अपने जीवन सों समस्त पृथिवी परमेश्वर की महिमा से भर जायगी॥ २२। क्योंकि उन सब लोगों ने जिन्हों ने मेरा बिभव और मेरा आश्चर्य जो मैं ने मिस्र में और उस अरण्य में प्रगट किया देखा अबलों मुझे दसबार परखा और मेरा शब्द न माना॥ २३। सो वे उस देश को जिस के कारण मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई थी न देखेंगे और जितनों ने मुझे खिझाया उन में से कोई उसे न देखेगा॥ २४। परंतु मेरा दास कालिब क्योंकि और ही आत्मा उस के साथ था और उस ने मेरी बात पूरी मानी है मैं उसे उस देश में जहां वुह गया था ले जाऊंगा और वे जो उस के बंश से होंगे उस के अधिकारी बनेंगे॥ २५। अब अमालकी और कनआनी तराई में बास करते थे सो कल फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से अरण्य में जाओ॥

२६। फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २७।

कि मैं कब लों उस दुष्ट मंडली की कुड़कुड़ाहट सहूं इसराएल के संतान जो मुझ पर कुड़कुड़ाते हैं मैं ने उन का कुड़कुड़ाना सुना॥ २८। उन से कह कि परमेश्वर कहता है मुझे अपने जीवन सों जैसा तुम ने मुझे सुना के कहा है मैं तुम से वैसा ही करूंगा॥ २९। तुम्हारी और उन सभां की लोथ तुम्हारी समस्त गिनतियों के समान बीस बरस से ले के ऊपर लों जो मुझ पर कुड़कुड़ाये इस अरण्य में गिरेंगी॥ ३०। यफुन्नः के बेटे कालिब और नून के बेटे यहूसूअ को छोड़ तुम निःसंदेह उस देश में न पहुंचोगे जिस में मैं ने तुम्हें बसाने की किरिया खाई है कि तुम्हें वहां बसाऊंगा॥ ३१। परंतु तुम्हारे बालकों को जिन के विषय में तुम ने कहा है कि वे लुट जायेंगे मैं उन्हें पहुंचाऊंगा जिन्हें तुम ने तुच्छ जाना वे उस देश को जानेंगे॥ ३२। पर तुम्हारी लोथें इस ही बन में गिरेंगी॥ ३३। और तुम्हारे लड़के उस अरण्य में चालीस बरस लों भ्रमते फिरेंगे और अपने व्यभिचारों को उठाया करेंगे जब लों कि तुम्हारी लोथें इस बन में क्षीण न होवें॥ ३४। उन दिनों की गिनती के समान जिन में तुम उस भूमि का भेद लेते थे जो चालीस दिन हैं दिन पीछे एक बरस सो तुम चालीस बरस लों अपने पाप को भोगा करोगे तब तुम मेरे बिरोध को जानोगे॥ ३५। मैं परमेश्वर ने कहा है और इस दुष्ट मंडली के लिये जो मेरे बिरुद्ध में एकट्ठी है निश्चय पूरा करूंगा इसी बन में नष्ट किई जायगी और यहीं मरेगी॥ ३६। और जिन मनुष्यों को मूसा ने देश के भेद लेने को भेजा था जिन्हों ने उस देश पर बात बना बना के कहा है और सारी मंडलियों को उस पर कुड़कुड़वाया है॥ ३७। हां वे मनुष्य जो उस देश का बुरा संदेश लाये हैं परमेश्वर के आगे मरी से मरेंगे॥ ३८। पर नून का बेटा यहूसूअ और यफुन्नः का बेटा कालिब उन में से जो देश का भेद लेने गये थे जीते रहे॥ ३९। सो मूसा ने इन बातों को इसराएल के समस्त संतानों को सुनाया और लोग बहुत बिलाप करने लगे॥ ४०। और बिहान को तड़के वे उठे और यह कहते हुए पहाड़ पर चढ़ गये देख हम उस स्थान पर चढ़ जायेंगे जिस की परमेश्वर ने बाचा दिई है क्योंकि हम ने पाप किया है॥ ४१।

मूसा ने कहा सो अब तुम लोग क्यों परमेश्वर की आज्ञा को भंग करते हो शुभ न होगा॥ ४२। ऊपर मत जाओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हों में नहीं जिसतें तुम अपने बैरियों के आगे मारे न पड़ो॥ ४३। क्योंकि अमालिकी और कनआनी तुम्हारे आगे हैं और तुम तलवार से बिक जाओगे क्योंकि तुम परमेश्वर से फिर गये हो सो परमेश्वर तुम्हारे साथ न होगा॥ ४४। परंतु वे ढिठाई से पहाड़ पर चढ़ गये तथापि परमेश्वर के बाचा की मंजूषा और मूसा छावनी के बाहर न गये तब अमालिकी और कनआनी जो उस पहाड़ पर रहते थे उतरे और उन्हें ऊरमः लों मारते गये॥

१५ पंदरहवां पर्ब्ब ।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि जब तुम अपने निवास के देश में जो मैं तुम्हें देऊंगा पहुंचो॥ ३। और आग से परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाओ अथवा मनैाती पूरी करने का बलिदान अथवा बांछित भेंट अथवा ठहराये हुए पर्ब की भेंट परमेश्वर के लिये आनंद का सुगंध लेहंड़े अथवा झुंड से चढ़ाओ॥ ४। तब वुह जो अपनी भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाता है भोजन की भेंट पिसान का दसवां भाग सवा सेर तेल से मिला हुआ भेंट का बलिदान लावे॥ ५। एक मेम्ना के कारण होम की भेंट अथवा बलिदान पीने की भेंट के लिये सवा सेर द्राक्षारस सिद्ध कीजियो॥ ६। अथवा मेढ़े के लिये मांस की भेंट के दो दसवां भाग पिसान पौने दो सेर तेल से मिला हुआ सिद्ध कीजियो॥ ७। और पीने की भेंट के लिये पौने दो सेर द्राक्षारस परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाइयो॥ ८। और जब तू होम की भेंट के लिये अथवा मनैाती पूरी करने को बलिदान के लिये अथवा कुशल की भेंट परमेश्वर के लिये बैल सिद्ध करो॥ ९। तब वुह बैल के साथ भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिसान अढ़ाई सेर तेल से मिला हुआ लावे॥ १०। और पीने की भेंट के लिये द्राक्षारस अढ़ाई सेर आग से परमेश्वर के आनंद की सुगंध के लिये लाइयो॥ ११। एक एक बैल अथवा एक

एक मेंढ़ा अथवा एक एक मेम्ना अथवा एक एक बकरी का मेम्ना यों ही किया जावे॥ १२। गिनती के समान सिद्ध कीजियो हर एक उन की गिनती के समान ऐसा ही कीजियो॥ १३। सब जिन का जन्म देश में ज़ुआ आग से परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये भेंट चढ़ावें तो उसी रीति से इन बातों को मानें॥ १४। और यदि परदेशी तुम्में बास करे अथवा वुह जो तुम्हारी पीढ़ियों से होवे परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये आग से भेंट चढ़ावे तो जिस रीति से तुम करते हो वैसा वुह भी करे॥ १५। मंडली के लिये और उस परदेशी के लिये जो तुम्में बास करता है तुम्हारी पीढ़ियों में सदा एक ही बिधि होवे परमेश्वर के आगे जैसे तुम वैसे परदेशी भी हैं॥ १६। तुम्हारे और परदेशियों के लिये जो तुम्में रहते हैं एक ही व्यवस्था और एक ही रीति होवे॥ १७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १८। कि इसराएल के संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पज़ंचो जहां तुम्हें ले जाता हूं॥ १९। तब ऐसा होगा कि जब तुम उस भूमि पर की रोटी खाओ तो परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो॥ २०। तुम अपने पहिले गूंदे ज़ुए आटे से एक फुलका उठाने की भेंट के लिये लेओ जैसी खलिहान की भेंट को उठाते हो वैसाही उसे उठाइयो॥ २१। तुम अपने गूंदे ज़ुए पिसान से पहिले अपनी पीढ़ियों में परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो॥

२२। और यदि तुम चूक किये हो और उन सब आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से कहीं पालन न करो॥ २३। जिस दिन से परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है और अब से आगे लों अपनी पीढ़ियों में समस्त आज्ञा जिन्हें परमेश्वर ने मूसा की ओर से तुम्हें दिई है॥ २४। तब यों होगा कि यदि कुछ अज्ञानता हो जाय और मंडली न जाने तब समस्त मंडली होम की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा चढ़ावे उस के भोजन की और पीने की भेंट के साथ रीति के समान और अपराध की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ २५। और याजक इसराएल के संतानों की सारी मंडली के लिये प्रायश्चित्त देवे और वुह क्षमा किया जायगा क्योंकि अज्ञानता है

ग्रीर वे परमेश्वर के लिये अपनी भेंट ग्राग के बलिदान से लावें ग्रीर अपने अज्ञानता के लिये अपने पाप की भेंट परमेश्वर के आगे लावें॥ २६। ग्रीर इसराएल के संतानों की सारी मंडली ग्रीर परदेशी जो उन में रहते हैं क्षमा किये जायेंगे इस लिये कि सारे लोग अज्ञानता में थे॥

२७। ग्रीर यदि कोई प्राणी अज्ञानता से पाप करे तो वुह पाप की भेंट के लिये पहिले बरस की एक बकरी लावे॥ २८। ग्रीर उस प्राणी के लिये जो अज्ञानता से परमेश्वर के आगे पाप करे उस के लिये याजक प्रायश्चित्त करे ग्रीर वुह क्षमा किया जायगा॥ २९। तुम अज्ञानता की अपराध के कारण उस के लिये जो इसराएल के संतानों में उत्पन्न ज़ुआ हो ग्रीर परदेशी के लिये जो उन में रहता हो एक ही व्यवस्था रक्खो॥ ३०। परंतु जो प्राणी ढिठाई करे चाहे देशी चाहे परदेशी होय वही परमेश्वर की निंदा करता है ग्रीर वही प्राणी अपने लोगों में से कट जायेगा॥ ३१। क्योंकि उस ने परमेश्वर के बचन की निंदा किई ग्रीर उस की आज्ञा को भंग किया वही प्राणी सर्वथा कट जायगा उस का पाप उसी पर होगा॥ ३२। ग्रीर जब इसराएल के संतान बन में थे उन्हों ने एक मनुष्य को बिश्राम के दिन लकड़ियां बटोरते पाया॥ ३३। ग्रीर जिन्हों ने उसे लकड़ियां एकट्ठी करते पाया वे उसे मूसा ग्रीर हारून ग्रीर सारी मंडली के पास लाये॥ ३४। उन्हों ने उसे बंद रक्खा इस कारण कि प्रगट न ज़ुआ था कि उस्से क्या किया जावे॥ ३५। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वुह मनुष्य निश्चय मारा जायगा सारी मंडली छावनी के बाहर उस पर पत्थरवाह करे॥ ३६। जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी सारी मंडली उसे तंबू के बाहर ले गई उन्हों ने उस पर पत्थरवाह करके मार डाला॥ ३७। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ३८। कि इसराएल के संतानों से कह ग्रीर उन्हें आज्ञा कर कि वे अपनी समस्त पीढ़ियों में अपने वस्त्रों के खूंट की झालर पर नीली चेवली लगावें॥ ३९। यह तुम्हारे लिये झालर होगी जिसतें तुम उसे देख के परमेश्वर की सारी आज्ञाग्रों को स्मरण करो ग्रीर उन्हें पालन करो ग्रीर जिसतें तुम अपने

मन का और आंखों का पीछा न करो जैसे तुम आगे व्यभिचार करते थे॥ ४०। जिसतें तुम मेरी सब आज्ञाओं को स्मरण करो और उन का पालन करो और अपने ईश्वर के लिये पवित्र होओ॥ ४१। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र की भूमि से बाहर लाया कि तुम्हारा ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

और लावी के बेटे कुहास के बेटे इज़हार के बेटे क़िहात कुरह और रूबिन के बेटे दातन और अबिराम इलिअब के बेटे और फ़लत के बेटे ओन ने लोगों को गांठा॥ २। वे इसराएल के संतानों में से अढ़ाई सौ सभा के प्रधान जो मंडली में नामी और लोगों में कीर्त्तिमान थे उन्हें लेके मूसा के सन्मुख खड़े हुये॥ ३। तब मूसा और हारून के बिरोध में एकट्ठे होके उन्हें बोले कि आप को बहुत बढ़ाते हो मंडली में तो हर एक मनुष्य पवित्र है और परमेश्वर उन में है सो किस लिये परमेश्वर की मंडली से आप को बढ़ाते हो॥ ४। मूसा यह सुन के औंधे मुंह गिरा॥ ५। फिर उस ने कुरह और उस की सारी जथा को कहा कि कल ही परमेश्वर दिखावेगा कि कौन उस का है और कौन पवित्र है और अपने पास पहुंचावेगा अर्थात् उसी को जिसे उस ने चुन लिया है अपने पास पहुंचावेगा॥ ६। सो हे कुरह और उस की सारी जथा तुम यह करो अपनी अपनी धूपावरी लेओ॥ ७। और उन में आग रक्खो और कल परमेश्वर के आगे उन में धूप जलाओ और यों होगा कि जिस मनुष्य को परमेश्वर चुनता है वही पवित्र होगा हे लावी के बेटो तुम आप को बढ़ाते हो॥ ८। फिर मूसा ने कुरह से कहा कि हे लावी के बेटो सुन रक्खो॥ ९। तुम क्या उसे छोटा जानते हो कि इसराएल के ईश्वर ने तुम्हें इसराएल की मंडली में से अलग किया कि अपने पास लाके परमेश्वर के तंबू की सेवा करावे और मंडली की सेवा के लिये खड़े रहो॥ १०। और उस ने तुझे तेरे समस्त भाई लावी के बेटे तेरे संग अपने पास किया अब तुम याजकता भी ढूंढ़ते हो॥ ११। इस कारण तू और तेरी सारी जथा परमेश्वर के बिरोध पर एकट्ठी हुई है और

हारून कौन है जो तुम उस के बिरोध में कुड़कुड़ाते हो॥ १२। फिर मूसा ने इलिअब के बेटे दातन और अबिराम को बुलवाया वे बोले कि हम न आवेंगे॥ १३। क्या यह छोटी बात है कि तू हमें उस भूमि में से जिस में दूध और मधु बहता है चढ़ा लाया कि हमें अरण्य में नाश करे और अब आप को हमारे ऊपर सर्वथा अध्यक्ष बनाता है॥ १४। और तू हमें ऐसी भूमि में न लाया जहां दूध और मधु बहे तू ने हमें खेत और दाख की बारी का अधिकारी नहीं कर दिया क्या तू इन लोगों की आखें निकाल डालेगा हम तो न आवेंगे॥ १५। तब मूसा का क्रोध भड़का और परमेश्वर से यों बोला कि तू उन की भेंट की ओर मत ताक मैं ने उन से एक गधा भी नहीं लिया न उन में से किसी को दुःख दिया॥ १६। फिर मूसा ने कुरह से कहा कि तू और तेरी सारी जथा और हारून सहित परमेश्वर के आगे कल के दिन आओ॥ १७। और हर एक मनुष्य अपनी अपनी धूपावरी लेवे और उस में धूप डाले और तुम्म से हर एक अपनी अपनी धूपावरी परमेश्वर के आगे लावे सब अढ़ाई सौ धूपावरी होवें तू और हारून अपनी धूपावरी लावे॥ १८। सो हर एक ने अपनी अपनी धूपावरी लिई और उस में आग रक्खी और धूप डाला और मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा और हारून सहित आ खड़े हुए॥ १९। और कुरह ने सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर उन के बिरोध पर एकट्ठी किया तब परमेश्वर की महिमा सारी मंडली के साम्ने प्रगट हुई॥ २०। और परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २१। कि इस मंडली में से आप को अलग करो कि मैं उन्हें पल भर में नाश करूं॥ २२। तब वे औंधे मूंह गिरे और बोले कि हे ईश्वर सारे शरीरों के आत्मा का ईश्वर पाप एक करे और क्या तू सारी मंडली पर क्रुद्ध होवे॥ २३। तब परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २४। कि तू मंडली से कह कि कुरह और दातन और अबिराम के तंबुओं में से निकल आओ॥ २५। सो मूसा उठा और दातन और अबिराम के यहां गया और इसराएल के प्राचीन उस के पीछे हो लिये॥ २६। और उस ने मंडली से कहा कि उन दुष्टों के तंबुओं से निकल जाओ और उन की किसी वस्तु को मत छुओ न होवे कि तुम भी उन के सब पापों में नाश हो जाओ॥ २७। सो

वे कुरह और दातन और अबिराम के तंबुओं में से निकल गये और दातन और अबिराम और उन की पत्नियां और बेटे और लड़के निकल के अपने तंबुओं के द्वार पर खड़े हुए॥ २८। तब मूसा ने कहा कि तुम इस में जानोगे कि परमेश्वर ने यह कार्य्य करने को मुझे भेजा है और मैं ने कुछ अपनी इच्छा से नहीं किया॥ २९। यदि ये मनुष्य उस मृत्यु से मरें जिस मृत्यु से सब मरते हैं अथवा उन पर कोई विपत्ति ऐसी होवे जो सब पर होती है तो मैं ईश्वर का भेजा हुआ नहीं॥ ३०। पर यदि परमेश्वर कोई नई बात करे और पृथिवी अपना मुंह फैलावे और उन्हें सब समेत निंगल जावे और वे जीते जी नरक में जा पड़ें तो तुम जानियो कि उन लोगों ने परमेश्वर को खिझाया है॥ ३१। और यों हुआ कि ज्योंहीं वुह ये सब बातें कह चुका तो उन के नीचे की भूमि फटगई॥ ३२। फिर पृथिवी ने अपना मुंह खोला और उन्हें और उन के घर और उन सब मनुष्यों को जो कुरह के थे और उन की सब संपत्ति को निगल गई॥ ३३। सो वे और सब जो उन के थे जीते जी नरक में गये और भूमि ने उन्हें छिपा लिया और मंडली के मध्य से नष्ट हो गये॥ ३४। और सारे इसराएल जो उन के आस पास थे उन का चिल्लाना सुन के भागे क्योंकि उन्हों ने कहा न हो कि भूमि हमें भी निंगल जाय॥ ३५। फिर परमेश्वर के आगे से एक आग निकली और उन अढ़ाई सौ को जिन्हों ने धूप जलाया था खा गई॥ ३६। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ३७। कि हारून याजक के बेटे इलिअज़र से कह कि धूपावरी को आग में से उठा और आग वहीं बखर दे क्योंकि वे तो पवित्र हैं॥ ३८। और जिन्हों ने अपने प्राण के बिरोध पाप किया उन की धूपावरियों से चौड़े चौड़े पत्र बेदी के ढांपने के लिये बना क्योंकि उन्हों ने उन्हें परमेश्वर के आगे चढ़ाया इस लिये वे पवित्र हैं और वे इसराएल के संतानों के लिये एक चिन्ह होंगे॥ ३९। उन पीतल की धूपावरियों को जिन्हों ने जलाया था जो जल गये थे तब इलिअज़र याजक ने उन्हें लिया और बेदी के लिये चौड़े पत्र ढांपने के लिये बनाये॥ ४०। कि इसराएल के संतानों के लिये चेत होवे कि कोई परदेशी जो हारून के बंश से नहीं परमेश्वर के आगे धूप जलाने को पास न आवे जिसतें कुरह और उस

की जथा के समान न होवे जैसा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा से उसे कहा था।

४१। परंतु बिहान को इसराएल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून के बिरोध में कुड़कुड़ाके बोली कि तुम ने परमेश्वर के लोगों को मार डाला॥ ४२। और यों हुआ कि जब मूसा और हारून के बिरोध में मंडली एकट्ठी हुई तब उन्हों ने मंडली के तंबू की ओर ताका और क्या देखते हैं कि मेघ ने उसे ढांप लिया और परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥ ४३। तब मूसा और हारून मंडली के तंबू के आगे आये॥ ४४। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ४५। कि तुम इस मंडली में से अलग होओ जिसतें मैं उन्हें एक पल में नाश कर डालूं तब वे औंधे मूंह गिर पड़े॥ ४६। और मूसा ने हारून से कहा कि धूपावरी ले और उस में बेदी पर की आग रख और धूप डाल और मंडली में शीघ्र जाके उन के लिये प्रायश्चित्त दे क्योंकि परमेश्वर के आगे से कोप निकला और मरी आरंभ हुई॥ ४७। तब जैसी मूसा ने आज्ञा किई थी हारून मंडली के मध्य में दौड़ गया और क्या देखता है कि मरी लोगों में आरंभ हुई सो उस ने धूप रख के उन लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया॥ ४८। वुह जीवतों और मृतकों के बीच में खड़ा हुआ तब मरी थम गई॥ ४९। सो जितने उस मरी से मरे उन्हें छोड़के जो कुरह के विषय में नष्ट हुए चौदह सहस्र सात सौ थे॥ ५०। फिर हारून मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा पास फिर आया और मरी थम गई।

१७ सत्तरहवां पर्व्व।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों से कह और उन में से उन के पितरों के घराने के समान हर घराने पीछे उन के सब प्रधानों से एक एक छड़ी ले और उन के पितरों के समान बारह छड़ी और हर एक का नाम उस की छड़ी पर लिख॥ ३। और लावी की छड़ी पर हारून का नाम लिख क्योंकि हर एक प्रधान के कारण उन के पितरों के घरानों के लिये एक एक छड़ी होगी॥ ४। और उन्हें मंडली के तंबू में साक्षी के आगे रख दे जहां मैं तुम से भेंट

करूंगा॥ ५। और यों होगा कि जिसे मैं चुनूंगा उस की छड़ी में फल लगेगा और मैं इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना जो वे बिरोध से कुड़कुड़ाते हैं दूर करूंगा॥ ६। सो मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा और हर एक ने उन के प्रधानों में से एक एक प्रधान के लिये उन के पितरों के घरानों के समान एक एक छड़ी अर्थात् बारह छड़ी दिई और हारून की छड़ी उन की छड़ियों में थी॥ ७। और मूसा ने उन छड़ियों को साक्षी के तंबू में परमेश्वर के आगे रक्खा॥ ८। और ऐसा हुआ कि बिहान को मूसा साक्षी के तंबू में गया तो क्या देखता है कि लावी के घराने के लिये हारून की छड़ी में कली लगीं और कली निकलीं और फूल फूले और बादाम लगे॥ ९। तब मूसा सब छड़ियों को परमेश्वर के आगे से सब इसराएल के संतानों के पास निकाल लाया उन्हों ने देखा और हर एक ने अपनी अपनी छड़ी फेर लिई॥ १०। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून की छड़ी साक्षी के आगे रख कि दंगइत के बिरोध के लिये एक चिह्न रहे और तू उन का कुड़कुड़ाना मुझ से दूर करे जिसतें वे मर न जावें॥ ११। और मूसा ने ऐसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे कहा वैसा ही उस ने किया॥ १२। तब इसराएल के संतानों ने मूसा से कहा कि हम मरे हम नाश हुए हम सब के सब बिनाश हुए॥ १३। जो कोई परमेश्वर के तंबू पास आवेगा सो मरेगा क्या हम सब मर मरके मिट जायेंगे।

१८ अठारहवां पर्व्व।

फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि पवित्र स्थान का पाप तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे संग तेरे पिता के घराने पर होगा और तेरे संग तेरे बेटे तुम्हारी याजकता का पाप भोगेंगे॥ २। और तेरे भाई की गोष्ठी जो तेरे पिता की गोष्ठी है अपने साथ ला जिसतें वे तेरे साथ मिलाये जावें और तेरी सेवा करें पर तू अपने बेटों समेत साक्षी के तंबू के आगे रह॥ ३। और वे तेरी और सारे तंबू की रक्षा करें केवल वे पवित्र पात्रों और बेदी के पास न जावें न होवे कि वे भी और तुम भी नाश हो जाओ॥ ४। और तंबू की सारी सेवा के लिये तेरे सग

होके मंडली के तंबू की रक्षा कर और कोई परदेशी तुम्हारे पास आने न पावे॥ ५। और तुम पवित्र स्थान को और बेदी को अगोर रक्खो जिसतें आगे को फिर इसराएल के संतानों पर कोप न पड़े॥ ६। और देखो मैं ने तुम्हारे भाई लावियों को इसराएल के संतानों में से लेके परमेश्वर की भेंट के लिये तुम्हें दिया जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें॥ ७। सो तू और तेरे संग तेरे बेटे बेदी की हर एक बात के और घूंघट के भीतर की सेवा के लिये अपने याजक के पद को पालन करो और सेवा करो मैं ने याजक के पद में तुम्हें भेंट की सेवा दिई और जो परदेशी पास आवे सो मारा जायगा॥ ८। फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि देख मैं ने इसराएल के संतानों की समस्त पवित्र किई हुई उठाने की भेंटों की रक्षा करना तुझे दिया मैं ने उन्हें तेरे अभिषिक्त होने के कारण तुझे और तेरे बेटों को सदा की बिधि के निमित्त दिया॥ ९। उन पवित्र बस्तुन में से जो आग से बच रही हैं ये तेरे लिये होंगी उन के सब बलिदान और उन के हर एक भोजन की भेंट और उन के हर एक पाप की भेंट और उन के हर एक अपराध की भेंट जो वे मेरे लिये चढ़ावेंगे तेरे और तेरे पुत्रों के लिये अत्यंत पवित्र होंगी॥ १०। तू उसे अत्यंत पवित्र स्थान में खाइयो हर एक पुरुष उसे खाय यह तेरे लिये पवित्र है॥ ११। और यह तेरी है इसराएल के संतानों की भेंट के उठाने के बलिदान उन के सब हिलाये हुए बलिदान सहित मैं ने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा के ब्यवहार के लिये दिया जो कोई तेरे घर में पवित्र होवे सो उसे खावे॥ १२। सब अच्छे से अच्छा तेल और अच्छे से अच्छा दाखरस और गोहूं का और इन सभों का पहिला फल जिन्हें वे परमेश्वर की भेंट के लिये लावेंगे मैं ने तुझे दिया॥ १३। देश में जो पहिले पकता है जिन्हें वे परमेश्वर के आगे लावें तेरे होंगे तेरे घर में जो कोई पवित्र होवे सो उसे खावे॥ १४। इसराएल के संतानों के हर एक नैवेद्य की वस्तु तेरी होगी॥ १५। समस्त प्राणी में से हर एक जो गर्भ खोलता है चाहे मनुष्य होय चाहे पशु जिसे वे परमेश्वर के लिये लाते हैं तेरा होगा तथापि तू मनुष्यों के और

अपवित्र पशुन के पहिलौंठों को निश्चय छुड़ाइयो॥ १६। और जो एक मास के बय से छुड़ाये जाने का होय पांच शेकल दाम जो पवित्र स्थान के शेकल के समान होवे जो बीस गिरह है अपने ठहराने के समान उसे छुड़ाइयो॥ १७। परंतु गाय के पहिलौंठे अथवा भेड़ के पहिलौंठे अथवा बकरी के पहिलौंठे को मत छुड़ाना वे पवित्र हैं तू उन का लोहू बेदी पर छिड़कियो और उन की चिकनाई आग से परमेश्वर की सुगंध की भेंट के लिये जलाइयो॥ १८। जैसे हिलाई हुई छाती और दहिना कांधा तेरे हैं वैसा उन का मांस तेरा होगा॥ १९। पवित्र बस्तुन के हिलाने के बलिदान जिन्हें इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये चढ़ाते हैं मैं ने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा की बिधि के लिये दिया परमेश्वर के आगे तेरे और तेरे संग तेरे बंश के लिये नून की वाचा सदा के लिये है॥ २०। फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि तू उन के देश में कुछ अधिकार न रखना और उन में कुछ भाग न रखना इसराएल के संतानों में तेरा भाग और तेरा अधिकार मैं हूं॥ २१। देख मैं ने लावी के संतान को उन की सेवा के लिये जो वे सेवा करते हैं अर्थात् मंडली के तंबू की सेवा के लिये इसराएल में सारा दसवां भाग दिया॥ २२। और आगे को इसराएल के संतान मंडली के तंबू के पास न आवें न हो कि वे पापी होवें और मर जावें॥ २३। परंतु लावी मंडली के तंबू की सेवा करें और वे अपने पाप भोगेंगे तुम्हारी पीढ़ियों में यह सदा की बिधि होगी कि वे इसराएल के संतानों में अधिकार नहीं रखते हैं॥ २४। परंतु इसराएल के संतान का दसवां भाग जिन्हें वे परमेश्वर के लिये हिलाने की भेंट के लिये चढ़ावें मैं ने लावियों के अधिकार में दिया इस कारण मैं ने उन्हें कहा कि इसराएल के संतानों में वे अधिकार न पावेंगे॥ २५। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २६। कि लावियों को यों कह और उन्हें बोल कि जब तुम इसराएल के संतानों से दसवां भाग लेओ जो मैं ने उन से तुम्हारे अधिकार के लिये तुम्हें दिया है तुम दहेकी का दसवां भाग उठाने के बलिदान के कारण परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो॥ २७। जैसा कि खलिहान का अन्न और कोल्हू की भरपूरी तुम्हारे उठाने की

भेंटें गिनी जायेंगी॥ २८। इस भांति से तुम भी उठाने की भेंट परमेश्वर के लिये अपने सारे दसवें भागों से चढ़ाओ जिन्हें तुम इसराएल के संतानों से पाओगे और तुम उस में से परमेश्वर की उठाने की भेंटें हारून याजक को दीजियो॥ २९। अपनी समस्त भेंटों में से उस अच्छे से अच्छे अर्थात् उस में का पवित्र किया हुआ भाग परमेश्वर के हिलाने की भेंट चढ़ाइयो॥ ३०। इस लिये उन्हें कहो कि जब तुम उन में से अच्छे से अच्छे को उठाओ तब लावियों के लिये खलिहान की बढ़ती और कोल्हू की बढ़ती की नाईं गिना जायगा॥ ३१। और तुम और तुम्हारा घराना हर एक स्थान में खावे क्योंकि यह तुम्हारी उस सेवा का प्रतिफल है जो तुम मंडली के तंबू में करते हो॥ ३२। और जब तुम उस में से अच्छे से अच्छा उठाओगे तब तुम उस के कारण पापी न ठहरोगे और इसराएल के संतानों की पवित्र बस्तुन को अशुद्ध न करोगे और नाश न होओगे॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला॥ २। यह व्यवस्था की रीति है जो परमेश्वर ने आज्ञा कर के कहा कि इसराएल के संतानों से कह कि एक निष्खोट और निर्दोष लाल कलोर जिस पर कभी जूआ न रक्खा गया हो तुझ पास लावें॥ ३। और तुम उसे इलिअज़र याजक को देओ कि उसे छावनी से बाहर ले जावे और वुह उस के आगे बलि किई जावे॥ ४। और इलिअज़र याजक अपनी अंगुली पर उस का लोहू लेके मंडली के तंबू के आगे सात बार छिड़के॥ ५। फिर उस के आगे कलोर जलाई जावे उस की खाल और उस का मांस और उस का लोहू और उस के गोबर सहित सब जलाये जायें॥ ६। फिर याजक देवदारु की लकड़ी और जूफा और लाल लेके उस जलती हुई कलोर के ऊपर डाल देवे॥ ७। तब याजक अपने कपड़े धोवे और पानी में स्नान करे उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे और याजक सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ ८। और वुह जो उसे जलाता है अपने कपड़े पानी से धोवे और अपना अंग धोवे और सांझ लों अपवित्र

रहेगा॥ ९। और कोई पावन मनुष्य उस कलार की राख को एकट्ठी करे और छावनी के बाहर पवित्र स्थान पर उठा रक्खे और वुह इसराएल के संतानों की मंडली के लिये अलग करने के पानी के लिये होवे यह पाप की पवित्रता के लिये है॥ १०। और जो उस कलार की राख को समेटता है सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा और यह इसराएल के संतानों के और उन परदेशियों के लिये जो उन में बसते हैं एक बिधि सदा के लिये होवे॥

११। जो कोई मनुष्य की लोथ को छूये सो सात दिन लों अपवित्र रहेगा॥ १२। वुह आप को तीसरे दिन उस्से पवित्र करे और सातवें दिन पवित्र होगा पर यदि वुह आप को तीसरे दिन पवित्र न करे तो सातवें दिन पवित्र न होगा॥ १३। जो कोई किसी मनुष्य की लोथ को छूये और आप को पवित्र न करे उस ने परमेश्वर के तंबू को अशुद्ध किया वुह प्राणी इसराएल के संतानों में से कट जायगा इस कारण कि अलग करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया वुह अपवित्र है उस की अपवित्रता अब लों उस पर है॥ १४। जब मनुष्य तंबू में मरे तब उस की यही व्यवस्था है सब जो तंबू में आवें और सब जो तंबू में हैं सात दिन लों अशुद्ध होंगे॥ १५। और हर एक खुला पात्र जिस पर ढंपना बंधा न होवे अशुद्ध॥ १६। और जो कोई तलवार से अरण्य में मारे हुए को अथवा लोथ को अथवा मनुष्य के हाड़ को अथवा समाधि को छूवे सो सात दिन लों अशुद्ध होयगा॥ १७। और अशुद्ध को पाप से पवित्र करने के लिये जली हुई कलार की राख लेवे और एक बासन में बहता हुआ पानी उस पर डाले॥ १८। और एक पवित्र मनुष्य जूफा लेवे और पानी में डुबा के तंबू पर और सारे पात्रों पर और उन मनुष्यों पर जो वहां थे और उस पर जिस ने हाड़ को अथवा जूझे हुए को अथवा मृतक को अथवा समाधि को छूआ हो छिड़के॥ १९। और पवित्र जन तीसरे दिन और सातवें दिन अपवित्र पर छिड़के और फिर सातवें दिन अपने को पवित्र करे और अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे तब सांझ को पवित्र होगा॥ २०। परंतु वुह मनुष्य जो अपवित्र होय और आप को पवित्र न करे वही मनुष्य मंडली में से

कट जायगा इस कारण कि उस ने परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध किया इस लिये कि अलग करने का पानी उस पर छिड़का न गया वुह अशुद्ध है॥ २१। और यह उन के लिये नित्य की विधि होगी जो कोई अलग करने के पानी को छिड़के सो अपने कपड़े धोवे और जो कोई अलग करने के पानी को छूवे सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा॥ २२। और जो कुछ अपवित्र मनुष्य छूवे सो अपवित्र होगा और जो प्राणी उसे छूवेगा सो सांझ लों अशुद्ध होगा॥

२० बीसवां पर्ब्ब।

उस के पीछे इसराएल के संतानों की सारी मंडली पहिले मास सीना के अरण्य में आई और क़ादिस में उतर पड़ी और मिरयम वहां मर गई और गाड़ी गई॥ २। वहां मंडली के लिये पानी न था तब वे मूसा और हारून के बिरोध पर एकट्ठे हुए॥ ३। और लोगों ने मूसा से झगड़ के कहा हाय कि जब हमारे भाई परमेश्वर के आगे मर गये हम भी मर जाते॥ ४। तुम परमेश्वर की मंडली को इस अरण्य में क्यों लाये कि हम और हमारे ढोर मर जायं॥ ५। और तुम हमें मिस्र से इस बुरे स्थान में क्यों चढ़ा लाये यहां तो खेत और गूलर और दाख और अनार नहीं हैं और पीने को पानी नहीं॥ ६। तब मूसा और हारून सभा के आगे से मंडली के तंबू के द्वार पर गये और औंधे मूंह गिरे तब परमेश्वर की महिमा उन पर प्रगट हुई॥ ७। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ८। कि छड़ी ले और तू और तेरा भाई हारून मंडली को एकट्ठी करो और उन की आंखों के आगे पर्ब्बत को कहो और वुह अपना पानी देगा तू उन के लिये पर्ब्बत से पानी निकाल और उस्से तू मंडली को और उन के पशुन को पिला॥ ९। सो मूसा ने छड़ी को परमेश्वर के आगे से लिया जैसी उस ने उसे आज्ञा किई थी॥ १०। और मूसा और हारून ने मंडली को उस पर्ब्बत के आगे एकट्ठी किया और उस ने उन्हें कहा कि सुनो हे दंगइतो क्या हम तुम्हारे लिये इस पर्ब्बत से पानी निकालें॥ ११। तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस पर्ब्बत को दोबार अपनी छड़ी से मारा

तब बज्जताई से पानी निकला और मंडली और उन के पशुन ने पीया॥ १२। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस कारण कहा कि तुम ने मेरी प्रतीति न किई कि इसराएल के संतानों की दृष्टि में मुझे पवित्र करो इस लिये तुम इस मंडली को उस देश में जो मैं ने उन्हें दिया है न लाओगे॥ १३। यह झगड़े का पानी है क्योंकि इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से झगड़ा किया और उस ने उन के मध्य आप को पवित्र किया॥ १४। और कादिस से मूसा ने अदूम के राजा के पास दूतों को भेजा कि तेरा भाई इसराएल कहता है कि जो जो दुःख हम पर बीता है तू जानता है॥ १५। कि किस भांति से हमारे पितर मिस्र में उतर गये और हम मिस्र में बज्जत दिन रहे और मिस्रियों ने हमें और हमारे पितरों को दुःख दिया॥ १६। और जब हम परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब उस ने हमारा शब्द सुना और एक दूत को भेज के हमें मिस्र में से निकाल लाया और देख हम तेरे अत्यंत सिवाने के नगर कादिस में हैं॥ १७। सो हमें अपने देश में होके जाने दीजिये कि हम खेतों और दाखों की बाटिकों में न जायेंगे और न कूओं का पानी पीवेंगे हम राज मार्ग से होके निकले चले जायेंगे हम दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ेंगे जब लों कि तेरे सिवानों से बाहर न निकल जायें॥ १८। तब अदूम ने उसे कहा कि तुम मेरे सिवाने में होके न जाना नहीं तो मैं तलवार से तुझ पर निकलूंगा॥ १९। फिर इसराएल के संतानों ने उसे कहा कि हम राज मार्ग से होके चले जायेंगे और यदि मैं अथवा मेरे ढोर तेरा पानी पीये तो मैं उस का दाम देऊंगा कुछ न करूंगा केवल मैं अपने पाओं से चला जाऊंगा॥ २०। उस ने कहा कि तू कभी जाने न पावेगा तब अदूम बड़े बल से और बज्जत लोगों के साथ उस पर चढ़ आया॥ २१। सो अदूम ने इसराएल को अपने सिवाने में से जाने न दिया इस कारण इसराएल उस्से फिर गये॥

२२। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली कादिस से कूंच करके हूर पहाड़ पर आई॥ २३। और परमेश्वर ने अदूम देश के सिवाने के लग हूर पहाड़ पर मूसा और हारून से कहा॥ २४। कि हारून अपने लोगों में एकट्ठा किया जायगा क्योंकि वुह उस देश में जिसे मैं ने

इसराएल के संतानों को दिया है न पहुंचेगा इस लिये कि तुम भगड़े के पानी पर मेरे बचन से फिर गये॥ २५। हारून और उस के बेटे इलिअज़र को ले और उन्हें हूर पहाड़ पर ला॥ २६। हारून के बस्त्र उतार और उन्हें उस के बेटे इलिअज़र को पहिना कि हारून समेटा जायगा और वहां मर जायगा॥ २७। सो जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने वैसा ही किया और वे मंडली के आगे हूर पहाड़ पर चढ़ गये॥ २८। और मूसा ने हारून के बस्त्र उतारे और उन्हें उस के बेटे इलिअज़र को पहिनाया और हारून पहाड़ की चोटी पर मर गया और मूसा और इलिअज़र पहाड़ से उतर आये॥ २९। और जब सारी मंडली ने देखा कि हारून मर गया तब इसराएल के सारे घराने ने हारून के कारण तीस दिन लों बिलाप किया॥

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

और जब राजा अराद कनआनी ने जो दक्षिण में बास करता था सुना कि इसराएल भेदियों के मार्ग से आये तो इसराएल से लड़ा और उन में से बंधुआई किया॥ २। तब इसराएल ने परमेश्वर की मनौती मानी और बोला कि यदि तू सच मच इन लोगों को मेरे बश में कर देगा तो मैं उन के नगरों को सर्बथा नाश कर देऊंगा॥ ३। सो परमेश्वर ने इसराएल का शब्द सुना और कनआनियों को उन के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें और उन के नगरों को सर्बथा नष्ट कर दिया और उस ने उस स्थान का नाम हुरमः रक्खा॥ ४। फिर उन्हों ने हूर पहाड़ से लाल समुद्र की ओर कूच किया जिसतें अदूम के देश को घेर लेवें परंतु मार्ग के कारण लोगों का प्राण बहुत उदास हुआ॥ ५। और लोग ईश्वर के और मूसा के बिरोध में बोले कि तुम क्यों हमें मिस्र से चढ़ा लाये कि हम अरण्य में मरें क्योंकि अन्न जल कुछ नहीं है हमें तो इस हलकी रोटी से घिन आती है॥ ६। तब परमेश्वर ने उन लोगों में अग्नि सर्प भेजे जिन्हों ने उन्हें काटा और इसराएल के बहुत लोग मर गये॥ ७। इस लिये लोग मूसा पास आये और बोले कि हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने

परमेश्वर के और तेरे बिरोध में कहा है सो तू परमेश्वर से प्रार्थना कर कि हम्में से उन सांपों को उठा लेवे सो मूसा ने लोगों के लिये प्रार्थना किई॥ ८। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये एक आग का सर्प बना और एक लट्ठ पर लटका और यों होगा कि हर एक डंसा हुआ जब उस पर दृष्टि करेगा जीयेगा॥ ९। सो मूसा ने पीतल का एक सर्प बना के लट्ठ पर रक्खा और यों हुआ कि यदि सर्प किसी को डंसा तो जब उस ने उस पीतल के सर्प पर दृष्टि किई वुह जीया॥ १०। तब इसराएल के संतान आगे बढ़े और ओबात में डेरा किया॥ ११। फिर ओबात से कूंच किया और अजीअबरीम के बन में जो मोअब के आगे पूर्व ओर है डेरा किया॥ १२। वहां से कूच करके जरद की तराई में डेरा किया॥ १३। वहां से जो चले तो अर्नून के पार उस बन में जो अमूरियों के सिवाने का अंत्य है आके डेरा किया क्योंकि अर्नून मोअब का सिवाना है मोअब और अमूरियों के मध्य॥ १४। इसी लिये परमेश्वर के संग्राम की पुस्तक में लिखा है कि उस ने लाल समुद्र में और अर्नून के नालों में क्या क्या कुछ किया॥ १५। और नालों के धारे के पास जो आर की बस्तियों के नीचे जाता है और मोअबियों के सिवानों पर है॥ १६। और वहां से बिअर: को जो कूआं है जिस के कारण परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों को एकट्ठे कर कि मैं उन्हें पानी देऊंगा॥

१७। उस समय इसराएल ने यह भजन गाया कि हे कूएं उबलो उस का जस देओ॥ १८। अध्यक्षों ने उसे खोदा लोगों के महानों ने उसे खोदा व्यवस्थादायक के समान अपनी लाठियों से और बन से मत्तन: को गये॥ १९। और मत्तन: से नहलिएल को और नहलिएल से बामात को॥ २०। और बामात की तराई से जो मोअब के देश में है पिसग: की चोटी लों जहां से जसमन का ओर देखाता था॥ २१। और इसराएल ने अमूरियों के राजा सैहून के पास यह कहके दूत भेजे॥ २२। कि हमें अपने देश से निकल जाने दे हम खेतों और दाखों की बारियों में न पैठेंगे न हम कूएं का पानी पीवेंगे परंतु राजमार्ग से चले जायेंगे यहां लों कि तेरे सिवानों से बाहर हो जायें॥

२३। पर सैह्लन ने इसराएल के अपने सिवानें से जाने न दिया परंतु अपनेलोगों को एकट्ठे करके इसराएल का साम्ना करने को अरण्य में निकला और जहाज में पहुंचके इसराएल से संग्राम किया॥ २४। और इसराएल ने उन्हें खड्ग की धार से मार लिया और उन के देश पर अर्नून से लेके यब्बूक लों अर्थात् अम्मून के संतान लों बश में किया क्योंकि अम्मून के संतानों का सिवाना दृढ़ था॥ २५। सो इसराएल ने ये सब नगर ले लिये और अमूरियों के सब नगरों में और हसबून में और उस के सारे गांओं में बास किया॥ २६। क्योंकि हसबून अमूरियों के राजा सैह्लन का नगर था जो मोअब के अगले राजा से लड़ा और उस का समस्त देश अर्नून लों उस के हाथ से ले लिया॥ २७। इसी लिये दृष्टांतवक्तों ने कहा है कि हसबून में आओ सैह्लन का नगर बस जाय सिद्ध होय॥ २८। क्योंकि आग हसबून से निकली लवर सैह्लन के नगर से जिस ने मोअब के आर को और अर्नून के ऊंचे स्थान के प्रधानों को भस्म किया॥ २९। हे मोअब तुझ पर संताप हे कमूस के लोगो तुम नाश हुए उस ने अपने बचे हुए बेटों को दे दिया और अपनी बेटियां अमूरियों के राजा सैह्लन के बंधुआई में कर दिईं॥ ३०। उन का दीया हसबून से लेके दैबून लों बुझ गया और नफ़ह लों जो मेदिबा के पास है उजाड़ दिया॥ ३१। यों इसराएलियों ने अमूरियों के देश में बास किया॥ ३२। फिर मूसा ने यअज़ीर का भेद लेने को भेजा उन्हों ने उस के गांओं को लिया और अमूरियों को जो वहां थे हांक दिया॥ ३३। तब वे फिरे और बसन की ओर चढ़े और बसन के राजा ऊज ने अपने सब लोग लेके युद्ध के लिये अद्रिआई में संग्राम के लिये उन का साम्ना किया॥ ३४। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उस से मत डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के समस्त लोगों को और उस के देश को तेरे हाथ में सैांप दिया सो तू उन से वैसा कर जैसा तूने अमूरियों के राजा सैह्लन से किया जो हसबून में रहता था॥ ३५। सो उन्हों ने उसे और उस के बेटों और सारे लोगों को यहां लों मारा कि कोई जीता न छूटा और उस के देश में बास किया।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

फिर इसराएल के संतान आगे बढ़े और यरीह्न के लग यरदन के इसी पार मोअब के चौगानों में डेरा किया॥ २। और जब सफ़ूर के बेटे बलक़ ने सब देखा जो इसराएल ने अमूरियों से किया॥ ३। तो मोअब उन लोगों से निपट डरा इस कारण कि वे बहुत थे और मोअब इसराएल के संतानों के कारण से दुःखित हुआ॥ ४। तब मोअब ने मिद्यान के प्राचीनों से कहा कि अब ये जथा उन सब को जो हमारे आस पास हैं यों चाट जायेंगी जैसे कि बैल चौगान की घास को चट कर लेता है और सफ़ूर का बेटा बलक़ मोअबियों का राजा था॥ ५। सो उस ने बऊर के बेटे बलआम पास फ़तूरः को जा उस के लोगों के संतान के देश की नदी पास थे दूत भेजे जिसतें उसे यह कहके बुला लावें कि देख लोग मिस्र से बाहर आये हैं देख उन से पृथिवी छिप गई है और मेरे साम्ने ठहरे हैं॥ ६। सो अब आइये और मेरे लिये उन्हें स्राप दीजिये क्योंकि वे मुझ से अत्यंत बली हैं क्या जानें मैं उन्हें मार सकूं और उन्हें इस देश में से खदेड़ देऊं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि जिसे तू आशीष देता है सो आशीष प्राप्त करता है और जिसे तू स्राप देता है वुह स्रापित है॥ ७। मोअब और मिद्यान के प्राचीन टोने का प्रतिफल हाथ में लेके चले और बलआम पास आये और बलक़ का बचन उसे कहा॥ ८। उस ने उन्हें कहा कि आज रात यहां रहो और जैसा परमेश्वर मुझे कहेगा मैं तुम्हें कहूंगा सो मोअब के प्रधान बलआम के संग रहे॥ ९। तब ईश्वर बलआम पास आया और उसे कहा कि तेरे संग ये कौन मनुष्य॥ १०। बलआम ने ईश्वर से कहा कि मोअब के राजा सफ़ूर के बेटे बलक़ ने उन्हें मुझ पास भेजा और कहा॥ ११। कि देख लोग मिस्र से निकल आये हैं जो पृथिवी को ढांप रहे हैं सो आ मेरे कारण उन्हें स्राप दे क्या जानें मैं उन से जय पाऊं और उन्हें खदेड़ देऊं॥ १२। तब ईश्वर ने बलआम से कहा कि तू उन के साथ मत जा तू उन्हें स्राप मत दे क्योंकि वे आशीष प्राप्त किये हैं॥ १३। और बलआम ने बिहान को उठके बलक़ के अध्यक्षों से कहा कि अपने देश को जाओ

क्योंकि परमेश्वर मुझे तुम्हारे साथ जाने नहीं देता॥ १४। सो मोअब के अध्यक्ष उठे और बलक पास गये और बाले कि बलआम ने हमारे साथ आने के नाह किया है॥ १५। तब बलक ने उन से अधिक और प्रतिष्ठित अध्यक्षों को फिर भेजा॥ १६। और उन्हों ने आके बलआम से कहा कि सफ़ूर के बेटे बलक ने यों कहा है कि मुझ पास आने में आप को कोई रोकने न पावे॥ १७। क्योंकि मैं आप की अति बड़ी प्रतिष्ठा करूंगा और जो कुछ आप मुझे कहेंगे मैं करूंगा मैं आप की बिनती करता हूं कि आइये उन लोगों को मेरे निमित्त स्राप दीजिये॥ १८। तब बलआम ने बलक के सेवकों से उत्तर देके कहा कि यदि बलक अपना घर भर के चांदी सोना देवे तो मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के बचन को उल्लंघन करके घट बढ़ नहीं कर सक्ता॥ १९। सो अब तुम लोग भी यहां रात भर रहो जिसतें मैं देखूं कि परमेश्वर मुझे अधिक क्या कहेगा॥ २०। फिर ईश्वर रात को बलआम के पास आया और उसे कहा कि यदि ये मनुष्य तुझे बुलाने आवें तो उठ के उन के साथ जा पर जो बचन मैं तुझे कहूं सोई कहियो॥ २१। सो बलआम बिहान को उठा और अपनी गदही पर काठी रक्खी और मोअब के प्रधानों के साथ गया॥ २२। और उस के जाने के कारण ईश्वर का क्रोध भड़का और परमेश्वर का दूत बैर लेने को उस के सन्मुख मार्ग में खड़ा हुआ सो वह अपनी गदही पर चढ़ा हुआ जाता था और उस के दो सेवक उस के साथ थे॥ २३। सो गदही ने परमेश्वर के दूत को अपने हाथ में तलवार खींचे हुए मार्ग में खड़ा देखा तब गदही मार्ग से अलग खेत में फिर गई तब उसे मार्ग में फिरने के लिये बलआम ने गदही को मारा॥ २४। तब परमेश्वर का दूत दाख की बारियों के पथ में खड़ा हुआ था जिस के इधर उधर भीत थी॥ २५। और जब परमेश्वर के दूत को गदही ने देखा उस ने भीत में जा रगड़ा और बलआम का पांव भीत से दबाया और उस ने उसे फिर मारा॥ २६। तब परमेश्वर का दूत आगे बढ़के एक संकेत स्थान में खड़ा हुआ जहां दहिने बायें फिरने का मार्ग न था॥ २७। और गदही परमेश्वर के दूत को देख के बलआम के नीचे बैठ गई तब बलआम का क्रोध भड़का और उस ने

गदही को लाठी से मारा॥ २८। तब परमेश्वर ने गदही का मुंह खोला और उस ने बलआम से कहा कि मैं ने तेरा क्या किया है कि तू ने मुझे अब तीन बार मारा॥ २९। और बलआम ने गदही से कहा कि तू ने मुझे ठेड़हा बनाया मैं चाहता कि मेरे हाथ में तलवार होती तो तुझे मार डालता॥ ३०। पर गदही ने बलआम से कहा कि क्या मैं तेरी गदही नहीं हूं जिस पर तू आज के दिन लों चढ़ता है क्या मैं ऐसा कधी करती आई हूं वुह बोला कि नहीं॥ ३१। तब परमेश्वर ने बलआम की आंखे खोलीं और उस ने परमेश्वर के दूत को मार्ग में खड़े हुए देखा और उस के हाथ में खींची हुई तलवार है उस ने अपना सिर झुकाया और औंधा गिरा। ३२। तब परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू ने अपनी ग ही को तीन बार क्यों मारा देख मैं तेरे बिरुद्ध में निकला हूं इस लिये कि तेरी चाल मेरे आगे हठीली है॥ ३३। और गदही मुझे देख के तीन बार मुझ से फिर गई यदि वुह मुझ से न फिरती तो निश्चय मैं तुझे मार ही डालता और उसे जीती छोड़ता॥ ३४। तब बलआम ने परमेश्वर के दूत से कहा कि मुझ से पाप हुआ क्योंकि मैं ने न जाना कि तू मेरे बिरुद्ध मार्ग में खड़ा है सो अब यदि तू अप्रसन्न है तो मैं फिर जाऊंगा॥ ३५। पर परमेश्वर के दूत ने बलआम से कहा कि मनुष्यों के साथ जा परंतु केवल जो वचन मैं तुझे कहूं सोई कहियो सो बलआम बलक् के प्रधानों के साथ गय ॥ ३६। जब बलक् ने सुना कि बलआम पहुंचा तो उस ने अत्यंत तीर को अर्नून के सिवानेमें मोअब के एक नगर लों उस की अगुआई को निकला॥ ३७। तब बलक् ने बलआम से कहा कि क्या मैं ने बड़ी बिनती करके तुझे नहीं बुलाया तू मुझ पास क्यों चला न आया क्या निश्चय मैं तेरी महात्मय नहीं बढ़ा सक्ता॥ ३८। बलआम ने बलक् से कहा देख मैं तेरे पास आया क्या मुझ में कुछ शक्ति है कि मैं कहूं जो बात ईश्वर मेरे मूंह में डालेगा सोई कहूंगा॥ ३९। और बलआम और बलक् साथ साथ गये और करियासहसूस में पहुंचे॥ ४०। तब बलक् ने बैल और भेड़ चढ़ाये और बलआम के और उन अध्यक्षों के पास जो उस के साथ थे भेजे॥ ४१। और बिहान को यों हुआ कि बलक् ने बलआम को साथ लिया और उसे बआल के ऊंचे स्थानों में लाया जिसतें वुह वहां से लोगों को बाहर बाहर देखे॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

तब बलआम ने बलक् से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी बना और मेरे लिये यहां सात बैल और सात मेंढ़े सिद्ध कर॥ २। जैसा बलआम ने कहा था बलक् ने वैसा किया और बलक् और बलआम ने हर बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया॥ ३। फिर बलआम ने बलक् से कहा कि अपने होम की भेंट के पास खड़ा रह और मैं जाऊंगा कदाचित् परमेश्वर मुझ से भेंट करे जो कुछ वुह मुझे दिखायेगा मैं तुझे कहूंगा सो वुह ऊंचे स्थान को चला॥ ४। और ईश्वर बलआम को मिला और उस ने उसे कहा कि मैं ने सात बेदी सिद्ध किया और एक एक बैल और एक एक मेंढ़ा हर एक पर चढ़ाया॥ ५। तब परमेश्वर ने बलआम के मुंह में बचन डाला और उसे कहा कि बलक् पास फिर जा और उसे यों कह॥ ६। सो वुह उस पास फिर आया और क्या देखता है कि वुह अपने होम के बलिदान के पास मोअब के सब प्रधानों समेत खड़ा है॥ ७। तब उस ने अपने दृष्टांत में कहा कि पूर्ब के पहाड़ों से अराम से मोअब के राजा बलक् ने मुझे बुलाया कि मेरे निमित्त यअक़ूब को स्राप दीजिये और इसराएल को धिक्कारिये॥ ८। मैं उसे क्योंकर स्रापों जिसे ईश्वर ने नहीं स्रापा अथवा उसे धिक्कारूं जिसे ईश्वर ने नहीं धिक्कारा॥ ९। क्योंकि पहाड़ की चोटी पर से मैं उसे देखता हूं और पहाड़ों पर से उसे ताकता हूं देखो ये लोग अकेले रहेंगे और लोगों के मध्य गिने न जायेंगे॥ १०। यअक़ूब की धूल को कौन गिन सक्ता है और इसराएल की चौथाई का लेखा कौन ले सक्ता है हाय कि मैं धर्मी की मृत्यु मरूं और मेरा अंत्य उन का सा हो॥ ११। तब बलक् ने बलआम से कहा कि तू ने मुझ से क्या किया मैं ने तुझे अपने शत्रुन को स्राप देने को लिया और देख तू ने उन्हें सर्वथा आशीष दिया॥ १२। उस ने उत्तर देके कहा कि क्या मुझे उचित नहीं कि वही बात कहूं जो परमेश्वर ने मेरे मुंह में डाली है॥ १३। फिर बलक् ने उसे कहा कि अब मेरे साथ और ही स्थान पर चलिये वहां से आप उन्हें देखिये आप केवल उन को बाहर बाहर देखियेगा और उन्हें सब के सब

न देखियेगा मेरे लिये वहां से उन पर स्राप दीजिये॥ १४॥ और वुह उसे वहां से सफोईम के खेत में पिसगः की चोटी पर ले गया और सात बेदी बनाईं हर बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया॥ १५। तब उस ने बलक से कहा कि जबलों मैं वहां जाऊं और ईश्वर से मिल आऊं तू यहां अपने होम के बलिदान पास खड़ा रह॥ १६॥ सो परमेश्वर बलआम को मिला और उस के मूंह में बचन डाला और कहा कि बलक पास फिर जा और यों कह॥ १७। और जब वुह उस पास पहुंचा तो क्या देखता है कि वुह अपने होम के बलिदान के पास मोअब के प्रधानों समेत खड़ा है तब बलक ने उस्से पूछा कि परमेश्वर ने क्या कहा है॥ १८॥ तब उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि उठ हे बलक और सुन हे सफूर के बेटे मेरी ओर कान धर॥ १९। ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले न मनुष्य का पुत्र कि वुह पछतावे क्या वुह कहे और न करे अथवा बोले और उसे पूरा न करे॥ २०। देख मैं ने आशीष के निमित्त पाया है उस ने आशीष दिया है मैं उसे पलट नहीं सक्ता॥ २१। उस ने यअकूब में बुराई नहीं देखी न उस ने इसराएल में हठ देखा परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ है और एक राजा का ललकार उन के मध्य में है॥ २२। ईश्वर उन्हें मिस्र से निकाल लाया वुह गैंड़े का सा बल रखता है॥ २३। निश्चय यअकूब के बिरोध टोना नहीं और इसराएल के बिरुद्ध कोई प्रश्न नहीं इस समय के समान यअकूब के और इसराएल के विषय में कहा जायगा कि ईश्वर ने क्या किया॥ २४। देखो ये लोग महा सिंह की नाईं उठेंगे और आप को युवा सिंह के समान उठावेंगे वुह न सोवेगा जब लों अहेर न खा ले और जबलों जूझे का लोहू न पी ले॥ २५। तब बलक ने बलआम से कहा कि न तो उन्हें स्राप न आशीष दीजिये॥ २६। परंतु बलआम ने उत्तर दिया और बलक से कहा क्या मैं ने तुझे नहीं कहा कि जो कुछ परमेश्वर कहेगा मैं अवश्य करूंगा॥

२७। तब बलक ने बलआम से कहा कि आइये मैं आप को और स्थान पर ले जाऊं कदाचित् ईश्वर की इच्छा होवे कि वहां से आप मेरे लिये उन्हें स्राप दीजिये॥ २८। तब बलक बलआम को फ़गूर की

चोटी पर जो जशमन के सन्मुख है लाया॥ २९। वहां बलआम ने बलक से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी बना और मेरे लिये सात बैल और सात मेंढ़े सिद्ध कर॥ ३०। जैसा बलआम ने कहा था बलक ने वैसा किया और हर एक बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

जब बलआम ने देखा कि इसराएल को आशीष देना ईश्वर को अच्छा लगा तब वुह अब की आगे की नाईं नहीं गया कि टोना करे परंतु उस ने अपने मूंह को बन की ओर किया॥ २। और बलआम ने अपनी आंखें उठाईं और इसराएल को देखा कि अपनी अपनी गोष्ठियों के समान बसे हैं तब ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा॥ ३। उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि बऊर के बेटे बलआम ने कहा है और वुह मनुष्य जिस की आंखें खुली हैं बोला है॥ ४। जिस ने ईश्वर के बचन को सुना है और सर्व्वशक्तिमान ईश्वर का दर्शन पाया है सो पड़ा है परंतु आंखें खुली हैं उस ने कहा है॥ ५। क्या ही सुंदर हैं तेरे तंबू हे यअकूब और तेरे निवास स्थान हे इसराएल वे तराई की नाईं और नदी के निकट की बारियों की नाईं और जैसे अगर के वृक्ष जिसे परमेश्वर ने लगाया है और जैसे पानी के निकट के आरज वृक्ष होवें फैले हुए हैं॥ ७। वुह अपनी मोट से पानी बहावेगा और उस का बीज बहुत से पानियों में होगा उस का राजा अगाग से बड़ा होगा और उस का राज्य बढ़ जायेगा॥ ८। ईश्वर उसे मिस्र से बाहर निकाल लाया उस में गैंड़े का सा बल है वुह अपने शत्रु के देशियों को भक्षण करेगा और उन की हड्डियों को चूर करेगा और अपने बाणों से उन्हें छेदेगा॥ ९। वुह झुकता है और सिंह की नाईं हां महासिंह की नाईं लेटा है उसे कौन छेड़ सक्ता है धन्य है वुह जो तुझे आशीष देवे स्रापित है वुह जो तुझे स्राप देवे॥ १०। तब बलक का क्रोध बलआम पर भड़का और उस ने अपने दोनों हाथों से थपोली पीटी और बलक ने बलआम से कहा कि मैं ने तो तुझे अपने बैरी को स्राप देने को बुलाया और देख तूने तीन बार उन्हें सर्व्वथा आशीष दिया है॥ ११। चल अब अपने स्थान को भाग मैं ने तेरी बड़ी

प्रतिष्ठा करने चाहा था पर देख परमेश्वर ने तुझे प्रतिष्ठा से रोक रक्खा॥ १२। बलआम ने बलक् से कहा कि मैं ने तेरे दूतों को जिन्हें तू ने मेरे पास भेजा था नहीं कहा॥ १३। कि यदि बलक् अपना घर भर चांदी सोना मुझे देवे मैं भला अथवा बुरा करने में परमेश्वर की आज्ञा को उल्लंघन नहीं कर सक्ता परंतु जो कुछ परमेश्वर कहे मैं वही कहूंगा॥ १४। अब देख मैं अपने लोगों में जाता हूं आ मैं तुझे संदेश देऊंगा कि ये लोग तेरे लोगों से पिछले दिनों में क्या करेंगे॥ १५। फिर उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा और बोला कि बऊर का पुत्र बलआम कहता है और वुह मनुष्य जिस की आंखें खुली हैं कहता है॥ १६। वही जिस ने ईश्वर के वचन को सुना है और अत्यंत महान के ज्ञान को जाना है और जिस ने सर्वशक्तिमान का दर्शन पाया है जो पड़ा है परंतु उस की आंख खुली हैं॥ १७। मैं उसे देखूंगा पर अभी नहीं मेरी दृष्टि उस पर पड़ेगी पर निकट से नहीं यअकूब से एक तारा निकलेगी और इसराएल से एक राजदंड उठेगा और मोअब के कोनों को मार लेगा और सेत के सारे संतान को नाश करेगा॥ १८। अदूम अधिकार होगा और शईर भी अपने शत्रुन के लिये अधिकार होगा और इसराएल बीरता करेगा॥ १९। वुह जो राज्य पावेगा सो यअकूब से निकलेगा और जो नगर में बच रहेगा उसे नाश करेगा॥ २०। फिर उस ने अमालीक् को देखा और अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि अमालीक् लोगों में पहिला था परंतु अंत में वुह नाश होगा॥ २१। फिर उस ने कैनियों पर दृष्टि किई और अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि तेरा निवास दृढ़ है तू पहाड़ पर अपना खोंता बनाता है॥ २२। तथापि कैनी उजाड़ किये जायेंगे यहां लों कि असूर तुझे बंधुआई में ले जायेगा॥ २३। फिर उस ने अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि हाय कौन जीता रहेगा जब ईश्वर यों हीं करेगा॥ २४। कित्ती के तीर से जहाज़ आवेंगे और असूर को और इब्र को सतावेंगे और वुह भी सर्वथा नाश होवेगा तब बलआम उठा और चला और अपने स्थान को फिर गया और बलक् ने भी अपना मार्ग लिया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

सो इसराएली सत्तीन में रहे और लोगों ने मोअबियों की बेटियों से व्यभिचार करना आरंभ किया॥ २। उन्हों ने अपने देवतों के बलिदानों में उन लोगों को नेउंता दिया और लोगों ने खाया और उन के देवतों को दंडवत् किई॥ ३। और इसराएल बअलफ़ग़र से मिले तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का॥ ४। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के सारे प्रधानों को पकड़ और उन्हें परमेश्वर के आगे सूर्य्य के सन्मुख टांग दे जिसतें परमेश्वर के क्रोध का भड़कना इसराएल पर से टल जाय॥ ५। सो मूसा ने इसराएल के न्यायियों से कहा कि तुम्में से हर एक अपने लोगों को जो बअलफ़ग़र से मिल गये थे मार डालो॥ ६। सो वहीं एक इसराएली आया और अपने भाइयों के पास एक मिदयानी स्त्री को मूसा और इसराएल के संतानों की सारी मंडली के साम्ने लाया और वे मंडली के तंबू के द्वार पर बिलाप करते थे॥ ७। और हारून याजक के बेटे इलिअज़र के बेटे फ़ीनिहास ने यह देखा वुह मंडली में से उठा और बरछी हाथ में लिई॥ ८। और उस मनुष्य के पीछे तंबू में घुसा और उन दोनों को इसराएली पुरुष और स्त्री के पेट को गोदा तब इसराएल के संतानों में से मरी थम गई॥ ९। वे जो उस मरी से मरे चौबीस सहस्र थे॥ १०। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ११। कि हारून याजक के बेटे इलिअज़र के बेटे फ़ीनिहास ने मेरे कोप को इसराएल के संतानों पर से फेरा जब वुह उन में मेरे निमित्त ज्वलित था जिसतें मैं ने इसराएल के संतानों को अपने झल से भस्म न किया॥ १२। सो कह कि देख मैं उसे अपने कुशल की बाचा देता हूं॥ १३। सो वुह उस के और उस के पीछे उस के बंश के लिये होगा अर्थात् सनातन की याजकता की बाचा इस कारण कि वुह अपने ईश्वर के लिये ज्वलित था और उस ने इसराएल के संतानों के लिये प्रायश्चित्त दिया॥ १४। उस इसराएली मनुष्य का नाम जो उस मिदयानी स्त्री के साथ मारा गया ज़िमरी था सलू का बेटा जो समऊनियों के एक श्रेष्ठ घर का अध्यक्ष था॥ १५। और उस मिदयानी

स्त्री का नाम जो मारी गई कज़बी था सूर की बेटी जो लोगों का प्रधान और मिदयान के संतानों में श्रेष्ठ घर का था॥ १६। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १७। कि मिदयानियों को खिझाओ और उन्हें मारो॥ १८। क्योंकि उन्हों ने अपने छल से जिस्से उन्हों ने फ़गूर के बिषय में तुम्हें छल दिया और कज़बी के बिषय में जो मिदयानी के प्रधान की बेटी और उन की बहिन थी जो उस मरी के दिन जो फ़गूर के कारण से ऊई मारी गई उन्हों ने तुम्हें खिझाया॥

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

और ऐसा ऊआ कि उस मरी के पीछे परमेश्वर ने मूसा से और हारून याजक के बेटे इलिअज़र से कहा॥ २। कि इसराएल के संतानों की समस्त मंडली की बीस बरस से लेके ऊपर लों उन के पितरों के समस्त घरानों की सब जो इसराएल में संग्राम के योग्य हैं गिनती लेओ॥ ३। सो मूसा और इलिअज़र याजक ने मोअब के चौगानों में यरदन नदी और यरीहू के लग उन से कहा॥ ४। कि बीस बरस से लेके ऊपर लों गिनो जैसे परमेश्वर ने मूसा और इसराएल के संतानों को जो मिस्र की भूमि से निकले थे आज्ञा किई थी॥ ५। रूबिन इसराएल का पहिलौंठा बेटा रूबिन का संतान हनूक जिस्से हनूकियों का घराना है और फ़लू जिस्से फ़लूइयों का घराना है॥ ६। और हसरून जिस्से हसरूनियों का घराना है और करमी जिस्से करमियों का घराना है॥ ७। ये रूबिनियों के घराने और जो उन में गिने गये सो तेंतालीस सहस्र सात सौ तीस थे॥ ८। और फ़लू के बेटे इलिअब॥ ९। और इलिअब के बेटे नमूएल और दातन और अबिराम ये वुह दातन और अबिराम जो मंडली में नामी जो क़ुरह की जथा में मूसा और हारून के बिरोध में झगड़ा जब उन्हों ने परमेश्वर के बिरोध में झगड़ा॥ १०। और भूमि ने अपना मूंह खोला और उन्हें क़ुरह सहित निंगल गई जिस समय वुह जथा मर गई जब कि उस आग ने अढ़ाई सौ मनुष्यों को खा लिया और वे एक चिन्ह ऊए॥ ११॥ तथापि क़ुरह के संतान न मरे॥ १२। और समऊन के बेटे अपने

घराने के समान नमूऐल से नमूऐलियों का घराना यमीन से यमीनियों का घराना याकीन से याकियों का घराना॥ १३। जिरह से जिरहियों का घराना साऊल से साऊलियों का घराना॥ १४। ये समऊनियों के घराने बाईस सहस्र दो सौ थे॥ १५। जद के संतान अपने घराने के समान सफ़न से सफ़ूनियों का घराना हाजी से हाजियों का घराना सूनी से सूनियों का घराना॥ १६। उज़्नी से उज़्नियों का घराना ऐरी से ऐरियों का घराना॥ १७। अरूद से अरूदियों का घराना अरेली से जिस्से अरेलियों का घराना॥ १८। जद के संतान के घराने उन की गिनती के समान चालीस सहस्र पांच सौ थे॥

१९। यहूदाह के बेटे ऐर और ओनान कनआन के देश में मर गये॥ २०। और यहूदाह के बेटे अपने घराने के समान ये हैं सेल' से सेलानियों का घराना फ़ाड़स से फ़ाड़सियों का घराना ज़िरह से ज़िरहियों का घराना॥ २१। और फ़ाड़स के बेटे हसरून से हसरूनियों का घराना और हमूल से हमूलियों का घराना॥ २२। ये यहूदाह के घराने उन की गिनती के समान छिहत्तर सहस्र पांच सौ थे॥ २३। इश्कार के बेटे उन के अपने घरानों के समान तोलअ से तोलियों का घराना फ़ूवः से फ़ूवियों का घराना॥ २४। यसूब से यसूबियों का घराना सिमरून से सिमरूनियों का घराना॥ २५। ये इश्कार के घराने उन में गिने जाने के समान चौंसठ सहस्र तीन सौ थे॥ २६। ज़बुलून के बेटे अपने घराने के समान सरद से सरदियों का घराना ऐलून से एलूनियों का घराना यहलिऐल से यहलिऐलियों का घराना॥ २७। ये ज़बुलूनियों के घराने उन में गिने गये के समान साठ सहस्र पांच सौ थे॥

२८। यूसुफ़ के बेटे अपने घराने के समान मुनस्सी और इफ़रायम॥ २९। मुनस्सी के बेटे मकीर से मकीरियों का घराना और मकीर से जिलिअद उत्पन्न हुआ जिलिअद से जिलिआदियों का घराना॥ ३०। ये जिलिअद के बेटे ईअज़र से ईअज़रियों का घराना खलक़ से खलक़ियों का घराना॥ ३१। और यसरऐलि से यसरऐलियों का घराना और सिकम से सिकमियों का घराना॥ ३२। और सिमीदाअ से सिमीदाइयों का घराना और हिफ़्र से हिफ़्रियों का घराना॥ ३३।

हिफ़् के बेटे सिलाफ़िहाद के बेटे न थे परंतु बेटियां जिन के ये नाम महल: और नूअ: और हजल: और मिलक: और तिरज:॥ ३४। ये मुनस्सी के घराने उन में से जो गिने गये बावन सहस्र सात सौ थे॥ ३५। इफ़रायम के बेटे अपने घराने के समान सूतलह से सूतलहियों का घराना और बकर से बकरियों का घराना तहन से तहनियों का घराना॥ ३६। और सूतलह के बेटे ये ऐरान से ऐरानियों का घराना॥ ३७। ये इफ़रायम के बेटे के घराने उन में से जो गिने गये बत्तीस सहस्र पांच सौ थे सो यूसुफ़ के बेटे अपने घराने के समान ये थे॥ ३८। बिनयमीन के बेटे अपने घराने के समान बलअ से बलअनियों का घराना असबील से असबीलियों का घराना अखिराम से अखिरामियों का घराना॥ ३९। सफ़ूफ़ाम से सफ़ूफ़ामियों का घराना हूफ़ाम से हूफ़ामियों का घराना॥ ४०। बीला के बेटे अरद और नअमान अरदियों का घराना नअमान से नअमानियों का घराना॥ ४१। ये बिनयमीन के बेटे उन के घराने के समान और वे जो उन में से गिने गये पैंतालीस सहस्र छ: सौ थे॥ ४२। और दान के बेटे अपने घराने के समान सूहाम से सूहामियों का घराना दान के घराने उन के घरानों के समान॥ ४३। सूहामियों के सारे घराने उन में की गिनती के समान चौंसठ सहस्र चार सौ थे।

४४। और यसर के संतान अपने घरानों के समान यिमन: से यिमनियों का घराना यसवी से यसवियों का घराना बरीअ: से बरियों का घराना॥ ४५। बरीअ: के बेटों से हिब्र से हिब्रियों का घराना मलकिएल से मलकिएलियों का घराना है॥ ४६। और यसर की बेटी का नाम सारह था॥ ४७। और ये यसर के संतान के घराने हैं उन में से जो गिने गये तिरपन सहस्र चार सौ थे॥ ४८। नफ़ताली के बेटे अपने घराने के समान यहसिएल से यहसिएलियों का घराना और जुनी से जुनियों का घराना॥ ४९। और यिस्सी से यिस्सीयों का घराना और सिलीम से सिलीमियों का घराना॥ ५०। उस के घराने के समान ये नफ़ताली के घराने थे उन में से जो गिने गये पैंतालीस सहस्र चार सौ थे॥ ५१। सब इसराएल के संतान जो गिने गये छ: लाख एक सहस्र सात सौ तीस थे॥ ५२। फिर परमेश्वर मूसा से

कहके बाला॥ ५३। कि यह देश उन के नाम की गिनती के समान इन के लिये अधिकार में भाग किया जाय॥ ५४। तू बहुतों को बहुतसा अधिकार दीजिया और थोड़ों को थोड़ा अधिकार हर एक को उस के गिने गये के समान दिया जाय॥ ५५। तिस पर भी देश चिट्ठी से बांटा जावे वे अपने पितरों की गोष्ठियों के नाम के समान अधिकार पावें॥ ५६। बहुतों और थोड़ों में चिट्ठी से उन का अधिकार बांट दिया जाय॥ ५७। और वे जो लावियों में से गिने गये उन के घराने के समान ये हैं जैरसुन से जैरसुनियों का घराना किहात से किहातियों का घराना मिरारी से मिरारियों का घराना॥ ५८। लावी के घराने से लबनियों का घराना हबरुनियों का घराना मुहली का घराना मूसी का घराना क़ुरह का घराना और किहात से अमराम उत्पन्न हुआ॥ ५९। और अमराम की पत्नी का नाम यूकबिद था लावी की कन्या जिसे उस की माता लावी से मिस्र में जनी सो वुह अमराम से हारून और मूसा और उन की बहिन मिरयम को जनी॥ ६०। और हारून के बेटे नदब और अबिहू इलिअज़र और ईतमर॥ ६१। सो नदब और अबिहू उस समय कि वे ऊपरी आग परमेश्वर के आगे लाये मर गये॥ ६२। और वे जो उन में गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों तेईस सहस्र पुरुष थे ये इसराएल के संतानों में गिने नहीं गये क्योंकि उन्हें इसराएल के संतान के साथ अधिकार नहीं दिया गया॥ ६३। ये वे इसराएल के संतान हैं जिन्हें मूसा और इलिअज़र याजक ने मोअब के चौगानों में यरदन नदी यरीहू के साम्ने गिना॥ ६४। परंतु मूसा और हारून याजक के गिने हुओं में से जिस समय कि इसराएल के संतान को सीना के बन में गिना था एक मनुष्य भी उन में न था॥ ६५। क्योंकि परमेश्वर ने उन के बिषय में कहा था कि वे निश्चय अरण्य में मर जायेंगे सो उन में से केवल यफुन्नः के बेटे कालिब और नून के बेटे यहूसूअ को छोड़ एक भी न बचा॥

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

तब यूसुफ़ के बेटे मुनस्सी के घराने से मुनस्सी के बेटे मकीर के बेटे जिलिअद के बेटे हिफ़र के बेटे सिलाफ़िहाद की बेटियां आईं और

उस की बेटियों के नाम ये हैं महलः नूत्र: हजलः और मिलकः और तिरजः॥ २। और मूसा और इलिअज़र याजक और सब मंडली और अध्यक्षों के आगे मंडली के तंबू के द्वार के निकट खड़ी ऊई और बोलीं॥ ३। कि हमारा पिता बन में मर गया और वुह उन की जथा में न था जो परमेश्वर के बिरुद्ध होके एकट्ठे ऊए थे अर्थात् क़ुरह की परंतु अपने पाप के कारण मर गया उस के कोई बेटा न था॥ ४। सो हमारे पिता का नाम उस के घराने से क्योंकर निकाला जाय क्या इस लिये कि उस के कोई बेटा न था हमें हमारे पिता के भाइयों में मिल के भाग देओ॥ ५। तब मूसा उन का पद परमेश्वर के निकट लेगया॥ ६। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ ७। कि सिलाफ़िहाद की बेटियां सच कहती हैं तू उन्हें उन के पिता के भाइयों में भागी करके अवश्य अधिकार दे और ऐसा कर कि उन के पिता का अधिकार उन्हीं को पऊंचे॥ ८। और इसराएल के संतानों से कह यदि कोई पुरुष मर जाय और उस के कोई बेटा न हो तो उस का अधिकार उस की बेटी को पऊंचे॥ ९। और यदि उस की बेटी भी न हो तो उस के भाइयों को उस का अधिकार दीजियो॥ १०। यदि उस के भाई न हों तो तुम उस का अधिकार उस के पिता के भाइयों को देओ॥ ११। यदि उस के पिता के भाई भी न हों तो तुम उस का अधिकार उस के घराने के समीपी कुटुम्ब को देओ वुह उस का अधिकारी होगा और यह आज्ञा इसराएल के संतानों के लिये जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा यह सदा के लिये बिधि होगी॥ १२। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि अब तू अबरीम के इस पहाड़ पर चढ़ जा और उस देश को जो मैं ने इसराएल के संतानों को दिया है देख॥ १३। और जब तू उसे देख लेगा तू भी अपने लोगों में मिल जायगा जिस रीति से तेरा भाई हारून मिल गया॥ १४। क्योंकि मंडली के झगड़े में ज़ीन के अरण्य में तुम मेरी आज्ञा के बिरोध में फिर गये और उन की आंखों के आगे पानी पास जो मरीबः के पानी क़ादिस में ज़ीन के अरण्य में मुझे पवित्र न किया॥ १५। तब मूसा परमेश्वर के आगे कहके बोला॥ १६। कि हे परमेश्वर सब शरीरों के प्राणों का ईश्वर किसी को मंडली का प्रधान बना॥ १७। जो बाहर

भीतर उनके आगे आगे आया जाया करे और जो बाहर भीतर उन की अगुआई करे जिसतें परमेश्वर की मंडली उन भेड़ों की नाईं न हो जाय जिन का कोई रखवाल न हो॥ १८। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि नून के बेटे यहूसूअ को ले जिस पर आत्मा है और उस पर अपना हाथ रख॥ १९। और उसे इलिअज़र याजक और सारी मंडली के आगे खड़ा कर और उन के आगे उसे आज्ञा कर॥ २०। और अपनी प्रतिष्ठा में से उस पर कुछ रख जिसतें इसराएल के संतानों की सारी मंडली बश में होवे॥ २१। वुह इलिअज़र याजक के आगे खड़ा होवे जो उस के लिये उरिम के न्याय के समान परमेश्वर के आगे पूछे वुह और सारे इसराएल के संतानों की सारी मंडली उस के कहने से बाहर जायें और उस के कहने से भीतर आवें॥ २२। सो जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने यहूसूअ को लेके इलिअज़र याजक और सारी मंडली के साम्ने खड़ा किया॥ २३। और उस ने अपने हाथ उस पर रक्खे और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था उसे आज्ञा दिई॥

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों को आज्ञा करके उन्हें बोल कि मेरी भेंट और होम के बलिदानों की रोटी मेरे सुगंध के लिये उन के समय में पालन करके चढ़ाओ॥ ३। तू उन्हें कह कि होम की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो सो यह है कि पहिले बरस के दो निष्खोट मेम्ने प्रति दिन नित्य के होम की भेंट के लिये॥ ४। एक मेम्ना बिहान को और एक मेम्ना सांझ को॥ ५। और सवा सेर पिसान और सवा सेर कूटा हुआ तेल भोजन की भेंट के लिये॥ ६। यह होम की भेंट नित्य के लिये है जो सीना के पहाड़ पर होम का बलिदान परमेश्वर के सुगंध के लिये ठहराया गया है॥ ७। और उस के पीने की भेंट सवा सेर एक मेम्ना के लिये तीक्ष्ण दाखरस को परमेश्वर के आगे पीने की भेंट के लिये पवित्र स्थान में बिटावे॥ ८। और तू दूसरा मेम्ना सांझ को चढ़ाना तू बिहान के भोजन की भेंट की नाईं उस के पीने की भेंट की नाईं परमेश्वर के सुगंध

के लिये होम की भेंट चढ़ा॥ ९। और बिश्राम के दिन पहिले बरस के दो निष्खोट मेम्ने अढ़ाई सेर पिसान भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला हुआ और उस के पीने की भेंट समेत॥ १०। हर एक बिश्राम के होम की भेंट नित्य के होम की भेंट को छोड़ के और उस के पीने की भेंट यही है॥ ११। और तुम्हारे मास के आरंभ में होम की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे दो बछड़े एक मेंढ़ा पहिले बरस के निष्खोट सात मेम्ने चढ़ाओ॥ १२। एक बछड़ा के लिये तेल से मिला हुआ पौने चार सेर पिसान भोजन की भेंट के लिये एक मेंढ़े के लिये तेल से मिला हुआ अढ़ाई सेर पिसान भोजन की भेंट के लिये॥ १३। एक मेम्ना के भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला हुआ सवा सेर पिसान सुगंध के होम की भेंट के लिये आग से बनाया हुआ परमेश्वर के लिये बलिदान॥ १४। और उन के पीने की भेंट एक बछड़े पीछे अढ़ाई सेर दाखरस और मेंढ़े पीछे अढ़ाई पाव है और मेम्ना पीछे सवा सेर बरस के हर मास के होम का बलिदान यह है॥ १५। और नित्य के होम के बलिदान और उस के पीने के बलिदान को छोड़ पाप की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे बकरी का एक मेम्ना चढ़ाया जाय॥ १६। पहिले मास की चौदहवीं तिथि परमेश्वर का पार जाना है॥ १७। और इस मास की पंद्रहवीं तिथि को पार जाने का पर्व्व होगा सात दिन तुम अखमीरी रोटी खाइयो॥ १८। पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम कोई संसारिक कार्य न करना॥ १९। और होम का बलिदान आग से परमेश्वर के लिये यह चढ़ाइयो दो बछड़े एक मेंढ़ा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने॥ २०। और उन के साथ भोजन की भेंट पौने चार सेर पिसान तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे और हर मेंढ़े पीछे अढ़ाई सेर चढ़ाइयो॥ २१। और सातों मेम्नों में से हर मेम्ना पीछे सवा सेर चढ़ाइयो॥ २२। और अपने प्रायश्चित्त के निमित्त पाप की भेंट के लिये एक बकरी॥

२३। तुम बिहान के होम के बलिदान से अधिक जो सदा जलाया जाता है चढ़ाया करो॥ २४। परमेश्वर के सुगंध के लिये होम के बलिदान के मांस को सात दिन भर प्रतिदिन इस रीति से चढ़ाइयो

नित्य के होम की भेंट और पीने की भेंट को छोड़ के इसे चढ़ाइयो॥ २५। सातवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा है उस में तुम कोई संसारिक कार्य न करना॥ २६। और पहिले फल के दिन में भी जब तुम भोजन की भेंट अपने अठवारों के पीछे परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो तो तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होवे कोई संसारिक कार्य न कीजियो॥ २७। और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो दो बछड़े एक मेंढ़ा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने चढ़ाइयो॥ २८। और उन के भोजन की भेंट पौने चार सेर पिसान तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे और अढ़ाई सेर हर मेंढ़े पीछे॥ २९। और सवा सेर सातों मेम्नों में से हर एक मेम्ना पीछे॥ ३०। और एक बकरी का मेम्ना जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त में दिया जाय॥ ३१। सो नित्य के होम की भेंट और उस के भोजन की भेंट जो तुम्हारे लिये निष्खोट होवे और उन के पीने की भेंट छोड़ के उसे जो निष्खोट होवे चढ़ाइयो॥

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

और सातवें मास की पहिली तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा तुम कोई सेवा का कार्य न कीजियो यह तुम्हारे नरसिंगे फूकने का दिन है॥ २। और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा और पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने होम का बलिदान चढ़ाइयो॥ ३। और उन के भोजन की भेंट हर बछड़े पीछे पौने चार सेर पिसान तेल से मिला हुआ और हर मेंढ़े पीछे अढ़ाई सेर॥ ४। और सातों मेम्नों के लिये हर मेम्ना पीछे सवा सेर॥ ५। और बकरी का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया जाये॥ ६। मास के होम की भेंट और उस के भोजन की भेंट और प्रतिदिन के होम की भेंट और उस के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट उन के रीति के समान आग से किये हुए बलिदान के अधिक परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाइयो॥ ७। और इस सातवें मास की दसवीं तिथि में पवित्र बुलावा होगा और तुम अपने प्राण को क्लेश दीजियो और कोई कार्य न करियो॥ ८। परंतु परमेश्वर के सुगंध के होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक

मेंढ़ा पहिले बरस के सात मेम्ने चढ़ाइयो वे तुम्हारे लिये निष्खोट होवें॥ ९। और उन के भोजन की भेंट पौने चार सेर पिसान तेल से मिला हुआ बछड़ा पीछे और हर मेंढ़ा पीछे अढ़ाई सेर॥ १०। और सातों मेम्नों के लिये हर मेम्ना पीछे सवा सेर॥ ११। पाप के प्रायश्चित्त की भेंट के और नित्य के होम की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उन के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ १२। और सातवें मास की पंद्रहवीं तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम सेवा का कोई कार्य न करो और सात दिन तक परमेश्वर के लिये पर्व करो॥ १३। फिर तुम होम की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये तेरह बछड़े दो मेंढ़े और पहिले बरस के चौदह मेम्ने आग से किये हुए बलिदान चढ़ाइयो ये सब निष्खोट होवें॥ १४। और उन के भोजन की भेंट तेल से मिला हुआ पौने चार सेर पिसान तेरह बछड़ों में से हर बछड़े के लिये अढ़ाई सेर दो मेंढ़ों में से हर मेंढ़े पीछे॥ १५। और चौदह मेम्नों में से हर मेम्ना पीछे सवा सेर॥ १६। नित्य के होम की भेंट और उस के भोजन की भेंट और उस के पीने की भेंट से अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो॥ १७। और दूसरे दिन बारह बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने चढ़ाइयो॥ १८। और उन के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें॥ १९। नित्य के होम की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उन के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना॥ २०। और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े दो मेंढ़े और पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने॥ २१। और उन के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों उन की गिनती के और रीति के समान होवें॥ २२। नित्य के होम की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस के पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो॥ २३। और चौथे दिन दस बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने॥ २४। उन के भोजन की भेंट और उन के पीने की भेंट बछड़ों

ग्रीर मेंढ़ों ग्रीर मेम्नों के लिये उन की गिनती के ग्रीर रीति के समान होवें॥ २५। नित्य के होम की भेंट के ग्रीर उस के भोजन की भेंट के ग्रीर उस के पीने की भेंट के ग्रधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना होवे॥ २६। ग्रीर पांचवें दिन नव बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चैादह निष्खोट मेम्ने॥ २७। ग्रीर उन के भोजन की भेंट ग्रीर उन के पीने की भेंट बछड़ों ग्रीर मेंढ़ों ग्रीर मेम्नों के लिये उन की गिनती के ग्रीर रीति के समान होवे॥ २८। नित्य के होम की भेंट ग्रीर उस के भोजन की भेंट के ग्रीर उस के पीने की भेंट के ग्रधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥ २९। ग्रीर छठवें दिन ग्राठ बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चैादह निष्खोट मेम्ने॥ ३०। ग्रीर उन के भोजन की भेंट ग्रीर उन के पीने की भेंट बछड़ों ग्रीर मेंढ़ों ग्रीर मेम्नों के लिये उन की गिनती के ग्रीर रीति के समान होवे॥ ३१। नित्य के होम की भेंट के ग्रीर उस के भोजन की भेंट के ग्रीर उस के पीने की भेंट के ग्रधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे।

३२। ग्रीर सातवें दिन सात बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चैादह निष्खोट मेम्ने॥ ३३। ग्रीर उन के भोजन की भेंट ग्रीर उन के पीने की भेंट बछड़ों ग्रीर मेंढ़ों ग्रीर मेम्नों के लिये उन की गिनती के ग्रीर रीति के समान होवे॥ ३४। नित्य के होम की भेंट के ग्रीर उस के भोजन की भेंट के ग्रीर उस के पीने की भेंट के ग्रधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥ ३५। ग्राठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा होगी तुम उस दिन सेवा का कोई कार्य न कीजियो॥ ३६। फिर तुम एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने होम की भेंट के कारण परमेश्वर के सुगंध के लिये ग्राग से बनाई हुई भेंट चढ़ाइयो॥ ३७। ग्रीर उन के भोजन की भेंट ग्रीर उन के पीने की भेंट बछड़ों ग्रीर मेंढ़ों ग्रीर मेम्नों के लिये उन की गिनती के ग्रीर रीति के समान होवे॥ ३८। नित्य के होम की भेंट के ग्रीर उस के भोजन की भेंट के ग्रीर उस के पीने की भेंट के ग्रधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥ ३९। ग्रपनी मनौतियों के ग्रीर ग्रपनी बांछित भेंटों के ग्रीर ग्रपने होम की भेंटों के ग्रीर भोजन की भेंटों के ग्रीर पीने की भेंटों के

और अपने कुशल की भेंटों के अधिक तुम इन्हें अपने ठहराये ज़ए पर्बों में कीजियो॥ ४०। और मूसा ने परमेश्वर की समस्त आज्ञा के समान इसराएल के संतानों से कहा॥

३० तीसवां पर्ब्ब।

यह वुह बात है जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी और मूसा ने गोष्ठियों के प्रधानों से इसराएल के संतान के बिषय में कहा॥ २। यदि कोई पुरुष परमेश्वर की मनौती माने अथवा किरिया खाके अपने प्राण को बंधन में करे तो वुह अपनी बाचा को न तोड़े परंतु जो कुछ उस ने अपने मूंह से कहा है संपूर्ण करे॥ ३। और यदि कोई स्त्री परमेश्वर की मनौती माने और अपनी लड़काई में अपने पिता के घर में होते ज़ए आप को बाचा में बांधे॥ ४। और उस का पिता उस की मनौती और उस की बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा है सुन के चुप हो रहे तो उस की सब मनौतियां और हर एक बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा है स्थिर रहेगी॥ ५। परंतु यदि उस का पिता सुनते ज़ए उसे मान्ने न देवे तो उस की कोई मनौती और कोई बाचा जो उस ने अपने प्राण को उस्से बांधा न ठहरेगी और परमेश्वर उस स्त्री को क्षमा करेगा क्योंकि उस के पिता ने उसे मान्ने न दिया॥ ६। और जब उस ने मनौती मानी अथवा अपने मूंह से अपने प्राण को किसी बाचा से बांधा और यदि उस का पति होवे॥ ७। और उस का पति सुन के उस दिन चुपका हो रहा तो उस की मनौतियां ठहरेंगी और उस की बाचा जिन से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी॥ ८। परंतु यदि उस का पति सुन के उसी दिन उस ने उसे मान्ने न दिया हो तो उस ने उस की मनौती को जो उस ने मानी और उस की बाचा को जो उस ने अपने मूंह से अपने प्राण को उस्से बांधा बृथा किया तो परमेश्वर उस स्त्री को क्षमा करेगा॥ ९। परंतु बिधवा और त्यक्त स्त्री अपनी हर एक मनौती जिस्से उन्हों ने अपने प्राण को बांधा उन पर बनी रहेगी॥ १०। और यदि उस ने अपने पति के घर होते ज़ए कुछ मनौती मानी हो और किरिया करके किसी बाचा में आप को बांधे हो॥ ११। उस का पति

सुन के चुप हो रहे और उसे न रोके तो उस की मनौतियां ठहरेंगी और उस की हर एक बाचा जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी॥ १२। परंतु यदि सुनके उसी दिन उस का पति उसे ढृथा करे तो जो कुछ मनौतियां और अपने प्राण के बंधन के बिषय में उस के मूंह से निकला सो न ठहरेगी उस के पति ने उन्हें ढृथा किया परमेश्वर उसे क्षमा करेगा॥ १३। सब मनौतियां और किरिया जिस्से उस ने अपने प्राण को दुःख देने के लिये बांधा उस का पति चाहे तो उसे ठहरावे और चाहे मिटावे॥ १४। परंतु यदि उस का पति सुन के प्रतिदिन चुप रहे तो उस ने उस की समस्त मनौतियों और बाचों को जो उस पर है स्थिर किया क्योंकि सुन के उस ने अपने चुप रहने से उन्हें स्थिर किया॥ १५। परंतु यदि उस ने सुन लिया और उस के पीछे उसे ढृथा किया तो वुह उस का पाप भोगेगा॥ १६। पति और उस की पत्नी के मध्य में और पिता पुत्री के मध्य में जब पुत्री लड़काई के समय में पिता के घर होवे ये बिधि जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानों का पलटा मिदयानियों से ले इस के पीछे तू अपने लोगों में मिल जायगा॥ ३। तब मूसा ने लोगों से कहा कि आपुस में कितनों को संग्राम के लिये लैस करो और मिदयानियों का साम्ना करो जिसतें परमेश्वर का पलटा मिदयानियों से लेओ॥ ४। इसराएल की समस्त गोष्ठियों में से हर एक गोष्ठी से एक एक सहस्र संग्राम करने को भेजो॥ ५। सो इसराएल के सहस्रों में से हर गोष्ठी पीछे एक सहस्र बारह सहस्र हथियार बंध युद्ध के लिये सौंपे गये॥ ६। तब मूसा ने उन्हें इलिअज़र याजक के बेटे फीनिहास के साथ करके लड़ाई पर भेजा और पवित्र पात्र और फूकने के नरसिंगे उस के हाथ में थे॥ ७। जैसे परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने मिदयानियों से युद्ध किया और सारे पुरुषों को मार डाला॥ ८। और उन्हों ने उन जूझे हुओं से अधिक मिदयान के राजा अवी और रकम और सूर और हूर और रबअ को

जो मिदयान के पांच राजा थे प्राण से मारा और बओर के बेटे बलआम को भी खड्ग से मार डाला॥ ९। और इसराएल के संतानों ने मिदयान की स्त्रियों को और उन के लड़कों को बंधुआई में लिया और उन के पशु और चौपाये और संपत्ति समस्त लूट लिया॥ १०। और उन की सारी बस्तियां जिन में वे रहते थे और उन के सुंदर गढ़ों को फूंक दिया॥ ११। और उन्हों ने सारी लूट और समस्त मनुष्य और पशु को अहेर किया॥ १२। और मूसा और इलिअज़र याजक और इसराएल के समस्त संतानों की मंडली छावनी में मोअब के चौगानों में जो यरदन के लग यरीहू है बंधुए और लूट और अहेर को लाये॥ १३। तब मूसा और इलिअज़र याजक और मंडली के समस्त प्रधान उन्हें आगे से मिलने के लिये छावनी में से बाहर गये॥

१४। और मूसा सेना के प्रधानों से और सहस्रों के पतिन से और सैकड़ों के पतिन से जो लड़ाई से आये क्रुद्ध हुआ॥ १५। और मूसा ने उन्हें कहा कि तुम ने सब स्त्रियों को जीती रक्खा॥ १६। देखो इन्हों ने बलआम के मंत्र से इसराएल के बंश को फ़ग़ूर के विषय में परमेश्वर के विरोध में अपराध करवाया सो परमेश्वर की मंडली में मरी पड़ी॥ १७। इस लिये लड़कों में से हर एक बेटे को और हर एक स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई हो प्राण से मारो॥ १८। परंतु वे बेटी जो पुरुष से संयुक्त न हुई हैं उन्हें अपने लिये जीती रक्खो॥ १९। और तुम सात दिन लों छावनी से बाहर रहो जिस किसी ने मनुष्य को मारा हो और जिस किसी ने लोथ को छूआ हो वुह आप को और अपने बंधुओं को तीसरे दिन और सातवें दिन पवित्र करे॥ २०। तुम अपने समस्त वस्त्र और सब जो चमड़े के बने हुए हैं और सब बकरी के रोम के कार्य और काठ के पात्र शुद्ध करो॥ २१। तब इलिअज़र याजक ने उन योद्धाओं को जो लड़ाई में गये थे कहा कि यह व्यवस्था की बिधि है जो परमेश्वर ने मूसा से आज्ञा किई॥ २२। सोना रूपा पीतल लोहा रांगा सीसा॥ २३। और समस्त वस्तें जो आग में ठहरें तुम उन्हें आग में डालो और पवित्र करो तथापि वुह अलग किये हुये जल से पवित्र किया जायगा और सब वस्तें जो आग में नहीं ठहरतीं तुम उन्हें जल

में डालो॥ २४। और सातवें दिन अपने कपड़े धोके पवित्र होओगे उस के पीछे छावनी में आओ॥ २५। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २६। कि तू और इलिअज़र याजक और मंडली के सब प्रधान मिल के मनुष्य की और पशुन की जो लूट में आये हैं गिनती करो॥ २७। और लूट को दो भाग करो एक उन को जो संग्राम में लड़े और एक समस्त मंडली को देओ॥ २८। और योद्धा से जो लड़ाई में चढ़ गये थे परमेश्वर के लिये कर लेओ पांच सो में एक प्राणी चाहे मनुष्य होां चाहे गाय बैल चाहे गदहे होां चाहे भेड़ बकरी॥ २९। और इलिअज़र याजक को दे जिसतें परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट होवे॥ ३०। और इसराएल के संतानों के भाग में से क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे क्या भेड़ बकरी पचास पचास पीछे एक एक ले और लावियों को जो परमेश्वर के छावनी की रक्षा करते हैं दे॥ ३१। सो मूसा और इलिअज़र याजक ने वैसाही किया जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥ ३२। लूट का बचा हुआ जो योद्धा लोगों के पास था यह था छः लाख पचहत्तर सहस्र भेड़॥ ३३। और बहत्तर सहस्र गाय बैल॥ ३४। और एकसठ सहस्र गदहे॥ ३५। और वे लड़कियां जो पुरुष से संयुक्त न थीं बत्तीस सहस्र थीं॥ ३६। सो आधा जो योद्धा लोगों का भाग ठहरा यह था तीन लाख सैंतीस सहस्र पांच सो भेड़॥ ३७। और परमेश्वर का कर भेड़ में से छः सो पचहत्तर थीं॥ ३८। और गाय बैल छत्तीस सहस्र थे जिनमें से परमेश्वर का कर बहत्तर थे॥ ३९। और गदहों में से जो तीस सहस्र पांच सो थे परमेश्वर का भाग एकसठ थे॥ ४०। और मनुष्य में से जो सोलह सहस्र थे परमेश्वर का कर बत्तीस जन हुए॥ ४१। सो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उस कर को जो परमेश्वर की उठाने की भेंट थी इलिअज़र याजक को दिया॥ ४२। और इसराएल के संतानों का भाग जो मूसा ने योद्धा लोगों से लिया॥ ४३। सो वुह आधा जो मंडली का भाग हुआ यह था तीन लाख सैंतीस सहस्र पांच सो भेड़॥ ४४। और छत्तीस सहस्र ढोर॥ ४५। और तीस सहस्र पांच सो गदहे॥ ४६। और सोलह सहस्र जन॥ ४७। जैसी परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों के भाग

में से हर पचास जीवधारी पीछे मनुष्य और पशु से एक एक लिया और उसे लावियों को जो परमेश्वर के तंबू की रक्षा करते थे दिया॥ ४८। तब सेना के सहस्र पति और शत पति मूसा के पास आये॥ ४९। और उन्हों ने मूसा से कहा कि तेरे सेवकों ने समस्त योद्धाओं को जो हमारी आज्ञा में हैं गिना और उन में से एक पुरुष भी न घटा॥ ५०। सो हम हर एक वस्तु में से जो हर एक ने पाई परमेश्वर के लिये भेंट लाये हैं सोने के गहने और सीकरें और कड़े और अंगूठियां और बालियां और जंत्र जिसतें हमारे प्राणों के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त होवे॥ ५१। सो मूसा और इलिअज़र याजक ने सोने के बनाये हुए समस्त गहने उन से लिये॥ ५२। और भेंट का सब सोना जो सहस्र पति और शत पतिन ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया सो मन आठ एक का था॥ ५३। क्योंकि योड्डों में से हर एक जन अपने अपने लिये लूट लाया था॥ ५४। सो मूसा और इलिअज़र याजक उस सोने को जो उन्हों ने सहस्रों और सैकड़ों के प्रधानों से लिया मंडली के तंबू में लाये जिसतें परमेश्वर के आगे इसराएल के संतानों का स्मरण हो।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

अब रूबिन और जद के संतानों के ढोर अति बहुत थे सो जब उन्हों ने यअ़ज़ीर और जिलिअद के देश को देखा कि ढोर के लिये बहुत अच्छा है॥ २। तो उन्हों ने आके मूसा और इलिअज़र याजक और मंडली के अध्यक्षों से कहा॥ ३। कि अतरात और दैबून और यअ़ज़ीर और निमरः और हसबून और इलआली और शबाम और नबू और बऊन का देश॥ ४। जिसे परमेश्वर ने इसराएल की मंडली के आगे मारा ढोर का देश और तेरे दासों के ढोर हैं॥ ५। इस कारण उन्हों ने कहा यदि आप की दृष्टि में हम लोगों ने अनुग्रह पाया है तो इस देश को अपने सेवकों के अधिकार में दीजये और हमें यरदन पार न ले जाइये॥ ६। मूसा ने जद के संतान और रूबिन के सतान से कहा कि क्या तुम्हारे भाई लड़ाई करने जावें और तुम यहीं बैठे रहोगे।

७। जिस देश को परमेश्वर ने उन्हें दिया है उस में जाने से इसराएल के संतानों के मन को क्यों घटाते हो॥ ८। जब मैं ने तुम्हारे पितरों को कादिसबरनीअ से उस देश को देखने भेजा उन्हों ने भी ऐसा ही किया॥ ९। और जब वे इसकाल की तराई को पहुंचे और उस देश को देखा तो उन्हों ने इसराएल के संतानों के मन को घटा दिया जिसतें वे उस देश को जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था न जावें॥ १०। और तभी परमेश्वर का क्रोध भड़का और उस ने किरिया खाके कहा॥ ११। कि निश्चय लोगों में से जो मिस्र से निकले बीस बरस से लेके ऊपर लों कोई उस देश को जिस के विषय में मैं ने अबिरहाम और इज़हाक और यअक़ूब से किरिया खाई है न देखेगा इस कारण कि वे निरधार मेरी बात पर न चले॥ १२। केवल कनीज़ी यफुन्नः का बेटा कालिब और नून का बेटा यहूसूअ क्योंकि वे परमेश्वर की ओर निरधार चले॥ १३। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें बन में चालीस बरस लों भरमाया यहां लों कि वुह समस्त पीढ़ी जो परमेश्वर के आगे बुराई करती थी नष्ट हुई॥ १४। और देखो तुम लोग अपने पितरों की संती पाप मय जन बढ़ गये हो जिसतें परमेश्वर के क्रोध को इसराएलियों की ओर बढ़ाओ॥ १५। यदि तुम उसे फिर जाओगे तो वुह उन्हें फिर बन में छोड़ देगा और तुम इन सब लोगों को नाश करोगे॥ १६। तब वे उस के पास आये और बोले कि हम अपने ढोर के लिये यहां भेड़ शाले और अपने बालकों के कारण नगर बनावेंगे॥ १७। पर हम हथियार बांधे हुए लैस होके इसराएल के संतानों के आगे आगे जायेंगे यहां लों कि उन्हें उन के स्थान लों पहुंचावें और देश के बासियों के कारण हमारे बालक घेरित नगरों में रहेंगे॥ १८। हम अपने घरों को न फिरेंगे जब लों इसराएल के संतानों में से हर एक अपना अपना अधिकार न पा लेवें॥ १९। क्योंकि हम उन के संग यरदन के उस पार अथवा आगे अधिकार न लेंगे इस लिये कि हमारा अधिकार पूर्ब का यरदन के इस पार मिला है॥ २०। मूसा ने उन्हें कहा कि यदि तुम यह करो और परमेश्वर के आगे हथियार बांधे हुए जाओगे॥ २१। और हथियार बांध के परमेश्वर के आगे यरदन के

उस पार जाओ यहां लों कि वुह अपने बैरियों को अपने आगे से दूर करे॥ २२। और वुह देश परमेश्वर के आगे बश में होय तो उस के पीछे तुम फिर आओगे और परमेश्वर के और इसराएल के आगे निर्दोष ठहरोगे तब परमेश्वर के आगे तुम्हारा अधिकार होगा॥ २३। परंतु यदि तुम यूं न करोगे तो देखो कि तुम परमेश्वर के आगे पापी ऊए और निश्चय जानो कि तुम्हारा पाप तुम्हें पकड़ेगा॥ २४। तुम अपने बालकों के लिये नगर बनाओ और अपनी भेड़ों के लिये भेड़ शाले और जो तुम्हारे मूंह से निकला है सो करो॥ २५। तब जद के संतान और रूबिन के संतान मूसा से कहके बोले कि जैसी मेरे स्वामी ने आज्ञा किई है वैसाही तेरे सेवक करेंगे॥ २६। हमारे बालक हमारी पत्नियां हमारी झुंड हमारे ढोर जिलिअ़द के नगरों में रहेंगे॥ २७। परंतु जैसा मेरा प्रभु कहता है तेरे सेवक हर एक हथियार बांधे ऊए संग्राम के लिये परमेश्वर के आगे पार जायेंगे॥ २८। तब मूसा ने उन के विषय में इलिअ़ज़र याजक को और नून के बेटे यहूसूअ़ को और इसराएल के संतानों की गोष्ठी के प्रधान के पितरों को कहा॥ २९। और मूसा ने उन्हें कहा कि यदि जद के संतान और रूबिन के संतान परमेश्वर के आगे तुम्हारे साथ यरदन के पार हथियार बांध के जावें और लड़ें और देश तुम्हारे बश में आवे तो तुम जिलिअ़द का देश उन का अधिकार कर दीजियो॥ ३०। परंतु यदि वे हथियार बांध के तुम्हारे साथ पार न जावें तो वे एकट्ठे रहके कनआ़न के देश में अधिकार पावें॥ ३१। तब जद के संतान और रूबिन के संतान उत्तर में बोले कि जैसा परमेश्वर ने तेरे सेवकों को कहा हम वैसा ही करेंगे॥ ३२। हम हथियार बांध के परमेश्वर के आगे उस पार कनआ़न के देश को जायेंगे जिसतें यरदन के इधर का देश हमारा अधिकार होवे॥ ३३। तब मूसा ने अमूरियों के राजा सैहून का राज्य और बसन के राजा ऊज का राज्य वुह देश उन के नगर समेत जो उस सिवाने में है और देश के चारों ओर के नगरों को जद के संतान और रूबिन के संतान और यूसुफ़ के पुत्र मुनस्सी की आधी गोष्ठी को दिया॥ ३४। तब जद के संतान ने दैबून और अ़तरात और अ़रआ़यर॥ ३५। और अ़तरात और शूफ़ान

श्रीर यश्रजीर श्रीर युगबिराह॥ ३६। श्रीर बैतनिमरः श्रीर घेरे ज़ए नगर भेड़ों के लिये भेड़ शाले बनाये॥ ३७। श्रीर रूबिन के संतान ने हसबून श्रीर इलश्राली श्रीर करयतैन॥ ३८। श्रीर नबू श्रीर बश्रलमजन उन के नाम फेरे गये श्रीर शिबमः श्रीर उन नगरों के जो उन्हों ने बनाये श्रीर ही नाम रक्खे॥ ३९। तब मकीर के संतान मुनस्सी के बेटे जिलिश्रद को गये श्रीर उसे लेलिया श्रीर उस में के श्रमूरियों को उठा दिया॥ ४०। श्रीर मूसा ने जिलिश्रद को मकीर मुनस्सी के बेटे को दिया श्रीर वुह उस में बसा॥ ४१। श्रीर मुनस्सी का बेटा याइर निकला श्रीर उस के छोटे छोटे नगरों को ले लिया श्रीर उन का नाम याइर गांव रक्खा॥ ४२। श्रीर नूबा गया श्रीर क़िनात श्रीर उस के गांश्रों को लेलिया श्रीर उस का नाम श्रपने नाम के समान नूबह रक्खा॥

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब।

मूसा श्रीर हारून के बश में होके मिस्र देश से श्रपनी श्रपनी सेना समेत इसराएल के संतान बाहर निकल श्राये उन की यात्रा ये हैं॥ २। श्रीर मूसा ने परमेश्वर की श्राज्ञा के समान उन की यात्रा के श्रनुसार उन का कूंच लिख रक्खा श्रीर उन की यात्रा के श्रनुसार उन का कूंच यह है॥ ३। कि इसराएल के संतान पहिले मास की पंद्रहवीं तिथि में बीत जाने के पर्ब्ब के दूसरे दिन रामसीस से बड़े बल के साथ यात्रा करके समस्त मिस्रियों की दृष्टि में सिधारे॥ ४। क्योंकि मिस्रियों ने श्रपने समस्त पहिलौंठों को जिन्हें परमेश्वर ने उन में नाश किया था गाड़ा परमेश्वर ने उन के देवतों को भी न्याय का दंड दिया॥ ५। सो इसराएल के संतानों ने रामसीस से उठके सुक्कात में डेरे किये॥ ६। श्रीर सुक्कात से चलके ऐताम में जो बन के सिवाने में है डेरा किया॥ ७। फिर ऐताम से कूंच करके फीउलहीरात को जो बश्रलसफून के सन्मुख है फिर गये श्रीर मिजदाल के श्रागे डेरा किया॥ ८। फिर फीउलहीरात से चले श्रीर समुद्र के मध्य में से निकल के बन में श्राये श्रीर ऐतान के बन में तीन दिन के टप्पे पर गये श्रीर मरः में डेरा किया॥ ९। श्रीर मरः से चलके ऐलीम में श्राये जहां पानी के

बारह सोते और छोहाड़े के सत्तर पेड़ थे और वहां डेरा किया॥ १०। और ऐलीम से यात्रा करके लाल समुद्र के लग डेरा किया॥ ११। और लाल समुद्र से चलके सीन के बन में डेरा किया॥ १२। और सीन के बन से यात्रा करके दफकः में डेरा किया॥ १३। और दफकः से चलके अलूस में डेरा किया॥ १४। और अलूस से चलके रफीदीम में डेरा किया वहां लोगों के पीने के लिये पानी न था॥ १५। और रफीदीम से चलके सीना के अरण्य में आये॥ १६। और सीना के अरण्य से चलके क़िबरातुलतावः में डेरा किया॥ १७। और क़िबरातुलतावः से यात्रा करके हसीरात में डेरा किया॥ १८। और हसीरात से चलके रितमः में डेरा किया॥ १९। और रितमः से चलके रूम्मानफ़रस में डेरा किया॥ २०। और रूम्मानफ़रस से चलके लिबनः में डेरा किया॥ २१। और लिबनः से चलके रिस्सह में डेरा किया॥ २२। और रिस्सह से चलके क़हीलाथा में डेरा किया॥ २३। और क़हीलाथा से चलके सफर पहाड़ में डेरा किया॥ २४। और सफ़र पहाड़ से चलके हरादः में डेरा किया॥ २५। और हरादः से चलके मक़हीलात में डेरा किया॥ २६। और मक़हीलात से चलके तहत में डेरा किया॥ २७। और तहत से चलके तारह में डेरा किया॥ २८। और तारह से यात्रा करके मितकः में डेरा किया॥ २९। और मितकः से चलके हश्मूना में डेरा किया॥ ३०। और हश्मूना से चलके मूसीरूस में डेरा किया॥ ३१। और मूसीरूस से चलके यअ़कान में डेरा किया॥ ३२। और यअ़कान से चलके जिदजाद में डेरा किया॥ ३३। और जिदजाद से चलके युतबता में डेरा किया॥ ३४। और युतबता से चलके अब्रनः में डेरा किया॥ ३५। और अब्रूनः से चलके असयून्जब्र में डेरा किया॥ ३६। और असयूनजब्र से सिन के अरण्य में जो क़ादिस है डेरा किया॥ ३७। और क़ादिस से चलके हूर पर्वत के बन में जो अदूम के देश का सिवाना है डेरा किया॥ ३८। हारून याजक परमेश्वर की आज्ञा से हूर पर्वत पर चढ़ गया और वहां मर गया यह इसराएल के संतानों के मिस्र से बाहर निकलने के चालीसवें बरस के पांचवें मास की पहली तिथि थी॥ ३९। और हारून एक सौ तेईस

बरस का था जब वुह हूर पर्बत पर मर गया॥ ४०। और अराद राजा कनआनी ने जो कनआन देश की दक्षिण ओर रहता था सुना कि इसराएल के संतान आ पहुंचे॥ ४१। और हूर पर्बत से यात्रा करके ज़लमनः में डेरा किया॥ ४२। और ज़लमनः से चलके फूनोन में डेरा किया॥ ४३। और फूनोन से चलके ओबात में डेरा किया॥ ४४। और ओबात से चलके एयेंअबारीम में जो मोअब का सिवाना है डेरा किया॥ ४५। और ऐयीम से चलके दैबूनजद्द में डेरा किया॥ ४६। और दैबूनजद्द से चलके अलमूनदबलतैमः में डेरा किया॥ ४७। और अलमूनदबलतैमः से यात्रा करके अबरीम पर्बतों पर नबू के आगे डेरा किया॥ ४८। और अबरीम पर्बतों से चलके मोअब के चौगानों में यरदन के तीर पर जो अरीहू के लग है डेरा किया॥ ४९। और यरदन के तीर बैतुलयसीमात से यात्रा करके अबीलसत्तीन से होके मोअब के चौगानों में डेरा किया॥

५०। और परमेश्वर मोअब के चौगानों में अबीलसत्तीन के तीर अरीहू के लग मूसा से कहके बोला॥ ५१। कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर और कह कि जब तुम यरदन से पार होके कनआन के देश में पहुंचो॥ ५२। तब तुम उन सब को जो उस देश के बासी हैं अपने सन्मुख से दूर करो उन की सारी प्रतिमा को नाश करो और उन की ढाली हुई मूर्त्तियों को नष्ट करो और उन के सब ऊंचे स्थानों को ढा देओ॥ ५३। और उन्हें देश से बिदेश करके उस में बास करो क्योंकि मैं ने वुह देश तुम्हें तुम्हारे अधिकार के लिये दिया है॥ ५४। और तुम चिट्ठी डाल के उस देश को आपस में अपने घराने के समान बांट लेओ बहुतों को बहुत अधिकार देओ और थोड़ों को थोड़ा हर एक का उसी में स्थान होगा जहां उस की चिट्ठी पड़े अपने पितरों की गोष्ठियों के समान तुम अधिकार लेओ॥ ५५। परंतु यदि तुम उस देश के बासियों को अपने आगे से दूर न करोगे तो यूं होगा कि जिन्हें तुम रहने देओगे वे तुम्हारी आंखों में कांटे और तुम्हारे पांजरों में कांटे होंगे और उस देश में जहां तुम बसोगे तुम्हें सतावेंगे॥ ५६। परंतु अंत को यह होगा कि जो कुछ मैं उन से किया चाहता हूं सो तुम से करूंगा॥

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतानें को आज्ञा कर और कह कि जब तुम कनआन के देश में पहुंचे [वुह देश जो तुम्हारे अधिकार में पड़ेगा अर्थात् कनआन का देश उस के सिवाने सहित]॥ ३। तब सीन के बन से अदूम के सिवाने लों तुम्हारी दक्षिण दिशा होगी और तुम्हारा दक्षिण सिवाना खारी समुद्र के अंत तीर पूर्ब दिशा होगी॥ ४। और तुम्हारा दक्षिण सिवाना अक्राबीम के चढ़ाव के मार्ग लों घेरेगा और सीन लों पहुंचेगा और कादिशबरनीअ की दक्षिण की ओर निकलेगा और हसरअद्दार लों जायगा और अज़मून लों चला जायगा॥ ५। और यह सिवाना अज़मून से घूम के मिस्र की नदी लों पहुंचेगा और उस का निकास समुद्र से होगा॥ ६। और तुम्हारा पश्चिम का सिवाना महा समुद्र होगा यही तुम्हारा पश्चिम सिवाना होगा॥ ७। और यह तुम्हारा उत्तर सिवाना होगा महा समुद्र से हूर पर्बत लों॥ ८। और हूर पहाड़ से हमात के पैठ लों और वुह सिवाना सीदाद लों जायगा॥

९। और वुह सिवाना ज़िफ़रून को और उस का निकास हसरऐनान से हो जायगा यही तुम्हारी उत्तर दिशा है॥ १०। और तुम अपने लिये पूर्ब दिशा हसरऐनान से लेके सफ़ाम लों ठहराइयो॥ ११। और उस का सिवाना सफ़ाम से लेके रिबलः लों आईन के पूर्ब ओर होगा और सिवाना वहां से उतर के किन्नारात के समुद्र की पूर्ब दिशा में मिलेगा॥ १२। और उस का सिवाना यरदन को उतरेगा और उस का निकास खारी समुद्र लों होगा यही तुम्हारे देश और उन के तीर समेत चौदिशा में होंगे॥ १३। फेर मूसा ने इसराएल के संतानें से कहा कि यह वुह देश है जिस के अधिकारी तुम चिट्ठी से होगे जिस के बिषय में परमेश्वर ने कहा कि तू साढ़े नव गोष्ठियों को बांट दीजियो॥ १४। क्योंकि रूबिन की गोष्ठी ने अपने पितरों के घराने के समान और जद के संतान ने अपनी गोष्ठी के घराने के समान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने अपने घराने के समान पाया॥ १५॥ उन अढ़ाई गोष्ठियों ने यरदन

के इस पार अरीह्न के लग पूर्ब्ब दिशा को अपना अधिकार पाया॥ १६। फिर परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा करके कहा॥ १७। वे लोग जो तुम्हारे देश को बांटेंगे उन के ये नाम हैं इलिअज़र याजक और नून का बेटा यहूसूअ॥ १८। और तुम अपने लिये हर गोष्ठी का एक प्रधान लेओ जिसतें उस देश को भाग करे॥ १९। और उन प्रधानों के नाम ये हैं यफुन्नः का बेटा कालिब यहूदाह की गोष्ठी का॥ २०। और अम्मिहूद का बेटा समूएल समऊन की गोष्ठी के घराने का॥ २१। और किसलून का बेटा इलिदाद बिनयमीन के घराने का॥ २२। और दान के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष युगली का बेटा बकी॥ २३। यसूफ के संतान के प्रधान मुनस्सी के सतानों की गोष्ठी के लिये अफूद का बेटा हन्निएल॥ २४। और इफ़रायम के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष सिफ़तान का बेटा कमूएल॥ २५। ज़बुलून के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष फ़रनाक का बेटा इलीसफ़न॥ २६। और इशकार के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष अज़ान का बेटा फ़लतिएल॥ २७। और यसर के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष सलमी का बेटा अखिहूद॥ २८। और नफ़ताली के सतान की गोष्ठी का अध्यक्ष अम्मिहूद का बेटा फिदहिएल॥ २९। ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने आज्ञा किई कि कनआन का देश इसराएल के सतान को अधिकार में बांट देवें।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब॥

फिर परमेश्वर मोअब के चैागान में यरदन के तीर पर अरीह्न के लग मूसा से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के सतानों से कह कि लावियों को अपने अधिकार में से अधिकार के लिये नगर बसने को देव और नगरों के चारों ओर के उप नगर उन्हें देओ॥ ३। और नगरों को उन के रहने के कारण और आस पास उन के गाय बैल के कारण और उन की संपत्ति और उन समस्त पशुन के लिये हों॥ ४। और नगरों के आस पास जो तुम लावियों को देओगे चाहिये कि नगर की भीत से सहस्र हाथ बाहर होवे॥ ५। और तुम नगर से लेके बाहर पूर्ब की ओर दो सहस्र हाथ नापो और दक्षिण की ओर दो सहस्र हाथ और पच्छिम को

ओर दो सहस्र हाथ ओर उत्तर की ओर दो सहस्र हाथ ओर उन के मध्य में ग उन के लिये नगरों के उप नगर होंगे॥ ६। ओर उन नगरों के मध्य में जो तुम लावियों को देओगे छः नगर शरण के लिये होवें जिसे तुम घातक के लिये ठहराओ ओर उन में बयाली नगर ओर भी मिला देओ॥ ७। सारे नगर जो तुम लावियों को देओगे अठतालीस नगर उन के उप नगर सहित॥ ८। ओर जो नगर तुम देओगे सो इसराएल के संतानों के अधिकार में से बड़त में से बड़त दीजियो ओर थोड़ में से थोड़ा सब कोई अपने अधिकार के समान अपने नगरों में से जो उस के अधिकार में है लावियों को दीजियो॥ ९। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला॥ १०। कि इसराएल के संतानों को आज्ञा कर ओर उन्हें कह कि जब तुम यरदन पार कनआन के देश में पड़ंचो॥ ११। तब तुम अपने लिये नगरों को शरण नगर के कारण ठहराओ जिसते वुह घातक जिस्से अनजाने घात हो जाय भाग के वहां जा रहे॥ १२। ओर वुह तुम्हारे लिये पलटा दायक से शरण नगर होगा ओर घातक जब लों बिचार के लिये मंडली के आगे खड़ा न होवे मारा न जाय॥ १३। सो जो जो नगर तुम देओगे उन में छः नगर शरण के लिये होंगे॥ १४। यरदन के इस पार तीन नगर दीजियो ओर कनआन के देश में तीन नगर दीजियो ये शरण नगर होंगे॥ १५। ये छः नगर इसराएल के संतानों ओर परदेशी ओर उन के कारण जो तुम्में रहते हैं शरण के लिये होंगे कि जो कोई अनजाने किसी को मारे उधर भाग जाय॥ १६। ओर यदि कोई किसी को लोहे के हथियार से मारे एसा कि वुह मर जाय तो वुह घातक है घातक अवश्य घात किया जायगा॥ १७। ओर यदि कोई किसी को एसा पत्थर फेंक मारे कि वुह मर जाय तो वुह घातक है घातक अवश्य मार डाला जाय॥ १८। अथवा कोई किसी को एसा लठ मारे कि वुह मर जाय तो वुह घातक है घातक अवश्य घात किया जाय॥ १९। लोहू का पलटा दायक वही घातक को आप ही उसे घात करे जब वुह उसे पावे उसे मार डाले॥ २०। ओर यदि कोई किसी को डाह से ढकेल देवे अथवा दांवघात से उसे पटक देवे कि वुह मर जाय॥ २१। अथवा बैरी को हाथ से मारे कि वुह मर जाय तो जिस ने उसे मारा वुह निश्चय मारा जायगा मारे ऊए

का कुटुंब जब उस घातक को पावे उसे घात करे॥ २२। और यदि कोई किसी को बिना बैर के अकस्मात् ढकेल देवे अथवा बिना दांवघात उस पर कोई बस्तु डाल देवे॥ २३। अथवा उसे बिन देखे ऐसा पत्थर फेंके कि उस पर गिरे और वुह मर जाय और वुह उस का बैरी न था और न उस की बुराई चाहता था॥ २४। तब मंडली उस घातक और लोहू के पलटा दायक के मध्य इस न्याय के समान बिचार करे॥ २५। कि मंडली उस घातक को लोहू के पलटा दायक के हाथ से छुड़ा के उस शरण नगर में जहां वुह भाग के गया था फिर भेज देवे और वुह प्रधान याजक के जो पवित्र तेल से अभिषिक्त हुआ था मरने लों वहीं रहे॥ २६। परंतु यदि घातक उस शरण नगर के सिवाने से जहां वुह भाग के गया था बाहर आवे॥ २७। और लोहू का पलटा दायक घातक को शरण नगर के सिवाने से बाहर पावे और घातक को मार डाले तो उस पर घात का अपराध नहीं॥ २८। क्योंकि उस घातक को उचित था कि प्रधान याजक की मृत्यु लों शरण नगर में रहता और उस के मरने के पीछे अपने अधिकार के देश में आता॥ २९। सो तुम्हारी सारी पीढ़ियों में और समस्त बस्तियों में न्याय के लिये यह ब्यवस्था होगी॥ ३०। जो किसी को मार डाले तो घातक साक्षियों की साक्षी के समान घात किया जाय परंतु एक साक्षी की साक्षी से किसी को घात न करना॥ ३१। और तुम घातक के प्राण की संती जो घात के योग्य है मोल मत लेओ परंतु वुह अवश्य मारा जाय॥ ३२। और तुम उस्से भी जो अपने शरण के नगर को भाग गया हो घात का मोल मत लेओ जिसतें वुह याजक की मृत्यु लों अपने देश में आ बसे॥ ३३। सो जहां हो उस देश को अशुद्ध मत कीजियो क्योंकि घात ही से देश अशुद्ध होता है और देश उस लोहू से जो उस में बहाया गया है शुद्ध नहीं होता परंतु केवल उसी के लोहू से जिस ने उसे बहाया है॥ ३४। सो तुम अपने निवास के देश को जहां मैं रहता हूं अशुद्ध न करो क्योंकि मैं परमेश्वर इसराएल के संतानों के मध्य में रहता हूं॥

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब।

जलआद के संतान के घराने के पितरों के प्रधान और यूसुफ़ के संतान के घराने में से मुनस्सी के बेटे माखीर के बेटे जलआद के संतान के घराने के पितरों के प्रधान आके मूसा के आगे और इसराएल के संतानों के पितरों के आगे बोले॥ २। कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को आज्ञा किई कि चिट्ठी डाल के देश को इसराएल के संतानों को अधिकार के लिये देवे और हमारे प्रभु ने परमेश्वर की आज्ञा से कहा कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद का अधिकार उस की बेटियों को दिया जाय॥ ३। सो यदि वे इसराएल के संतानों की और गोष्ठियों के बेटों में से किसी के साथ ब्याही जावें तो उन का अधिकार हमारे पितरों के अधिकार से निकल जायगा और उस गोष्ठी के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिल जायगा सो हमारी चिट्ठी का अधिकार घट जायगा॥ ४। और जब इसराएल के संतानों के आनंद का बरस आवे तब उन का अधिकार उस घराने के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिल जायगा और उन का अधिकार हमारे पितरों की गोष्ठी के अधिकार में से निकल जायगा॥ ५। तब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से इसराएल के संतानों से कहा कि यूसुफ़ के संतान की गोष्ठी अच्छा कहती है॥ ६। सो परमेश्वर सिलाफ़िहाद की बेटियों के विषय में यों आज्ञा करता है कि वे जिस्से चाहें उस्से ब्याह करें केवल अपने पिता की गोष्ठी में ब्याह करें॥ ७। जिसतें इसराएल के संतानों का अधिकार एक गोष्ठी से दूसरी गोष्ठी में न जावे और इसराएल के संतान में से हर जन आप को अपने ही पितरों की गोष्ठी के अधिकार में रक्खे॥ ८। और हर एक बेटी इसराएल के संतानों की किसी गोष्ठी में अधिकार रक्खे अपने बाप ही के घराने की गोष्ठी में से एक की पत्नी होवे जिसतें इसराएल के संतान में हर जन अपने पिता के अधिकार पर स्थिर रहे॥ ९। और अधिकार एक गोष्ठी में से दूसरी गोष्ठी में न जाय परंतु इसराएल के संतान के घरानों में हर एक जन अपने अधिकार में आप को रक्खे॥ १०। सो सिलाफ़िहाद की बेटियों ने वैसा ही किया जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ ११।

क्योंकि महला: और तिरज: और हजल: और मिलक: और नुआ: सिलाफ़िहाद की बेटियां अपने चचेरे भाइयों के साथ ब्याही गईं॥ १२। यूसुफ़ के बेटे मुनस्सी के घरानों में ब्याही गईं और उन का अधिकार उन के पिता की गोष्ठी में बना रहा॥ १३। ये वे आज्ञा और बिचार हैं जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से मोआब के चौगानों में यरदन के तीर पर अरीहू के सन्मुख इसराएल के संतानों को आज्ञा किई॥

मूसा की पांचवीं पुस्तक जो बिवाद की कहाती है।

---

१ पहिला पर्ब्ब ।

ये वे बातें हैं जिन्हें मूसा ने यरदन के इस पार अरण्य में लाल समुद्र के सन्मुख चैागान में फ़ारान ग्रीर तोफ़ा ग्रीर लाबन ग्रीर हसीरात ग्रीर दीज़हब के मध्य में इसराएल के संतानों से कहा॥ २। हरिब से क़ादिशबरनीअ लों शईर पर्बत के पथ से ग्यारह दिन का मार्ग है॥ ३। ग्रीर ऐसा हुआ कि चालीसवें बरस के ग्यारहवें मास की पहिली तिथि में उन समस्त आज्ञाग्रों के समान जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिई थीं जिसतें इसराएल के संतानों से कही जावें मूसा ने उन्हें कहा॥ ४। उस के पीछे कि उस ने अमूरियों के राजा सैहून को जो हसबून में रहता था ग्रीर बासान के राजा ऊज को जो इसतारात ग्रीर अद्रिअई में रहता था बधन किया॥ ५। यरदन के इस पार मोअब के चैागान में इस व्यवस्था को बर्णन करना आरंभ किया ग्रीर कहा॥ ६। कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हरिब में हमें यह कहके बोला कि तुम इस पहाड़ पर बहुत रहे॥ ७। फिरो ग्रीर यात्रा करो ग्रीर अमूरियों के पहाड़ को ग्रीर उस के समस्त परोसियों में जाग्रो चैागान में पहाड़ों में ग्रीर तराई में दक्षिण में ग्रीर समुद्र के तीर कनआनियों के देश को ग्रीर लुबनान को महानदी फ़रात लों जाग्रो॥ ८। देखो मैं ने आगे का देश तुम्हें दिया प्रवेश करो ग्रीर उस देश पर जिस के बिषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितर अबिरहाम ग्रीर इज़हाक़ ग्रीर यअक़ूब से किरिया खाई कि तुम्हें ग्रीर तुम्हारे पीछे तुम्हारे बंश को देऊंगा अधिकार में लेग्रो॥ ९। ग्रीर

उसी समय में ने तुम्हें कहा कि में अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा सक्ता॥ १०। परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बढ़ाया और देखो तुम आज के दिन आकाश के तारों की नाईं मंडली हो॥ ११। परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें इस्से भी सहस्र गुण अधिक बढ़ावे और जैसा उस ने तुम से कहा है तुम्हें आशीष देवे॥ १२। में तुम्हारे परिश्रम और बोझ और झगड़ों को अकेला क्योंकर उठा सकूं॥ १३। तुम बुद्धिमान और ज्ञानी और अपनी गोष्ठियों में से प्रसिद्ध लोगों को लाओ और में उन्हें तुम पर आज्ञाकारी करूंगा॥ १४। और तुम ने मुझे उत्तर देके कहा कि जो कुछ तू ने कहा है सो पालन करने को भला है॥ १५। सो में ने तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधानों को बुद्धिमान और प्रसिद्धों को लिया और उन्हें तुम्हारा प्रधान सहस्रों का प्रधान और सैकड़ों का प्रधान और पचास पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान तुम्हारी गोष्ठियों में करोड़ा किया॥ १६। और उस समय में ने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा करके कहा कि अपने भाइयों का बिबाद सुनो मनुष्य में और उस के भाइयों में और उस के साथ के परदेशियों में धर्म से न्याय करो॥ १७। तुम मुंह देखा न्याय न करो तुम न्याय में किसी के रूप को मत मानो बड़े के समान छोटे की भी सुनियो तुम मनुष्य के रूप से न डरो क्योंकि न्याय ईश्वर का है और जो बिषय तुम्हारे लिये कठिन होय मेरे पास लाओ में उसे सुनूंगा॥ १८। सब जो तुम्हें करना था में ने उसी समय में तुम्हें आज्ञा किई॥ १९। और हम ने होरिब से यात्रा किई तो जैसी परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई थी उस समस्त महा भयंकर बन में गये जिसे तुम ने अमूरियों के पहाड़ को जाते हुए देखा और क़ादिशबरनीअ में आये॥ २०। और में ने तुम्हें कहा कि तुम अमूरियों के पहाड़ को पहुंचे हो जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देता है॥ २१। देख परमेश्वर तेरे ईश्वर ने यह देश तेरे आगे धरा है चढ़ और उसे बश में कर जैसा परमेश्वर तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है मत डर और हियाव न छोड़॥

२२। तब हर एक तुम्में से मुझ पास आया और बोला कि हम अपने आगे लोग भेजेंगे वे हमारे लिये उस देश का भेद लेवें और आके

हम से कहें कि हम किस मार्ग से वहां जावें और कौन कौन नगरों में प्रवेश करें॥ २३। वुह कहना मुझे भाया और मैं ने तुम्में से गोष्ठी पीछे एक एक मनुष्य करके बारह मनुष्य लिये॥ २४। वे चल निकले और पहाड़ पर गये और इसकाल की तराई में आये और उस का भेद लिया॥ २५। और वे उस देश का फल अपने हाथों में लेके हमारे पास उतर आये और संदेश ले आये और बोले कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें उत्तम देश देता है॥ २६। तथापि तुम चढ़ न गये परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से फिर गये॥ २७। और तुम अपने तंबूओं में कुड़कुड़ा के बोले इस कारण कि परमेश्वर हम से डाह रखता था हमें मिस्र के देश से निकाल लाया कि हमें अमूरियों के हाथ में करके नाश करे॥ २८। हम कहां चढ़ें हमारे भाइयों ने तो यों कहके हमारे मन को घटा दिया कि वे लोग तो हम से बड़े और लम्बे हैं और उन के नगर बड़े हैं जिस की भीतें स्वर्ग लों हैं और इस्से अधिक हम ने अनाकियों के बेटों को वहां देखा॥ २९। तब मैं ने तुम्हें कहा कि मत डरो और उन से भय मत करो॥ ३०। परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हारे आगे आगे जाता है वही तुम्हारे लिये लड़ेगा जैसा कि उस ने तुम्हारी दृष्टि में तुम्हारे लिये मिस्र में किया॥ ३१। और अरण्य में जहां तुम ने देखा कि जैसा मनुष्य अपने बेटे को उठाता है वैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने सारे मार्ग में जहां जहां तुम गये तुम्हें उठाया है जब लों तुम इस स्थान में आये॥ ३२। तथापि इस बात में तुम ने परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रतीति न किई॥ ३३। वुह रात को आग में और दिन को मेघ में जिसतें तुम्हें जाने का मार्ग बतावे मार्ग में तुम से आगे आगे गया जिसतें तुम्हारे लिये स्थान ठहरावे जहां अपने तंबू खड़े करो॥ ३४। तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातें सुनीं और क्रुड्ड हुआ और किरिया खाके बोला॥ ३५। कि निश्चय इस दुष्ट पीढ़ी में से एक भी उस अच्छे देश को जिस के देने को मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है न देखेगा॥ ३६। केवल यफुन्नः का बेटा कालिब उसे देखेगा और मैं वुह देश जिस पर उस का पांव पड़ा उसे और उस के वंश को दूंगा इस कारण कि वुह पूर्णता से परमेश्वर के मार्ग पर चला॥ ३७। और तुम्हारे कारण से परमेश्वर ने मुझ पर भी क्रुड्ड

होके कहा कि तू भी उस में प्रवेश न करेगा॥ ३८। परंतु नून का बेटा यहूसूत्र जो तेरे आगे खड़ा रहता है उस में प्रवेश करेगा तू उसे उभाड़ क्योंकि वुह इसराएल को उस का अधिकारी करेगा॥ ३९। और तुम्हारे बालक जिन्हें तुम ने कहा था कि अहेर हो जायेंगे और तुम्हारे लड़के जिन्हें भले बुरे का ज्ञान तब न था वहां प्रवेश करेंगे और मैं उन्हें देऊंगा और वे उस के अधिकारी होंगे॥ ४०। परंतु तुम फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से बन में यात्रा करो॥ ४१। तब तुम ने मुझे उत्तर दे के कहा कि हम ने परमेश्वर का अपराध किया है सो हम चढ़ जायेंगे और जैसी कि परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई है हम लड़ेंगे फिर तुम सब के सब हथियार बांध के सिद्ध हुए कि पहाड़ पर चढ़ जाओ॥ ४२। तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि तू उन्हें कह कि मत चढ़ो और युद्ध न करो क्योंकि मैं तुम्हें नहीं हूं न हो कि तुम अपने बैरियों के आगे मारे जाओ॥ ४३। सो मैं ने तुम्हें कह दिया और तुम ने न सुना परंतु परमेश्वर की आज्ञा से फिर गये और ढिठाई से पहाड़ पर चढ़ गये॥ ४४। तब अमूरियों ने जो उस पहाड़ पर रहते थे तुम्हारा साम्ना किया और मधु माखियों की नाईं तुम्हें रगेदा और शईर में हुरमः लों तुम्हें मारा॥ ४५। तब तुम फिरे और परमेश्वर के आगे रोये परंतु परमेश्वर ने तुम्हारी न सुनी और न तुम्हारी ओर कान धरा तब तुम क़ादिस में बहुत दिन लों रहे।

२ दूसरा पर्ब्ब।

तब जैसी परमेश्वर ने मुझे आज्ञा किई थी हम फिरे और लाल समुद्र के मार्ग से बन में यात्रा किई और बहुत दिन लों शईर पर्बत को घेरा॥ २। फिर परमेश्वर मुझे कहके बोला॥ ३। कि तुम ने इस पर्बत को बहुत दिन लों घेरा अब उत्तर की ओर जाओ॥ ४। और लोगों से कह कि तुम अपने भाई एसौ के संतान के सिवाने से चलते हो वे शईर में रहते हैं वे तुम से डरेंगे सो तुम आप से चौकस रहो॥ ५। और उन्हें मत छेड़ो क्योंकि मैं उन की भूमि से एक पैर भर भी तुम्हें न देऊंगा इस कारण मैं ने शईर पर्बत एसौ के अधिकार में दिया है॥ ६। तुम खाने के लिये उन से भोजन मोल लीजियो और पीने के लिये दाम

देके जल भी मोल लीजियो॥ ७। क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे हाथ के सब कार्यों में तुझे आशीष दिया है वुह इस महा बन में तेरा जाना जानता है इन चालीस बरस भर परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ है तुझे किसी बात की घटी न हुई॥ ८। और जब हम अपने भाई एसौ के संतान से जो शईर में रहते थे चौगान के मार्ग में से और असयनजब्र से होके चले गये तो हम फिरे और मोअब के बन के मार्ग में से आये॥ ९। तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि मोअबियों को मत छेड़ और उन से मत झगड़ क्योंकि उन के देश का अधिकारी तुझे न करूंगा इस कारण कि मैं ने आर को लूत के संतान के अधिकार में दिया है॥ १०। वहां आगे ऐमीम रहते थे वे बड़े बड़े और बहुत और लम्बे लम्बे अनाकियों के समान थे॥ ११। वे भी अनाक के संतान के समान दानव में गिने जाते थे परंतु मोअबी उन को ऐमीम कहते हैं॥ १२। परंतु आगे शईर में हूरीम रहते थे और एसौ के संतान उन के अधिकारी हुए और उन्हें अपने आगे मिटा डाला और उन के स्थान पर बसे जैसा इसराएल के संतान ने अपने अधिकार के देश में किया जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था॥ १३। अब उठो और ज़रद की नाली पार होओ सो हम ज़रद की नाली के पार उतर गये॥ १४। और जब से हम ने क़ादिशबरनीअ को छोड़ा और ज़रद की नाली के पार उतरे अठतीस बरस हुए जब लों कि लड़ाके की समस्त पीढ़ी सेना में से घट गई जैसी परमेश्वर ने उन से किरिया खाई थी॥ १५। क्योंकि निश्चय परमेश्वर का हाथ उन की बिरुद्धता में था कि सेना में से उन्हें नाश करे यहां लों कि वे भस्म हो गये॥ १६। सो ऐसा हुआ कि जब समस्त लड़ाके मिट के लोगों में से मर गये॥ १७। तब परमेश्वर मुझे कहके बोला॥ १८। कि तू आज आर में होके जो मोअब का सिवाना है चला जायगा॥ १९। और जब तू अम्मून के संतान के आम्ने साम्ने आ पहुंचे तो उन्हें दुःख न दे और न उन्हें छेड़ क्योंकि मैं अम्मून के संतान के देश में तुझे अधिकार नहीं देने का इस कारण कि मैं ने उसे लूत के संतान के अधिकार में दिया है॥ २०। वुह भी दानव का देश कहाता था आगे वहां दानव रहते थे और अम्मनी उन्हें ज़मज़मी कहते थे॥ २१। वे बहुत और

लम्बे लम्बे अनाकियों के समान थे परमेश्वर ने उन्हें उन के आगे नाश किया सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया और उन के स्थान पर बसे॥ २२। जैसा उस ने एसौ के संतानों से किया जो शईर में रहते थे जब उस ने हूरीयों को उन के आगे से नाश किया सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया और उन के स्थान पर आज लों बसे हैं॥ २३। और अवीयों को भी जो हसरैम में रहते थे और कफ़तूरी जो कफ़तूर से आये उन्हें नाश किया और उन के स्थान में बसे॥ २४। तुम उठो चलो अरनून के पार जाओ देखो मैं ने हसबून के राजा अमूरी सैहून को उस की भूमि सहित तुम्हारे हाथ में दिया है सो अधिकार लेने को आरंभ करो और लड़ाई में उन का साम्ना करो॥ २५। आज के दिन से मैं तुम्हारा डर और भय उन जाति गणों पर डालूंगा जो सारे आकाश के नीचे हैं वे तुम्हारी सुधि पावेंगे और घबरायेंगे और तुम्हारे आगे थर्थरा जायंगे॥ २६। तब मैं ने क़दीमात से हसबून के राजा सैहून पास दूतों से मिलाप का यह वचन कहला भेजा॥ २७। कि तू अपने देश में से मुझे जाने दे मैं राज मार्ग में होके जाऊंगा और मैं दहिने बायें हाथ न मुड़ूंगा॥ २८। खाने के लिये दाम लेके मुझे अन्न जल दीजियो केवल मैं पांव पांव चला जाऊंगा॥ २९। जिस रीति से कि एसौ के संतान ने जो शईर में रहते हैं और मोअबियों ने जो आर में बसते हैं मुझ से किया जिसतें हम यरदन के पार उस भूमि में पहुंचें जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देता है॥ ३०। परंतु हसबून के राजा सैहून ने हमें अपने पास से जाने न दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उस के आत्मा को कठोर और उस के मन को ढीठ कर दिया जिसतें उसे आज के समान तेरे हाथ में देवे॥ ३१। फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि देख मैं ने सैहून को उस के देश सहित तुझे देना आरंभ किया तू अधिकार लेना आरंभ कर जिसतें तू उस के देश का अधिकारी होवे॥ ३२। तब सैहून अपने सारे लोग लेके यहस में लड़ने को निकल आया॥ ३३। सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने उसे हमें सौंप दिया और हम ने उसे और उस के बेटे और उस के सब लोगों को मारा॥ ३४। और हम ने उसी समय उस के समस्त नगरों को ले लिया और हर एक नगर के पुरुष

श्रौर स्त्री श्रौर लड़कों को नाश किया श्रौर किसी को न छोड़ा॥ ३५। केवल ढोर हम ने अपने लिये अहेर में लिया श्रौर नगरों की लूट जिसे हम ने लिया॥ ३६। अरूईर से ले के जो अरनून की नदी के तीर पर है श्रौर उस नगर से ले के जो नदी के तीर पर है अर्थात् जिलिअद लों ऐसा कोई नगर हमारे लिये दृढ़ न था जिसे परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें न सौंप दिया॥ ३७। केवल अम्मून के संतान के देश जिस के निकट तू न गया श्रौर नदी यबूक के किसी स्थान में न पहाड़ के नगरों में श्रौर जहां जहां परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें बरजा॥

३ तीसरा पर्ब्ब।

तब हम फिरे श्रौर बसन की श्रोर चढ़ गये श्रौर बसन का राजा ऊज अद्रिअई में अपने सारे लोग ले के हमारे सन्मुख लड़ने को निकला॥ २। श्रौर परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस्से मत डर क्योंकि मैं उसे श्रौर उस के सारे लोगों को उस के देश सहित तेरे हाथ में सौंपूंगा तू उस्से वैसा कर जैसा तू ने अमूरियों के राजा सैहून से जो हसबून में रहता था किया॥ ३। सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने बसन के राजा को भी श्रौर उस के समस्त लोग को हमारे वश में कर दिया श्रौर हम ने उन्हें यहां लों मारा कि उन में से कोई न बचा॥ ४। उस के समस्त नगर ले लिये अरजुब का सारा देश ऊज का राज्य बसन का एक नगर भी न रहा जो हम ने उन से न लिया साठ नगर ले लिये कोई नगर न रहा जो हम ने उन से न लिया॥ ५। ये सब नगर ऊंची ऊंची भीतों श्रौर फाटकों श्रौर अंड़गों से दृढ़ थे श्रौर बहुत बिन भीत से घेरे हुए नगर भी ले लिये॥ ६। श्रौर हम ने उन्हें उन के पुरुषों श्रौर स्त्रियों श्रौर बालकों को हर एक नगर से नाश किया जैसा कि हम ने हसबून के राजा सैहून से किया॥ ७। परंतु नगरों के समस्त ढोर श्रौर लूट हम ने अपने ही लिये लिया॥ ८। श्रौर हम ने उस समय अमूरियों के दोनों राजाश्रों से यरदन के उस ही पार का देश अरनून की नदी से हरमुन पर्वत लों ले लिये॥ ९। हरमुन को सैदूनी सरियून कहते हैं श्रौर अमूरी सनीर कहते हैं॥ १०। चैागान के समस्त नगर श्रौर सारा जिलिअद

और सारा बसन सलक: और अद्रिअई लों जो बसन में ऊज के राज्य के नगर हैं॥ ११। क्योंकि केवल बसन का राजा ऊज रह गया जो दानव में का था देखा उस की खाट लोहे की थी क्या वुह अम्मून के संतान राबाश में नहीं है मनुष्य के हाथों से नौ हाथ लम्बी चार हाथ की चौड़ी॥ १२। और यह देश हम ने उसी समय बश में किया अरूईर से जो अरनन की नदी के पास और आधा पहाड़ जिलिअद और उस के नगर मैं ने रूबिनियों और जद्दियों को दिये॥ १३। और जिलिअद का उबरा ऊआ और समस्त बसन जो ऊज का राज्य था मैं ने मुनस्सी की आधी गोष्ठी को दिया अरजुब का सारा देश बसन सहित जो दानव का देश कहाता था॥ १४। मुनस्सी के बेटे याईर ने अरजुब का समस्त देश जसूरियों और माकासियों के सिवाने लों ले लिये और उस ने बसन हवसयाईर अपने नाम के समान उस का नाम आज लों रक्खा॥ १५। और मैं ने जिलिअद माकीर को दिया॥ १६। और जिलिअद से अरनन की नदी लों और आधी तराई और सिवाना याबूक की नदी लों जो अम्मून के संतान का सिवाना है मैं ने रूबिनियों को और जद्दियों को दिया॥ १७। और चौगान भी और यरदन और उस के सिवाने किन्नारात से लेके चौगान के समुद्र लों अर्थात् खारी समुद्र जो पिसग. के सोतों के नीचे है पूर्ब की ओर भी॥

१८। और मैं ने उसी समय तुम्हें आज्ञा करके कहा कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने इस भूमि का तुम्हें अधिकारी किया तुम अपने भाई इसराएल के संतानों के आगे हथियार बांध के सब जितने लड़ाई के योग्य हो पार उतरो॥ १९। केवल तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारे बालक और तुम्हारे ढोर जो मैं ने तुम्हें दिये हैं तुम्हारे नगरों में रहें क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे ढोर बऊत हैं॥ २०। जब लों कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों को चैन देवे जैसा तुम्हें दिया जिस में वे भी उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के पार उन्हें दिया है अधिकारी होवें तब हर एक पुरुष अपने अपने अधिकार में फिर जाय जो मैं ने तुम्हें दिया है॥ २१। और उसी समय मैं ने यहूसूअ को कहा कि तेरी आंखों ने कुछ देखा है जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उन दोनों

राजाओं से किया परमेश्वर उन सब राजाओं से जहां जहां तू जायगा वैसा करेगा॥ २२। तुम उन से मत डरियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे लिये लड़ेगा॥ २३॥ तब मैं परमेश्वर के आगे गिड़गिड़ाया और बोला॥ २४। कि हे प्रभु ईश्वर तू ने अपनी बड़ाई और अपना सामर्थी हाथ अपने दास को दिखाने को आरंभ किया है क्योंकि स्वर्ग में अथवा पृथिवी में कौनसा ईश्वर है जो तेरे कार्य्य और तेरी सामर्थ्य के समान कर सके॥ २५। मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे पार जाके उस अच्छे देश को देखने दे जो यरदन के पार है वुह सुंदर पर्बत और लुबनान॥ २६। परंतु परमेश्वर तुम्हारे कारण मुझ से क्रुद्ध हुआ और उस ने मेरी न सुनी और परमेश्वर ने मुझे कहा कि यही बस है उस बिषय में फेर मुझ से मत कह॥ २७। पिसगः की चोटी पर चढ़ जा और अपनी आंखें पश्चिम और उत्तर और दक्षिण और पूर्व की ओर उठा और अपनी आंखों से देख क्योंकि तू इस यरदन के पार न जायगा॥ २८। पर यहूसूअ को आज्ञा कर और उसे हियाव दे और उसे दृढ़ कर क्योंकि वुह इन लोगों के आगे पार जायगा और वही उन्हें उस देश का जो तू देखता है अधिकारी करेगा॥२९। सो हम तराई में फ़ाग़ूर के सन्मुख रहे।

४ चौथा पर्ब्ब।

सो अब हे इसराएल के संतानो जो बिधि और बिचार मैं तुम्हें सिखाता हूं सुनो और उन पर ध्यान करो जिसतें तुम जीओ और उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें देता है पहुंच के उस के अधिकारी होओ॥ २। तुम उस बात में जो मैं तुम्हें कहता हूं कुछ मत मिलाइयो न घटाइयो जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं पालन करो॥ ३। जो कुछ कि परमेश्वर ने बअलफ़ग़ूर से किया तुम ने सब अपनी आंखों से देखा क्योंकि उन सब पुरुषों को जिन्हों ने बअलफ़ग़ूर का पीछा किया परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम में से नष्ट किया॥ ४। परंतु तुम जो परमेश्वर अपने ईश्वर से लवलीन हो रहे हो सो तुम में से हर एक आज लों जीता है॥ ५। देखो मैं ने बिधि और बिचार जिस रीति से

परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे आज्ञा किई तुम्हें सिखलाये जिसतें तुम उस देश में जाके जिस के अधिकारी होओगे उन का पालन करो॥ ६। सो उन्हें धारण करो और मानो क्योंकि जातिगणों के आगे यही तुम्हारी बुद्धि और समुझ है कि वे इन समस्त बिधिन को सुनके कहेंगे कि निश्चय यह जाति बुद्धिमान और ज्ञानमान है॥ ७। क्योंकि कौन जातिगण ऐसी बड़ी है जिसके पास ईश्वर ऐसा समीप होवे जैसा परमेश्वर हमारा ईश्वर सब में जो हम उस्से मांगते हैं हमारे समीप है॥ ८। और कौन ऐसी बड़ी मंडली है जिसकी बिधि और बिचार ऐसा धर्म्म का हो जैसी यह समस्त व्यवस्था जो मैं आज तुम्हारे आगे धरता हूं॥ ९॥ केवल आप से चौकस रहो और अपने प्राण को यत्न से रक्खो ऐसा न हो कि तुम उन बस्तुन को जिन्हें तेरी आंखों ने देखा भूल जाओ और ऐसा न हो कि वे बातें जीवन भर में कभी तुम्हारे अंतःकरणों से जाती रहें परंतु तुम उन्हें अपने बेटों और पोतों को सिखाओ॥ १०। जिस दिन तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे होरिब में खड़ा हुआ और परमेश्वर ने मुझे कहा कि लोगों को मेरे आगे एकट्ठा कर और मैं उन्हें अपनी बचन सुनाऊंगा जिसतें वे मेरा डर सीखें जब लों वे भूमि पर जीते रहें और वे अपने लड़कों को सिखावें॥ ११। सो तुम पास आये और पहाड़ के नीचे खड़े रहे और पहाड़ स्वर्ग के मध्य लों अंधकार और मेघ और गाढ़ा अंधकार आग से जल रहा था॥ १२। और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उस आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें किईं तुम ने बातों का शब्द सुना परंतु मूर्त्ति न देखी केवल शब्द॥ १३। और उस ने अपनी बाचा तुम्हारे आगे बर्णन किई जिसे उस ने तुम्हें पालन करने को आज्ञा किई दस आज्ञा उस ने उन्हें पत्थर की दो पटियों पर लिखीं॥ १४। और परमेश्वर ने उस समय मुझे आज्ञा किई कि तुम्हें बिधि और बिचार सिखाऊं जिसतें तुम उस देश में जाके जिस के तुम अधिकारी होओगे उन पर चलो॥ १५। सो तुम आप से बहुत चौकस रहो क्योंकि जिस दिन परमेश्वर ने होरिब में आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें कहीं तुम ने किसी प्रकार का रूप न देखा॥ १६। ऐसा न हो कि तुम बिगड़ जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति किसी पुरुष अथवा स्त्री की प्रतिमा

बनाओ॥ १७। किसी पशु की प्रतिमा जो पृथिवी पर है अथवा किसी पंछी का रूप जो आकाश में उड़ते हैं॥ १८। अथवा किसी जंतु का रूप जो भूमि पर रेंगते हैं अथवा किसी मछली का रूप जो पृथिवी के नीचे पानियों में हैं॥ १९। ऐसा न हो कि तुम स्वर्ग की ओर आंखें उठाओ और सूर्य्य और चंद्रमा और तारों को और आकाश की समस्त सेनों को देखो तब उन्हें पूजने को बहकाये जाओ और उन की सेवा करो जिन्हें परमेश्वर ने स्वर्ग के तले समस्त जाति गणों के लिये विभाग किया है॥ २०। परंतु परमेश्वर ने तुम्हें लिया और वुह तुम्हें लोहे के भट्ठे से अर्थात् मिस्र में से निकाल लाया जिसतें तुम उस की ओर से अधिकार के लोग होओ जैसा कि आज के दिन॥ २१। परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे कारण से मुझ पर रिसियाके किरिया खाई कि तू यरदन पार न जायगा और उस अच्छे देश में जिस का परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे अधिकारी करता है न पहुंचेगा॥ २२। परंतु मैं अवश्य इसी देश में मरूंगा निश्चय मैं यरदन पार उतरने न पाऊंगा परंतु तुम पार उतरोगे और उस अच्छी भूमि के अधिकारी होओगे॥ २३। आप से चौकस रहो ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा को जो उस ने तुम से किई भूल जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति अथवा किसी वस्तु का रूप बनाओ जिस के बनाने से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बर्जा है॥ २४। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर एक भस्मक अग्नि ज्वलित ईश्वर है।

२५। जब तुझ से लड़के और लड़कों के लड़के उत्पन्न होंगे और तुम अनेक दिन लों उस देश में रहोगे और बिगड़ जाओगे और खोदी हुई मूर्त्ति और किसी का रूप बनाओगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बुराई करके उस के कोप को भड़काओगे॥ २६। तो मैं आज के दिन तुम पर स्वर्ग और पृथिवी को साक्षी धरता हूं कि तुम उस देश पर से जहां तुम यरदन पार जाते हो कि अधिकारी बनो शीघ्र नाश हो जाओगे तुम वहां अपने दिन को न बढ़ाओगे परंतु सर्व्वथा नष्ट हो जाओगे॥ २७। और परमेश्वर तुम्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करेगा और अन्य देशियों के मध्य में जिधर तुम्हें परमेश्वर ले जायगा थोड़े से रह जाओगे॥ २८। वहां उन देवतों की सेवा करोगे जो मनुष्यों के हाथों से बने हैं लकड़ी के और

पत्थर के जो न देखते न सुनते न खाते न सूंघते हैं॥ २९। पर वहां भी जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर की खोज करेगा यदि तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ेगा तो उसे पावेगा॥ ३०। जब तू कष्ट में होगा और ये सब अंत्य के दिनों में तुझ पर आ पड़ें यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस का शब्द मानेगा॥ ३१। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर दयाल है वुह तुझे न छोड़ेगा न तुझे नष्ट करेगा और तेरे पितरों की बाचा को जो उस ने उन से किरिया खाई है न भूलेगा॥ ३२। क्योंकि अगले दिनों से जो तुझ से आगे हो गये उस दिन से जब मनुष्य को परमेश्वर ने पृथिवी पर उत्पन्न किया और स्वर्ग की एक अलंग से लेके दूसरी लों पूछो यदि ऐसी बड़ी बात कभी हुई अथवा उस के समान सुनी गई॥ ३३। कि कभी लोगों ने परमेश्वर का शब्द सुना था कि आग में से बोले जैसा तू ने सुना और जीता है॥ ३४। अथवा कभी ईश्वर ने इच्छा किई कि जाके एक जातिगण को जातिगण के मध्य में से परीक्षा से और लक्षण से और लड़ाई से और सामर्थी हाथ से और बढ़ाई हुई भुजों से और बड़े बड़े भय से अपने लिये लेवे जिस रीति से परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारी आंखों के साम्ने मिस्र में तुम्हारे लिये किया॥ ३५। यह सब तुझे दिखाया गया जिसतें तू जाने कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसे छोड़ कोई नहीं है॥ ३६। उस ने अपना शब्द स्वर्ग में से तुझे सुनाया जिसतें तुझे सिखावे और पृथिवी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग दिखाई और तू ने उस का वचन आग में से सुना॥ ३७। और इस कारण कि उस ने तेरे पितरों से प्रेम किया उस ने उन के पीछे उन के बंश को इस कारण चुन लिया और अपनी बड़ी सामर्थ्य से तुझे मिस्र से अपनी दृष्टि के आगे निकाल लाया॥ ३८। जिसतें तेरे आगे से जातिगणों को जो तुझ से बड़े और बलवंत हैं दूर करे और तुझे लावे और उन के देश का अधिकारी करे जैसा आज के दिन है॥ ३९। सो आज के दिन जान और अपने मन में सोच कि परमेश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है और कोई नहीं है॥ ४०। सो तू उस की विधि और उस की आज्ञाओं को जो आज मैं तुझे कहता हूं पालन कर जिसतें तेरे और तेरे पीछे

तेरे बंश के लिये भला होवे और तेरी बय उस देश पर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है बढ़ जाय॥ ४१। फिर मूसा ने सूर्य्य के उदय की ओर यरदन के इसी पार तीन बस्तियां अलग किईं॥ ४२। जिसतें घातक जो अचानक अपने परोसी को घात करे और आगे से उस्से बैर न रखता था और जब उन नगरों में से एक में भागके प्रवेश करे तो जीता रहे॥ ४३। अर्थात् बुस्र बन में रूबिनियों के चौगान के देश में और जद्दियों में रामात जिलिअद में और मुनस्सी के जौलान बसन में॥ ४४। यह वुह व्यवस्था है जिसे मूसा ने इसराएल के संतानों के आगे धरी॥ ४५। ये हैं वे साक्षियां और बिधि और बिचार जिन्हें मूसा ने इसराएल के संतानों के लिये जब वे मिस्र से निकल आये उन से कहा॥ ४६। यरदन के इसी पार बैतफगूर के सन्मुख की तराई में अमूरियों के राजा सैहून के देश में जो हसबून में रहता था जिसे मूसा और इसराएल के संतानों ने मिस्र से निकलके मारा॥ ४७। और वे उस के और बसन के राजा ऊज के राज्य के अधिकारी ऊए ये अमूरियों के दो राजा थे जो यरदन के इस पार सूर्य्य के उदय की ओर रहते थे॥ ४८। अरआयर से लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है सैहून के पहाड़ लों जो हरमुन है॥ ४९। और समस्त चौगान इसी पार यरदन की पूर्ब ओर चौगान के समुद्र लों जो पिसगः के सोतों के नीचे है।

५ पांचवां पर्ब्ब।

फिर मूसा ने समस्त इसराएली को बुलाके उन से कहा कि हे इसराएलियो यह बिधि और बिचार सुन रक्खो जिन्हें मैं आज तुम्हारे कानों में कहता हूं जिसतें तुम उन्हें सीखो और धारण करके मानो॥ २। परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हरिब में हम से एक बाचा बांधी॥ ३। परमेश्वर हमारे ईश्वर ने यह बाचा हमारे पितरों से नहीं बांधी परंतु हम से हमी से जो सब आज के दिन जीते हैं॥ ४। पर्ब्बत पर आग के मध्य में से परमेश्वर ने तुम्हारे संग आम्ने साम्ने बातें किईं॥ ५। मैं ने तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य में खड़े होके परमेश्वर

का बचन तुम्हें सुनाया क्योंकि तुम आग के कारण से डर गये और पहाड़ पर न चढ़े॥ ६। मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र के देश से और सेवकाई के घर से बाहर लाया॥ ७। मेरे आगे तेरा कोई दूसरा ईश्वर न होवे॥ ८। अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति किसी का रूप जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी पर अथवा पृथिवी के नीचे पानियों में है मत बना॥ ९। तू उन्हें दंडवत न करना न उन की सेवा करना क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित ईश्वर हूं जो पितरों के अपराध का प्रतिफल बालकों पर तीसरी चौथी पीढ़ी लों जो मुझ से बैर रखते हैं देता हूं॥ १०। और सहस्रों पर जो मुझ से प्रेम रखते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं॥ ११। तू परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लेना क्योंकि जो उस का नाम अकारथ लेता है परमेश्वर उसे निर्दोष न ठहरावेगा॥ १२। बिश्राम दिन को पवित्र के लिये धारण कर जैसी परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है॥ १३। छः दिन लों परिश्रम करना और अपने समस्त कार्य करना॥ १४। परंतु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का बिश्राम है कोई कार्य न करना न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरा बैल न तेरा गदहा न तेरे ढोर न तेरा पाहुन जो तेरे फाटकों के भीतर हैं जिसतें तेरा दास और तेरी दासी तेरी नाईं चैन करें॥ १५। और चेत कर कि तू मिस्र के देश में सेवक था और परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने सामर्थी हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से तुझे वहां से निकाल लाया इसलिये परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई कि तू बिश्राम दिन का पालन करे॥ १६। अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जैसी परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आज्ञा किई है जिसतें तेरा जीवन बढ़जाय और उस देश में जिसे तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा भला होवे॥ १७। हत्या मत कर॥ १८। पर स्त्री गमन मत कर॥ १९। चोरी मत कर॥ २०। अपने परोसी पर झूठी साची मत दे॥ २१। अपने परोसी की पत्नी की इच्छा मत कर अपने परोसी के घर को और उस के खेत की अथवा उस के दास और दासी की उस के बैल और गदहे की और परोसी की किसी बस्तु की लालच मत कर॥ २२। परमेश्वर ने पहाड़ पर मेघ और गाढ़े अंधकार

की आग में से तुम्हारी समस्त मंडली से महा शब्द से बातें किईं और उसे अधिक कुछ न कहा और उस ने उन्हें पत्थर की दो पटियों पर लिखा और उन्हें मुझे सौंपा॥ २३। और यों हुआ कि जब तुम ने अंधकार में से यह शब्द सुना क्योंकि पहाड़ आग से जल रहा था तुम और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन मेरे पास आये॥ २४। और तुम ने कहा कि देख परमेश्वर हमारे ईश्वर ने अपना ऐश्वर्य और अपनी महिमा दिखाई और हम ने आग के मध्य में से उस का शब्द सुना हम ने आज के दिन देखा कि ईश्वर मनुष्य से बार्त्ता करता है और मनुष्य जीता है॥ २५। सो अब हम किस लिये मरें कि यह ऐसी बड़ी आग हमें भस्म करेगी यदि हम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द अब के फिर सुनेंगे तो हम मरही जायेंगे॥ २६। क्योंकि समस्त शरीरों में से ऐसा कौन है जिस ने हमारे समान आग के बीच में से जीवत ईश्वर का शब्द सुना और जीता रहा॥ २७। तू आप ही समीप जा और सब जो कुछ कि परमेश्वर हमारा ईश्वर कहे सुन और जो कुछ परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें कहे तू हम से कह हम उसे सुनके मानेंगे॥ २८। और जब तुम ने मुझ से कहा परमेश्वर ने तुम्हारी बातों का शब्द सुना तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि मैं ने इन लोगों की बातों का शब्द जो उन्हों ने तुझ से कहीं सुना जो कुछ उन्हों ने कहा अच्छा कहा॥ २९। हाय कि उन के ऐसे मन होते कि वे मुझ से डरते और सदा मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करते जिसतें उन के लिये और उन के बंश के लिये सनातन लों भला होवे॥ ३०। जा उन्हें कह कि अपने अपने तंबू को फिर जाओ॥ ३१। परंतु तू जो है यहां मुझ पास खड़ा रह और मैं समस्त आज्ञा और बिधि और बिचार तुझे बताऊंगा तू उन्हें सिखाना जिसतें वे उस देश में जिस का अधिकारी मैं ने उन्हें किया है उन पर चलें॥ ३२। सो तुम चौकस होके जैसी परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने आज्ञा किई है पालन करो और दहिने बायें न मुड़ो॥ ३३। तुम सब मार्गों पर चलो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बताये जिसतें तुम जीते रहो और तुम्हारा भला होवे और उस देश में जिस के तुम अधिकारी होओगे तुम्हारे जीवन बढ़ें॥

६ छठवां पर्ब्ब।

ये वे आज्ञा और बिधि और बिचार हैं जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें सिखाने को मुझे आज्ञा किई जिसतें तुम उस देश में जिस के अधिकारी होने पार जाते हो उन पर चलो॥ २। जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरके उस की सब बिधि और आज्ञाओं को जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं चेत में रक्खे तू और तेरा पुत्र और तेरा पौत्र जीवन भर जिसतें तेरा जीवन बढ़ जाय॥ ३। सो हे इसराएल सुन ले और उसे सोचके मान जिसतें तेरा भला होवे और तुम उस देश में अत्यंत बढ़ जाओ जिस में दूध और मधु बहता है जैसा परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुम से प्रण किया है॥ ४। सुन ले हे इसराएल परमेश्वर हमारा ईश्वर एक परमेश्वर है॥ ५। अपने सारे मन से और सारे जीव से और अपने सारे पराक्रम से परमेश्वर अपने ईश्वर से हित रख॥ ६। और ये बातें जो आज के दिन मैं तुझे कहता हूं तेरे अन्तःकरण में रहें॥ ७। और ये बातें अपने लड़कों को यत्न से सिखा और अपने घर में बैठते हुए और मार्ग में चलते हुए और सोते और जागते उन की चर्चा कर॥ ८। और उन्हें चिन्ह के लिये अपने हाथ पर बांध और वे तेरी आंखों के मध्य में टीकों की नाईं होंगे॥ ९। और उन्हें अपने घर के खभों पर और द्वारों पर लिख॥ १०। और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में ले जायगा जिस के विषय में उस ने तेरे पितर अबिरहाम और इज़हाक़ और यअक़ूब से किरिया खाई है कि बड़ी और उत्तम बस्तियां जो तू ने नहीं बनाईं तुझे देवे॥ ११। और घर समस्त उत्तमों से भरे हुए जिन्हें तू ने नहीं भरा और खोदे खोदाये कूयें जो तू ने नहीं खोदे और दाख की बारी और जलपाई के पेड़ जो तू ने नहीं लगाये तुझे देगा और तू खायेगा और संतुष्ट होगा॥ १२। चौकस रह न हो कि तू परमेश्वर को भूल जाय जो तुझे मिस्र के देश से दासों के घर से निकाल लाया॥ १३। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और उस की सेवा कीजियो और उस के नाम की किरिया खाइयो॥ १४। तुम आन आन देवतों के पीछे लोगों के देवतों के जो तुम्हारे आस पास

हैं मत जाइयो॥　१५। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हारे मध्य में है ज्वलित ईश्वर है नहो कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के कोप की आग तुझ पर भड़के और तुम्हें पृथिवी पर से मिटा डाले॥　१६। तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कीजियो जैसी तुम ने मस्सः में उस की परीक्षा किई॥　१७। तुम यत्न से परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और विधि को जो उस ने तुझे आज्ञा किई है स्मरण करियो॥　१८। और वही कीजियो जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक और भला है जिसतें तेरा भला होवे और तू उस सुथरी भूमि में जिस के बिषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाई है प्रवेश करके अधिकारी होवे॥　१९। कि तुम्हारे आगे से तुम्हारे सारे बैरियों को दूर करे जैसा परमेश्वर ने कहा है॥　२०। जब कल को तेरा बेटा तुझ से यह कहके पूछे कि ये कैसी साक्षियां और विधि और बिचार हैं जो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है॥　२१। तब अपने बेटे से कहियो कि हम मिस्र में फ़िरऊन के बंधुए थे तब परमेश्वर सामर्थी हाथ से हमें मिस्र से निकाल लाया॥　२२। और परमेश्वर ने चिह्न और बड़े बड़े दुःख और पीड़ा के आश्चर्य मिस्र से फ़िरऊन पर और उस के सारे घराने पर हमारी आंखों के आगे दिखाये॥　२३। और वुह हमें वहां से निकाल लाया जिसतें हमें उस देश में पहुंचावे जिस के बिषय में उस ने हमारे पितरों से किरिया खाई हमें देवे॥　२४। सो परमेश्वर ने हमें आज्ञा किई कि हम उन सब विधिन पर चलें और परमेश्वर अपने ईश्वर से अपने भले के लिये सर्बदा डरें जिसतें वुह हमें जीता रक्खे जैसा आज के दिन है॥　२५। और यही हमारा धर्म्म होगा यदि हम इन सब आज्ञाओं को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस की आज्ञा के समान पालन करें।

७ सातवां पर्ब्ब।

जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का अधिकारी होने जाता है तुझे पहुंचावे और तेरे आगे से बहुत जातिगणों को दूर करे अर्थात् हित्तियों को और जिरजाशियों को और अमूरियों को

और कनआनियों को और फरज्जियों को और हवियों को और यबूसियों सात जातिगणों को जो तुझ से बड़े और सामर्थी हैं॥ २। और जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तुझ सौंप देवे तू उन्हें मार के सर्वथा नाश करियो उन से कोई बाचा न बांधियो न उन पर दया कीजियो॥ ३। न उन से बिवाह करियो न उस के बेटे को अपनी बेटी दीजियो न अपने बेटों के लिये उस की बेटी लीजियो॥ ४। क्योंकि वे तेरे बेटे को मुझ से फिरावेंगी जिसतें वे आन देवतों की सेवा करें सो परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और वुह तुझे अचानक नाश कर देगा॥ ५। सो तुम उन से यह ब्यवहार करियो उन की बेदियों को ढाइयो उन की मूर्त्तिन को तोड़ियो उन के कुंजों को काटडालियो और उन की खोदी हुई मूर्त्तियों को आग से जलाइयो॥ ६। क्योंकि तू तो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे चुना कि तू सब लोगों में से जो पृथिवी पर हैं उस के निज लोग होओ॥ ७। परमेश्वर ने तुम से इस लिये प्रीति करके तुम्हें नहीं चुना कि तुम सारे लोगों से गिनती में अधिक थे क्योंकि तुम समस्त लोगों से थोड़े थे॥ ८। परंतु इस कारण कि परमेश्वर तुम से प्रीति रखता था और इस कारण कि उसे उस किरिया को पालन करना था जो उस ने तुम्हारे पितरों से खाई थी परमेश्वर तुम्हें अपनी सामर्थ्य से निकाल लाया और दासों के घर से मिस्र के राजा फिरऊन के हाथ से तुम्हें छुड़ाया॥ ९। सो जान रखना कि परमेश्वर तेरा ईश्वर वही ईश्वर वुह बिश्वस्त ईश्वर है जो उन से जो उस्से प्रेम रखते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन करते हैं सहस्र पीढ़ी लों बाचा और दया रखता है॥ १०। और जो उस्से बैर रखते हैं उन के मुंह पर पलटा देके उन्हें नाश करता है जो उस्से बैर रखता है वुह उस के लिये बिलंब न करेगा वुह उस के देखते ही पलटा देगा॥ ११। सो तू उन आज्ञा और बिधिन और बिचार को जो मैं तुझे आज के दिन पालन करने को आज्ञा करता हूं धारण करियो॥ १२। सो यदि तुम इन बिचारों को सुनोगे और धारण करके उन्हें मानोगे तो यों होगा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस प्रण और दया को जिस के बिषय में उस ने तेरे पितरों से

किरिया खाई है तेरे लिये धारण करेगा॥ १३। और वुह तुझे प्यार करेगा और तुझे आशीष देगा और तुझे बढ़ावेगा वुह तेरे गर्भ के फल और तेरी भूमि के फल में तेरा अन्न और तेरी मदिरा और तेरे तेल और तेरे ढोर की बढ़ती और तेरी झुंड की भेड़ उस देश में जिस के विषय में उस ने देने को तेरे पितरों से किरिया खाई आशीष देगा॥ १४। तू समस्त लोगों से अधिक आशीष पावेगा और तुझ में अथवा तुम्हारे ढोर में नर अथवा स्त्री बर्ग बांझ न होंगे॥ १५। और परमेश्वर तुझ में से समस्त रोग दूर करेगा और मिस्र के सब बुरे रोगों में से जिन्हें तू जानता है तुझ पर न लावेगा परंतु उन पर डालेगा जो तुझ से बैर रखते हैं॥ १६। और सब लोगों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे सौंप देगा तू खा जायगा तेरी आंख उन पर दया न करेगी तू उन के देवों की पूजा न करना क्योंकि तेरे लिये फंदा है॥ १७। यदि तू अपने मन में कहे कि ये जातिगण मुझ से अधिक हैं मैं उन्हें क्योंकर निकाल सकूंगा॥ १८। तू उन से मत डरना जो कुछ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने फिरऊन और समस्त मिस्र से किया अच्छी रीति से स्मरण करना॥ १९। वुह बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा और बड़े बड़े चिन्ह और आश्चर्य और सामर्थी हाथ और फैलाई हुई भुजा जिन से परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे निकाल लाया जिन लोगों से तू डरता है परमेश्वर तेरा ईश्वर उन से वैसाही करेगा॥ २०। और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन पर बर्रे को भेजेगा जब लों वे जो बचे हुए और तुम से छिपते हैं नाश हो जावें॥ २१। तू उन से मत डरना क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ में है बड़ा और भयानक ईश्वर॥ २२। और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को तेरे आगे थोड़ा थोड़ा करके उखाड़ेगा तू एक बार उन्हें नाश न करना न होवे कि बनैले पशु तुझ पर बढ़ जावें॥ २३। परंतु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे सौंप देगा और महा नाश से उन्हें नाश करेगा यहां लों कि वे नाश हो जायं॥ २४। और वुह उन के राजाओं को तेरे हाथ में सौंपेगा और तू उन के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा और कोई मनुष्य तेरे आगे ठहर न सकेगा जब लों तू उन्हें नाश न कर ले॥ २५। तुम उन की खोदी हुई देवतों की मूर्त्तिन को

आग से जला देना तू उन पर के रूपे सोने का लोभ न करना ओर उसे अपने लिये मत लेना न हो कि तू उन में बझजाय क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे वुह घिनित है॥ २६। ओर तू कोई घिनित अपने घर में मत लाइयो न हो कि तू उस की नाई स्रापित हो जाय तू उन से सर्वथा घिन कीजियो ओर उसे सर्वथा तुच्छ जानियो क्योंकि वुह स्रापित बस्तु है।

८ आठवां पर्ब्ब।

समस्त आज्ञा को जो आज के दिन मैं तुझे देता हूं मानियो ओर उन्हें पालन कीजियो जिसतें तुम जीओ ओर बढ़ जाओ ओर उस देश में जाओ जिन के बिषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है अधिकारी होओ॥ २। ओर उस समस्त मार्ग को स्मरण करियो जिस में परमेश्वर तेरा ईश्वर बन में इन चालीस बरस से तुझे लिये फिरा जिसतें तुझे दीन करे ओर तुझे परखे ओर तेरे मन की बात जांचे कि तू उस की आज्ञाओं को पालन करेगा कि नहीं॥ ३। ओर उस ने तुझे दीन किया ओर तुझे भूखा रक्खा ओर वुह मन्न जिसे तू जानता न था ओर न तेरे पितर जानते थे तुझे खिलाया जिसतें तुझे सिखावे कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीता रहता परंतु हर एक बात से जो परमेश्वर के मूंह से निकलती है जीता रहता है॥ ४। चालीस बरस लों तेरे कपड़े तुझ पर पुराने न ऊए ओर तेरे पांव न सूजे॥ ५। तू अपने मन में सोचियो कि जिस रीति से मनुष्य अपने बेटे को ताड़ना करता है परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे ताड़ता है॥ ६। सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन कर कि उस के मार्गों पर चल ओर उस्से डर॥ ७। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे एक उत्तम भूमि में पऊंचाता है जहां पानी के नाले ओर सोते ओर झील तराई ओर पहाड़ों से बहती हैं॥ ८। गेहूं ओर जव ओर दाख ओर गूलर ओर अनार का ओर जलपाई का पेड़ ओर मधु का देश॥ ९। वुह देश जहां तू बिन महंगी से रोटी खायगा जहां तेरे लिये किसी बात की घटती न होगी जिस के पत्थर लोहे हैं ओर पहाड़ों से तू तांबा खोदे॥ १०। जब तू

खावे और तृप्त होवे तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर को जिस ने तुझे वुह अच्छा देश दिया धन्य माने॥ ११। चौकस रह कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल न जाय कि उस की आज्ञाओं और बिचार और बिधि पर जो आज मैं तुझे कहता हूं न चले॥ १२। ऐसा न हो कि जब तू खाके तृप्त होवे और सुथरे सुथरे घर बनावे और उन में रहे॥ १३। और तेरे लेहंड़े और झुंड बढ़ जायें और तेरी चांदी और तेरा सोना बढ़ जाय और तेरा सब कुछ अधिक होवे॥ १४। तब तेरा मन उभड़ जाय और तू परमेश्वर अपने ईश्वर को जो तुझे मिस्र देश से और बंधुआई के घर से निकाल लाया भूल जाय॥ १५। जो उस बड़े भयानक बन में तुझे लिये फिरा जहां आग के सर्प और बिच्छू थे और सूखा जहां पानी न था जिस ने तेरे लिये पथरी के चटान से पानी निकाला॥ १६। जिस ने बन में तुझे मन्न खिलाया जिसे तेरे पितर न जानते थे जिसतें तुझे दीन करे और तुझे परखे जिसतें अंत्य समय में तेरा भला करे॥ १७। और तू अपने मन में कहे कि मैं ने अपने पराक्रम और भुजा के बल से यह संपत्ति प्राप्त किई॥ १८। परंतु तू परमेश्वर अपने ईश्वर को स्मरण करियो क्योंकि वही तुझे संपत्ति प्राप्त करने को बल देता है जिसतें वुह अपनी बाचा को जो उस ने किरिया खाके तेरे पितरों से किया दृढ़ करे जैसा आज के दिन है॥ १९। और यों होगा कि यदि तू कभी परमेश्वर अपने ईश्वर को भूलेगा और और ही देवों का पीछा करेगा और उन की सेवा और दंडवत करेगा तो मैं आज के दिन तुम पर साक्षी देता हूं कि तुम निश्चय नष्ट हो जाओगे॥ २०। उन जातिगणों के समान जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे सन्मुख नष्ट करता है तुम भी वैसे ही नष्ट हो जाओगे इस कारण कि तुम ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को न माना॥

९ नवां पर्ब्ब।

हे इसराएल सुन ले तुझे आज के दिन यरदन पार जाना है जिसते तू उन जातिगणों का जो तुझ से बड़ी और पराक्रमी है और उन नगरों को जो बड़े और स्वर्ग लों घेरे हैं अधिकारी होवे॥ २। वहां के लोग बड़े और लम्बे हैं जो अनाकियों के संतान हैं जिन्हें

न जानता है और कहते हुए सुना है कि कौन है जो अनाक के संतान के आगे ठहर सक्ता है॥ ३। से तू आज के दिन समुझ ले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे आगे आगे पार जाता है भस्मक अग्नि के तुल्य वुह उन्हें नाश करेगा और वुह उन्हें तेरे आगे ध्वस्त करेगा तू उन्हें हांक देगा और शीघ्र नष्ट करेगा जैसा परमेश्वर ने तुझे कहा है॥ ४। और जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे से दूर कर देवे तब अपने मन में मत कहना कि परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के कारण मुझे इस देश का अधिकारी किया परंतु परमेश्वर उन जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हांक देता है॥ ५। तू अपने धर्म्म से और अपने मन की खराई से उस देश का अधिकारी होने नहीं जाता परंतु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हांक देता है जिसतें वुह उस बचन को जो उस ने किरिया खाके तेरे पितर अबिरहाम और इज़हाक और यअक़ूब से कहा पूरा करे॥ ६। सो समझ ले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे धर्म्म के कारण तुझे उस अच्छे देश का अधिकारी नहीं करता क्योंकि तू तो कठोर लोग है॥

७। चेत कर भूल न जा कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के कोप को बन में क्योंकर भड़काया जिस दिन से कि तू मिस्र के देश से बाहर निकला जब लों इस स्थान में आये तुम परमेश्वर से फिरगये हो॥ ८। और तुम ने हरिब में भी परमेश्वर के क्रोध को भड़काया से परमेश्वर तुम्हें नाश करने के लिये क्रुद्ध हुआ॥ ९। जब मैं दो पत्थर की पटियां लेने को पहाड़ पर चढ़ा अर्थात् नियम की पटियां जो परमेश्वर ने तुम से किया तब मैं चालीस रात दिन उस पहाड़ पर रहा मैं ने रोटी न खाई न पानी पीया॥ १०। तब परमेश्वर ने पत्थर की दो पटियां मुझे सौंपी जिन पर परमेश्वर ने अपनी अंगुलियों से लिखा था उन सब बातों के समान जो परमेश्वर ने पहाड़ पर आग में से तुम्हारे एकट्ठे होने के दिन तुम से कही थीं॥ ११। और ऐसा हुआ कि चालीस दिन रात के पीछे परमेश्वर ने पत्थर की वे दोनों पटियां अर्थात् नियम की पटियां मुझे दिईं॥ १२। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ चल यहां से नीचे जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया आप को बिगाड़ दिया वे झट पट उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें

बताया फिर गये उन्हों ने अपने लिये एक ढाली झई मूर्त्ति बनाई॥ १३। और परमेश्वर मुझे कहके बोला कि मैं ने इन्हें देखा है देख ये कठोर लोग हैं॥ १४। मुझे छोड़ कि मैं उन्हें नाश करूं और उन का नाम स्वर्ग के तले से मिटाडालूं और मैं तुझ से एक जाति जो इस्से बझत और बली है बनाऊंगा॥ १५। सो मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और पर्ब्बत आग से जल रहा था और नियम की दोनों पटियां मेरे दोनों हाथ में थीं॥ १६। तब मैं ने दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि तुम ने परमेश्वर अपने ईश्वर का पाप किया था और अपने लिये ढाला झआ बछड़ा बनाया तुम बझत शीघ्र उस मार्ग से जो परमेश्वर ने तुम्हें बताया फिर गये॥ १७। तब मैं ने दोनों पटियां लेके अपने दोनों हाथों से पटक दिईं और तुम्हारी आंखों के आगे तोड़ डालीं॥ १८। और उन सब पापों के कारण जो तुम ने किये जब तुम ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई करके उसे रिस दिलाई मैं आगे की नाईं चालीस रात दिन परमेश्वर के आगे गिरा पड़ा रहा मैं ने रोटी न खाई न पानी पीया॥ १९। क्योंकि मैं परमेश्वर के कोप और क्रोध से डरा कि वुह तुम्हें नाश करने के लिये कोपित था परंतु परमेश्वर ने उस समय में भी मेरी सुनी॥ २०। तब हारून को नाश करने के लिये परमेश्वर का क्रोध भड़का तब मैं ने उस समय में हारून के लिये भी प्रार्थना किई॥ २१। और मैं ने तुम्हारे पाप को अर्थात् उस बछड़े को जो तुम ने बनाया था लिया और आग में जलाया फिर उसे कूटा और बुकनी किया ऐसा कि वुह धूलसा हो गया और मैं ने उस धूल को नाली में जो पर्ब्बत से बहती थी डाल दिया॥ २२। और तबअरः में और मस्सः में और क़बरातुत्तावः में तुम ने परमेश्वर को कोपित किया॥ २३। और उसी ढब से उस समय में जब परमेश्वर ने तुम्हें क़ादिशबरनीअ से यह कहके भेजा कि चढ़ जाओ और उस देश के जो मैं ने तुम्हें दिया है अधिकारी होओ तब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से फिर गये और तुम उस पर बिश्वास न लाये और उस के शब्द को न सुना॥ २४। तिस दिन से मैं ने तुम्हें जाना तुम परमेश्वर से फिर गये हो॥ २५। सो मैं परमेश्वर के आगे चालीस रात दिन पड़ा रहा क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि मैं इन्हें नाश करूंगा॥ २६। सो

मैं ने परमेश्वर की बिनती किई और कहा कि हे परमेश्वर प्रभु अपने लोग को और अपने अधिकार को जिन्हें तू अपने महत्व से छुड़ा लाया तू अपनी भुजा के पराक्रम से मिस्र से निकाल लाया नाश न कर॥ २७। अपने सेवक अबिरहाम और इज़हाक़ और यअ़क़ूब को स्मरण कर इस लोग की ढिठाई और दुष्टता और पापों पर दृष्टि न कर॥ २८। न होवे कि वुह देश जहां से तू हमें निकाल लाया कहे कि परमेश्वर सामर्थी न था कि उन्हें उस देश में जिस के विषय में उन से बाचा किई पहुंचावे और इस लिये कि वुह उन से डाह रखता था वुह उन्हें निकाल ले गया कि उन्हें बन में नाश करे॥ २९। तथापि वे तेरे लोग और तेरे अधिकार हैं जिन्हें तू अपने बड़े पराक्रम और बढ़ाई हुई भुजा से निकाल लाया है॥

१० दसवां पर्ब्ब।

उस समय परमेश्वर ने मुझे कहा कि अपने लिये पत्थर की दो पटियां अगली के समान चीर और पहाड़ पर मुझ पास आ और अपने लिये लकड़ी की एक मंजूषा बना॥ २। मैं उन पटियों पर वे बातें लिखूंगा जो अगली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने तोड़ डाला और तू उन्हें मंजूषा में रखियो॥ ३। तब मैं ने शमशाद लकड़ी की मंजूषा बनाई और पत्थर की दो पटियां अगली के समान चीरीं और उन दोनों पटियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया॥ ४। और उस ने पटियों पर अगले लिखे हुए के समान वे दस बचन लिखे जो परमेश्वर ने पहाड़ पर आग के मध्य से सभा के दिन तुम्हें कहा था और परमेश्वर ने उन्हें मुझे दिया॥ ५। फिर मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और उन पटियों को उस मंजूषा में जिसे मैं ने बनाया था रक्खा सो वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अब लों उस में हैं॥ ६। तब इसराएल के संतान ने यअ़क़ान के संतान बिअरात से मैासीरः को यात्रा किई वहां हारून मर गया और वहीं गाड़ा गया और उस के बेटे इलिअज़र ने याजक के पद पर उस के स्थान में सेवा किई॥ ७। वहां से उन्हों ने जिदजाद को यात्रा किई और जिदजाद से युतबतः को जो

पानियों के नदियों का देश है॥ ८। उस समय परमेश्वर ने लावी की गोष्ठी को इस लिये अलग किया कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा को उठावें और परमेश्वर के आगे खड़े होके सेवा करें और उस के नाम से आशीष देवें सो आज के दिन लों यूंही है॥ ९। इस लिये लावी का अंश और अधिकार उस के भाइयों के साथ नहीं परमेश्वर उस का अधिकार है जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उसे बचन दिया॥ १०। और मैं अगले दिनों के समान फिर चालीस रात दिन पहाड़ पर रहा और उस समय भी परमेश्वर ने मेरी सुनी और परमेश्वर ने न चाहा कि तुझे बिनाश करे॥ ११। फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ और लोगों के आगे आगे चल और उन्हें ले जा जिसतें वे उस देश में बसें जो मैं ने उन के पितरों से किरिया खाके कहा था कि उन्हें देजंगा॥ १२। अब हे इसराएल परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से क्या चाहता है केवल यही कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरे और उस के सारे मार्गों पर चले और उस्से प्रेम रक्खे और अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करे॥ १३। और परमेश्वर की आज्ञाओं को और उस की बिधिन को जो आज के दिन तेरी भलाई के लिये तुझे कहता हूं पालन करे जिसतें तेरी भलाई होवे॥ १४। देख कि स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग और पृथिवी उस सब समेत जो उस में है परमेश्वर तेरे ईश्वर का है॥ १५। केवल परमेश्वर ने चाहा कि तुम्हारे पितरों से प्रेम रक्खे इस लिये उन के पीछे उन के बंश को अर्थात् तुम्हें समस्त लोगों से अधिक चुन लिया जैसा कि आज है॥ १६। सो अपने मन का खतनः करो और आगे को कठोर मत होओ॥ १७। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर और प्रभुओं का प्रभु एक महा ईश्वर शक्तिमान भयंकर है जो मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता और अकोर नहीं लेता॥ १८। वुह अनाथों और बिधवों का न्याय करता है और परदेशियों से प्रेम रखके उन्हें भोजन बस्त्र देता है॥ १९। सो तुम भी परदेशियों को प्यार करो क्योंकि तुम भी मिस्र के देश में परदेशी थे॥ २०। परमेश्वर अपने ईश्वर से डरता रह उस की सेवा कर और उसी से लवलीन रह उसी के नाम की किरिया खा॥ २१। वही तेरी स्तुति और तेरा ईश्वर

है जिस ने तेरे लिये ऐसे ऐसे बड़े और भयंकर कार्य्य किये जिन्हें तू ने अपनी आंखों से देखा॥ २२। तेरे पितर सत्तर जन लेके मिस्र में उतरे और अब परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आकाश के तारों के समान तुझे बढ़ाया॥

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रख और उस की आज्ञा और विधि और न्याय और उस की बचन सदा पालन कर॥ २। और तुम आज के दिन जान लेओ क्योंकि मैं तुम्हारे बंश से नहीं बोलता जिन्हों ने तुम्हारे ईश्वर की ताड़ना और उस की महिमा और उस के हाथ का बल और उस की बढ़ाई हुई भुजा न जाना है न देखा है॥ ३। और उस के आश्चर्य्य और उस के कार्य्य जो उस ने मिस्र के मध्य में और मिस्र के राजा फिरऊन के मध्य में उस के समस्त देश में किये॥ ४। और जो कुछ उस ने मिस्र की सेनाओं के साथ और उन के घोड़ों और उन की गाड़ियों के साथ किये किस रीति से उस ने लाल समुद्र का पानी उन पर उभाड़ा जब उन्हों ने तुम्हारा पीछा किया सो परमेश्वर ने उन्हें नष्ट किया आज के दिन लों॥ ५। और जो कुछ उस ने अरण्य में जब लों कि तुम यहां पहुंचे तुम्हारे साथ किया॥ ६। और जो उस ने दातन और अबिराम के साथ किया जो रूबिन के बेटे इलिअब के बेटे थे किस रीति से पृथिवी ने अपना मूंह खोला और उन्हें और उन के घरानों और उन के तंबुओं को और समस्त जीवधारियों को जिन्हों ने उन का पीछा किया और जो उन के बश में थे समस्त इसराएल के मध्य में उन्हें निगल गई॥ ७। क्योंकि तुम्हारी आंखों ने परमेश्वर के समस्त महान कार्य्य जो उस ने किये देखे॥ ८। सो तुम उन समस्त आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें कहता हूं पालन करो जिसतें तुम बली होओ और जाके उस देश के जिस के अधिकारी होने के लिये पार जाते हो अधिकारी होओ॥ ९। और जिसतें तुम उस देश पर अपना जीवन बढ़ाओ जिस के कारण परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं उन्हें और उन के बंश को देऊंगा वुह देश जिस में दूध और मधु बहता है॥ १०। क्योंकि वुह देश जिस का तू अधिकारी होने जाता है मिस्र के समान नहीं जहां से तुम

निकल आए जहां तू अपना बीहन बोता था और उसे अपनी तरकारी की बारी की नाईं पांव से पानी सींचता था॥ ११। परंतु वुह भूमि जिस के अधिकारी होने को जाते हो पहाड़ों और तराई का देश है जो आकाश के मेंह से सींचा जाता है॥ १२। यह वुह देश है जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चाहता है और बरस के आरंभ से लेके बरस के अंत लों सदा परमेश्वर तेरे ईश्वर की आंखें उस पर लगी हैं॥ १३। और यों होगा कि यदि तुम ध्यान से मेरी आज्ञाओं को सुनोगे जो मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हूं परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करो कि अपने समस्त मन से और अपने सारे प्राण से उस की सेवा करो॥ १४। तो मैं तुम्हारी भूमि में समय पर मेंह बरसाऊंगा आरंभ के मेंह और अंत के मेंह मैं तुम्हें देऊंगा जिसतें तू अपना अन्न और दाख रस और तेल एकट्ठा करे। १५। और तेरे खेत में तेरे पशु के लिए घास उगाऊंगा जिसतें तू खाय और तृप्त होवे॥ १६। तुम आप से चौकस रहो जिसतें तुम्हारे मन छल न खावें और तुम फिर जाओ और दूसरे देवतों की सेवा करो और उन को दंडवत करो॥ १७। और परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़के और वुह स्वर्ग को बंद करे जिसतें मेंह न बरसे और भूमि अपना फल न देवे और तुम उस भूमि से जो परमेश्वर तुम्हें देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ॥ १८। सो मेरी इन बातों को अपने अंतःकरण में और मन में रख छोड़ो और चिन्ह के लिये अपने बांह भुजा पर बांधो जिसतें वे तुम्हारी दोनों आंखों के मध्य में टीके की नाईं रहें॥ १९। और तुम उन्हें अपने घर में बैठे हुए और मार्ग चलते हुए और लेटते हुए और उठने के समय अपने लड़कों को सिखाओ॥ २०। और तू उन्हें अपने घर के फाटकों पर और द्वारों पर लिखे॥ २१। जिसतें तुम्हारे और तुम्हारे वंश के दिन जैसा कि स्वर्ग के दिन पृथिवी पर बढ़ते हैं वैसे ही तुम्हारे दिन उस देश में जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें देऊंगा बढ़ जायें।

२२। क्योंकि यदि तुम उन सब आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं यत्न से पालन करोगे और उन्हें मानोगे और परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रक्खोगे और उस के समस्त मार्गों पर चलोगे और उस्से लवलीन

रहेगा॥ २३। तब परमेश्वर इन सब जातिगणों को तुम्हारे आगे से हांक देगा और तुम जातिगणों के जो बड़े बली और तुम से अधिक सामर्थी हैं अधिकारी होओगे॥ २४। जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांवों का तलवा पड़ेगा सो सो तुम्हारा हो जायगा बन और लुबनान से और नदी से फ़रात नदी से लेके अत्यंत समुद्र लों तुम्हारा सिवाना होगा॥ २५। किसी की सामर्थ्य न होगी कि तुम्हारे आगे ठहर सके परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा भय और तुम्हारा डर समस्त देश में जिस पर तुम्हारा पैर पड़ेगा डालेगा जैसा उस ने तुम से कहा है॥ २६। देखो मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और स्राप धर देता हूं॥ २७। आशीष यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें देता हूं पालन करोगे॥ २८। और स्राप यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा पालन न करोगे परंतु उस मार्ग से फिर के जो आज मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं अन्य और देवता का पीछा करोगे जिन्हें तुम ने नहीं जाना॥ २९। और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जहां तू अधिकारी होने को जाता है पहुंचावे तो तू आशीष को जरिज़ीम के पहाड़ पर रखियो और स्राप को ऐबाल के पहाड़ पर॥ ३०। क्या वे यरदन पार नहीं उसी मार्ग में जिधर सूर्य्य अस्त होता है कनआनी के देश में जो जिलजाल के सान्ने चौगान में रहते हैं और चौगानों के लग है॥ ३१। क्योंकि तुम यरदन पार जाते हो जिसतें उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ और तुम उस के अधिकारी होगे और उस में बसोगे॥ ३२। सो तुम समस्त बिधि और बिचार जो आज मैं तुम्हारे आगे धरता हूं सोच रखियो।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

ये बिधि और बिचार हैं जिन्हें तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें अधिकार में देता है जब लों तुम पृथिवी पर जीते रहो उन्हें सोचके मानियो॥ २। तुम उन स्थानों को सर्व्वथा नाश कीजियो जहां उन जातिगणों ने जिन के तुम अधिकारी होओगे अपने

देवतों की सेवा किई है ऊंचे पहाड़ों पर और टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले॥ ३। उन की वेदियों को ढा दीजियो और उन के खंभों को तोड़ियो और उन के कुंजों को आग से जलाइयो और उन के देवतों की खोदी ऊई मूर्त्तियों को ढा दीजियो और उन के नाम को उस स्थान से मिटा दीजियो॥ ४। तुम ऐसा कुछ परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मत कीजियो॥ ५। परंतु वुह स्थान जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारी समस्त गोष्ठियों में से चुनेगा कि अपना नाम उस पर रक्खे और उसी के निवास को ढूंढ़ो और उसी स्थान पर आओ॥ ६। और वहीं होम की भेंटें और अपने बलि और अपने अंश और अपने हाथ की हिलाई ऊई भेंट और अपनी मनौतियां और अपनी वांछा की भेंटें और अपने ढोर और झुंड के पहिलौंठे लाइयो॥ ७। वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खाओगे और अपने सारे घराने समेत अपने हाथ के सब कामों में जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आशीष दिया आनंद करोगे॥ ८। तुम ऐसे कार्य्य जैसे हम यहां करते हैं हर एक जो अपनी अपनी दृष्टि में ठीक है वहां मत कीजियो॥ ९। क्योंकि तुम उस विश्राम और अधिकार को जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अब लों नहीं पऊंचे॥ १०। परंतु जब तुम यरदन पार जाओ और उस देश में बसो जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा अधिकार कर देता है और तुम्हें तुम्हारे सब शत्रुन से जो चारों ओर हैं चैन देगा ऐसा कि तुम चैन से बसो॥ ११। तब वहां एक स्थान होगा जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर चुनके अपना नाम उस पर रक्खे तुम सब कुछ जो मैं तुम्हें कहता ऊं वहां ले जाइयो अर्थात् अपनी होम की भेंटें और अपने बलि अपने अंश और अपने हाथ की हिलाई ऊई भेंट और अपनी वांछा की मनौती जो तुम परमेश्वर के लिये मानते हो वहां लाइयो॥ १२। और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने दासों और अपनी दासियों और उस लावी सहित जो तुम्हारे फाटकों में हो इस लिये कि उस का अंश और अधिकार तुम्हारे साथ नहीं परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनंद कीजियो॥ १३। अपने से सोचते रहो और अपनी भेंट हर एक स्थान पर जहां संयोग मिले मत चढ़ाइयो॥

१४। परंतु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरी गोष्ठियों में से चुन लेगा तू अपनी भेंट चढ़ाइयो और सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं वही कीजियो॥ १५। और जिस वस्तु को चाहे अपने समस्त फाटकों में मार खाइयो और परमेश्वर अपने ईश्वर के आशीष के समान जो उस ने तुझे दिया है चाहे पावन हो चाहे अपावन हर एक उसे खाये जैसे हरिण और बारहसींगा जो कुछ तेरा मन चाहे॥ १६। केवल लोहू मत खाइयो परंतु उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो॥ १७। अपना अनाज और दाख रस और तेल का बाईसवां अंश और अपने ढोर अथवा झुंड के पहिलौंठे अथवा अपनी मानी हुई मनौती और अपनी बांछा की भेंट अथवा अपने हाथ के हिलाने की भेंट अपने फाटकों में मत खाइयो॥ १८। परंतु तुझ पर और तेरे बेटा बेटी और तेरे दास और तेरी दासी पर और लावी पर जो तेरे फाटकों में हैं उचित है कि उन बस्तुन को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा खाइयो और तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे अपने सब कामों में आनंद करियो॥ १९। आप से चौकस रहियो जब लों तू जीता रहे लावी को मत त्यागियो॥ २०। जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे सिवानों को बढ़ावे जैसा उस ने तुझ से प्रतिज्ञा किई है और तू कहे कि मैं मांस खाऊंगा इस कारण कि तेरा जीव मांस खाने का अभिलाषी है तो तू मांस और हर एक बस्तु जिसे तेरा जीव चाहे खाइयो॥ २१। यदि वुह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपना नाम वहां रखने को चुन लिया तुझ से बहुत दूर होवे तो तू अपने ढोर और झुंड में से जो ईश्वर ने तुझे दिये हैं जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है मारियो और अपने फाटकों में जो कुछ तेरा जीव चाहे सो खाइयो॥ २२। जैसा कि हरिण और बारासिंगे खाये जाते हैं तू उन्हें खाइयो पवित्र और अपवित्र उन्हें समान खाय॥ २३। केवल चौकस होके लोहू मत खाइयो क्योंकि लोहू जीव है और तुझे उचित नहीं कि मांस के साथ जीव खाय॥ २४। तू उसे मत खाइयो उसे पानी की नाईं भूमि पर डाल दीजियो॥ २५। तू उसे मत खाइयो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का भला होय जब कि तू वुह जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक है करे॥

२६। परंतु तू अपने पवित्र बस्तुन को और अपनी मनोतियां को उस स्थान में जिसे ईश्वर चुनेगा लेजाइयो॥ २७। और तू अपनी होम की भेंट मांस और लोहू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी पर चढ़ाइयो और तेरे बलिदानों का लोहू परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी पर ढाला जायगा और तू मांस को खाइयो॥ २८। चौकस हो और इन सब बातों को सोचो जो में तुझे आज्ञा करता हूं जिसतें तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का सनातन लों भला होवे जब कि तुम वुह जो भला और ठीक है परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में करो॥ २९। जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को तेरे आगे से काट डाले जहां तू जाता है कि अधिकारी बने और तू उन का अधिकारी होवे और उन के देश में बास करे॥ ३०। अपने से चौकस रहियो न हो कि जब वे तेरे आगे से बिनाश होंय तू उन के पीछे बझ जाय और न हो कि तू उन के देवतों को खोज करके कहे कि इन जातिगणों ने अपने देवतों की सेवा किस रीति से किई यों मैं भी वैसी करूंगा॥ ३१। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से ऐसा मत कीजियो क्योंकि उन्हों ने हर एक कार्य्य जिस्से ईश्वर को घिन है जिस्से वुह बैर रखता है अपने देवतों के लिये किया यहां लों कि अपने बेटों और बेटियों को अपने देवतों के लिये आग में जला दिया॥ ३२। तुम हर एक बात को जो मैं तुम्हें कहता हूं सोचके मानियो उस में न बढ़ाइयो न उस में घटाइयो॥

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

यदि तुम्में कोई आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी प्रगट होवे और तुझे कोई लक्षण अथवा आश्चर्य दिखावे॥ २। और वुह लक्षण अथवा आश्चर्य्य जो उस ने दिखाया पूरा होवे और वुह तुम्हें कहे कि आओ हम आन देवतों का पीछा करें जिन्हें तू ने नहीं जाना और उन की सेवा करें॥ ३। तो कभी उस आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी के बचन मत सुनियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें परखता है जिसतें देखे कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे जीव से और सारे प्राण से प्रिय रखते हो कि नहीं॥ ४। तुम परमेश्वर अपने ईश्वर का पीछा करो और उस्से डरो और उस की आज्ञाओं को

धारण करो और उस का शब्द मानो तुम उस की सेवा करो और उसी से लवलीन रहो॥ ५। और वुह आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी घात किया जायगा क्योंकि उस ने तुम्हें परमेश्वर अपने ईश्वर से फिराने की बात कही जो तुम्हें मिस्र से बाहर निकाल लाया और तुझे बंधुआई के घर से छुड़ाया जिसतें तुझे उस मार्ग में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आज्ञा किई है बहका देवे सो तुझे उचित है कि तू उस बुराई को अपने मध्य से निकाल डाले॥ ६। यदि तेरा सगा भाई अथवा तेरा बेटा अथवा तेरी बेटी अथवा तेरी गोद की पत्नी अथवा तेरा मित्र जो तेरे प्राण के समान होवे तुझे चुपके से फुसलावे और कहे कि चल दूसरे देवतों की सेवा करें जिन्हें तू और तेरे पितर नहीं जानते हैं॥ ७। उन लोगों के देवों में से जो तुम्हारे आस पास तेरे चारों ओर हैं अथवा तुझ से दूर भूमि के इस खूंट से उस खूंट लों॥ ८। तू उस की बात न मानियो न उस की सुनियो न उस पर दया की दृष्टि कीजियो न उसे मत छोड़ न उस को छिपा॥ ९। परंतु उसे अवश्य मार डालियो उस के बधन में पहिले तेरा हाथ उस पर पड़े और पीछे सब लोगों के हाथ॥ १०। तू उस पर पथरवाह कीजियो जिसतें वुह मर जाय क्योंकि उस ने चाहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर से तुझे भटकावे जो तुझे मिस्र के देश और बंधुआई के घर से निकाल लाया॥ ११। और सारे इसराएल सुनके डरेंगे और तुम्हारे मध्य में फिर ऐसी दुष्टता न करेंगे॥ १२। यदि तू उन नगरों में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बसने के लिये दिये हैं यह कहते सुने॥ १३। कि कितने लोग तुम्ह से निकल गये और अपने नगर के बासियों को यों कहके भटकाया कि आओ चलें और देवतों की सेवा करें जिन्हें तुम ने नहीं जाना है॥ १४। सो खोजियो और यत्न से पूछियो और देख यदि सत्य होय और निःसंदेह कि ऐसा घिनित कार्य्य तुम्ह में है॥ १५। तो उस नगर के बासियों को खड्ग की धार से निश्चय मार डालियो उसे और जो कुछ उस में है और वहां के ढोर को खड्ग की धार से सर्व्वथा नाश कीजियो॥ १६। और तू वहां की सारी लूट को वहां की सड़क के मध्य में एकट्ठा कीजियो और उस नगर को और वहां की सारी लूट को परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये

जला दीजियो और वुह सनातन लों एकट्ठे रहेगा फिर बनाया न जायगा॥ १७। और उस स्थापित वस्तु में से कुछ तेरे हाथ में सटी न रहे जिसतें परमेश्वर अपने क्रोध के जलजलाहट से फिर जाय और तुझ पर अनुग्रह करे और दयाल होवे और तुझे बढ़ावे जैसा कि उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है॥ १८। जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुने कि उस की सारी आज्ञा को जो आज मैं तुझे कहता हूं जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे ठीक है उसे पालन करे।

१४ चौदहवां पर्व्व।

तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के संतान हो तुम मृतक के लिये अपने को काटकूट न करियो न अपने माथे को मुड़ाइयो॥ २। क्योंकि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग हो और परमेश्वर ने समस्त जातिगणों में से जो पृथिवी पर हैं तुझे चुन लिया कि अपना निज लोग बनावे॥ ३। तू किसी घिनित वस्तु को मत खाइयो॥ ४। इन पशुन को खाइयो बैल भेड़ बकरी॥ ५। और हरिण और हरिणी और कंदली और बनैली बकरी और गवय और बनैला बैल और वातप्रमी॥ ६। और हर एक चौपाया जिस के खुर चिरे हुए हों और उस के खुर में विभाग हो और पागुर करता हो तुम उसे खाइयो॥ ७। तथापि उन में से जो पागुर करते हैं अथवा उन के खुर चिरे हुए हैं जैसे ऊंट और खरहा और सफन तुम इन्हें मत खाइयो इस लिये कि ये पागुर नहीं करते परंतु उन के खुर चिरे हुए हैं सो ये तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥ ८। और सूअर इस कारण कि उस के खुर चिरे हुए हैं तथापि पागुर नहीं करता वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध है तुम उन का मांस न खाइयो न उन की लोथों को छूइयो॥ ९। सब में से जो पानियों में रहते हैं इन्हें खाइयो जिन के पंख और छिलके हों। १०। और जिस किसी के पंख और छिलके न हों तुम उन्हें न खाइयो वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥ ११। समस्त पावन पक्षी को खाइयो॥ १२। परंतु उन में इन्हें न खाइयो गिद्ध और हाड़गिल और कुरर॥ १३। और शंकरचील्ह और चील्ह और भांति भांति के गिद्ध॥ १४। और भांति भांति के कव्वे॥ १५।

पेंचा और लच्छी पेंचा और कोइल और भांति भांति के सिकरा॥ १६। और छोटा पेंचा और उल्लू और राजहंस॥ १७। और गरुड़ और बासा और मछरंग॥ १८। और सारस और भांति भांति के बगुले और टिटिहरी और चमगूदर॥ १९। और हर एक रेंगवैया जो उड़ता है तुम्हारे लिये अशुद्ध है वे खाये न जावें॥ २०। समस्त पवित्र पक्षी खाइयो॥

२१। जो कुछ आप से मर जाय उसे मत खाइयो तू उसे किसी परदेशी को जो तेरे फाटकों में है खाने को दीजियो अथवा किसी बिदेशी के हाथ बेच डालियो क्योंकि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का पवित्र लोग है तू मेम्ना को उस की माता के दूध में मत उसिनना॥ २२। बरस बरस जो बीज तेरे खेतों में उगे तू निश्चय उस का अंश दिया कर॥ २३। तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे वुह अपने नाम के लिये चुनेगा अपने अन्न का अपनी मदिरा का अपने तेल का अपने ढार और अपनी झुंड के पहिलौंठों के अंश को खाइयो जिसतें तू सर्वदा परमेश्वर अपने ईश्वर से डरना सीखे॥ २४। और यदि मार्ग तेरे लिये अति दूर होवे यहां लों कि तू उसे न ले जा सके यदि वह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना जिसतें अपना नाम वहां स्थिर करे बहुत दूर होवे तो जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे आशीष देवे॥ २५। तब तू उन्हें बेचके उन का रोकड़ अपने हाथ में लेके उस स्थान को जा जो तेरे परमेश्वर ने चुना है॥ २६। और उस रोकड़ से जिस वस्तु को तेरा मन चाहे मोल ले गाय बैल अथवा भेड़ अथवा दाखरस अथवा मद्य अथवा जो वस्तु तेरा जीव चाहे तू और तेरा घराना परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खाय और आनंद करे॥ २७। और जो लावी तेरे फाटकों में है उसे त्याग मत करियो क्योंकि उस का भाग और अधिकार तेरे साथ नहीं है॥ २८। तीन बरस के पीछे अपनी बढ़ती का समस्त दसवां भाग उसी बरस लाइयो और अपने फाटकों के भीतर धरियो॥ २९। और इस कारण कि लावी तेरे संग भाग और अंश नहीं रखता है और परदेशी और अनाथ और बिधवा जो तेरे फाटकों में हैं आवें और खावें और तृप्त होवें जिसतें

परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में जो तू करता है आशीष देवे॥

१५ पंदरहवां पर्व्व।

सात बरसें के पीछे तू छुटकारा ठहराओ॥ २। और छुटकारे की रीति यह है कि हर एक धनिक जो अपने परोसी को ऋण देता है सो उसे छोड़ देवे और अपने परोसी से अथवा भाई से न लेवे इस कारण कि यह परमेश्वर का छुटकारा कहाता है॥ ३। परदेशी से तू ले सके परंतु यदि तेरा कुछ तेरे भाई पर है तो उसे छोड़ दे॥ ४। जिसतें तुझ में कोई कंगाल न होवे क्योंकि परमेश्वर उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में देता है तुझे आशीष देगा॥ ५। यदि तू केवल परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुने और ध्यान से उन समस्त आज्ञाओं पर चले जो आज मैं तुझे कहता हूं॥ ६। तो परमेश्वर तेरा ईश्वर जैसा उस ने तुझ से प्रण किया है तुझे आशीष देगा और तू बहुत जातिगणों को उधार देगा परंतु तू उधार न लेगा और तू बहुत से जातिगणों पर राज्य करेगा परंतु वे तुझ पर राज्य न करेंगे॥ ७। यदि तुम्हारे बीच तुम्हारे भाइयों में से तेरे किसी नगर में उस देश का जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है कोई कंगाल होवे तो उस्से अपने मन को कठोर मत करियो और अपने कंगाल भाई की ओर से अपना हाथ न खींचियो॥ ८। परंतु अवश्य उस की सहाय करियो परंतु उस्से हाथ बंद मत कीजियो और निश्चय उस के आवश्यक के समान उसे उधार देना॥ ९। सावधान हो कि तेरे दुष्ट मन में कोई बुरी चिंता न हो कि सातवां बरस तेरे छुटकारे का बरस पास है और तेरी आंख तेरे कंगाल भाई की ओर बुरी होवे और तू उसे कुछ न देवे और वुह तुझ पर परमेश्वर के आगे बिलाप करे और तेरे लिये पाप होवे॥ १०। अवश्य उसे दीजियो और जब तू उसे देवे तो तेरा मन उदास न होवे क्योंकि इस कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे समस्त कार्यों में जिन में तू हाथ लगावे बढ़ती देगा॥ ११। क्योंकि देश में से कंगाल न मिटेंगे इस लिये मैं तुझे आज्ञा करता हूं कि अपने भाई के लिये जो

तेरे सन्मुख और अपने कंगाल और अपने दरिद्र के लिये जो तेरे देश में है अपना हाथ खोलियो॥ १२। यदि तेरा इबरानी भाई पुरुष हो अथवा स्त्री तेरे हाथ बेचा जाय और छः बरस लों तेरी सेवा करे तब सातवें बरस सेंत से उसे जाने दीजियो॥ १३। और जब तू उसे अपने पास से जाने देवे तो उसे छूछे हाथ मत जाने दीजियो॥ १४। अपनी झुंड और खत्ते और कोल्हू में से उस बढ़ती में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिई है उसे मन खोलके दीजियो॥ १५। और स्मरण कीजियो कि मिस्र देश में तू बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छुड़ाया इस लिये आज मैं तुझे यह आज्ञा करता हूं॥ १६। और यदि वुह तुझे कहे कि मैं तुझ पास से न जाऊंगा इस कारण कि वुह तुझ से और तेरे घर से प्रीति रखता है क्योंकि वुह तेरे संग कुशल से है॥ १७। तो तू एक सुतारी लेके अपने द्वार पर उस का कान छेदियो जिसतें वुह सदा को तेरा सेवक हो और अपनी दासी से भी तू ऐसा ही करियो॥ १८। और जब तू उसे छोड़ देवे तो तुझे कठिन न समुझ पड़े क्योंकि उस ने दो बनिहारों के तुल्य छः बरस लों तेरी सेवा किई सो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हर एक कार्य में तुझे आशीष देगा॥ १९। अपने ढोर के और अपने झुंड के सारे पहिलौंठे नर परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र करियो तू अपने बैलों के पहिलौंठों से कुछ कार्य मत लीजियो अपनी भेड़ के पहिलौंठों को मत कतरना॥ २०। परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बरस बरस उस स्थान में जो परमेश्वर चुनेगा अपने घराने सहित खाइयो॥ २१। परन्तु यदि उस में कोई खोट होवे लंगड़ा अथवा अंधा अथवा कोई भारी खोट होवे तो उसे परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान मत करियो॥ २२। जैसे हरिन और बारहसींगा तुम उसे अपने द्वारों पर खाइयो पवित्र हो अथवा अपवित्र दोनों समान॥ २३। केवल उस का लोहू मत खाइयो तू उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

अबिब मास का पालन करियो और परमेश्वर अपने ईश्वर का बीत जाना मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर अबिब के मास में रात को तुझे मिस्र से निकाल लाया॥ २। उस स्थान में जिसे परमेश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा अपने परमेश्वर ईश्वर के लिये तू अपने ढोर में से बीत जाना बलि करियो॥ ३। तू उस के साथ खमीरी रोटी मत खाना सात दिन उस के साथ अखमीरी रोटी अर्थात् कष्ट की रोटी खाइयो क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली से निकला जिसतें तू उस दिन को अपने जीवन भर स्मरण करे जब तू मिस्र से निकला॥ ४। और तेरे सारे सिवाने में सात दिन लों खमीरी रोटी दिखाई न देवे और न उस मास में से जिसे तू ने पहिले दिन सांझ को बलि किया रात भर बिहान लों बच रहे॥ ५। तू अपने किसी फाटकों के भीतर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है बीत जाना बलि मत करियो॥ ६। परंतु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा सांझ को सूर्य अस्त होते उसी समय में जब तू मिस्र से निकला बीत जाना बलि करियो॥ ७। और उस स्थान में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा तू उसे भूनके खाइयो और बिहान को फिर के अपने तंबूओं को चले जाइयो॥ ८। छः दिन लों अखमीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन जो तेरे ईश्वर के रोक का दिन है कुछ काम काज न करना॥ ९। अपने लिये सात अठवारे गिन और खेती में हंसुआ लगाने से गिन्ने का आरंभ करियो॥ १०। और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये अठवारों का पर्ब्ब रखिओ उस में तू अपने ईश्वर के आशीष के समान अपने हाथ के मनमंता दान दीजियो॥ ११। और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे तू और तेरा बेटा बेटी और तेरे दास दासी और लावी जो तेरे फाटकों के भीतर है और परदेशी और अनाथ और विधवा जो तुझ में हैं उस स्थान में आनंद करियो जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुन लेगा कि अपना नाम वहां स्थापन करे॥ १२। और सुधि रखियो कि तू मिस्र में दास या सो चैाकस रह कि इन बिधिन को पालन कर और मान॥ १३। जब तू अपने खरिहान

और अपने कोल्हू को एकट्ठा कर चुके तो सात दिन लों तंबूओं का पर्ब मानियो॥ १४। और अपने बेटा बेटी और अपने दास दासी और लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा समेत जो तेरे फाटकों के भीतर हैं आनंद करियो॥ १५। सात दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा पर्ब मानियो इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी सारी बढ़तियों में और तेरे हाथों के समस्त कार्य्यों में तुझे बर देगा सो तू निश्चय आनंद करियो॥ १६। बरस में तेरे समस्त पुरुष तीन बार अर्थात् अखमीरी रोटी के पर्ब में और अठवारों के पर्ब में और तंबूओं के पर्ब में परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे वुह चुनेगा एकट्ठे होवें और वे परमेश्वर के आगे छूछे न आवें॥ १७। हर एक पुरुष अपनी पूंजी के समान और परमेश्वर तेरे ईश्वर के आशीष के समान जो उस ने तुझे दिया है देवे॥ १८। अपने समस्त फाटकों में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देगा अपनी समस्त गोष्ठियों में न्यायी और प्रधान ठहराइयो और वे याथार्थ्य से लोगों का न्याय करें॥ १९। तू अन्याय बिचार मत करियो तू पक्ष न करियो घूस मत लीजियो क्योंकि घूस बुद्धिमान को अंधा कर देता है और धर्म्मी की बातों को फेर देता है॥ २०। जो हर प्रकार से याथार्थ्य है तू उस का पीछा करियो जिसतें तू जीये और उस देश का जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है अधिकारी होवे॥ २१। परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी के लग अपने लिये पेड़ों का कुंज जिसे तू लगाता है न लगाइयो॥ २२। न अपने लिये किसी भांति की मूर्त्ति स्थापित करियो जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर को घिन है।

१७ सतरहवां पर्ब्ब॥

तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बैल अथवा भेड़ जिस में कोई खोट अथवा बुराई होय बलि मत चढ़ाइयो क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर को उस से घिन है॥ २। यदि तुम्हारे किसी फाटकों के भीतर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री होय जिस ने परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस की वाचा को भंग करके दुष्टता किई

होय॥ ३। और जाके दूसरे देवों की पूजा किई हो और उन्हें दंडवत किई हो जैसे सूर्य अथवा चंद्रमा अथवा अकाश की कोई सेना जिन की मैं ने आज्ञा नहीं दिई॥ ४। और तुझ से कहा जाय और तू ने सुना है और यत्न से खोजा और सत्य पाया और निश्चय किया जाय कि इसराएल में ऐसा घिनित कार्य्य हुआ है॥ ५। तब तू उस पुरुष अथवा उस स्त्री को जिस ने तेरे फाटकों में दुष्ट कार्य किया है उसी पुरुष अथवा उसी स्त्री को बाहर लाइयो और उन पर यहां लों पथरवाह कीजियो कि वे मर जावें॥ ६। दो अथवा तीन की साक्षी से जो मार डालने के योग्य है मार डाला जाय परंतु एक साक्षी से वुह मारा न जाय॥ ७। पहिले साक्षियों के हाथ उस के मारने के लिये उठें और पीछे सब लोगों के तुम अपनों में से बुराई को यों मिटा डालियो॥ ८। यदि आपुस के लोहू बहाने में और आपुस के बिवाद में और आपुस की मार पीट में तेरे फाटकों के भीतर अपवाद के बिषय में तेरे बिचार के लिये कठिन होय तो तू उठ और उस स्थान को जा जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है॥ ९। और याजकों अर्थात् लावियों पास और उस न्यायी के पास जो उन दिनों में हो जा और उस्से पूछ और वे तुझे न्याय की आज्ञा बतावेंगे॥ १०। और तू उस आज्ञा के समान करना जो वे तुझे उस स्थान से जिसे परमेश्वर चुनेगा बतावें तू सोचके उन सभों के समान जो वे तुझे बतावें मानना॥ ११। और उस व्यवस्था की आज्ञा के समान जो वे तुझे सिखावें और उस बिचार के तुल्य जो तुझे कहें करियो और उस आज्ञा से जो वे तुझे बतावें दहिने बायें मत मुड़ियो॥ १२। और जो मनुष्य ढिठाई करे और उस याजक की बात जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे सेवा करने के लिये खड़ा है अथवा उस न्यायी का बचन न सुने वही मनुष्य मार डाला जाय और तू इसराएल में से उस बुराई को यों मिटा दीजियो॥ १३। जिसतें समस्त लोग सुनें और डरें और फेर ढिठाई से अपराध न करें॥ १४। जब तू उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है पहुंचे और उसे अपने बश में करे और उस में बसे और कहे कि उन सब जातिगण के समान जो मेरे आस पास हैं मैं भी अपने लिये एक राजा बनाऊंगा॥ १५। जो तू किसी रीति से अपने

ऊपर राजा ठहराना जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुने तू अपने भाइयों में से एक को अपना राजा बनाना और किसी परदेशी को जो तेरा भाई नहीं है अपने ऊपर न ठहराना॥ १६। परंतु वुह अपने लिये घोड़े न बढ़ावे और न लोगों को मिस्र में फेर लेजाय जिसतें वुह घोड़े बढ़ावे कि परमेश्वर ने तुम्हें कहा है कि तुम उस मार्ग में फेर कभी न जाना॥ १७। और वुह अपने लिये पत्नी न बटोरे ऐसा न हो कि उस का मन फिर जाय और वुह अपने लिये बहुत रूपा और सोना बटोरे॥ १८। और यों होगा कि जब वुह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठे तो इस व्यवस्था की पुस्तक में अपने लिये लिखे जो लावी याजकों के आगे है॥ १९। वुह उस के साथ रहा करे और अपने जीवन भर उसे पढ़ा करे जिसतें वुह परमेश्वर अपने ईश्वर का डर सीखे और इस व्यवस्था के समस्त बचन और इन बिधिन को पालन करे और माने॥ २०। जिसतें उस का अंतःकरण अपने भाइयों के ऊपर न उभड़े और कि वुह आज्ञा से दहिने अथवा बायें न मुड़े जिसतें उस के राज्य में उस के और उस के बंश के इसराएल के मध्य में जीवन बढ़ जायें॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

याजकों और लावी और लावियों की समस्त गोष्ठी का भाग और अधिकार इसराएल के साथ न होगा वे परमेश्वर के होम की भेंट और उस के अधिकार खायें॥ २। इस लिये वे अपने भाइयों में अधिकार न पावेंगे परमेश्वर उन का अधिकार है जैसा उस ने उन्हें कहा है॥ ३। और लोगों में से जो बलिदान चढ़ाते हैं चाहे बैल अथवा भेड़ याजक का भाग यह होगा कि वे याजक को कांधा और दोनों गाल और झोझ देवें॥ ४। और तू अपने अन्न और अपनी मदिरा और तेल में का पहिला भाग और अपनी भेड़ों के रोम में का पहिला उसे देना॥ ५। क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरी समस्त गोष्ठियों में से उसे चुना है कि वुह और उस के बेटे परमेश्वर के नाम की सदा सेवा करें॥ ६। यदि कोई लावी समस्त इसराएल में से तेरे किसी फाटकों से आवे जहां वुह बास करता था और उस स्थान में जिसे

परमेश्वर चुनेगा बड़ी लालसा से आ पहुंच॥ ७। तो वुह परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से सेवा करे जैसे उस के समस्त लावी भाई जो परमेश्वर के आगे वहां खड़े रहते हैं॥ ८। अपने पितरों की बेची हुई बस्तुन के मोल को छोड़के वे उन के भाग के समान खाने को पावें॥ ९। जब तू उस देश में पहुंचे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तो उन जातिगणों के घिनित कार्य न सीखियो॥ १०। तुझ में कोई ऐसा न हो कि अपने बेटे अथवा बेटी को आग में से चलावे अथवा दैवज्ञ कार्य करे अथवा मुहूर्त्त माने अथवा मायावी अथवा टोनहिन॥ ११। अथवा तांत्रिक अथवा वशकारी अथवा टोनहा अथवा गणक॥ १२। क्योंकि सब लोग जो ऐसे कार्य करते हैं परमेश्वर से घिनित हैं और ऐसे घिन के कारण से उन को परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे आगे से दूर करता है॥ १३। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से निष्कपट हो॥ १४। क्योंकि ये जातिगण जिन का तू अधिकारी होगा मुहूर्त्त के मनवैयों को और दैवज्ञ को सुनते थे परंतु तुझ को है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे रोक रक्खा है॥ १५। परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे कारण तेरे ही मध्य में से तेरे ही भाइयों में से एक आगमज्ञानी मेरे तुल्य उदय करेगा तुम उस की सुनियो॥ १६। इन सभों की नाईं जो तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर से हारिब में सभा के दिन मांगा और कहा ऐसा न हो कि मैं परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनूं और ऐसी बड़ी आग मैं फेर देखूं जिसतें कि मैं मर न जाऊं॥ १७। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उन्हों ने जो कुछ कहा सो अच्छा कहा॥ १८। मैं उन के लिये उन के भाइयों में से तेरे तुल्य एक आगमज्ञानी उदय करूंगा और अपना बचन उस के मुंह में डालूंगा और जो कुछ मैं उसे कहूंगा वुह उन से कहेगा॥ १९। और ऐसा होगा कि जो कोई मेरी बातों को जिन्हें वुह मेरे नाम से कहेगा न सुनेगा मैं उस्से लेखा लेऊंगा॥ २०। परंतु जो आगमज्ञानी ऐसी ढिठाई करे कि कोई बात जो मैं ने उसे नहीं कही मेरे नाम से कहे अथवा जो और देवों के नाम से कहे तो वुह आगमज्ञानी मार डाला जाय॥ २१। और यदि अपने मन में कहे कि मैं उस बचन को क्योंकर जानूं जिसे परमेश्वर ने न कहा॥ २२। जब आगमज्ञानी परमेश्वर के नाम से कुछ कहे और वुह जो उस

ने कही है न होवे अथवा पूरी न हो तो वह बात परमेश्वर ने नहीं कही परंतु उस आगमज्ञानी ने ढिठाई से कही है तू उस्से मत डर॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को जिन का देश परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है काट डाले और तू उन का अधिकारी होवे और उन के नगरों में और उन के घरों में बसे॥ २। तो तू अपने उस देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता है अपने लिये तीन नगर अलग करना॥ ३। तू अपने लिये एक मार्ग सिद्ध करना और अपने देश के सिवानों को जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में देता है तीन भाग करना जिसतें हर एक घाती उधर भागे॥ ४। और घाती की व्यवस्था जो वहां भागे जिसतें वुह जीता रहे यह है जो कोई अपने परोसी को जो उस्से आगे बैर न रखता था अजान में मार डाले॥ ५। अथवा कोई मनुष्य अपने परोसी के साथ लकड़ी काटने को बन में जाय और कुल्हाड़ा हाथ में उठावे कि लकड़ी काटे और कुल्हाड़ा बट से निकल जाय और उस के परोसी को ऐसा लगे कि वुह मर जाय तो वुह उन में से एक नगर में भाग के बचे॥ ६। न हो कि मार्ग के दूर होने के कारण लोहू का प्रतिफल दायक अपने मन के कोप से घाती का पीछा करे और उसे पकड़ लेवे और उसे मार डाले यद्यपि वुह मार डालने के योग्य नहीं क्योंकि वुह आगे से उस का डाह न रखता था॥ ७। इस लिये मैं तुझे आज्ञा करके कहता हूं कि तू अपने कारण तीन नगर अलग करना॥ ८। और यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा सिवाना बढ़ावे जैसा उस ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा है और वुह समस्त देश तेरे पितरों को देने को बाचा किई तुझे देवे॥ ९। यदि तू इस समस्त आज्ञाओं को पालन करे और उन्हें माने जो आज के दिन में तुझे आज्ञा करता हूं और परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखके सर्बदा उस के मार्ग पर चले तो तू इन तीन नगरों से अधिक अपने लिये तीन नगर बढ़ाना॥ १०। जिसतें तेरे देश पर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है निर्दोष लोहू बहाया न जाय कि हत्या

तुझ पर होय॥ ११। परंतु यदि कोई जन जो अपने परोसी से बैर रखता हो और उस की घात में लगा हो और उस के बिरोध में उठके उसे ऐसा मारे कि वुह मर जाय और इन में से एक नगर में भाग जाय॥ १२। तो उस के नगर के प्राचीन भेज के उसे वहां से मगावें और लोहू के प्रतिफलदाता के हाथ में सैांप देवें कि वुह घात किया जाय॥ १३। तेरी आंख उस पर दया न करे परंतु तू निर्दोष लोहू के पाप को इसराएल से यों दूर करना तेरा भला हो॥ १४। अपने परोसी के सिवाने को मत हटा कि उसे अगिले लोगों ने तेरे अधिकार में रक्खा है तू उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार और बश में कर देता है अपने परोसी के सिवाने को मत हटा जिसे अगिले लोगों ने तेरे अधिकार में रक्खा है॥ १५। किसी मनुष्य के अपराध और पाप पर कोई पाप क्यों न हो एक साक्षी ठीक नहीं है परंतु दो अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई जायगी॥ १६। यदि कोई झूठा साक्षी उठके किसी मनुष्य पर साक्षी देवे॥ १७। तो वे दोनों जिन में बिवाद है परमेश्वर के आगे याजकों और न्यायियों के सन्मुख जो उन दिनों में हों खड़े किये जायें॥ १८। और न्यायी यत्न से बिचार करें सो यदि वह साक्षी झूठा ठहरे और उस ने अपने भाई पर झूठी साक्षी दिई हो॥ १९। तब तुम उस्से ऐसा करना जो उस ने चाहा था कि अपने भाई से करे इस रीति से बुराई को अपने में से दूर करना॥ २०। अरु और जो हैं सुनके डरेंगे और आगे को तुझ में ऐसी बुराई फिर न करेंगे॥ २१। और तेरी आंख दया न करे कि प्राण की संती प्राण आंख की संती आंख दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती पांव होगा॥

२० बीसवां पर्ब्ब।

जब तू लड़ाई के लिये अपने बैरियों पर चढ़ जाय और देखे कि उन के घोड़े और गाड़ियां और लोग तुझ से बड़त हैं तो तू उन से मत डर क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया तेरे साथ है॥ २। और यों होगा कि जब तू संग्राम के निकट पड़ंचे तो याजक आगे होके लोगों को कहे॥ ३। और उन से बोले

कि हे इसराएलियो सुनो तुम आज के दिन अपने बैरियों से लड़ाई करने को जाते हो सो तुम्हारा मन न घटे डरो मत और मत घबराओ और उन से मत थर्थराओ ॥ ४ । क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे साथ जाता है कि तुम्हारे लिये तुम्हारे बैरियों से लड़ के तुम्हें बचावे॥ ५ । और प्रधान लोगों से कहे और बोले कि तुम्में कौन मनुष्य है जिस ने नया घर बनाया हो और उसे नहीं स्थापा है वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा मनुष्य उसे स्थापे॥ ६ । और कौन मनुष्य है जिस ने दाख की बारी लगाई हो और उस के फल न खाये हो वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा उसे खावे॥ ७। और कौन मनुष्य है जो किसी स्त्री से बचनदत्त ऊआ है और वुह उसे घर न लाया हो वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा उसे लेवे॥ ८। और प्रधान लोगों से यह भी कहे कि कौन मनुष्य है जो डरपोकना और असाहसी अपने घर को फिर जाय न हो कि उस के भाइयों के मन उस के मन की नाईं बोदे हो जायें॥ ९। और यों हो कि जब प्रधान लोगों से कह चुकें तो वे सेना के प्रधानों को ठहरावें कि लोगों की अगुआई करें॥ १०। जब तू लड़ाई के लिये किसी नगर के निकट पड़ंचे तो पहिले उस्से मिलाप का प्रचार कर यदि वुह तुझे मिलाप का उत्तर देवे और तेरे लिये द्वार खोले॥ ११। तब यों होगा कि सब लोग जो उस नगर में हैं तेरे करदायक होंगे और तेरी सेवा करेंगे॥ १२। और यदि वुह तुझ से मिलाप न करे परंतु तुझ से लड़ाई करे तो तू उसे घेर ले॥ १३। और जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उसे तेरे हाथ में कर देवे तू वहां के हर एक पुरुष को तलवार की धार से मार डालियो॥ १४। केवल स्त्रियां और लड़कों और पशुन को उन सब समेत जो उसनगर में हों लूट ले और तू अपने बैरियों की लूट को जो तेरे परमेश्वर ईश्वर ने तुझे दिई हैं खा॥ १५। तू उन सब नगरों से जो तुझ से बड़त दूर हैं और इन जातिगणों के नगरों में से नहीं हैं ऐसा करना॥ १६। परंतु इन लोगों के नगरों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है किसी को जो सांस लेता हो जीता न छोड़ना॥

१७। परंतु उन्हें सर्वथा नाश कर डालना हित्ती श्रीर अमूरी श्रीर कनआनी श्रीर फरिज्जी श्रीर हवी श्रीर यबूसी का जैसी परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है॥ १८। जिसतें वे समस्त घिनैाने कार्य जो उन्हों ने अपने देवों से किये तुम्हें न सिखावें कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के अपराधी हो जाओ॥ १९। जब तू किसी नगर के लेने के लिये लड़ाई में बहुत दिन ताईं घेरे रहे ता तू कुल्हाड़ी चलाय के उन के वृक्ष नाश मत करियो परंतु तू उन के फल खाइयो सो तू उन्हें काट न डालियो कि तेरे लिये घेरने के काम में आवें क्योंकि खेत के पेड़ मनुष्य के लिये हैं। २०॥ केवल वे वृक्ष जो खाने के काम के न हों उन्हें काट के नाश करियो श्रीर उस नगर के आगे जो तुझ से लड़ता है गढ़ बना जब ताईं वुह तेरे बश में होवे।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब।

यदि उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता है किसी की लोथ खेत में पड़ी मिले श्रीर जाना न जाय कि किस ने उसे मारा॥ २। तब तेरे प्राचीन श्रीर तेरे न्यायी बाहर निकलें श्रीर उन नगरों को जो घातित के चारों श्रीर हैं नापें॥ ३। श्रीर यों होगा कि जो नगर घातित के समीप है उसी नगर के प्राचीन एक कलोर लेवें जिस से कार्य न किया गया हो श्रीर जूये तले न आई हो॥ ४। श्रीर नगर के प्राचीन उस कलोर को खड़बिड़ तराई में जो न जोता गया हो न उस में कुछ बोया गया हो ले जाय श्रीर उसी तराई में उस कलोर के सिर को उतारें॥ ५। तब याजक जो लावी के संतान हैं पास आवें क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपनी सेवा के लिये श्रीर परमेश्वर के नाम से आशीष देने के लिये उन्हीं को चुना है श्रीर उन्हीं के बचन से हर एक झगड़ा श्रीर हर एक बिपत्ति का निर्णय किया जायगा॥ ६। फिर उस नगर के समस्त प्राचीन जो घातित के पास हैं उस कलोर के ऊपर जो तराई में बलि किई गई अपने हाथ धोवें॥ ७। श्रीर उत्तर देके कहें कि हमारे हाथों ने यह लोहू नहीं बहाया है न हमारी आंखों ने देखा है॥ ८। हे परमेश्वर अब अपने इसराएली लोगों पर दया कर

जिन्हें तू ने छुड़ाया है और हथा हत्या अपने इसराएली लोगों पर मत रख तब वुह हत्या क्षमा किई जायगी॥ ९। सो जब तू इसी रीति से वुह करे जो परमेश्वर के आगे ठीक है तब तू हत्या को अपने में से दूर करेगा॥ १०। और जब तू युद्ध के लिये अपने बैरियों पर चढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे हाथ में कर देवे और तू उन्हें बंधुआ करे॥ ११। और उन बंधुओं में सुंदर स्त्री देखे और तेरा मन उस पर चले कि उसे अपनी पत्नी करे॥ १२। तब तू उसे अपने घर में ला उस का सिर मुड़वा और नंह कटवा॥ १३। तब वुह बंधुआई का बस्त्र उतारे और तेरे घर में रहे और पूरा एक मास भर अपने मा बाप के लिये शोक करे उस के पीछे तू उसे ग्रहण करना और उस का पति होना और वुह तेरी पत्नी हो॥ १४। उस के पीछे यदि तू उस्से प्रसन्न न हो तो जिधर वुह चाहे उसे जाने दे पर तू उसे रोकड़ पर मत बेचना तू उस्से कुछ बाणिज्य न करना क्योंकि तू ने उस की पति लिई॥ १५। यदि किसी की दो पत्नियां हों एक प्रिया और दूसरी अप्रिया और प्रिया और अप्रिया दोनों से लड़के हों और पहिलौंठा अप्रिया से हो॥ १६। तो यों होगा कि जब वुह अपने पुत्रों को अधिकारी करे तब वुह प्रिया के बेटे को अप्रिया के बेटे पर पहिलौंठा न करे॥ १७। परन्तु वह अप्रिया के बेटे को अपनी समस्त संपत्ति से दूना भाग देके पहिलौंठा ठहरावे क्योंकि वुह उस के बल का आरंभ है और पहिलौंठे होने का भाग उसी का है॥ १८। यदि किसी का पुत्र ढीठ और झगरा होय जो अपने माता पिता की आज्ञा न माने और जब वे उसे ताड़ना करें और वुह उन्हें न माने॥ १९। तब उस के माता पिता उसे पकड़ के उस नगर के प्राचीनों पास उस स्थान के फाटक पर लावें॥ २०। और वहां के प्राचीनों से जाके कहें कि हमारा यह बेटा ढीठ और झगरा है हमारी बात नहीं मानता बड़ा ही खाऊ और पिअक्कड़ है॥ २१। और उस के नगर के सब लोग उस पर पथरवाह करें कि वुह मर जाय इस रीति से तू दुष्ट को अपने में से दूर करना जिसतें समस्त इसराएल सुनके डरें॥ २२। और यदि किसी ने मार डालने के योग्य पाप किया हो और वुह मारा जाय तू उसे पेड़ पर लटका देवे॥ २३। उस की लोथ रात भर

पेड़ पर लटकी न रहे परंतु तू उसी दिन उसे गाड़ियो क्योंकि जो फांसी दिया जाता है सो ईश्वर का धिक्कारित है इस कारण चाहिये कि तेरी भूमि जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है अशुद्ध न हो जाय॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

तू अपने भाई के बैल और भेड़ को भटकी हुई देख के अपनी आंख उन से मत छिपा परंतु किसी न किसी भांति से उन्हें अपने भाई पास फेर ला॥ २। और यदि तेरा भाई तेरे परोस में न हो अथवा तू उसे पहिचानता न हो तब उसे अपने ही घर ला और वुह तेरे पास रहे जब लों तेरा भाई उस की खोज करे और तू उसे फेर देना॥ ३। और इसी रीति तू उस के गदहे और उस के बस्त्र और सब कुछ से जो तेरे भाई की खोई हुई हो और तू ने पाई है ऐसा ही कर तू अपनी आंख उन से मत छिपाना॥ ४। अपने भाई का गदहा अथवा बैल मार्ग में गिरा हुआ देख के आप को उन से मत छिपा निश्चय उस का सहाय करके उठा देना॥ ५। पुरुष का बस्त्र स्त्री न पहिने और न पुरुष स्त्री का पहिने क्योंकि सब जो ऐसा करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे घिनित हैं॥ ६। यदि पथ में चलते किसी पक्षी का खोता पेड़ पर अथवा भूमि पर तुझे दिखाई देवे चाहे उस में गेदे अथवा अंडे हो और मां गेदों पर अथवा अंडों पर बैठी हुई हो तो तू गेदों को मां समेत मत पकड़ना॥ ७। परंतु माता को छोड़ देना और गेदों को अपने लिये लेना जिसतें तेरा भला होय और तेरा जीवन बढ़ जाय॥ ८। जब तू नया घर बनावे तब अपनी छत पर आड़ के लिये मुंड़ेरा बना ऐसा न हो कि कोई ऊपर से गिरे और तू अपने घर में हत्या का कारण हो॥ ९। अपने दाख की बारी में नाना प्रकार के बीज मत बोना ऐसा न हो कि बीज की भरपूरी जिसे तू ने बोया है और तेरी दाख की बारी का फल अशुद्ध हो जाय॥ १०। तू गदहे को बैल के साथ मत जोतना॥ ११। नाना भांति का बस्त्र जैसा कि ऊन और सूत का मत पहिनियो॥ १२। अपने ओढ़ने की चारों ओर झालर लगाना॥

१३। यदि कोई पत्नी करे और उसे ग्रहण करे और उस्से घिन करे॥ १४। और उस पर कलंक लगावे और कहे कि मैं ने इस स्त्री से ब्याह किया और जब मैं उस पास गया तब मैं ने उसे कुमारी न पाया॥ १५। तब उस कन्या के माता पिता उस के कुमारीपन का चिन्ह लेके उस नगर के फाटक पर प्राचीनों के आगे लावें॥ १६। और उस लड़की का पिता प्राचीनों से कहे कि मैं ने अपनी पुत्री इस पुरुष को ब्याह दिई है अब यह उस्से घिन करता है॥ १७। और देखो वुह उस पर कलंक की बात लगाता है कि मैं ने तेरी पुत्री को कुमारी न पाया तथापि ये मेरी पुत्री की कुमारीपन के चिन्ह हैं और वुह कपड़ा नगर के प्राचीनों के आगे फैलावे॥ १८। तब प्राचीन उस पुरुष को पकड़ के दंड देवे॥ १९। और वे उस्से सौ टुकड़ा चांदी डांड़ लेवें और लड़की के पिता को देवें इस लिये कि उस ने इसराएल की एक कुमारी पर कलंक लगाया और वुह उस की पत्नी बनी रहेगी वुह जीवन भर उसे त्याग न करे॥ २०। परंतु यदि यह बात ठीक ठहरे और लड़की की कुमारीपन का चिन्ह न पाया जाय॥ २१। तब वुह उस लड़की को उस के पिता के घर के द्वार पर निकाल लावे और उस नगर के लोग उस पर पथरवाह करके मार डालें क्योंकि उस ने अपने पिता के घर में छिनाला करके इसराएल में मूर्खता किई इस रीति से तू बुराई को अपने में से दूर करना।

२२। यदि कोई पुरुष बिवाहिता स्त्री से पकड़ा जाय तब वे दोनों व्यभिचारी पुरुष और स्त्री मार डाले जावें इस रीति से तू अपने में से बुराई को दूर करना॥ २३। यदि कुमारी लड़की किसी से बचनदत्त होवे और कोई दूसरा पुरुष उस्से कुकर्म्म करे॥ २४। तब तुम उन दोनों को उस नगर के फाटक पर निकाल लाओ और उन पर पथरवाह करके उन दोनों को मार डालो कन्या को इस लिये कि वुह नगर में होते हुए न चिल्लाई और पुरुष को इस कारण कि उस ने अपने परोसी की पत्नी की पति लिई इस रीति से तू बुराई को अपने में से दूर करना॥ २५। परंतु यदि कोई पुरुष किसी बचनदत्त कन्या को खेत में पावे और पुरुष बरबस उस्से कुकर्म्म करे तो केवल पुरुष जिस ने यह कर्म्म किया

है मार डाला जाय॥ २६। परंतु उस लड़की को कुछ न कर क्योंकि लड़की को घात का पाप नहीं है क्योंकि यह ऐसा है जैसे कोई अपने परोसी पर झलड़ करे और उसे मार डाले॥ २७। क्योंकि उस ने उसे खेत में पाया और वुह बचनदत्त लड़की चिल्लाई और छुड़ाने को कोई न था॥ २८। यदि कोई कुमारी कन्या को जो किसी से बचनदत्त न हो पकड़ के उस्से कुकर्म्म करे और वे पकड़े जावें॥ २९। तब वुह पुरुष जिस ने उस्से कुकर्म्म किया लड़की के पिता को पचास टुकड़ा चांदी देवे और वुह उस की पत्नी होगी इस कारण कि उस ने उसे अपत किया वुह उसे जीवन भर त्याग न करे॥ ३०। कोई अपने पिता की पत्नी को न ले और अपने पिता की नग्नता को न उघारे।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

जिस के अंडकोश में घाव होवे अथवा लिंग कट गया हो वुह परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करे॥ २। जारज अपनी दसवीं पीढ़ी लों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करें॥ ३। और अम्मनी और मोअबी परमेश्वर की मंडली में दसवीं पीढ़ी लों प्रवेश न करें कोई उन में से सनातन लों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करेगा॥ ४। इस कारण कि जब तुम मिस्र से निकले उन्हों ने पंथ में अन्न जल लेके तुम से भेंट न किई इस कारण कि उन्हों ने बऊर के पुत्र बलआम को अरम नहर के फ़तूर से बुलाया जिसतें तुझे स्राप देवे॥ ५। तथापि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे लिये आप को आशीष की संती पलट दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझ पर प्रेम किया॥ ६। जीवन भर सदा लों तू उन का कुशल और भलाई न चाहना॥ ७। और किसी अदूमी से घिन न करना क्योंकि वुह तेरा भाई है और किसी मिस्री से घिन न करना इस कारण कि तू उस के देश में परदेशी था॥ ८। उन की तीसरी पीढ़ी के जो लड़के उत्पन्न हों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश करें॥ ९। जब सेना अपने बैरियों पर चढ़े तब हर एक पाप से आप को बचा रखना॥ १०। यदि तुझ में कोई पुरुष रात्रि की अशुद्धता के कारण अशुद्ध होवे तो वुह छावनी से बाहर निकल जाय और छावनी के भीतर

न आवे॥ ११। परंतु संध्या के समय में जल से स्नान करे और जब सूर्य अस्त हो चुके तब छावनी में आवे॥ १२। और छावनी के बाहर एक स्थान होगा वहां बाहर निकल के जाया करना॥ १३। और तेरे पास हथियार पर एक खंती होय और जब तू बाहर जाके बैठे तो उसे खोदना और मल को ढांप देना॥ १४। इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी छावनी के मध्य में फिरता है कि तुझे बचावे और तेरे बैरियों को तेरे बश में करे सो तेरी छावनी पवित्र रहे न होवे कि वुह तेरे मध्य में किसी बस्तु की अशुद्धता देखे और तुझ से फिर जाय॥ १५। यदि किसी का सेवक अपने स्वामी से भाग के तुझ पास आवे तू उसे उस के स्वामी को मत सैांप॥ १६। वुह तेरे स्थानों में से जहां चाहे तहां तेरे साथ रहे तेरे फाटकों में से किसी एक में जो उसे अच्छा लगे तू उसे क्लेश मत देना॥ १७। इसराएल की बेटियों में बेश्या न हों न इसराएल के बेटों में पुरुषगामी हों॥ १८। तू किसी छिनाल की कमाई अथवा कुत्ते का मोल किसी मनौती में परमेश्वर अपने ईश्वर के मंदिर में मत लाइयो कि ये दोनों परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं॥ १९। तू अपने भाई को बियाज पर ऋण मत देना रोकड़ अनाज अथवा और कोई बस्तु जो बियाज पर दिई जाती है बियाज पर मत देना॥ २०। परदेशी को बियाज पर उधार दे सके परंतु अपने भाई को बियाज पर उधार मत देना जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता है जिस जिस काम में तू हाथ लगावे तुझे आशीष देवे॥ २१। जब तू ने कोई मनौती परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी उसे पूरा करने में बिलम्ब मत कर इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर निश्चय तुझ से उस का लेखा लेगा और तुझ पर पाप ठहरेगा॥ २२। परंतु यदि तू कुछ मनौती ना माने तो अपराधी नहीं॥ २३। जो कुछ तेरे मूंह से निकला अर्थात् बांछा की भेंट जैसा तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी है जिसे तू ने अपने मूंह से प्रण किया है उसे मान और पूरी कर॥ २४। जब तू अपने परोसी के दाख की बारी में जावे तब जितने दाख चाहे अपनी इच्छा भर खा परंतु अपने पात्र में मत रख॥ २५। जब तू अपने परोसी

के अन्न के खेत में जाय तब अपने हाथ से बालें तोड़ सके परंतु अपने भाई का खेत हंसुआ से मत काट॥

२४ चौबीसवां पर्व्व।

जब कोई पुरुष पत्नी से व्याह करे और उस के पीछे ऐसा हो कि वुह उस की दृष्टि में अनुग्रह न पावे इस कारण कि उस ने उस में कुछ अशुद्ध बात पाई तो वुह त्याग पत्र लिखके उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर से बाहर करे॥ २। और जब वुह उस के घर से निकल गई तब वुह दूसरे पुरुष की हो सके॥ ३। और दूसरा पति भी उसे देख न सके और त्याग पत्र लिखके उस के हाथ में देवे और अपने घर से निकाल देवे अथवा दूसरा उसे पत्नी करके मर जाय॥ ४। तो उचित नहीं कि उस का पहिला पति जिस ने उसे निकाल दिया था जब वुह अशुद्ध हो चुकी उसे फिर लेके पत्नी करे क्योंकि वुह परमेश्वर के आगे घिनित है सो उस देश को अशुद्ध मत कर जिसका अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है॥ ५। जब किसी का नया बिवाह होवे तब वुह लड़ाई को न जाय और उस्से कुछ कार्य्य न लिया जाय परंतु वुह एक बरस अपने घर में अवकाश से रहे और अपनी पत्नी को बहलावे॥ ६। कोई मनुष्य किसी की चक्की के ऊपर का अथवा नीचे का पाट बंधक न रक्खे क्योंकि वुह जीवन को बंधक रखता है॥ ७। यदि मनुष्य इसराएल के संतानों में से किसी भाई को चुराते ऊए पकड़ा जाय और उस का बेपार करे अथवा उसे बेचे तो वुह चोर मारा जाय और तू बुराई को अपने में से दूर कर॥ ८। चौकस रह कि कोढ़ की मरी में तू चौकसी से देख और सब जो लावी याजक तुम्हें सिखावे उस की रीति पर चल जैसी मैं ने तुझे आज्ञा किई है वैसा ही करना॥ ९। चेत कर कि जब तुम मिस्र से निकले परमेश्वर तेरे ईश्वर ने मार्ग में मिरयम से क्या किया॥

१०। जब तू अपने भाई को कोई वस्तु मंगनी अथवा उधार देवे तब उस का बंधक लेने को उस के घर में मत पैठ॥ ११। तू बाहर खड़ा रह और उधारनिक आप अपना बंधक तेरे पास बाहर लावेगा॥ १२। और यदि वुह कंगाल होवे तो तू उस के बंधक को रखके

मत लेट रह ॥ १३। किसी भांति से जब सूर्य अस्त होने लगे उस का बंधक उसे फिर देना जिसतें वुह अपने बस्त्र में सोवे और तुझे आशीष देवे सो तुझे परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे धर्म्म होगा॥ १४। ऐसा न हो कि तू कंगाल और दीन बनिहार का सतावे चाहे वुह तेरे भाई में से हो अथवा तेरे परदेशियों में से जो तेरे देश में तेरे फाटकों में रहते हैं॥ १५। तू उस दिन सूर्य अस्त होने से पहिले उस को बनी दे डालना क्योंकि वुह दरिद्र है और उस का मन उसी में है न हो कि परमेश्वर के आगे तुझ पर दोष देवे और तुझ पर पाप ठहरे॥ १६। संतान की संती पितर मारे न जावें न पितरों की संती संतान मारे जावें हर एक अपने ही पाप के कारण मारा जायगा॥ १७। तू परदेशी और अनाथ के बिचार का मत बिगाड़ और बिधवा का कपड़ा बंधक मत रख॥ १८। परंतु चेत कर कि तू मिस्र में बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे वहां से छुड़ाया इस लिये मैं तुझे यह कार्य करने की आज्ञा करता हूं॥ १९। जब तू अपने खेत में कटनी करे और एक गट्ठी खेत में भूलके छूट जाय ता उस के लेने के फिर मत जा वुह परदेशी और अनाथ और बिधवा के लिये रहे जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में तुझे आशीष देवे॥ २०। जब तू अपने जलपाई के वृक्ष का झारे ता फिर के उस की डालियों का मत झाड़ वुह परदेशी और अनाथ और बिधवा के लिये रहे॥ २१। जब तू अपनी बारी के दाख एकट्ठा करे ता उस के पीछे मत बीनना वुह परदेशी और अनाथ और बिधवा के लिये रहे॥ २२। अब चेत कर कि तू मिस्र के देश में बंधुआ था इस लिये मैं तुझे यह कार्य करने का आज्ञा देता हूं॥

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

यदि लोगों में झगड़ा होवे और धर्म्म सभा में आवें कि न्यायी उन का न्याय करे ता वे धर्म्मी का निष्पापी और दुष्ट का पापी ठहरावें॥ २। और यदि वुह दुष्ट पीटे जाने के योग्य होवे ता न्यायी उसे लेटवावे और जैसा उस का अपराध होवे न्यायी अपने आगे ठहराये हुए के समान उसे पिटावे॥ ३। चालीस कोड़े मारें और उस्से बढ़ती नहीं

न होवे कि यदि वुह उस्से बढ़ जाय और इन्हों से बहुत अधिक मारे तब तेरा भाई तेरे आगे तुच्छ समझा जाय॥

४। दांवने के समय में बैल का मूंह मत बांध॥ ५। यदि कोई भाई एकट्ठे रहें और उन में से एक निर्बंश मर जाय तो उस मृतक की पत्नी का बिवाह किसी परदेशी से न किया जाय परंतु उस का दूसरा कुटुंब उसे ग्रहण करे और उसे अपनी पत्नी करे और पति के भाई का व्यवहार उस्से करे॥ ६। और यों होगा कि जो पहिलौंठा वुह जने मृतक के भाई के नाम पर होवे जिसतें उस का नाम इसराएल में से न मिटे॥ ७। और यदि वुह पुरुष कुटुंब की पत्नी को लेने न चाहे तो उस के भाई की पत्नी प्राचीनों पास फाटक पर जाय और कहे कि मेरे पति का भाई इसराएल में अपने भाई के नाम को स्थापने से नाह करता है मेरे पति का भाई मुझे अपनी पत्नी नहीं किया चाहता है॥ ८। तब उस नगर के प्राचीन उस पुरुष को बुलाके उसे समझावें यदि वुह उसी पर खड़ा होवे और कहे कि मैं उसे लेने नहीं चाहता॥ ९। तो उस के भाई की पत्नी प्राचीन के सन्मुख उस के पास आवे और उस के पाओं से जूती खोले और उस के मूंह पर थूक देवे और उत्तर देके कहे कि उस मनुष्य की यही दशा होगी जो अपने भाई के घर को न खड़ा करे॥ १०। और इसराएल में उस का यह नाम रक्खा जायगा कि यह उस जन का घर है जिसका जूता खोला गया॥ ११। जब मनुष्य आपुस में लड़ते हों और एक की पत्नी आवे कि अपने पति को उस के हाथ से जो उसे मार रहा है छोड़ावे और अपना हाथ बढ़ाके उस के गुप्तों को पकड़े॥ १२। तो तू उस का हाथ काट डालना तेरी आंख उस पर दया न करे॥ १३। तू अपने थैले में बड़े छोटे बटखरे न रखना॥ १४। अपने घर में छोटा बड़ा नपुआ मत रखना॥ १५। पूरे और ठीक बटखरे रखना और पूरे और ठीक नपुए रखना जिसतें उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा जीवन बढ़जाय॥ १३। क्योंकि सब जो ऐसा अधर्म करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं॥ १७। चेत कर कि जब तू मिस्र से निकला तब मार्ग में अमालीक़ ने तुझ से क्या किया॥ १८। मार्ग में

तुझ पर क्योंकर चढ़ आया जब तू मूर्छित और थका था तब उस ने तेरे पीछे के सब लोगों को जो दुर्बल पिछरे ज़ए थे मारा और वुह ईश्वर से न डरा॥ १९। इस लिये ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार के लिये तुझे देता है तुझे तेरे चारों ओर के बैरियों से चैन देवे तब तू स्वर्ग के तले से अमालीक़ के नाम को मिटा डालना इसे मत भूलना।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

और जब तू उस देश में प्रवेश करे जिस का अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है और उसे बश में करे और उस में बसे॥ २। तब तू उस देश का जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है समस्त फलों का पहिला जिसे तू भूमि से लेके पज़ंचावेगा एक टोकरे में रखके उस स्थान में लेजा जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने नाम को स्थापन करने के लिये चुनेगा॥ ३। और उन दिनों में जो याजक होगा उस के पास जा और कह कि आज परमेश्वर के आगे प्रण करता ह्लं कि मैं ने उस देश में जिस के बिषय में परमेश्वर ने हमारे पितरों से किरिया खाके हमें देने को कहा था प्रवेश किया॥ ४। और याजक वुह टोकरा तेरे हाथ से लेके परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी के आगे रख देवे॥ ५। तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बिनती करके यों कहना कि सुअरामी जो मरने पर था मेरा पिता था वुह मिस्र में उतरा और उस ने थोड़े लोगों के साथ वहां बास किया फिर वहां एक बज़त बड़ी बलवंती मंडली बनी॥ ६। और मिस्रियों ने हम से बुरा व्यवहार किया और हमें सताया और हम से कठिन सेवा कराई॥ ७। और जब हम ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर के आगे दोहाई दिई तब परमेश्वर ने हमारा शब्द सुना और हमारे परिश्रम और अंधेर को देखा॥ ८। और परमेश्वर सामर्थी हाथ और बढ़ाई ज़ई भुजा और महा आश्चर्य्यित और अद्भुत लच्चणों के हाथ से हमें मिस्र देश से निकाल लाया॥ ९। और हमें इस स्थान में लाया और उस ने हमें यह देश दिया जिस में दूध और मधु बहता है॥ १०। और अब देख मैं इस देश के

पहिले फल जिसे हे परमेश्वर तू ने मुझे दिया लाया हूं सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उसे रख देना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे दंडवत करना॥ ११। और तू और लावी और जो परदेशी तुझ में होवें मिल के हर एक भलाई पर जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे और तेरे घराने पर किई है आनंद करना॥ १२। जब तू तीसरे बरस जो दशांश का बरस है अपने समस्त बढ़ती के दशवें अंश को पूरा किया है लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा को दिया है जिसतें वे तेरे फाटकों के भीतर खावें और तृप्त होवें॥ १३। तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे यों कहना कि मैं अपने घर से पवित्र बस्तें लाया हूं और लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा को तेरी समस्त आज्ञा के समान जो तू ने मुझे किया और मैं ने तेरी आज्ञाओं से बिरुद्ध न किया और न उन्हें भूला॥ १४। और मैं ने उस में से अपने बिपत्ति में न खाया और मैं ने उस में से किसी अशुद्ध बात में न उठाया और न कुछ मृतकों के लिये दे डाला परंतु मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को माना और जो कुछ तू ने मुझे आज्ञा किई है मैं ने उन सभों के समान किया॥ १५। अपने पवित्र निवास स्वर्ग पर से नीचे दृष्टि कर और अपने इसराएल लोगों को और इस देश को जिसे तू ने हमें दिया है आशिष दे जैसी तू ने हमारे पितरों से किरिया खाई एक देश जिस में दूध और मधु बहता है॥ १६। आज के दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे इन बिधिन और बिचारों को पालन करने की आज्ञा दिई इस लिये उन्हें पालन कर और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उन्हें मान॥ १७। तू ने आज के दिन मान लिया है कि परमेश्वर मेरा ईश्वर है और मैं उस के मार्गों पर चलूंगा और उस की बिधिन को और उस की आज्ञाओं को और उस की व्यवस्थों को पालन करूंगा और उस के शब्द को सुनूंगा॥ १८। और परमेश्वर ने भी आज के दिन मान लिया है कि तू उस का निज लोग होवे और तू उस की समस्त आज्ञा को पालन करे॥ १९। और तुझे समस्त जातिगणों से जिन्हें उस ने उत्पन्न किया बड़ाई और नाम और प्रतिष्ठा में अधिक बढ़ावे और कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का पवित्र लोग होवे जैसा उस ने कहा।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब ॥

फिर मूसा ने इसराएल के प्राचीनों के साथ होके लोगों को आज्ञा करके कहा कि उस समस्त आज्ञाओं को जो आज के दिन मैं तुम्हें कहता हूं पालन करो॥ २। और यों होगा कि जिस दिन तुम यरदन पार होके उस देश में पहुंचो जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तब तू अपने लिये बड़े बड़े पत्थर खड़े करना और उन पर गच करना॥ ३। और जब तू पार उतरे तब इस व्यवस्था के समस्त बचन को उन पर लिखना जिसतें तू उस देश में प्रवेश करे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है वुह एक देश है जिसमें दूध और मधु बहता है जैसा परमेश्वर तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे देने को बाचा बांधी है॥ ४। सो जब तुम यरदन के पार उतर जाओ तब तुम उन पत्थरों को जिन के विषय में मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हूं ऐबाल के पहाड़ पर खड़ा करना और उन पर गच फेरना॥ ५। और वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पत्थर की एक बेदी बनाना और उन पर लोहा न उठाना॥ ६। तू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी ढोकों से बनाना और उस पर परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाना॥ ७। और कुशल की भेंट चढ़ाना और वहीं खाना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनंद करना॥ ८। और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के समस्त बचन खोलके लिखना॥ ९। फिर मूसा और लावी याजकों ने समस्त इसराएलियों से कहा कि हे इसराएल चौकस हो और सुन तू आज के दिन परमेश्वर अपने ईश्वर की मंडली हुआ॥ १०। सो इस लिये परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को मान और उस की आज्ञाओं को और उस की बिधिन को पालन कर जो आज के दिन में तुझे कहता हूं॥ ११। और मूसा ने उस दिन मंडली को आज्ञा करके कहा॥ १२। कि जब यरदन पार जाओ तब समऊन और लावी और यहूदाह और इशकार और यूसुफ और बिनयमीन जरिजीम के पहाड़ पर खड़े होके लोगों को आशीष देवें॥ १३। और रूबिन और जद और यसर और ज़बूलून और दान और नफ़ताली ऐबाल के पहाड़ पर स्राप देने के लिये खड़े

होवें॥ १४। और लावी इसराएल के समस्त पुरुषों को बड़े शब्द से कहें॥ १५। कि वुह जन स्रापित है जो खोदके अथवा ढाल के मूर्त्ति बनावे जो परमेश्वर के आगे घिनित है और कार्य कारी के हाथ के बनाये ऊए और गुप्त स्थान में रक्खे तब समस्त मंडली उत्तर देके कहे आमीन॥ १६। जो कोई अपने माता पिता की निंदा करे वुह स्रापित और समस्त लोग बोलें आमीन॥ १७। जो अपने परोसी के सिवाने के चिन्ह को हटावे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ १८। जो अंधे को मार्ग से बहकावे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन॥ १९। जो परदेशी और अनाथ और बिधवा के बिचार को बिगाड़ देवे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ २०। जो अपने पिता की पत्नी के साथ कुकर्म्म करे सो स्रापित क्योंकि उस ने अपने पिता की नग्नता उघारी और समस्त लोग कहें आमीन॥ २१। जो किसी प्रकार के पशु से कुकर्म्म करे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ २२। जो कोई अपनी बहिन अपनी माता अथवा अपने पिता की पुत्री के साथ कुकर्म्म करे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन॥ २३। जो कोई अपने सास के संग कुकर्म्म करे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन॥ २४। जो कोई अपने परोसी को छिपके मारे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन॥ २५। जो कोई घूस लेके किसी निर्दोषी को घात करे सो स्रापित सब लोग कहें आमीन॥ २६। जो कोई इस व्यवस्था के बचन को पालन करने को स्थिर न रहे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

और ऐसा होगा कि यदि तू ध्यान से परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनेगा और चेत में रखके उस की समस्त आज्ञाओं को मानेगा जो आज के दिन में तुझे देता हूं तो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे पृथिवी के समस्त जातिगणों में श्रेष्ठ करेगा॥ २। और यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा तो ये समस्त आशीष तुझ पर होंगे और तुझे घेर लेंगे॥ ३। तू नगर में धन्य और खेत में धन्य होगा॥ ४। तेरे शरीर का और तेरी भूमि का फल और तेरे ढोर का फल

तेरी गाय बैल की बढ़ती और तेरे भेड़ के झुंड धन्य॥ ५। तेरा टोकरा और तेरा कठरा धन्य॥ ६। तेरा बाहर भीतर आना जाना धन्य॥ ७। परमेश्वर तेरे बैरियों को जो तेरे बिरुद्ध उठेंगे तेरे सन्मुख मारेगा वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ आवेंगे और सात मार्गों से तेरे आगे से भाग निकलेंगे॥ ८। परमेश्वर तेरे भंडार पर और तेरे हाथ के समस्त कार्यों पर तेरे लिये आशीष की आज्ञा करेगा और उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तुझे आशीष देगा॥ ९। यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन करे और उस के मार्गों पर चले तो परमेश्वर तुझे अपना पवित्र लोग बनावेगा जैसी उस ने तुझ से किरिया खाई है॥ १०। और पृथिवी के समस्त लोग देखेंगे कि तू परमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है सो वे तुझ से डरते रहेंगे॥ ११। और परमेश्वर तेरी संपत्ति में और तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में और तेरी भूमि के फल में उस देश में जिस के विषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि तुझे देऊंगा तुझे बढ़ती देगा॥ १२। परमेश्वर अपना सुथरा भंडार तेरे आगे खोलेगा कि आकाश तेरे देश पर ऋतु में जल बरसावेगा और तेरे हाथ के समस्त कार्यों में आशीष देगा तू बहुत से जातिगणों को ऋण देगा परंतु तू ऋण न लेगा॥ १३। और परमेश्वर तुझे सिर बनावेगा और पोंछ नहीं और तू केवल ऊंचा होगा और नीचा न होगा आज के दिन जो आज्ञा मैं तुझे करता हूं यदि तू उन आज्ञाओं को सुने और पालन करके माने॥ १४। और तू उन सब बातों में जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं दहिने बायें न मुड़े अरु और देवतों का पीछा करके उन की सेवा न करे॥ १५। परंतु यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द न सुनेगा और ध्यान करके उस की समस्त आज्ञा को और उस की विधिन को जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं न मानेगा तो ये समस्त स्राप तुझ पर पड़ेंगे और तुझे जा लगेंगे॥ १६। तू नगर में स्रापित और खेत में स्रापित॥ १७। तेरा टोकरा और तेरी थाल स्रापित॥ १८। तेरे शरीर का फल और तेरी भूमि का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती और

तेरी भेड़ बकरी के झुंड स्रापित॥ १९। तू अपने बाहर भीतर आने जाने में स्रापित॥ २०। परमेश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्यों में तुझ पर स्राप और झंझट और दपट भेजेगा यहां लों कि तू नाश हो जाय और शीघ्र मिट जाय तेरी करनी की दुष्टता के कारण जिस्से तू ने मुझे त्याग किया॥ २१। परमेश्वर तुझ पर मरी संयुक्त करेगा यहां लों कि तुझे उस देश से मिटा डालेगा जिस का तू अधिकारी होने जाता है॥ २२। परमेश्वर तुझे क्षयी और ज्वर और ज्वाला और अत्यंत ज्वलन और पियास और झुलुस से और लेंढ़ा से मारेगा और वे तुझे रगेद रगेद के नाश करेंगे॥ २३। और तेरे सिर पर का स्वर्ग पीतल और तेरे तले की पृथिवी लोहे की होगी॥ २४। परमेश्वर तेरे देश का बरसना बुकनी और धूल बना डालेगा यह स्वर्ग से तुझ पर उतरेगा जब लों तू नाश न हो जाय॥ २५। परमेश्वर तुझे तेरे बैरियों के आगे मारेगा तू एक मार्ग से उन पर चढ़ जायगा और उन के आगे सात मार्गों से भागेगा और पृथिवी के समस्त राज्यों में निकाला जायगा॥ २६। और तेरी लोथ आकाश के समस्त पक्षियों का और बन के पशुन का भोजन हो जायगी और कोई उन्हें न हांकेगा॥ २७। परमेश्वर तुझे मिस्र के फोड़े और बएसी और दिनाय और खजुली से मारेगा उन से तू कधी चंगा न होगा॥ २८। परमेश्वर तुझे बौड़हापन और अंधापन और मन की घबराहट से मारेगा॥ २९। और जिस रीति से कि अंधा अंधेरे में टटोलता है तू दोपहर दिन को टटोलता फिरेगा और तू अपने मार्गों में भाग्यमान् न होगा और केवल तुझ पर अंधेर ऊआ करेगी और कोई न बचावेगा॥ ३०। तू पत्नी से मंगनी करेगा और दूसरा उसे ग्रहण करेगा तू घर बनावेगा परंतु उस में बास न करेगा तू दाख की बारी लगावेगा परंतु उस का फल न खायेगा॥ ३१। तेरा बैल तेरी आखों के साम्ने मारा जायगा और तू उस्से न खायेगा तेरा गदहा तेरे आगे से बरबस लिया जायगा और तुझे फेरा न जायगा तेरी भेड़ें तेरे बैरियों को दिई जायेंगी और कोई न छोड़ावेगा॥ ३२। तेरे बेटे और तेरी बेटियां और लोगों को दिई जायेंगी और तेरी आखें देखेंगी और दिन भर उन के लिये कुढ़ते कुढ़ते घट जायेंगी और तेरे

हाथ में कुछ बूता न रहेगा॥ ३३। तेरे देश का और तेरे सारे परिश्रम का फल एक जाति जिसे तू नहीं जानता खा जायगी और तुझ पर नित्य केवल अंधेर होगी और पिसा जायगा॥ ३४। यहां लों कि तू आंखों से देखते देखते बौड़हा हो जायगा॥ ३५। परमेश्वर तुझे घुटनों में और टांगों में ऐसे बुरे फोडों से मारेगा कि पाओं के तलवों से लेके चांदी ताईं चंगा न हो सकेगा॥ ३६। परमेश्वर तुझे और तेरे राजा को जिसे तू अपने ऊपर स्थापित करेगा उस जाति के पास ले जायगा जिसे तू और तेरे पितर ने न जाना और वहां तू लकड़ी पत्थर के देवतों की पूजा करेगा॥ ३७। और तू उन सब जातियों में जहां जहां परमेश्वर तुझे पहुंचावेगा एक आश्चर्य और कहावत और ओलाहना होगा॥ ३८। तू खेत में बहुत से बीज बोयेगा और थोड़ा बटोरेगा इस लिये कि उन्हें टिड्डी चाट लेंगी॥ ३९। तू दाख की बारी लगावेगा और उस की सेवा करेगा और मदिरा पीने और दाख एकट्ठा करने न पावेगा क्योंकि उन्हें कीड़े खा जायेंगे॥ ४०। तेरे समस्त सिवानों में जलपाई के पेड़ होंगे परंतु तू चिकनाई लगाने न पावेगा क्योंकि उन का जलपाई झड़ जायगा॥ ४१। तू बेटे बेटियां जन्मावेगा और वे तेरे न होंगे क्योंकि वे बंधुआई में जायेंगे॥ ४२। तेरे समस्त पेड़ को और तेरी भूमि के फल को टिड्डी चाट जायेंगी॥ ४३। परदेशी जो तुझ में होगा तुझ से प्रबल और ऊंचा होगा और तू नीचा हो जायगा॥ ४४। वुह तुझे उधार देगा परंतु तुझ से उधार न लेगा वुह सिर होगा और तू पोंछ होगा॥ ४५। और ये समस्त स्राप तुझ पर आवेंगे और तेरे पीछे पड़ेंगे और तुझे जा लेंगे जब लों तू नाश न होवे इस कारण कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को न सुना कि उस की आज्ञाओं को और उस की बिधिन को पालन करता जैसी उस ने तुझे आज्ञा किई है॥ ४६। और वे तुझ पर और तेरे बंश पर सदा के लिये चिन्ह और आश्चर्य होंगे॥ ४७। इस कारण कि तू ने समस्त बहुताई के लिये मन की आनंदता और मगनता से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा न किई॥ ४८। इस लिये तू भूख में और पियास में और नग्नता में और दरिद्रता में अपने बैरियों की सेवा करेगा जिन्हें परमेश्वर

तुझ पर भेजेगा और वुह तेरे कंधे पर लोहे का जुआ डालेगा जब लों तुझे नाश न कर लेवे॥ ४९। परमेश्वर दूर से एक जाति को और पृथिवी के अंत सिवाने से एक ऐसी जाति जैसा गिद्ध उड़ता है तुझ पर चढ़ा लावेगा एक जाति जिस की भाषा तू न समझेगा॥ ५०। भयंकर रूप की जाति जो न बूढ़ों को समझेगी न तरुण पर दया करेगी॥ ५१। और वुह तेरे ढोर का फल और तेरे देश का फल खा जायगी जब लों तू नाश न हो जाय जो तेरे लिये अन्न और दाख रस अथवा तेल अथवा तेरी गाय बैल की बढ़ती अथवा भेड़ की झुंड न छोड़ेगी जब लों तुझे नाश न करे॥ ५२। और वे तुझे तेरे हर एक फाटकों में आ घेरेंगे यहां लों कि तेरी ऊंची और दृढ़ भीतें जिन पर तू ने भरोसा किया था गिर जायेंगी और वे तुझे उस समस्त देश में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है तेरे हर एक फाटकों में आ घेरेंगे॥ ५३। सकेती और कष्ट में जो तेरे बैरियों के कारण से तुझ पर पड़ेंगे तू अपने देह का फल और अपने बेटे बेटियों का मांस खायेगा जिन्हें परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है॥ ५४। उस जन की आंखें जो तुम्में कोमल और अति सुकुआर होगा अपने भाई और अपनी गोद की पत्नी और अपने बचे हुए लड़कों से बुरी हो जायेंगी॥ ५५। यहां लों कि वुह अपने बालक के मांस में से जिसे वुह खायगा उन में से किसी को कुछ न देगा इस कारण कि उस सकेती और क्लेश में जो तेरे बैरियों के कारण से तेरे समस्त फाटकों में तुझ पर होंगे उस के लिये कुछ न बचेगा॥ ५६। तुम्में कोमल और सुकुआर स्त्री जो कोमलता और सुकुआरी के मारे अपने पांओं को भूमि पर न धरती थी अपने गोद के पति और अपने बेटा बेटी की ओर से उस की आंखें बुरी हो जायेंगी॥ ५७। और अपने नन्हे बालक से जो उस्से उत्पन्न होगा और अपने लड़कों से जिन्हें वुह जनेगी क्योंकि वुह सकेती के कारण से जो तेरे बैरी तेरे फाटकों में तुझ पर लावेंगे छिपके उन्हें खायगी॥ ५८। यदि तू पालन करके इस व्यवस्था के समस्त बचन पर जो इस पुस्तक में लिखे हैं न चलेगा जिसतें तू उस के तेज मय और भयंकर नाम से जो परमेश्वर तेरा ईश्वर है न डरे॥ ५९। तब परमेश्वर तेरी मरियों को

ग्रौर तेरे बंश की मरियों को ग्रर्थात् बड़ी बड़ी मरियों को जो बहुत दिनताईं रहेंगी ग्रौर बड़े बड़े रोगों को जो बहुत दिन लों रहेंगे ग्राश्चर्यित बनावेगा॥ ६०। ग्रौर मिस्र के सारे रोग जिन से तू डरता था तुझ पर लावेगा ग्रौर वे सब तुझ पर चिपकेंगे॥ ६१। ग्रौर हर एक रोग ग्रौर हर एक मरी जो इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखी है परमेश्वर तुझ पर पहुंचावेगा जब लों तू नाश न होवे॥ ६२। ग्रौर जैसा कि तुम लोग स्वर्ग के तारों की नाईं थे गिनती में थोड़े से रह जाग्रोगे इस कारण कि तू ने परमेश्वर ग्रपने ईश्वर के शब्द को न माना॥ ६३। ग्रौर ऐसा होगा कि जिस रीति से परमेश्वर ने तुम पर ग्रानंद होके तुम्हारे साथ भलाई करके तुम्हें बढ़ाया उसी रीति से परमेश्वर तुम्हें नाश करके मिटा देने में ग्रानंदित होगा ग्रौर तू उस देश से उखाड़ा जायगा जिस का ग्रधिकारी तू होने जाता है॥ ६४। ग्रौर परमेश्वर तुझे समस्त जातियों में पृथिवी के इस खूंट से उस खूंट लों छिन्न भिन्न करेगा ग्रौर वहां तू ग्रौर देवतों की जो काठ ग्रौर पत्थर हैं जिसे तू ग्रौर तेरे पितर नहीं जानते थे पूजा करेगा॥ ६५। ग्रौर उन जातिगणों में तुझ को चैन न मिलेगा ग्रौर न तेरे पांग्रों के तलवों को बिश्राम मिलेगा परंतु परमेश्वर वहां तुझे कंपित मन ग्रौर धुंधली ग्रांखें ग्रौर मन की उदासी देगा॥ ६६। ग्रौर तेरा जीवन तेरे ग्रागे दुबिधा में टंगा रहेगा ग्रौर तू रात दिन डरता रहेगा ग्रौर तेरे जीवन का भरोसा न रहेगा॥ ६७। ग्रपने मन के डर से जिस्से तू डरेगा ग्रौर उन बस्तुन से जिन्हें तेरी ग्रांखें देखेंगी बिहान को तू कहेगा कि हाय कब सांझ होगी ग्रौर सांझ को कि हाय कब बिहान होगा॥ ६८। ग्रौर परमेश्वर तुझे उस मार्ग से जिस के बिषय में मैं ने तुझे कहा कि तू उसे फिर न देखेगा तुझे जहाज़ों में मिस्र को फेर लावेगा ग्रौर तुम वहां दासों ग्रौर दासियों की नाईं ग्रपने बैरियों के हाथ बेचे जाग्रोगे ग्रौर कोई मोल न लेगा॥ ६९। ये उस नियम की बातें हैं जो परमेश्वर ने मूसा को ग्राज्ञा किई कि मोग्रब की भूमि में इसराएल के संतानों से करे उस नियम को छोड़ जो उस ने उन से हरिब में किया था॥

२९ उन्तीसवां पर्ब्ब ।

और मूसा ने समस्त इसराएल को बुला के उन्हें कहा जो कुछ कि परमेश्वर ने तुम्हारी आंखों के आगे मिस्र के देश में फ़िरऊन और उस के समस्त सेवकों और उस के समस्त देश से किया तुम ने देखा है॥ २। वे बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा है वे लक्षण और बड़े बड़े आश्चर्य॥ ३। तथापि परमेश्वर ने तुम्हें समझने का मन और देखने की आंखें और सुन्ने के कान आज लों न दिये॥ ४। और मैं तुम्हें चालीस बरस बन में लिये फिरा तुम पर तुम्हारे कपड़े पुराने न हुए न तुम्हारे जूते तुम्हारे पांओं में पुराने हुए॥ ५। तुम ने रोटी न खाई और तुम ने मदिरा अथवा मद्य न पिया जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥ ६। और जब तुम इस स्थान में आये तब हसबून का राजा सैहून और बसन का राजा ऊज संग्राम के लिये तुम पर चढ़ आये और हम ने उन्हें मारा॥ ७। और हम ने उन का देश ले लिया और रूबीनियों और जदियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को अधिकार में दिया॥ ८। सो तुम इस नियम की बातों को पालन करो और उन्हें मानों जिसतें अपने सब कामों में भाग्यमान् होओ॥ ९। आज के दिन तुम और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन और तुम्हारे करोड़े और समस्त इसराएल के लोग॥ १०। तुम्हारे बालक तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारे परदेशी जो तुम्हारी छावनी में रहते हैं तुम्हारे लकड़हारे से लेके बनिहार लों परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खड़े हो॥ ११। जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर के उस नियम और किरिया में प्रवेश करे जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से आज के दिन करता है॥ १२। जिसतें वुह आज के दिन तुझे अपने लिये एक लोग स्थिर करे कि वुह तेरा ईश्वर होवे जैसा उस ने तुझे कहा और जैसा उस ने तेरे पितर अबिरहाम और इज़हाक़ यअ़क़ूब से किरिया खाई है॥ १३। सो मैं तुम्हारे ही साथ केवल यह नियम और किरिया नहीं करता॥ १४। परंतु उस के साथ भी जो आज के दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के आगे

हमारे संग खड़ा है और उस के साथ भी जो आज के दिन हमारे साथ नहीं है॥ १५। क्योंकि तुम जानते हो कि हम मिस्र में क्योंकर बास करते थे और क्योंकर उन लोगों के मध्य में से जिन में तुम रहते थे निकल गये॥ १६। और तुम ने उन की लकड़ी और पत्थर और चांदी और सोने की घिनित मूर्त्तों को देखा है॥ १७। ऐसा न हो कि तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री अथवा घराना अथवा गोष्ठी ऐसी हो कि जिस का मन आज के दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर से फिर जाय और इन जातियों की देवतों की सेवा करे ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच ऐसी जड़ हो जो बिष की नाईं कड़ुआ और नागदौना उपजावे॥ १८। और यों होवे कि जब वुह इस स्राप की बातें सुने तो वुह आप को अपने मन में आशीष देके कहे कि मैं चैन करूंगा यद्यपि अपने मन की भावना में चलूं कि पियास में मतवालपन मिलाऊं॥ १९। परमेश्वर उसे न छोड़ेगा परंतु उसी समय उस जन पर परमेश्वर का क्रोध भड़केगा और समस्त स्राप जो इस पुस्तक में लिखे हैं उस पर पड़ेंगे और परमेश्वर उस के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा॥ २०। और परमेश्वर बाचा के समस्त स्रापों के समान जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखे हैं इसराएल की सारी गोष्ठियों में से बुराई के लिये उस को अलग करेगा॥ २१। यहां लों कि अवैया पीढ़ी जो तुम्हारे बालकों में से उठेगी और परदेशी जो दूर देश से आवेंगे उस देश की मरी और रोगों को जो परमेश्वर ने उस पर धरे हैं देखके कहेंगे॥ २२। कि यह सारा देश गंधक और लोन से जल गया कि न बोया जाता न उपजता और न कुछ घास उगती है जैसे कि सदूम और अमूरः और अदमः और ज़िबी-आन उलट गये परमेश्वर ने उसे भी अपनी रिस से और अपने कोप से उलट दिया॥ २३। अर्थात् समस्त जातिगण कहेंगे कि परमेश्वर ने इस देश पर ऐसा क्यों किया और इस महा कोप के तपन का क्या कारण है॥ २४। तब लोग कहेंगे इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर की उस बाचा को त्याग किया जो मिस्र देश से निकालने के समय उन से बांधी थी॥ २५। क्योंकि उन्हों ने जाके आन आन देवतों की सेवा और उन्हें दंडवत किई उन देवतों को जिन्हें वे न जानते थे और जिन्हें

उस ने उन्हें न दिया था॥ २६। सो परमेश्वर का क्रोध इस देश पर भड़का कि उस ने समस्त स्राप जो इस पुस्तक में लिखे हैं इस पर प्रगट किये॥ २७। और परमेश्वर ने रिस और कोप और बड़े जलजलाहट से उन के देश से उन्हें उखाड़ा है और दूसरे देश पर आज के दिन की नाईं उन्हें डाल दिया॥ २८। गुप्त बातें परमेश्वर हमारे ईश्वर की हैं परंतु प्रकाशित हमारे और हमारे वंश के लिये सदालों हैं जिसतें हम इस व्यवस्था के समस्त वचन को पालें॥

३० तीसवां पर्ब्ब।

और यों होगा कि जब यह सब आशीष और स्राप जिन्हें मैं ने तेरे आगे रक्खा तुझ पर पड़ेगा और तू उन सब लोगों में जहां जहां परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हांकेगा उन्हें चेत करेगा॥ २। और तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस की उन आज्ञाओं के समान जो आज मैं तुझे कहता हूं अपने लड़कों समेत अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से उसे पालन करेगा॥ ३। तब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी बंधुआई को पलट डालेगा और तुझे उन सब लोगों में से जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छिन्न भिन्न किया है दयाल होके फेरेगा और एकट्ठे करेगा॥ ४। यदि कोई तुझ में आकाश के अंत लों हांका गया होगा तो परमेश्वर तेरा ईश्वर वहां से एकट्ठा करके फेर लावेगा॥ ५। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जिस के तेरे पितर अधिकारी थे और तू उस का अधिकारी होगा और वुह तुझ से भलाई करेगा और तेरे पितरों से अधिक तुझे बढ़ावेगा॥ ६। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे और तेरे वंश के मन का ख़तनः करेगा कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से प्रेम करे जिसतें तू जीता रहे॥ ७। और परमेश्वर तेरा ईश्वर ये समस्त स्राप तेरे बैरियों पर और उन पर डालेगा जो तेरा डाह रखते हैं जिन्हों ने तुझे सताया॥ ८॥ और तू फिर आवेगा और परमेश्वर के शब्द को मानेगा और उस की उन आज्ञाओं को जो आज के दिन मैं तुझे करता हूं पालन करेगा॥ ९। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के हर एक

काम में और तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में और तेरी भूमि के फल में भलाई के लिये तुझे अधिक करेगा क्योंकि परमेश्वर आनन्दित होके तुझ से फिर भलाई करेगा जैसा वुह तेरे पितरों से आनन्दित था॥ १०। यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा जिसतें उस की आज्ञा और बिधि को जो व्यवस्था की इस पुस्तक में लिखी हुई है स्मरण करे और यदि तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरे॥ ११। क्योंकि यह आज्ञा जो आज मैं तुझे करता हूं वुह तुझ से न छिपी है न दूर है॥ १२। वुह स्वर्ग पर नहीं जो तू कहे कि हमारे लिये कौन स्वर्ग पर जायगा और हमारे पास उसे लावे जिसतें हम उसे सुनें और पालन करें॥ १३। और न समुद्र पार है जो तू कहे कौन हमारे लिये समुद्र पार जायगा और उसे हम पास लावे कि हम उसे सुनें और उसे पालन करें॥ १४। परंतु बचन तेरे पास ही तेरे मूंह में और तेरे अंतःकरण में है जिसतें तू उसे पालन करे॥ १५। देख मैं ने आज जीवन और भलाई को और मृत्यु और बुराई को तेरे आगे रक्खा है॥ १६। सो मैं तुझे परमेश्वर अपने ईश्वर पर प्रेम करने को और उस के मार्गों पर चलने को और उस की आज्ञाओं और बिधिन और उस के बिचारों को पालन करने को आज तुझे आज्ञा करता हूं जिसतें तू जीये और बढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने जाता है तुझे आशीष देवे॥ १७। परंतु यदि तेरा मन फिर जाय यहां लों कि तू न सुने परंतु फुसलाया जाय और और देवतों को दंडवत करे और उन की सेवा करे॥ १८। तो आज मैं तुम्हें सुना रखता हूं कि तुम निश्चय नाश हो जाओगे और उस देश पर जिस के अधिकारी होने यरदन पार जाते हो तुम्हारी बय अधिक न होगी॥ १९। मैं आज स्वर्ग और पृथिवी को तुम्हारे ऊपर साक्षी लाता हूं कि मैं ने जीवन और मृत्यु और आशीष और स्राप तुम्हारे साम्ने रक्खे सो तुम जीवन को चुनो जिसतें तुम और तुम्हारा बंश दोनों जीवें॥ २०। कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करे और उस के शब्द को माने और उस्से लवलीन रहे क्योंकि वही तेरा जीवन और तेरे बय की अधिकाई है जिसतें तू उस

देश में बास करे जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे पितर अबिरहाम और इज़हाक़ और यअ़क़ूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तुम्हें देऊंगा॥

३१ एकतीसवां पर्व्व।

तब मूसा ने जाके ये बातें समस्त इसराएल से कहीं॥ २। और उस ने उन्हें कहा कि मैं तो आज एक सौ बीस बरस का हूं आगे मैं भीतर बाहर जा नहीं सक्ता और परमेश्वर ने भी मुझे कहा है कि तू यरदन पार न जायगा॥ ३। परमेश्वर तेरा ईश्वर ही तेरे आगे आगे पार जायगा और वही इन जातिगणों को तेरे आगे नाश करेगा और तू उन्हें बश में करेगा और यहूसूअ़ परमेश्वर के कहने के समान तेरे आगे आगे पार जायगा॥ ४। और परमेश्वर उन से वैसा ही करेगा जैसा उस ने अमूरियों के राजा सीहून और ऊ़ज से और उन की भूमि से किया जिन्हें उस ने नाश किया॥ ५। और परमेश्वर उन्हें तुम्हारे आगे सौंप देगा जिसतें तुम उन से सब आज्ञाओं के समान जो मैं ने तुम्हें कहीं करो॥ ६। पोढ़ होओ और साहस करो भय न करो और उन से मत डरो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे साथ जाता है वुह तुझे न छोड़ेगा न त्याग करेगा॥ ७। फिर मूसा ने यहूसूअ़ को बुलाया और सारे इसराएल के आगे उसे कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि तू इन लोगों के साथ उस देश में प्रवेश करेगा जिस के देने के बिषय में परमेश्वर ने उन के पितरों से किरिया खाई और तू उन्हें उस का अधिकारी करेगा। ८॥ और परमेश्वर तेरे आगे आगे जाता है वुह तेरे साथ रहेगा वुह तुझे न छोड़ेगा न त्याग करेगा सो तू भय मत कर और मत डर॥ ९। और मूसा ने इस व्यवस्था को लिखा और लावी के बेटे याजकों को जो परमेश्वर के साक्षी की मंजूषा को उठाते थे और इसराएल के समस्त प्राचीनों को सौंप दिया॥ १०। और मूसा उन्हें यह कहके बोला कि हर एक सात बरस के अंत में छुटकारे के ठहराये हुए समय में तंबू के पर्व में॥ ११। जब कि सारे इसराएल परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान पर जिसे वुह चुनेगा जाया करें तब तू इस व्यवस्था को पढ़के समस्त इसराएल को सुनाया कर॥ १२। समस्त पुरुषों और स्त्रियों को और

लड़कों और अपने परदेशी को जो तेरे फाटकों के भीतर हों एकट्ठे कीजियो कि वे सुनें और सीखें और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर से डरें और इस व्यवस्था के समस्त बचन को पालन करें और मानें॥ १३। और उन के लड़के जिन्हों ने ये बातें नहीं जानी सुनें और जब लों तुम उस देश में जिस के अधिकारी होने को यरदन पार जाते हो रहो परमेश्वर अपने ईश्वर से डरा करो॥ १४। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तेरे दिन आ पहुंचे हैं तुझे मरना है सो तू यहूसूअ को बुला और मंडली के तंबू में खड़े होओ जिसतें मैं उसे आज्ञा करूं सो मूसा और यहूसूअ चले और मंडली के तंबू में खड़े हुए॥ १५। और परमेश्वर मेघ के खंभों में होके तंबू में प्रगट हुआ और मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर आके ठहरा।

१६। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा और इस मंडली के लोग उठेंगे और उस देश पर जहां ये बसने जाते हैं कुकर्म्मी होके वहां अन्यदेशी देवतों का पीछा करेंगे मुझे छोड़ देंगे और उस बाचा को जो मैं ने उन के साथ बांधी है तोड़ेंगे॥ १७। तब मेरा क्रोध उन पर भड़केगा और मैं उन्हें त्याग करूंगा और मैं उन से अपना मूंह छिपाऊंगा और बिपत्ति उन्हें पकड़ेगी तब वे उस दिन कहेंगे कि क्या हम पर ये बिपत्ति इस लिये नहीं पड़ीं कि हमारा ईश्वर हम्में नहीं॥ १८। और उन सब बुराइयों के कारण से जो वे करेंगे और इस लिये कि उपरी देवतों की ओर लवलीन होंगे मैं निश्चय उस दिन अपना मूंह छिपाऊंगा॥ १९। सो तुम यह गीत अपने लिये लिखो और उसे इसराएल के संतानों को सिखाओ और उन्हें पढ़ाओ जिसतें यह गीत इसराएल के संतानों पर मेरी साक्षी रहे॥ २०। इस लिये कि जब मैं उन्हें उस देश में पहुंचाऊंगा जिस के कारण मैं ने उन के पितरों से किरिया खाई जिस में दूध और मधु बहता है और वे उसे खायेंगे और तृप्त होवेंगे और मोटे हो जायेंगे तब वे और देवतों की ओर फिर जायेंगे और उन की सेवा करेंगे और मुझे खिजावेंगे और मुझ से बाचा तोड़ देंगे॥ २१। और यों होगा कि जब बहुत कष्ट और बिपत्ति उन पर पड़ेंगी तब यही गीत उन पर

साक्षी देगी क्योंकि वुह उन के बंश के मूंह से बिसर न जायगी क्योंकि मैं उन के बिचारों को जानता हूं जो वे आज करते हैं उस्से आगे कि मैं उस देश में जिस के कारण मैं ने किरिया खाई है उन्हें पहुंचाऊं॥ २२। सो उसी दिन मूसा ने यह गीत लिखा और इसराएल के संतान को सिखाया॥ २३। और उस ने नून के बेटे यहूसूअ को आज्ञा किई और कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि इसराएल के संतान को उस देश में जिस के कारण मैं ने उन से किरिया खाई है तू ले जायगा और मैं तेरे साथ होऊंगा॥ २४। और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस व्यवस्था की बातों को पुस्तक में लिख चुका और उन्हें समाप्त किया॥ २५। तब मूसा ने लावियों को जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को उठाते थे कहा॥ २६। कि इस व्यवस्था की पुस्तक को लेके परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा की मंजूषा के अलंग में रक्खो जिसतें यह तुम्हारी साक्षी के लिये वहां रहे॥ २७। क्योंकि मैं तेरे झगड़े और तेरे गले की कठोरता को जानता हूं देख अब लों मैं जीता और आज के दिन लों तुम्हारे साथ हूं और तुम ईश्वर से फिर गये हो तुम मेरे मरने के पीछे कितना अधिक करोगे॥ २८। अपनी गोष्ठियों के समस्त प्राचीनों को और प्रधानों को मुझ पास एकट्ठा करो जिसतें मैं ये बातें उन्हें सुनाऊं और स्वर्ग और पृथिवी को उन पर साक्षी में लाऊं॥ २९। क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे मरने के पीछे तुम आप को नष्ट करोगे और उस मार्ग से जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है फिर जाओगे और पिछले दिनों में तुम पर बिपत्ति पड़ेगी क्योंकि तुम परमेश्वर के आगे बुराई करोगे कि अपने हाथ के कार्यों से उसे खिझाओगे॥ ३०। सो मूसा ने इस गीत के बचन को इसराएल की समस्त मंडली को कह सुना के पूरा किया।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

हे स्वर्गो कान धरो और मैं कहूंगा और हे पृथिवी मेरे मूंह की बातें सुन॥ २। मेरी शिक्षा मेंह की नाईं टपकेगी और मेरी बातें ओस के समान चूयंगी जैसे सागपात पर फूही पड़े और घास पर झड़ियां॥ ३। कि मैं परमेश्वर के नाम को प्रगट करता हूं तुम हमारे ईश्वर के नाम की

महिमा करो॥ ४। वुह पहाड़ है उस का कार्य सिद्ध है क्योंकि उस के सब मार्ग न्याय के हैं वुह सच्चा ईश्वर है और बुराई से रहित वुह आप्त और सच्चा है॥ ५॥ उन्हों ने आप को नष्ट किया वे उस के बालक नहीं वे अपने चिह्न हैं वे हठीली और टेढ़ी पीढ़ी हैं॥ ६। हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो क्या तुम परमेश्वर को यों पलटा देते हो क्या वुह तेरा पिता नहीं है जिस ने तुझे मोल लिया क्या उस ने तुझे नहीं सिर्जा और तुझे स्थिर न किया॥ ७। अगले दिनों को चेत करो और पीढ़ी पर पीढ़ी के बरसों को सोचो अपने पिता से पूछ और वुह तुझे बतावेगा और अपने प्राचीनों से और वे तुझ से कहेंगे॥ ८। जब अति महान ने जातिगणों के लिये अधिकार बांटा जब उस ने आदम के बेटों को अलग किया इसराएल के संतानों की गिनती के समान उस ने लोगों का सिवाना ठहराया॥ ९। क्योंकि परमेश्वर का भाग उस के लोग हैं यअकूब उस के अधिकार की रस्सी है॥ १०। उस ने उसे उजाड़ देश और भयानक अरण्य में पाया उस ने उसे घेर लिया और उस ने उसे शिक्षा दिई उस ने अपनी आंख की पुतली की नाईं उस की रक्षा किई॥ ११। जैसा गिद्ध अपने खोते को हिलाता है और अपने बच्चों पर फरफराता है और अपने पंखों को फैलाके उन्हें लेता है और अपने पंखों पर उन्हें उठाता है॥ १२। वैसा ही केवल परमेश्वर ने उस की अगुआई किई और उस के साथ कोई उपरी देव न था॥ १३। उस ने उसे पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर बढ़ाया जिसतें वुह खेतों की बढ़ती खावे और उस ने उसे चटान में से मधु और चकमक के चटान में से तेल चुसाया॥ १४। और गाय के मखन और भेड़ के दूध और मेम्नों की चिकनाई और बसन देश के पाले हुए मेढ़ों और बकरों के गुर्दों गोहूं की चिकनाई सहित तू ने दाख का निराला रस पीया॥ १५। परंतु यशूरन मोटा हुआ और लतिआने लगा तू मोटा हुआ है और फैल गया है तू ढंप गया है तब उस ने ईश्वर अपने परमेश्वर को छोड़ दिया और अपनी मुक्ति के पहाड़ को तुच्छ जाना॥ १६। उन्हों ने उपरी देवतों के कारण उसे झाल दिया और उन्हों ने उसे घिनितों से रिस दिलाया॥ १७। उन्हों ने पिशाचों के लिये बलिदान चढ़ाये जो ईश्वर न थे परंतु उन देवतों के लिये जिन को वे न

पहिच नते थे वे देवता जो थोड़े दिनों से प्रगट ऊए जिन से तुम्हारे पितर न डरते थे॥ १८। तू उस पहाड़ से अचेत है जिस ने तुझे उत्पन्न किया और उस ईश्वर को भूल गया जिस ने तेरा डौल किया॥ १९। और जब परमेश्वर ने देखा उस ने घिन किया इस कारण कि उस के बेटा बेटी ने उसे रिस दिलाया॥ २०। और उस ने कहा कि मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा जिसतें मैं उन का अंत देखूं क्योंकि वे टेढ़ी पीढ़ी हैं और ऐसे लड़के जिन में विश्वास नहीं॥ २१। उन्हों ने अनीश्वर से मुझे ज्वलन दिलाया उन्हों ने व्यर्थों से मुझे रिस दिलाया सो मैं भी उन्हें अलोग से झल दिलाऊंगा और एक मूर्ख जाति से उन्हें रिस दिलाऊंगा॥ २२। क्योंकि मेरे रिस में आग भड़की है और अत्यंत नरक लों जली है और पृथिवी को उस की बढ़ती समेत भस्म कर गई और पहाड़ों की नेओं को जला दिया है॥ २३। मैं उन पर बिपत्ति की ढेर करूंगा और उन पर अपने बाणों को घटाऊंगा॥ २४। वे भूख से जल जायेंगे और भस्मक तपन और कड़वे बिनाश से भक्षण किये जायेंगे मैं पशुओं के दांतों को और पृथिवी के बिषधर सर्पों को छोड़ूंगा॥ २५। बाहर में तलवार और कोठरियों से भय तरुण मनुष्य को और कुआंरी को भी दूध पीवक को भी पुरनियां सहित नाश करेंगे॥ २६। मैं ने कहा कि मैं उन्हें कोने कोने छिन्न भिन्न करता मैं मनुष्यों में से उस का नाम मिटा देता॥ २७। यदि मैं शत्रु के क्रोध पर दृष्टि न करता न हो कि उन के बैरी घमंड करें और न हो कि वे कहें कि हमारा ही हाथ प्रबल ऊआ परमेश्वर ने ये सब नहीं किये॥ २८। क्योंकि वे मन्त्र रहित जाति हैं और उन में बुद्धि नहीं॥ २९। हाय कि वे बुद्धिमान होके इसे समझते और अपने अन्तकाल की चिन्ता करते॥ ३०। तो कैसे एक सहस्र को खेदता और दो दस सहस्र को भगाते यदि उन का पहाड़ उन्हें न बेंच डाले होता और परमेश्वर उन्हें बंद किये न होता॥ ३१। क्योंकि उन का पहाड़ हमारे पहाड़ के समान नहीं हां हमारे बैरी आप न्यायी हैं॥ ३२। क्योंकि उन का दाख सदूम के दाख में के और अमरः के खेतों का है उन के अङ्गूर पित्त के अंगूर हैं उन के गुच्छे कड़वे हैं॥ ३३। उन की मदिरा नागों का बिष है और सपोंलों

का कठिन विष॥ ३४। क्या यह मुझ पास धरा नहीं और मेरे भंडारों में बंद नहीं॥ ३५। प्रतिफल और दण्ड देना मेरा है उन का पांव समय पर फिसलेगा क्योंकि उन की विपत्ति का दिन आ पहुंचा और उन पर जो वस्तु आती है से शीघ्र करती है॥ ३६। जब वुह देखेगा कि सामर्थ्य जाती रही और कोई बन्द अथवा छूटा नहीं है तब परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा और अपने सेवकों के लिये पछतावेगा॥ ३७। और कहेगा कि उन के देवगण पहाड़ जिन का उन्हें भरोसा था क्या हुये॥ ३८। जिन्हों ने उन के बलिदानों की चिकनाई खाई और पीने की भेंट की मदिरा पीई वे उठें और तुम्हारा बचाव करें और सहायक होवें॥ ३९। अब देखो कि मैं मैं ही हूं और कोई ईश्वर मेरा साथी नहीं मैं ही मारता हूं और मैं ही जिलाता हूं मैं घायल करता हूं और मैं ही चंगा करता हूं ऐसा कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ावे॥ ४०। क्योंकि मैं अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाता हूं और कहता हूं कि मैं सनातन जीवता हूं॥ ४१ यदि मैं अपना चमकता हुआ खड्ग चोखा करूं और मेरा हाथ न्याय धारण करे तो मैं अपने शत्रुन से प्रतिफल लूंगा और जो मुझ से बैर रखते हैं उन्हें पलटा दूंगा॥ ४२। मारे हुओं को और बंधुओं के लोहू से और शत्रु पर पलटा लेने के आरंभ से मैं अपने बाणों को रुधिर से उन्मत्त करूंगा और मेरी तलवार मांस खायगी॥ ४३। हे जातिगणों उस के लोगों के साथ आनन्द से गाओ क्योंकि वुह अपने सेवकों के लोहू का पलटा और अपने शत्रुन से प्रतिफल लेगा अपने देश और अपने लोगों पर दयाल होगा॥ ४४। तब मूसा और नून के बेटे यहूसूअ ने आके इस गीत की सारी बातें लोगों को कह सुनाईं॥ ४५। और जब मूसा ये सारी बातें इसराएल के सन्तानों को कह चुका॥ ४६। तब उस ने उन्हें कहा कि इन सारी बातों से जिन की मैं आज के दिन तुम्हों में साक्षी देता हूं अपने मन लगाओ और अपने बालकों को कहो कि पालन करके इस व्यवस्था की सारी बातों को मानें॥ ४७। क्योंकि वुह तुम्हारे लिये वृथा नहीं इस कारण कि तुम्हारा जीवन है और इसी बात के लिये इस देश में जिस के अधिकारी होने तुम यरदन पार जाते हो अपनी आयुर्दाय बढ़ाओगे॥ ४८। और

परमेश्वर ने उसी दिन मूसा से यह बचन कहा॥ ४९। अबरीम के इस पर्बत पर नबू पहाड़ी पर मोअब के देश में जो अरीहू के साम्ने है चढ़ जा और कनआन देश को देख जिसे मैं इसराएल के सन्तान को अधिकार में देता हूं॥ ५०। और उसी पहाड़ी पर जिस पर तू जाता है मर जा और अपने लोगों में बटुर जा जैसे तेरा भाई हारून हूर पहाड़ पर मर गया और अपने लोगों में बटुर गया॥ ५१। इस कारण कि तुम्हों ने इसराएल के सन्तान के मध्य कादिश के झगड़े के पानी पर सीन के अरण्य में मेरा अपराध किया क्योंकि तुम ने इसराएल के सन्तान के मध्य में मुझे पवित्र न किया॥ ५२। तथापि तू आगे के देश को देख लेगा परंतु जो देश मैं इसराएल के सन्तानों को देता हूं तू उस में न जायगा॥

३३ तेतींसवां पर्ब्ब।

और यह वुह आशीष है जिस्से ईश्वर के जन मूसा ने अपने मरने से आगे इसराएल के सन्तानों को आशिष दिया॥ २। और कहा कि परमेश्वर सीना से आया और शईर से प्रगट हुआ और फ़ारान पहाड़ से उन पर चमक उठा और वुह दस सहस्र सिद्धों के साथ आया उस के दहिने हाथ से एक आग की व्यवस्था उन के लिये निकली॥ ३। हां उस ने लोगों से प्रेम किया उस के समस्त सिद्ध तेरे हाथ में और वे तेरे चरणों के पास बैठ गये और तेरी बातों से पावेंगे॥ ४। मूसा ने हम से अर्थात् यअ़क़ूब की मंडली के अधिकार के लिये एक व्यवस्था कही॥ ५। और जब लोगों के प्रधान इसराएल की गोष्ठी एकट्ठे थे वुह यशरून का राजा था॥ ६। रूबिन जीये और न मरे और उस के जन थोड़े न होंं॥ ७। और यहूदाह के लिये उस ने कहा कि हे परमेश्वर यहूदाह का शब्द सुन और उसे उस के लोगों में पहुंचा उस के हाथ उस के लिये बहुत होवें और तू बैरियों से सहायक हो॥

८। और उस ने लावी के विषय में कहा कि तेरा तमीम और तेरा औरीम तेरे धर्ममय के साथ होवे जिसे तू ने मस्सः में परखा और जिस के साथ तू मरीबः के पानीयों पर झगड़ा॥ ९। जिस ने अपनी माता पिता से

कहा कि मैं ने उसे न देखा और उस ने अपने भाइयों को न माना न अपने बालकों को पहिचाना क्योंकि उन्हों ने तेरे बचन को माना और तेरी बाचा को धारण किया॥ १०। वे तेरे बिचार यअ़क़ूब को और तेरी व्यवस्था इसराएल को सिखावें वे तेरी नासिका के आगे धूप रक्खें और होम के पूरे बलिदान तेरी बेदी पर धरें॥ ११। हे परमेश्वर उस की संपत्ति पर आशीष दे और उस के हाथों के कामों को ग्राह्य कर और जो उस के बिरोध में उठे और जो उस्से बैर रक्खे उन की कटि बेधडाल जिसतें वे फिर न उठें॥ १२। उस ने बिनयमीन के बिषय में कहा कि परमेश्वर का प्रिय उस के पास चैन से रहेगा उसे दिन भर आड़ करेगा और वुह उस के दोनों कांधों के बीच रहेगा॥ १३। और उस ने यूसुफ़ के बिषय में कहा कि उस की भूमि पर ईश्वर की आशीष होगी स्वर्ग की बड़ मूल्य बस्तुन के लिये और ओस के कारण और गहिराव के कारण जो नीचे झुका है॥ १४। और सूर्य्य के निकाले हुए अच्छे फलों में से और चन्द्रमा की निकाली हुई अच्छी बस्तुन के कारण॥ १५। प्राचीन पहाड़ों की श्रेष्ठ बस्तुन के लिये दृढ़ टीलों की बड़ मूल्य बस्तुन के कारण॥ १६। और पृथिवी की बड़ मूल्य बस्तें और उस की भरपूरी के कारण और उस की भलाई के लिये जो झाड़ी में रहता था यूसुफ़ के सिर पर उतरे और उस के मस्तक पर जो अपने भाइयों से अलग किया गया था॥ १७। उस का बिभव उस के बैल के पहिलौठे की नाईं और उस के सींग गैंडे के सींग वुह उन्हीं से लोगों को पृथिवी के सिवाने लों ठेलेगा और वे इफ़रायम के दस सहस्र और वे मुनस्सी के दस सहस्र॥ १८। और उस ने जबूलून के बिषय में कहा कि हे जबूलून अपने बाहर जाने में आनंद हो और इशकार तू अपने तंबूओं में॥ १९। वे लोगों को पहाड़ पर बुलावेंगे और वहां धर्म के बलिदान चढ़ावेंगे क्योंकि वे समुद्रों की अधिकाई को और भंडारों को जो बालू में छिपे हैं चूसेंगे॥ २०। और उस ने जद के बिषय में कहा कि धन्य है वुह जो जद को फैलाता है वुह सिंह के समान पड़ा रहता है और सिर की चांदी को भुजा सहित फाड़ता है॥ २१। उस ने पहिला भाग अपने लिये ठहराया उस ने वहां व्यवस्थादायक के भाग को चुना और

वुह लोगों के प्रधानों के साथ आया वुह परमेश्वर के न्याय को और उस के बिचार को इसराएल से बजा लाया॥

२२। और दान के बिषय में कहा कि दान एक सिंह का बच्चा है जो बसन से उछलेगा॥ २३। और उस ने नफ़ताली के बिषय में कहा कि हे नफ़ताली तू अनुग्रह से तृप्त और परमेश्वर की आशीष से पूर्ण तू पश्चिम और दक्षिण का अधिकारी हो॥ २४। और उस ने यशर के बिषय में कहा कि यशर बालकों की आशीष पावे और अपने भाइयों का ग्राह्य होवे और अपना पांव तेल में डुबोवे॥ २५। तेरे जूते के तले लोहा और पीतल होगा और तेरे समय के समान तेरा बल होगा॥ २६। यशूरून के ईश्वर के समान कोई नहीं जो स्वर्ग पर तेरी सहाय के लिये चढ़ता है और उस की प्रतिष्ठा में आकाश पर॥ २७। सनातन का ईश्वर तेरा शरण है और नीचे सनातन की भुजा और बैरियों को तेरे आगे से वुह हांकेगा और कहेगा कि उन्हें नाश कर॥ २८। तब इसराएल अकेला चैन से रहेगा यअ़कूब का सोता अन्न और मदिरा की भूमि पर होगा उस के आकाश से ओस पड़ेगी॥ २९। हे इसराएल तू धन्य है लोग तुझ सा कौन है कि परमेश्वर ने तुझे बचाया है वुह तेरी सहाय के लिये ढाल और तेरी बड़ाई की तलवार है तेरे शत्रु तेरे बश में होंगे और तू उन के ऊंचे स्थानों को लताड़ेगा।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब॥

और मूसा मोअब के चौगानों से नबू के पहाड़ पर पिसगः की चोटी पर जो यरीहो के साम्ने है चढ़ गया और परमेश्वर ने दिखाया जिलिअद के समस्त देश दान लों॥ २। और समस्त नफ़ताली और इफ़रायम और मुनस्सी के देश और यहूदाह के समस्त देश अत्यंत समुद्र लों॥ ३। और दक्षिण और यरीहो के चौगान की नीचाई जो खजूर के पेड़ का नगर है सुग्र लों उस को दिखाया॥ ४। और परमेश्वर ने उसे कहा कि यह वुह देश है जिस की मैं ने अबिरहाम और इज़हाक़ और यअ़कूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तेरे बंश को दूंगा मैं ने तुझे आंखों से दिखा दिया परंतु तू उधर पार न जायगा॥ ५। सो

परमेश्वर का सेवक मूसा परमेश्वर के बचन के समान वहां मोअब के देश में मर गया॥ ६। और उस ने उसे मोअब के देश की तराई में बैत-फ़ाऊर के साम्ने गाड़ा पर आज के दिन लों कोई उस की समाधि को नहीं जानता॥ ७। और मूसा अपने मरने के समय में एक सौ बीस बरस का था उस की आंखें धुंधली न हुईं और उस का स्वाभाविक बल न घटा॥ ८। और इसराएल के संतानों ने मूसा के लिये मोअब के चौगानों में तीस दिन लों बिलाप किया और मूसा के लिये उन के रोने पीटने के दिन समाप्त हुए॥ ९। और नून का बेटा यहूसूअ बुद्धि के आत्मा से भर गया क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रक्खे थे और इसराएल के संतान ने उसे माना और जैसा परमेश्वर ने मूसा को कहा था उस ने वैसा ही किया॥ १०। और तब से इसराएल में मूसा के समान कोई आगमज्ञानी फेर न हुआ जिसे परमेश्वर आम्ने साम्ने जानता था॥ ११। उन सब अचंभित और आश्चर्य्यित में फ़िरऊन और उस के सब सेवकों के और उस के समस्त देश में परमेश्वर ने मिस्र के देश में उसे भेजा था॥ १२। और समस्त सामर्थी हाथ और समस्त बड़े बड़े भय में जो मूसा ने समस्त इसराएल के आगे दिखाये।

यहूसूअ की पुस्तक ।
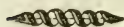
१ पहिला पर्ब्ब ।

जब परमेश्वर का सेवक मूसा मर गया तब यों हुआ कि परमेश्वर ने मूसा के सेवक नून के बेटे यहूसूअ को कहा॥ २। कि मेरा सेवक मूसा मर गया है सो अब तू उठ और समस्त लोगों समेत उस देश को जो मैं उन्हें देता हूं अर्थात् इसराएल के संतानों को लेके यरदन के पार उतर जा॥ ३। जैसा मैं ने मूसा से कहा कि हर एक स्थान जिस पर तेरे पांव का तलवा पड़ेगा मैं ने तुझे दिया है॥ ४। अरण्य से और इस लुबनान से लेके महानदी अर्थात् फुरात नदी लों हित्तियों का सारा देश महा समुद्र लों सूर्य के अस्त होने की ओर तुम्हारा सिवाना होगा॥ ५। तेरे जीवन भर कोई तेरे आगे ठहर न सकेगा जैसा मैं मूसा के साथ था तेरे साथ रहूंगा मैं तुझ से न हटूंगा न तुझे त्यागूंगा॥ ६। बलवंत हो और सुसाहस कर इस लिये कि यह भूमि जो मैं ने किरिया खाके उन के पितरों को देने कही है तू उसे अधिकार में दिलावेगा॥ ७। केवल तू बलवंत और अति साहसी हो जिसतें तू इस व्यवस्था के समान जिस की मेरे सेवक मूसा ने तुझे आज्ञा किई है सोच के मान और उस्से दहिने बायें मत मुड़ जिसतें जहां कहीं तू जाय भाग्यमान होवे॥ ८। इस व्यवस्था की पुस्तक की चर्चा तेरे मूंह से जाने न पावे

परंतु रात दिन उस में ध्यान कर जिसतें तू सोच के जो कुछ उस में लिखा है माने क्योंकि तब तू अपने मार्ग में भाग्यमान होगा ग्रैार तेरा कार्य्य धन्य होगा॥ ९। क्या मैं ने तुझे आज्ञा न किई कि बलवंत हो ग्रैार सुसाहस कर मत डर ग्रैार मत घबरा क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जहां जहां तू जाता है तेरे साथ है॥ १०। तब यहूसूअ ने लोगों के अध्यक्षों को आज्ञा करके कहा॥ ११। कि तुम सेना में से होके जाग्रो ग्रैार लोगों को आज्ञा करके कहो कि अपने लिये भोजन सिद्ध करें क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम इस यरदन पार उतरोगे जिसतें उस भूमि के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होग्रो॥ १२। ग्रैार रूबिनियों ग्रैार जद्दियों को ग्रैार मुनस्सी की आधी गोष्ठी को यहूसूअ कहके बोला॥ १३। कि जो बात परमेश्वर के सेवक मूसा ने तुम्हें कही थी चेत करो कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बिश्राम दिया है ग्रैार यह देश तुम्हें दिया है॥ १४। तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे बालक ग्रैार तुम्हारे ढोर इस देश में रहेंगे जो मूसा ने यरदन के इस पार तुम्हें दिया है परंतु तुम लोग अर्थात् समस्त बीर अपने भाइयों के आगे आगे हथियार बांधके चलो ग्रैार उन की सहायता करो॥ १५। जब लों परमेश्वर तुम्हारी नाईं तुम्हारे भाइयों को चैन देवे ग्रैार वे भी उस भूमि के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उन्हें देता है अधिकारी होवें तब तुम उस देश में जो तुम्हारा अधिकार है ग्रैार परमेश्वर के सेवक मूसा ने यरदन के इसी पार पूर्ब दिशा में तुम्हें दिया है फिर आइयो ग्रैार उसे अधिकार कीजियो॥ १६। तब उन्हों ने यहूसूअ को उत्तर दिया कि जो जो तू ने हमें कहा सो सो हम मानेंगे ग्रैार जहां जहां हमें भेजेगा हम जायेंगे॥ १७। जिस रीति से हम ने मूसा की सब बातें मानीं उसी रीति से तेरी सब मानेंगे केवल परमेश्वर तेरा ईश्वर जिस रीति से मूसा के साथ था तेरे साथ भी रहे॥ १८। जो कोई तेरी आज्ञा को न माने ग्रैार तेरी सारी बातों को जो तू कहे न सुनेगा सो मार डाला जायगा केवल बलवंत हो ग्रैार सुसाहस कर॥

२ दूसरा पर्ब्ब।

ओर नून के बेटे यहूसूश्र् ने सत्तीन से दो मनुष्य भेजे कि चुपके से भेद लेवें और उन्हें कहा कि जाओ उस देश को अर्थात् यरीहो को देखो सो वे गये और एक गणिका के घर में जिस का नाम राहब था आके उतरे॥ २। तब यरीहो के राजा को संदेश पहुंचा कि देख आज रात इसराएल के संतान में से लोग आये हैं जिसतें देश का भेद लेवें॥ ३। तब यरीहो के राजा ने राहब को यह कहके कहला भेजा कि उन मनुष्यों को जो तुझ पास आये हैं और तेरे घर में उतरे हैं निकाल दे क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को आये हैं॥ ४। तब उस स्त्री ने उन दोनों मनुष्यों को लेके छिपा रक्खा और यों कहा कि मेरे पास आये तो थे पर मैं नहीं जानती कि कहां के थे॥ ५। और यों हुआ कि फाटक बंद करते वे अंधेरे में निकल गये और मैं नहीं जानती कि वे कहां गये सो शीघ्र उन का पीछा करो क्योंकि तुम उन्हें जा ही लेओगे॥ ६। परंतु वुह उन्हें अपनी छत पर चढ़ा ले गई और सनई के नीचे जो छत पर सजी रक्खीं थीं छिपा दिया॥ ७। और लोग उन के पीछे यरदन की ओर हलाव लों गये और ज्यों उन के खोजी बाहर निकल गये त्योंही उन्हों ने फाटक बंद कर लिया॥ ८। और वुह स्त्री उन के लेटने से आगे छत पर उन पास गई॥ ९। और उन्हें कहा कि मैं जानती हूं कि परमेश्वर ने यह देश तुम्हें दिया है और तुम्हारा भय हमों पर पड़ा है और इस देश के समस्त बासी तुम्हारे आगे गल गये हैं॥ १०। क्योंकि हम ने सुना है जब कि तुम मिस्र से बाहर निकले तो परमेश्वर ने तुम्हारे लिये लाल समुद्र के पानियों को किस रीति से सुखा दिया और तुम ने अमूरियों के दो राजाओं सैहून और ऊज से जो यरदन के उस पार थे क्या किया और तुम ने उन्हें सर्वथा नाश किया॥ ११। और ज्योंही हम ने सुना त्योंही हमारे मन गल गये और किसी में तुम्हारा साम्ना करने का तनिक भी हियाव न रहा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है॥

१२। सो अब मुझ से परमेश्वर की किरिया खाओ जैसा मैं ने तुम पर अनुग्रह किया वैसा ही तुम भी मेरे पिता के घराने पर अनुग्रह करियो और मुझे एक सच्चा चिह्न दीजिये॥ १३। कि मेरे पिता और मेरी माता को और मेरे भाइयों और बहिनों को और सब जो उन का है बचाओ और हमारे प्राणों को मृत्यु से छुड़ाओ॥ १४। तब उन मनुष्यों ने उसे उत्तर दिया कि मृत्यु के बिषय में हमारे प्राण तुम्हारे प्राण के संती यदि तू हमारा यह कार्य्य न उचारे और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर इस देश को हमें देगा तब हम तेरे साथ सच्चाई से और अनुग्रह से व्यवहार करेंगे॥ १५। तब उस ने उन्हें डोरी से खिड़की में से उतार दिया क्योंकि उस का घर नगर की भीत पर था और वुह भीत ही पर रहती थी॥ १६। और उस ने उन्हें कहा कि पहाड़ पर चढ़ जाओ न हो कि खोजी तुम्हें मिलें सो तुम तीन दिन लों छिपे रहो जब लों कि खोजी फिर आवें उस के पीछे तुम अपने मार्ग लीजियो॥ १७। तब उन मनुष्यों ने उसे कहा कि इस किरिया से जो तू ने हम से लिई है हम निर्दोषी होंगे॥ १८। देख जब हम इस देश में आवेंगे तब यह लाल सूत की डोरी इस खिड़की से बांधियो जिस्से तू ने हमें नीचे उतार दिया और अपने पिता और अपनी माता और अपने भाइयों को और अपने पिता के सारे घराने को अपने यहां बटोरियो॥ १९। और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घर के द्वारों से बाहर जायगा उस का लोहू उस के सिर पर होगा और हम निर्दोष होंगे और जो कोई तेरे साथ घर में होगा यदि किसी का हाथ उस पर पड़े तो उस का लोहू हमारे सिर पर॥ २०। और यदि तू हमारा यह कार्य्य उचारे तो हम उस किरिया से जो तू ने हम से लिई अलग होंगे॥ २१। और वुह बोली जैसा तुम ने कहा वैसा ही हो सो उन्हें बिदा किया और वे चले गये तब उस ने वुह लाल सूत की डोरी खिड़की पर बांधी॥ २२। और वे वहां से चलके तीन दिन लों पहाड़ पर रहे जबलों कि खोजी लौट आये और उन खोजियों ने उन्हें समस्त मार्ग में ढूंढ़ा और न पाया॥ २३। तब वे दोनों पुरुष फिरे और पहाड़ से उतरे और पार हुए और नून के बेटे यहूसूअ पास आये और जो जो कुछ उन पर बीता था सब उस्से कहा॥ २४। और

उन्हों ने यहूसूअ से कहा कि निश्चय परमेश्वर ने यह समस्त देश हमारे बश में कर दिया और देश के समस्त बासी हमारे कारण गल गये ॥

३ तीसरा पर्ब्ब।

तब यहूसूअ बड़े तड़के उठा और सत्तीम से यात्रा किई वुह और समस्त इसराएल के संतान यरदन पर पहुंचे और पार उतरने से आगे वहां डेरा किया ॥ २। और यों हुआ कि तीन दिन के पीछे अध्यक्ष सेना में होके गये॥ ३। और लोगों को आज्ञा करके कहा कि जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की साक्षी की मंजूषा को लावी याजक को उठाते हुए देखो तब तुम अपने स्थान से यात्रा करो और उस के पीछे पीछे चलो॥ ४। परंतु तुम्हारे और उस के मध्य में दो सहस्र हाथ का अंतर रहे और उस के पास मत आओ जिसतें जिस मार्ग से तुम्हें जाना है तुम पहिचानो क्योंकि तुम इस मार्ग से आज कल नहीं गये॥ ५। और यहूसूअ ने लोगों से कहा कि अपने को शुद्ध करो क्योंकि कल परमेश्वर तुम्हारे मध्य में आश्चर्य दिखावेगा॥ ६। फिर यहूसूअ याजकों को कहके बोला कि साक्षी की मंजूषा को उठाओ और लोगों के आगे आगे पार उतरो सो उन्हों ने साक्षी की मंजषा को उठाया और लोगों के आगे आगे चले॥ ७। तब परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि आज के दिन से मैं समस्त इसराएल की दृष्टि में तुझे महान बनाना आरंभ करूंगा जिसतें वे जानें कि जिस रीति से मैं मूसा के साथ था तेरे साथ हूंगा॥ ८। और तू उन याजकों से जो साक्षी की मंजूषा को उठाते हैं कहियो कि जब तुम यरदन के जलके तीर पर पहुंचो तब यरदन में खड़े रहियो॥ ९। सो यहूसूअ ने इसराएल के संतानों से कहा कि इधर आओ और परमेश्वर अपने ईश्वर की बातें सुनो॥ १०। और यहूसूअ ने कहा कि अब इस्से तुम जानोगे कि जीवता ईश्वर तुम्हों में है और वुह कनआनियों और हित्तियों और हवियों और फरिज्जियों और अमूरियों और यबूसियों को तुम्हारे आगे से हांक देगा॥ ११। देखो समस्त पृथिवी के परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा तुम्हारे आगे आगे यरदन के पार जाती है॥ १२। सो अब तुम बारह जन

इसराएल की गोष्ठियों में से हर एक गोष्ठी पीछे एक मनुष्य लेओ॥ १३। और ऐसा होगा कि ज्योंही याजक के पांव के तलवे जो परमेश्वर समस्त पृथिवी के प्रभु की साक्षी की मंजूषा उठाते हैं यरदन के जल में ठहरें त्योंही यरदन के पानी जो ऊपर से बहते हैं थम जायेंगे और ढेर हो रहेंगे॥ १४। और ऐसा हुआ कि जब लोग अपने डेरे से चल निकले कि यरदन पार जावें और याजकों ने लोगों के आगे साक्षी की मंजूषा को उठाया॥ १५। और ज्यों वे जो मंजूषा को उठाये हुए थे यरदन लों पहुंचे और उन याजकों के पांव जो मंजूषा को उठाये हुए थे तीर के पानी में डूबे [क्योंकि लवनी के समय में यरदन अपने समस्त कड़ारों के ऊपर बहती है]॥ १६। तो जल जो ऊपर से आये ठहर गये और ढेर होके आदम नगर से बहुत दूर उभड़े जो जरतान के पास है और जो समुद्र के चैागान की ओर बहिआये अर्थात् खारी समुद्र के घट गये और अलग किये गये और लोग यरीहू के सन्मुख पार उतर गये॥ १७। और याजक जो परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को लिये हुए थे दृढ़ता से सूखी भूमि पर यरदन नदी में खड़े रहे और समस्त इसराएली सूखी भूमि पर पार उतर गये यहां लों कि समस्त लोग निर्धार पार उतर चुके॥

४ चौथा पर्ब्ब।

और यों हुआ कि जब सारे लोग यरदन पार उतर चुके तब परमेश्वर यहूसूअ से कहके बोला॥ २। कि लोगों में से बारह मनुष्य लेओ हर एक गोष्ठी में से एक मनुष्य॥ ३। और उन्हें आज्ञा करके कह कि अपने लिये यरदन के बीचोंबीच में से उस स्थान से जहां याजकों के पांव दृढ़ खड़े रहे बारह पत्थर लेओ और उन्हें अपने साथ पार ले जाओ और उन्हें निवास स्थान में जहां तुम आज रात निवास करोगे धरो॥ ४। तब यहूसूअ ने बारह मनुष्यों को जिन्हें उस ने इसराएल के संतानों में से सिद्ध किया था बुलाया हर एक गोष्ठी पीछे एक एक मनुष्य॥ ५। और यहूसूअ ने उन्हें कहा कि अपने ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा के आगे पार उतर के यरदन के बीचोंबीच जाओ

ओर हर एक तुम्में से इसराएल के संतानों की गोष्ठी की गिनती के समान पत्थर अपने कांधे पर लेवे॥ ६। जिसतें यह तुम्में एक चिन्ह होवे ओर जब आगमी काल में तुम्हारे बंश पूछें ओर कहें कि ये पत्थर कैसे हैं॥ ७। तो तुम उन्हें उत्तर दीजियो कि यरदन के पानी परमेश्वर की बाचा की मंजूषा के आगे दो भाग हुए जब वुह यरदन पार गया तो यरदन के पानी दो भाग हुए सो ये पत्थर स्मरण के लिये इसराएल के संतानों के कारण अन्त लों होंगे॥ ८। ओर इसराएल के संतानों की गोष्ठियों की गिनती के समान जैसा परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा ओर जैसी यहूसूअ ने उन्हें आज्ञा किई इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया ओर यरदन के मध्य में से बारह पत्थर उठाये ओर उन्हें अपने संग उस स्थान लों जहां वे टिके ले गये॥ ९। तब यहूसूअ ने यरदन के बीचोंबीच उस स्थान पर जहां याजकों के पांव पड़े जो साक्षी की मंजूषा को उठाये थे बारह पत्थर खड़े किये सो वे आज के दिन लों वहां हैं॥ १०। क्योंकि याजक जो मंजूषा को उठाये हुए थे यरदन के बीचोंबीच खड़े रहे जब लों हर एक बात जो परमेश्वर ने यहूसूअ को आज्ञा किई कि मूसा की आज्ञाओं के समान मंडली को कहे संपूर्ण हो चुकी उस के पीछे लोग शीघ्रता करके पार उतर गये॥ ११। ओर यों हुआ कि जब समस्त लोग पार हो चुके तब लोगों के आगे याजक परमेश्वर की मंजूषा लिये हुए पार गये॥ १२। तब जद के संतान ओर रूबिन के संतान ओर मुनस्सी की आधी गोष्ठी जैसा मूसा ने कहा था इसराएल के संतानों के आगे हथियार बांधे हुए पार उतर गये॥ १३। चालीस सहस्र एक हथियार बांधे हुए लैस संग्राम के निमित्त परमेश्वर के आगे यरीहू के चौगानों में पार उतरे॥ १४। उस दिन परमेश्वर ने समस्त इसराएल की दृष्टि में यहूसूअ को महिमा दिई ओर वे उस के जीवन भर उस्से ऐसा डरे जैसा वे मूसा से डरते थे॥ १५। तब परमेश्वर यहूसूअ से यों कहके बोला॥ १६। कि उन याजकों से जो साक्षी की मंजूषा को उठाते हैं कहो कि यरदन से बाहर निकल आओ॥ १७। सो यहूसूअ ने याजकों से कहा कि यरदन से निकल आओ॥ १८। ओर ऐसा हुआ कि जब वे याजक जो परमेश्वर की साक्षी की

मंजूषा उठाये हुए थे यरदन के बीच में से बाहर आये और याजकों के पांव के तलवे सूखी भूमि पर निकल आये त्योंही यरदन के पानी अपने स्थानों में फिर आये और आगे के समान अपने सब कड़ारों पर बहने लगे ॥ १९। और मंडली पहिले मास की दसवीं तिथि को यरदन से निकली और यरीहू के पूर्ब्ब सिवाने में जिलजाल में छावनी किई ॥ २०। और यहूसूअ ने उन बारह पत्थरों को जो यरदन से उठाये गये थे जिलजाल में खड़ा किया ॥ २१। और इसराएल के संतानों से कहा कि जब तुम्हारे लड़के आगमी काल में अपने पितरों से पूछें कि ये पत्थर कैसे हैं ॥ २२। तो तुम अपने लड़कों को बतलाके कहियो कि इसराएली इस यरदन से सूखी भूमि से पार आये ॥ २३। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के पानियों को तुम्हारे आगे सुखा दिया जब लों तुम पार हो गये जैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने लाल समुद्र को किया था जिसे उस ने हमारे आगे सुखा दिया जब लों हम पार उतर गये ॥ २४। जिसतें समस्त पृथिवी के लोग जानें कि परमेश्वर का हाथ सामर्थी है जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर से सदा डरा करो।

५ पांचवां पर्ब्ब।

और ऐसा हुआ कि जब अमूरियों के सारे राजाओं ने जो यरदन के इस पार पश्चिम दिशा में थे और कनआनियों के समस्त राजों ने जो समुद्र के तीर पर थे सुना कि परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के आगे यरदन के पानियों को सुखा दिया यहां लों कि वे पार उतर गये तो उन के मन घट गये और इसराएल के सन्तान के कारण उन के जी में जी न रहा ॥ २। उस समय परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि चोखी छूरी बना और इसराएल के संतानों का खतनः फेर कर ॥ ३। और यहूसूअ ने चोखी छूरियां बनाईं और खलड़ियों के टीले पर इसराएल के संतानों का खतनः किया ॥ ४। और यहूसूअ ने जो खतनः किया उस का कारण यह है कि सारे लोग जो मिस्र से निकल

आये थे अर्थात् समस्त योड्वा पुरुष अरण्य के मार्ग में मर गये॥ ५। सो सब लोग जो बाहर आये खतनः किये गये पर वे सब जो मिस्र से निकलने के पीछे अरण्य के मार्ग में उत्पन्न ज्ञए थे उन का खतनः न ज्ञआ था॥ ६। इस लिये कि इसराएल के संतान चालीस बरस अरण्य में फिरते रहे यहां लों कि सारे योड्वा जो मिस्र से बाहर आये नष्ट ज्ञए क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के शब्द को न माना जिन से परमेश्वर ने किरिया खाई थी कि मैं तुम्हें वुह देश न दिखलाऊंगा जिस के कारण मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें वुह देश देऊंगा जिस में दूध और मधु बहता है॥ ७। और उन के संतानों ने जिन्हें उस ने उन की संती उठाया यहूसूत्र ने उन का खतनः किया क्योंकि वे अखतनः थे इस कारण कि उन्हों ने मार्ग में खतनः न करवाया॥ ८। और ऐसा ज्ञआ कि जब वे खतनः करवा चुके तब वे छावनी में अपने अपने स्थान में रहे जब लों वे चंगे ज्ञए॥ ९। फिर परमेश्वर ने यहूसूत्र से कहा कि आज के दिन मैं ने मिस्र के अपमान को तुम पर से उठा दिया इस लिये वुह स्थान आज के दिन लों जिलजाल कहावता है॥ १०। सो इसराएल के संतानों ने जिलजाल में डेरा किया और उन्हों ने यरीहू के चैागान में मास की चैादहवीं तिथि में सांझ को पार जाने का पर्ब रक्खा॥ ११। और उन्हों ने बिहान को उसी दिन पार जाने के पर्ब के पीछे उस देश के पुराने अन्न के अखमीरी फुलके और भुना खाया॥ १२। और जब उन्हों ने उस देश के पुराने अन्न खाये उसी दिन से मन्न बरसना थम गया और इसराएल के संतानों के लिये मन्न न था और उन्हों ने उसी बरस कनआन के देश की बढ़ती खाई॥ १३। और ऐसा ज्ञआ कि जब यहूसूत्र यरीहू के पास था तो उस ने अपनी आंख ऊपर किई और देखा कि उस के साम्ने एक मनुष्य तलवार हाथ में खैंचे ज्ञए खड़ा है तब यहूसूत्र उस पास गया और उसे कहा कि तू हमारी ओर अथवा हमारे शत्रुन की ओर है॥ १४। वुह बोला नहीं परंतु मैं अभी परमेश्वर की सेना का अध्यक्ष होके आया ज्ञं तब यहूसूत्र भूमि पर औंधा गिरा और दंडवत किई और उसे कहा कि मेरे प्रभु अपने सेवक को क्या आज्ञा करता है॥ १५। तब परमेश्वर की सेना के अध्यक्ष ने यहूसूत्र

से कहा कि अपने पांव से जूता उतार क्योंकि यह स्थान जहां तू खड़ा है पवित्र है॥ १६। और यहूसूअ ने ऐसा ही किया।

६ छठवां पर्ब्ब ।

अब इसराएल के संतानों के कारण यरीहू बंद हुआ और बंद किया गया कोई बाहर न जाता था न भीतर आता था॥ २। और परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि देख मैं ने यरीहू को और उस के राजा और वहां के महाबीरों को तेरे बश में कर दिया॥ ३। सो समस्त योड्वा नगर को घेर लेओ और एक बार उस के चारों ओर फिरो इस रीति से छः दिन लों कीजियो॥ ४। और सात याजक मंजूषा के आगे सात नरसिंगे उठावें और तुम सातवें दिन सात बार नगर के चारों ओर फिरो और याजक नरसिंगे फूंकें॥ ५। और यों होगा कि जब वे देर लों नरसिंगे फूंकेंगे और जब तुम नरसिंगे का शब्द सुनो तो समस्त लोग महा शब्द से ललकारें और नगर की भीत नीचे से गिर जायेगी और लोग ऊपर चढ़ जावें हर एक जन अपने अपने आगे॥ ६। तब नून के बेटे यहूसूअ ने याजकों को बुलाया और उन्हें कहा कि साक्षी की मंजूषा उठाओ और सात याजक सात नरसिंगे परमेश्वर की मंजूषा के आगे लिये हुए चलो॥ ७। तब उस ने लोगों से कहा कि जाओ नगर को घेरो और जो हथियार बंद हैं सो परमेश्वर की मंजूषा के आगे आगे चलें॥ ८। और ऐसा हुआ कि जब यहूसूअ ने लोगों से यह कहा तो सात याजक सात नरसिंगे लेके परमेश्वर के आगे आगे चले और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा उन के पीछे पीछे गई॥ ९। और हथियार बंद लोग उन याजकों के जो नरसिंगे फूंकते थे आगे आगे चले और जो अन्त की सेना में थे मंजूषा के पीछे पीछे चले और नरसिंगे फूंकते जाते थे॥ १०। और यहूसूअ ने लोगों को आज्ञा करके कहा कि तुम मत ललकारियो और न अपना शब्द सुनाइयो और तुम्हारे मूंह से कुछ बात न निकले जब लों मैं तुम्हें ललकार ने को कहूं तब ललकारियो॥ ११। सो परमेश्वर की मंजूषा नगर के चारों ओर एक बार फिर आई और वे छावनी में आये और छावनी में रहे॥

१२। फिर बिहान को यहूसूअ उठा और याजकों ने परमेश्वर की मंजूषा को उठा लिया॥ १३। और सात याजक सात नरसिंगे लेके परमेश्वर की मंजूषा के आगे आगे नरसिंगे फूंकते चले जाते थे और वे जो हथियार बंद थे उन के आगे आगे हो लिये और वे जो पीछे थे परमेश्वर की मंजूषा के पीछे हुए और नरसिंगे फूंकते जाते थे॥ १४। सो दूसरे दिन भी वे एक बार नगर की चारों ओर फिर के छावनी में फिर आये ऐसा ही उन्हों ने छः दिन लों किया॥ १५। और सातवें दिन यों हुआ कि वे बिहान पौ फटते भोर को उठे और उसी भांति से नगर के चारों ओर सात बार फिरे केवल उसी दिन वे सात बार नगर के चारों ओर फिरे॥ १६। सो सातवीं फेरी में ऐसा हुआ कि जब याजकों ने नरसिंगे फूंके तब यहूसूअ ने लोगों से कहा कि ललकारो क्योंकि परमेश्वर ने नगर तुम को दिया॥ १७। और नगर और सब जो उस में हैं परमेश्वर के लिये स्रापित होंगे केवल राहब गणिका उन सब समेत जो उस के साथ उस के घर में हैं जीती बचेगी इस लिये कि उस ने उन अगुओं को जो हम ने भेजे थे छिपाया॥ १८॥ परंतु तुम जो हो अपने को स्रापित बस्तों से अलग रखियो ऐसा न होवे कि तुम स्रापित बस्तु लेके स्रापित हो जाओ और इसराएल की छावनी को स्रापित करके उसे दुख देओ॥ १९। परंतु सब चांदी सोना और लोहे पीतल के पात्र परमेश्वर के लिये पवित्र हैं वे परमेश्वर के भंडार में पहुंचाये जायेंगे॥ २०। सो लोगों ने ललकारा याजकों ने और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और ऐसा हुआ कि जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुना और लोगों ने महा शब्द से ललकारा तब भीतें नीचे से गिर पड़ीं यहां लों कि लोग नगर पर चढ़ गये हर एक मनुष्य अपने अपने आगे और नगर को ले लिया॥ २१। और उन्हों ने उन सब को जो नगर में थे क्या पुरुष क्या स्त्री क्या युवा क्या वृद्ध क्या बैल क्या भेड़ गदहे एक बार तलवार की धार से मार डाला॥ २२। परंतु यहूसूअ ने उन दो मनुष्यों को जो भेद के लिये उस देश में गये थे कहा कि गणिका के घर जाओ और वहां से उस स्त्री को और सब जो उस का हो जैसे तुम ने उस्से किरिया खाई थी निकाल लावो॥ २३। तब वे

दोनों तरुण भेदिये चले गये और राहब को उस के पिता और उस की माता और उस के भाइयों और सब जो उस का था और उस के समस्त घराने समेत निकाल लाये और उन्हें इसराएल के संतानों की छावनी के बाहर रख छोड़ा॥ २४। फिर उन्हों ने उस नगर को और सब जो उस में थे आग से फूंक दिया परंतु चांदी और सोना और पीतल और लोहे के पात्र परमेश्वर के घर के भंडार में पक्षंचाये॥ २५। और यहूसूत्र ने राहब गणिका को और उस के पिता के घराने को और सब जो उस का था बचाया और उस का निवास आज लों इसराएल के संतानो में है इस कारण कि उस ने उन भेदियों को जिन्हें यहूसूत्र ने यरीहू को भेजा था छिपाया॥ २६। और यहूसूत्र ने उस समय किरिया खाई और कहा कि जो मनुष्य उठे और यरीहू के नगर को फिर बनावे वुह परमेश्वर के आगे स्रापित होगा और अपने पहिलौंठे पर उस की नेंव डालेगा और अपने छोटे पर उस के फाटक को खड़ा करेगा॥ २७। सो परमेश्वर यहूसूत्र के साथ था और समस्त देश में उस की कीर्त्ति फैली।

७ सातवां पर्ब्ब।

परन्तु इसराएल के संतानों ने स्रापित बस्तु के बिषय में अपराध किया क्योंकि शारिक का पुत्र ज़ब्दी का पुत्र करमी के पुत्र अकन ने जो यहूदाह की गोष्ठी का था कुछ स्रापित बस्तु में से लिया और परमेश्वर का कोप इसराएल के संतानों पर भड़का॥ २। तब यहूसूत्र ने यरीहू से अई में जो बैतअबन के लग बैतएल की पूर्ब ओर है लोगों को भेजा और उन्हें कहके बोला कि जाओ और देश को देख आओ सो वे गये और अई को देख आये॥ ३। और वे यहूसूत्र पास फिर आये और उस्से कहा कि समस्त लोग न चढ़ें केवल दो अथवा तीन सहस्र जन के लग भग जावें और अई को मारें और सब लोगों को परिश्रम न दीजिये क्योंकि वे थोड़े हैं॥ ४। सो लोगों में से तीन सहस्र के लग भग चढ़ गये और अई के लोगों के आगे से भागे॥ ५। और अई के लोगों ने उन में से छत्तीस मनुष्य मार लिये क्योंकि वे फाटक के आगे से लेके शबरीम लों

रगेदे आये और उन्हों ने उतार में उन्हें मारा इस कारण लोगों के मन घट गये और पानी की नांईं हो गये॥ ६। तब यहूसूअ और इसराएल के प्राचीनों ने अपने अपने कपड़े फाड़े और परमेश्वर की साची की मंजूषा के आगे सांझ लों औंधे पड़े रहे और अपने सिरों पर धूल उड़ाई॥ ७। और यहूसूअ बोला कि हाय हे प्रभु परमेश्वर तू इन लोगों को किस कारण यरदन पार लाया कि हमें नाश करने के लिये अमूरियों के हाथ में सौंप देवे हाय कि हम सन्तोष करते और यरदन के उसी पार रहते॥ ८। हे मेरे स्वामी जब इसराएल अपने शत्रुन के आगे पीठ फेरते हैं तब मैं क्या कहूं॥ ९। क्योंकि कनआनी और देश के समस्त बासी सुनेंगे और हमें घेर लेंगे और हमारा नाम पृथिवी पर से मिटा डालेंगे और तू अपने महत नाम के लिये क्या करेगा॥ १०। तब परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि उठ तू किस लिये औंधा पड़ा है॥ ११। इसराएल ने पाप किया है और उन्हों ने उस बाचा से जो मैं ने उन से बांधी अपराध किया क्योंकि उन्हों ने स्नापित बस्तु में से भी कुछ लिया और चोरी भी किई और छल भी किया और अपनी सामग्री में भी रख लिया॥ १२। इसराएल के संतान अपने शत्रुन के आगे ठहर न सके और उन के आगे पीठ फेरी क्योंकि वे स्नापित ऊये सो अब मैं आगे को तुम्हारे साथ न होऊंगा जब लों तू स्नापित को अपने में से नाश न करे॥ १३। उठ लोगों को शुद्ध कर और कह कि अपने को कलके लिये शुद्ध करो क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि हे इसराएल तेरे मध्य स्नापित बस्तु है तू अपने शत्रुन के साम्ने ठहर नहीं सक्ता जब लों स्नापित बस्तु को अपने में से दूर न करेगा॥ १४। सो तुम बिहान को अपनी अपनी गोष्ठी के समान पऊंचाये जाओगे और ऐसा होगा कि जिस गोष्ठी को परमेश्वर पकड़ेगा सो अपने घराने समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़गा वुह अपने परिवार समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा सो एक एक जन आवे॥ १५। और ऐसा होगा कि जो किसी स्नापित बस्तु के साथ पकड़ा जायगा सो अपनी सामग्री समेत आग से जला दिया जायगा इस लिये कि उस ने परमेश्वर की बाचा का अपराध किया और इस कारण कि उस ने इसराएल के संतानों में

दुष्टता किई॥　१६। तब यहूसूअ बिहान को तड़के उठा और इसराएल को उन की गोष्ठियों के समान लाया और यहूदाह की गोष्ठी पकड़ी गई॥ १७। और यहूदाह के घरानों को समीप लाया और शारिक का घराना पकड़ा गया और शारिक के घराने के एक एक मनुष्य को आगे लाया और ज़बदी पकड़ा गया॥ १८। और वुह उस के घराने का एक एक जन लाया शारिक का बेटा ज़बदी का बेटा करमी का बेटा यहूदाह की गोष्ठी का अकन पकड़ा गया॥ १९। तब यहूसूअ ने अकन से कहा कि हे मेरे बेटे अब परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की महिमा कर और उस को मान ले और मुझ से कह कि तू ने क्या किया है मुझ से मत छिपा॥ २०। तब अकन ने यहूसूअ को उत्तर दिया और कहा कि निश्चय मैं ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का पाप किया है और मैं ने ऐसा ऐसा किया है॥ २१। जब मैं ने बबलूनी सुन्दर बस्त्र और दो सौ शेकल चांदी और पचास शेकल के तौल की सोने की गुल्ली लूट के धन में से देखा तो मैं ने लालच किया और उन्हें ले लिया और देख वे मेरे तंबू के बीच भूमि में गड़े हैं और चांदी उस के तले॥ २२। तब यहूसूअ ने दूत भेजे और वे तंबू को दौड़े और देखो कि उस के तंबू में गड़ा था और चांदी उस के तले॥ २३। और वे उन्हें तंबू में से निकाल के यहूसूअ और समस्त इसराएल के संतान के आगे लाये और उन्हें परमेश्वर के आगे डाल दिया॥ २४। फिर यहूसूअ और सारे इसराएल ने शारिक के बेटे अकन को और चांदी और बस्त्र और सोने की गुल्ली और उस के बेटे बेटियां और उस के गोरू और गदहे और भेड़ और उस के तंबू और सब जो उस का था लिया और अकूर की तराई में लाये॥ २५। और यहूसूअ ने कहा कि तू ने हमें क्यों दुःख दिया परमेश्वर आज तुझे दुःख देगा तब समस्त इसराएल ने उस पर पत्थरवाह किया और उस के पीछे उन्हें आग से जला दिया॥ २६। और उन्हों ने उस पर पत्थरों का ढेर किया जो आज लों है तब परमेश्वर अपने क्रोध के जलजलाहट से फिर गया इस लिये उस स्थान का नाम आज लों अकूर की तराई है॥

८ आठवां पर्ब्ब।

तब परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि मत डर और भय मत कर सारे योद्धाओं को साथ ले और उठ और अई पर चढ़ जा देख मैं ने अई के राजा और उस के लोग और उस के नगर और उस के देश को तेरे हाथ में कर दिया है॥ २। और तू अई से और उस के राजा से वही कीजियो जो तू ने यरीहू से और उस के राजा से किया केवल वहां का धन और ढोर तुम अपने लिये लूट लीजियो नगर के पीछे से घात में बैठियो॥ ३। सो यहूसूअ और सारे योद्धा उठे जिसतें अई पर चढ़ें और यहूसूअ ने तीस सहस्र महावीर चुन लिये और रात को उन्हें भेज दिया॥ ४। और उन्हें आज्ञा करके कहा कि देखो तुम नगर के पिछवाड़े घात में बैठियो नगर से बहुत दूर मत जाइयो परंतु सब लैस हो रहो॥ ५। और मैं अपने संगी लोगों को लेके नगर की ओर बढ़ूंगा और ऐसा होगा कि जब वे हमारा साम्ना करेंगे तब हम आगे की नाईं उन के आगे से भागेंगे॥ ६। क्योंकि वे हमारा पीछा करेंगे यहां लों कि हम उन्हें नगर से खैंच ले जावें क्योंकि वे कहेंगे कि वे आगे की नाईं हमारे आगे से भागते हैं इस लिये हम उन के आगे से भागेंगे॥ ७। तब तुम घात से उठियो और नगर को ले लीजियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उसे तुम्हारे हाथ में सौंप देगा॥ ८। और यों होगा कि जब तुम नगर को लेओगे तब नगर में आग लगाइयो और परमेश्वर की आज्ञा के समान कीजियो देखो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है॥ ९। सो यहूसूअ ने उन्हें भेज दिया और वे घात में बैठने गये और बैतएल और अई के मध्य में अई की पश्चिम ओर रहे परंतु यहूसूअ उसी रात लोगों में रहा॥ १०। और यहूसूअ बिहान को उठके लोगों को गिना और वुह इसराएल के प्राचीन लोगों के आगे होके अई पर चढ़ गया॥ ११। और समस्त योद्धा जो उस के साथ थे चढ़े और पास आये और नगर के आगे पहुंचे और अई की उत्तर अलंग डेरे किये और उन में और अई में एक नीचाई थी॥ १२। तब उस ने पांच सहस्र मनुष्य के लगभग लिये और उन्हें बैतएल और अई के मध्य में नगर की पश्चिम

घलंग घात में बैठाया॥ १३। और जब उन्हों ने सारे लोगों को अर्थात् समस्त सेना को जो नगर के उत्तर थी और अपने घात के लोगों को नगर की पश्चिम ओर घात में बैठाया तब यहूसूअ उसी रात उस नीचाई के मध्य में गया॥ १४। और ऐसा हुआ कि जब अई के राजा ने देखा तब उन्हों ने उतावली किई और तड़के उठे और नगर के मनुष्य राजा और उस के सारे लोग ठहराये हुए समय में चैागान के आगे इसराएल से लड़ाई करने के लिये निकले परंतु उस ने न समझा कि नगर के पीछे उस के बिरोध में लोग घात में लगे हैं॥ १५। तब यहूसूअ और सारे इसराएल ने ऐसा किया जैसा कि उन के आगे मारे गये और अरण्य की ओर भागे॥ १६। और अई के समस्त लोग उन का पीछा करने के लिये एकट्ठे बुलाये गये सो उन्हों ने यहूसूअ का पीछा किया और नगर से खैंचे गये॥ १७। और अई में अथवा बैतएल में कोई पुरुष न छूटा जिस ने इसराएल का पीछा न किया और उन्हों ने नगर को खुला छोड़ा और इसराएल का पीछा किया॥ १८। तब परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि अपने हाथ के भाले को अई की ओर बढ़ा क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में कर दूंगा सो यहूसूअ ने अपने हाथ के भाले को उस नगर की ओर बढ़ाया॥ १९। और उस के हाथ फैलाते ही घातिये अपने स्थान से तत्काल उठे और नगर में पैठ गये और उसे ले लिया और चटक से नगर में आग लगाई॥ २०। और जब अई के लोगों ने अपने पीछे देखा तो क्या देखते हैं कि नगर का धूंआं स्वर्ग लों उठ रहा है और उन्हें इधर उधर भागने की सामर्थ न रही और जो अरण्य की ओर भाग गये थे खेदवैयों पर उलटे फिरे॥ २१। और जब यहूसूअ और सारे इसराएल ने देखा कि घातियों ने नगर ले लिया और नगर से धूंआं उठ रहा है तब वे उलट फिरे और अई के लोगों को घात किया॥ २२। और वे नगर में से उन पर निकल आये और इसराएल के मध्य में पड़ गये कुछ इधर कुछ उधर और उन्हों ने उन्हें ऐसा मारा कि उन में से एक को न छोड़ा न भागने दिया॥ २३। और उन्हों ने अई के राजा को जीता पकड़ लिया और उसे यहूसूअ पास लाये॥ २४। और यों हुआ कि जब इसराएल खेत

में उस अरण्य में जहां उन का पीछा किया अई के सारे निवासियों को मार चुके और जब वे सब खड्ग की धार पर पड़ गये और खप गये तब सारे इसराएली अई को फिरे और उसे खड्ग की धार से मारा॥ २५। और यों हुआ कि जो उस दिन मारे गये पुरुष और स्त्री बारह सहस्र थे अर्थात् अई के सब लोग॥ २६। क्योंकि यहूसूअ ने भाले के बढ़ाने से अपने हाथ को न खैंचा जब लों अई के सारे निवासियों को सर्व्वथा नाश न किया था॥ २७। परमेश्वर की बचन के समान जो उस ने यहूसूअ को आज्ञा किई थी इसराएल ने उस नगर के केवल ढोर और लूट को आप ही लिया॥ २८। और यहूसूअ ने अई को जला के सदा के लिये ढेर कर दिया सो वुह आज लों उजाड़ है॥ २९। और उस ने अई के राजा को फांसी देके सांझ लों पेड़ पर लटका रक्खा और ज्योंही सूर्य्य अस्त हुआ यहूसूअ ने आज्ञा किई कि उस की लोथ को पेड़ से उतारें और नगर के फाटक के पैठ में फेंक देवें और उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर करें सो आज लों है॥ ३०। तब यहूसूअ ने ऐबाल के पहाड़ पर परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये एक बेदी बनाई॥ ३१। जैसा परमेश्वर के सेवक मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा था जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा हुआ है कि ढोकों की एक बेदी जिस में टांकी न लगाई गई हो और उन्हों ने परमेश्वर के लिये उस पर होम की भेंटें और कुशल के बलि चढ़ाये॥

३२। और उस ने वहां उन पत्थरों पर उस व्यवस्था को खोदा जो मूसा ने इसराएल के संतानों के आगे लिखी थी॥ ३३। और समस्त इसराएली और उन के प्राचीन और अध्यक्ष और उन के न्यायी लावी याजकों के आगे जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को उठाया करते थे मंजूषा के इधर उधर खड़े हुए और उसी रीति से परदेशी और जो उन में उत्पन्न हुए थे आधे जरिज़ीम के पहाड़ पर और आधे ऐबाल के पहाड़ पर जैसा कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने पहिले कहा था कि वे इसराएल के संतानों को आशीष देवें॥ ३४। और उस ने व्यवस्था की पुस्तक के समस्त लिखे हुए के समान आशीष और स्राप को व्यवस्था के समस्त बचन को पढ़ा॥ ३५। मूसा की समस्त आज्ञा के समान एक

बात भी न रही जिसे यहूसूअ ने इसराएल की सारी मंडली और स्त्रियों और बालकों और उन परदेशियों के आगे जो उन में चलते थे न पढ़ी ॥

९ नवां पर्ब्ब ।

और यों हुआ कि जब सारे राजाओं ने जो यरदन के इसी पार पहाड़ों में और तराइयों में और महासागर के समस्त तीरों में जो लुबनान के आगे हैं हित्ती और अमूरी और कनआनी और फिरज्जी और हवी और जबूसी ने सुना ॥ २। तो वे एक मता होके यहूसूअ और इसराएल के संतान से संग्राम करने के लिये एकट्ठे हुए। ३। और जो कुछ यहूसूअ ने यरीहू और अई से किया था जब जिबऊन के बासियों ने सुना ॥ ४। तब उन्हों ने कपट से दूत का भेष बनाके पुराने पुराने बोरे और पुराने और टूटे और जोड़ हुए मदिरा के कुप्पे अपने गदहों पर लादे ॥ ५। और पुरानी और जोड़ी हुई जूती पांओं में और अपनी देह पर पुराने वस्त्र और उन के भोजन की रोटी सूखी और फफूंदी लगी हुई ॥ ६। वे यहूसूअ पास जिलजाल की छावनी में गये और उसे और इसराएल के लोगों से कहा कि हम दूर देश से आये हैं सो अब तुम हम से बाचा बांधो ॥ ७। तब इसराएल के लोगों ने हव्वियों से कहा कि कदाचित् तुम हमों में बास करते हो फेर हम तुम से क्योंकर मेल करें ॥ ८। उन्हों ने यहूसूअ से कहा कि हम तेरे सेवक हैं तब उस ने उन से पूछा कि तुम कौन और कहां से आये हो ॥ ९। और उन्हों ने उसे कहा कि तेरे सेवक परमेश्वर तेरे ईश्वर के नाम के लिये अति दूर देश से आये हैं क्योंकि हम ने उस की कीर्त्ति सुनी है और सब जो उस ने मिस्र में किये ॥ १०। और सब जो उस ने अमूरियों के दो राजाओं से जो यरदन के उस पार अर्थात् हसबून के राजा सैहून और बसन के राजा ऊज से जो अस्तरूत में था किये ॥ ११। इस लिये हमारे प्राचीन और हमारे देश के समस्त बासी हम से कहके बोले कि तुम यात्रा का भोजन अपने साथ लेओ और उन से भेंट करो और उन्हें कहो कि हम तुम्हारे सेवक हैं इस लिये तुम हम से मेल करो ॥ १२।

हम ने जिस दिन तेरे पास आने को अपने घर छोड़े हमारे भोजन के लिये रोटी टटकी थी परंतु अब देख सूख गई और फफूंदी लग गई॥ १३। पर जब हम ने इन्हें भरा था तब ये मदिरा के कुप्पे नये थे और हमारे ये वस्त्र और जूते दूर की यात्रा के कारण से पुराने हो गये॥ १४। तब उन्हों ने उन के भोजन के कारण उन्हें ग्रहण किया और परमेश्वर से न बूझा॥ १५। और यहूसूअ ने उन से मिलाप किया और उन्हें जीते छोड़ने के लिये उन से बाचा बांधी और मंडली के अध्यक्षों ने उन से किरिया खाई॥ १६। और उन से बाचा बांधने के तीन दिन पीछे यों हुआ कि उन्हों ने सुना कि वे हमारे परोसी हैं और हम्में रहते हैं॥ १७। और इसराएल के संतान यात्रा करके तीसरे दिन उन के नगर में पहुंचे जिन के नाम जिबऊन और कफीरः और बिअरात और क़रयतअरीम थे॥ १८। तब इसराएल के संतानों ने उन्हें न मारा इस लिये कि मंडली के अध्यक्षों ने उन से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई थी सो सारी मंडली अध्यक्षों से कुड़कुड़ाई॥ १९। परंतु सारे अध्यक्षों ने समस्त मंडली से कहा कि हम ने उन से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई है सो इस लिये हम उन्हें छू नहीं सक्ते॥ २०। हम उन से यह करके उन्हें जीता छोड़ेंगे ऐसा न हो कि उस किरिया के कारण जो हम ने उन से खाई है हम पर कोप पड़े॥ २१। और अध्यक्षों ने उन्हें कहा कि उन्हें जीता छोड़ो परंतु वे सारी मंडली के लिये लकड़हारे और पनिहारे होवें जैसा कि अध्यक्षों ने उन से प्रण किया था॥

२२। तब यहूसूअ ने उन्हें बुलाया और कहा कि तुम ने हम से यह कहके क्यों छल किया कि हम तुम से दूर हैं जब कि तुम हम्में रहते हो॥ २३। सो इस लिये तुम स्रापित हुए और तुम्मे से कोई बंधुआई से छुट्टी न पावेगा जो मेरे ईश्वर के घर के लिये लकड़हारा और पनिहारा न हो॥ २४। और उन्हों ने यहूसूअ को उत्तर दिया और कहा कि तेरे सेवकों से निश्चय कहा गया था कि किस रीति से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपने दास मूसा को आज्ञा किई कि मैं सारा देश तुम्हें देऊंगा और उस देश के सारे बासियों को तुम्हारे आगे नाश करूंगा

इस लिये हम ने तुम्हारे कारण अपने प्राणों के डरके लिये यह काम किया॥ २५। और अब देख हम तेरे बश में हैं जो कुछ तुझे हमारे लिये भला और ठीक जान पड़े सो कर॥ २६। और उस ने उन से वैसा ही किया और इसराएल के संतान के हाथ से उन्हें बचाया कि उन्हें मार न डालें॥ २७। और यहूसूअ ने उन्हें उसी दिन मंडली के लिये और परमेश्वर की बेदी के लिये उस स्थान में जिसे वुह चुनेगा लकड़हारे और पनिहारे ठहराये।

१० दसवां पर्ब्ब।

और जब यरूसलम के राजा अदूनीसिदक ने सुना कि यहूसूअ ने किस रीति से अई को ले लिया और उसे सर्बथा नाश किया जैसा उस ने यरीहू और उस के राजा से किया था वैसा ही उस ने अई और उस के राजा से किया और किस रीति से जिबऊन के बासियों ने इसराएल से मिलाप किया और उन में रहे॥ २। तब वे निपट डर गये इस कारण कि जिबऊन एक बड़ा नगर था और राज नगरों के समान था और इस कारण कि वुह अई से भी बड़ा था और वहां के लोग बली थे॥ ३। तब यरूसलम के राजा अदूनीसिदक ने हबरून के राजा हूहाम और यरमूत के राजा पिराम और लकीस के राजा यफीअ और इजलून के राजा दबीर के पास कहला भेजा॥ ४। कि मुझ पास चढ़ आओ और मेरी सहायता करो जिसतें हम जिबऊन को मारें क्योंकि उस ने यहूसूअ और इसराएल के संतानों से मिलाप किया॥ ५। इस लिये अमूरियों के पांच राजा अर्थात् यरूसलम का राजा हबरून का राजा यरमूत का राजा लकीस का राजा इजलून का राजा एकट्ठे होके अपनी अपनी सेनाओं को लेके जिबऊन के आगे डेरे खड़े किये और उस्से लड़ाई किई।

६। तब जिबऊन के लोगों ने यहूसूअ के पास जो जिलजाल में डेरा किया था कहला भेजा कि अपने सेवकों से अपना हाथ मत खैंच हम पास शीघ्र आइये और हमें बचाइये और हमारी सहायता कीजिये क्योंकि अमूरियों के सारे राजा जो पहाड़ में रहते हैं हमारे बिरोध में एकट्ठे ऊए हैं॥

७। तब यहूसूअ सारे योड्वाओं को और समस्त महावीरों को साथ लेके जिलजाल से चढ़ गया॥ ८। और परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि उन से मत डर क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे बश में कर दिया उन में से एक जन भी तेरे साम्ने ठहर न सकेगा॥ ९। तब यहूसूअ जिलजाल से उठके रात भर चला गया और अचानक उन पर आ पहुंचा॥ १०। और परमेश्वर ने इसराएल के आगे उन्हें ध्वस्त किया जिबऊन में बड़ी मार से उन्हें मारा और बैतहोरान को जाते हुए मार्ग में उन्हें रगेदा और अज़ीक़ः और मुक़ैदः लों उन्हें मारा॥ ११। और ऐसा हुआ कि जब वे इसराएल के साम्ने से भाग निकले और बैतहोरान के उतार की ओर गये तब परमेश्वर ने अज़ीक़ः लों स्वर्ग से उन पर बड़े बड़े पत्थर बरसाये और वे मूये वे जो ओले से मारे गये थे उन से अधिक थे जिन्हें इसराएल के संतानों ने तलवार से मारा॥ १२। तब परमेश्वर ने अमूरियों को इसराएल के संतान के बश में कर दिया तब यहूसूअ ने उसी दिन परमेश्वर को इसराएल के संतान के आगे यों कहा कि हे सूर्य्य जिबऊन पर और हे चंद्रमा तू ऐयलून की तराई में ठहर जा॥ १३। तब सूर्य्य ठहर गया और चंद्रमा स्थिर हुआ जब लों उन लोगों ने अपने शत्रुन से पलटा लिया क्या यशर की पुस्तक में नहीं लिखा है सो सूर्य्य स्वर्ग के मध्य में ठहर रहा और दिन भर अस्त होने में शीघ्र न किया॥ १४। और उस्से आगे पीछे ऐसा दिन कभी न हुआ कि परमेश्वर ने एक पुरुष के शब्द को माना क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के लिये युद्ध किया॥ १५। तब यहूसूअ समस्त इसराएल के संग जिलजाल की छावनी को फिर गया॥ १६। परंतु पांचों राजा भागे और मुक़ैदः की कंदला में जा छिपे॥ १७। और यहूसूअ को संदेश पहुंचा कि पांचों राजा मुक़ैदः की कंदला में छिपे हुये पाये गये॥ १८। तब यहूसूअ ने कहा कि बड़े बड़े पत्थल उस कंदला के मूंह पर ढुलकाओ और उस पर चौकी बैठाओ॥ १९। और तुम मत ठहरो परंतु अपने शत्रुन का पीछा करो और उन के पछरे हुओं को मार डालो उन के नगरों में उन्हें पैठने मत देओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया है॥ २०। और ऐसा हुआ कि जब यहूसूअ और इसराएल

के संतान उन्हें नाश कर चुके और बड़ी मार से उन्हें घात किया यहां लों कि वे नष्ट हुए उन में के उबरे हुए बाड़ के नगरों में पैठ गये॥ २१। और सारे लोग मुक्केद: की छावनी में यहूसूअ पास कुशल से फिर आये और इसराएल के संतानों के बिरोध में किसी ने मुंह न खोला॥ २२। तब यहूसूअ ने कहा कि कंदला के मुंह को खोलो और उन पांचों राजाओं को कंदला से मुझ पास बाहर लाओ॥ २३। और उन्हों ने ऐसा ही किया और उन पांचो राजाओं को अर्थात् यरूसलम के राजा को और हबरून के राजा को और यरमूत के राजा को और लकीस के राजा को और इजलून के राजा को कंदला से उस पास निकाल लाये॥ २४। और यों हुआ कि जब वे उन राजाओं को यहूसूअ के आगे लाये तब यहूसूअ ने इसराएल के सारे मनुष्यों को बुलाया और अपने साथ के योड्डा के प्रधानों से कहा कि आगे आओ इन राजाओं के गलों पर पांव रक्खो तब वे पास आये और उन के गलों पर पांव रक्खे॥ २५। तब यहूसूअ ने उन्हें कहा कि डरो मत और बिस्मित मत होओ और प्रबल होके हियाव करो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे समस्त शत्रुन से जिन से लड़ोगे ऐसा ही करेगा॥ २६। और उस के पीछे यहूसूअ ने उन्हें मारा और घात किया और उन्हे पांच पेड़ पर लटका दिया और वे सांझ लों पेड़ों पर लटके रहे॥ २७। और सूर्य्य अस्त होने पर यों हुआ कि उन्हों ने यहूसूअ की आज्ञा से उन्हें पेड़ों पर से उतारा और उसी कंदला में जिस में वे जा छिपे थे डाल दिया और कंदला के मुंह पर बड़े बड़े पत्थल ढलकाये सो आज के दिन लों है॥ २८। और उसी दिन यहूसूअ ने मुक्केद: को ले लिया और उसे और उस के राजा को और उस में के सारे प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया और किसी को न छोड़ा उस ने मुक्केद: के राजा से वही किया जो उस ने यरीहो के राजा से किया था॥ २९। तब यहूसूअ सारे इसराएल सहित मुक्केद: से लिबन: को गया और लिबन: से लड़ा॥ ३०। और परमेश्वर ने उसे भी उस के राजा समेत इसराएल के हाथ में कर दिया और उस ने उसे और उस में के समस्त प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया उस ने उस में एक भी न छोड़ा परंतु वहां के राजा से उस ने वही किया जो यरीहो के राजा से किया

था॥ ३१। फिर लिबनः से यहूसूअ सारे इसराएल समेत लकीस को गया और उस के आगे छावनी किई और उस्से लड़ा॥ ३२। और परमेश्वर ने लकीस को इसराएल के हाथ में कर दिया उस ने दूसरे दिन उसे ले लिया और उसे और उस में के सारे प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया जैसा कि उस ने लिबनः से किया था॥ ३३। तब जज़र का राजा हारम लकीस की सहायता को चढ़ आया पर यहूसूअ ने उसे और उस के लोगों को यहां लों मारा कि एक भी न बचा॥ ३४। और यहूसूअ लकीस से सारे इसराएल समेत इजलून को गया और उस के साम्ने छावनी किई और उस्से लड़ा॥ ३५। और उसी दिन उसे ले लिया और उसे तलवार की धार से मारा और उस में के समस्त प्राणियों को सर्बथा नाश किया जैसा कि उस ने लकीस से किया था॥ ३६। फिर इजलून से यहूसूअ सारे इसराएल समेत हबरून को गया और उस्से लड़ा॥ ३७। और उसे लिया और उसे और उस के राजा को और उस के समस्त नगरों को और उस में के समस्त प्राणियों को तलवार की धार से मार डाला जैसा उस ने इजलून से किया था उस में एक को भी न छोड़ा परंतु उसे और उस में के सारे प्राणियों को सर्बथा नाश किया॥ ३८। यहूसूअ सारे इसराएल सहित वहां से दबीर को फिरा और उस्से लड़ा॥ ३९। और उसे और उस के राजा और उस के सारे नगरों को ले लिया और उन्हें तलवार की धार से मार डाला और उस में के समस्त प्राणियों को सर्बथा नाश किया उस ने एक को भी न छोड़ा जैसा उस ने हबरून से और लिबनः से भी किया था वैसा ही दबीर से और उस के राजा से किया॥ ४०। सो यहूसूअ ने पहाड़ों के और दक्षिण की और तराई के और सोतों के देशों को और उन के राजाओं को मारा उस ने एक को न छोड़ा परंतु समस्त स्वासियों को सर्बथा नाश किया जैसी कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने आज्ञा किई थी॥ ४१। और यहूसूअ ने क़ादिसबरनीअ से लेके अ़ज्ज़ः लों और जस्न के सारे देश को जिबअून लों मार डाला॥ ४२। और यहूसूअ ने उन सब राजाओं को और उन के देश को एक ही समय में ले लिया इस कारण कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर

इसराएल के लिये लड़ा उस के पीछे यहूसूअ सारे इसराएल सहित जिलजाल की छावनी को फिर आया॥

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

और यों हुआ कि जब हसूर के राजा यबीन ने सुना तो उस ने मदून के राजा यूबाब और शमरून के राजा और इकशाफ़ के राजा को॥ २। और उन राजाओं को जो पहाड़ में उत्तर दिशा को और किन्नारात की दक्षिण दिशा के चौगान को और तराई में और दोर के सिवाने पश्चिम में॥ ३। और पूर्ब और पश्चिम में कनआनियों को और अमूरियों और हित्तियों और फ़रिज्ज़ियों और यबूसियों को पर्बतों में और हव्वियों को जो हरमून के नीचे मिसफ़: में थे कहला भेजा॥ ४। तब वे अपनी सब सेना समेत बहुत लोग हां समुद्र के तीर की बालू के समान मंडली में घोड़े और बहुत से रथों के साथ बाहर निकले॥ ५। और जब ये समस्त राजा ठहराके एकट्ठे निकले तब उन्हों ने मेरोम के पानियों पर एकट्ठे छावनी किई जिसतें इसराएल से लड़ें॥ ६। तब परमेश्वर ने यहूसूअ से कहा कि उन से मत डर इस कारण कि कल इसी समय उन सभों को इसराएल के आगे मारके डाल देऊंगा तू उन के घोड़ों के पट्ठों की नस काटना और उन के रथों को आग से जला देना॥ ७। सो यहूसूअ और सारे लड़ांके लोग मेरोम के पानियों पास अचानक उन पर आ गिरे॥ ८। और परमेश्वर ने उन्हें इसराएल के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें मारा और बड़े सैदा और मिसरेफोट माइन और पूर्ब में मिसफ: की तराई लों उन्हें रगेदा और यहां लों मारा कि एक भी न बचा॥ ९। और यहूसूअ ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उन के घोड़ों के पट्ठों की नस काटी और उन के रथ जलाये॥

१०। फिर यहूसूअ उसी समय फिरा और हसूर को ले लिया और उस के राजा को तलवार से मारा क्योंकि अगले समय में हसूर समस्त राज्यों से श्रेष्ठ था॥ ११। और उन्हों ने समस्त प्राणियों को जो वहां थे तलवार की धार से मारके सर्बथा नाश किया वहां एक भी श्वास धारी

न बचा श्रीर उस ने हसूर की श्राग से जला दिया॥ १२। श्रीर यहूसूश्र ने उन राजाश्रों के सारे नगरों को श्रीर उन नगरों के सारे राजाश्रों को लिया श्रीर उन्हें तलवार से मारके सर्व्वथा नाश किया जैसी कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने श्राज्ञा किई थी॥ १३। परंतु हसूर को छोड़ उन नगरों को जो अपने टीलों पर थे इसराएल के संतान ने न जलाया॥ १४। श्रीर इन नगरों की सारी लूट श्रीर ढोर को इसराएल के संतान ने अपने लिये रक्खा परंतु हर एक जन को तलवार की धार से मार डाला यहां लों कि उन्हें नाश कर दिया कि एक को भी श्वास लेने को न छोड़ा॥ १५। जैसी कि परमेश्वर ने अपने दास मूसा को आज्ञा किई थी वैसी ही मूसा ने यहूसूश्र को श्राज्ञा किई श्रीर यहूसूश्र ने वैसा ही किया उस ने उन बस्तुन में जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी एक को भी बिन करे अधूरा न छोड़ा॥ १६। सो यहूसूश्र ने उस सारे देश श्रीर पर्ब्बतों को श्रीर दक्षिण के समस्त देश श्रीर जश्न की समस्त भूमि श्रीर तराई श्रीर चौगान श्रीर इसराएल के पहाड़ श्रीर उस की तराई को लिया॥ १७। चिकने पहाड़ से जो शश्रीर की श्रीर चढ़ता है बश्रालगाद लों जो लुबनान की तराई में हरमून पहाड़ के नीचे है ले लिया श्रीर उस ने उन के सारे राजाश्रों को लिया श्रीर उन्हें मारा श्रीर नाश किया॥ १८। श्रीर यहूसूश्र उन समस्त राजाश्रों से बहुत दिन लों लड़ा किया॥ १९। हवियों को छोड़ जो जिबऊन के बासी थे कोई नगर न था जिस ने इसराएल के संतान से मिलाप किया हो परंतु सब को उन्हों ने लड़ाई में लिया॥ २०। क्योंकि यह परमेश्वर की श्रीर से था कि उन के मन को कठोर करे जिसतें वे इसराएल के संतान से लड़ें श्रीर जिसतें वुह उन्हें सर्व्वथा नाश करे श्रीर जिसतें उन पर दया न होवे परंतु जिसतें वुह उन्हें नाश करे जैसी कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥ २१। श्रीर उसी समय यहूसूश्र ने अनाकियों को पहाड़ों से नाश किया श्रीर हबरून से श्रीर दबीर से श्रीर अनाब से यहूदाह के सारे पहाड़ों से श्रीर इसराएल के सारे पहाड़ों से यहूसूश्र ने उन्हें उन के नगरों सहित सर्व्वथा नाश किया॥ २२। सो अनाकियों में से इसराएल के संतानों के देश में कोई न बचा परंतु केवल अज्जः

श्रीर जञ्चत श्रीर अशदूद में कुछ बच थे॥ २३। सो यहूसूअ ने उस समस्त देश को लिया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को कहा था और यहूसूअ ने उसे इसराएल को उन के भागों के और उन की गोष्ठियों के समान अधिकार में दिया और देश ने युद्ध से चैन पाया॥

१२ बारहवां पर्ब्ब।

उस देश के राजा जिन्हें इसराएल के संतानों ने मार डाला और उन का देश यरदन के उस पार उदय की ओर अरनून की नदी से लेके हरमून पहाड़ लों और पूर्ब दिशा के सारे चैागान अधिकार में लिया ये हैं॥ २। सैहून अमूरियों का राजा जो हसबून में रहता था अरूआयर से लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है और नदी के मध्य से और आधे जिलिअद से यबूक की नदी लों जो अम्मून के संतान का सिवाना है॥ ३। और चैागान से पूर्ब ओर कनेरूस के सागर लों और चैागान के सागर लों अर्थात् पूर्ब के खारी सागर लों उस मार्ग से जो बैतजशीमूत को जाता है और दक्षिण से जो पिसगा के सोतों के तले है प्रभुता करता था॥ ४। और बसन के राजा ऊज के सिवाने जो दानव के उबरे हुए में थे जो इसतारात और अद्रिअई में रहता था॥ ५। और हरमून पहाड़ में और सलक में और सारे बसन में जसूरियों और मआकियों का सिवाना और आधा जिलिअद जो हसबून के राजा सैहून का सिवाना था राज्य किया॥ ६। उन को परमेश्वर के सेवक मूसा और इसराएल के संतानों ने मारा और परमेश्वर के सेवक मूसा ने रूबिनियों और जादियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को उसे अधिकार में दिया॥

॥ ७। और उस देश के राजा ये हैं जिन्हें यहूसूअ और इसराएल के संतानों ने यरदन के इस पार पश्चिम दिशा में मारा बअलजद से लेके लुबनान की तराई में चिकने पहाड़ लों जो शईर को जाता है जिसे यहूसूअ ने इसराएल की गोष्ठियों को उन के भागों के समान बांटा॥ ८। हित्ती और अमूरी और कनआनी और फरिज्जी श्रौ हवी और यबूसी जो पहाड़ों में और तराइयों में और चैागानों में और सोतों में और अरण्य में श्रौर दक्षिण देश में रहते थे॥ ९। यरीहो का राजा एक अई का

राजा जो बैतएल के लग है एक॥ १०। यरूसलम का राजा एक हबरून का राजा एक॥ ११। यरमूत का राजा एक लकीस का राजा एक॥ १२। इजलून का राजा एक जज़र का राजा एक॥ १३। दबीर का राजा एक जद्र का राजा एक॥ १४। ज़रमः का राजा एक अराद का राजा एक॥ १५। लिबनः का राजा एक अदूलाम का राजा एक॥ १६। मुक़ैदः का राजा एक बैतएल का राजा एक॥ १७। तुफ़फ़ाह का राजा एक हिफ़र का राजा एक॥ १८। अफ़ीक का राजा एक लशारून का राजा एक॥ १९। मदून का राजा एक हासूर का राजा एक॥ २०। शमरूनमीरून का राजा एक अकशाफ़ का राजा एक॥ २१। तअनाक का राजा एक मजिद्दो का राजा एक॥ २२। क़ादिस का राजा एक यक्रनियम करमिल का राजा एक॥ २३। दोर का राजा दोर के सिवाने में एक जातिगणों का राजा जिलजाल में का एक॥ २४। तिरजः का राजा एक ये सब एकतीस राजा थे॥

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

अब यहूसूअ वृद्ध होके पुरनिया हुआ और परमेश्वर ने उसे कहा कि तू बूढ़ा और पुरनिया हुआ और अब लों बहुत सी भूमि अधिकार के लिये धरी है॥ २। यह देश अब लों धरा है फ़िलिस्तियों का समस्त विभाग और समस्त जसूरी॥ ३। सैहूर से जो मिस्र के आगे है अक़रून के सिवाने लों उत्तर दिशा को कनआन में गिना जाता है जो फ़िलस्तियों के पांच अध्यक्ष हैं गसायी और अशदूदी और अशक़लूनी और गाती और अक़रूनी और औयीम भी॥ ४। दक्षिण दिशा से कनआन के सारे देश और कंदला जो सैदियों के लग है अमूरियों के सिवाने अफ़ीक लों॥ ५। और जब गिबलीयी का देश और सारा लुबनान उदय की ओर बअलजद से जो हरमून के पहाड़ के नीचे है हमात की पैठ लों॥ ६। पहाड़ी देश के समस्त बासी लुबनान से लेके मिसरेफ़ोटमाईम लों और सारे सैदी में उन्हें इसराएल के संतान के साम्ने से दूर करूंगा केवल तू चिट्ठी डालके उसे इसराएलियों को अधिकार के लिये बांट दे जैसी मैं ने तुझे आज्ञा किई है॥ ७। सो अब इस देश को

नव गोष्ठियों को और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को अधिकार के लिये बांट दे॥ ८। जिन के साथ रूबिनी और जद्दी अपना अधिकार पाये हैं जो मूसा ने यरदन के पार उन्हें दिया पर्ब दिशा को जैसा कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया॥ ९। अरआयर से जो अर्नून के तीर पर है और उस नगर से जो पानी के बीचों बीच है और मेदिबा के चौगान से लेके दैबून लों॥ १०। और अमूरियों के राजा सैहून के सारे नगर जो हश्बून में राज्य करता था अम्मून के संतान के सिवाने लों॥ ११। और जिलिअद और जशूरी का सिवाना और मअकाती और हरमून का सारा पर्बत और सारा बसन सलक लों॥ १२। बसन में ऊज का सारा राज्य जो इसतारात और अद्रिअई में राज्य करता था जो दानव के उबरे हुए से बच रहा था सो मूसा ने उन्हें मारा और उन्हें बाहर किया॥ १३। तथापि इसराएल के संतानों ने जशूरी और मअकातियों को दूर न किया परंतु जशूरी और मअकाती आज लों इसराएलियों में बसते हैं॥ १४। केवल लावी की गोष्ठी को अधिकार न दिया इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के होम के बलिदान उस के कहने के समान उन का अधिकार है॥ १५। और मूसा ने रूबिन के संतान की गोष्ठी को उन के घरानों के समान अधिकार दिया॥ १६। और अरआयर से जो अर्नून की नदी के तीर पर है उन का सिवाना था और वुह नगर जो नदी के मध्य में है और सारा चौगान जो मेदिबा के लग है॥ १७। हसबून और उस के सारे नगर जो चौगान में हैं और दैबून और बामोतबअल और बैतबअ बालमऊन का घर॥ १८। और यहासा और कदीमोत और मेफ़अत॥ १९। और करयतैम और सिबमा और जिहरत जो तराई के पहाड़ में हैं॥ २०। और बैतफ़गूर और पिसगः का उतार और बैतुलयसीमात॥ २१। और चौगान के सारे नगर और अमूरियों के राजा सैहून का सारा राज्य जो हश्बून में राज्य करता था जिसे मूसा ने मिदयान के प्रधानों अवी और रकम और सूर और हूर और रबअ जो सैहून के अध्यक्ष उस देश में बसते थे मार डाला॥ २२। और बऊर का बेटा बलआम जो गणक था जिसे इसराएल के संतान ने उन के जूझे हुए के साथ अपनी तलवार से मारा॥ २३। और रूबिन के

संतान का सिवाना यरदन और उस का सिवाना हुआ ये नगर और उन के गांव रूबिन के संतान के घरानें के समान अधिकार में पड़े॥ २४। और मूसा ने जद की गोष्ठी को उन के घरानें के समान भाग दिया॥ २५। और उन का सिवाना यअ़जीर और जिलिआ़द के सारे नगर और अम्मून के संतान का आधा देश अरूआयर लों जो रबः के आगे है॥ २६। और हसबून से रामातमिसप: और बतूनीम लों और महनैन से लेके दबीर के सिवाने लों॥ २७। और बैतुलराम की तराई में और बैतनिमर: और सकूत और साफून जो हशबून के राजा सैहून के राज्य में से बच रहा था और यरदन और उस के सिवाने किनारत के समुद्र के तीर लों यरदन के उस पार पूर्व ओर॥ २८। ये नगर और उन के गांव जद के संतान के अधिकार उन के घरानें के समान हुए॥ २९। और मूसा ने मुनस्सी के संतान की आधी गोष्ठी को भी भाग दिया सो मुनस्सी के संतान की आधी गोष्ठी का भाग उन के घरानें के समान यह था॥ ३०। और उन के सिवाने महानाईम से सारा बाशान और बसन के राजा ऊ़ज का सारा राज्य और यायर के सारे नगर बसन में हैं साठ नगर॥ ३१। और आधा जिलिआ़द और अशतरूत और अद्री बसन के राजा ऊ़ज के नगर मुनस्सी के बेटे माख़ीर के संतान को अर्थात् माख़ीर के आधे संतान उन के घरानें के समान॥ ३२। इन्हें मूसा ने मोअब के चौगान में यरदन के उस पार यरीहो के लग पूर्व की ओर अधिकार के लिये दिया॥ ३३। परंतु मूसा ने लावी के संतान को अधिकार न दिया परमेश्वर इसराएल का ईश्वर उन का अधिकार था जैसा उस ने उन्हें कहा।

१४ चौदहवां पर्व्व।

और इन्हें कनआ़न के देश में इसराएल के संतानें ने अपने अधिकार में लिया जिन्हें इलिअ़ज़र याजक और नून के बेटे यहूसूअ और इसराएल के संतानें की गोष्ठियों के पितरों के प्रधानें ने उन्हें अधिकार में बांट दिया॥ २। जैसा परमेश्वर ने साढ़े नव गोष्ठी के विषय में मूसा के द्वारा से कहा उन का अधिकार चिट्ठी से हुआ॥ ३।

क्योंकि मूसा ने यरदन के उस पार अढ़ाई गोष्ठी को अधिकार दिया था पर लावियों को उन में कुछ अधिकार न दिया॥ ४। क्योंकि यूसफ़ के संतान दो गोष्ठी थे मनस्सी और इफ़रायम सो उन्हों ने लावियों को देश में कुछ भाग न दिया केवल कई एक नगर उन के रहने के लिये और उन के आस पास की बस्तियां उन के ढोर और संपत्ति के लिये॥ ५। जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया और उन्हों ने देश का भाग किया॥ ६। तब यहूदाह के संतान जिलजाल में यहूसूअ पास आये और कनजी यफ़ुन्ने के बेटे कालिब ने उसे कहा कि उस बात को जो ईश्वर ने अपने जन मूसा को मेरे और तेरे विषय में कादिसबरनीअ में कही तू जानता है॥ ७। जिस समय ईश्वर के दास मूसा ने कादिसबरनीअ से मुझे भेजा कि देश का भेद लेओ उस समय मैं चालीस बरस का था और मैं ने उसे अपने मन के समान संदेश पहुंचाया॥ ८। तथापि मेरे भाइयों ने जो मेरे साथ चढ़ गये थे मंडली के मन को पघिला दिया परन्तु मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर का परिपूर्णता से पीछा किया। ९। और मूसा ने उसी दिन किरिया खाके कहा कि निश्चय वुह देश जिस पर तेरे चरण पड़े थे तेरा और तेरे बेटों का सदा का अधिकार होगा इस कारण कि तू ने परमेश्वर मेरे ईश्वर का परिपूर्णता से पीछा किया॥ १०। और अब देख परमेश्वर ने मुझे अपने कहने के समान आज के दिन लों जीता रक्खा और उस समय से लेके जो परमेश्वर ने यह बात मूसा से कही जब कि इसराएल अरण्य में फिरे किये इस समय लों पैंतालीस बरस बीत गये और आज के दिन मैं पचासी बरस का वृद्ध हूं। ११। अब लों मैं ऐसा बली हूं जैसा उस दिन था जब मूसा ने मुझे भेजा जैसा लड़ाई के लिये और बाहर भीतर आने जाने के लिये मेरा बल तब था वैसा ही अब भी है॥ १२। सो अब यह पहाड़ जिस के विषय में परमेश्वर ने उस दिन कहा मुझे दीजिये क्योंकि तू ने उस दिन सुना था कि अनाकी वहां हैं और नगर बड़े और बाड़ित हैं सो यदि ऐसा हो कि परमेश्वर मेरे साथ होवे तब मैं परमेश्वर के कहने के समान उन्हें निकाल देऊंगा॥ १३। तब यहूसूअ ने उसे आशीष दिई और यफ़ुन्नः के बेटे कालिब को हबरून अधिकार में दिया॥

१४। सो हवरून कनजी यफुन्ने के बेटे कालिब का आज लों अधिकार हुआ इस लिये कि उस ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का पीछा परिपूर्णता से किया॥ १५। और अगिले समय में हबरून का नाम करयतअरबअ और जो अर्बा अनाकियों में महाजन था और देश ने लड़ाई से चैन पाया॥

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

और यहूदाह के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उन के घरानों के समान यह थी सीन के बन से दक्षिण दिशा दक्षिण के अत्यंत तीर अदूम के सिवाने लों दक्षिण॥ २। और उस का दक्षिणी सिवाना खारी सागर से अर्थात् उस कोल से जो दक्षिण की ओर जाता है॥ ३॥ और वुह दक्षिण की अलंग अकबिम की ऊंचाई से निकलके सीन लों गया और दक्षिण की ओर से चढ़के हसरून लों गया और कादिसबरनीअ को चढ़ा और करकअ को फिरा॥ ४। और वहां से अजमून को पहुंचा और निकलके मिस्र की नदी लों गया और उस के तीर के निकास समुद्र को गये यही तुम्हारा दक्षिण सिवाना होगा॥ ५। और उस का पूर्व सिवाना खारी समुद्र से यरदन के अंत्य लों और उस का उत्तर का सिवाना समुद्र के कोल से जो यरदन का अत्यंत है॥ ६। और यह सिवाना बैतहजलः को चढ़ गया और बैतुलअरबः के उत्तर की अलंग चला गया और रूबिन के बेटे बुहन के पत्थर लों सिवाना चढ़ गया॥ ७। फिर अकूर की तराई से दबीर की ओर चढ़ गया और यों उत्तर को जिलजाल की ओर गया जो अदूमीम की चढ़ाई के साम्ने है जो नदी के दक्षिण अलंग है और वुह सिवाना ऐनशम्स के पानियों की ओर गया और उस के निकास ऐनराजिल में थे॥ ८। और यबूसी जो यरूसलम हैं उस की उत्तर अलंग हिनम के बेटे की तराई के पास सिवाना चढ़ गया और उस पहाड़ की चोटी लों जो पश्चिम दिशा हिन्नूम की तराई के आगे है जो उत्तर दिशा में दानव की तराई के अंत में है॥ ९। और सिवाना पहाड़ की चोटी से नफतूह के सोता के पास और इफरून पहाड़ के नगरों के पास

जा निकला और वहां से सिवाना बअलः को जो करयतअरीम है खिंच गया॥ १०। और बअलः की पश्चिम दिशा से घूम के सिवाना शईर पहाड़ को और वहां से जियारीम पहाड़ की अलंग गया जो कसलून है उत्तर अलंग की ओर बैतसम्स को उतर गया और तिमनः को निकल गया॥ ११। और सिवाना अक्रून की उत्तर दिशा के पास से जा निकला और सिवाना शिकरून को खिंच गया और बअलः पहाड़ को गया और यबनिएल को निकला और सिवाने के निकास समुद्र को थे॥ १२। और उस का पश्चिम सिवाना महासागर और उस के तीर लों था यह्दाह के संतान के घराने का सिवाना उन के घरानों के समान यह है॥

१३। और उस ने यफुन्ने के बेटे कालिब को यहूदाह के सतानों में जैसी कि परमेश्वर ने यहूसूअ को आज्ञा किई थी क़रयतअरबअ अनाक का पिता जो हबरून है भाग दिया॥ १४। और कालिब ने अनाक के तीन बेटे सीसीया और आमान और तलमी को जो अनाक के संतान हैं वहां से दूर किया॥ १५। और वुह वहां से दबीर के बासियों पर चढ़ा और दबीर का नाम आगे क़रयतसिफ़र था॥ १६। सो कालिब ने कहा कि जो कोई क़रयतसिफ़र को मारे और उसे लेवे मैं उसे अपनी बेटी अकसः को ब्याह देऊंगा॥ १७। तब कालिब के छोटे भाई क़नज़ के बेटे ग़ुतनिएल ने उसे लिया तब उस ने अपनी बेटी अकसः को उस्से ब्याह दिई॥ १८। और ऐसा हुआ कि जब वुह उस पास गई तो उसे उभारा कि वुह उस के पिता से एक खेत मांगे सो वुह अपने गदहे पर से उतरी तब कालिब ने उसे कहा कि तू क्या चाहती है॥ १९। और उस ने उत्तर दिया कि मुझे आशीष दीजिये क्योंकि आप ने मुझे दक्षिण की भूमि दिई सो मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब उस ने उसे ऊपर के सोते और नीचे के सोते दिये॥ २०। यहूदाह के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान यह है॥ २१। और अदूम के सिवाने की ओर दक्षिण दिशा यहूदाह के संतान की गोष्ठी के नगर के अंत्य ये हैं कब्जिएल और अद्र और यजूर॥ २२। और कैनः और दमूना और अदअदः॥ २३। और क़ादिस और हसूर और इतनान॥ २४। ज़ीफ और तुलम और बअलात॥ २५। और हसूर हदता और क़रयत

हसून जो हसर है॥ २६। अमाम और समअ और मोलदः॥ २७। और हसरजद्दः और हशमून और बैतफ़लत॥ २८। और हसर शुआल और बिअरसबः और बिजयूतियाह॥ २९। बअलः और ऐयीम और अज़्म॥ ३०। और इलतवलुद और कसील और ज़रमः॥ ३१। और सिक़लज और मदमन्नः और सनसन्नः॥ ३२। और लिबाअत और शिलहीम और ऐन और रूम्मान ये सब उंतीस नगर और उन के गांव॥ ३३। वे तराई में इसताल और सुरअः और असनः॥ ३४। और जनूह और एनजन्नीम तुफ़्फ़ाह और ऐनाम॥ ३५। यरमूत और अदूलाम सोकः और अज़ीकः॥ ३६। और सग़रीन और अदीतैन और जदीरः और अदीरतैन चौदह नगर उन के गांव समेत॥ ३७। ज़िनान और हदशः और मिजदलजद॥ ३८। और दिलआन और मिसपः और युक़्तिएल॥ ३९। लकीस और बुसक़त और इजलून॥ ४०। और कबून और लहमास और किनलीस॥ ४१। और जदीरात बैतदजून और नअमः और मुक़ेदः सोलह नगर उन के गांवों समेत॥ ४२। लिबनः और अतर और अशन॥ ४३। और इफ़ताह और अशनः और नसीब॥ ४४। और क़ईलः और अकजीब और मरीशः नव नगर उन के गांवों समेत॥ ४५। अक़रून उस के नगर और गांवों समेत॥ ४६। अक़रून से समुद्र लों सब जो अशदूद के आस पास थे उन के गांव समेत॥ ४७। अशदूद अपने नगरों और गांवों सहित अज़्ज़ः अपने नगरों और गांवों समेत मिस्र की नदी लों और महासागर और उस का सिवाना॥ ४८। और पहाड़ में समीर और यतीर और शोकः॥ ४९। और दन्नः और क़रयतसन्नः जो दबीर है॥ ५०। और अनाब और इस्तिमाअ और आनीम॥ ५१। और जशन और होलन और जैलः ग्यारह नगर उन के गांवों समेत॥ ५२। अराब और दूमः और इशआन॥ ५३। और यनूम और बैतुलतफ़ाह और अफ़ीक़ः॥ ५४। और हमतः और क़रयतअरबअ जो हबरून है और सैगूर नव नगर उन के गांवों समेत॥ ५५। और मऊन करमिल और ज़ैफ़ और जत्ता॥ ५६। और यज़रअएल और यक़दीआम और ज़नूह॥ ५७। क़ाइन जिबअः और तिमनः दस नगर उन के गांवों समेत॥ ५८। हलहूल बैतसूर और जदूर॥

५९। और मग़ारात और बैतअनात और इलतकून छः नगर उन के गांवों समेत॥ ६०। क़िरयतबअल जो क़िरयतअरीम और रब्बः है दो नगर उन के गांवों सहित॥ ६१। अरण्य में बैतुलअरबअ मद्दीन और सकाकः॥ ६२। और निबशान और लोन का नगर और ऐनजदी छः नगर उन के गावों समेत॥ ६३। परंतु यबूसी जो यरूसलम में रहते थे सो उन्हें यहूदाह के संतान दूर न कर सके परन्तु यबूसी यहूदाह के संतान के साथ आज के दिन लों यरूसलम में रहते हैं॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

और यूसुफ़ के संतान की चिट्ठी यरदन से यरीहू के पास निकलके यरीहू के पानी के पूर्ब जाती है और उस बन लों जो यरीहू से बैतएल पहाड़ के ओर पार को जाता है॥ २। और बैतएल से निकल के लोज़ को जाके अरकी के सिवानों का अतरात के पास चला॥ ३। और पश्चिम दिशा से यफ़लती के तीर को जाता है नीचे की ओर बैतहोरान के तीर को और जज़र लों पहुंचता है और उस के निकास समुद्र में हैं॥ ४। सो यूसुफ़ के संतान मुनस्सी और इफ़रायम ने अपना अधिकार लिया॥

५। और इफ़रायम के संतान का सिवाना उन के घरानों के समान यह था अर्थात् उन के अधिकार का सिवाना पूर्ब की ओर अतरात अद्दार से ऊपर के बैतहोरान को गया॥ ६। और सिवाना निकलके समुद्र की ओर उत्तर दिशा में मिकमतात को निकला और सिवाना पूर्ब की ओर तानतशैलाह को गया और उस के पूर्ब को होके यनूहा को गया॥ ७। और यनूहा से अतरात को और नारात को और यरीहू को आया और यरदन पास जा निकला॥ ८। पश्चिम का सिवाना तुफ़फ़ाह से क़नः नदी को और उस के निकास समुद्र को हैं इफ़रायम के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान यह है॥ ९। और इफ़रायम के संतान के लिये अलग अलग नगर मुनस्सी के संतान के अधिकार में थे सारे नगर उन के गांवों सहित॥ १०। और उन्हों ने उन कनआनियों को जो जज़र में रहते थे दूर न

किया परंतु कनआनी इफ़रायमियों में आज के दिन लों बस्ते हैं और सेवा करते हैं।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

मुनस्सी की गोष्ठी ने भी अधिकार पाया क्योंकि वुह यसुफ़ का पहिलौंठा था सो जिलिअद के पिता मुनस्सी के पहिलौंठे मकीर ने जो लड़ाका था जिलिअद और बशन अधिकार पाया॥ २। और मुनस्सी के संतान के उबरे हुओं को उन के घरानों के समान अधिकार मिला अबिअज़र के संतान के लिये और खलक़ के संतान के लिये और यसरएल के संतान के लिये और सिकम के संतान के लिये और हिफ़्र के संतान के लिये और सिमीदाअ के संतान के लिये यूसुफ़ के बेटे मुनस्सी के घरानों के समान पुरुष बालक ये थे।

३। परंतु मुनस्सी का बेटा मकीर का बेटा जिलिअद का बेटा हिफ़्र का बेटा सिलाफ़ोहाद के बेटे न थे परंतु बेटियां थीं जिन के नाम ये हैं महलः और हजलः और नूअः और मिलकः और तिरजः॥ ४। सो वे इलिअज़र याजक और नून के बेटे यहूसूअ के और प्रधानों के आगे आके बोलीं कि ईश्वर ने मूसा को आज्ञा किई कि वुह हमारे भाइयों के मध्य में हमें अधिकार देवे सो ईश्वर की आज्ञा के समान उस ने उन के पिता के भाइयों में उन्हें अधिकार दिया॥ ५। सो जिलिअद और बशन के देश को छोड़के जो यरदन के उस पार है मुनस्सी को दस भाग पड़े॥ ६। इस लिये कि मुनस्सी की बेटियों ने अपने भाइयों के साथ अधिकार पाया था और मुनस्सी के उबरे हुए बेटों ने जिलिअद का देश पाया॥ ७। और यसर से लेके मिकमतात लों जो सिकम के सान्ने है मुनस्सी का सिवाना था और सिवाना दहिने से निकलके ऐनतुफ़ाह के बासी लों गया॥ ८। तुफ़ाह का देश मुनस्सी का था परंतु तुफ़ाह जो मुनस्सी के सिवाने में था इफ़रायम के संतान का भाग था॥ ९। सो उस का तीर नल की नाली की दक्षिण ओर था और इफ़रायम के ये नगर मुनस्सी के नगरों में मिले हैं और मुनस्सी का तीर उत्तर की नदी से था और उस के निकास समुद्र में थे॥ १०। सो दक्षिण दिशा

इफ़रायम की ऊई और उत्तर दिशा मुनस्सी की और उस का सिवाना समुद्र था सो वे दोनों उत्तर दिशा यसर और पूर्ब दिशा इशकार से जा मिलीं॥ ११। और मुनस्सी इशकार में और यसर में बैतशन और उस के नगर और इबलिआम और उस के नगर और दार के निवासी और उस के नगर और ऐनदार के निवासी और उस के नगर और तआनाक के बासी और उस के नगर और मजिद्दो के निवासी और उस के नगर अर्थात् तीन देश रखते थे॥ १२। तथापि मुनस्सी के संतान उन नगरों को न ले सके परंतु कनआनी उस देश में बसा चाहते थे॥ १३। तथापि यों ऊआ कि जब इसराएल के संतान प्रबल ऊए तो कनआनियों से कर लिया परंतु उन्हें सर्ब्बथा दूर न किया॥ १४। सो युसफ़ के संतान ने यहूसूअ से कहा कि तू ने किस लिये चिट्ठी में से हमें एक ही अधिकार और केवल एक ही भाग दिया यह जान के कि हम बऊत हैं जैसा कि ईश्वर ने हमें अब लों आशीष दिई है॥ १५। तब यहूसूअ ने उन्हें उत्तर दिया कि यदि तुम बऊत से हो तो बन पर चढ़ जाओ और यदि इफ़रायम तुम्हारे लिये सकेत है तो अपने लिये फ़रिज़्ज़ी के और दानव के देश काटो॥ १६। तब यूसुफ़ ने कहा कि यह पहाड़ हमारे लिये थोड़ा है और समस्त कनआनी जो बैतशान के और उस के नगर के और यज़रअएल की नीचाई के और जो नीचाई के देश में रहते हैं लोहे की गाड़ियां रखते हैं॥ १७। तब यहूसूअ ने यूसुफ़ के संतान इफ़रायम और मुनस्सी से कहा कि तुम तो बड़ी जातिगण हो और बड़ी सामर्थ्य रखते हो तेरे लिये केवल एक ही भाग न होगा॥ १८। परंतु पहाड़ तेरा होगा क्योंकि वुह अरण्य है तू उसे काट डालियो और उस के निकास तेरे होंगे क्योंकि तू कनआनियों को खदेड़ेगा यद्यपि वे लोहे के रथ रखके बली हैं।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

तब सारे इसराएल के संतान की मंडली सैला में एकट्ठी ऊई और वहां मंडली के तंबू को खड़ा किया और देश उन के बश में आया॥ २। और इसराएल के संतानों में सात गोष्ठी रह गई थीं जिन्हों ने

अब लों अधिकार न पाया था॥ ३। सो यहूसूअ ने इसराएल के संतानों से कहा कि कब लों उस देश को बस करने में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुम्हें दिया है आलस्य करोगे॥ ४। सो अपने में से हर एक गोष्ठी में से तीन तीन जन देओ और मैं उन्हें भेजूंगा कि वे उठके उस देश के आरंपार फिरें और उसे अपने अधिकार के समान लिखें और फिर मुझ पास आवें॥ ५। और वे उस के सात भाग करें यहूदाह अपने सिवाने पर दक्षिण की ओर रहे और यूसुफ के घराने उत्तर दिशा में अपने सिवानों पर ठहरें॥ ६। सो उस देश के सात भाग लिख के मुझ पास यहां लाओ जिसतें मैं परमेश्वर के आगे जो हमारा ईश्वर है तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूं॥ ७। परंतु तुम्हों में लावी का भाग नहीं क्योंकि परमेश्वर की याजकता उन का अधिकार है और जद और रूबिन और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने तो यरदन के पार पूर्ब्ब दिशा में अपने अधिकार पाये हैं जो परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया था॥ ८। तब लोग उठ के चले सो जो देश के लिखने को गये थे यहूसूअ ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि उस देश में जाओ और आरंपार फिरो और लिखके मुझ पास फिर आओ जिसतें मैं सैला में परमेश्वर के आगे तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूं॥ ९। सो लोग गये और उस देश में आरंपार फिरे और उसे नगर नगर सात भाग करके एक पुस्तक में बर्णन किया और यहूसूअ पास सैला में तंबू स्थान को फिर आये॥ १०। तब यहूसूअ ने सैला में उन के लिये चिट्ठी डाली और देश इसराएल के संतान को उन के भाग के समान वहां बांट दिया॥ ११। और बिन्यमीन के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उन के घरानों के समान निकली और उन के भाग का सिवाना यहूदाह के संतान और यूसुफ के संतान के मध्य में निकला॥ १२। और उन का सिवाना उत्तर दिशा यरदन नदी से था और उस का सिवाना यरीहू के पास से उत्तर दिशा को चढ़ा और पर्ब्बतों में से पश्चिम चढ़ गया और उस के निकास बैतअवन के बन में थे॥ १३। और सिवाना वहां से लौज़ की ओर गया लौज़ की अलंग जो बैतएल है दक्षिण दिशा को और सिवाना अतरातअद्दार को उतरा उस पहाड़ के पास जो नीचे के बैतहौरान की दक्षिण की ओर

है॥ १४। और खेंचा जाके सिवाना वहां से होके उस पहाड़ पास जो बैतहोरान के दक्षिण को है दक्षिण की ओर समुद्र के कोने को और उस के निकास क़रयतबअल को थे जो करयतअरीम है यहूदाह के संतान का एक नगर जो पश्चिम की ओर॥ १५। और दक्षिण की अलंग क़रयतबअल के अंत से और सिवाना पश्चिम को गया और निकल के नफ़तूह के पानियों के कूए को गया॥ १६। और सिवाना उस पहाड़ पास जो हिनम के बेटे की तराई के आगे है उतरा जो दानव की तराई के उत्तर को है और दक्षिण हिनम की तराई को दक्षिण को यबूसी की अलंग में ऐनराजिल को उतर गया॥ १७। और उत्तर से खेंचा जाके ऐनशम्स को निकल गया और वहां से गलीलूत की ओर जो अदूमीम की घाटी के साम्ने है और वहां से रूबिन के बेटे बुहन के पत्थर लों उतरा॥ १८। और उत्तर दिशा से चौगान के साम्ने होके उस की अलंग की ओर निकल गया और अरबः को उतरा॥ १९। फिर उत्तर दिशा से निकल के बैतहजलः की एक ओर को गया और सिवाने के निकास उत्तर को खारी समुद्र के कोल पर और यरदन के दक्षिण अंत को थे यही दक्षिण तीर था॥ २०। और उस का पूर्ब सिवाना यरदन था बिनयमीन के संतान के सिवाने का अधिकार उस के सब तीरों के समान उन के घरानों के समान चारों ओर यह था॥ २१। अब वे बस्तियां जो बिनयमीन के संतान की गोष्ठी की थीं उन के घरानों के समान यरीहू और बैतहजलः और कोसिस की तराई थीं॥ २२। और बैतुलअरबः और सरैन और बैतएल॥ २३। और ऐयीम और फ़ारह और जफ़रः॥ २४। और कफ़्रअम्मूनी और जफनी और जिबअ बारह नगर उन के गांव सहित॥ २५। जिबजन और रामः और बिअरात॥ २६। और मिसपः और कफ़ीरः और मोजः॥ २७। और रेक़म और इरफ़ाएल और तरलः॥ २८। और ज़िलअ अलिफ और यबूसः जो यरूसलम है और गबियातकरियास चौदह नगर उन के गांव सहित बिनयमीन के संतान का अधिकार उन के घरानों के समान यह है।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब ।

और दूसरी चिट्ठी समऊन के संतान की गोष्ठी की उन के घरानें के समान निकली और उन का अधिकार यहूदाह के संतान के अधिकार के भीतर था॥ २। और उन के अधिकार में बिअरसबः और सबअ् और मोलदः था और हसरसूआल और बलह और अज़्म॥ ४। और इलतवलुद और बतूल और ऊरमः॥ ५। और सिकलज और बैतमरकबात और हसारसूसः॥ ६। और बैतलिबाबात और सरूहन तेरह नगर उन के गांव समेत॥ ७। ऐन रूम्मान और अतर और असन चार नगर उन के गांव समेत॥ ८। और सारे गांव जो उन नगरों के आस पास थे बअलतबिअ्र दक्षिण का रामात समऊन के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानें के समान यह है॥ ९। यहूदाह के संतान के भाग में से समऊन के संतान का भाग था इस लिये कि यहूदाह के संतान के भाग का देश उन के लिये अधिक था इस कारण समऊन के संतान ने उन के अधिकार के भीतर अपना भाग पाया॥

१०। और तीसरी चिट्ठी ज़बुलून की उन के घरानें के समान निकली से। उन के अधिकार का सिवाना सारीद लों ऊआ॥ ११। और उन का सिवाना समुद्र की ओर मरअलः को ओर गया और दबासत लों पऊंचा और युकनिआम के आगे की नदी लों गया॥ १२। और पूर्ब ओर सलीद से फिरके सूर्य्य के उदय की ओर किसलाततबूर के सिवाने की ओर निकल जाता है और वहां से दाबरत और यफीअ पर चढ़ा॥ १३। और वहां से जाते जाते पूर्ब की ओर जअतहिफर और ऐतकाज़ीन लों गया और वहां से मूनमथूआरनीअः पास जा निकला॥ १४। और उस का सिवाना उत्तर अलंग हनातोन को घूम जाता है और उस के निकास इफ़ताहिएल की तराई हैं॥ १५। और कत्तत और नहलाल और समरून और इदअलः और बैतलहम बारह नगर उन के गांव सहित॥ १६। ये सब नगर और उन के गांव ज़बुलून के संतान के घरानें के अधिकार थे॥

१७। और इशकार के संतान के घरानें के समान इशकार के लिये चौथी चिट्ठी निकली॥ १८। और उन का सिवाना यजरअएल और कसूलात और शूनेम की ओर था॥ १९। और हफ़रैन और शेयून और अनाहरत॥ २०। और रब्बियत और किसयुन और इबसान॥ २१। और रमत और ऐनजन्नीम और ऐनहद्दः और बैतफ़सीस॥ २२। उन का सिवाना तबूर और शखसीम और बैतशम्स से जा मिला और उस के सिवाने के निकास यरदन को ऊए सोलह नगर उन के गांव समेत॥ २३। ये नगर और उन के गांव इशकार के संतान का अधिकार उन के घरानें के समान है॥

२४। और पांचवीं चिट्ठी यसर के संतान की गोष्ठी के लिये उन के घरानें के समान निकली॥ २५। और उन का सिवाना हलक़ात और हली और बतन और इकशाफ ऊआ॥ २६। और अलमलिक और अमिआद और मिसाल और उन का सिवाना पश्चिम दिशा करमिल और सैह्र लिबनात लों पऊंचता है॥ २७। और उदय की ओर बैतदजून को फिरा और ज़बुलून और इफताहिएल की तराई को बैतुलउमुक़ की उत्तर ओर जा मिला और नगिएल और कबूल के बाईं ओर निकलता है॥ २८। और अबरून और रह्लब और हम्मून और क़ाना बड़े सिद्दून लों॥ २९। और उस का तीर रामा को और दृढ़ नगर सूर को फिर जाता है और वहां से मुड़ के ह्लसः लों गया और उस के निकास समुद्र के तीर से अकज़ीब को॥ ३०। और अम्मः और अफीक़ और रह्लब बाईस नगर उन के गांव सहित॥ ३१। यसर के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानें के समान ये नगर उन के गांवें सहित॥ ३२। छठवीं चिट्ठी नफ़ताली के संतान के अर्थात् नफ़ताली के संतान के घरानें के समान निकली॥ ३३। और उन के सिवाने हिलफ़ से अलून से ज़अनन्नीम को और अदामीनकब और यिब्निएल लकूम लों और उस के निकास यरदन से थे॥ ३४। और सिवाना पश्चिम दिशा को फिर के उज़नातुलतबूर को जाता है और वहां से जाके हकूक को दक्षिण दिशा ज़बुलून को पऊंचता है और पश्चिम दिशा में यसर को पऊंचता है और पूर्व्व की ओर यरदन पर यह्लदाह से जा मिलता है॥

३५। और सिद्दीम और सूर और हमात और रक्कत और किन्नारात ये बाड़ित नगर हैं॥ ३६। और अदामः और रामा और हसूर॥ ३७। और क़ादिस और अद्रिअई और एनहसूर॥ ३८। और इरयून और मजदिएल हरीम और बैतअनात और बैतशम्श उन्नीस नगर उन के गांवों सहित॥ ३९। ये नगर और उन के गांव नफ़ताली के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान था॥ ४०। और सातवीं चिट्ठी दान के संतान की गोष्ठी के घरानों के समान निकली॥ ४१। और उन के अधिकार के सिवाने सुरअः और इशताल और ईरिशम्स थे॥ ४२। और सअलबीन और ऐयलून और इतलाह॥ ४३। और ऐलून और तमनात और अक़रून॥ ४४। और इलतक़ी और जिबतून और बअलात॥ ४५। और यिहूद और बनीबरक़ और जअतरूम्मान॥ ४६। और मेयरकून और रक्कून उस सिवाने समेत जो याफ़ा के सन्मुख है॥ ४७। और दान के संतान का सिवाना निकला वुह उन के लिये थोड़ा था इस लिये दान के संतान लसिम से लड़ने को चढ़ गये और उसे ले लिया और उसे तलवार की धार से मार डाला और उसे वश में कर लिया और उस में बसे और लसिम का नाम दान रक्खा जो उन के पिता का नाम था॥ ४८। ये सब नगर उन के गांवों समेत दान के संतान की गोष्ठी का भाग था॥

४९। जब उन्हों ने अधिकार के लिये अपने सिवानों के समान देश का बांटना समाप्त किया तब इसराएल के संतान ने नून के बेटे यहूसूअ को अपने मध्य में अधिकार दिया॥ ५०। उस ने तिमनत सिरह का नगर जो इफ़रायम के पहाड़ में है मांगा सो उन्हों ने परमेश्वर के बचन के समान उसे दिया और उस ने उस नगर को बनाया और उस में जा बसा॥ ५१। ये वे अधिकार हैं जिन्हें इलिअज़र याजक ने और नून के बेटे यहूसूअ ने और इसराएल के संतान की गोष्ठियों के पितरों के प्रधानों ने चिट्ठी डाल के सैला में परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर अधिकार के लिये बांट दिया सो उन्हों ने देश का बांटना समाप्त किया॥

२० बीसवां पर्व्व ।

और परमेश्वर यहूसूअ से कहके बोला॥ २। कि इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि अपने लिये शरण के नगर ठहराओ जिन के बिषय में मैं ने तुम्हें मूसा के द्वारा से कहा॥ ३। जिसतें वुह घातक जो अज्ञान से अथवा आकस्मात् किसी को मार डालके वहां भागे तो लोहू के पलटा लेवैये से वे तुम्हारे शरण होवें॥ ४। और जब कोई उन में से किसी एक नगर में भाग जाय तो नगर के फाटक की पैठ में खड़ा रहे और उस नगर के प्रधानों से अपना समाचार बर्णन करे तब वे उसे नगर में अपने पास लेवें और स्थान देवें कि वुह उन के साथ रहे॥ ५। और यदि घात का पलटा लेवैया उसे खेदे तो वे घातक को उसे न सौंपे क्योंकि उस ने अपने परोसी को अज्ञान से मारा और उस्से आगे बैर न रखता था॥ ६। और वुह उसी नगर में रहे जब लों न्याय के लिये मंडली के आगे न खड़ा होवे और जब लों प्रधान याजक न मरे जो उन दिनों में होवे उस के पीछे वुह घातक फिरे और अपने नगर में और अपने घर में जाय उस नगर में जहां से वुह भागा था॥ ७। सो उन्हों ने बचाव के लिये जलील में क़ादिश को नफ़ताली पर्वत पर और इफ़रायम पर्वत पर शकीम को और क़रयतअरबअ को जो हबरून है यहूदाह के पहाड़ में पवित्र किया॥ ८। और यरदन के पार यरीहू के पास और पूर्व दिशा को बुसर के अरण्य में रूबिन के संतान की गोष्ठी के चौगान में और रामात जिलिआद में जो जद की गोष्ठी का है और जौलान मुनस्सी की गोष्ठी के बसन में ठहराया॥ ९। सारे इसराएल के संतान के लिये और उस परदेशी के लिये जो उन में बसता है इन बस्तियों को ठहराया जिसतें जो कोई कि अज्ञान से किसी को मार डाले सो उधर भागे और जब लों कि मंडली के आगे न आवे तब लों लोहू के पलटा लेवैये के हाथ से मारा न जावे।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

तब लावियों के पितरों के प्रधान इलिअज़र याजक और नून के बेटे यहूसूत्र और इसराएल के संतान की गोष्ठियों के पितरों के प्रधान पास आये॥ २। और वे कनआन के देश सैला में उन्हें कहके बोले कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई कि हमारे निवास के लिये बस्तियां उन के उप नगर सहित हमारे ढोरों के लिये हमें दिई जावें॥ ३। तब इसराएल के संतान ने अपने अधिकार में से परमेश्वर की आज्ञा के समान ये नगर और उन के आस पास लावियों को दिया॥ ४। सो चिट्ठी किहातियों के घरानों के लिये और हारून याजक के वंश के जो लावियों में से थे उन्हों ने चिट्ठी डाल के यहूदाह की गोष्ठी और समऊन की गोष्ठी और बिनयमीन की गोष्ठी में से तेरह नगर पाये॥ ५। और किहात के उबरे हुए वंश ने इफ़रायम की गोष्ठी के घरानों में से और दान की गोष्ठी में से और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से दस नगर पाये॥ ६। और जैरशुन के संतान ने चिट्ठी के समान इशकार की गोष्ठी के घराने में से और इशकार की गोष्ठी में से और नफ़ताली की गोष्ठी में से और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से बसन में तेरह नगर पाये॥ ७। मिरारी के संतान ने अपने घरानों से रूबिन की गोष्ठी में से और जद की गोष्ठी में से और ज़बुलून की गोष्ठी में से बारह नगर पाये॥ ८। और इसराएल के संतान ने चिट्ठी डाल के ये नगर और उन के आस पास जैसी परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई थी लावियों को दिया॥ ९। सो उन्हों ने यहूदाह के संतान की गोष्ठी में से और समऊन के संतान की गोष्ठी में से ये नगर दिये जिन के नाम लिये जाते हैं॥ १०। हारून के संतान को जो किहातियों के घराने में से थे क्योंकि पहिली चिट्ठी उन के नाम की थी॥ ११। सो उन्हों ने अनाक़ के पिता अरबअ का नगर जो हबरून है यहूदाह के पहाड़ पर उस के चारों ओर के आस पास समेत उन्हें दिये॥ १२। परंतु नगर के खेत और उस के गांव उन्हों ने यफुन्नः के बेटे कालिब को अधिकार के लिये दिया॥ १३। सो उन्हों ने हारून याजक के संतान को घातक के

शरण के नगर के लिये हबरून का नगर और लिबनः उस के आस पास समेत दिये॥ १४। और यतीर उस के आस पास समेत और इस्तिमाअ उस के आस पास समेत॥ १५। और होलून उस के आस पास समेत और दबीर उस के आस पास समेत॥ १६। और ऐन उस के आस पास समेत और युतः उस के आस पास समेत और बैतशम्स उस के आस पास समेत नव नगर उन दोनों गोष्ठियों में से॥ १७। और बिनयमीन के घरानों में से जिबऊन उस के आस पास समेत और जिबअ उस के आस पास समेत॥ १८। और अनतात उस के आस पास समेत और अलमून उस के आस पास समेत चार नगर॥ १९। सारे नगर हारून याजक के संतान के तेरह नगर उन के आस पास समेत थे॥ २०। और किहात के संतान के घरानों को लावियों से जो किहात के संतान में से उबरे हुए थे इफ़रायम के घरानों में से ये नगर अधिकार मिले॥ २१। और घातक के शरण का नगर इफ़रायम के पहाड़ में शकीम को उस के आस पास सहित दिया और जज़र उस के आस पास सहित॥ २२। और कबज़ैन उस के आस पास सहित और बैतहौरान उस के आस पास सहित चार नगर॥ २३। और दान की गोष्ठी में से इलतकी उस के आस पास सहित जिबतून उस के आस पास समेत॥ २४। ऐलून उस के आस पास समेत जअतरुम्मान उस के आस पास समेत चार नगर॥ २५। और मनस्सी की आधी गोष्ठी में से तअनाक उस के आस पास सहित और जअतरुम्मान उस के आस पास समेत दो नगर॥ २६। ये सब दस नगर अपने अपने आस पास समेत किहात के बचे हुए बंश के घरानों को मिले॥ २७। और जैरसुन के संतान को जो लावियों के घरानों में से हैं मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से घातक के शरण के लिये उन्हों ने बशन में जौलान उस के आस पास समेत और बइस्तारः उस के आस पास समेत दो नगर दिये॥ २८। और इशकार की गोष्ठी में से कसून उस के आस पास सहित और दाबरत उस के आस पास सहित॥ २९। यरमूत उस के आस पास सहित ऐनजन्नीम उस के आस पास समेत चार नगर॥ ३०। और यसर की गोष्ठी में से मिशाल उस के आस पास समेत अबदून उस के आस पास समेत॥ ३१। हलकाथ उस के आस

पास समेत और रहूब उस के आस पास समेत चार नगर॥ ३२। और नफ्‌ताली की गोष्ठी में से गलील में क़ादिस उस के आस पास समेत घातक के शरण के नगर के लिये और हमूतडूर उस के आस पास सहित और क़रतान उस के आस पास सहित तीन नगर॥ ३३। जैरसूनियों के सारे नगर उन के घरानों के समान तेरह नगर उन के आस पास सहित॥ ३४। और मिरारी के संतान के घरानों को जो लावियों में से उबरे थे ज़बुलून की गोष्ठी में से ये नगर मिले युक़निआम उस के आस पास सहित क़रतह उस के आस पास सहित॥ ३५। दिमनः उस के आस पास समेत नाहलाल उस के आस पास सहित चार नगर॥ ३६। और रूबिन की गोष्ठी में से बुसर उस के आस पास सहित और यहज़ा उस के आस पास समेत॥ ३७। क़दमत उस के आस पास सहित और मीफ़ात उस के आस पास समेत चार नगर॥ ३८। और जद की गोष्ठी में से घातक के शरण का नगर जिलिअद में से रामत उस के आस पास सहित और महनैन उस के आस पास समेत॥ ३९। हशबून उस के आस पास समेत यासर यअज़ीर उस के आस पास समेत सब में चार नगर॥ ४०। वे सारे नगर मिरारी के संतान के घरानों के लिये जो उबरे थे बारह नगर चिट्ठी से मिले॥ ४१। इसराएल के संतान के अधिकार में लावियों के सब नगर अठतालीस थे उन के आस पास सहित॥ ४२। उन नगरों में से हर एक नगर अपने आस पास समेत चारों ओर योंही समस्त नगर थे॥ ४३। सो परमेश्वर ने सब देश जिस के विषय में उस ने उन के पितरों को देने को किरिया खाई थी इसराएल को दिया सो उन्हों ने उसे वश में किया और उस में बसे॥ ४४। और परमेश्वर ने अपनी किरिया के समान जो उन के पितरों से खाई थी चारों ओर में उन्हें चैन दिया और उन के सब शत्रुन में से एक भी उन के साम्ने न ठहरा परमेश्वर ने उन के सारे शत्रुन को उन के हाथ में कर दिया॥ ४५। उन सारी अच्छी बातों में से जो परमेश्वर ने इसराएल के घराने को कही थीं एक बातें न घटी सब की सब पूरी हुईं॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

तब यहूसूआ ने रूबिनियों और जदियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को बुलाया॥ २। और उन्हें कहा कि उन सब को जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा किई तुम ने पालन किया और उन सब बातों को जो मैं ने तुम्हें कहीं तुम ने माना॥ ३। तुम ने अपने भाइयों को बहुत दिनों से आज लों नहीं छोड़ा परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन किया॥ ४। और अब परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे भाइयों को चैन दिया जैसी उस ने उन से बाचा बांधी थी सो तुम अब फिर जाओ और अपने तंबूओं के अधिकार की भूमि में जाओ जो परमेश्वर के दास मूसा ने यरदन के उस पार तुम्हें दिई है॥ ५। परंतु चौकसी के साथ आज्ञा और व्यवस्था जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा दिई है पालन करो जिसतें परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रक्खो और उस की सारी बातों पर चलो और उस की आज्ञाओं को पालन करो और उस्से लौलीन रहो और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उस की सेवा करो॥ ६। और यहूसूआ ने उन्हें आशीष दिई और उन्हें बिदा किया सो वे अपने अपने तंबूओं को गये॥

७। और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को मूसा ने बसन में अधिकार दिया था और उस की आधी को यहूसूआ ने उन के भाइयों के मध्य में यरदन के इसी पार पश्चिम दिशा में अधिकार दिया और जब यहूसूआ ने उन्हें अपने अपने तंबूओं को बिदा किया तब उन्हें भी आशीष दिई॥ ८। और उन्हें कहा कि बड़े धन के साथ बहुत से ढोर और चांदी और सोना और तांबा और लोहा और बहुत से बस्त्र लेके अपने डेरों को जाओ और अपने शत्रुन की लूट को अपने भाइयों के साथ बांट लेओ॥ ९। तब रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी फिरे और सैला में से जो कनआन की भूमि है इसराएल के संतान से चले गये जिसतें जिलिआद के देश को जो उन के अधिकार का देश था जावें जिसे उन्हों ने मूसा के द्वारा से परमेश्वर के बचन के समान पाया था॥ १०। और जब कि वे यरदन के सोना कनआन के देश में पहुंचे तो रूबिन के संतान और

जद के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने वहां यरदन पास एक बेदी बनाई एक बड़ी बेदी कि उसे देखा करें॥ ११। और इसराएल के संतान ने यह सुन के कहा कि देखो रूबिन के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने कनआन देश के साम्ने यरदन के तीर पर इसराएल के संतान के मार्ग में बेदी बनाई॥ १२। और जब इसराएल के संतान ने सुना तो इसराएल की सारी मंडली सैला में एकट्ठी हुई जिसतें उन पर लड़ाई के लिये चढ़ जाय॥ १३। और इसराएल के संतान ने रूबिन के संतान के और जद के संतान के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी के पास इलिआज़र याजक के बेटे फ़ीनिहास को भेजा॥ १४। और उस के संग दस अध्यक्ष इसराएल की समस्त गोष्ठीयों में हर एक घर में से श्रेष्ठ अध्यक्ष भेजा जो उन में से हर एक अपने पितरों के घरानों में सहस्रों इसराएलियों का प्रधान था॥

१५। सो वे रूबिन के संतान और जद के संतान के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी पास जिलिआद के देश में आये और उन से कहके बोले॥ १६। कि परमेश्वर की सारी मंडलियों ने कहा है कि तुम ने इसराएल के संतान के ईश्वर के बिरोध यह क्या अपराध किया है जो तुम आज के दिन परमेश्वर का पीछा करने से उस बात में फिर गये कि अपने लिये एक बेदी बनाई जिसतें तुम आज के दिन परमेश्वर के बिरोधी होओ॥ १७। क्या हमारे लिये फ़ग़ूर की बुराई कुछ थोड़ी थी जिस्से हम आज के दिन लों पवित्र नहीं हुए यद्यपि परमेश्वर की मंडली में मरी थी॥ १८। परंतु क्या तुम्हें उचित था कि आज के दिन परमेश्वर की सेवा करने से फिर जाओ आज तो तुम परमेश्वर से फिरे हुए हो और कल इसराएल की सारी मंडली पर उस का कोप भड़केगा॥ १९। तथापि यदि तुम्हारे अधिकार की भूमि अशुद्ध होवे तो पार आओ इस देश में जो परमेश्वर का अधिकार है जहां परमेश्वर का तंबू है और हमारे बीच अधिकार लेओ परंतु हमारे ईश्वर परमेश्वर की बेदी को छोड़ अपने लिये बेदी बना के परमेश्वर से और हम से मत फिर जाओ॥ २०। क्या शारिक के बेटे अकन ने स्थापित बस्तु में चूक न किया और इसराएल की सारी मंडली पर कोप न पड़ा और वुह जन

अकेला ही अपनी बुराई से नाश न ऊआ॥ २१। तब रूबिन के संतान और जद् के संतान और मुनस्सी की आधी गोष्टी ने इसराएलियों के सहस्त्रों के प्रधानों को उत्तर देके कहा॥ २२। कि परमेश्वर ईश्वरों का ईश्वर परमेश्वर ईश्वरों का ईश्वर ही जानता है और इसराएली भी जानेगा कि यदि फिर जाने में अथवा परमेश्वर के बिरोध करने में यह किया तो हमें आज के दिन मत छोड़॥ २३। अथवा हम ने बेदी बनाई जिसतें परमेश्वर की सेवा से फिरें अथवा उस पर होम की भेंटें अथवा भोजन की भेंट अथवा कुशल की भेंट चढ़ावें तो परमेश्वर ही बिचार करे॥ २४। और यदि हम ने उस भय से यह कहके किया है कि आगे को तुम्हारा बंश हमारे बंश को कहके बोले कि तुम्हें परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से क्या काम॥ २५। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे और तुम्हारे मध्य में यरदन की मेड़ बांधी सो हे रूबिन के संतान और जद् के संतान परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं सो तुम्हारा बंश हमारे बंश को परमेश्वर के भय से फेर देवे॥ २६। इस लिये हम ने कहा कि आओ हम अपने लिये एक बेदी बनावें कुछ होम की भेंटों के और बलिदान के लिये नहीं॥ २७। परंतु इस लिये कि यह हमारे तुम्हारे मध्य में और हमारे पीछे हमारी पीढ़ियों के मध्य में एक साक्षी होवे जिसतें हम परमेश्वर के आगे अपनी होम की भेंटों से और बलिदानों से और अपने कुशल के बलिदानों से परमेश्वर की सेवा करें जिसतें आगे को तुम्हारे बंश हमारे बंश को न कहें कि परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं॥ २८। इस लिये हम ने कहा कि ऐसा होगा कि जब वे हमें अथवा हमारे बंश को आगमी काल में कहें तब हम उन्हें उत्तर देंगे कि देखो परमेश्वर की बेदी का डौल जिसे हमारे पितरों ने बनाया कुछ होम की भेंट और मनौती की भेंट के लिये नहीं परंतु इस लिये कि हमारे तुम्हारे मध्य में साक्षी रहे॥ २९। ईश्वर न करे कि हम परमेश्वर से फिर जायें और आज परमेश्वर से फिर के परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी को छोड़ें जो उस के तंबू के साम्ने है और होम की भेंटें और भोजन की भेंटें और बलिदान के लिये एक बेदी बनावें॥ ३०। जब फीनिहास याजक और मंडली के अध्यक्ष और इसराएल के सहस्त्रों के प्रधानों ने

जो उस के साथ थे ये बातें सुनीं जो रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी के संतान ने कहीं तब उन की दृष्टि में अच्छा लगा॥ ३१। तब इलिअज़र के बेटे फीनिहास याजक ने रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी के संतान से कहा कि आज के दिन हम देखते हैं कि परमेश्वर तुम्में है इस कारण कि तुम ने परमेश्वर का अपराध न किया क्योंकि तुम ने इसराएल के संतान को परमेश्वर के हाथ से छुड़ाया॥ ३२। तब इलिअज़र का बेटा फीनिहास याजक और अध्यक्ष और रूबिन के संतान और जद के संतान पास से जिलिअद की भूमि से कनआन के देश में इसराएल के संतान पास फिर आये और उन पास संदेश पहुंचाये॥ ३३। और उसी बात से इसराएल के संतान प्रसन्न हुए और इसराएल के संतान ने ईश्वर की स्तुति किई और न चाहा कि युद्ध के लिये उन पर चढ़ जायें और उस देश को जिस में रूबिन के संतान और जद के संतान बसते थे उजाड़ देवें॥ ३४। तब रूबिन के संतान और जद के संतान ने उस बेदी का नाम साक्षी रक्खा क्योंकि वुह हमारे मध्य में एक साक्षी ठहरी कि परमेश्वर ईश्वर है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

जब परमेश्वर ने इसराएल को उन के सारे शत्रुन से चैन दिया तो बहुत दिन पीछे यों हुआ कि यहूसूअ वृद्ध और दिनी हुआ॥ २। तब यहूसूअ ने सारे इसराएल और उन के प्राचीन और उन के प्रधान और उन के न्यायी और उन के कड़ारों को बुलाया और उन्हें कहा कि मैं वृद्ध और दिनी हूं॥ ३। और सब कुछ जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उन सब जातिगणों के साथ किया देख चुके हो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर आप तुम्हारे लिये लड़ा॥ ४। देखो मैं ने चिट्ठी डाल के इन सब जातिगणों को जो बचे हैं तुम्हारी गोष्ठियों के लिये यरदन से लेके समस्त जातिगणों के साथ जिन्हें मैं ने काट डाला है अर्थात् अस्त की ओर महा समुद्र लों अधिकार दिया॥ ५। और परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही उन्हें तुम्हारे आगे निकाल देगा और तुम्हारी दृष्टि से दूर करेगा और तुम उन की भूमि को बश में करोगे जैसी कि परमेश्वर तुम्हारे

ईश्वर ने तुम से बाचा बांधी है॥ ६। इस लिये सब जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उन्हें पालन करने को और धारण करने को हियाव करो जिसतें दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ो॥ ७। जिसतें तुम इन जातिगणों में जो तुम्हों में बचे हैं मत जाओ और उन के देवों के नाम मत लेओ और उन की किरिया मत खाओ और उन की सेवा मत करो और न उन को दंडवत करो॥ ८। परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर से लौलीन रहो जैसा आज के दिन लों रहे हो॥ ९। क्योंकि ईश्वर ने तुम्हारे आगे बड़े बड़े और बलवंत जातिगणों को नष्ट किया परंतु कोई आज के दिन लों तुम्हारे साम्ने ठहर न सका॥ १०। तुम्में से एक पुरुष सहस्र को खेदेगा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर है जो तुम्हारे लिये लड़ता है जैसी उस ने तुम से बाचा बांधी है॥ ११। इस लिये अपने प्राण को अत्यंत चौकसी से रक्खो और परमेश्वर अपने ईश्वर को प्यार करो॥ १२। यदि तुम किसी रीति से फिर जाओ और इन्हीं जातिगणों में मिल जाओ जो तुम्हारे मध्य बचे हैं और उन के साथ बिवाह करो और उन में आया जाया करो॥ १३। तो निश्चय जानो कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर फिर उन लोगों को तुम्हारे आगे से दूर न करेगा परंतु वे तुम्हारे लिये फंदे और जाल और तुम्हारे पंजरों में छड़ियां और तुम्हारी आंखों में कांटे होंगे यहां लों कि उस अच्छे देश में से जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें दिया है तुम नाश हो जाओ॥ १४। और देखो आज के दिन मैं समस्त पृथिवी के मार्ग जाता हूं और तुम अपने सारे मन में और सारे प्राण में जानते हो कि उन सब भली बातों से जो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे बिषय में कहीं हैं एक भी न घटी परंतु सब की सब पूरी हुईं और एक भी न घटी॥ १५। सो ऐसा होगा कि जिस रीति से वुह सारी भलाइयां जिन के कारण परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने बाचा बांधी थी तुम्हारे आगे आईं उसी रीति से परमेश्वर सारी बुराइयां तुम पर लावेगा यहां लों कि उस अच्छे देश में जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें दिया है तुम्हें नाश करे॥ १६। जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की उस बाचा को जो उस ने तुम से बांधी भंग करोगे और जाके और देवतों की सेवा करोगे और उन्हें दंडवत करोगे

तब परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और तुम उस अच्छे देश से जो उस ने तुम्हें दिया है शीघ्र नाश हो जाओगे॥

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

तब यहूसूअ ने सारे इसराएल की गोष्ठियों को सिकम में एकट्ठा किया और इसराएल के प्राचीनों को और उन के प्रधानों को और उन के न्यायियों को और उन के करोड़ों को बुलाया और वे ईश्वर के साम्ने खड़े हुए॥ २। तब यहूसूअ ने सब लोगों को कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम्हारे पितर अबिरहाम का पिता तारह और नहूर के पिता प्राचीन समय से नदी के उस पार रहते थे अरु और देवतों की सेवा करते थे॥ ३। और मैं तुम्हारे पिता अबिरहाम को नदी के उस पार से लेके कनआन के समस्त देश में लिये फिरा और उस के बंश को बढ़ाया और उसे इज़हाक दिया॥ ४। और इज़हाक को यअ़कूब और एसौ दिये और एसौ को रहने के लिये सीर पहाड़ दिया परंतु यअ़कूब और उस के बंश मिस्र को उतर गये॥ ५। तब मैं ने मूसा और हारून को भेजा और उन सब कामों से जो मैं ने वहां किये मिस्र को मारा और उस के पीछे तुम्हें निकाल लाया॥ ६। और मैं तुम्हारे पितरों को मिस्र से निकाल लाया और तुम समुद्र पर आये तब मिस्रियों ने रथ और घोड़ चढ़े लेके लाल समुद्र लों तुम्हारा पीछा किया॥ ७। और जब उन्हों ने परमेश्वर की प्रार्थना किई तब उस ने तुम्हारे और मिस्रियों के मध्य अंधियारा कर दिया और समुद्र को उन पर फेर दिया और उन्हें ढांप लिया और जो कुछ मैं ने मिस्रियों पर किया तुम ने अपनी आंखों से देखा और तुम बहुत दिन लों अरण्य में रहा किये॥ ८। फिर मैं तुम्हें उन अमूरियों के देश में जो यरदन के उस पार रहते थे ले आया और वे तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंप दिया जिसतें तुम उन के देश को बश में करो और मैं ने उन्हें तुम्हारे आगे नाश किया॥९। तब मोअब का राजा सफ़ूर का बेटा बलक उठा और इसराएल से लड़ा और बऊर के बेटे बलआम को बुला भेजा कि तुम्हें स्राप देवे॥ १०। पर मैं बलआम की न सुनता था इस लिये वुह तुम्हें आशीष देता गया सो मैं ने

तुम्हें उस के हाथ से छुड़ाया॥ ११। फिर तुम यरदन पार उतरे और यरीहू को आये और यरीहू के लोग अमूरी और फरिज्जी और कनआनी और हित्ती और जिरजासी और हवी और यबूसी तुम से लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में किया॥ १२। तब मैं ने तुम्हारे आगे बर्रों को भेजा जिन्हों ने उन्हें अर्थात् अमूरियों के दो राजाओं को तुम्हारे आगे से हांक दिया तुम्हारी तलवार और धनुष से नहीं॥ १३। और मैं ने तुम्हें वुह देश दिया जिस के लिये तुम ने परिश्रम न किया और वे नगर जिन्हें तुम ने न बनाया और तुम उन में बसे हो तुम दाख की बारी और जलपाई की बारी से जो तुम ने नहीं लगाई खाते हो॥ १४। सो अब तुम परमेश्वर से डरो और सीधाई से और सच्चाई से उस की सेवा करो और उन देवतों को जिन की तुम्हारे पितर नदी के उस पार और मिस्र में सेवा करते थे निकाल फेंको और परमेश्वर की सेवा करो॥ १५। और यदि परमेश्वर की सेवा करना तुम्हें बुरा जान पड़े तो आज के दिन चुनो कि किस की सेवा करोगे उन देवतों की जिन की सेवा तुम्हारे पितर नदी के उस पार करते थे अथवा अमूरियों के देवतों को जिन के देश में तुम बसते हो परंतु मैं और मेरा घराना परमेश्वर की सेवा करेंगे॥ १६। तब लोगों ने उत्तर देके कहा कि ईश्वर न करे कि हम परमेश्वर को त्याग के आन देवतों की सेवा करें॥ १७। क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर है जो हमें और हमारे पितरों को मिस्र देश से बंधुआई के घर से निकाल लाया और जिस ने बड़े बड़े आश्चर्य्य हमारी आंखों के साम्ने दिखाये और सारे मार्ग में जहां जहां हम चलते थे और उन सब लोगों के मध्य जिन में से होके आये हमारी रक्षा किई॥ १८। और परमेश्वर ने सारे लोगों को अर्थात् अमूरियों को जो उस देश में बसते थे हमारे आगे से निकाल दिया इस लिये हम भी परमेश्वर की सेवा करेंगे क्योंकि वही हमारा ईश्वर है॥ १९। फिर यहूसूअ ने लोगों से कहा कि तुम परमेश्वर की सेवा न कर सकोगे क्योंकि वुह पवित्र ईश्वर और ज्वलित ईश्वर है जो तुम्हारे अपराधों और तुम्हारे पापों को क्षमा न करेगा॥ २०। यदि तुम परमेश्वर को त्यागोगे और उपरी देवतों की सेवा करोगे तो वुह भला करने के पीछे फिर के तुम्हें दुःख देगा और तुम्हें नाश कर डालेगा॥ २१। तब लोगों

ने यहूसूअ से कहा कि कभी नहीं परंतु हम परमेश्वर ही की सेवा करेंगे॥ २२। फिर यहूसूअ ने लोगों से कहा कि तुम आप ही अपने पर साक्षी हो कि सेवा के लिये तुम ने परमेश्वर को चुन लिया है वे बोले कि हम साक्षी हैं॥ २३। सो अब तुम उपरी देवतों को जो तुम्हारे मध्य में हैं निकाल फेंको और अपने अपने मन को परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की ओर झुकाओ॥ २४। तब लोगों ने यहूसूअ से कहा कि हम परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करेंगे और उस का शब्द मानेंगे॥ २५। तब यहूसूअ ने उस दिन लोगों से वाचा बांधी और उन के लिये विधि और व्यवहार सिकम में ठहराये।

२६। और यहूसूअ ने ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में उन बातों को लिख रक्खा और एक बड़ा पत्थर लेके बलूत के वृक्ष तले जो परमेश्वर की पवित्रता में था खड़ा किया॥ २७। और यहूसूअ ने सारे लोगों से कहा कि देखो यह पत्थर हमारा साक्षी होगा क्योंकि उस ने वे सब बातें जो परमेश्वर ने हमें कहीं सुनी हैं इस लिये यही तुम पर साक्षी होगा न हो कि तुम अपने ईश्वर से मुकर जाओ॥ २८। फिर यहूसूअ ने हर एक जन को अपने अपने अधिकार की ओर बिदा किया॥ २९। और ऐसा हुआ कि इन बातों के पीछे परमेश्वर का दास नून का बेटा यहूसूअ एक सौ दस बरस का होके मर गया॥ ३०। और उन्हों ने उस के अधिकार अर्थात् तिमनतसिरह के सिवाने में जो जअस की पहाड़ी की उत्तर दिशा इफ़रायम पहाड़ में है उसे गाड़ा॥ ३१। और इसराएल यहूसूअ के जीवन भर और प्राचीनों के जीवन भर जो यहूसूअ के पीछे जीये और परमेश्वर के सारे कार्यों को जो उस ने इसराएल के लिये किये जानते थे परमेश्वर की सेवा करते रहे॥ ३२। और यूसुफ़ की हड्डियों को जिन्हें इसराएल के संतान मिस्र से उठा लाये थे उन्हों ने सिकम की उस भूमि में गाड़ा जिसे यअकूब ने सिकम के पिता हमूर के बेटों से सौ टुकड़े चांदी पर मोल लिया था सो वुह भूमि यूसुफ़ के संतान की अधिकार हुई॥ ३३। और हारून का बेटा इलिअज़र भी मर गया और उन्हों ने उसे उस पहाड़ में जो उस के बेटे फ़िनिहास का था जो इफ़रायम के पहाड़ में उसे दिया गया था गाड़ा॥

न्यायियों की पुस्तक।
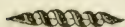
१ पहिला पर्ब्ब।

अब यहूसूअ के मरने के पीछे यों हुआ कि इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से यह कहके पूछा कि कनआनियों से युद्ध करने को हमारे कारण पहिले कौन चढ़ जाय॥ २। तब परमेश्वर ने कहा कि यहूदाह चढ़ जाय देखो मैं ने देश को उस के हाथ में कर दिया है॥ ३। तब यहूदाह ने अपने भाई समऊन से कहा कि मेरे भाग में मेरे साथ चढ़िये जिसतें हम कनआनियों से लड़ें और इसी रीति से मैं भी तेरे भाग में तेरे साथ चढूंगा सो समऊन उस के साथ गया॥ ४। तब यहूदाह चढ़ गये और परमेश्वर ने कनआनियों और फरिज्जियों को उन के हाथ में कर दिया और उन्हों ने उन में से बजक में दस सहस्र पुरुष को घात किया॥ ५। और उन्हों ने अदूनिबजक को बजक में पाया और उस्से लड़े और कनआनियों और फरिज्जियों को मारा॥ ६। परंतु अदूनिबजक भाग निकला और उन्हों ने उस का पीछा किया और जा पकड़ा और उस के हाथ पांव के अंगूठे काटे॥ ७। तब अदूनिबजक ने कहा कि हाथ पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर राजा मेरे मंच तले के चूर चार चुन चुन खाते थे जैसा मैं ने किया था वैसा ही ईश्वर ने मुझे पलटा दिया फिर वे उसे यरूसलम में लाये और वुह वहां मर गया॥ ८। अब यहूदाह के

संतान यरूसलम से लड़े थे और उसे लेलिया था और उसे तलवार की धार से मारा और नगर को आग से फूंक दिया। ९। और उस के पीछे यहूदाह के संतान उतर के उन कनआनियों से जो पहाड़ में और दक्षिण में और तराई में बसते थे लड़े॥ १०। और यहूदाह ने उन कनआनियों का जो हबरून में रहते थे साम्ना किया उन्हों ने सीसी और अखिमान और तलमी को मारा हबरून का नाम आगे करयतअरबअ था॥ ११। और वुह वहां से दबीर के बासियों पर चढ़ गया और दबीर का नाम आगे करयतसिफर था॥ १२। तब कालिब ने कहा कि जो कोई करयतसिफर को मार लेगा मैं उसे अपनी कन्या अकस को बियाह देऊंगा॥ १३। तब कालिब के लहुरे भाई कनज के बेटे अतनिएल ने उसे लेलिया और उस ने अपनी कन्या अकस उसे बियाह दिई॥ १४। और ऐसा हुआ कि जाते ही उस ने उसे उभाड़ा कि पिता से एक खेत मांगे फिर वुह अपने गदहे पर से उतरी तब कालिब ने उसे कहा कि तू क्या चाहती है॥ १५। और उस ने उसे कहा कि मुझे आशीष दीजिये क्योंकि तू ने मुझे दक्षिण दिशा की भूमि दिई मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब कालिब ने ऊपर के और नीचे के सोते उसे दिये॥ १६। तब मूसा के ससुर क़ैनी के वंश यहूदाह के संतान के साथ खजूरों के नगर में से यहूदाह के अरण्य को जो अराद की दक्षिण को और है चढ़ गये और उन लोगों में जा बसे॥ १७। और यहूदाह अपने भाई समऊन के साथ गया और उन्हों ने उन कनआनियों को जो सफात में रहते थे जा मारा और उसे सर्बथा नाश किया और उस नगर का नाम हुरमः रक्खा॥ १८। और यहूदाह ने अज्जः को उस के सिवाने सहित और असकलून को उस के सिवाने सहित और अक़रून को उस के सिवाने सहित ले लिया॥ १९। और परमेश्वर यहूदाह के साथ था और उस ने पर्बत को अधिकार में किया परंतु तराई के बासियों को निकाल न सका क्योंकि उन के रथ लोहे के थे॥ २०। तब उन्हों ने मूसा के कहने के समान कालिब को हबरून दिया और उस ने वहां से अनाक़ के तीन बेटों को दूर किया॥ २१। और बिनयमीन के संतान यबूसियों को जो यरूसलम में रहते थे दूर न किया परंतु यबूसी बिनयमीन के

संतान के साथ आज के दिन लों यरूसलम में बसते हैं॥ २२। और यूसुफ़ का घराना भी बैतएल पर चढ़ गया और परमेश्वर उन के साथ था॥ २३। और यूसुफ़ के घराने ने बैतएल का भेद लेने को भेजा और उस नगर का नाम आगे लौज़ था॥ २४। और भेदियों ने नगर से एक मनुष्य को बाहर आते देख के उसे कहा कि नगर का पैठ हमें बता और हम तुझ पर दया करेंगे॥ २५। सो जब उस ने उन्हें नगर का पैठ बताया उन्हों ने नगर को तलवार की धार से नाश किया परंतु उस मनुष्य को उस के सारे घराने समेत छोड़ दिया॥ २६। और वुह मनुष्य हित्तियों की भूमि में गया और वहां एक नगर बनाया और उस का नाम लौज़ रक्खा जो आज लों उस का नाम है॥ २७। और मुनस्सी के संतान ने भी बैतशान को और उस के गांवों को और तअनाक को और उस के गांवों को और दार के बासियों को और उस के गांवों को और इबलिआम को और उस के गांवों के बासियों को और मजिद्दो के और उस के गांवों के बासियों को न निकाल दिया परंतु कनआनी उसी देश में बसा किये॥ २८। और यों हुआ कि जब इसराएल प्रबल हुए तब उन्हों ने कनआनियों से कर लिया परंतु उन्हें सर्वथा निकाल न दिया॥ २९। और इफ़रायम ने भी उन कनआनियों को जो जज़र में बस्ते थे न निकाला परंतु कनआनी उन के साथ जज़र में बस्ते थे॥ ३०। ज़बुलून ने क़ितरून और नहलाल के बासियों को न निकाला परंतु कनआनी उन्हीं में रहे और करदायक हुए॥ ३१। यसर ने अक्को और सैदा और अहलाब और अक़ज़ीब और हिलबः और अफ़ीक़ और रहूब के बासियों को दूर न किया॥ ३२। परंतु यसरी उन कनआनियों में जो उस देश के बासी थे बसे क्योंकि उन्हों ने उन्हें दूर न किया॥ ३३। नफ़ताली ने बैतशम्श और बैतअनात के बासियों को दूर न किया परंतु वुह उस देश के बासी कनआनियों में रहा तथापि बैतशम्श और बैतअनात के बासी उन के करदायक हुए॥ ३४। और अमूरियों ने दान के संतान को पहाड़ में खेदा क्योंकि वे उन्हें तराई में उतरने न देते थे॥ ३५। परंतु अमूरी हरिस पहाड़ में ऐयलून में और शालबीम में बसा किये तथापि यूसुफ़ के घराने का हाथ प्रबल हुआ

यहां लों कि उन्हें करदायक किया॥ ३६। और अमरियों का सिवाना अक्रबिम की चढ़ाई से पहाड़ के ऊपर लों था॥

२ दूसरा पर्ब्ब।

तब परमेश्वर के दूत ने जिलजाल से बोकीम को आके कहा कि मैं तुम्हें मिस्र से उठा के इस देश में जिस के कारण तुम्हारे पितरों से किरिया खाई थी ले आया और मैं ने कहा कि मैं तुम से कभी अपनी बाचा न तोड़ूंगा॥ २। और तुम इस देश के बासियों के साथ बाचा न बांधियो तुम उन की बेदियों को ढाइयो परंतु तुम ने मेरे शब्द को न माना तुम ने ऐसा क्यों किया॥ ३। इसी कारण मैं ने भी कहा कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से दूर न करूंगा परंतु वे तुम्हारे पांजरों में कांटे और उन के देवते तुम्हारे लिये फंदे होंगे॥ ४। और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर के दूत ने सारे इसराएल के संतान को ये बातें कहीं तो उन्हों ने बड़े शब्द से बिलाप किया॥ ५। और उन्हों ने उस स्थान का नाम बोकीम रक्खा और उन्हों ने वहां परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाया॥ ६। और जब कि यहूसूअ ने लोगों को बिदा किया था तब इसराएल के संतान में से हरएक अपने अपने अधिकार पर गया जिसतें उस देश को बश में करे॥ ७। और वे लोग परमेश्वर की सेवा करते थे यहूसूअ के जीवन भर और उन प्राचीनों के जीवन भर जो यहूसूअ के पीछे रहते थे जिन्हों ने परमेश्वर का समस्त बड़ा कार्य्य देखा जिसे उस ने इसराएल के लिये किया परमेश्वर की सेवा करते रहे॥ ८। और परमेश्वर का दास नून का बेटा यहूसूअ एक सौ दस बरस का वृद्ध होके मर गया॥ ९। और उन्हों ने उस के अधिकार के सिवाने तिमनतहरिस में इफ़रायम के पहाड़ में जो जअश के पहाड़ की उत्तर अलंग है उसे गाड़ा॥ १०। और वही समस्त पीढ़ी भी अपने पितरों में जा मिली और उन के पीछे दूसरी पीढ़ी उठी जिस ने परमेश्वर को और उन कार्य्यों को जो उस ने इसराएल के लिये किये थे नहीं पहिचाना॥ ११। तब इसराएल के संतान ने परमेश्वर के आगे बुराई किई और बअलीम की सेवा किई॥ १२। और अपने पितरों के परमेश्वर ईश्वर को जो

उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया था छोड़ दिया और उपरी देवों का पीछा किया अर्थात् अपने चारों ओर के लोगों के देवों के आगे दंडवत किई और परमेश्वर को रिस दिलाई॥ १३। सो उन्हों ने परमेश्वर को छोड़ दिया और बअल और इस्तारात की सेवा किई॥ १४। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें नष्ट कारियों के बश में कर दिया जिन्हों ने उन्हें नष्ट किया और उस ने उन्हें उन के आस पास के बैरियों के हाथ में बेचा यहां लों कि वे फिर अपने बैरियों के आगे न ठहर सके थे॥ १५। जहां कहीं वे निकलते थे परमेश्वर का हाथ बुराई के लिये उन के बिरोध में था जैसा कि परमेश्वर ने कहा था और जैसी कि परमेश्वर ने उन से किरिया खाई थी और वे अत्यंत दुःखी हुए॥ १६। तथापि परमेश्वर ने न्यायियों को खड़ा किया जिन्हों ने उन्हें उन के नष्ट कारियों के हाथ से छुड़ाया॥ १७। तद भी वे अपने न्यायियों की भी न सुनते थे परंतु उपरी देवों के पश्चाद्गामी हुए और उन के आगे दंडवत किई वे उस मार्ग से जिस पर उन के पितर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके चलते थे बहुत शीघ्र उलटे फिरे परंतु उन्हें पालन न किया॥ १८। और जब परमेश्वर उन के लिये न्यायियों को खड़ा करता था तब परमेश्वर न्यायी के साथ रहता था और उन्हें उन के शत्रुन के हाथ से न्यायी के जीवन भर छुड़ाता रहा क्योंकि परमेश्वर उन के कहरने से जो उन के सताने और दुख देनेहारों के कारण से था पछताया॥ १९। और ऐसा हुआ कि जब न्यायी मर जाता था तब वे फेर फिर जाते थे और आप को अपने पितरों से अधिक बिगाड़ते थे कि और उपरी देवताओं का पीछा पकड़ते थे कि उन की सेवा और दंडवत करें वे अपनी अपनी चाल से और अपने अपने हठीले मार्ग से न फिरते थे॥ २०। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने कहा इस कारण कि जैसा इन लोगों ने मेरी उस बाचा को जो मैं ने उन के पितरों से बांधी थी भंग किया है और मेरे शब्द को न माना है॥ २१। मैं भी अब से उन लोगों में से जिन्हें यहूसूअ छोड़ के मरा किसी को भी उन के आगे से दूर न करूंगा॥ २२। जिसतें मैं उन के द्वारा से इसराएल को परखूं कि वे अपने पितरों की नाईं परमेश्वर के

मार्ग पर चलने को पालन करेंगे कि नहीं॥ २३। सो परमेश्वर ने उन जातिगणों को छोड़ा कि उन्हें शीघ्र दूर न किया और उस ने उन्हें यहूसूअ् के हाथ में न सोंपा॥

३ तीसरा पर्ब्ब।

और ये वे जातिगण हैं जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल की परीक्षा के लिये उन में छोड़ा अर्थात् उन में जो कनआन के सारे संग्राम न जानते थे॥ २। केवल जिसतें इसराएल के संतान की पीढ़ी निज करके जो आगे लड़ाई का भेद न जानते थे उन से सीखें॥ ३। फिलिसतियों के पांच अध्यक्ष और सारे कनआनी और सैदानी और हव्वी थे जो लुबनान पर्बत में बअ्ल हरमून पर्बत से लेके हमात के पैठ लों बसते थे॥ ४। और वे इसराएल की परीक्षा के लिये थे जिसतें देखें कि वे परमेश्वर की उन आज्ञाओं को जो उस ने मूसा की ओर से उन के पितरों को दिई थी मानेंगे कि नहीं॥ ५। सो इसराएल के संतान कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और फरज्जियों और हव्वियों और यबूसियों में बसते थे॥ ६। और उन्हों ने उन की बेटियों को अपनी पत्नियां किया और उन की बेटियां अपने बेटों को दिईं और उन के देवतों की सेवा किई॥ ७। और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये और बअ्लीम और कुंजों की सेवा किई॥ ८। इस लिये इसराएल के संतान पर परमेश्वर का कोप भड़का और उस ने उन्हें कूशनरिसअ्तैन अरमनहाराईम के राजा के हाथ बेचा और इसराएल के संतान ने कूशनरिसअ्तैन की सेवा आठ बरस लों किई॥ ९। और जब इसराएल के संतान ने परमेश्वर से दोहाई दिई तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान के लिये एक निस्तारक जिस ने उन्हें छुड़ाया अर्थात् कालिब के लहुरे भाई कनज़ के पुत्र अतिएल को खड़ा किया॥ १०। और परमेश्वर का आत्मा उस पर था और उस ने इसराएल का न्याय किया और संग्राम को निकला तब परमेश्वर ने अराम के राजा कूशनरिसअ्तैन को उस के हाथ में सोंप दिया और उस का हाथ कूशनरिसअ्तैन पर प्रबल

हुआ॥ ११। और देश को चालीस बरस लों चैन हुआ और कनज़ का बेटा ऋतिएल मर गया॥ १२। फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई तब परमेश्वर ने मोअब के राजा इजलून को इसराएल पर प्रबल किया इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥ १३। और उस ने अम्मून के और अमालीक के संतान को अपने पास एकट्ठा किया और जाके इसराएल को मारा और खजूर पेड़ों के नगर को बश में किया॥ १४। सो इसराएल के संतान मोअब के राजा इजलून की सेवा अठारह बरस लों करते रहे॥ १५। परंतु जब इसराएल के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब परमेश्वर ने एक बिनयमीनी जैरा के बेटे अहूद को जो बैंहथा था उन के छुड़ाने के लिये उभाड़ा और इसराएल के संतान ने उस के द्वारा से मोअब के राजा इजलून के लिये भेंट भेजी॥ १६। परंतु अहूद ने हाथ भर का दो धारा खंजर बनाया और उसे अपने दहिनी जांघ में बस्त्र के तले बांधा॥ १७। और वुह मोअब के राजा इजलून के पास भेंट लाया और इजलून बड़ा मोटा जन था॥ १८। और जब वुह भेंट दे चुका तब उस ने उन लोगों को जो भेंट लाये थे बिदा किया॥ १९। परंतु वुह आप उन मूर्त्ति स्थान के पास से जो जिलजाल में हैं लौटा और कहा कि हे राजा मेरे पास तेरे लिये एक गुप्त संदेश है और उस ने कहा कि चुपके रह तब जितने लोग पास खड़े थे बाहर निकल गये॥ २०। तब अहूद उस पास आया और वुह एक ठंढे स्थान में जो उस ने अपने लिये बनाया था अकेला बैठा था और अहूद ने कहा कि ईश्वर का संदेश आप के लिये मुझ पास है तब वुह आसन पर से उठ खड़ा हुआ॥ २१। तब अहूद ने अपना बायां हाथ बढ़ाया और दहिनी जांघ पर से खंजर को लिया और उस की तोंद में गोद दिया॥ २२। और मूठ भी फलके पीछे पैठ गई और चिकनाई से फल ढंप गया यहां लों कि वुह खंजर को उस की तोंद से निकाल न सका और मल निकल पड़ा॥ २३। तब अहूद ओसारे में बाहर निकला और अपने पीछे ऊंचे स्थान के द्वारों को खैंच लिया और उन्हें बंद किया॥ २४। और वुह बाहर निकल गया तब उस के सेवक आये और उन्हों ने ऊंचे स्थान के द्वार को बंद देख

के कहा कि निश्चय वुह अपने ठंढे स्थान में चैन करता है॥ २५। और वे ठहरते ठहरते लज्जित ऊए और देखा कि उस ने बैठक के द्वार को नहीं खोला इस लिये उन्हों ने कुंजी लेके खोला और क्या देखते हैं कि उन का प्रभु भूमि पर मरा पड़ा है॥ २६। पर उन के ठहरते ठहरते अहूद भाग निकला और मूर्त्ति स्थान से पार ऊआ और सीरात में जाके बचा॥ २७। और आते ही यों ऊआ कि उस ने पहाड़ इफ़रायम पर नरसिंगा फूंका तब इसराएल के संतान उस के साथ पहाड़ पर से उतरे और वुह उन के आगे आगे ऊआ॥ २८। और उस ने उन्हें कहा कि मेरे पीछे पीछे हो लेओ क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु मोअबियों को तुम्हारे हाथ में कर दिया सो वे उस के पीछे पीछे उतर आये और यरदन के घाटों को जो मोअब की ओर थे ले लिया और एक को भी पार उतरने न दिया॥ २९। उसी समय उन्हों ने मोअब के दस सहस्र मनुष्य के अटकल जो सब पुष्ट और साहसी थे घात किये उन में से एक भी न बचा॥ ३०। सो उस दिन मोअब इसराएल के वश में ऊआ और देश ने अस्सी बरस लों चैन पाया॥ ३१। उस के पीछे अनात का बेटा शमजर ऊआ जिस ने छः सौ फिलिसतियों को बैल की आर से मारा और उस ने भी इसराएल को छुड़ाया॥

४ चौथा पर्ब्ब ।

और जब अहूद मर गया तब इसराएल के संतान ने फिर परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥ २। और परमेश्वर ने उन्हें कनआन के राजा यबीन के हाथ में बेचा जो हसूर में राज्य करता था और उस की सेना के अध्यक्ष का नाम सीसरा था जो हरसत में रहता था॥ ३। तब इसराएल के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये क्योंकि उस पास लोहे के नव सौ रथ थे और उस ने बीस बरस लों इसराएल के संतान को कठोरता से सताया॥ ४। और लफ़ीदात की पत्नी दबूरः आगमज्ञानिनी उस समय में इसराएल का न्याय करती थी॥ ५। और पहाड़ इफ़रायम में रामः और बैतएल के मध्य दबूरः के खजूर तले रहती थी और इसराएल के संतान उस पास न्याय के लिये चढ़ आते थे॥ ६। तब उस ने क़ादिस

नफ़ताली से अबिनुअम के बेटे बरक़ को बुला भेजा और उसे कहा कि क्या परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने आज्ञा नहीं किई कि जा और तबूर पहाड़ की ओर लोगों को बटोर और नफ़ताली और ज़बुलून के संतान में से दस सहस्र जन अपने साथ ले॥ ७। और मैं क़सून की नदी पर यबीन की सेना का प्रधान सीसरा को उस के रथ और उस की मंडली समेत तेरी ओर बटोरूंगा और उसे तेरे हाथ में कर देऊंगा॥ ८। और बरक़ ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ जायेगी तो मैं जाऊंगा परंतु यदि तू मेरे साथ न जायेगी तो मैं न जाऊंगा॥ ९। तब वुह बोली कि निश्चय मैं तेरे साथ चलूंगी तथापि जो यात्रा तू करता है सो तेरी प्रतिष्ठा के लिये न होगी क्योंकि परमेश्वर सीसरा को एक स्त्री के हाथ में सौंपेगा तब दबूरः उठी और बरक़ के साथ क़ादिस को गई॥ १०। और बरक़ ने ज़बुलून और नफ़ताली को क़ादिस में बुलाया और वुह दस सहस्र जन अपने साथ लेके चढ़ा और दबूरः भी उस के साथ साथ चढ़ गई॥ ११। अब हिब्र कैनी ने जो मूसा के ससुर होबाब के बंश में का था कैनियों से आप को अलग किया और अपना डेरा ज़अनन्नीम में क़ादिस के लग बलूत के वृक्ष के पास जो है खड़ा किया॥ १२। तब सीसरा को संदेश पहुंचा कि अबिनुअम का बेटा बरक़ पहाड़ तबूर पर चढ़ गया॥ १३। तब सीसरा ने अपने समस्त रथ अर्थात् लोहे के नौ सौ रथ और अपने साथ के सारे लोगों को अन्यदेशियों के हरसत से बुला के क़सून की नदी पर एकट्ठे किया॥ १४। तब दबूरः ने बरक़ से कहा कि उठ क्योंकि यह वुह दिन है जिस में परमेश्वर ने सीसरा को तेरे हाथ में कर दिया है क्या परमेश्वर तेरे आगे नहीं गया तब बरक़ तबूर पहाड़ से नीचे उतरा और दस सहस्र जन उस के पीछे पीछे॥ १५। और परमेश्वर ने सीसरा को और समस्त रथों को और सारी सेना को बरक़ के आगे तलवार की धार से हरा दिया यहां लों कि सीसरा रथ पर से उतर के पांव पांव भागा॥ १६। परंतु बरक़ रथों और सेनाओं के पीछे अन्यदेशियों के हरसत लोइम लों रगेदे गया और सीसरा की सारी सेना तलवार की धार से मारी गई और एक भी न बचा॥ १७। तथापि सीसरा पांव पांव भाग के हिब्र कैनी की पत्नी याइल के तंबू में घुसा क्योंकि हसूर के राजा यबीन और

हिब्र कैनी के घर में मिलाप था॥ १८। तब याइल सीसरा से मिलने को निकली और उसे कहा कि हे मेरे प्रभु इधर फिरिये मेरे यहां फिर आइये मत डरिये और जब वुह उस के तंबू में आया उस ने उसे एक ओढ़ने से ढांप दिया॥ १९। तब उस ने उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे तनिक जल दीजिये क्योंकि मैं प्यासा हूं सो उस ने दूध का एक कुप्पा खोल के उसे पिलाया और उसे ढांप दिया॥ २०। फिर उस ने उसे कहा कि तंबू के द्वार पर खड़ी रह और यों होगा कि जब कोई आके तुझ से पूछे और कहे कि कोई पुरुष यहां है तो कहियो कि नहीं॥ २१। तब हिब्र की पत्नी याइल ने तंबू का एक कील और हथौरी हाथ में लिई और हौले हौले उस पास जाके कील को उस की कनपटी में ठोंका और भूमि में गड़ा दिया क्योंकि वुह थका होके बड़ी नींद में था सो वुह मर गया॥ २२। और देखो कि जब बरक़ सीसरा को रगेदता आया तो याइल उस की भेंट को निकली और उसे कहा कि आ मैं तुझे उस जन को जिसे तू ढूढ़ता है दिखाऊं और जब वुह भीतर आया तो देखता है कि सीसरा मरा पड़ा है और कील उस की कनपटी में है॥ २३। सो ईश्वर ने उस दिन कनआन के राजा यबीन को इसराएल के संतान के बश में किया॥ २४। और इसराएल के संतान का हाथ भाग्यमान हुआ और कनआन के राजा यबीन पर प्रबल हुआ यहां लों कि उन्हों ने कनआन के राजा यबीन को नाश किया॥

५ पांचवा पर्ब्ब।

तब दबूरः और अबिनुअम के बेटे बरक़ने उसी दिन में गाके कहा॥ २। जब इसराएल में संपूर्ण निरंकुश थे जब लोगों ने मनमंता आप को सौंप दिया परमेश्वर की स्तुति करो॥ ३। हे राजाओ सुनो हे राज पुत्र कान धरो मैं हीं परमेश्वर के लिये गाऊंगा मैं परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये बजाऊंगा॥ ४। हे परमेश्वर जब तू सईर से निकला जब तू ने अदूम के चौगान से यात्रा किई तब भूमि थर्थरा उठी स्वर्ग टपके और मेघों से भी बूंदियां पड़ीं॥ ५। पहाड़

परमेश्वर के आगे बहि गये अर्थात् यह सीना परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के आगे॥ ६। अनात के बेटे शमजर के दिनों में याइल के समय में राज मार्ग सूने थे और पथिक टेढ़े मार्गों से जाते थे॥ ७। गांव रह गये वे इसराएल में से उठ गये जब लों कि मैं दबूरः न उठी कि मैं इसराएल में एक माता उठी॥ ८। जब उन्हों ने नये देवों को चुन लिया तब फाटकों पर युद्ध हुआ क्या इसराएल के चालीस सहस्रों में एक ढाल अथवा एक भाला था॥ ९। मेरा मन इसराएल के अध्यक्षों की ओर है जिन्हों ने लोगों में मनमंता आप को सौंप दिया तुम परमेश्वर का धन्य मानो॥ १०। तुम जो श्वेत गदहों पर चढ़ते हो और जो न्याय पर बैठते हो और मार्ग चलते हो सोचो॥ ११। कि पनिघटों में धनुषधारियों के शब्द से लोग परमेश्वर के धर्मों की चर्चा करेंगे अर्थात् धर्म कार्य्यों को जो गांवों में इसराएल पर हुये तब परमेश्वर के लोग फाटकों पर उतर जायेंगे॥ १२। जाग जाग हे दबूरः जाग जाग गीत गा उठ हे बरक़ और अबिनुअम के बेटे अपने बंधुअन को बंधुआई में लेजा॥ १३। फिर उस ने उसे जो बच रहा है लोगों के प्रधानों पर प्रभुता दिई परमेश्वर ने मुझे सामर्थी पर प्रभुता दिई॥ १४। इफ़रायम में से एक जड़ अमालीक के सन्मुख हुई और तेरे लोगों में से हे बिनयमीन तेरे पीछे मकीर में से अध्यक्ष उतर आये और ज़बलून में से जो लेखनी से खैंचते हैं॥ १५। इशकार के अध्यक्ष दबूरः के साथ थे अर्थात् इशकार बरक़ के साथ वुह पांव पांव तराई को भेजा गया रूबिन के विभागों में मन में बड़ी बड़ी चिंता हुई॥ १६। तू क्यों झुंडों का मिमियाना सुन्ने को भेड़शालों में रहा रूबिन के बिभागों से मन में बड़ी बड़ी चिंता हुई॥ १७। जिलिअद यरदन पार रहा और दान जहाजों पर क्यों रह गया यसर समुद्र के घाट में और कोलों में ठहर रहा॥ १८। ज़बलून और नफ़ताली ने चौगान में ऊंचे ऊंचे स्थानों पर अपने प्राण को तुच्छ जाना॥ १९। राजा आके लड़े कनआन के राजाओं ने तअनाक में मजिद्दों के पानियों पर युद्ध किया उन्हों ने कुछ रोकड़ न लिया॥ २०। वे स्वर्ग पर से लड़े तारागण अपने अपने चक्र में सीसरा से लड़े॥ २१। क़ैसून की नदी वुह प्राचीन नदी क़ैसून नदी उन्हें बहा ले गई हे मेरे प्राण

तू ने बलवन्तों को रौंद डाला॥ २२। तब उन के घोड़ों के खुर टापें मारते थे उस के वीरों के दौड़ाने से॥ २३। परमेश्वर के दूत ने कहा कि मिरोज़ को स्राप देओ वहां के वासियों को अति स्राप देओ इस कारण कि वे परमेश्वर की सहाय के लिये अर्थात् परमेश्वर की सहाय के लिये बलवंतों के सन्मुख न आये॥ २४। क़ैनी हिब्र की पत्नी याइल सब स्त्रियों से अधिक धन्य होगी वुह उन स्त्रियों से जो डेरों में हैं अधिक धन्य होगी॥ २५। उस ने पानी मांगा और उस ने उसे दूध दिया वुह प्रतिष्ठित पात्र में माखन लाई॥ २६। उस ने अपना हाथ कील पर रक्खा और अपना दहिना हाथ कार्य्यकारी के हथौड़ी पर और हथौड़ी से सीसरा को मारा उस ने उस के सिर को कुचला और गोदा और उस की कनपटी को आरंपार छेदा॥ २७। वुह उस के पावों तले झुका वुह गिर पड़ा और पड़ रहा वुह उस के चरणों के आगे झुका वुह गिर पड़ा जहां वुह झुका तहां गिर के नाश हुआ॥ २८। सीसरा की माता ने झरोखे से झांका और झरोखे से पुकारा कि उस का रथ क्यों बिलंब करता है उस के रथों के पहिये क्यों बिलंब करते हैं॥ २९। उस की बुद्धिमती स्त्रियों ने उसे उत्तर दिया हां उस ने आप ही उत्तर दिया॥ ३०। क्या उन्हों ने कार्य्य सिद्ध न किया क्या उन्हों ने लूट न बांटी एक एक पुरुष पीछे दो एक सहेलियां और सीसरा को भांति भांति की रंगीले वस्त्र की लूट अर्थात् बूटे काढ़े हुए नाना रंग के वस्त्र की लूट दोनों अलंग बूटे काढ़े हुए नाना रंग के वस्त्र की लूट उठानेहारों के गलों के लिये॥ ३१। इसी रीति से हे परमेश्वर तेरे सारे शत्रु नाश होवें परंतु जो उसे प्रेम रखते हैं सो सूर्य्य के तुल्य होवें जब वुह अपने पराक्रम से निकलता है और देश ने चालीस बरस चैन पाया॥

६ छठवां पर्ब्ब॥

फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई तब परमेश्वर ने उन्हें सात बरस लों मिदयानियों के हाथ में सौंप दिया॥ २। और मिदयानियों का हाथ इसराएल पर प्रबल हुआ और मिदया-

नियों के कारण इसराएल के संतानों ने अपने लिये पहाड़ों में मांद और कंदला और दृढ़ स्थान बनाये॥ ३। और ऐसा होता था कि जब इसराएल कुछ बोते थे तब मिदयानी और अमालीकी और पूर्बी वंश उन पर चढ़ आते थे॥ ४। और उन के साम्ने डेरा खड़ा करके अज्जः लों भूमि की बढ़ती को नष्ट करते थे और इसराएल के लिये न जीविका न भेड़ बकरी न गाय बैल न गदहा छोड़ते थे॥ ५। क्योंकि वे अपने ढोर और अपने तंबूओं सहित टिड्डी दल की नाई मंडली होके आते थे वे और उन के ऊंट अगणित थे और वे पैठ के उन के देश को नष्ट करते थे॥ ६। सो इसराएल मिदयानियों के कारण दुर्बल हो गये और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दोहाई दिई॥ ७। और ऐसा हुआ कि जब इसराएल के संतान ने मिदयानियों के कारण परमेश्वर की दोहाई दिई॥ ८। तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान पास एक जन अर्थात् आगमज्ञानी भेजा जिस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हें मिस्र से ले आया और मैं तुम्हें सेवकाई के घर से निकाल लाया॥ ९। और मैं ने तुम्हें मिस्रियों के हाथ से और उन सब के हाथ से जो तुम्हें सताते थे छुड़ाया और तुम्हारे आगे से उन्हें दूर किया और उन का देश तुम्हें दिया॥ १०। और मैं ने तुम्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर मैं हूं उन अमूरियों के देवतों से जिन के देश में तुम बसते हो मत डरो पर तुम ने मेरा शब्द न माना॥ ११। फिर परमेश्वर का एक दूत आया और बलूत वृक्ष तले उफ़रः में बैठा जो अबीअज़री यूआस का था और उस का बेटा जिदःऊन कोल्हू के पास गोहूं झाड़ रहा था जिसतें मिदयानियों के हाथ से छिपावे॥ १२। तब परमेश्वर का दूत उसे दिखाई दिया और उसे कहा कि हे महाबीर परमेश्वर तेरे साथ॥ १३। तब जिदःऊन ने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु यदि परमेश्वर हमारे साथ है तो हम पर ये सब क्यों बीतते हैं और उस के समस्त आश्चर्य कहां हैं जो हमारे पितरों ने हम से बर्णन किया था क्या परमेश्वर हमें मिस्र से नहीं निकाल लाया परंतु अब परमेश्वर ने हमें त्याग किया और हमें मिदयानियों के हाथ में सौंप दिया॥ १४। तब परमेश्वर ने उस पर दृष्टि किई और कहा कि अपनी इसी सामर्थ्य से

जा और तू इसराएल को मिद्यानियों के हाथ से छुड़ावेगा क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा॥ १५। और उस ने उसे कहा कि हे प्रभु मैं किस करके इसराएल को छुड़ाऊं देख मेरा घराना मुनस्सी में सब से तुच्छ और मैं अपने पितरों के घराने में सब से छोटा॥ १६। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि मैं तेरे साथ होऊंगा और तू एक ही मनुष्य के समान सारे मिद्यानियों को मारेगा॥ १७। तब उस ने उसे कहा कि यदि अब मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मुझे कोई लक्षण दिखा कि तू मुझ से बोलता है॥ १८। मैं तेरी बिनती करता हूं जब लों मैं तुझ पास फिर आऊं और अपने मांस की भेंट लाऊं और तेरे आगे धरूं तब लों तू यहां से मत जाइयो सो उस ने कहा कि जब लों तू फिर न आवे मैं ठहरूंगा॥ १९। तब जिद्:ऊन गया और उस ने बकरी का एक मेम्ना और एक ईफा पिसान के फुलके सिद्ध किये और मांस को उस ने टोकरी में रक्खा और रस एक कटोरे में डाल के उस के लिये बलूत वृक्ष तले लाके भेंट चढ़ाई॥ २०। तब ईश्वर के दूत ने उसे कहा कि मांस और फुलकों को लेके इस चटान पर रख और जूस रस उंड़ेल सो उस ने वैसे ही किया॥ २१। तब परमेश्वर के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाया और उस की टोंक से मांस और फुलकों को छूआ और उस चटान से आग निकली और मांस और फुलके को भस्म किया तब परमेश्वर का दूत उस की दृष्टि से जाता रहा॥ २२। जब जिद्:ऊन ने देखा कि वुह परमेश्वर का दूत था तब जिद्:ऊन ने कहा कि हाय हे प्रभु परमेश्वर इस कारण कि मैं ने ईश्वर का दूत आम्ने साम्ने देखा॥ २३। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तुझ पर कुशल हो मत डर तू न मरेगा॥ २४। तब जिद्:ऊन ने वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और उस का नाम यह रक्खा कि परमेश्वर कुशल भेजे सो वुह अबीअज़री उफ़्रः में आज के दिन लों बनी है॥ २५। और ऐसा हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि अपने पिता का बछड़ा और एक दूसरा बैल जो सात बरस का है ले और उस बेदी को जो तेरे पिता ने बअल के लिये बनाई है ढादे और वुह कुंज जो उस के निकट है काट डाल॥ २६। और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये इस चटान

पर जिस रीति से आज्ञा किई गई थी एक बेदी बना और उस दूसरे बछड़े को लेके उस कुंज की लकड़ियों से जिसे तू काटेगा होम की भेंट चढ़ा॥ २७। तब जिद्‌ऊन ने अपने सेवकों से दस जन लिये और जैसा कि परमेश्वर ने उसे कहा था वैसा किया और इस कारण वुह अपने पिता के घराने से और उस नगर के लोगों से डरता था वुह दिन को न कर सका उस ने यह काम रात को किया॥ २८। और जब उस नगर के लोग बिहान को उठे तो क्या देखते हैं कि बअल की बेदी ढाई ज़ई पड़ी है और उस के पास का कुंज कटा पड़ा है और उस बेदी पर जो बनाई गई थी दूसरा बछड़ा चढ़ाया ज़ुआ है॥ २९। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि वुह कौन है जिस ने यह काम किया और जब उन्हों ने यत्न करके पूछा तो लोगों ने कहा कि यूआस के बेटे जिद्‌ऊन का यह काम है॥ ३०। तब उस नगर के लोगों ने यूआस को कहा कि अपने बेटे को निकाल ला जिसतें मारा जाय इस लिये कि उस ने बअल की बेदी ढाई और उस के पास के कुंज को काट डाला॥ ३१। तब यूआस ने उन सभों को जो उस के साम्ने खड़े ज़ए थे कहा क्या तुम बअल के कारण बिवाद करोगे और तुम उसे बचाओगे जो कोई उस के लिये बिवाद करे सो बिहान होते ही मारा जाय यदि वुह देव है तो आप ही अपने लिये बिवाद करे क्योंकि उस ने उस की बेदी ढाह दिई॥ ३२। इस लिये उस ने उस दिन से उस का नाम यरुब्बआल रक्खा और कहा कि बअल अपना बिवाद उसे करे इस लिये कि उस ने उस की बेदी ढाह दिई॥ ३३। तब सारे मिदयानी और अमालीकी और पूर्बी बंश एकट्ठे ज़ए और पार उतर के यज़रऐल की तराई में डेरे खड़े किये॥ ३४। परंतु परमेश्वर का आत्मा जिद्‌ऊन पर उतरा सो उस ने नरसिंगा फूंका और अबिअज़र के लोग उस के पीछे एकट्ठे ज़ए॥ ३५। फिर उस ने सारे मुनस्सी में दूत भेजे सो वे भी उस के पीछे एकट्ठे ज़ए और उस ने यसर के और ज़बूलून के और नफ़ताली के पास दूत भेजे सो वे भी उन की भेंट करने को आये॥ ३६। तब जिद्‌ऊन ने ईश्वर से कहा कि यदि अपने कहने के समान तू इसराएल को मेरे हाथ से निस्तार देगा॥ ३७। तो देख

में ऊन का एक गुच्छा खलिहान में रखता हूं यदि ओस केवल गुच्छे ही पर पड़े और समस्त पृथिवी सूखी रहे तो मैं निश्चय जानूंगा कि तू अपने कहेके समान इसराएल को मेरे हाथों से निस्तार देगा॥ ३८। और यों ऊआ कि वुह प्रातःकाल उठा और उस ने उस गुच्छे को बटोरा और उस में की ओस एक कटोरा भरके निकली॥ ३९। तब जिदःऊन ने ईश्वर से कहा कि तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के मैं एक ही बार और कहूंगा मैं तेरी बिनती करताहूं कि इसी गुच्छे पर एक बार और तेरी परीक्षा करूं सो अबकी केवल गुच्छा सूखा रहे और समस्त भूमी पर ओस पड़े॥ ४०। सो ईश्वर ने उसी रात ऐसा किया कि गुच्छा तो सूखा था और केवल सारी भूमि पर ओस थी॥

७ सातवां पर्ब्ब॥

तब यरूब्बआल जो जिदःऊन है सारे लोग सहित जो उस के साथ थे तड़के उठा और हरूद के सोते पर डेरा खड़ा किया यहां लों कि मिदयानियों की सेना उन के उत्तर अबंग मोरिः के पहाड़ पास तराई में थी॥ २। तब परमेश्वर ने जिदःऊन को कहा कि मिदयानियों को तेरे बश में कर देने को लोग अति बज्जत हैं ऐसा न हो कि इसराएल मेरे साम्ने अहंकार करके कहे कि मेरे ही हाथ ने मुझे बचाया॥ ३। सो तू अब जाके लोगों के कान में प्रचार करके कह कि जो कोई डरपुकना हो और भय रखता हो सो जिलिअद पहाड़ से तड़के फिर जाय सो उन लोगों में से बाईस सहस्र फिर गये और दस सहस्र रहि गये॥ ४। और परमेश्वर ने जिदःऊन से कहा कि तथापि अभी लोग बज्जत हैं तू उन्हें पानी पर उतार ला और वहां मैं उन्हें तेरे लिये उन की परीक्षा करूंगा और ऐसा होगा कि जिस के बिषय में मैं तुझे कहूंगा कि यह तेरे साथ जावे वही तेरे साथ जायेगा और हर एक जिस के बिषय में मैं कहों कि यह तेरे साथ न जावे सो न जायगा॥ ५। सो वुह उन लोगों को पानी पर उतार लाया और परमेश्वर ने जिदःऊन से कहा कि जो कोई पानी को कूकर की नाईं चपड़ चपड़ पीये तू उन में से हर एक को अलग रख और हर एक जो अपने घुठनों पर झुक के पीये उन्हें भी॥ ६। सो

जिन्हों ने अपने हाथ अपने मूंह पास लाके चपड़ चपड़ पीया सो तीन सौ जन थे परंतु बचे हुए लोग पानी पीने को घुठनों पर झुक गये॥ ७। तब परमेश्वर ने जिद्ःऊन से कहा कि मैं उन तीन सौ मनुष्यों से जिन्हों ने चपड़ चपड़ पीया तुझे बचाऊंगा और मिद्यानियों को तेरे हाथ में कर देऊंगा और समस्त लोग अपने स्थान को फिर जायें॥ ८। तब उन लोगों ने अपने भोजन और अपने नरसिंगे हाथों में लिये और उस ने सब इसराएल को डेरों में भेजा और उन तीन सौ को रख छोड़ा और मिद्यानियों की सेना उस के नीचे तराई में थी॥ ९। और ऐसा हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि उठ और सेना में उतर जा क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे बश में कर दिया॥ १०। परंतु यदि तू अकेला उतरने को डरता है तो अपने सेवक फ़ूराह के साथ सेना में उतर॥ ११। और सुन वे क्या कहते हैं और पीछे से तेरे हाथ बली होंगे और तू सेना में उतर जाना सो वुह अपने सेवक फ़ूराह को साथ लेकर सेना के हथियारबंद की पांतियों में उतर गया॥ १२। और मिद्यानी और अमालीकी और पूर्बी बंश बहुताई से टिड्डी की नाईं तराई में पड़े थे और उन के ऊंट समुद्र के तीर की बालू के समान अगणित थे॥ १३। और जब जिद्ःऊन आया तो क्या देखता है कि एक जन अपने परोसी से अपना स्वप्न कहि रहा है कि देख मैं ने एक स्वप्न देखा कि जव की रोटी का एक फुलका मिद्यानी की सेना में लुढ़का और एक तंबू में आया और उस तंबू को ऐसा मारा कि वुह गिर गया और उलट दिया ऐसा कि वुह डेरा पड़ा रहा॥ १४। तब उस के परोसी ने उत्तर देके कहा कि यह इसराएल के पुरुष यूआस के बेटे जिद्ःऊन की तलवार को छोड़ और नहीं हैं ईश्वर ने मिद्यान और सारी सेना उस के बश में कर दिया॥ १५। और ऐसा हुआ कि जिद्ःऊन ने यह स्वप्न और उस का अर्थ सुन के दंडवत किई और इसराएल की सेना को फिर आके कहा कि उठो क्योंकि परमेश्वर ने मिद्यानी सेना को तुम्हारे हाथ में सौंप दिया॥ १६। तब उस ने उन तीन सौ मनुष्यों को तीन जथा किया और उन सभों के हाथ में नरसिंगा और छूंछा घड़ा दिया और एक एक दीपक घड़े के भीतर रक्खा॥ १७। और उन्हें कहा कि मुझे देखो और

वैसा ही करो और सोचेत रहियो जब मैं छावनी के बाहर जाऊं तब जो कुछ मैं करूं सो तुम भी कीजियो॥ १८। जब मैं और मेरे संगी नरसिंगे फूंकें तब तुम लोग भी सेना की हर एक ओर से नरसिंगा फूंकियो और बोलियो कि परमेश्वर के लिये और जिद्ःऊन के लिये॥

१९। फिर जिद्ःऊन और वे सौ जन जो उस के साथ थे दो पहर को छावनी के बाहर आये और वहीं पहरे बैठाये थे और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और उन घड़ों को जो उन के हाथों में थे तोड़ा॥ २०। और उन तीनों जथा ने नरसिंगे फूंके और घड़े तोड़े और दीपकों को अपने बायें हाथ में लिया और नरसिंगों को फूंकने के लिये अपने दहिने हाथों में और चिल्ला उठे कि ईश्वर की और जिद्ःऊन की तलवार॥ २१। और उन में से हर एक जन अपने स्थान पर सेना कि चारों ओर खड़ा था तब सारी सेना दौड़ी और चिल्लाई और भाग निकली॥ २२। और उन तीनों सौओं ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर ने सारी सेना में हर एक की तलवार उस के संगी पर चलवाई और वे बैतसित्तः और सरीरः को और अबिलमहूलः की ओर जो तब्बात के लग हैं भाग गये॥ २३। तब इसराएली लोग नफ़ताली और यसर और समस्त मुनस्सी से एकट्ठे होके निकले और मिदयानियों का पीछा किया॥ २४। और जिद्ःऊन ने सारे इफ़रायम पहाड़ में दूत भेजे और कहा कि मिदयानियों के बिरोध में उतरो और उन के आगे पानियों को बैतबरः और यरदन लों रोको तब सारे इफ़रायमी ने एकट्ठे होके पानियों को बैतबरः और यरदन लों रोका॥ २५। और उन्हों ने मिदयान के दो अध्यक्षों को ग़ुराब और ज़िअब को पकड़ा और ग़ुराब को ग़ुराब पहाड़ पर और ज़िअब को ज़िअब के कोल्हू पास मार डाला और मिदयान का पीछा किया और ग़ुराब और ज़िअब का सिर यरदन के उस पार जिद्ःऊन पास लाये॥

८ आठवां पर्ब्ब।

और इफ़रायम के लोगों ने उसे कहा कि तू ने हम से यह क्यों किया कि जब तू मिदयानियों से लड़ने गया तब हमें न बुलाया और उन्हों

ने उस्से बक्कत बिवाद किया॥ २। तब उस ने उन्हें कहा कि मैं ने तुम्हारे तुल्य अब क्या किया इफ़रायम के दाख का बीनना अबिअज़र की लवनी से अति अच्छा है॥ ३। ईश्वर ने मिद्यान के अध्यक्ष गुराब और ज़िअब को तुम्हारे हाथों में सौंप दिया सो तुम्हारे तुल्य काम करने का मुझे क्या सामर्थ्य था जब उस ने यह कहा तब उन की रिस धीमी ज़ई॥ ४। और जिद्‌ःजन यरदन पास आया वुह और उस के तीन सौ संगी सहित पार उतरे थके ज़ए रगेदते गये। ५॥ तब उस ने सुक्कात के लोगों से कहा कि मेरे संगियों को रोटियां दीजिये क्योंकि वे थके हैं और मैं मिद्यान के राजाओं का जिबह और ज़लमूनः का पीछा किये जाता ज़ं॥ ६। तब सुक्कात के अध्यक्षों ने कहा कि क्या जिबह और ज़लमूनः अब तेरे हाथ में हो गये कि हम तेरे कटक को रोटियां देवें॥ ७। तब जिद्‌ःजन बोला कि जब परमेश्वर जिबह और ज़लमूनः को मेरे हाथों में कर देगा उस समय मैं तुम्हारे देह को बन के कांटों से और जंटकटारों से देजंगा॥ ८। और वहां से फ़नुएल को गया और वहां के लोगों से वही कहा और फ़नुएल के लोगों ने भी सुक्कात के लोगों के समान उत्तर दिया॥ ९। और उस ने फ़नुएल के मनुष्यों से भी कहा कि जब मैं कुशल से फिरूंगा तब इस बुर्ज को ढा देजंगा॥ १०। अब जिबह और ज़लमूनः अपनी सेना सहित जो पंद्रह सहस्र पूर्ब के संतान की सेना में से बचे थे करकूर में था क्योंकि एक लाख बीस सहस्र मनुष्य खड्‌गधारी तलवार से जूझ गये थे॥ ११। तब जिद्‌ःजन उन की ओर जो नूबाह और युगबिहाह की पूर्ब दिशा को तंबूओं में रहते थे गया और सेना को मारा क्योंकि वुह सेना निश्चिंत थी॥ १२। और जब जिबह और ज़लमूनः भागे तो उस ने उन का पीछा किया और मिद्यानी राजाओं को जिबह और ज़लमूनः को पकड़ा और सारी सेना को डरा दिया॥ १३। और यूआस का बेटा जिद्‌ःजन सूर्य्य के उदय से आगे संग्राम से फिरा॥ १४। और सुक्कात में के एक तरुण को पकड़ा और उस्से पूछा तब उस ने उसे सतहत्तर मनुष्यों का पता बताया जो सुक्कात के अध्यक्ष और प्राचीन थे॥ १५। तब वुह सुक्कात पास आया और कहा कि देखो जिबह

और ज़लमून: जिन के बिषय में तुम ने यह कहके मुझे ओलहना दिया कि क्या जिबह और ज़लमून: अब तेरे हाथ में हैं कि हम तेरे थके ज़ए लोगों को रोटियां देवें॥ १६। तब उस ने नगर के प्राचीनों को और बन के कांटों को और ऊंटकटारों को लिया और उन से सुक्कातियों को जनाया॥ १७। और फ़नुएल का गढ़ ढा दिया और नगर के बासियों को मार डाला॥ १८। फिर उस ने जिबह और ज़लमून: को कहा कि वे लोग कैसे थे जिन्हें तुम ने तबूर में घात किया और वे बोले कि तेरे समान हर एक राजपुत्र के डौल था॥ १९। तब उस ने कहा कि वे मेरे सगे भाई थे जीवते परमेश्वर की किरिया है यदि तुम उन्हें जीता छोड़ते तो मैं भी तुम्हें न मारता॥ २०। फिर उस ने अपने पहिलौंठे यित्र को आज्ञा किई कि उठ उन्हें बधन कर परंतु उस तरुण ने अपनी तलवार न खींची क्योंकि वुह डरता था इस कारण कि वुह अब लों तरुण था॥ २१। तब ज़िबह और ज़लमून: ने कहा कि तू उठ के हमें घात कर क्योंकि जैसा मनुष्य तैसा उसका बल सो जिद:ऊन ने उठ के जिबह और ज़लमून: को मार डाला और वे आभूषण जो उन के ऊंटों के गले में थे ले लिये॥ २२। तब इसराएल के मनुष्यों ने जिद:ऊन से कहा कि तू हम पर राज्य कर और तेरा बेटा और तेरा पोता भी हम पर राज्य करे क्योंकि तू ने हमें मिदयान के हाथों से छुड़ाया॥ २३। तब जिद:ऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम पर प्रभुता न करूंगा और न मेरा बेटा परमेश्वर तुम पर प्रभुता करेगा॥ २४। और जिद:ऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम से एक बात चाहता हूं हर एक मनुष्य तुम्में से अपनी लूट का करनफूल मुझे देवे क्योंकि [वे सोने के करनफूल रखते थे इस कारण कि वे इसमअएली थे]॥ २५। और उन्हों ने उत्तर दिया कि हम मनमंता देंगे तब उन्हों ने बस्त्र बिछाया और हर एक ने अपनी लूट के धन से करनफूल उस पर डाल दिये॥ २६। सो वे सोने के करनफूल जो उस ने मांगे तौल में एक सहस्र सात सौ शेकल सोने के थे गहना और पट्टा और लाल बस्त्र जो मिदयानी राजा पहिनते थे और ऊंटों के गले की सीकरों से अधिक थे॥ २७। तब जिद:ऊन ने उस का एक अफ़ूद बनाया और उसे अपने नगर ऊफ़र: में रक्खा और वहां सारे इसराएल के संतान उस के

पीछे कुकर्मी ज़ए और जिद्:ऊन और उस के घर के लिये फंदा ज़आ॥ २८। और मिद्यानी इस रीति से इसराएल के संतान के बश में ज़ए कि सिर फिर न उठा सके और जिद्:ऊन के समय में चालीस बरस लों देश में चैन रहा॥ २९। और यूआस का बेटा यरुब्बअल अपने घर को फिर गया॥ ३०। और जिद्:ऊन के सत्तर निज पुत्र थे क्योंकि उस की पत्नियां बज़त थीं॥ ३१। और उस की एक दासी भी जो सिकम में थी उस्से एक बेटा जनी और उस ने उस का नाम अबिमलिक रक्खा॥ ३२। और यूआस का बेटा जिद्:ऊन अच्छा पुरनिया होके मर गया और अपने पिता यूआस की समाधि में अबिअज़र के ऊफ़र: में गाड़ा गया॥ ३३। और ऐसा ज़आ कि जिद्:ऊन के मरते ही इसराएल के संतान फिर गये और बअलीम के पीछे कुकर्मी ज़ए और बअलबरीत को अपना देव बनाया॥ ३४। और इसराएल के संतान ने तो परमेश्वर अपने ईश्वर को जिस ने उन्हें हर एक ओर से उन के शत्रुन के हाथ से बचाया था स्मरण न किया॥ ३५। और उन्हों ने यरुब्बअल जिद्:ऊन के घर पर जैसा उस ने इसराएल से भलाई किई वैसा उन्हों ने अनुग्रह न किया॥

९ नवां पर्ब्ब॥

अब यरुब्बअल का बेटा अबिमलिक अपने मामूओं के पास सिकम को गया और उन से और अपने नाना के समस्त घराने से कहा॥ २। कि सिकम के सारे लोगों को कहो कि तुम्हारे लिये क्या भला है कि यरुब्बअल के सब सत्तर बेटे तुम पर राज्य करें अथवा कि एक ही राज्य करे और यह भी चेत रक्खो कि मैं तुम्हारी हड्डी और तुम्हारा मांस ज़ं॥ ३। और उस के मामूओं ने भी उसी के लिये सिकम के लोगों से बज़त कुछ कहा यहां लों कि उन के मन अबिमलिक की ओर झुके क्योंकि वे बोले कि यह हमारा भाई है॥ ४। और उन्हों ने बअलबरीत के मंदिर में से सत्तर टुकड़ा चांदी उसे दिई जिन से अबिमलिक ने तुच्छ और नीच लोगों को अपनी ओर किया॥ ५। और वुह ऊफ़र: में अपने पिता के घर गया और उस ने यरुब्बअल के बेटे अपने सत्तर भाइयों को एक पत्थर

पर मार डाला तथापि यरुब्बअल का सब से छोटा बेटा यूताम बच रहा क्योंकि उस ने आप को छिपाया॥ ६। तब सिकम के सारे लोग और मिल्लो के सारे बासी एकट्ठे हुए और गये और बलूत के खंभे के निकट जो सिकम में था पहुंच के अबिमलिक को राजा किया॥ ७। और जब यूताम ने यह सुना तो वुह गया और जरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ के खड़ा हुआ और अपने शब्द से पुकारा और उन्हें कहा कि हे सिकम के लोगो मेरी सुनो जिसतें ईश्वर तुम्हारी सुने॥ ८। वृक्ष निकले कि किसी को राज्याभिषेक करें सो उन्हों ने जाके जलपाई वृक्ष से कहा कि तू हम पर राज्य कर॥ ९। परंतु जलपाई वृक्ष ने उन से कहा कि मैं अपनी चिकनाई को जिस्से वे परमेश्वर को और मनुष्य को प्रतिष्ठा देते हैं छोड़ देऊं और जाके वृक्षों पर बढ़ाया जाऊं॥ १०। तब वृक्षों ने गूलर वृक्ष से कहा कि तू आ और हम पर राज्य कर॥ ११। और गूलर वृक्ष ने उन्हें कहा कि क्या मैं अपनी मिठाई और सुफल छोड़ के वृक्षों पर बढ़ाया जाऊं॥ १२। तब वृक्षों ने दाख से कहा कि चल हम पर राज्य कर॥ १३। और दाख ने उन्हें कहा कि क्या मैं अपनी मदिरा जिस्से ईश्वर और मनुष्य आनंद होते हैं छोड़ के जाऊं और वृक्षों पर बढ़ाया जाऊं॥ १४। तब सब वृक्षों ने भटकटैया से कहा कि तू आके हम पर राज्य कर॥ १५। और भट-कटैया ने वृक्षों से कहा कि यदि सच मुच मुझे अपने ऊपर राज्या-भिषेक करते हो तो आओ मेरी छाया में शरण लेओ और यदि नहीं तो भटकटैया से एक आग निकलेगी और लुबनान के आरज वृक्ष को जलावेगी॥ १६। सो अब यदि सच्चाई और निष्कपट से तुम ने अबिमलिक को अपना राजा किया और यदि यरुब्बअल से और उस के घर से अच्छा व्यवहार किया और यदि उसे उस उपकार के समान जो उस के हाथों ने किया है पलटा दिया॥ १७। [क्योंकि मेरा पिता तुम्हारे कारण लड़ा और अपने प्राण को धर दिया और तुम्हें मिदयान के हाथों से छुड़ाया॥ १८। और तुम आज मेरे पिता के घर पर उठे हो और उस के सत्तर बेटों को एक पत्थर पर मार डाला और उस की दासी के पुत्र अबिमलिक को सिकम के लोगों पर राजा किया इस कारण

कि वुह तुम्हारा भाई है]॥ १९। से यदि तुम ने सच्चाई और निष्कपट से यरुब्बअल और उस के घर के साथ आज यह व्यवहार किया है तो तुम भी अबिमलिक से आनंद रहो और वुह तुम से आनंद रहे॥ २०। परंतु यदि नहीं तो अबिमलिक से आग निकले और सिकम के लोगों को और मिल्लो के घर को भस्म करे और सिकम के लोग और मिल्लो के घर में से भी एक आग निकले और अबिमलिक को भस्म करे॥ २१। तब यूताम भाग के चला गया और अपने भाई अबिमलिक के डरके मारे बीर में जाके रहा॥ २२। जब अबिमलिक ने इसराएल पर तीन बरस राज्य किया॥ २३। तब ईश्वर ने अबिमलिक और सिकमियों के मध्य दुष्टात्मा भेजा और सिकम के लोगों ने अबिमलिक से छल किया॥ २४। जिसतें वुह कठोरता जो यरुब्बअल के सत्तर बेटों के साथ किया था आवे और उन का लोहू उन के भाई अबिमलिक के सिर पर जिस ने उन्हें मार डाला और सिकमियों के सिर पर पड़े जो उस के भाइयों के मारने में साक्षी हुए॥ २५। तब सिकम के लोगों ने उस के लिये पहाड़ों की चोटियों पर घात में लोगों को बैठाया और जो उस मार्ग से आ निकलते थे वे उन्हें लूटते थे और अबिमलिक को सन्देश पहुंचा॥ २६। तब अबद का बेटा जअल अपने भाइयों समेत आया और सिकम को गया और सिकम के लोगों ने उस पर भरोसा रक्खा॥ २७। और वे खेतों में निकले और अपने दाख के खेतों को लताड़ा और रौंदा और आनंद किया और अपने देवतों के मंदिर में घुसे और खाया पीया और अबिमलिक को धिक्कारा॥ २८। तब अबद के बेटे जअल ने कहा कि अबिमलिक कौन और सिकम क्या है कि हम उस की सेवा करें क्या यरुब्बअल का बेटा नहीं और क्या जबूल उस का अध्यक्ष नहीं तुम सिकम के पिता हमूर के लोगों की सेवा करो हम उस की सेवा क्यों करें॥ २९। हाय कि लोग मेरे बश में होते मैं अबिमलिक को अलग कर देता तब उस ने अबिमलिक से कहा कि तू अपने कटक बढ़ा और निकल आ॥ ३०। और जब नगर के अध्यक्ष जबूल ने अबद के बेटे की ये बातें सुनी तो उस का क्रोध भड़का॥ ३१। और उस ने चतुराई से अबिमलिक के पास दूत भेज के कहा कि देख अबद का बेटा जअल अपने भाइयों

समेत सिकम में आया और देख वे तेरे बिरोध में नगर को दृढ़ करते हैं॥ ३२। इस लिये तू अपने लोगों सहित रात को उठ और खेत में घात में बैठ॥ ३३। और बिहान को ज्यों हीं सूर्य्य उदय हो त्यों ही नगर पर चढ़ जा और नगर से लड़ और देखो जब वुह और उस के लोग तेरे पास निकल आवें तब जो हाथ से हो सके सो करियो॥ ३४। तब अबिमलिक अपने सारे लोग सहित रात ही को उठा और चार जथा करके सिकम के साम्ने घात में बैठा॥ ३५। और अबद का बेटा जअल बाहर निकला और नगर के फाटक की पैठ पर खड़ा ज्ञआ और अबिमलिक अपने लोगों सहित ढूंके से उठा॥ ३६। और जब जअल ने लोगों को देखा तो उस ने ज़बूल से कहा कि देख पहाड़ की चोटी पर से लोग उतरते हैं तब ज़बूल ने उसे कहा कि तू पहाड़ की छाया को मनुष्य की नाईं देखता है॥ ३७। तब जअल फिर कहके बोला कि देखो लोग खेत के मध्य से निकले आते हैं और एक जथा मिओनीनम के चौगान से आती है॥ ३८। तब ज़बूल ने उसे कहा कि अब तेरा वुह मुंह कहां है जिस्से तू ने कहा कि अबिमलिक कौन जो हम उस की सेवा करें क्या ये वे लोग नहीं जिस की तू ने निंदा किई सो अब बाहर जाइये और उन से युद्ध कीजिये॥ ३९। तब जअल सिकमियों के साम्ने बाहर निकला और अबिमलिक से युद्ध किया॥ ४०। और अबिमलिक ने उसे खदेड़ा और वुह उस के साम्ने से भाग निकला और फाटक के पैठ लों आते बज्ञतेरे जूझ गये और बज्ञतेरे घायल ज्ञए॥ ४१। और अबिमलिक ने अरूमः में बास किया और ज़बूल ने जअल को और उस के भाइयों को खदेड़ दिया कि वे सिकम में न रहें॥ ४२। और बिहान को ऐसा ज्ञआ कि लोग निकलके खेत में गये और अबिमलिक को संदेश पज्ञंचा॥ ४३। और उस ने लोगों को लेके उन की तीन जथा बिभाग किया और चौगान में ढूंके में बैठा और क्या देखता है कि लोग नगर से निकले उस ने उन का साम्ना किया और उन्हें मार लिया॥ ४४। और अबिमलिक अपने साथ की जथा समेत आगे बढ़ा और नगर के फाटकों की पैठ में जाके खड़ा ज्ञआ और दो जथा उन लोगों पर आ पड़ी जो खेत में थी और उन्हें काट डाला॥ ४५।

और अबिमलिक उस दिन भर नगर से लड़ता रहा और नगर को ले लिया और नगर के लोगों को मार डाला और नगर को ध्वस्त किया और वहां नोन बिथराया॥ ४६। और जब सिकम के गढ़ के लोगों ने यह सुना तो वे अपने देव बिरीत के मंदिर के गढ़ में शरण के लिये जा घुसे॥ ४७। और अबिमलिक को यह संदेश पहुंचा कि सिकम के गढ़ के सब लोग एकट्ठे हुए हैं॥ ४८। तब अबिमलिक अपने सारे लोग समेत ज़लमून पहाड़ पर चढ़ा और अबिमलिक ने कुल्हाड़ा अपने हाथ में लिया और वृक्षों में से एक डाली काटी और उसे उठाके अपने कांधे पर धरा और अपने साथियों से कहा कि जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है तुम भी शीघ्र वैसा करो॥ ४९। तब सब लोगों में से हर एक ने एक एक डाली काट लिई और अबिमलिक के पीछे हो लिये और उन्हें गढ़ पर डालके उन में आग लगा दिई यहां लों कि सिकम के गढ़ के समस्त जल मरे वे सब पुरुष और स्त्री एक सहस्र के लग भग थे॥ ५०। तब अबिमलिक तैबीज़ में आया और उस के साम्ने डेरा किया और उसे ले लिया॥ ५१। परंतु नगर के भीतर एक दृढ़ गढ़ था उस में समस्त पुरुष और स्त्रियां और नगर के सारे बासी भागके जा घुसे और उसे बंद किया और गढ़ की छत पर चढ़ गये॥ ५२। तब अबिमलिक गढ़ पर आया और उस्से लड़ा और चाहा कि गढ़ के द्वार जला देवे॥ ५३। तब किसी स्त्री ने चक्की के पाट का एक टुकड़ा अबिमलिक के सिर पर दे मारा जिसतें उस की खोपरी चूर हो जाय॥ ५४। तब उस ने अपने अस्त्रधारी तरुण को शीघ्र बुलाया और उसे कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे मार डाल जिसतें मेरे बिषय में कहा न जाय कि एक स्त्री ने उसे घात किया तब उस तरुण ने उसे गोदा और वुह मर गया॥ ५५। और इसराएलियों ने देखा कि अबिमलिक मर गया तब हर एक अपने अपने स्थान को चला गया॥ ५६। इसी रीति से ईश्वर ने अबिमलिक की दुष्टता को जो उस ने अपने सत्तर भाइयों को मारके अपने पिता से किई थी पलटा दिया॥ ५७। और सिकम के लोगों की सारी बुराई ईश्वर ने उन के सिरों पर डाली और वुह स्राप जो यरुब्बआल के बेटे यूताम ने उन पर किई थी उन पर पड़ी।

१० दसवां पर्ब्ब।

और अबिमलिक के पीछे इशकार का एक जन दूदू का पोता फूअः का पुत्र तोलअ इसराएल के संतान के बचाव के लिये उठा वुह इफ़रायम पहाड़ समीर में रहता था॥ २। और उस ने तेईस बरस इसराएल का न्याय किया और मर गया और समीर में गाड़ा गया॥ ३। और उस के पीछे जिलिअदी याइर उठा और उस ने इसराएल का बाईस बरस न्याय किया॥ ४। और उस के तीस बेटे थे जो तीस गदहों पर चढ़ा करते थे और उन के तीस नगर थे जिन के नाम आज के दिन लों याइर के गांव हैं जो जिलिअद के देश में हैं॥ ५। और याइर मर गया और क़मून में गाड़ा गया॥ ६। तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन्हों ने बअलीम और इस्तारात और अराम और सैदा के और मोअब के और अम्मून के संतान के और फिलिसतियों के देवों की सेवा किई और परमेश्वर को छोड़ दिया और उस की सेवा न किई॥ ७। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें फिलिसतियों और अम्मून के संतानों के हाथों में कर दिया॥ ८। और उन्हों ने उस बरस से सारे इसराएल के संतान को जो यरदन के उस पार अमूरियों के देश में और जिलिअद में थे अठारह बरस लों उन्हें अति खिजाके चूर किया॥ ९। और अम्मून के संतान ने यरदन पार होके यहूदाह से भी और बिनयमीन और इफ़रायम के घर से युद्ध किया यहां लों कि इसराएल अति दुःखी हुए॥ १०। तब इसराएल के संतान ने परमेश्वर की प्रार्थना करके कहा कि हम ने तेरे बिरुद्ध में पाप किया इस कारण कि अपने ईश्वर को छोड़ा और बअलीम की सेवा भी किई॥ ११। तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान से कहा कि क्या मैं ने तुम्हें मिस्रियों से और अमूरियों से और अम्मून के संतान से और फिलिसतियों से नहीं छुड़ाया॥ १२। और सैदानियों से भी और अमालिक़ियों और मऊनियों ने भी तुम्हें दुःख दिया और तुम ने मेरी दोहाई दिई सो मैं ने तुम्हें उन के हाथों से छुड़ाया॥ १३। तथापि तुम ने मुझे त्याग किया

और उपरी देवतों की सेवा किई इस लिये अब मैं तुम्हें न छुड़ाऊंगा॥ १४। तुम जाओ और जिन देवें को तुम ने चुना है उन की दोहाई देओ कि वे तुम्हें कष्ट से छुड़ावें॥ १५। फिर इसराएल के संतानें ने परमेश्वर से कहा कि हम ने तो पाप किया सो जो तेरी दृष्टि में अच्छा जान पड़े सो हम से कर हम तेरी बिनती करते हैं केवल अबकी हमें छुड़ा॥ १६। और उन्हों ने परदेशियों के देवतों को अपने में से दूर किया और परमेश्वर की सेवा करने लगे तब उस का जीव इसराएल की बिपत्ति के लिये सकेती में पड़ा॥ १७। तब अम्मून के संतान एकट्ठे बुलाए हुए और जिलिअद में छावनी किई और इसराएल के संतान एकट्ठे हुए और मिसफः में छावनी किई॥ १८। तब जिलिअद के अध्यक्षों और लोगों ने आपुस में कहा कि वुह कौन जन है जो अम्मून के संतान से युद्ध आरंभ करेगा वही जिलिअद के बासियों का प्रधान होगा।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब॥

अब जिलिअदी इफ़ताह एक महाबीर था जो गणिका स्त्री का बेटा था और जिलिअद से इफ़ताह उत्पन्न हुआ॥ २। और जिलिअद की पत्नी उसे बेटे जनी और उस की पत्नी के बेटे जब सयाने हुए तब उन्हों ने इफ़ताह को निकाल दिया और उसे कहा कि हमारे पिता के घर में तेरा अधिकार नहीं इस लिए कि तू उपरी स्त्री का लड़का है॥ ३। तब इफ़ताह अपने भाई के आगे से भागा और तूब के देश मे जा रहा और उस के पास बहुत से तुच्छ लोग एकट्ठे हुए और वे उस के साथ आया जाया करते थे॥

४। और कितने दिनों के पीछे अम्मून के सन्तान ने इसराएल से लड़ाई किई॥ ५। और ऐसा हुआ कि जब अम्मून के संतान ने इसराएल से लड़ाई किई तब जिलिअद के प्राचीन निकले कि इफ़ताह को तूब के देश से ले आवें॥ ६। और उन्हों ने इफ़ताह को कहा कि आ और हमारा प्रधान हो जिसतें हम अम्मून के संतानें से संग्राम करें॥ ७। तब इफ़ताह ने जिलिअद के संतानें से कहा कि क्या तुम ने मुझ से बैर करके

मेरे पिता के घर से निकाल नहीं दिया सो अब जो तुम बिपत्ति में पड़े तो मुझ पास क्यों आए हो॥ ८। और जिलिअद के प्राचीनों ने इफ़ताह को कहा कि अब हम इस लिये तेरे पास फिर आए कि तू हमारे साथ चलके अम्मून के संतान से संग्राम करे और हमारा और जिलिअद के सारे बासियों का प्रधान होवे॥ ९। और इफ़ताह ने जिलिअद के प्राचीनों से कहा कि यदि अम्मून के संतान से लड़ाई करने के लिए तुम मुझे घर फेर लिये चलते हो और परमेश्वर उन्हें मेरे आगे सौंप देवे तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान होऊंगा॥ १०। तब जिलिअद के प्राचीनों ने इफ़ताह को उत्तर दिया कि परमेश्वर हमारे मध्य में सुनवैया होवे यदि हम तेरे कहने के समान न करें॥ ११। तब इफ़ताह जिलिअद के प्राचीनों के साथ चला गया और लोगों ने उसे अपना प्रधान और अध्यक्ष किया और इफ़ताह ने मिसफ़ा में परमेश्वर के आगे अपनी सारी बातें उच्चारण किईं॥ १२। और इफ़ताह ने अम्मून के संतान के राजा पास यह कहके दूत भेजे कि तुझे मुझ से क्या काम जो तू मुझ पर मेरे देश में युद्ध करने को चढ़ आया है॥ १३। पर अम्मून के संतान के राजा ने इफ़ताह के दूतों को कहा इस लिए कि जब इसराएल मिस्र से निकल आए तब उन्हों ने मेरे देश को अर्नून से लेके यबूक़ और यरदन लों ले लिया सो अब कुशल से उन्हें फेर देओ॥ १४। तब इफ़ताह ने दूतों को फेर अम्मून के संतान के राजा पास भेजा॥ १५। और उसे कहा कि इफ़ताह यह कहता है इसराएल ने मोअब का देश और अम्मून के संतान का देश नहीं लिया॥ १६। परन्तु जब इसराएल मिस्र से चढ़ आए और अरण्य से होके लाल समुद्र और क़ादिस में चले आए॥ १७। तब इसराएलियों ने अदूम के राजा को दूतों से यह कहा भेजा कि हमें अपने देश में से जाने दीजिए परंतु अदूम के राजा ने उन की न सुनी और उसी रीति से उन्हों ने मोअब के राजा को कहा भेजा परंतु उस ने भी न माना और इसराएल क़ादिस में ठहरे रहे॥ १८। तब वे अरण्य में होके चले गए और अदूम के देश और मोअब देश से चक्कर खाके मोअब की पूर्ब ओर से आए और अर्नून के पल्ले ओर डेरा खड़ा किया पर मोअब के सिवानों में प्रवेश न किया क्योंकि अर्नून मोअब का सिवाना था॥ १९। तब इसराएलियों ने

अमूरियों के राजा सैहून को हसबून के राजा कने दूत भेजे और उसे बोले कि हमें अपने स्थान को अपने देश में से जाने दीजिये॥ २०। पर सैहून ने उन्हें अपने सिवाने से जाने न दिया परंतु सैहून ने अपने लोग एकट्ठे किए और यहास में डेरा खड़ा किया और इसराएल से लड़े॥ २१। और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने सैहून को उस के सारे लोग समेत इसराएल के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें मारा सो इसराएलियों ने अमूरियों के सारे देश और उस देश के बासियों का अधिकार पाया॥ २२। और उन्हों ने अर्नून से लेके यबूक लों और अरण्य से यरदन लों अमूरियों के सारे सिवानों को बश में किया॥ २३। सो अब परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने अमूरियों को अपने इसराएल लोग के आगे से दूर किया तो क्या तू उसे बश में करेगा॥ २४। जो तेरे देव कमूस ने तेरे बश में किया है उसे नहीं चाहता है सो परमेश्वर हमारा ईश्वर जिन्हें हमारे आगे से दूर करेगा हम उन्हें बश में करेंगे॥ २५। और क्या तू मोअब के राजा सफ़ूर के बेटे बलक़ से भला है उस ने कभी इसराएल से झगड़ा किया अथवा उस ने कभी उन से युद्ध किया॥ २६। जब लों इसराएल हसबून में और उस के नगरों में और अरआयर और उस के नगरों में और उन सब नगरों में जो अर्नून के सिवानों में है तीन सौ बरस रहा किए उस समय लों तुम ने उन्हें क्यों न छुड़ाया॥ २७। सो मैं ने तेरा अपराध नहीं किया परंतु मुझ से युद्ध करने में तू अनुचित करता है सो परमेश्वर न्यायी इसराएल के संतान के और अम्मून के संतान के मध्य में आज के दिन न्याय करे॥ २८। तिस पर भी अम्मून के संतान के राजा ने उन बातों को जो इफ़ताह ने उसे कहा भेजीं न सुना॥ २९। तब परमेश्वर का आत्मा इफ़ताह पर आया और वुह जिलिअद और मुनस्सी के पार गया और जिलिअद के मिसफ़ा से पार गया और जिलिअद के मिसफ़ा से अम्मून के संतान की ओर उतरा॥ ३०। और इफ़ताह ने परमेश्वर की मनौती मानी और कहा कि यदि तू सचमुच अम्मून के संतान को मेरे हाथ में सौंप देगा॥ ३१। तो ऐसा होगा कि जब मैं अम्मून के संतान से कुशल से फिर आऊंगा तो जो कुछ मेरे घर के द्वारों से पहिले मेरी भेंट को निकलेगा वुह निश्चय परमेश्वर

का होगा अथवा मैं उसे होम की भेंट के लिए चढ़ाऊंगा॥ ३२। तब इफ़्ताह अम्मून के संतान की ओर पार उतरा कि उन से लड़े और परमेश्वर ने उन्हें उस के हाथ में सौंप दिया और अरआयर से लेके मिनियत के पहुंचने लों बीस नगर और दाख की बारी के चौगान लों अति बड़ी मार से उन्हें मारा इसी रीति से अम्मून के संतान इसराएल के संतानों के बश में हुए॥ ३४। और जब इफ़्ताह मिसफ़ा को अपने घर आया तब क्या देखता है उस की बेटी तबले बजाती और नाचती हुई उसे आगे लेने को निकली और वुह उस की एकलौती थी उसे छोड़ कोई बेटा बेटी न थी॥ ३५। और यों हुआ कि जब उस ने उसे देखा तब अपने कपड़े फाड़े और बोला हाय हाय मेरी बेटी तू ने मुझे अति उदास किया तू उन में से एक है जो मुझे सताते हैं क्योंकि मैं ने तो परमेश्वर को बचन दिया है और हट नहीं सक्ता॥ ३६। तब उस ने उसे कहा कि हे मेरे पिता यदि तू ने ईश्वर को बचन दिया है तो जो कुछ तेरे मुंह से निकला सो मुझ से कीजिए क्योंकि परमेश्वर ने तेरे शत्रु अम्मून के संतान से तेरा पलटा लिया है॥ ३७। फिर उस ने अपने पिता से कहा कि मेरे लिये इतना कीजिए कि दो मास मुझे छोड़िये जिसतें मैं पहाड़ों में फिरूं और अपनी संगियों को लेके अपने कुआंरपन पर बिलाप करूं॥ ३८। और वुह बोला कि जा और उस ने उसे दो मास की छुट्टी दिई और वुह अपनी संगियों सहित गई और पहाड़ों पर अपने कुआंरपन पर बिलाप किया॥ ३९। और दो मास के पीछे अपने पिता पास फिर आई और उस ने जैसी मनौती मानी थी वैसी ही उस्से किई और वुह पुरुष से अज्ञान रही और यह इसराएल में बिधि हुई॥ ४०। सो इसराएल की कन्या बरस बरस जिलिअदी इफ़्ताह की बेटी से बरस में चार दिन बात चीत करने को जाती थीं।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

उस समय इफ़रायम के लोग एकट्ठे होके उत्तर दिशा को गए और इफ़्ताह से कहा कि जब तू अम्मून के संतान से युद्ध करने को पार उतरा तब हमें क्यों न बुलाया सो अब हम तेरे घर को तुझ समेत जला

देंगे॥ २। इफ़ताह ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं और मेरे लोग अम्मून के संतान से बड़ी झगड़ा रखते थे और जब मैं ने तुम्हें बुलाया तुम ने उन के हाथ से मुझे न छोड़ाया॥ ३। और जब मैं ने देखा कि तुम ने मुझे न छोड़ाया तब मैं ने अपना प्राण हाथ पर रक्खा और पार उतर के अम्मून के संतान का साम्ना किया और परमेश्वर ने उन्हें मेरे हाथ में सौंप दिया से तुम आज के दिन किस लिये मुझ पर लड़ने को चढ़ आए हो॥ ४। तब इफ़ताह ने सारे जिलिआदियों को एकट्ठा करके इफ़रायमियों में से लड़ाई किई और जिलिआदियों ने इफ़रायमियों को मार लिया क्योंकि वे कहते थे कि जिलिआदी इफ़रायमियों में और मुनस्सी में इफ़रायमियों के भगोड़े हैं॥ ५। और जिलिआदी ने इफ़रायमियों के आगे यरदन के घाटों को ले लिया और ऐसा ज़ुआ कि जब इफ़रायमी भागे ज़ुए आए और बोले कि मुझे पार जाने दे तब जिलिआदी उसे कहते थे कि तू इफ़रायमी है यदि उस ने नाह किया॥ ६। तब उन्हों ने उसे कहा कि शबूलीस कहो और उस ने सबूलीस कहा इस लिये कि वुह ठीक उच्चारण कर न सक्ता था तब वे उसे पकड़के यरदन के घाटों पर मार डालते थे से उस समय वहां बयालीस सहस्र इफ़रायमी मारे गए॥ ७। और इफ़ताह ने छः बरस लों इसराएल का न्याय किया उस के पीछे जिलिआदी इफ़ताह मर गया और जिलिआद की बस्तियों में गाड़ा गया॥ ८। उस के पीछे बैतलहम का इबसान इसराएल का न्यायी ज़ुआ॥ ९। उस के तीस तो बेटे थे और तीस बेटियां और उस ने बेटों को बाहर भेजके उन के लिये तीस बेटियां मंगवाईं उस ने सात बरस इसराएल का न्याय किया॥ १०। तब इबसान मर गया और बैतलहम में गाड़ा गया॥ ११। उस के पीछे ज़बुलूनी ऐलून इसराएल का न्यायी ज़ुआ और उस ने दस बरस इसराएल का न्याय किया॥ १२। और ज़बुलूनी ऐलून मर गया और ऐयलून में ज़बुलून के देश में गाड़ा गया॥ १३। उस के पीछे हलील का बेटा अबदून एक परआतूनी इसराएल का न्यायी ज़ुआ॥ १४। उस के चालीस बेटे और तीस पोते थे जो सत्तर गदहों के बछेड़ों पर चढ़ा करते थे और आठ बरस उस ने इसराएल का न्याय किया॥ १५। और हलील का बेटा परआतूनी

अबदून मर गया और अमालीकियों के पहाड़ इफ़रायम के देश में परअतून में गाड़ा गया ॥

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में अधिक बुराई किई और परमेश्वर ने उन्हें चालीस बरस लों फ़िलिसतियों के हाथ में सैांप दिया ॥ २। और दान के घराने में सूरअः का एक जन था जिस का नाम मनूहा था उस की स्त्री बांझ होके न जनती थी ॥ ३। तब परमेश्वर का दूत उस स्त्री को दिखाई दिया और उसे कहा कि देख तू बांझ होके नहीं जनती है पर तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी ॥ ४। सो सेचित हो मदिरा अथवा अमल की कोई वस्तु न पीजियो और कोई अशुद्ध वस्तु न खाइयो ॥ ५। क्योंकि तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी उस के सिर पर छूरा न फिरेगा क्योंकि वुह बालक गर्भ से परमेश्वर के लिये नासरी होगा और वुह इसराएलियों को फ़िलिसतियों के हाथ से छुड़ाने को आरंभ करेगा ॥ ६। तब उस स्त्री ने आके अपने पति से कहा कि ईश्वर का एक जन मुझ पास आया उस का स्वरूप ईश्वर के दूत की नाईं अति भयानक था परंतु मैं ने उसे न पूछा कि तू कहां का और उस ने भी अपना नाम मुझे न बताया ॥ ७। पर उस ने मुझे कहा कि देख तू गर्भिणी होके बेटा जनेगी अब तू मदिरा और कोई अमल की वस्तु न पीजियो और अपवित्र वस्तु मत खाइयो क्योंकि वुह बालक गर्भ में से जीवन भर ईश्वर के लिये नासरी होगा ॥ ८। तब मनूहा ने परमेश्वर से बिनती करके कहा कि हे मेरे परमेश्वर ऐसा कर कि ईश्वर का वुह जन जिसे तू ने भेजा था हम पास फिर आवे और हमें सिखावे कि हम उस लड़के के विषय में जो उत्पन्न होगा क्या करें ॥ ९। और ईश्वर ने मनूहा का शब्द सुना और ईश्वर का दूत उस स्त्री पास जब वुह खेत में थी फिर आया परंतु उस का पति मनूहा उस पास न था ॥ १०। तब वुह स्त्री फुरती से दौड़ी गई और अपने पति को जताया और उसे कहा कि देख वही मनुष्य जो अगिले दिन मुझे दिखाई दिया था फिर दिखाई दिया है ॥ ११। तब मनूहा उठके अपनी पत्नी के पीछे चला और उस मनुष्य पास

आके उसे कहा कि तू वही पुरुष है जिस ने इस स्त्री से बातें किईं और उस ने कहा कि मैं हूं॥ १२। तब मनूहा ने कहा कि जैसे तू ने कहा वैसे ही होवे लड़के की कौन सी रीति अथवा वुह क्या करेगा॥ १३। तब परमेश्वर के दूत ने मनूहा से कहा कि सब जो मैं ने स्त्री से कहा है वुह चौकस रहे॥ १४। वुह दाख में का कुछ न खाय और मदिरा और कोई अमल न पीये और अपवित्र वस्तु न खाय सब जो मैं ने उसे आज्ञा किई पालन करे॥ १५। और मनूहा ने परमेश्वर के दूत को कहा कि तनिक आप ठहर जाइये कि हम आप के आगे एक मेम्ना सिद्ध करें॥ १६। परंतु परमेश्वर के दूत ने मनूहा से कहा कि यद्यपि तू मुझे रोके तथापि मैं तेरी रोटी न खाऊंगा और यदि तू होम की भेंट चढ़ावे तो तुझे उचित है कि परमेश्वर के लिये चढ़ावे क्योंकि मनूहा न जानता था कि वुह परमेश्वर का दूत है॥ १७। फिर मनूहा ने परमेश्वर के दूत से कहा कि आप का नाम क्या जिसतें जब आप का कहा पूरा होवे हम आप की प्रतिष्ठा करें॥ १८। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है कि वुह आश्चर्यित॥ १९। तब मनूहा ने एक मेम्ना भोजन की भेंट के कारण परमेश्वर के लिए एक चटान पर चढ़ाया और उस ने आश्चर्य्यित रीति किई और मनूहा और उस की स्त्री देख रहे थे॥ २०। क्योंकि ऐसा हुआ कि जब बेदी पर से स्वर्ग की ओर लौर उठी तब परमेश्वर का दूत लौर में होके बेदी पर से स्वर्ग को चला गया और मनूहा और उस की स्त्री ने देखा और मूंह के बल भूमि पर गिरे॥ २१। परंतु परमेश्वर का दूत मनूहा को और उस की स्त्री को फेर दिखाई न दिया तब मनूहा ने जाना कि वुह परमेश्वर का दूत था॥ २२। और मनूहा ने अपनी पत्नी से कहा कि हम अब निश्चय मर जायेंगे क्योंकि हम ने ईश्वर को देखा॥ २३। परंतु उस की पत्नी ने उसे कहा कि यदि परमेश्वर की इच्छा हमें मारने को होती तो वुह होम की भेंट और भोजन की भेंट हमारे हाथों से ग्राह्य न करता और हमें यह सब न दिखाता और इस समय के समान हमें ये बातें न कहता॥ २४। और वुह स्त्री बेटा जनी और उस का नाम शम्सून रक्खा वुह लड़का बढ़ा और परमेश्वर ने उसे आशीष दिई॥ २५। और परमेश्वर का आत्मा दान की छावनी सुरअः और इसताल के बीच उसे उभाड़ने लगा॥

१४ चौदहवां पर्व्व।

और शम्सून तिमनः में उतरा और तिमनः में उस ने फ़िलिसतियों की बेटियों में से एक स्त्री को देखा॥ २। और उस ने ऊपर आके अपने माता पिता से कहा कि मैं ने फ़िलिसतियों की बेटियों में से तिमनः में एक को देखा सो उस्से मेरा बिवाह करा देओ॥ ३। तब उस के माता पिता ने उसे कहा कि क्या तेरे भाइयों की बेटियों में और मेरे सारे लोगों में कोई स्त्री नहीं जो तू अख़तना फ़िलिसतियों में से पत्नी लिया चाहता है और शम्सून ने अपने पिता से कहा कि स्त्री को मुझे दिलाइये क्योंकि वुह मेरे मन में भाई है॥ ४। परंतु उस के माता पिता न समझे कि यह परमेश्वर की ओर से है और फ़िलिसतियों से बैर ढूंढ़ता है क्योंकि उस समय में फ़िलिसती इसराएलियों पर प्रभुता करते थे॥ ५। तब शम्सून अपने माता पिता के संग तिमनः को उतरा और तिमनत के दाख की बारियों में आये और क्या देखता है कि एक युबा सिंह उस के सन्मुख गर्जता हुआ उस पर आ पहुंचा॥ ६। तब परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ शम्सून पर पड़ा और उस ने उसे ऐसा फाड़ा जैसे कोई मेम्ना को फाड़ता है और उस के हाथ में कुछ न था परंतु जो कुछ उस ने किया था सो अपने माता पिता से भी न कहा॥ ७। तब उस ने जाके उस स्त्री से बात किई और वुह शम्सून के मन में भाई॥ ८। और कितने दिनों के पीछे वह उसे लेने फिरा और वुह अलग होके उस सिंह की लोथ देखने गया और क्या देखता है कि सिंह की लोथ में मधु मक्खी का झुंड और छत्ता है॥ ९। तब उस ने उस में से हाथ में लिया और खाता हुआ चला गया और अपनी माता पिता के पास आया और उन्हें भी कुछ दिया उन्हों ने खाया परंतु उस ने उन्हें न कहा कि यह मधु सिंह की लोथ में से निकला॥ १०। फिर उस का पिता उस स्त्री के पास गया और वहां शम्सून ने जेवनार किया क्योंकि तरुणों का यह व्यवहार था॥ ११। और ऐसा हुआ कि जब उन्हों ने उसे देखा तो वे तीस संगी को लाये कि उस के साथ रहें॥ १२। और शम्सून ने उन्हें कहा कि मैं तुम से एक पहेली कहता हूं यदि तुम जेवनार के सात दिन के भीतर

निश्चय उस का अर्थ मुझे बतलाओगे और उस का भेद पाओगे तो मैं तीस ओढ़ना और तीस जोड़े बस्त्र तुम्हें देऊंगा॥ १३। परंतु यदि तुम न बता सकोगे तो तुम तीस ओढ़ना और तीस जोड़े बस्त्र मुझे देओगे सो वे बोले कि अपनी पहेली कह कि हम सुनें॥ १४। तब उस ने उन्हें कहा कि भक्षक में से भक्ष्य निकला और बली में से मिठास और वे तीन दिन लों उस पहेली का अर्थ न बता सके॥ १५। और यों हुआ कि सातवें दिन उन्हों ने शम्सून की स्त्री से कहा कि अपने पति को फुसला कि वुह इस पहेली का अर्थ हमें बतावे नहीं तो हम तेरा और तेरे पिता का घर आग से जला देंगे क्या तुम ने हमें बुलाया है कि नहीं कि हमारा अधिकार लेओ॥ १६। तब शम्सून की पत्नी उस के आगे बिलाप करके बोली कि तू मुझ से बैर रखता है और मुझे प्यार नहीं करता तू ने मेरे लोगों के संतानों से एक पहेली कही और मुझे न बतलाई और उस ने उसे कहा कि मैं ने अपने माता पिता को नहीं बताया सो क्या तुझे बताऊं॥ १७। और वुह उस के आगे उन के जेवनार के सात दिन लों रोया किई और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उस ने उसे बता दिया क्योंकि उस ने उसे निपट सताया और उस ने उस पहेली का अर्थ अपने लोगों के संतानों से कहा॥ १८। और उस नगर के मनुष्यों ने सातवें दिन सूर्य्य के अस्त होने से पहिले उसे कहा कि मधु से मीठा क्या है और सिंह से बलवान कौन तब उस ने उन्हें कहा कि यदि तुम मेरी कलोर से न जोत्ते तो मेरी पहेली का भेद न पावते॥ १९। फिर परमेश्वर का आत्मा उस पर पड़ा और वुह अश्कलून को गया और उन में से तीस मनुष्यों को मार डाला और उन के बस्त्र लिये और उन्हें जोड़ा जोड़ा बस्त्र दिये जिन्हों ने पहेली का अर्थ कहा था सो उस का क्रोध भड़का और अपने पिता के घर चढ़ गया॥ २०। परंतु शम्सून की पत्नी उस के संगी को जिसे वुह मित्र जानता था दिई गई॥

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब।

और कितने दिन पीछे गोहूं की कटनी के समय में ऐसा हुआ कि शम्सून एक मेम्ना लेके अपनी पत्नी की भेंट को गया और कहा

कि मैं अपनी पत्नी पास कोठरी में जाऊंगा परंतु उस के पिता ने उसे जाने न दिया॥ २। और उस के पिता ने कहा कि मुझे निश्चय हुआ कि तू उस्से बैर रखता था इस लिये मैं ने उसे तेरे संगी को दिया और उस की लहुरी बहिन उस्से क्या अति सुंदरी नहीं सो उस की संती इसे ले॥ ३। तब शम्सून ने उन के बिषय में कहा कि अब मैं फिलिसतियों से निर्दोष होऊंगा यद्यपि मैं उन की हानि और बुराई करूं॥ ४। तब शम्सून ने जाके तीन सौ लोमड़ियां पकड़ीं और दो दो की पूंछ एक साथ बांधी और पलीता लिया और पूंछ बांधके एक एक पलीता बीच में बांधा॥ ५। और पलीतों को बार के उन्हें फिलिसतियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया और फलों से लेके खड़े खेत लों और दाख के बाटिकों को और जलपाई को जला दिया॥

६। तब फिलिसतियों ने कहा कि यह किस ने किया है और वे बोले कि तिमनी के जंवाई शम्सून ने इस लिये कि उस ने उस की पत्नी को लेके उस के संगी को दिया तब फिलसती चढ़ आये और उसे और उस के पिता को आग से जला दिया॥

७। तब शम्सून ने उन्हें कहा कि यद्यपि तुम ने ऐसा किया है तथापि मैं तुम से प्रतिफल लेऊंगा तब पीछे चैन करूंगा॥ ८। और उस ने उन्हें जांघ और कूला से मार मारके बड़ा नाश किया और फिर जाके ऐताम पर्बत पर बैठ गया॥ ९। तब फिलिसती चढ़ गये और यहूदाह में डेरा किया और लही में फैल गये॥ १०। और यहूदाह के मनुष्यों ने उन से कहा कि तुम हम पर क्यों चढ़ आये हो वे बोले कि शम्सून के बांधने को कि जैसा उस ने हम से किया हम उस्से करें॥ ११। तब यहूदाह के तीन सहस्र मनुष्य ऐताम पर्बत की चोटी पर गये और शम्सून को कहा कि क्या तू नहीं जानता है कि फिलिसती हम पर प्रभुता करते हैं सो तू ने हम से यह क्या किया है और उस ने उन्हें कहा कि जैसा उन्हों ने मुझ से किया मैं ने उन से किया॥ १२। तब उन्हों ने उसे कहा कि अब हम आये हैं कि तुझे बांधके फिलिसतियों के हाथ में सौंप देवें और शम्सून ने उन्हें कहा कि मुझ से किरिया खाओ कि हम आप तुझे न मारेंगे॥ १३। पर उन्हों ने उसे कहा कि नहीं परंतु हम तुझे दृढ़ता

से बांधेंगे और उन के हाथ में सैांपेंगे पर निश्चय हम तुझे मार न डालेंगे फिर उन्हों ने उसे दो नई डोरी से बांधा और पहाड़ी पर से उतार लाये॥ १४। जब वुह लही में पहुंचा तब फिलसती उस पर ललकारे उस समय परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ उस पर पड़ा और उस की बांह पर की डोरी जले सन की नाईं हो गईं और उस के हाथों के बंधन खुल गये॥ १५। तब उस ने गदहे की एक नई जबड़े की हड्डी पाई और हाथ बढ़ाके उसे लिया और उस ने उस्से एक सहस्र मनुष्य मार डाले॥ १६। और शम्सून बोला कि एक गदहे की जबड़े की हड्डी से ढेर पर ढेर मैं ने एक गदहे की जबड़े की हड्डी से एक सहस्र पुरुष मारे॥ १७। और ऐसा हुआ कि इतना कहके जबड़े की हड्डी को अपने हाथ से फेंक दिया और उस स्थान का नाम रामतलही रक्खा।

१८। और वुह निपट पियासा हुआ तब वुह परमेश्वर की बिनती करके बोला कि तू ने अपने दास के हाथ से ऐसा बड़ा बचाव दिया और अब क्या मैं पियासा मरके अखतनों के हाथ में पड़ूं॥ १९। तब परमेश्वर ने एक गड़हा लही में खोदा और वहां से पानी निकला और उस ने उसे पीया तब उस के जी में जी आया और वुह फिर जीया इस लिये उस ने उस का नाम एंक का कुआं रक्खा जो आज लों लही में है॥ २०। और उस ने फिलिसतियों के समय में बीस बरस लों इसराएल का न्याय किया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

तब शम्सून अज्जः को गया और वहां एक गणिका स्त्री देखी और उस पास गया॥ २। अज्जियों से कहा गया कि शम्सून यहां आया है सो उन्हों ने उसे घेर लिया और सारी रात नगर के फाटक पर उस की घात में लगे रहे पर रात भर यह कहके चुप चाप रहे कि जब बिहान होगा तब हम उसे मार लेंगे॥ ३। और शम्सून आधी रात लों पड़ा रहा और आधी रात को उठा और उस ने नगर के फाटकों के दुआरों को और दो खंभों को अपने कांधे पर धरके उस पहाड़ी की

चोटी पर जो हबरून के आगे है ले गया॥ ४। और बक्कत दिन के पीछे ऐसा ज़आ कि उस ने सूरेक की तराई में एक स्त्री से प्रीति कीई जिस का नाम दलीलः था॥ ५। और फिलिसतियों के प्रधान उस पास चढ़ गये और उसे कहा कि उसे फुसला और देख कि उस का महा बल कहां है और किस रीति से हम उसे वश में करें जिसतें हम उसे बांध के वश में करें और हर एक हम में से ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चांदी तुझे देगा॥ ६। और दलीलः ने शम्सून से कहा कि मुझे बता कि तेरा महा बल किस में है और किस्से तू बांधा जाय कि तुझे वश में करें॥ ७। और शम्सून ने उसे कहा कि यदि वे मुझे सात ओदी डोरियों से जो कभी झूरी न ज़ई हों बांधें तब मैं निर्बल हो जाऊंगा और दूसरे मनुष्य की नाई हो जाऊंगा॥ ८। तब फिलिसतियों के प्रधान उस पास सात ओदी डोरी लाये जो कभी न सूखी थीं और उस ने उन से उसे बांधा॥ ९। और घातवाले उस के संग कोठरी के भीतर ढूके में थे और वुह उस्से बोली हे शम्सून फिलिसती तुझ पर पड़े तब उस ने उन डोरियों को सनके सूत की नाई जो आग में लग जाय तोड़ा सो उस का बल जाना न गया॥ १०। तब दलीलः ने शम्सून से कहा कि देख तू ने मुझे चिड़ाया और झूठ बोला अब मुझे बता कि तू किस्से बांधा जाय॥ ११। और उस ने उसे कहा कि यदि वे मुझे नई रस्सियों से जो कभी काम में न आई हों कस के बांधें तब मैं निर्बल होके दूसरे मनुष्य की नाईं हो जाऊंगा॥ १२। इस लिये दलीलः ने उसे नई रस्सियों से बांधा और बोली कि हे शम्सून फिलिसती तुझ पर आये और घातवाले कोठरी में बैठे थे सो उस ने अपनी भुजाओं से उन्हें तागे की नाईं तोड़ डाला॥ १३। फिर दलीलः ने शम्सून से कहा कि अब लों तू ने मुझे चिड़ाया और झूठ बोला मुझे बता कि तू किस्से बांधा जाय तब उस ने उसे कहा कि यदि तू मेरी सात जटा ताने में बिने॥ १४। तब उस ने खूंटे से उन्हें कसा और बोली कि हे शम्सून फिलिसती तुझ पर आ पड़े और वुह नींद से जागा और बुन्ने के खूंटे को ताने के साथ लेके चला गया॥ १५। फिर उस ने उसे कहा कि क्योंकर तू कहता है कि मैं तुझ से प्रीति रखता हूं अब लों तेरा मन मुझ से नहीं लगा तू ने यह तीन

बार मुझे चिड़ाया और मुझे नहीं बताया कि तेरा महाबल किस में है॥ १६। और ऐसा हुआ जब उस ने उसे प्रति दिन बातों से दबाया और उसे उसकाया किई यहां लों कि वुह जीवन से उदास हुआ॥ १७। तब उस ने अपने मन का सारा भेद खोलके कहा कि मेरे सिर पर छुरा नहीं फिरा क्योंकि मैं अपनी माता के गर्भ में से ईश्वर के लिये नासरी हूं यदि मेरा सिर मुड़ाया जाय तब मेरा बल मुझ से जाता रहेगा और मैं निर्बल होके और मनुष्य की नाईं हो जाऊंगा॥ १८। और जब दलीलः ने देखा कि उस ने अब अपने सारे मन का भेद कह दिया तब उस ने फ़िलिसतियों के प्रधानों को यह कहके बुलवाया कि एक बार फेर आओ क्योंकि उस ने अपने मन का सारा भेद मुझ पर प्रगट किया तब फ़िलिसतियों के प्रधान उस पर चढ़ आये और रोकड़ अपने हाथ में लाये॥ १९। और उस ने उसे अपने घुठनों पर सोला रक्खा और एक जन को बुलवाके सात जटा जो उस के सिर पर थीं मुड़वाईं और उसे सताने लगी और उस का बल जाता रहा॥ २०। और वुह बोली कि हे शम्सून फ़िलिसती तुझ पर आये तब वुह नींद से जागा और कहा कि मैं आगे की नाईं बाहर जाऊंगा और आप को बल से हिलाऊंगा परंतु वुह न जानता था कि परमेश्वर उसे छोड़ गया॥ २१। तब फ़िलिसतियों ने उसे पकड़ा और उस की आंखें निकाल डालीं और उसे अज्जः में उतार लाये और पीतल की सीकरों से उसे जकड़ा और वुह बंदीगृह में पड़ा चक्की पीसता था॥ २२। तथापि सिर मुड़ाने के पीछे उस के बाल फेर बढ़ने लगे॥ २३। और फ़िलिसतियों के प्रधान एकट्ठे हुए कि अपने देव दजून के लिये बड़ा बलिदान चढ़ावें और आनंद करें क्योंकि उन्हों ने कहा कि हमारे देव ने हमारे बैरी शम्सून को हमारे बश में कर दिया॥ २४। और जब लोगों ने उसे देखा तब उन्हों ने अपने देव की स्तुति किई क्योंकि उन्हों ने कहा कि हमारे देव ने हमारे बैरी को जिस ने हमारा देश उजाड़ा और हमारे बहुत से लोगों को नाश किया हमारे हाथ में सौंप दिया॥ २५। और ऐसा हुआ कि जब वे मगन हो रहे थे तब उन्हों ने कहा कि शम्सून को बुलाओ कि हमारे आगे लीला करे सो उन्हों ने उसे बंदीगृह से बुलवाया और वुह उन के

आगे लीला करने लगा उन्हों ने उसे खंभों के मध्य में रक्खा॥ २६। और शम्सून ने उस छोकड़े को जो उस का हाथ पकड़े ऊए था कहा कि मुझे खंभे टटोलने दे जिन पर घर खड़ा है जिसतें उन पर ओठगूं॥ २७। और घर पुरुषों और स्त्रियों से भर पूर था और फिलिसतियों के समस्त प्रधान वहीं थे और तीन सहस्र के लग भग स्त्री पुरुष छत पर थे जो शम्सून की लीला देख रहे थे॥ २८। तब शम्सून ने परमेश्वर को पुकारा और कहा कि हे प्रभु ईश्वर दया करके मुझे स्मरण कीजिये केवल इसी बार मुझे बल दीजिये जिसतें मैं एकट्ठे फिलिसतियों से अपनी दोनों आंखों का पलटा लेऊं॥ २९। तब शम्सून ने दोनों मध्य के खंभों को जिन पर घर खड़ा था एक को दहिने हाथ से और दूसरे को बायें से पकड़ा॥ ३०। और शम्सून बोला कि मेरा प्राण भी फिलिस्तियों के साथ जाय सो उस ने बल करके उसे झुकाया और घर उन प्रधानों और उन सब लोगों पर जो उस में थे गिर पड़ा और वे लोग जिन्हें उस ने अपने साथ मारा उन से अधिक थे जिन्हें उस ने अपने जीते जी मारा था। ३१। तब उस के भाई और उस के पिता के सारे घराने आये और उसे उठाया और उसे सुरअः और इसताल के मध्य में उस के पिता मनूहा की समाधि स्थान में गाड़ा और उस ने बीस बरस लों इसराएल का न्याय किया॥

१७ सतरहवां पर्ब्ब॥

और इफ़रायम पहाड़ का एक जन था जिस का नाम मीका था॥ २। और उस ने अपनी माता से कहा कि वे ग्यारह सौ रुपये जो तुझ से लिये गये थे जिस के कारण तू ने स्राप दिया और जिस के विषय में मैं ने भी सुना देखो चांदी मेरे पास है मैं ने उसे लिया और उस की माता बोली कि हे मेरे बेटे ईश्वर का धन्य बाद॥ ३। और जब उस ने ग्यारह सौ चांदी अपनी माता को फेर दिई तब उस की माता ने कहा कि मैं ने यह चांदी अपने बेटे के लिये अपने हाथ से सर्बथा परमेश्वरार्पण किया था कि एक खोदी ऊई और एक ढाली ऊई मूर्त्ति बनाऊं सो अब मैं तुझे फेर देती हूं॥ ४। तथापि उस ने वुह रोकड़ अपनी माता को दिया और उस

की माता ने दो सौ चांदी लेके सोनार को दिया उस ने एक खोदी ऊई और एक ढाली ऊई मूर्त्ति बनाई और वे दोनों मीका के घर में थीं॥ ५। और मीका के देवतों का एक मंदिर था और एक अफ़ूद और तराफीम बनाया और अपने बेटों में से एक को पवित्र किया था जो उस के लिये परोहित ऊआ॥ ६। उन दिनों में इसराएल में कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था सो करता था॥

७। और यहूदाह के घराने का बैतलहम यहूदाह में का एक तरुण लावी था जो वहां आ रहा था॥ ८। और वुह मनुष्य नगर में से यहूदाह के बैतलहम से निकला कि अंते वास करे और वुह चलते चलते इफ़रायम पहाड़ को मीका के घर पऊंचा॥ ९। तब मीका ने उसे कहा कि तू कहां से आता है और उस ने उसे कहा कि मैं बैतलहम यहूदाह में का एक लावी हूं और जाता हूं कि जहां कहीं ठिकाना होवे तहां रहूं॥ १०। और मीका ने उसे कहा कि मेरे साथ रह और मेरे लिये पिता और पुरोहित हो मैं तुझे बरस बरस दस टुकड़े चांदी और एक जोड़ा बस्त्र और भोजन देऊंगा सो लावी भीतर गया॥ ११। और वुह लावी उस मनुष्य के साथ रहने पर प्रसन्न ऊआ और वुह तरुण उस के एक बेटों के समान ऊआ॥ १२। और मीका ने उस लावी को ठहराया और वुह तरुण उस का पुरोहित बना और मीका के घर में रहने लगा॥ १३। तब मीका ने कहा कि मैं जानता हूं कि अब परमेश्वर मेरा भला करेगा इस कारण कि एक लावी मेरा पुरोहित ऊआ॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

उन दिनों में इसराएल में कोई राजा न था और उन्हीं दिनों में दान की गोष्ठी अपने अधिकार के निवास ढूंढ़ती थी क्योंकि उस दिन लों इसराएल की गोष्ठियों में उन्हें कुछ अधिकार न मिला था॥ २। सो दान के संतान ने अपने घराने में से पांच जन अपने सिवाने सरअः और इसताल से भेजे कि उन के देश को देख के भेद लेवें तब उन्हों ने कहा कि जाओ देश को देखो जब वे इफ़रायम पहाड़ को मीका के घर

आये तो वहां उतरे॥ ३। जब वे मीका के घर के पास आये तब उस लावी तरुण का शब्द पहिचाना और उधर मुड़ के उसे कहा कि तुझे यहां कौन लाया तू यहां क्या करता है और तेरा यहां क्या काम॥ ४। उस ने उन्हें कहा कि मीका मुझ से यों यों व्यवहार करता है और मुझे बनी में रक्खा है और मैं उस का पुरोहित हूं॥ ५। तब उन्हों ने उसे कहा कि ईश्वर से मंत्र लीजिये जिसतें हम जानें कि हमारे कार्य्य सिद्ध होंगे अथवा नहीं॥ ६। और पुरोहित ने उन्हें कहा कि तुम्हारी यात्रा परमेश्वर के आगे है सो कुशल से जाओ॥

७। तब वे पांचो जन चल निकले और लैस को आये और वहां के लोगों को देखा कि सैदानियों के समान निश्चिंत रहते हैं और देश में कोई स्वामी न था जो उन्हें किसी बात में लज्जित करता और वे सैदानियों से दूर थे और किसी से कुछ कार्य्य न रखते थे॥ ८। तब वे अपने भाई कने सुरअः और इसताल को आये और उन के भाइयों ने पूछा कि क्या कहते हो॥ ९। और वे बोले कि उठो हम उन पर चढ़ जायें क्योंकि हम ने उस भूमि को देखा है जो बहुत अच्छी है और तुम चुपके हो उस भूमि में पैठके अधिकार लेने में आलस न करो॥ १०।। जब चलोगे तब निश्चिंत लोगों पर और बड़े देश में पहुंचोगे क्योंकि ईश्वर ने उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है वुह एक देश है जिस में पृथिवी में की कोई वस्तु घटी नहीं है॥ ११। तब दान के घराने में से सुरअः और इसताल के छः सौ पुरुष युद्ध के हथियार बांधे हुए वहां से चले॥ १२। और वे चढ़ गये और आके यहूदाह के क़रयतअरीम में डेरा किया इस लिये आज के दिन लों उस स्थान का नाम उन्हों ने महानेह दान रक्खा और देखो वुह क़रयत-अरीम के पीछे है॥ १३। और वहां से चलके इफ़रायम पहाड़ को पहुंचे और मीका के घर में आये॥ १४। तब उन पांच पुरुषों ने जो लैस के देश का भेद लेने को गये थे अपने भाइयों से उत्तर देके कहा कि तुम जानते हो कि इन घरों में अफ़ूद और तराफ़ीम और एक खोदी हुई और एक ढाली हुई मूर्त्ति हैं सो अब सोचो कि क्या करोगे॥ १५। तब वे उधर फिरे और मीका के घर में उस लावी तरुण के स्थान में प्रवेश किया और उस्से कुशल पूछा॥ १६। और वे छः सौ जो दान के संतान

के हथियारबंद थे फाटक की पैठ में खड़े रहे॥ १७। और वे पांच जो देश के भेद को निकले थे घरके भीतर घुसे और खोदी ऊई और ढाली ऊई मूर्त्ति और अफ़ूद और तराफ़ीम लिये और वुह पुरोहित उन छः सौ हथियारबंद मनुष्यों के साथ फाटक की पैठ में खड़ा था॥ १८। और उन्हों ने मीका के घर में घुस के खोदी ऊई और ढाली ऊई मूर्त्ति और अफ़ूद और तराफ़ीम उठा लिये तब पुरोहित उन से बोला कि तुम यह क्या करते हो॥ १९। उन्हों ने उसे कहा कि चुप रह अपने मूंह पर हाथ रख के हमारे साथ चल और हमारे लिये पिता और पुरोहित हो कौन सी बात भली है कि एक मनुष्य के घर का परोहित हो अथवा यह कि तू इसराएल के घराने की एक गोष्ठी का पुरोहित हो॥ २०। और पुरोहित का मन मगन ऊआ और उस ने अफ़ूद और तराफ़ीम और खोदी ऊई मूर्त्ति को उठा लिया और लोगों के मध्य में प्रवेश किया॥ २१। सो वे फिरे और चले और बालकों और ढोर और गाड़ी को अपने आगे किया॥ २२। वे मीका के घर से बऊत दूर निकल गये थे कि मीका के घर के आस पास के बासी एकट्ठे ऊए और दान के संतान को जाही लिया॥ २३। और उन्हों ने दान के संतान को ललकारा तब उन्हों ने मूंह फेरा और मीका से कहा कि तुझे क्या ऊआ जो तू एकट्ठे ऊआ है॥ २४। और वुह बोला कि तुम मेरे देवों को जिन्हें मैं ने बनाया और मेरे पुरोहित को लेके चले गये हो अब मेरा क्या रहा और तुम कहते हो कि तेरा क्या ऊआ॥ २५। तब दान के संतान ने उसे कहा कि तू अपना शब्द हमें न सुना न हो कि क्रूर लोग तुझ पर लपकें और तू और तेरा घराना मारा जाय॥ २६। और दान के संतान ने अपना मार्ग लिया और जब मीका ने देखा कि वे मुझ से बली हैं तब मूंह फेर के अपने घर को लौट आया॥ २७। और वे मीका की बनाई ऊई वस्तें उस के पुरोहित समेत लिये ऊए लैस को उन लोगों पर आये जो चैन में और निश्चिंत थे और उन्हें तलवार की धार से मारा और नगर को जला दिया॥ २८। कोई छोड़वैया न था इस कारण कि सैदा से वुह दूर था और वे किसी से व्यवहार न करते थे और वुह उस तराई में था जो बैतरऊब के लग है और उन्हों ने एक नगर

बनाया और उस में बसे॥ २९। और उस नगर का नाम दान रक्खा जो उन के पिता इसराएल के बेटे का नाम था परंतु पहिले उस नगर का नाम लैस था॥ ३०। और दान के संतान ने उस खोदी ऊई मूर्त्ति की स्थापना किई और मुनस्सी के बेटे गैरसुम का बेटा यहूनतन और उस के बेटे उस देश की बंधुआई के दिन लों दान की गोष्ठी के पुरोहित बने रहे॥ ३१। और जब लों ईश्वर का मंदिर सैला में था उन्हों ने मीका की खोदी ऊई मूर्त्ति अपने लिये स्थापित किई।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

जब इसराएल में कोई राजा न था तब ऐसा ऊआ कि किसी लावी ने जो इफ़रायम पहाड़ के अलंग में रहता था यहूदाह के बैतलहम से एक दासी को लिया॥ २। और उस की दासी कुकर्म्म करके उस पास से यहूदाह बैतलहम में अपने पिता के घर जा रही और चार मास लों वहां रही॥ ३। और उस का पति उठा और उस के पीछे चला कि उसे मनावे और फेर लावे और उस के साथ एक सेवक और दो गदहे थे सो वुह उसे अपने पिता के घर में ले गई और उस दासी के पिता ने ज्यों उसे देखा त्यों उस की भेंट से मगन ऊआ॥ ४। और उस के ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने उसे रोका और वुह उस के साथ तीन दिन लों रहा और उन्हों ने खाया पीया और वहां टिके॥ ५। चौथे दिन जब वे तड़के उठे तब उस ने चाहा कि यात्रा करे तब दासी के पिता ने अपने जंवाई से कहा कि रोटी के एक टुकड़े से अपने मन को संतुष्ट कर तब मार्ग लीजियो॥ ६। सो वे दोनों बैठ गये और मिलके खाया पीया क्योंकि दासी के पिता ने उस जन से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं मान जा और रात भर रह जा और मन को आल्हादित कर॥ ७। फिर जब वुह मनुष्य बिदा होने को उठा तब उस के ससुर ने उसे रोका इस लिये वुह फेर वहां रहा॥ ८। और पांचवें दिन भोर को उठा कि बिदा होवे फिर दासी के पिता ने उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने मन को मगन कर सो वे दिन ढले लों ठहरे रहे और दोनों ने एकट्ठे खाया पीया॥ ९। फिर वुह मनुष्य और उस की दासी

और उस का सेवक बिदा होने को उठे फिर कन्या के पिता ने उसे कहा कि देख दिन ढल चला है और सांझ पहुंची है अब रात भर ठहर जा देख दिन समाप्त हो चला है अब रह जा जिसतें तेरा मन मगन हो जाये और कल तड़के डेरे जाने को सिधार॥ १०। परंतु वुह जन उस रात को न रहा पर उठके बिदा हुआ और यबूस के सन्मुख आया जिस का दूसरा नाम यरूसलम है और उस के संग काठी बांधे हुए दो गदहे और उस की दासी भी उस के साथ थी॥ ११। जब वे यबूस पास पहुंचे तब दिन बहुत ढल गया इतने में सेवक ने अपने स्वामी से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं आइये यबूसियों के इस नगर में मुड़ें और इसी में टिकें॥ १२। तब उस के स्वामी ने उसे कहा कि हम उपरी नगरों में जो इसराएल के संतानो का नहीं है न टिकेंगे परंतु जिबअः को पार जायेंगे॥ १३। और अपने सेवक से कहा कि चल इन स्थानों में से जिबअः अथवा रामः में रात भर टिकें॥ १४। और उन के जाते जाते बिनयमीन के जिबअः के पास सूर्य्य अस्त हुआ॥ १५। और वे उधर फिरे कि जिबअः में टिकें और नगर के एक मार्ग में उतर के बैठ गये क्योंकि कोई ऐसा न था जो उन्हें अपने घर ले जाके टिकावे॥ १६। और देखो कि एक वृद्ध खेत पर से काम करके सांझ को वहां आया वुह भी इफ़रायम पहाड़ का था जो जिबअः में आके बसा था परंतु उस स्थान के बासी बिनयमीनी थे॥ १७। जब उस ने आंखें उठाईं तब देखा कि एक पथिक नगर के मार्ग पर है उस वृद्ध ने उसे कहा कि तू किधर जाता है और कहां से आता है॥ १८। तब उस ने उसे कहा कि हम यहूदाह बैतलहम से इफ़रायम के पहाड़ की ओर जाते हैं जहां के हैं और हम यहूदाह बैतलहम को गये थे परंतु अब परमेश्वर के मंदिर को जाते हैं यहां कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो हमें अपने घर उतारे॥ १९। तथापि हमारे साथ गदहों के लिये अन्न भूसा है और मेरे और तेरी दासी के लिये और इस तरुण के लिये जो मेरा सेवक है रोटी और मदिरा है किसी वस्तु की घटी नहीं है॥ २०। और उस वृद्ध ने कहा कि तेरा कल्याण होवे तिस पर भी तेरा आवश्यक मुझ पर होवे केवल मार्ग में रात को मत टिको॥ २१। सो वुह उसे अपने घर ले गया और उस के

गदहों को चारा दिया उन्हों ने अपने पांव धोये और खाया पीया॥ २२। वे मगन हो रहे थे तब देखो कि उस नगर के लोगों ने जो बलियाल के लड़के थे उस घर को घेर लिया और द्वार ठोंक के उस घर के स्वामी अर्थात् उस बुड्ढ से कहा कि उस जन को जो तेरे घर में आया है बाहर ला जिसतें हम उस्से कुकर्म्म करें॥ २३। तब उस घर का स्वामी बाहर निकला और उन्हें कहा कि नहीं भाइयो मैं तुम्हारी बिनती करता हूं ऐसी दुष्टता न कीजिये देखो यह जन मेरे घर में आया है सो ऐसी मूढ़ता न कीजिये॥ २४। देख मैं अपनी कुआरी बेटी और उस की दासी को बाहर ले आता हूं आप उन्हें आलिंगन कीजिये और इच्छा भर मन-मंता जो चाहिये सो करिये परंतु उस मनुष्य से ऐसी दुर्गति न कीजिये॥ २५। पर वे उस की बात न मानते थे सो वुह जन उस की दासी को उन पास बाहर ले आया उन्हों ने उस्से कुकर्म्म किया और रात भर बिहान लों उस की दुर्दशा किई और जब दिन निकलने लगा तब उसे छोड़ गये॥ २६। और वुह स्त्री पौ फटते ही उस पुरुष के घर के द्वार पर जहां उस का स्वामी था आके गिर पड़ी यहां लों कि उंजियाला हुआ॥ २७। और उस का स्वामी बिहान को उठा और उस ने घर के द्वारों को खोला और बाहर निकला कि यात्रा करे और क्या देखता है कि उस की दासी घर के द्वार पर पड़ी है और उस के हाथ डेवड़ी पर थे॥ २८। तब उस ने कहा कि उठ आ चलें पर कोई उत्तर न दिया तब उस मनुष्य ने उसे गदहे पर धर लिया और अपने स्थान को चल निकला॥ २९। उस ने घर पहुंच के छूरी लिई और अपनी दासी को पकड़ के हड्डियों समेत उस के बारह भाग करके टुकड़े टुकड़े काटे और इसराएल के समस्त सिवानों में भेज दिये॥ ३०। और ऐसा हुआ कि जिस किसी ने वुह देखा सो बोला कि जिस दिन से इसराएल के संतान मिस्र से चढ़ आये ऐसा कर्म्म न हुआ न देखा गया सोचो और बिचार करो और बोलो।

२० बीसवां पर्ब्ब।

तब इसराएल के सारे संतान निकले और दान से लेके बिअरसबः लों और जिलिअद के देश लों मंडली एक मन होके परमेश्वर के

आगे मिसफः में एकट्ठी हुई॥ २। और समस्त लोगों के अर्थात् इसराएल की समस्त गोष्ठियों के प्रधान जो ईश्वर के लोगों की सभा में आये चार लाख पगइत खड्गधारी थे॥ ३। अब बिनयमीन के संतानों ने सुना कि इसराएल के संतान मिसफः में एकट्ठे हुए तब इसराएल के संतानों ने कहा कि कह यह दुष्टता क्योंकर हुई॥ ४। तब उस लावी पुरुष ने जो मारी गई स्त्री का पति था उत्तर देके कहा कि मैं अपनी दासी समेत बिनयमीन की जिबिअत में टिकने को आया॥ ५। और जिबिअत के लोग मुझ पर चढ़ आये और घर रात को घेर लिया और चाहा कि मुझे मार लेवें और उन्हों ने मेरी दासी पर बरबस किया कि वुह मर गई॥ ६। सो मैं ने अपनी दासी को पकड़ के टुकड़े टुकड़े किये और उन्हें इसराएल के अधिकार के समस्त देश में भेजा क्योंकि इसराएल में उन्हों ने कुकर्म्म और मूढ़ता किई॥ ७। देखो हे इसराएल के समस्त संतानो अब तुम ही अपना मंत्र और परामर्श देओ॥ ८। तब सब के सब यह कहके एक जन की नाई उठे और बोले कि हम में से कोई अपने डेरे में न जायगा और हम में से कोई अपने घर की ओर न फिरेगा॥ ९। परंतु अब हम जिबअः से यह करेंगे कि चिट्ठी डाल के उस पर चढ़ेंगे॥ १०। और हम इसराएल के संतान की हर एक गोष्ठी में से सौ पीछे दस और सहस्र पीछे सौ और दस सहस्र पीछे एक सहस्र पुरुष लेंगे जिसतें लोगों के लिये भोजन लावें और जिस समय कि बिनयमीन के जिबअः में आवें तब उन समस्त मूढ़ता के कारण उन से करें जो उन्हों ने इसराएल में किई॥ ११। सो सारे इसराएल के लोग एक मता होके उस नगर पर एकट्ठे हुए॥

१२। और इसराएल की गोष्ठियों ने बिनयमीन की समस्त गोष्ठी में यह कहके लोग भेजे कि यह क्या दुष्टता है जो तुम्हें हुई॥ १३। अब बलियाल के संतानों को जो जिबअः में हैं हमें सौंप देओ कि हम उन्हें मार डालें और इसराएल में से बुराई को मिटा डालें परंतु बिनयमीन के संतान ने अपने भाई इसराएल के संतान का कहा न माना॥ १४। परंतु बिनयमीन के संतान नगरों में से जिबअः में एकट्ठे हुए

जिसतें इसराएल के संतान से संग्राम करें॥ १५। और बिनयमीन के संतान जो नगरों मेंसे उस समय गिने गये जिबअः के सात सौ चुने हुए जन को छोड़ के छब्बीस सहस्र खड्गधारी थे॥ १६। इन सब लोगों में सात सौ चुने हुए बैंहथे थे जिन में हर एक ढिलवांस के पत्थर से बाल भर मारने में न चूकता था॥ १७। और बिनयमीन को छोड़ इसराएल के संतान चार लाख योद्धा खड्गधारी थे॥

१८। और इसराएल के संतान उठके ईश्वर के मंदिर को गये और ईश्वर से मंत्र चाहा और कहा कि हम्में से कौन पहिले बिनयमीन के संतानों पर युद्ध के लिये चढ़ जाय परमेश्वर ने कहा कि पहिले यहूदाह॥ १९। सो इसराएल के संतान बिहान को उठे और जिबअः के सन्मुख छावनी किई॥ २०। और इसराएल के संतान बिनयमीन से लड़ाई करने को निकले और इसराएल के संतान जिबअः में उन के आगे पांती बांध संग्राम के लिये खड़े हुए॥ २१। तब बिनयमीन के संतान ने जिबअः से निकल के उस दिन बाईस सहस्र इसराएलीयों को मार के धूल में मिला दिया॥ २२। और इसराएल के संतानों ने हियाव किया और उसी स्थान पर जहां वे पहिले दिन लैस थे संग्राम किया॥ २३। और इसराएल के संतानों ने ऊपर जाके सांझ लों परमेश्वर के आगे बिलाप किया और यह कहके परमेश्वर से मंत्र चाहा कि हम अपने भाई बिनयमीन के संतानों से संग्राम करें परमेश्वर ने कहा कि उन पर चढ़ जाओ॥ २४। सो इसराएल के संतान दूसरे दिन बिनयमीन के संतान के बिरोध में समीप आये॥ २५। और उस दूसरे दिन बिनयमीन ने जिबअः से निकल के इसराएल के संतान के अठारह सहस्र मनुष्य मार के भूमि पर डाल दिये सब खड्गधारी थे॥ २६। तब सारे इसराएल के संतान और सारे लोग ईश्वर के मंदिर को चढ़ गये और रोये और वहां परमेश्वर के आगे बैठे और उस दिन सांझ लों ब्रत किया और होम की भेंट और कुशल की भेंट परमेश्वर के आगे चढ़ाई॥ २७। और इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से बूझा क्योंकि परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा उन दिनों में वहां थी॥ २८। और हारून के बेटे इलिअज़र का बेटा फीनिहास उन दिनों में उस के आगे खड़ा रहता था

तब उन्हों ने पूछा कि मैं अपने भाई बिनयमीन के संतान से फिर संग्राम के लिये जाऊं अथवा रहि जाऊं परमेश्वर ने कहा कि चढ़ जा क्योंकि कल मैं उन्हें तेरे हाथ में कर देऊंगा॥ २९। सो इसराएल के संतानों ने जिबअ: के चारों ओर घातियों को बैठाया॥ ३०। और इसराएल के संतान तीसरे दिन बिनयमीन के संतान के साम्ने चढ़ गये और जिबअ: के सन्मुख आगे के समान फिर पांती बांधी॥ ३१। और बिनयमीन के संतान ने उन का साम्ना किया और नगर से खेंचे गये और आगे की नाईं राज मार्गों में जो बैतएल को जाता है और दूसरा जिबअ: को तीस मनुष्य के अंटकल मारते गये॥ ३२। और बिनयमीन के संतान ने कहा कि वे आगे की नाईं हमारे आगे मारे पड़े परंतु इसराएल के संतान ने कहा कि आओ भागें और उन्हें नगर से राज मार्गों में खींच लावें॥ ३३। तब सारे इसराएल के लोग अपने स्थान से निकले और उस स्थान पर पांती बांधी जिस का नाम बअलतमर है और इसराएल के घातिये अपने स्थानों से जिबअ: के खेतों में से निकले॥ ३४। और समस्त इसराएल में से दस सहस्र चुने ज़ए जन जिबअ: के सन्मुख आये और बड़ा संग्राम ज़आ पर उन्हों ने न जाना कि बिपत्ति आ पज़ंची॥ ३५। तब परमेश्वर ने बिनयमीन को इसराएल के आगे मारा और इसराएल के संतान ने उस दिन पचीस सहस्र एक सौ जन बिनयमीनी मारे ये सब खड्गधारी थे॥ ३६। और बिनयमीन के संतान ने देखा कि हम मारे पड़े क्योंकि इसराएल के मनुष्य बिनयमीनी को निकाल लाये इस लिये कि वे उन घातियों के भरोसे पर थे जिन्हें उन्हों ने जिबअ: के अलंग बैठाया था॥ ३७। तब घातियों ने फुरती किई और जिबअ: पर लपके और बढ़ गये और सारे नगर को तलवार की धार से घात किया॥ ३८। अब इसराएल के मनुष्यों में और उन घातियों में एक पता ठहराया ज़आ था कि नगर में से धूआं के साथ बड़ी लौर निकालें॥ ३९। और जब इसराएल के मनुष्य संग्राम में हट गये तब बिनयमीनी उन में के तीस मनुष्य के अंटकल मारने लगे क्योंकि उन्हों ने कहा कि निश्चय आगे के संग्राम के समान वे हमारे आगे मारे पड़े॥ ४०। परंतु जब लौर और धूआं एक

साथ नगर से उठे तो बिनयमीनियों ने पीछे दृष्टि किई और क्या देखते हैं कि नगर से स्वर्ग लों लौर उठ रही है॥ ४१। और जब इसराएल के संतान फिरे तब बिनयमीन के मनुष्य घबराये क्योंकि उन्हों ने देखा कि हम पर बिपत्ति आ पहुंची॥ ४२। इस लिये उन्हों ने इसराएलियों से भाग के अरण्य का मार्ग लिया परंतु संग्राम ने उन्हें जाही लिया और जो नगरों से निकल आये थे उन्हों ने अपने बीच में नाश किया॥ ४३। उन्हों ने यों बिनयमीनी को घेरा और खेदा और सहज से जिबिअः के साम्ने पूर्ब दिशा में लताड़ा॥ ४४। और अठारह सहस्र बिनयमीनी जूझ गये ये सब बीर थे॥ ४५। सो वे फिरे और रूम्मान की पहाड़ी की ओर अरण्य में भाग गये और उन्हों ने राज मार्गों में चुन चुन के पांच सहस्र पुरुष मारे और जिद्‌अम लों उन का पीछा किया और दो सहस्र और मारे॥ ४६। सो सब बिनयमीनी जो उस दिन जूझे पचीस सहस्र खड्गधारी बीर थे॥ ४७। परंतु छः सौ मनुष्य बन की ओर फिर के रूम्मान पहाड़ी को भाग गये और चार मास रूम्मान पहाड़ी में रहे॥ ४८। तब इसराएल के मनुष्य बिनयमीन के संतान पर फिरे और बसती के पुरुष और पशु और सब को जो उन के हाथ लगा मारा और जिस जिस नगर में आये उसे फूंक दिया।

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

अब इसराएल के संतानों ने मिसफः में यह कहके किरिया खाई थी कि हम में से कोई अपनी बेटी बिनयमीन को न देगा॥ २। और लोग ईश्वर के मंदिर को आये और ईश्वर के आगे सांझ लों चिल्लाये और बिलख बिलख रोये॥ ३। और बोले कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर इसराएल पर यह क्या हुआ कि इसराएल में आज के दिन एक गोष्ठी घट गई॥ ४। और यों हुआ कि बिहान को उठके उन लोगों ने वहां एक बेदी बनाई और होम की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ाई॥ ५। और इसराएल के संतानों ने कहा कि मंडली में इसराएल की सारी गोष्ठियों में से परमेश्वर की मंडली के संग कौन कौन नहीं चढ़ा क्योंकि उन्हों ने उस के बिषय में बड़ी किरिया खाई थी कि

जो मिसफ़: में परमेश्वर के आगे न आवेगा सो निश्चय मारा जायगा॥ ६। सो इसराएल के संतान अपने भाई बिनयमीन के कारण पछताये और बोले कि आज इसराएल में से एक गोष्ठी कट गई॥ ७। हम उन के लिये पत्नियां कहां से लावें क्योंकि हम ने तो परमेश्वर की किरिया खाई है कि हम अपनी बेटियां उन्हें पत्नियों के लिये न देंगे॥ ८। तब उन्हों ने कहा कि इसराएल की गोष्ठियों में से वुह कौन है जो मिसफ़: में परमेश्वर के आगे नहीं चढ़ा और देखो कि यबीस जिलिआद में से कोई सभा में नहीं आया था॥ ९। क्योंकि लोग गिने गये और यबीस जिलिआद के बासियों में से कोई न था॥ १०। तब मंडली ने बारह सहस्र जन को जो बड़े बीर थे आज्ञा करके उधर भेजा कि यबीस जिलिआद के बासियों को जाके स्त्री और बालक सहित खड्ग की धार से मार डालो॥ ११। पर इतना कीजियो कि हर एक पुरुष और हर एक स्त्री को जो पुरुष से ज्ञाता हो सर्व्वथा नष्ट कर देना॥ १२। सो उन्हों ने यबीस जिलिआद के बासियों में चार सै। कुंआरी पाईं जो पुरुष से अज्ञान थीं और उन्हें सैला की छावनी में जो कनआन के देश में है ले आये॥ १३। तब सारी मंडली ने बिनयमीन के संतान को जो रूम्मान की पहाड़ी में थे कहला भेजा और उन से कुशल का प्रचार किया॥ १४। और उस समय बिनयमीन फिर आये और उन्हों ने उन स्त्रियों को जो यबीस जिलिआद में से जीती बचा रक्खा था उन्हें दिया तथापि उन के लिये न अटीं॥ १५। और लोग बिनयमीन के लिये पछताये इस लिये कि परमेश्वर ने इसराएल की गोष्ठियों में फूट डाली॥

१६। तब मंडली के प्राचीन बोले कि उबरे हुओं के लिये पत्नियों के विषय में क्या करें क्योंकि बिनयमीन में से सारी स्त्री नष्ट हुईं॥ १७। तब उन्हों ने कहा कि बिनयमीन में से जो बच रहे हैं अवश्य है कि उन के लिये अधिकार होवे जिसतें इसराएल की एक गोष्ठी नष्ट न हो जाय॥ १८। तथापि हम तो अपनी बेटियां उन्हें पत्नियों के लिये दे नहीं सक्ते क्योंकि इसराएल के संतानों ने यह कहके किरिया खाई है कि बुह जो बिनयमीन को पत्नी देवे सो स्रापित है॥ १९। तब उन्हों ने कहा कि देखो सैला में परमेश्वर के लिये बरस का पर्व्व है जो बैतएल

की उत्तर अलंग को और उस राज मार्ग की पूर्ब अलंग जो बैतएल से सिकम को जाता है और लबोना के दक्षिण॥ २०। इस लिये उन्हों ने बिनयमीन के संतानों को आज्ञा करके कहा कि जाओ और दाख की बारियों में घात में रहो॥ २१। और देखते रहो यदि सैला में की कन्या नाचने को बाहर आवें तो दाख की बारियों में से निकलो और हर एक पुरुष सैला की बेटियों में से अपनी पत्नी के लिये पकड़े और बिनयमीन के देश को जाय॥ २२। और यों होगा कि जब उन के पिता अथवा भाई हमारे पास आके दोहाई देंगे तब हम उन्हें कहेंगे कि हमारे कारण उन पर क्रपा कीजिये क्योंकि संग्राम में हम ने हर एक पुरुष के लिये पत्नी न बचा रक्खी क्योंकि तुम ने उन्हें न दिया जिसतें दोषी होते॥ २३। सो बिनयमीन के संतानों ने ऐसा ही किया और अपनी गिनती के समान उन में से जो नाचती थीं एक एक पत्नी ले लिई और उन्हें लिये हुए अपने अधिकार को फिरे और अपने नगरों को सुधारा और उन में बसे॥ २४। और इसराएल के संतान उस समय वहां से चले और हर एक अपनी अपनी गोष्ठी और अपने अपने घरानें में और अपने अपने अधिकार को गया॥ २५। उन्हीं दिनों में इसराएल में कोई राजा न था और जिस को जो अच्छा लगता था सो करता था॥

रूत की पुस्तक।
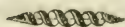
१ पहिला पर्ब्ब।

अब न्यायियों की प्रभुता के दिनों में देश में अकाल पड़ा और यहूदाह बैतलहम से एक जन अपनी पत्नी और दो बेटे समेत निकला कि मोअब के देश में जा रहे॥ २। और उस पुरुष का नाम इलीमलिक और उस की पत्नी का नाम नअमी था और उस के दो बेटों के नाम महलून और किलयून थे ये यहूदाह बैतलहम के इफ़राती थे सो वे मोअब के देश में आये और वहां रहे॥ ३। तब नअमी का पति इलीमलिक मर गया और वुह और उस के दोनों बेटे रह गये॥ ४। और उन दोनों ने मोअबी स्त्रियों से बिवाह किया एक का नाम उरफ़ः और दूसरी का रूत था और वे बरस दस एक वहां रहे॥ ५। और महलून और किलयून भी दोनों मर गये सो वुह स्त्री अपने दो बेटों से और पति से अकेली छोड़ी गई।

६। तब वुह अपनी बहू समेत उठी कि मोअब के देश से फिर जाय क्योंकि उस ने मोअब के देश में सुना था कि परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा करके उन्हें अन्न दिया॥ ७। इस लिये वुह उस स्थान से जहां थी दोनों बहू समेत चल निकली और अपना मार्ग लिया कि यहूदाह के देश को फिर जाय॥ ८। तब नअमी ने अपनी दोनों बहू से कहा कि अपने अपने मैके को जाओ और जैसे तुम ने मृतक से और मुझ से व्यवहार

किया वैसे ही परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करे॥ ९। परमेश्वर ऐसा करे कि अपने अपने पति के घर में बिश्राम पाओ तब उस ने उन्हें चूमा और उन्हों ने चिल्ला के बिलाप किया॥ १०। फिर उन्हों ने उसे कहा कि हम तो निश्चय तेरे साथ तेरे लोगों में फिर जायेंगे॥ ११। और नअमी बोली मेरी बेटियो फिर जाओ मेरे साथ किस लिये जाओगी क्या मेरी कोख में और बेटे हैं कि तुम्हारे पति होवें॥ १२। मेरी बेटियो फिर जाओ क्योंकि पति करने को मैं अति वृद्ध हूं यदि मैं कहों कि मेरी आशा है और आज रात पति करूं और बेटे जनूं॥ १३। तो क्या तुम उन के सयाने होने लों आशा रखती और पति करने से उन के लिये ठहरती नहीं मेरी बेटियो मैं तुम्हारे लिये निपट दुःखी हूं क्योंकि परमेश्वर का हाथ मेरे बिरोध पर निकला॥ १४। तब वे फिर चिल्ला के रोई और उरफ़: ने अपनी सास का चूमा लिया परंतु रूत अपनी सास से लपटी रही॥ १५। तब वुह बोली कि देख तेरे भाई की पत्नी अपने लोगों और अपने देवतों कने फिर गई तू भी अपने भाई की पत्नी के पीछे फिर जा॥ १६। पर रूत बोली मुझे आप से छोड़ के फिर जाने को मत मना क्योंकि जिधर तू जायगी मैं भी जाऊंगी और जहां तू रहेगी रहूंगी तेरे लोग मेरे लोग और तेरा ईश्वर मेरा ईश्वर॥ १७। जहां तू मरेगी मैं मरूंगी और गाड़ी जाऊंगी ईश्वर मुझ से ऐसा ही करे और उस्से अधिक यदि केवल मृत्यु मुझे तुझ से अलग करे॥ १८। जब उस ने देखा कि उस का मन उस के साथ जाने पर दृढ़ है तब वुह चुप हो रही॥ १९। सो वे दोनों जाते जाते बैतलहम में आई और यों हुआ कि जब बैतलहम में पहुंचीं तो उन के विषय में सारे नगर में धूम मची और लोग बोले कि क्या यह नअमी है॥ २०। उस ने उन्हें कहा कि मुझे नअमी मत कहो परंतु मारः कहो क्योंकि सर्ब्ब शक्तिमान ने अति कड़ुवाहट से मुझ से व्यवहार किया है॥ २१। मैं भरी पूरी निकल गई और परमेश्वर मुझे छूछी फेर लाया मुझे नअमी क्यों कहते हो देखते हो कि परमेश्वर ने मुझ पर साक्षी दिई है और सर्ब्ब सामर्थी ने मुझे दुःख दिया है॥ २२। सो नअमी अपनी बहू मोअबी रूत समेत मोअब के देश से फिर आई और जव की कटनी के आरंभ में बैतलहम में पहुंची॥

२ दूसरा पर्ब्ब॥

और नत्रमी के पति का एक कुटुम्ब था जो इलीमलिक के घराने में बड़ा धनी था जिस का नाम बोत्राज़ था॥ २। और मोत्रबी रूत ने नत्रमी से कहा कि मुझे उस के खेत में जो मुझ पर क्रपा करे अन्न बीन्ने को जाने दीजिये वुह उस से बोली कि मेरी बेटी जा॥ ३। सो वुह गई और लवैयों के पीछे पीछे खेत में बीन्ने लगी संयोग से वुह इलीमलिक के कुटुम्ब बोत्राज़ के खेत में गई॥ ४। और देखो कि बोत्राज़ बैतलहम में से आ गया और लवैयों से बोला कि परमेश्वर तुम्हारे साथ वे उत्तर देके बोले कि परमेश्वर आप को बढ़ती देवे॥ ५। फिर बोत्राज़ ने अपने सेवक से जो लवैयों पर था पूछा कि यह किसकी कन्या है॥ ६। तब जो सेवक लवैयों पर था सो उत्तर देके बोला कि यह मोत्रबी कन्या है जो मोत्रब के देश से निकल के नत्रमी के साथ फिर आई॥ ७। और वह बोली मुझे लवैयों के पीछे पीछे गट्ठों के बीच बीच में बीन्ने दीजिये सो वुह आई और बिहान से अब लों बनी रही और तनिक घर में ठहरी॥ ८। तब बोत्राज़ ने रूत को कहा कि हे बेटी क्या तू नहीं सुनती है तू दूसरे खेत में अन्न बीन्ने न जा और यहां से मत जा परंतु मेरी कन्यों से पिलची रह॥ ९। तेरी आंखें उसी खेत पर होवें जो वे लवते हैं और उन के पीछे पीछे चली जा क्या मैं ने तरुणों को नहीं चिताया कि तुझे न छूवें और जब तू पियासी होय तो पात्रों में से जाके पी जो तरुणों ने खींचा है॥ १०। तब उस ने मुंह के बल भूमि पर झुक के दंडवत किई और बोली कि आप की दृष्टि में किस कारण मैं ने अनुग्रह पाया कि आप मेरी सुधि लेते हैं यद्यपि परदेशिन हूं॥ ११। तब बोत्राज़ ने उत्तर देके उसे कहा कि जो तू ने अपने पति के मरने के पीछे अपनी सास से किया है रती रती मुझ पर प्रगट हुआ है तू ने अपने माता पिता को और अपनी जन्म भूमि को छोड़ा और इन लोगों में आई जिन्हें तू आगे न जानती थी॥ १२। परमेश्वर तेरे कार्य्य का प्रतिफल देवे और परमेश्वर इसराएल का ईश्वर जिस के डैने के नीचे भरोसा रखने आई है तुझे परिपूर्ण पलटा देवे॥ १३। तब

वुह बोली कि हे मेरे प्रभु आप की कृपा मुझ पर होवे क्योंकि आप ने मुझे शांति दिई है और इस लिये कि तू ने स्नेह से अपनी दासी से बातें किईं यद्यपि मैं तेरी दासियों में से एक के समान नहीं॥ १४। फिर बोआज़ ने उसे कहा कि भोजन के समय में तू इधर आ और रोटी खा और कौर को सिरके में चभोर तब वुह लवैयों के पीछे बैठ गई और उस ने उसे चबेना दिया और वुह खा के तृप्त ऊई और कुछ छोड़ दिया॥ १५। और जब वुह बीन्ने को उठी तब बोआज़ ने अपने तरुणों को आज्ञा करके कहा कि उसे गट्ठांहीं के बीच में बीन्ने देओ और उसे लज्जित न करो॥ १६। और जान बूझके उस के लिये मुट्ठी भर भर गिरा भी देओ और छोड़ देओ जिसतें वुह बीने और उसे कोई न झिड़के १७। सो वुह सांझ लों खेत में बीनती रही और जो कुछ उस ने बीना था सो झाड़ा वुह चार पसेरी से ऊपर ऊआ॥ १८। सो वुह उसे उठा के नगर में गई और जो कुछ उस ने बीना था सो उस की सास ने देखा और तृप्त होने के पीछे जो कुछ उस ने रख छोड़ा था सो निकाल के अपनी सास को दिया॥ १९। फिर उस की सास ने पूछा कि तू ने आज कहां बीना है और कहां परिश्रम किया धन्य है वुह जिस ने तेरी सुधि लिई तब उस ने जिस के यहां परिश्रम किया था अपनी सास को बता के कहा कि जिस के यहां मैं ने आज परिश्रम किया है उस का नाम बोआज़ है॥ २०। तब नआमी ने अपनी बहू से कहा कि उस परमेश्वर को धन्य है जिस ने जीवतों और मृतकों से अपनी अनुग्रह न उठाया और नआमी ने उसे कहा कि वुह जन हमारा कुटुम्ब है हमारा एक समीपी कुटुम्ब॥ २१। और मोअबी रूत बोली कि उस ने मुझे यह भी कहा कि जब लों मेरी समस्त लवनी न हो जाय तू मेरे तरुणों के पास पास रहियो॥ २२। तब नआमी ने अपनी बहू से कहा कि मेरी बेटी भला है कि तू उस की कन्यों के साथ साथ जाया करे जिसतें वे किसी दूसरे खेत में तुझे न पावें॥ २३। सो वुह जव और गोहूं की लवनी के अंत्य लों बोआज़ की कन्यों के साथ पिलची रही और अपनी सास के साथ रहती थी॥

३ तीसरा पर्ब्ब ।

तब उस की सास नऋमी ने उसे कहा कि हे बेटी क्या मैं तेरा चैन न चाहूं जिस में तेरा भला होवे॥ २। और अब क्या बोआज़ हमारा कुटुम्ब नहीं जिस की कन्यों के साथ तू थी देख वुह आज रात खलिहान में जव ओसावता है॥ ३। सो तू स्नान कर और चिकनाई लगा और वस्त्र पहिन और खलिहान को उतर जा जब लों वुह खा पी न चुके तब लों आप को उस पुरुष पर प्रगट मत कर॥ ४। और ऐसा हो कि जब वुह लेट जाय तब तू उस के शयन स्थान को देख रख और भीतर जाके उस के पांव को उघार और वहीं लेट जा और जो कुछ तुझे करना है वुह सब बतावेगा॥ ५। और उस ने उसे कहा कि जो तू मुझे कहती है मैं सब करूंगी॥ ६। सो वुह खलिहान को उतर गई और जो कुछ कि उस की सास ने आज्ञा किई थी उस ने किया॥ ७। और जब बोआज़ खा पी चुका और उस का मन मगन हुआ अन्न के ढेर की एक अलंग जाके लेट गया तब उस ने हौले हौले आके उस के पांव को उघारा और लेट गई॥ ८। और ऐसा हुआ कि आधी रात को उस पुरुष ने डर के करवट लिई और क्या देखता है कि एक स्त्री उस के पांव पास पड़ी है॥ ९। तब उस ने पूछा कि तू कौन है और वुह बोली कि तेरी दासी रूत तू अपनी दासी पर अपने अंचल फैला क्योंकि तू छुड़ाने का अथवा कुटुम्ब का पद रखता है॥ १०। और उस ने कहा कि हे बेटी तू ईश्वर की धन्य क्योंकि तू ने आरंभ से अंत को मुझ पर अधिक कृपा किई है इस कारण कि तू ने तरुणों का पीछा न किया चाहे कंगाल चाहे धनमान हो॥ ११। अब हे बेटी मत डर जो कुछ तू चाहती है मैं सब तुझ से करूंगा क्योंकि लोगों का सारा नगर जानता है कि तू धर्म्मी स्त्री है॥ १२। और यह सच है कि मैं छुड़ानेवाला अथवा कुटुम्ब हूं तथापि एक छुड़ानेवाला अथवा कुटुम्ब मुझ से अधिक समीपी है॥ १३। आज रात ठहर जा और बिहान को ऐसा होगा कि यदि नाते का व्यवहार पूरा करे तो भला नाते का व्यवहार करे और यदि वुह नाते का व्यवहार तुझ से न करे तो परमेश्वर के जीवन

सों मैं नाते का व्यवहार तुझ से करूंगा सो बिहान लों लेटी रह ॥ १४। सो वुह बिहान लों उस के पांव पास पड़ी रही ग्रीर उस्से पहिले उठी कि एक दूसरे को चीन्ह सके तब उस ने कहा कि कोई जान्ने न पावे कि कोई स्त्री खलिहान में आई थी ॥ १५। फिर उस ने यह भी कहा कि अपनी ग्रोढ़नी धर ग्रीर जब उस ने धरा तो उस ने छः नपुआ जव उस पर डाल दिये ग्रीर वुह नगर को गई॥ १६। जब वुह अपनी सास पास आई तब वुह बोली हे बेटी तू कैान ग्रीर जो कुछ कि उस पुरुष ने उस्से किया था उस ने सब बर्णन किया ॥ १७। ग्रीर कहा कि मुझे उस ने यह छः नपुआ जव दिया क्योंकि उस ने मुझे कहा कि तू अपनी सास पास छूछी मत जा॥ १८। तब उस ने कहा कि हे बेटी जब लों इस बात का अंत न देख ले तब लों चुपकी रह क्योंकि जब लों आज इस बात को समाप्त न कर ले वुह पुरुष चैन न करेगा।

४ चैाथा पर्ब्ब ।

तब बोआज़ फाटक पर चढ़ गया ग्रीर वहां जा बैठा ग्रीर क्या देखता है कि जिस कुटुम्ब के विषय में बोआज़ ने कहा था वुह आया जिसे उस ने कहा कि अहो अमुक आइये एक अलंग हो बैठिये सो वुह एक अलंग जा बैठा॥ २। बोआज़ ने नगर के दस प्राचीन बुलाये ग्रीर कहा कि यहां बैठिये सो वे बैठ गये॥ ३। तब उस ने उस कुटुम्ब को कहा कि नअमी जो मोअब के देश से फिर आई है भूमि का एक टुकड़ा बेचती है जो हमारे भाई इलीमलिक का था॥ ४। सो यह कहके मैं ने तुझे चिताने चाहा कि निवासियों के आगे ग्रीर मेरे लोगों के प्राचीनों के आगे उसे मोल ले यदि तू छुड़ावे तो छुड़ा ग्रीर यदि न छुड़ावे तो मुझे कह जिस्तें मैं जानूं क्योंकि तुझे छोड़ कोई छुड़वैया नहीं तेरे पीछे मैं हूं वुह बोला कि मैं छुड़ाऊंगा॥ ५। तब बोआज़ ने कहा कि जिस दिन तू वुह खेत नअमी से मोल लेवे रूत मोअबी से भी जो मृतक की पत्नी है मोल लेना तुझे अवश्य है ग्रीर मृतक का नाम उस के अधिकार पर ठहरावे ॥ ६। तब उस कुटुम्ब ने कहा कि मैं अपने लिये छुड़ा नहीं सक्ता न हो कि मैं अपना अधिकार बिगाड़ूं सो तू अपने लिये मेरा पद

छुड़ा क्योंकि मैं छुड़ा नहीं सक्ता॥ ७। सब बात को दृढ़ करने के लिये अगले समय में पलटने और छुड़ाने के विषय में इसराएल में यह व्यवहार था कि मनुष्य अपना जूता उतार के अपने परोसी को देता था और इसराएल में यही साक्षी थी॥ ८। इस लिये उस कुटुम्ब ने बोआज़ को कहा कि तू अभी मोल ले सो उस ने अपना जूता उतारा॥ ९। और बोआज़ ने प्राचीनों को और सारे लोगों को कहा कि तुम आज साक्षी हो कि मैं ने इलीमलिक और किलयून और महलून का सब कुछ नआमी के हाथ से मोल लिया॥ १०। और उस्से अधिक मैं ने महलून की पत्नी मोअबी रूत को अपनी पत्नी के लिये मोल लिया जिसतें मृतक के नाम को उस के अधिकार में स्थिर करूं कि मृतक का नाम अपने भाइयों से और अपने स्थान के फाटक में से मिट न जावे तुम आज के दिन साक्षी हो॥ ११। तब सारे लोगों ने जो फाटक पर थे और प्राचीनों ने कहा कि हम साक्षी हैं परमेश्वर इस स्त्री को जो तेरे घर में आई है राखिल और लियाह के समान करे जिन दोनों ने इसराएल के घरानों को बनाया तू इफ़राता में भाग्यवान हो और अपना नाम बैतलहम में प्रचार कर॥ १२। और तेरा घर जिसे परमेश्वर इस कन्या के बंश से तुझे देगा फ़ाड़स के घर के समान होवे जिसे तामर यहूदाह के लिये जनी।

१३। तब बोआज़ ने रूत को लिया और वुह उस की पत्नी हुई और जब उस ने उसे ग्रहण किया तब वुह परमेश्वर के अनुग्रह से गर्भिणी हुई और बेटा जनी॥ १४। और स्त्रियों ने नआमी से कहा कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुझे आज के दिन बिना कुटुम्ब न छोड़ा जिसतें उस का नाम इसराएल में प्रसिद्ध होवे॥ १५। और वुह तेरे जीवन के बढ़ाने का कारण और तेरे बुढ़ापे के पालने का कारण होगा क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से प्रीति रखती है जो सात बेटों से तेरे लिये भली है उस के लिये जनी है॥ १६। और नआमी ने उस बालक को लिया और अपनी गोद में रक्खा और उस की दाई हुई॥ १७। तब उस की परोसिन उस का नाम लेकर बोलीं कि नआमी का बेटा उत्पन्न हुआ और उन्हों ने उस का नाम आबिद रक्खा वुह यस्सी का पिता दाऊद का पिता॥ १८।

सो फ़ाड़स की बंशावली यह है कि फ़ाड़स से हसरून उत्पन्न ऊआ॥ १९। ग्रैार हसरून से राम ग्रैार राम से अम्मिनदब ग्रैार अम्मिनदब से नहसून ग्रैार नहसून से सलम ग्रैार सलम से बोग्राज़ ग्रैार बोग्राज़ से ग्राबिद ग्रैार ग्राबिद से यस्सी ग्रैार यस्सी से दाऊद उत्पन्न ऊग्रा।

समूएल की पहिली पुस्तक जो राजाओं की पहिली पुस्तक कहावती है।

१ पहिला पर्ब्ब॥

इफ़रायम पहाड़ के रामातयम सूफ़ीम का एक जन था वुह सूफ़ इफ़राती के बेटे तुझ का बेटा इलिहू का बेटा यरुहम का बेटा था और उस का नाम एलकाना था॥ २। और उस की दो पत्नियां थीं एक का नाम हन्ना और दूसरी का फनीनः और फनीनः के बालक थे परंतु हन्ना के बालक न थे॥ ३। वुह जन बरस बरस अपने नगर से जाके सैला में सेनाओं के परमेश्वर के आगे सेवा करके बलि चढ़ाता था और एली के दो बेटे हफ़नी और फ़ीनिहास वहां परमेश्वर के याजक थे॥ ४। और ऐसा था कि जब एलकाना भेंट चढ़ाता था वुह अपनी पत्नी फनीनः को और उस के सब बेटों और बेटियों को भाग देता था॥ ५। परंतु हन्ना को दुहरा भाग दिया करता था क्योंकि वुह हन्ना से प्रीति रखता था परंतु परमेश्वर ने उस की कोख बंद कर रक्खी थी॥ ६। और उस की सैात उसे कुढ़ाने के लिये अत्यंत खिझाती थी इस कारण कि परमेश्वर ने उस की कोख बंद कर रक्खी थी॥ ७। और बरस बरस वुह परमेश्वर के मंदिर में जाता था उसी रीति से वुह उसे खिझाती थी सो वुह रोया करती और कुछ न खाती थी॥ ८। तब उस के पति एलकाना ने उसे कहा कि हे हन्ना तू क्यों बिलाप करती है

और क्यों नहीं खाती है और तेरा मन क्यों शोकित है तेरे लिये मैं दस बेटों से अच्छा नहीं॥ ९। और जब वे सैला में खा पी चुके तो हन्ना उठी और उस समय एली याजक परमेश्वर के मंदिर के खंभे पास बैठक पर बैठा हुआ था॥ १०। और हन्ना ने मन के शोक से परमेश्वर की प्रार्थना किई और बिलख बिलख रोई॥ ११। और उस ने मनौती मान के कहा कि हे सेनाओं के परमेश्वर यदि तू अपनी दासी के कष्ट पर दृष्टि करे और मेरी सुधि लेवे और अपनी दासी को भूल न जाय परंतु अपनी दासी को पुत्र देवे तो मैं उसे जीवन भर परमेश्वर के लिये समर्पण करूंगी और उस के सिर पर छुरा न फिरेगा। १२। और यों हुआ कि जब वुह परमेश्वर के आगे प्रार्थना कर रही थी एली उस के मूंह को देख रहा था॥ १३। अब हन्ना मन ही मन कह रही थी केवल उस के होंठ हिलते थे परंतु उस का शब्द सुना न जाता था इस लिये एली समझा कि वुह अमल में है॥ १४। और एली ने उसे कहा कि कब लों तू मतवाली रहेगी अपनी मदिरा त्याग कर॥ १५। तब हन्ना ने उत्तर देके कहा कि नहीं मेरे प्रभु मेरा मन दुःखी है मैं ने मदिरा अथवा अमल नहीं पीया परंतु अपने मन को परमेश्वर के आगे बहा दिया है॥ १६। आप अपनी दासी को बलीआल की पुत्री मत जानिये क्योंकि मैं अपने ध्यान और शोक की अधिकाई से अब लों बोली हूं॥ १७। तब एली ने उत्तर देके कहा कि कुशल से जा इसराएल का ईश्वर तेरी प्रार्थना जो तू ने उस्से किई पूरी करे॥ १८। तब उस ने कहा कि तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पावे तब वुह स्त्री चली गई और खाया और फिर उस का मूंह उदास न हुआ॥ १९। और वे बिहान को तड़के उठे और परमेश्वर के आगे दंडवत किई और फिरे और रामात में अपने घर आये और एलकाना ने अपनी पत्नी हन्ना को ग्रहण किया तब परमेश्वर ने उसे स्मरण किया॥

२०। और कितने दिन बीते ऐसा हुआ कि हन्ना गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम इस कारण समूएल रक्खा कि मैं ने उसे परमेश्वर से मांगा है॥ २१। और एलकाना अपने समस्त घर समेत चढ़ गया कि बरस का बलिदान और मनौती परमेश्वर के आगे चढ़ावे॥ २२। परंतु हन्नः

ऊपर न गई क्योंकि उस ने अपने पति से कहा कि जब लों बालक का दूध बढ़ाया न जाय मैं यहीं रहूंगी और तब उसे ले जाऊंगी जिसतें वुह परमेश्वर के आगे दिखाई देवे और सदा वहीं रहे॥ २३। तब उस के पति एलकाना ने उसे कहा कि जो तुझे भला लगे सो कर तू उस का दूध छुड़ानें लों ठहरी रह केवल परमेश्वर अपने बचन को स्थिर करे सो वुह स्त्री ठहरी रही और जब लों उस का दूध न छुड़ाया गया अपने बेटे को दूध पिलाया किया॥

२४। और जब उस का दूध बढ़ाया गया तो उसे अपने साथ ले चली और तीन बैल और आधे मन से ऊपर पिसान और एक कुप्पा मदिरा अपने साथ लिया और उसे सैला में परमेश्वर के मंदिर में लाई और बालक छोटा था॥ २५। तब उन्हों ने एक बैल को बलि किया और बालक को एली पास लाये॥ २६। और बोली कि हे मेरे प्रभु तेरे जीवन सों मैं वही स्त्री हूं जिस ने तेरे पास परमेश्वर के आगे यहां खड़ी होके प्रार्थना किई थी॥ २७। मैं ने इस बालक के लिये प्रार्थना किई थी सो परमेश्वर ने मेरी बिनती जो मैं ने उस्से किई थी ग्रहण किई॥ २८। इस लिये मैं ने इसे बिनती से पाके परमेश्वर को फेर दिया जब लों वह जीता है परमेश्वर का दिया रहे और उस ने वहां परमेश्वर को दंडवत किई॥

२ दूसरा पर्ब्ब।

और हन्नः ने प्रार्थना करके कहा कि मेरा मन परमेश्वर से आनंद है परमेश्वर से मेरा सींग बढ़ाया गया शत्रुन के साम्ने बोलने को मेरा मूंह बढ़ गया क्योंकि मैं तेरी मुक्ति में आनंद हूं॥ २। परमेश्वर के तुल्य कोई पवित्र नहीं क्योंकि तुझे छोड़ कोई नहीं कोई चटान हमारे ईश्वर के समान नहीं॥ ३। अति घमंड की बातें मत कहो और अहंकार तुम्हारे मूंह से न निकले क्योंकि परमेश्वर ज्ञान का ईश्वर है और करणी उस्से जांची जाती हैं॥ ४। बलवंतों के धनुष टूट गये और ठोकर खाये ऊओं की कटि दृढ़ता से बंध गई॥ ५। वे जो तृप्त थे उन्हों ने अपने को बनों में लगाया है और जो भूखे थे उन्हों ने उस्से हाथ उठाया यहां लों कि बांझ सात जनी और जिस के बज्जत बालक हैं सो दुर्बल

ऊई ॥ ६। परमेश्वर मारता है और जिलाता है वही समाधि में उतारता है और उठाता है॥ ७। परमेश्वर कंगाल करता है और धनी बनाता है वुह घटाता है और बढ़ाता है॥ ८। वुह कंगाल को धूल से उठाता है और कुअरों में बैठाने के लिये भिखारी को कूड़े की ढेर से उठाता है और बिभव के सिंहासन का अधिकारी करता है क्योंकि भूमि के खंभे परमेश्वर के हैं और उस ने जगत को उन पर धरा है॥ ९। वुह अपने सिद्धों के चरणों की रक्षा करेगा और दुष्ट अंधियारे में चुप चाप पड़े रहेंगे क्योंकि बल से कोई न जीतेगा॥ १०। परमेश्वर के बैरी चूर होंगे स्वर्ग से वुह उन पर गर्ज्जेगा परमेश्वर पृथिवी के अंत का न्याय करेगा और वुह अपने राजा को बल देगा और अपने अभिषिक्त के सींगों को उभारेगा॥ ११। और एलकाना अपने घर रामात को गया और वुह लड़का एली याजक के आगे परमेश्वर की सेवा करता रहा॥ १२। अब एली के बेटे जो दुष्ट जन थे परमेश्वर को पहिचानते न थे॥ १३। और लोगों से याजकों की यह रीति थी कि जब कोई बलि चढ़ाता था और जब लों मांस उसना जाता था याजक का सेवक त्रिशूली मांस की कंटिया हाथ में लेके आता था॥ १४। और उसे कड़ाही अथवा बटलोही अथवा हण्डा अथवा हांड़ी में लगाता था जितना उस कांटे में निकलता था याजक आप लेता था सो वे सारे इसराएलियों से जो सैला में जाते थे योंहीं करते थे॥ १५। और चिकनाई जलाने से आगे भी याजक का सेवक आता था और बलि के चढ़वैये से कहता था कि भून्ने के लिये याजक को मांस देओ क्योंकि वुह तुझ से सिझाया ऊआ मांस न लेगा परंतु कच्चा॥ १६। और यदि कोई उसे कहता कि हम अभी चिकनाई जला लेवें तब जितना तेरा जी चाहे उतना लेना तब वुह उत्तर देता था कि नहीं तू मुझे अभी दे नहीं तो मैं छीन लेऊंगा॥ १७। इस लिये परमेश्वर के आगे उन तरुणों का महा पाप था क्योंकि लोग परमेश्वर की भेंट से घिन करते थे॥ १८। परंतु वुह बालक समूएल सूती अफूद पहिने ऊये परमेश्वर के आगे सेवा करता था॥ १९। और उस्से अधिक उस की माता एक छोटा कुरता बना के बरस बरस जब अपने पति के साथ भेंट चढ़ाने आती थी उस के लिये लाया करती थी॥

२०। सो एली ने एलकाना और उस की पत्नी को आशीष देके कहा कि परमेश्वर इस उधार की संती जो परमेश्वर को उधार दिया गया तुझे इस स्त्री से बंश देवे और वे अपने घर को गये॥ २१। फिर हन्ना पर परमेश्वर की कृपा हुई यहां लों कि वुह गर्भिणी हुई और तीन बेटे दो बेटियां जनी और वुह बालक समूएल परमेश्वर के आगे बड़ा हुआ॥

२२। अब एली अति वृद्ध हुआ और उस ने सब कुछ सुना जो उस के बेटे समस्त इसराएलियों से करते थे और किस रीति से वे उन स्त्रियों से कुकर्म्म करते थे जो जथा की जथा मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी होती थीं॥ २३। और उस ने उन्हें कहा कि तुम यह क्या करते हो क्योंकि मैं तुम्हारी बुराइयां हर एक जन से सुनता हूं॥ २४। यह अच्छा नहीं है मेरे बेटो जो मैं सुनता हूं सो भला नहीं तुम परमेश्वर के लोगों से पाप कराते हो॥ २५। यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के बिरोध में पाप करे तो न्यायी बिचार करेगा परंतु यदि कोई परमेश्वर के बिरोध में पाप करे तो उस के लिये कौन बिनती करेगा तिस पर भी उन्हों ने अपने पिता का कहा न माना क्योंकि परमेश्वर उन्हें घात किया चाहता था॥ २६। और वुह लड़का समूएल बढ़ता गया और परमेश्वर के और लोगों के आगे अनुग्रह पाया॥ २७। तब ईश्वर का एक जन एली पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मैं तेरे पिता के घराने पर जब वुह मिस्र में फ़िरऊन के देश में था प्रगट न हुआ॥ २८। और क्या मैं ने उसे इसराएल की समस्त गोष्ठियों से चुन न लिया कि मेरा याजक होवे और मेरी बेदी पर बलिदान चढ़ावे और सुगंध जलावे और मेरे आगे अफ़ूद पहिने और होम की सारी भेंट जो इसराएल के संतान चढ़ाते हैं मैं ने तेरे पिता के घराने को नहीं दिया॥ २९। फेर तुम काहे को मेरे बलिदानों को और भेंटों को जो मैं ने अपने निवास में आज्ञा किई है लताड़ते हो और तू अपने बेटों को मुझ से अधिक प्रतिष्ठा देता है कि मेरे लोग इसराएल के संतान की भेंटों से मोटे बनो॥ ३०। सो परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता है कि मैं ने निश्चय कहा था कि तेरा घर और तेरे पिता का घर सदा मेरे आगे चले परंतु अब परमेश्वर कहता है कि यह मुझ से दूर होवे क्योंकि जो मुझे प्रतिष्ठा देते हैं मैं उन्हें प्रतिष्ठा

देऊंगा और जो मेरी निंदा करते हैं सो निंदित होंगे॥ ३१। देखो वे दिन आते हैं कि मैं तेरी भुजा और तेरे पिता के घराने की भुजा काट डालूंगा कि तेरे घर में कोई बूढ़ा न होगा॥ ३२। और समस्त समय में कि परमेश्वर इसराएल पर भलाई करेगा तू मंदिर में अपना बैरी देखेगा और तेरे बंश में कभी कोई वृद्ध न होगा॥ ३३। और तेरा वुह जन जिसे मैं अपनी बेदी में से काट न डालूंगा तेरी आंखें फोड़ेगा और तेरे मन को शोकित करेगा और तेरे घर की बढ़ती तरुणाई में मर जायगी॥ ३४। कि तेरे दोनों बेटों हफनी और फीनिहास पर यह पड़ेगा तेरे लिये यह पता है कि एक ही दिन में दोनों के दोनों मर जायेंगे॥ ३५। और मैं अपने लिये एक बिश्वास मय याजक उठाऊंगा जो मेरे मन के और अंतःकरण के समान करेगा और उस के लिये मैं एक घर स्थिर करूंगा और वुह सदा मेरे अभिषिक्त के आगे चलेगा॥ ३६। और ऐसा होगा कि हर एक जन जो तेरे घर में बच रहेगा एक टुकड़ा चांदी और एक एक कौर रोटी के लिये उस के पीछे फिरेगा और कहेगा कि उन याजकों में से मुझे एक की सेवा दीजिये कि मैं एक टुकड़ा रोटी खाया करूं॥

३ तीसरा पर्ब्ब।

और वुह बालक समूएल एली के आगे परमेश्वर की सेवा करता था और उन दिनों में ईश्वर का बचन बहुमूल्य था कोई प्रगट दर्शन न होता था॥ २। और ऐसा हुआ कि जब एली अपने स्थान में लेटा था और उस की आंखें धुंधली होने लगीं ऐसा कि वुह देख न सक्ता था॥ ३। जहां ईश्वर की मंजूषा थी तहां परमेश्वर के मंदिर का दीपक अब लों न बुझा था और समूएल लेट गया था॥ ४। कि परमेश्वर ने समूएल को पुकारा उस ने उत्तर दिया कि मैं यहीं हूं॥ ५। और एली पास दौड़ के कहा कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे पुकारा है वुह बोला कि मैं ने नहीं पुकारा फिर जा लेट रह सो वुह जाके लेट गया॥ ६। और परमेश्वर ने समूएल को फिर पुकारा और समूएल उठ के एली पास गया और बोला कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे

बुलाया और उस ने उत्तर दिया कि हे पुत्र मैं ने नहीं बुलाया फिर जा लेट रह॥ ७। और समूएल अब लों परमेश्वर को न जानता था और न परमेश्वर का बचन उस पर प्रगट ज्ञआ था॥ ८। तब परमेश्वर ने तीसरे बार समूएल को फिर पुकारा और वुह उठ के एली पास गया और कहा कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे बुलाया सो एली ने बूझा कि इस बालक को परमेश्वर ने पुकारा है॥ ९। इस लिये एली ने समूएल को कहा कि जा पड़ रह और यों होगा कि यदि तुझे पुकारे तो कहियो कि हे परमेश्वर कह क्योंकि तेरा दास सुनता है सो समूएल अपने स्थान पर जाके लेट रहा॥ १०। और परमेश्वर आके खड़ा ज्ञआ और आगे की नाईं पुकारा समूएल समूएल तब समूएल ने उत्तर दिया कि कहिये क्योंकि तेरा दास सुनता है॥ ११। तब परमेश्वर ने समूएल से कहा कि देख मैं इसराएल में ऐसा कार्य्य करूंगा जिसतें सुनवैयों के कान झंझना उठेंगे॥ १२। मैं उस दिन सब कुछ जो मैं ने एली के घराने के बिषय में कहा है पूरा करूंगा जब मैं आरंभ करूंगा तब समाप्त भी करूंगा॥ १३। क्योंकि मैं ने उसे कहा है कि मैं उस बुराई की संती जो वुह जानता है उस के घर का न्याय करूंगा इस कारण कि उस के बेटों ने आप को स्नापित किया है और उस ने उन्हें न घुरका॥ १४। इस लिये एली के घर के बिषय में मैं ने किरिया खाई है कि एली के घर का पाप बलिदानों और भेंटों से कधी पावन न किया जायगा॥ १५। फिर समूएल बिहान लों पड़ा रहा और उस ने ईश्वर के मंदिर के द्वार खोले और समूएल उस दर्शन को एली पर प्रगट करते डरा॥ १६। तब एली ने समूएल को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे समूएल वुह बोला कि मैं यहीं हूं॥ १७। उस ने पूछा कि वुह क्या है जो उस ने तुझे कहा है मुझ से मत छिपा यदि तू इस में से कुछ छिपावे जो उस ने तुझे कहा है तो ईश्वर तुझ से ऐसा ही करे और अधिक॥ १८। तब समूएल ने उसे सारी बातें कहीं और कुछ न छिपाया वुह बोला कि वुह परमेश्वर है जो भला जाने सो करे॥ १९। और समूएल बढ़ा और परमेश्वर उस के साथ था और उस ने उस की कोई बात भूमि पर अकारथ गिरने न दिई॥ २०। और दान से लेके बिअरसबः लों समस्त

इसराएल जान गये कि समूएल परमेश्वर का आगमज्ञानी स्थिर ङआ॥ २१। और परमेश्वर सैला में फेर प्रगट ङआ क्योंकि परमेश्वर ने अपने को सैला में समूएल पर अपने बचन के द्वारा से प्रगट किया।

४ चौथा पर्ब्ब।

और समूएल की बात सारे इसराएल को पङंची और ऐसा ङआ कि इसराएल फिलिस्तियों से संग्राम करने को निकले और अबनअज़र के पास डेरा खड़ा किया और फिलिस्तियों ने आफीक में डेरा खड़ा किया॥ २। और फिलिस्तियों ने इसराएल के आगे पांती बांधी और जब संग्राम फैल गया तब इसराएल फिलिस्तियों के आगे मारे गये और उन्हों ने सेना में से चार सहस्र मनुष्य चौगान में मारे॥

३। और जब लोग छावनी में आये इसराएल के प्राचीनों ने कहा कि परमेश्वर ने आज हमें फिलिस्तियों के आगे क्यों ध्वस्त किया आओ परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा सैला से ले आवें कि जब वुह हम्में आवे वुह हमें बैरियों के हाथ से बचावे॥ ४। सो उन्हों ने सैला में लोग भेजे जिसतें सेनाओं के परमेश्वर की जो दो करोबियो के ऊपर बैठा है साक्षी की मंजूषा को ले आवें और एली के दोनों बेटे हफ़नी और फीनिहास ईश्वर की साक्षी की मंजूषा के पास वहां थे॥ ५। और जब परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा छावनीमें पङंची तब सारे इसराएलियों ने बड़े शब्द से ललकारा यहां लों कि भूमि कांप उठी॥ ६। और जब फिलिस्तियों ने ललकारने का शब्द सुना तो बोले कि इबरानियों की छावनी में यह क्या महा शब्द है फिर उन्हों ने समझा कि परमेश्वर की मंजूषा छावनी में पङंची॥ ७। तब फिलिस्ती डरे क्योंकि उन्हों ने कहा कि ईश्वर छावनी में आया है और बोले कि हाय हम पर क्योंकि आज कल ऐसी बात नहीं ङई॥ ८। हाय कौन ऐसे बलवंत देव के हाथ से हमें बचावेगा यह वुह देव है जिस ने मिस्रियों को अरण्य में समस्त मरियों से मारा॥ ९॥ हे फिलिस्तियो बलवंत होओ और पुरुषार्थ करो जिसतें तुम इबरानियों के सेवक न बनो जैसा वे तुम्हारे ङए हैं परंतु पुरुषार्थ करो और लड़ो॥ १०। सो फिलिस्तियों ने

लड़ाई किई और इसराएल मारे गये और हर एक पुरुष अपने अपने तंबू को भागा और वहां बड़ा जूझ ज़ुआ क्योंकि तीस सहस्र इसराएल के पैदल मारे गये॥ ११। और ईश्वर की मंजूषा लिई गई और एली के दोनों बेटे हफ़नी और फ़ीनिहास जूझ गये॥ १२। और बिनयमीन का एक जन सेना से दौड़ा और कपड़े फाड़े ज़ुए और सिर पर धूल डाले ज़ुए उसी दिन सैला में आया॥ १३। और जब वुह पज़ुंचा तब देखो एली एक आसन पर मार्ग के लग बैठ के बाट जोह रहा था क्योंकि ईश्वर की मंजूषा के लिये उस का मन थर्थरा रहा था और जब उस जन ने नगर में पज़ुंच के संदेश दिया तब सारे नगर में रोना पीटना ज़ुआ॥ १४। और जब एली ने रोने का शब्द सुना तब उस ने कहा कि इस हौरे के शब्द का कारण क्या वुह जन झप आ पज़ुंचा और एली को कहा॥ १५। अब एली अट्ठानवे बरस का वृद्ध था और उस की आंखें धुंधलीं थीं और वुह देख न सक्ता था॥ १६। सो उस जन ने एली से कहा कि मैं सेना से आज भाग आया ज़ं और वही ज़ं जो सेना से निकला ज़ं वुह बोला हे बेटे क्या समाचार है॥ १७। उस दूत ने उत्तर देके कहा कि इसराएल फ़िलिस्तियों के आगे भाग गये और लोगों में बड़ा जूझ ज़ुआ और तेरे दोनों बेटे भी हफ़नी और फ़ीनिहास मर गये हैं और ईश्वर की मंजूषा लिई गई॥ १८। और यों ज़ुआ कि जब उस ने एली से ईश्वर की मंजूषा का नाम लिया वुह आसन पर से फाटक के लग पिछले बल गिरा और उस का गला टूट गया और मर गया क्योंकि वुह वृद्ध और भारी था और उस ने चालीस बरस इसराएल का न्याय किया॥ १९। और उस की बहू फ़ीनिहास की पत्नी गर्भिणी थी और उस के जन्ने का समय समीप था जब उस ने यह संदेश सुना कि ईश्वर की मंजूषा लिई गई और उस का ससुर और पति मर गये तब वुह झुक गई और जन पड़ी क्योंकि उस को पीड़ा आन पज़ुंची॥ २०। और उस के मरते मरते उन स्त्रियों ने जो उस पास खड़ी थीं उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू बेटा जनी है परंतु उस ने उत्तर न दिया न सुरत लगाई॥ २१। और उस ने यह कहके उस बालक का नाम इकाबोद रक्खा और बोली कि बिभव इसराएल में से जाता रहा इस लिये कि परमेश्वर की मंजूषा लिई गई और उस के ससुर और उस

के पति चल बसे॥ २२। और वुह बोली कि बिभव इसराएल से जाता रहा क्योंकि ईश्वर की मंजूषा लिई गई।

५ पांचवां पर्ब्ब।

और फ़िलिस्ती परमेश्वर की मंजूषा को अबनअज़र से लेके अशदूद को आये॥ २। और जब फ़िलिस्ती परमेश्वर की मंजूषा को ले गये तब उन्हों ने उसे दागून के मंदिर में पहुंचाया और दागून के पास रक्खा॥ ३। और जब अशदूदी बिहान को तड़के उठे तो क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की मंजूषा के आगे मूंह के बल भूमि पर गिरा है सो उन्हों ने दागून को उठा के उस के स्थान पर फिर रक्खा॥ ४। फिर जब वे तड़के बिहान को उठे तब क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की मंजूषा के आगे मूंह के बल भूमि पर पड़ा है और दागून का सिर और दोनों हथेलियां कटी हुई डेवढ़ी पर पड़ीं हैं केवल दागून का धड़ रह गया था॥ ५। इस लिये दागून के याजक और वे जो उस के मंदिर में जाते हैं दागून की डेवढ़ी पर आज लों पांव नहीं धरते॥ ६। परंतु परमेश्वर का हाथ अशदूदियों पर भारी पड़ा था और उस ने उन्हें नाश किया और अशदूद को और उस के सिवानों को बवेसी से मारा॥ ७। और जब अशदूदियों ने यह देखा तब बोले कि इसराएल के ईश्वर की मंजूषा हमारे साथ न रहेगी क्योंकि उस का हाथ हम पर और हमारे देव दागून पर पड़ा है॥ ८। सो उन्हों ने फ़िलिस्तियों के सारे प्रधानों को बुला भेजा और कहा कि हम इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को क्या करें वे बोले कि आओ इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को गात को ले जावें सो वे इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को वहां ले गये॥ ९। और उस के ले जाने के पीछे ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ अत्यंत नाश करने को उस नगर के बिरोध में पड़ा और उस ने उस नगर के लोगों को छोटे से लेके बड़े लों मारा और उन के गुप्तों में बवेसी का लोहू बहने लगा॥ १०। इस लिये उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा अक़रून में पहुंचाई तब अक़रूनी चिल्लाके बोले कि वे इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को इस लिये हम्में लाये

हैं कि हमें और हमारे लोगों को घात करें॥ ११। सो उन्हों ने भेज के फ़िलिस्तियों के प्रधानों को एकट्ठे किया और कहा कि इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को जहां से वुह आई वहीं फेर भेजो जिसतें वुह हमें और हमारे लोगों को घात न करे क्योंकि सारे नगर में मारू हुल्लड़ हुआ और परमेश्वर का हाथ उन पर भारी था॥ १२। और जो मर न गये सो बवेसी से रोगी थे और नगर का बिलाप स्वर्ग लों पहुंचा था॥

६ छठवां पर्ब्ब॥

सो परमेश्वर की मंजूषा सात मास लों फिलिस्तियों के देश में थी॥ २। तब फिलिस्तियों ने याजकों और दैवज्ञों को बुलाके पूछा कि परमेश्वर की मंजूषा से क्या करें हमें बताओ कि हम किस रीति से उसे उस के स्थान को भेजें॥ ३। वे बोले कि यदि तुम इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को भेजते हो तो छूछी मत भेजो परंतु किसी भांति से पाप की भेंट के साथ उसे फेर भेजो तब तुम चंगे होओगे और तुमें जान पड़ेगा कि उस का हाथ तुम से किस लिये नहीं उठता है॥ ४। तब उन्हों ने पूछा कि वुह कौन सा पाप का बलिदान है जो हम उसे फेर देवें वे बोले कि फिलिस्ती प्रधानों की गिनती के समान पांच सोनैाली बवेसी और सोने के पांच मूस क्योंकि तुम सभों पर और तुम्हारे प्रधानों पर एक ही मरी है॥ ५। सो तुम अपनी बवेसी की और मूसों की मूर्त्ति बनाओ जो देश को नष्ट करते हैं और इसराएल के परमेश्वर की महिमा करो क्या जाने वुह तुम से और तुम्हारे देवते से और तुम्हारे देश से हाथ उठा लेवे॥ ६। तुम क्यों अपने मन को कठोर करते हो जैसा कि मिस्रियों ने और फ़िरऊन ने अपने मन को कठोर किया था जब कि ईश्वर ने आश्चर्य्यित कार्य्य उन में किये सो क्या उन्हों ने उन्हें जाने न दिया और वे बिदा न हुए॥ ७। अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ और दो दुधार गायें जो जूआ तले न आई हों लेओ और उन गायों को गाड़ी में जोतो और उन के बछड़ों को घर में उन के पीछे रहने देओ॥ ८। और परमेश्वर की मंजूषा लेके उस गाड़ी पर रक्खो और सोने के पात्र जो पाप की भेंट के कारण देते हो एक मंजूषा में धर के उस की

अलंग में रख देओ और उसे छोड़ देओ कि चली जाय॥ ९। और देखो यदि वुह अपने ही सिवाने से होके बैतशम्स को चढ़े तब उसी ने हम पर यह बड़ी बिपत्ति भेजी परंतु यदि नहीं तो हम जानेंगे कि उस का हाथ हम पर नहीं पड़ा परंतु यह बिपत्ति अाकस्मात् ऊई॥

१०। सो लोगों ने वैसा ही किया और दो दुधार गायें लिईं और उन्हें गाड़ी में जोता और उन के बछड़ों को घर में बंद किया॥ ११। और परमेश्वर की मंजूषा और सोने के मूसों को और बवेसियों को मंजूषा में रखके गाड़ी पर धरा॥ १२। सो उन गायों ने बैतशम्स का सीधा मार्ग लिया और राज मार्ग में बंबाती चलीं और दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ीं और फिलिस्तियों के प्रधान उन के पीछे पीछे बैतशम्स के सिवाने लों गये॥ १३। और तराई में बैतशम्सी गोहूं लवते थे और जब उन्हों ने आंखें ऊपर किईं तब मंजूषा को देखा और देखते ही आनंद ऊए॥ १४। और गाड़ी बैतशम्सी यहूसूअ के खेत में और जहां बड़ा पत्थर था आके खड़ी ऊई सो उन्हों ने गाड़ी की लकड़ियों को चीरा और गायों को परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाई॥ १५। और लावियों ने परमेश्वर की मंजूषा को उस मंजूषा सहित जो उस के साथ थी जिस में सोने के गहने थे नीचे उतारा और उसे बड़े पत्थर पर रक्खा और बैतशम्स के लोगों ने उसी दिन परमेश्वर के लिये होम की भेंटें और बलिदान चढ़ाये॥ १६। और जब फिलिस्तियों के पांच प्रधानों ने यह देखा तो वे उसी दिन अक़रून को फिर गये॥ १७। और सोनैाली बवेसी जिन्हें फिलिस्तियों ने पाप की भेंट के लिये परमेश्वर को चढ़ाया ये हैं अशदूद के लिये एक गज़्ज़ा के लिये एक अस्क़लून के लिये एक जअत के लिये एक और अक़रून के लिये एक॥ १८। और सोने के मूस फिलिस्तियों के सारे नगरों की गिनती के समान थे जो पांच प्रधानों के थे बाड़े के नगर और बाहर बाहर के गांओं अबील के बड़े पत्थर लों जिस पर उन्हों ने परमेश्वर की मंजूषा को रक्खा जो आज के दिन लों बैतशम्सी यहूसूअ के चैागान में हैं॥ १९। और परमेश्वर ने बैतशम्स के लोगों को मारा इसकारण कि उन्हों ने परमेश्वर की मंजूषा के भीतर देखा अर्थात् पचास सहस्र और सत्तर

मनुष्य लोगों में से मारे गये इस कारण कि परमेश्वर ने लोगों में से बहुतों को बधन किया लोगों ने बिलाप किया॥ २०। सो बैतशम्स के लोग बोले कि किस की सामर्थ्य है कि इस पवित्र परमेश्वर ईश्वर के आगे खड़ा होवे और हम्में से वुह किसके पास चढ़ जायगा॥ २१। तब उन्हों ने क़रयतअ़रीम के निवासियों के पास यह कहके दूत भेजे कि फ़िलिस्ती परमेश्वर की मंजूषा को फेर लाये हैं तुम उतार के अपने पास ले जाओ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

तब क़रयतअ़रीम के लोग आये और परमेश्वर की मंजूषा को ले जाके अबिनदब के घर में पहाड़ी पर रक्खा और उस के बेटे इलिअ़ज़र को पवित्र किया कि परमेश्वर की मंजूषा की रक्षा करे॥ २। और यों हुआ कि मंजूषा क़रयतअ़रीम में बहुत दिन लों रही क्योंकि बीस बरस बीत गये थे तब इसराएल के सारे घरानों ने परमेश्वर के लिये बिलाप किया॥ ३। और समूएल इसराएल के सारे घराने को कहके बोला कि यदि तुम अपने सारे मन से परमेश्वर की ओर फिरोगे तो उन उपरी देवतों को और इसतारात को अपने में से निकाल फेंको और परमेश्वर के लिये मन को सिद्ध करो और केवल उस की सेवा करो और वुह तुम्हें फ़िलिस्तियों के हाथ से छुड़ावेगा॥ ४। तब इसराएल के संतान ने बअ़लीम और इसतारात को दूर किया और केवल परमेश्वर की सेवा करने लगे॥ ५। फिर समूएल ने कहा कि सारे इसराएल मिसफ़ः में एकट्ठे होवें और मैं तुम्हारे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करूंगा॥ ६। सो वे सब मिसफ़ः में एकट्ठे हुए और पानी खींचा और परमेश्वर के आगे उंडेला और उस दिन ब्रत रक्खा और वहां बोले कि हम परमेश्वर के अपराधी हैं और समूएल मिसफ़ः में इसराएल के संतान का न्यायी हुआ॥ ७। और जब फ़िलिस्तियों ने सुना कि इसराएल के संतान मिसफ़ः में एकट्ठे हुए तब उन के प्रधान इसराएल के सान्हने चढ़ आए सो इसराएल के संतान यह सुनके फ़िलिस्तियों से डर गये॥ ८। और इसराएल के संतान ने समूएल को कहा कि हमारे लिये परमेश्वर हमारे ईश्वर से

प्रार्थना करने में थम मत जा जिसतें वुह हमें फिलिस्तियों के हाथ से बचावे॥ ९। तब समूएल ने दूध पीउआ एक मेम्ना लिया और परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाई और समूएल ने इसराएल के लिये परमेश्वर की प्रार्थना किई और परमेश्वर ने उत्तर दिया॥ १०। और समूएल होम की भेंट चढ़ा रहा था कि फिलिस्ती संग्राम के लिये इसराएल के सन्मुख आये परंतु परमेश्वर उस दिन फिलिस्तियों पर महा गर्ज्जन से गर्ज्जा और उन्हें हरा दिया और वे इसराएल के आगे मारे गये॥ ११। और इसराएली लोगों ने मिसफ: से निकल के फिलिस्तियों को खदेड़ा और बैत करके नीचे लों उन्हें मारते चले गये॥ १२। तब समूएल ने एक पत्थर लेके मिसफ: और सैना के मध्य में खड़ा किया और उस का नाम यह कहके एबनअज़र रक्खा कि परमेश्वर ने यहां लों हमारी सहाय किई॥

१३। सो फिलिस्ती बश में ऊए और वे इसराएल के सिवानों में फिर न आये और परमेश्वर का हाथ समूएल के जीवन भर फिलिस्तियों के बिरुद्ध था॥ १४। और वे बस्तियां जो फिलिस्तियों ने इसराएल से ले लिईं थीं इसराएल को फेरी गईं अकरून से लेके जअत लों और उन के सिवाने को इसराएल ने फिलिस्तियों के हाथ से छुड़ाया और इसराएलियों में और अमूरियों में मेल ऊआ॥ १५। और समूएल अपने जीवन भर इसराएल का न्यायी रहा॥ १६। और बरस बरस वुह बैतएल का और जिलजाल का और मिसफ: का दौरा करता था उन समस्त स्थानों में इसराएल का न्याय करता था॥ १७। और रामात को फिर आता था क्योंकि वहां उस का घर था और इसराएल का न्याय वहां करता था और वहां उस ने परमेश्वर के लिये बेदी बनाई॥

८ आठवां पर्ब्ब॥

और जब समूएल बुड्ढ ऊआ तब ऐसा ऊआ कि उस ने अपने बेटों को इसराएल पर न्यायी किया॥ २। अब उस के पहिलौंठे का नाम यूएल था और उस के दूसरे का नाम अबियाह वे बिअरसबः में न्यायी थे॥ ३। पर उस के बेटे उस की चाल पर न चलते थे परंतु लोभ करके घूस लेने लगे और न्याय बिरुद्ध करने लगे॥ ४। तब इसराएल के सारे

प्राचीनों ने आप को एकट्ठे किया और रामात में समूएल पास आये॥ ५। और उसे कहा कि देख तू वृद्ध है और तेरे बेटे तेरी चाल पर नहीं चलते सो अब समस्त जातिगणों की नाईं हमारा न्याय करने के लिये एक राजा ठहरा॥ ६। परंतु जब उन्हों ने उसे कहा कि हमारे न्याय करने के लिये हमें एक राजा दे इस बात से समूएल उदास हुआ और समूएल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई॥ ७। और परमेश्वर ने समूएल को कहा कि लेगों के शब्द पर जो वे तुझे कहें कान धर क्योंकि उन्हों ने कुछ तुझे त्याग नहीं किया परंतु मुझे त्याग किया जिसतें मैं उन पर राज्य न करूं॥ ८। जब से कि मैं उन्हें मिस्र से निकाल लाया आज लों उन सब कार्य्यों के समान उन्हों ने किया जिन से मुझे छोड़ दिया और आन आन देवों की सेवा किई वैसा ही वे तुझ से भी करते हैं॥ ९। सो अब उन के शब्द पर कान धर तथापि अति दृढ़ता से उन के विरुद्ध उन्हें कह दे और उस राजा का व्यवहार बताजो उन पर राज्य करेगा॥ १०। और समूएल ने उन लोगों को जो उस्से राजा के खोजी थे परमेश्वर की सारी बातें कहीं॥ ११। और उस ने कहा कि उस राजा के जो तुम पर राज्य करेगा ये व्यवहार होंगे कि वुह तुम्हारे बेटों को लेके अपने लिये और अपने रथों के और घोड़चढ़ों के लिये ठहरावेगा और अपने रथों के आगे दौड़ावेगा॥ १२। और अपने लिये सहस्र सहस्र के प्रधान और पचास पचास के प्रधान ठहरावेगा और अपनी भूमि उन से जोता के बोआवेगा और लवावेगा और अपने संग्राम के और अपने रथों के हथियार बनवावेगा॥ १३। और तुम्हारी बेटियों से अपने लिये मिठाई बनवावेगा और भोजन बनवावेगा और रोटी पोवावेगा॥ १४। और वुह तुम्हारे खेतों को और दाख के और जलपाई की बारियों को जो अच्छी से अच्छी होंगी लेके अपने सेवकों को देगा॥ १५। और तुम्हारे अन्न और दाख की बारियों का दसवां अंश लेके अपने नपुंसकों को और अपने सेवकों को देगा॥ १६। और वुह तुम्हारे दासों और तुम्हारी दासियों को और सुंदर से सुंदर युवा मनुष्यों को और तुम्हारे गदहों को लेके अपने काम में लगावेगा॥ १७। तुम्हारी भेड़ों का दसवां अंश लेगा और तुम उस के सेवक होओगे॥ १८। और तब

तुम अपने राजा के कारण जिसे तुम ने चुना है दोहाई देओगे उस दिन परमेश्वर तुम्हारी न सुनेगा॥

१९। तिस पर भी उन लोगों ने समूएल की बात न मानी पर बोले कि नहीं परंतु हम एक राजा लेंगे॥ २०। जिसतें हम भी समस्त जातिगणों के समान होवें और जिसतें हमारा राजा हमारे लिये न्याय करे और हमारे आगे आगे चले और हमारे लिये संग्राम करे॥ २१। तब समूएल ने मंडली की सारी बातें सुनीं और परमेश्वर के श्रवण लों पहुंचाईं॥ २२। और परमेश्वर ने समूएल को कहा कि तू उन का शब्द सुन और उन के लिये एक राजा ठहरा तब समूएल ने इसराएल के मनुष्यों से कहा कि हर एक अपनी अपनी बस्ती को जावे॥

९ नवां पर्ब्ब।

अब बिनयमीन का एक जन था जो अफीह के बेटे बकूरत के बेटे सरूर के बेटे अबिएल का बेटा जिस का नाम कीस था वुह बिनयमीनी और महाबली था॥ २। और उस के एक बेटा था जिस का नाम साऊल जो सुंदर और चुना हुआ तरुण था और इसराएल के संतानों में उस्से कोई अधिक सुंदर न था सारे लोगों में कांधे से लेके ऊपर लों ऊंचा था॥ ३। और साऊल के पिता के गदहे खो गये थे सो कीस ने अपने बेटे साऊल को कहा कि सेवकों में से एक को अपने साथ ले और उठ जा गदहों को ढूंढ़॥ ४। सो वुह इफ़रायम पहाड़ में से और सलीसः के देश में होके निकला परंतु न पाया तब वे सअलीम के देश में से निकले परंतु वहां भी न पाया और वुह बिनयमीन के देश में होके गया परंतु न पाया॥ ५। तब वे सूफ़ के देश में आये और साऊल ने अपने साथ के सेवक को कहा कि आ फिर चलें ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहों को छोड़ हमारे लिये चिंता करे॥ ६। उस ने उसे कहा कि देख इस नगर में ईश्वर का एक जन है जो प्रतिष्ठित है जो कुछ वुह कहता है सो निश्चय होता है आ उधर जायें क्या जाने कि जो मार्ग हमें जाना उचित है वुह हमें बता सके॥ ७। तब साऊल ने अपने सेवक से कहा कि देख यदि हम जायें तो हम उस जन के लिये क्या ले

जावें क्योंकि हमारे पात्रों में रोटी चुक गई और ईश्वर के जन के लिये भेंट नहीं हमारे पास क्या है॥ ८। पर सेवक ने साऊल को उत्तर देके कहा कि देख पांच शेकल चांदी मुझ पास है सो मैं ईश्वर के जन को देऊंगा कि हमें मार्ग बतावे॥ ९। [अगले समय में जब मनुष्य परमेश्वर से प्रश्न करने जाता था तब यह कहता था कि आओ दर्शी पास जायें क्योंकि आगमज्ञानी आगे दर्शी कहाता था]॥ १०। तब साऊल ने अपने सेवक से कहा कि तू ने अच्छा कहा आ चल सो वे नगर में आये जहां ईश्वर का वुह जन था॥ ११। उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते हुए उन्हें कई कन्या मिलीं जो पानी भरने जाती थीं उन्हों ने पूछा कि दर्शी यहां है॥ १२। उन्हों ने उन्हें उत्तर दिया और कहा कि देख वुह तुम्हारे आगे है शीघ्र करो क्योंकि वुह आज नगर में आया है और आज ऊंचे स्थान में लोगों का बलिदान है॥ १३। जब तुम नगर में पहुंचो तब तुम उस से आगे कि वुह ऊंचे स्थान में खाने जाय उसे पाओगे क्योंकि जब लों वुह न जाये लोग न खायेंगे इस कारण कि वुह बलि को आशीष देता है उस के पीछे नेउंतहरी खाते हैं सो अब तुम चढ़ो क्योंकि आज तुम उसे पाओगे॥ १४। सो वे नगर को चढ़े और नगर में जाते ही क्या देखते हैं कि समूएल उन के आगे आया कि ऊंचे स्थान पर चढ़ जाय॥ १५। और अब परमेश्वर ने साऊल के आने से एक दिन आगे समूएल के कान में प्रगट कह दिया था॥ १६। कि कल इसी समय में एक जन को बिनयमीन के देश से तुझ पास भेजूंगा और तू मेरे इसराएल लोगों पर उसे प्रधान अभिषेक करियो जिसतें वुह मेरे लोगों को फिलिस्तियों के हाथ से छुड़ावे क्योंकि मैं ने अपने लोगों पर दृष्टि किई और उन का चिल्लाना मेरे पास पहुंचा॥ १७। सो जब समूएल ने साऊल को देखा तब परमेश्वर ने उसे कहा कि देख यही जन है जिस के कारण मैं ने तुझे कहा था यही मेरे लोगों पर राज्य करेगा॥ १८। तब साऊल समूएल के पास फाटक पर आके बोला कि कृपा करके हमें बताइये कि दर्शी का घर कहां है॥ १९। तब समूएल ने साऊल को उत्तर देके कहा कि दर्शी मैं हीं हूं मेरे आगे आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ क्योंकि तुम आज मेरे साथ भोजन करोगे और

कल मैं तुझे बिदा करूंगा और जो कुछ तेरे मन में है तुझे बताऊंगा॥ २०। और तेरे गदहे जो आज तीन दिन से खो गये हैं उन की ओर से निश्चिंत रह क्योंकि वे मिल गये और इसराएल की सारी इच्छा किस पर है क्या तेरे और तेरे पिता के समस्त घराने पर नहीं॥ २१। सो साऊल ने उत्तर देके कहा कि मैं बिनयमीनी इसराएल की गोष्ठियों में से सब से छोटा नहीं और क्या मेरा घराना बिनयमीन की गोष्ठी के सारे घरानों में छोटे से छोटा नहीं इस बचन के समान तू मुझ से क्यों बोलता है॥ २२। और समूएल साऊल को और उस के सेवक को लेके उन्हें कोठरी में लाया और उन्हें नेउंतहरियों में जो बुलाये गये थे जो जन तीस एक थे सब से श्रेष्ठ स्थान में बैठाया॥ २३। तब समूएल ने रसोई कारक को कहा कि वुह भाग जो मैं ने तुझे रख छोड़ने को कहा था ले आ॥ १४। और रसोई कारक ने एक कांधे को और जो उस पर था उठा लिया और साऊल के आगे रखके कहा कि देख यह जो धरा है अपने आगे रखके खा इस लिये कि मैं ने जब से कि लोगों का नेउंता किया अब लों तेरे लिये रख छोड़ा था सो साऊल ने उस दिन समूएल के साथ भोजन किया।

२५। और जब वे ऊंचे स्थान से नगर में उतर आये उस ने साऊल से छत पर बात चीत किई॥ २६। और वे तड़के उठे और बिहान होते ही समूएल ने साऊल को फिर छत पर बुला के कहा कि उठ मैं तुझे बिदा करूं सो साऊल उठा और वे दोनों वुह और समूएल बाहर चले गये॥ २७। जब वे नगर के निकास पर जाते थे तब समूएल ने साऊल को कहा कि अपने सेवक को कह कि हम से आगे बढ़े और वुह बढ़ गया पर तू तनिक खड़ा रह जिसतें ईश्वर का बचन तुझे बताऊं।

१०। दसवां पर्ब्ब।

फिर समूएल ने एक कुप्पी तेल लिया और उस के सिर पर ढाला और उसे चूमा और कहा कि यह इस कारण नहीं कि परमेश्वर ने तुझे अपने अधिकार के ऊपर प्रधान करके अभिषेक किया॥ २। जब तू मेरे पास से आज चला जायगा तब दो जन को राख़िल की समाधि के

पास बिनयमीन के सिवाने के जिल्सज़ह में पाओगे और वे तुझे कहेंगे कि जिन गदहों को तू ढूंढने गया था सो मिले और अब तेरा पिता गदहों की चिंता छोड़ कर तेरे लिये कुढ़ता है और कहता है कि मैं अपने बेटे के लिये क्या करूं॥ ३। तब तू वहां से आगे बढ़ेगा और तबूर के चैागान को पज्जंचेगा और वहां तुझे तीन जन मिलेंगे जो बैतएल के ईश्वर कने चले जाते होंगे एक तो बकरी के तीन मेम्ना लिये ज्जए और दूसरा तीन रोटी और तीसरा एक कुप्पा दाख रस॥ ४। और वे तेरा कुशल पूछेंगे और दो रोटी तुझे देंगे तू उन के हाथ से ले लीजियो॥ ५। उस के पीछे तू ईश्वर के पहाड़ पास जहां फ़िलिस्तियों की चौकी है पज्जंचेगा और जब नगर में प्रवेश करेगा ऐसा होगा कि तू आगम-ज्ञानियों की एक जथा पावेगा जो ऊंचे स्थान से उतरती होगी जिन के आगे आगे मुरचंग और ढोलक और बांसुरी और बीणा होंगे और वे भविष्य कहेंगे॥ ६। तब परमेश्वर का आत्मा तुझ पर उतरेगा और तू भी उन के साथ भविष्य कहेगा और और ही एक मनुष्य हो जायगा॥ ७। और यों होगा कि जब तू ये चिन्ह पावे फिर जैसा संयोग होवे वैसा कीजियो क्योंकि ईश्वर तेरे साथ है॥ ८। और मेरे आगे तू जिलजाल को उतरियो और देख मैं तुझ पास उतरूंगा जिसतें होम की भेंट और कुशल की भेंट बलि करूं सो तू सात दिन लों वहीं ठहरियो जब लों मैं तुझ पास आऊं और तुझे बताऊं कि तू क्या क्या करेगा॥ ९। और ऐसा ज्जआ कि ज्योंहीं उस ने समूएल से जाने को पीठ फेरी त्योंहीं ईश्वर ने उसे दूसरा मन दिया और वे सब लक्षण उस ने उसी दिन पाये॥ १०। और जब वे उधर पहाड़ को आये तो क्या देखते हैं कि आगमज्ञानियों की एक जथा उन्हें मिली और ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा और वुह उन में भविष्य कहने लगा॥ ११। और यों ज्जआ कि जब उस के अगले जान पहिचानों ने यह देखा कि वुह आगमज्ञानियों के मध्य भविष्य कहता है तब लोगों ने आपुस में कहा कि कीस के बेटे को क्या ज्जआ क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है॥ १२। तब एक ने उन में से उत्तर दिया और कहा कि उन का पिता कौन है तब ही से यह कहावत चली कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है॥

१३। और जब वुह आगम कह चुका तब ऊंचे स्थान में आया॥ १४। और साऊल के चचा ने उसे और उस के सेवक को कहा कि तुम कहां गये थे और वे बोले कि गदहे ढूंढ़ने और जब उन्हें कहीं न पाया तो समूएल पास गये॥ १५। तब साऊल का चचा बोला कि मुझे बता कि समूएल ने तुम्हें क्या कहा॥ १६। और साऊल ने अपने चचा से कहा कि उस ने हमें खोल के बताया कि गदहे मिल गये पर राज्य का समाचार जो समूएल ने उसे कहा था उसे न बताया॥

१७। और समूएल ने मिसफ़ः में परमेश्वर के आगे लोगों को एकट्ठे बुलाया॥ १८। और इसराएल के संतान को कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं इसराएल को मिस्र से निकाल लाया और तुम्हें मिस्रियों के और सारे राजाओं के हाथ से और जो तुम्हें सताते थे उन से छुड़ाया॥ १९। और तुम ने आज के दिन अपने ईश्वर को त्याग किया जिस ने तुम्हें तुम्हारे सारे बैरियों और तुम्हारी बिपतों से बचाया और तुम ने उसे कहा कि हम पर एक राजा ठहरा सो अब अपनी अपनी गोष्ठी के और सहस्र सहस्र के समान परमेश्वर के आगे आओ॥ २०। और जब समूएल ने इसराएल की सारी गोष्ठियों को एकट्ठी किया तब बिनयमीन की गोष्ठी लिई गई॥ २१। और जब वुह बिनयमीन की गोष्ठी को उन के घरानों के समान पास लाया तब मत्री का घराना चुना गया और क़ीस का बेटा साऊल चुना गया और जब उन्हों ने उसे ढूंढ़ा तो न पाया॥ २२॥ इस लिये उन्हों ने परमेश्वर से पूछा कि वुह जन फिर यहां आवेगा कि नहीं और परमेश्वर ने उत्तर दिया कि देखो वुह सामग्री के बीच छिप रहा है॥ २३। तब वे दौड़े और उसे वहां से लाये और जब वुह लोगों में खड़ा हुआ तब कांधे से ले के ऊपर लों सभों से अधिक ऊंचा था॥ २४। और समूएल ने समस्त लोगों को कहा कि जिसे परमेश्वर ने चुना है तुम उसे देखते हो क्योंकि उस के समान सारे लोगों में कोई नहीं तब समस्त लोग ललकार के बोले कि राजा जीवे॥ २५। फिर समूएल ने लोगों को राज्य की रीति बताई और पुस्तक में लिख के परमेश्वर के आगे रक्खा और समूएल ने हर एक मनुष्य को अपने अपने घर भेजा॥

ओर साऊल भी अपने घर जिबिअत को गया ओर उस के साथ लोगों की एक जथा जिन के मन को ईश्वर ने फेर दिया था हो लिई ॥ २७। परंतु दुष्टजन बोले कि यह जन हमें क्योंकर बचावेगा और उस की निंदा किई और उस के पास भेंट न लाये पर वुह अनसुने के समान हो रहा ॥

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ॥

तब अम्मूनी नाहस चढ़ा और यबीसजिलिअद के साम्ने छावनी किई तब यबीस के सब लोगों ने नाहस से कहा कि हम से बाचा बांध और हम तेरी सेवा करेंगे ॥ २। और अम्मूनी नाहस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस बात पर मैं तुम्ह से बाचा बांधूंगा कि मैं तुम सभों की हर एक दहिनी आंख निकाल डालूं और समस्त इसराएल के अपमान के लिये धरूं ॥ ३। तब यबीस के प्राचीनों ने उसे कहा कि हमें सात दिन की छुट्टी दे जिसतें हम इसराएल के सारे सिवानों में दूत भेजें यदि कोई उद्धारक न ठहरे तब हम तुम्ह पास निकलेंगे ॥ ४। तब साऊल के दूत जिबिअः में पहुंचे और लोगों के कान लों यह संदेश पहुंचाया तब सब लोगों ने चिल्ला चिल्ला के बिलाप किया ॥ ५। और देखो कि साऊल खेत से ढोर के पीछे पीछे चला आता था और साऊल ने कहा कि क्या है कि लोग बिलाप करते हैं और उन्हों ने यबीसियों का संदेश उसे कह सुनाया ॥ ६। इन संदेशों को सुनते ही साऊल पर ईश्वर का आत्मा पड़ा और उस का क्रोध अत्यंत भड़का ॥ ७। और उस ने एक जोड़ा बैल लिया और उन्हें टुकड़ा टुकड़ा किया और उन्हें दूतों के हाथ इसराएल के सारे सिवानों में यह कहके भेजा कि जो कोई साऊल और समूएल के पीछे पीछे न निकल आवेगा उस के बैलों की यही दशा होगी तब लोगों पर परमेश्वर का डर पड़ा और वे एक जन की नाईं निकल आये ॥ ८। और उस ने उन्हें बज़क़ में गिना इसराएल के संतान तीन लाख थे और यहूदाह के मनुष्य तीस सहस्र ॥ ९। और उन्हों ने उन दूतों को कहा कि तुम यबीसजिलिअद के लोगों को कहो कि कल सूर्य्य की तपन होते ही तुम छुटकारा पाओगे और दूतों ने आके यबीस के मनुष्यों से

कहा और वे आनंद हुए ॥ १० । इस लिये यबीस के मनुष्यों ने कहा कि कल तुम पास हम निकलेंगे और जो भला जानो सो हमारे विषय में कीजियो ॥ ११ । और बिहान को साऊल ने लोगों की तीन जथा किई और तड़के के पहर सेना के मध्य में आया और दिन के घाम लों अम्मूनियों को मारा और ऐसा हुआ कि वे जो रह गये सो छिन्न भिन्न हो गये यहां लों कि दो एकट्ठे न थे ॥ १२ । तब लोग समूएल से बोले कि किस ने कहा है कि क्या साऊल हम पर राज्य करेगा उन लोगों को लाओ जिसतें हम उन्हें बधन करें ॥ १३ । तब साऊल बोला कि आज के दिन कोई मनुष्य मारा न जायगा इस लिये कि आज के दिन परमेश्वर ने इसराएल को बचाया ॥ १४ । तब समूएल ने लोगों को कहा कि आओ जिलजाल को जावें और राज्य को दोहरावें ॥ १५ । तब सारे लोग जिलजाल को गये और जिलजाल में परमेश्वर के आगे उन्हों ने साऊल को राजा किया और वहां उन्हों ने कुशल की भेंटों को परमेश्वर के आगे बलि किया और वहां साऊल ने और सारे इसराएल के समस्त जनों ने बड़ा आनंद किया ॥

१२ बारहवां पर्ब्ब ॥

तब समूएल ने सारे इसराएल से कहा कि देखो जो कुछ तुम ने मुझे कहा मैं ने तुम्हारी हर एक बात मानी और एक को तुम पर राजा किया ॥ २ । और अब देखो राजा तुम्हारे आगे आगे जाता है और मैं बुड्ढ और मेरा बाल पक गया और देखो मेरे बेटे तुम्हारे साथ और मैं लड़काई से आज लों तुम्हारे आगे आगे चला ॥ ३ । देखो मैं यहां हूं सो आओ परमेश्वर के और उस के अभिषिक्त के आगे मुझ पर साक्षी देओ कि मैं ने किस का बैल लिया अथवा किस का गदहा मैं ने रख छोड़ा अथवा मैं ने किसे छला अथवा किस पर मैं ने अंधेर किया अथवा किस के हाथ से मैं ने घूस लिया कि उस्से अपनी आंखें मूंदूं और मैं तुम्हें फेर देऊंगा ॥ ४ । और वे बोले कि तू ने हमें न छला न हम पर अंधेर किया और न तू ने किसी के हाथ से कुछ लिया ॥ ५ । तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम पर साक्षी और उस का अभिषिक्त आज साक्षी है कि मेरे

हाथ में तुम ने कुछ न पाया वे बोले कि वुह साक्षी है॥ ६। फिर समूएल ने लोगों से कहा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को बढ़ाया और तुम्हारे पितरों को मिस्र के देश से ऊपर निकाल लाया॥ ७। सो अब ठहर जाओ जिसतें मैं परमेश्वर के आगे उन सब भलाइयों के कारण जो परमेश्वर ने तुम से और तुम्हारे पितरों के साथ किई तुम से बिचार करूं॥ ८। जब यअकूब मिस्र में आया और तुम्हारे पितर परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को बुलाया वे तुम्हारे पितरों को मिस्र से निकाल लाये और उन्हें इस स्थान में बसाया॥ ९। और जब वे परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये उस ने उन्हें हसूर की सेना के प्रधान सीसरा के हाथ और फिलिस्तियों के हाथ और मोअब के राजा के हाथ बेचा और वे उन से लड़े॥ १०। फिर वे परमेश्वर के आगे चिल्ला के बोले कि हम ने पाप किया क्योंकि हम ने परमेश्वर को त्याग किया और बअलीम और इसतारात की सेवा किई परंतु अब हमारे बैरियों के हाथ से हमें छुड़ा और हम तेरी सेवा करेंगे॥ ११। फिर परमेश्वर ने यरुब्बअल और बिदान और इफ्ताह और समूएल को भेजा और तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के बैरियों के हाथ से बचाया और तुम ने चैन पाया॥ १२। और जब तुम ने देखा कि अम्मून के संतान का राजा नाहस तुम पर चढ़ आया तब तुम ने मुझे कहा कि नहीं परंतु राजा हम पर राज्य करे जब कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा राजा था॥ १३। सो अब देखो तुम्हारा राजा जिसे तुम ने चुन लिया और जिसे तुम ने मांगा और देखो परमेश्वर ने तुम पर एक राजा ठहराया॥ १४। यदि तुम परमेश्वर से डरते रहोगे और उस की सेवा करोगे और उस का शब्द मानोगे और परमेश्वर के सन्मुख से फिर न जाओगे तो तुम और तुम्हारा राजा भी जो तुम पर राज्य करता है परमेश्वर अपने ईश्वर के पीछे पीछे चलोगे॥ १५। पर यदि तुम परमेश्वर का शब्द न मानोगे और परमेश्वर की आज्ञाओं से फिर जाओगे तो परमेश्वर का हाथ तुम्हारे बिरुद्ध होगा जैसा कि तुम्हारे पितरों पर था॥ १६। सो अब ठहर जाओ और देखो वुह बड़ा काम जो परमेश्वर तुम्हारी आंखों के साम्ने करेगा॥ १७। क्या आज गोहूं की लवनी नहीं

मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं और वुह गर्ज्जन और मेंह भेजेगा जिसतें तुम बूझो और देखो कि राजा के मांगने से तुम्हारी दुष्टता बड़ी है जो तुम ने परमेश्वर की दृष्टि में किई॥ १८। सो समूएल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और परमेश्वर ने उसी दिन गर्ज्जन और मेंह भेजा तब सारे लोग परमेश्वर से और समूएल से निपट डर गये॥ १९। और सारे लोगों ने समूएल से कहा कि अपने दासों के लिये परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रार्थना कीजिये कि हम न मरें क्योंकि हम ने अपने सारे पापों से यह बुराई अधिक किई कि अपने लिये एक राजा मांगा॥ २०। तब समूएल ने लोगों को कहा कि मत डरो यह सब दुष्टता तुम ने किई है तिस पर भी परमेश्वर के पीछे पीछे जाने से अलग न होओ परंतु अपने सारे अंतःकरण से परमेश्वर की सेवा करो॥ २१। और वृथा का पीछा करने को अलग मत होओ जिन में लाभ और मुक्ति नहीं क्योंकि वे व्यर्थ हैं॥ २२। क्योंकि परमेश्वर अपने महत् नाम के लिये अपने लोग को छोड़ न देगा इस कारण परमेश्वर की इच्छा ऊई कि तुम्हें अपने लोग बनावे॥ २३। और ईश्वर न करे कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करने में थम जाऊं और परमेश्वर के विरुद्ध पापी होऊं परंतु मैं वुह मार्ग जो अच्छा और सीधा है तुम्हें सिखाऊंगा॥ २४। केवल परमेश्वर से डरो और अपने सारे मन से और सच्चाई से उस की सेवा करो और सोचो कि उस ने तुम्हारे लिये कैसा बड़ा काम किया है॥ २५। परंतु यदि तुम अब भी दुष्टता करोगे तो तुम और तुम्हारा राजा नाश हो जाओगे।

१३ तेरहवां पर्ब्ब॥

साऊल ने एक बरस राज्य किया और जब वुह इसराएल पर दो बरस राज्य कर चुका॥ २। तब साऊल ने तीन सहस्र इसराएलियों को अपने लिये चुना दो सहस्र उस के साथ मिकमास में और बैतएल पहाड़ में थे और एक सहस्र यूनतन के साथ बिनयमीन के जिबिअत में थे और उबरे ऊओं को उस ने बिदा किया कि अपने अपने डेरे को जावें॥ ३। और यूनतन ने फ़िलिस्तियों के थाने को जो जिबिअः में था मारा और फ़िलिस्तियों ने सुना और साऊल ने सारे देश में यह कहके

नरसिंगा फूंका कि इबरानी सुनें॥ ४। और सारे इसराएलियों ने यह समाचार सुना कि साऊल ने फिलिस्तियों के थाने को मारा और इसराएल भी फिलिस्तियों से घिनित हुए और लोग साऊल के पास जिलजाल में एकट्ठे बुलाये गये॥ ५। और फिलिस्ती इसराएल से लड़ने को एकट्ठे हुए तीस सहस्र रथ और छः सहस्र घोड़चढ़े और लोग समुद्र की बालू की नाईं समूह चढ़ आये मिकमास में बैतअवन की पूर्व ओर डेरा किया॥ ६। जब इसराएल के मनुष्यों ने देखा कि हम सकेती में हैं क्योंकि लोग दुःखी थे तब लोग आके खोहों में और झाड़ों में और पहाड़ों में और ऊंचे ऊंचे स्थानों में और गड़हियों में जा छिपे॥ ७। और इबरानी यरदन के पार जद और जिलिअद के देश को गये और साऊल तो अब लों जिलजाल ही में था और समस्त लोग उस के पीछे पीछे थर्थराते गये॥ ८। और वहां समूएल के ठहराने के समान सात दिन लों ठहरा रहा परंतु समूएल जिलजाल में न आया और लोग उस के पास से बिथरे थे॥ ९। तब साऊल ने कहा कि होम की भेंट और कुशल की भेंट मुझ पास लाओ और उस ने होम की भेंट चढ़ाई॥ १०। और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वुह होम की भेंट चढ़ा चुका त्योंहीं समूएल आ पहुंचा और साऊल उसे मिलने को बाहर निकला कि उसे धन्यबाद करे॥ ११। और समूएल ने पूछा कि तू ने क्या किया तब साऊल बोला कि जब मैं ने देखा कि लोग मुझ से बिथर गये और तू ठहराये हुए दिनों के भीतर न आ पहुंचा और फिलिस्ती मिकमास में एकट्ठे हुए॥ १२। तब मैं ने कहा कि फिलिस्ती जिलजाल में मुझ पर आ पड़ेंगे और मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई इस लिये मैं ने सकेती से होम की भेंट चढ़ाई॥ १३। तब समूएल ने साऊल को कहा कि तू ने मूढ़ता किई है तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को जो उस ने तुझे दिई पालन न किया क्योंकि परमेश्वर अब तेरा राज्य इसराएल पर सदा स्थिर करता॥ १४। परंतु अब तेरा राज्य बना न रहेगा क्योंकि परमेश्वर ने एक जन को अपने मन के समान खोजा है और परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई कि उस के लोगों का प्रधान होवे इस लिये कि तू ने परमेश्वर की आज्ञा को पालन न किया॥ १५। और समूएल

उठा और जिलजाल से बिनयमीन के जिबिअ्त को चला गया तब साऊल ने उन लोगों को जो उस पास थे गिना और वे एक छः सौ जन थे॥ १६। और साऊल और उस का बेटा यूनतन और उस के साथ के लोग बिनयमीन के संतान के जिबिअः में ठहर गये परंतु फ़िलस्तियों ने मिकमास में छावनी किई॥ १७। और लुटेरे फ़िलिस्तियों की छावनी से तीन जथा होके निकले एक तो सूआल के देश को उफ़रः की ओर॥ १८। और दूसरी जथा बैतहोरान के मार्ग आई और तीसरी जथा ने उस सिवाने का मार्ग लिया जो सबुईम की तराई के बन के सन्मुख है॥ १९। अब इसराएल के सारे देश में कोई लोहार न मिलता था क्योंकि फ़िलिस्तियों ने कहा था कि न हो कि इबरानी खड्ग अथवा भाला बनावें॥ २०। परंतु सारे इसराएली हर एक जन अपना अपना फार और भाला और कुल्हाड़ी और कुदारी चोखा करने के लिये फ़िलिस्तियों कने उतरते थे॥ २१। तद भी कुदारियों और फारों और त्रिशूलों और कुल्हाड़ी के लिये और अरई को चोखा करने के लिये उन के पास एक रेती थी॥ २२। और ऐसा हुआ कि लड़ाई के दिन साऊल और उस के बेटे यूनतन को छोड़ उन लोगों में से जो साऊल और यूनतन के साथ थे किसी के हाथ में एक तलवार और एक भाला न था॥ २३। तब फ़िलिस्तियों का थाना मिकमास की घाटी पर आ पड़ा।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

और एक दिन ऐसा हुआ कि साऊल के बेटे यूनतन ने अपने अस्त्रधारी युबा मनुष्य को कहा कि आ हम फ़िलिस्तियों के थाने पर जो पल्ले ओर है चलें परंतु उस ने अपने पिता से नहीं कहा॥ २। और साऊल जिबिअः के निकास पर एक अनार के वृक्ष तले जो मिजरून में था ठहर रहा और एक छः सौ लोग उस के साथ थे॥ ३। परमेश्वर का याजक सैला में एली का बेटा फ़ीनिहास का बेटा ईकबूद के भाई अखितूब का बेटा अख़ी अफ़ूद पहिने हुए था और लोगों ने न जाना कि यूनतन चला गया॥ ४। और उन घाटियों के बीच जिन से यूनतन चाहता था कि फ़िलिस्तियों के थाने पर जा पड़े एक एक ओर चोखी

चटान थी एक का नाम बोज़ीज़ और दूसरी का सनः था॥ ५। एक का साम्ना उत्तर दिशा मिकमास के सन्मुख था और दूसरी का दक्षिण दिशा जिबिअः के सन्मुख। ६। तब यूनतन ने अपने अस्त्रधारी युवा से कहा कि आ हम उन अखतनों के थाने पर चढ़ जायें क्या जाने परमेश्वर हमारे लिये कार्य्य करे क्योंकि परमेश्वर के आगे कुछ बड़ी बात नहीं चाहे बहुतों से जय दे चाहे तो थोड़ों से॥ ७। और उस के अस्त्रधारी ने उसे कहा कि सब जो आप के मन में है सो करिये फिरिये और देखिये आप के मन के समान मैं भी साथी हूं॥ ८। तब यूनतन बोला कि देख हम इन लोगों पास पार जाते हैं आ हम अपने तईं उन पर प्रगट करें॥ ९। यदि वे हमें कहें कि ठहरो जब लों हम तुम्हारे पास आवें तब हम ठहरे रहेंगे और उन पास चढ़ न जायेंगे॥ १०। परंतु यदि वे यों कहें कि हम पर चढ़ आओ तो हम चढ़ जायेंगे क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें हमारे हाथ में कर दिया और यह हमारे लिये एक पता होगा॥ ११। तब उन दोनों ने आप को फ़िलिस्तियों के थाने पर प्रगट किया और फ़िलिस्ती बोले कि देखो इबरानी उन छेदों में से जहां वे छिप रहे थे बाहर आते हैं॥ १२। और उस थाने के लोगों ने यूनतन और उस के अस्त्रधारी को कहा कि हम पर चढ़ आओ और हम तुम्हें कुछ दिखायेंगे सो यूनतन ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अब मेरे पीछे चढ़ आ कि परमेश्वर ने उन्हें इसराएल के हाथ में कर दिया॥ १३। और यूनतन बकैंया चढ़ गया और उस के पीछे उस का अस्त्रधारी और वे यूनतन के आगे मारे गये और उस के पीछे पीछे उस के अस्त्रधारी ने मारा॥ १४। सो यह पहिला काट कूट जो यूनतन और उस के अस्त्रधारी ने किया सारे मनुष्य बीस एक थे उतनी भूमि में जितनी में एक हल आधे दिन लों फिरे॥ १५। तब सेना में और खेत में और सारे लोगों में थर्थराहट हुई और थाने के लोग और लुटेरे भी थर्थराने लगे और भूमि कंपित हुई यह थर्थराहट ईश्वर की ओर से थी॥ १६। और बिनयमीन के जिबिअत में के साऊल के पहरुओं ने देखा तो क्या देखते हैं कि मंडली घट गई और वे मारते चले जाते थे॥ १७। तब साऊल ने अपने साथी लोगों से कहा कि गिनो और देखो हम में से कौन निकल गया है जब

उन्होंने गिना तो क्या देखते हैं कि यूनतन और उस का अस्त्रधारी नहीं है॥ १८। तब साऊल ने अखी को कहा कि ईश्वर की मंजूषा इहां ला [क्योंकि ईश्वर की मंजूषा उस समय में इसराएल के पास थी]॥ १९। और ऐसा हुआ कि जब याजक से साऊल बात करता था तब फ़िलिस्तियों की सेना में धूम होता चलाजाता था और साऊल ने याजक से कहा कि अपना हाथ खींच ले॥ २०। और साऊल और उस के सारे लोग एकट्ठे बुलाये गये और संग्राम को आये और देखो कि हर एक पुरुष का खड्ग उस के संगी पर पड़ा और बड़ी गड़बड़ाहट हुई॥ २१। और वे इबरानी भी जो आगे फ़िलिस्तियों के साथ थे और जो चारों ओर से उन के पास छावनी में गये थे वे भी फिर के उन इसराएलियों में जो साऊल और यूनतन के साथ थे मिल गये॥ २२। और इसराएल के सारे लोग भी जिन्हों ने इफ़्रायम पहाड़ में आप को छिपाया था यह सुना कि फ़िलस्ती भागे वे भी संग्राम में उन्हें खदेड़ते गये॥ २३। और परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को बचाया और लड़ाई बैतअवन के उस पार लों पहुंची॥ २४। और इसराएली लोग उस दिन दुःखी हुए क्योंकि साऊल ने लोगों को किरिया देके कहा कि जो कोई सांझ लों खाना खावे उस पर धिक्कार जिसतें मैं अपने बैरियों से पलटा लेओं यहां लों कि किसी ने कुछ न चखा॥ २५। और समस्त देश बन में पहुंचे और वहां भूमि पर मधु था॥ २६। और ज्योंहीं लोग बन में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि मधु टपकता है पर किसी ने अपने मुंह लों हाथ न उठाया क्योंकि लोग किरिया से डरे॥ २७। परन्तु यूनतन ने न सुना था कि उस के पिता ने लोगों को किरिया दी सो उस ने अपने हाथ की छड़ी की नोक से मधु के छत्ते में बोरा और हाथ में लेके मुंह में डाला और उस की आंखों में ज्योति आई॥ २८। तब उन लोगों में से एक ने उसे कहा कि तेरे पिता ने दृढ़ किरिया देके कहा था कि जो जन आज कुछ खाय उस पर धिक्कार और उस समय लोग थके हुए थे॥ २९। तब यूनतन बोला कि मेरे पिता ने देश को दुःख दिया देखो मैं ने तनिक सा मधु चखा और मेरी आंखों में ज्योति आई॥ ३०। क्या न होता यदि सारे लोग बैरियों की लूट से

जो उन्हों ने पाई मनमंता खाते क्या फ़िलिस्ती अधिक मारे न जाते॥ ३१। और उन्हों ने उस दिन मिकमास से लेके ऐयलून लों फ़िलिस्तियों को मारा और लोग निपट थक गये॥ ३२। और लूट पर गिरे और भेड़ और बैल और बछड़े पकड़े और उन्हें मार मार लोहू समेत खा गये॥ ३३। तब वे साऊल से कहके बोले कि देख लोहू समेत खाके लोग परमेश्वर के अपराधी होते हैं वुह बोला कि तुम ने पाप किया सो एक बड़ा पत्थर आज मेरे साम्ने ढुलकाओ॥ ३४। फिर साऊल ने कहा कि लोगों में फैल जाओ और उन से कहो कि हर एक जन अपना अपना बैल और अपनी अपनी भेड़ लावें और यहां मार के खायें और लोहू समेत खाके परमेश्वर के अपराधी न बनें सो उस रात हर एक जन अपना अपना बैल लाया और वहीं मारा॥ ३५। और साऊल ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई यह पहिली बेदी है जो उस ने परमेश्वर के लिये बनाई॥ ३६। फिर साऊल ने कहा कि आओ रात को फ़िलिस्तियों के पीछे उतरें और भिनसार लों उन्हें लूटें और उन में से एक जन को न छोड़ें और वे बोले कि जो कुछ आप को अच्छा जान पड़े सो करिये तब याजक बोला कि आओ यहां ईश्वर से मंत्र लेवें॥ ३७। तब साऊल ने ईश्वर से मंत्र पूछा कि मैं फ़िलिस्तियों का पीछा करने को उतरों तू उन्हें इसराएल के हाथ में सौंप देगा परंतु उस ने उस दिन उसे कुछ उत्तर न दिया॥ ३८। तब साऊल ने कहा कि लोगों के समस्त प्रधान यहां आवें और जानें और देखें कि आज कौन सा पाप हुआ है॥ ३९। क्योंकि परमेश्वर के जीवन सों जिस ने इसराएल को बचाया यद्यपि मेरा बेटा यूनतन भी होवे तो वुह निश्चय मारा जायगा परंतु समस्त लोगों में से किसी ने उत्तर न दिया॥ ४०। तब उस ने सारे इसराएल से कहा कि तुम लोग एक ओर होओ और मैं और मेरा बेटा यूनतन दूसरी ओर तब लोग साऊल से बोले कि जो आप भला जानें सो कीजिये॥ ४१। और साऊल ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से कहा कि ठीक चिता दे और साऊल और यूनतन पकड़े गये परंतु लोग निकल गये॥ ४२। फेर साऊल ने कहा कि मेरे और मेरे बेटे यूनतन के नाम चिट्ठी डालो तब यूनतन

पकड़ा गया॥ ४३। तब साऊल ने यूनतन से कहा कि मुझे बता कि तू ने क्या किया है और यूनतन ने उसे बताया और कहा मैं ने तो केवल तनिक मधु अपनी छड़ी की नोक से चखा था सो अब देख मुझे मरना है॥ ४४। तब साऊल ने कहा कि ईश्वर ऐसा ही और उस्से अधिक करे कि यूनतन तू निश्चय मारा जायगा॥ ४५। तब लोगों ने साऊल को कहा कि क्या यूनतन मारा जाय जिस ने इसराएल के लिये ऐसा बड़ा बचाव किया ईश्वर न करे परमेश्वर की सों उस के सिर का एक बाल लों भूमि पर न गिराया जायगा क्योंकि उस ने आज ईश्वर के साथ कार्य किया सो लोगों ने यूनतन को छुड़ा लिया जिसतें वुह मारा न जाय॥ ४६। तब साऊल फ़िलिस्तियों का पीछा करने से थम गया और फ़िलिस्ती अपने स्थान को गये॥ ४७। और साऊल ने इसराएल का राज्य लिया और अपने समस्त बैरियों से हर एक ओर मोअब के और अम्मून के संतान के और अदूम भी और सूबा के राजाओं के और फ़िलिस्तियों के साथ लड़ा और वुह जहां कहीं जाता था उन्हें छेड़ता था॥ ४८। फिर उस ने बल के साथ कार्य्य किया और अमालीक़ को मारा और इसराएलियों को लुटेरों के हाथ से छुड़ाया॥ ४९। अब साऊल के बेटों के नाम ये हैं यूनतन और यशुई और मलिकिसूअ और उस की दोनों बेटियों के नाम ये हैं पहिलौंठी मेरब और लहुरी मीकल॥ ५०। और साऊल की पत्नी का नाम अख़िनुअम जो अख़िमअज़ की बेटी थी और उस के सेनापति का नाम अबिनैयिर था जो साऊल के चचा नैयर का बेटा था॥ ५१। और क़ीस साऊल का पिता और नैयिर अबिनैयिर का पिता अबिएल का बेटा था॥ ५२। और साऊल के जीवन भर फ़िलिस्ती से कठिन संग्राम रहा और जब कभी साऊल किसी बलवंत को अथवा जोधा को देखता था वुह उसे अपने पास रखता था।

पंद्रहवां पर्ब्ब।

और समूएल ने साऊल को यह भी कहा कि परमेश्वर ने मुझे भेजा कि तुझे अपने इसराएली लोगों पर राज्याभिषेक करूं सो अब परमेश्वर की बातें सुन॥ २। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि

मुझे चेत है जो कुछ कि अमालीक़ ने इसराएल से किया वे मार्ग में उन के लिये ढूके में क्योंकर लगे जब वे मिस्र से चढ़ आये॥ ३। अब तू जा और अमालीक़ को मार और सब कुछ जो उन का है सर्व्वथा नाश कर और उन्हें मत छोड़ परंतु क्या पुरुष और क्या स्त्री और क्या दूध पीवक और क्या बालक और क्या बैल और क्या भेड़ और क्या ऊंट और क्या गदहे लों सब को मार डाल॥ ४। और साऊल ने लोगों को एकट्ठा किया और तलाइम में दो लाख पैदल गिना और यहूदाह के दस सहस्र जन थे॥ ५। और साऊल अमालीक़ के एक नगर को आया और तराई में लड़ा॥ ६। और साऊल ने क़ैनियों को कहा कि निकल जाओ अमलीक़ियों में से उतरो न हो कि मैं उन के साथ तुम्हें नाश करूं क्योंकि तुम ने इसराएल के समस्त संतान पर जब वे मिस्र से चढ़ आये कृपा किई सो क़ैनी अमालीक़ियों में से निकल गये॥ ७। और साऊल ने अमालीक़ियों को हवीलः से लेके सूर लों जो मिस्र के साम्ने है मारा॥ ८। और अमालीक़ियों के राजा अगाग को जीता पकड़ा और सब लोगों को खड्ग की धार से सर्व्वथा नाश किया॥ ९। परंतु साऊल और लोगों ने अगाग को और अच्छी से अच्छी भेड़ों को और बैलों को और मोटे मोटे जीवधारियों को और मेम्नों को और सब अच्छी वस्तों को जीता रक्खा और उन्हें सर्व्वथा नाश न किया परंतु उन्हों ने हर एक वस्तु को जो तुच्छ और बुरी थी सर्व्वथा नाश किया॥ १०। तब परमेश्वर का यह बचन समूएल को पहुंचा॥ ११। मैं पछताता हूं कि साऊल को राजा किया क्योंकि वुह मेरे पीछे से फिर गया और मेरी आज्ञाओं को पूर्ण न किया और समूएल उदास हुआ और रात भर परमेश्वर के आगे चिल्लाता रहा॥ १२। और बिहान को बड़े तड़के समूएल उठा कि साऊल से भेंट करे और समूएल से कहा गया कि साऊल करमिल को आया और देखो कि उस ने अपने लिये एक स्मरण का चिन्ह खड़ा किया और फिरा और जिलजाल को उतर गया॥ १३। फिर समूएल साऊल पास गया और साऊल ने उसे कहा कि तू परमेश्वर का आशीषित है मैं ने परमेश्वर की आज्ञाओं को पूर्ण किया॥ १४। तब समूएल ने कहा परंतु यह भेड़ों का मिमियाना और बैलों का बमाना जो मैं

सुनता हूं सो कैसा है ॥ १५। और साऊल ने कहा कि वे अमालीकियों से ले आये हैं क्योंकि लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़ और बैल के बचा रक्खा है कि तेरे ईश्वर परमेश्वर के लिये बलि चढ़ावें और बचे हुओं के तो हम ने सर्वथा नाश किया है॥ १६। तब समूएल ने साऊल को कहा कि ठहर जा और जो कुछ परमेश्वर ने आज रात मुझ से कहा है मैं तुझ से कहूंगा वुह उसे बोला कि कहिये॥ १७। समूएल ने कहा कि जब तू अपनी दृष्टि में तुच्छ था तब क्या इसराएल की गोष्ठियों का प्रधान न हुआ और परमेश्वर ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक न किया॥ १८। और परमेश्वर ने तुझे यह कहके यात्रा को भेजा कि जा उन पापी अमालीकियों को सर्वथा नाश कर और उन से यहां लों लड़ाई कर कि वे मिट जायें॥ १९। सो तू ने किस लिये परमेश्वर का शब्द न माना परंतु लूट पर दौड़ा और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥ २०। तब साऊल ने समूएल को कहा कि हां मैं ने तो परमेश्वर के शब्द को माना है और जिस मार्ग में परमेश्वर ने मुझे भेजा चला हूं और अमालीकियों के राजा अगाग को ले आया हूं और अमालीकियों को सर्वथा नाश किया है॥ २१। पर लोगों ने लूट में भेड़ और बैल और जो अच्छे से अच्छे चाहिये था कि सर्वथा नाश किये जायें सो रख लिये जिसतें जिलजाल में परमेश्वर तेरे ईश्वर के लिये भेंट चढ़ावें॥ २२। और समूएल बोला कि क्या परमेश्वर होम की भेंटों और बलिदानों से ऐसा आनंद है जैसे परमेश्वर के शब्द के मान्ने से देखो मान्ना बलिदान से और सुन्ना मेढ़े की चिकनाई से उत्तम है॥ २३। क्योंकि फिर जाना टोना के पाप के तुल्य है ढिठाई और बुराई मूर्त्ति पूजा के समान सो जैसा तू ने परमेश्वर के बचन को त्याग किया है उस ने तुझे भी राज्य से त्याग किया है॥ २४। तब साऊल ने समूएल से कहा कि मैं ने पाप किया है क्योंकि मैं ने परमेश्वर की आज्ञा को और तेरी बातों को उलंघन किया इस कारण कि मैं ने लोगों से डर के उन के शब्द को माना॥ २५। सो मैं तेरी बिनती करता हूं कि मेरे पाप क्षमा कीजिये और मेरे साथ उलटा फिरिये जिसतें मैं परमेश्वर की सेवा करूं॥ २६। और समूएल ने साऊल से कहा कि मैं तेरे साथ न फिरूंगा क्योंकि तू ने परमेश्वर के बचन को त्याग किया है और परमेश्वर ने इसराएल पर राजा

होने से तुझे त्याग किया है॥ २७। और जब समूएल फिरा कि चला जाय तो उस ने उस के बस्त्र का खूंट पकड़ा और वुह फट गया॥ २८। तब समूएल ने उसे कहा कि परमेश्वर ने आज इसराएल के राज्य को तुझ से फाड़ा है और तेरे एक परोसी को दिया है जो तुझ से अच्छा है॥ २९। और जो इसराएल का बल है सो झूठ न बोलेगा और न पछतावेगा क्योंकि वुह मनुष्य नहीं कि वुह पछतावे॥ ३०। तब उस ने कहा कि मैं ने तो पाप किया है पर लोगों के प्राचीनों के और इसराएल के आगे मेरी प्रतिष्ठा कीजिये और मेरे साथ लौटिये जिसतें मैं परमेश्वर तेरे ईश्वर की सेवा करूं॥ ३१। तब समूएल साऊल के पीछे फिरा और साऊल ने परमेश्वर की सेवा किई॥ ३२। तब समूएल ने कहा कि अमालीकियों के राजा अगाग को इधर मुझ पास लाओ और अगाग निधड़क से उस पास आया और अगाग ने कहा कि निश्चय मृत्यु की कड़ुवाहट जाती रही॥ ३३। और समूएल ने कहा कि जैसा तेरी तलवार ने स्त्रियों को निर्बंश किया वैसा ही तेरी माता स्त्रियों में निर्बंश होगी और समूएल ने अगाग को जिलजाल में परमेश्वर के आगे टुकड़ा टुकड़ा किया॥ ३४। और समूएल रामात को गया और साऊल अपने घर जिबिआत को चढ़ गया॥ ३५। और समूएल अपने जीवन भर साऊल को देखने न गया तिसपर भी समूएल साऊल के कारण बिलाप करता रहा और परमेश्वर भी पछताया कि उस ने साऊल को इसराएल पर राजा किया॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

और परमेश्वर ने समूएल से कहा कि तू कब लों साऊल के कारण बिलाप करता रहेगा मैं ने तो उसे इसराएल पर राज्य करने से त्याग किया अपने सींग में तेल भर और जा मैं तुझे बैतलहमी यस्सी पास भेजता हूं क्योंकि मैं ने उस के बेटों में से एक को राजा ठहराया है॥ २। तब समूएल बोला मैं क्योंकर जाऊं यदि साऊल सुने तो मुझे मार ही डालेगा और परमेश्वर ने कहा कि एक बछिया अपने साथ ले जा और कह कि मैं पमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ाने आया हूं॥ ३। और बलिदान

चढ़ाने में यस्सी को बुला और मैं तुझे बताऊंगा कि तू क्या करेगा और जिस का नाम मैं तेरे आगे लेऊं तू उसे मेरे लिये अभिषेक कर॥ ४। और जो परमेश्वर ने उसे कहा समूएल ने किया और बैतलहम को आया तब नगर के प्राचीन उस के आने से कांप गये और बोले कि तू कुशल से आता है॥ ५। और वुह बोला कि कुशल से मैं परमेश्वर के लिये बलि करने आया हूं तुम आप को पवित्र करो और मेरे साथ बलि करने के लिये आओ और उस ने यस्सी को उस के बेटों सहित पवित्र किया और उन्हें बलि करने को बुलाया॥ ६। और ऐसा हुआ कि जब वे आये तो उस ने इलिअब पर दृष्टि किई और बोला कि निश्चय परमेश्वर का अभिषिक्त उस के आगे है॥ ७। परंतु परमेश्वर ने समूएल से कहा कि उस के स्वरूप पर और उस के डील की ऊंचाई पर दृष्टि न कर इस कारण कि मैं ने उसे नाह किया कि परमेश्वर मनुष्य के समान नहीं देखता क्योंकि मनुष्य बाहरी रूप देखता है परंतु परमेश्वर अंतःकरण पर दृष्टि करता है॥ ८। तब यस्सी ने अबिनदाब को बुलाया और उसे समूएल के आगे चलाया वुह बोला कि परमेश्वर ने इसे भी नहीं चुना॥ ९। फिर यस्सी ने सम्मः को आगे चलाया और वुह बोला कि परमेश्वर ने इसे भी नहीं चुना॥ १०। फिर यस्सी ने अपने सातों बेटों को समूएल के साम्ने किया सो समूएल ने यस्सी को कहा कि परमेश्वर ने इन्हें भी नहीं चुना॥ ११। और समूएल ने यस्सी से कहा कि तेरे सब बेटे येही हैं वुह बोला कि सब से छोटा रह गया है और देख वुह भेड़ चराता है सो समूएल ने यस्सी को कहा कि उसे भेज के मंगवा क्योंकि जब लों वुह यहां न आवे हम न बैठेंगे॥ १२। और वुह भेज के उसे भीतर लाया वुह लाल रङ्ग और सुंदर नेत्र देखने में अच्छा था तब परमेश्वर ने कहा कि उठ के उसे अभिषेक कर क्योंकि यही है॥ १३। तब समूएल ने तेल का सींग लिया और उसे उस के भाइयों के मध्य में अभिषेक किया और परमेश्वर का आत्मा उस दिन से आगे लों दाऊद पर उतरा और समूएल उठ के रामात को चला गया॥ १४। परंतु परमेश्वर का आत्मा साऊल से जाता रहा और परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे सताने लगा॥ १५। तब साऊल के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये अब एक दुष्ट आत्मा ईश्वर

की ओर से आप को सताता है॥ १६। सो अब हमारे प्रभु अपने सेवकों को जो आप के आगे हैं आज्ञा कीजिये कि एक जन ऐसा खोजें जो सारंगी बजाने में निपुण हो और यों होगा कि जब दुष्ट आत्मा ईश्वर से आप पर चढ़े तब वुह अपने हाथ से बजावेगा और आप अच्छे होंगे॥ १७। और साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि अब मेरे लिये अच्छा बजनिया ठहराओ और उसे मुझ पास लाओ॥ १८। तब उस के दासों में से एक ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने बैतलहमी यस्सी का एक बेटा देखा जो बजाने में निपुण है और वुह जन सामर्थी बीर है और वुह लड़ाक और बचन में चतुर और देखने में सुंदर है और परमेश्वर उस के साथ है॥ १९। तब साऊल ने यस्सी पास दूत भेज के कहा कि अपने बेटे दाऊद को जो भेड़ों के संग है मुझ पास भेज॥ २०। सो यस्सी ने एक गदहा रोटी लिई और एक कुप्पा मदिरा और बकरी का मेम्ना लिया और अपने बेटे दाऊद को दिया कि साऊल के लिये ले जाय॥ २१। तो दाऊद साऊल पास आया और उस के आगे खड़ा हुआ और उस ने उसे बहुत प्यार किया और वुह उस का अस्त्रधारी हुआ॥ २२। और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि कृपा करके दाऊद को मेरे आगे रहने दीजिये क्योंकि वुह मेरे मन में भाया है॥ २३। और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर से आत्मा साऊल पर चढ़ता था तब दाऊद सारंगी लेके हाथ से बजाता था और साऊल संतुष्ट होके अच्छा होता था और दुष्ट आत्मा उस पर से उतर जाता था।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

अब फ़िलिस्तियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को यहूदाह के शोकः में एकट्ठी किया और शोकः और अज़ीकः के मध्य दमिम के सिवाने में डेरा किया॥ २। और साऊल और इसराएल के मनुष्यों ने एकट्ठे होके ईला की तराई में डेरा किया और युद्ध के लिये फ़िलिस्तियों के सन्मुख पांती बांधी॥ ३। और फ़िलिस्ती एक ओर पहाड़ पर खड़े हुए और दूसरी ओर एक पहाड़ पर इसराएल और उन दोनों के मध्य में तराई थी॥ ४। और फ़िलिस्ती की सेना से एक महा बीर जो जञ्जत

का जुलिअत कहाता था जिस के डील की ऊंचाई छः हाथ थी॥ ५। और उस के सिर पर पीतल का एक टोप था और वुह झिलम पहिने ऊए था जो तौल में मन दो एक पीतल की थी॥ ६। और उस की दो पिंडुलियों पर पीतल के अस्त्र थे और उस के दोनों कांधों के मध्य पीतल की एक फरी थी॥ ७। और उस के भाले की छड़ ऐसी थी जैसे जोलाहे का लट्ठा और उस के भाले का फल सेर नव एक का था और एक जन ढाल लिये ऊए उस के आगे आगे चलता था॥ ८। और उस ने खड़े होके इसराएल की सेनाओं को ललकार के कहा कि तुम क्यों संग्राम के लिये निकले हो क्या मैं फ़िलिस्ती नहीं हूं और तुम साऊल के सेवक सो अपने में से एक जन को चुनो और वुह मेरा साम्ना करे॥ ९। यदि वुह मुझ से लड़ सके और मुझे मार डाले तो हम तुम्हारे सेवक होंगे पर यदि मैं उस पर प्रबल होके उसे मार डालूं तो तुम हमारे सेवक होगे और हमारी सेवा करोगे॥ १०। और फ़िलिस्ती बोला कि मैं आज के दिन इसराएल की सेनाओं को तुच्छ जानता हूं कोई जन मुझे देओ कि युद्ध करे॥ ११। जब साऊल और समस्त इसराएल ने उस फ़िलिस्ती की बातें सुनीं तब वे बिस्मित होके डर गये॥ १२। अब दाऊद बैतलहम यहूदाह के इफ़राती का पुत्र था जिस का नाम यस्सी था और उस के आठ बेटे थे और वुह जन साऊल के दिनों में लोगों में पुरनिया गिना जाता था॥ १३। और यस्सी के तीन बड़े बेटे थे जो लड़ाई में साऊल के पीछे ऊए और जो संग्राम में गये थे उन तीनों के ये नाम थे पहिलौंठा इलिअब और मंझिला अबिनदाब और लऊरा सम्मः॥ १४। और दाऊद सब से छोटा था और उस के तीनों बड़े बेटे साऊल के साथ साथ गये॥ १५। परंतु दाऊद साऊल से फिर के अपने पिता की भेड़ें बैतलहम में चराने गया था॥ १६। और वुह फ़िलिस्ती चालीस दिन लों सांझ बिहान आया करता था॥ १७। और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि अब एक ईफ़ा भर भूना और ये दस रोटी लेके छावनी को अपने भाइयों पास दौड़ जा॥ १८। और खोओं की इन दस चक्कियों को सहस्रों के प्रधानों पास ले जा और देख तेरे भाई कैसे हैं और उन का कुछ चिन्ह ला॥ १९। और उस समय साऊल और वे और सारे इसराएल के लोग ईला

की तराई में फ़िलिस्तियों से लड़ रहे थे॥ २०। और दाऊद भोर को तड़के उठा और भेड़ों को एक रखवाल को सोंप के जैसा यस्सी ने उसे कहा था लेके चला और मुरचे पर पहुंचा और उसी समय सेना लड़ाई के लिये ललकारती थी॥ २१। क्योंकि इसराएलियों और फ़िलिस्तियों ने अपनी अपनी सेना के साम्ने साम्ने पांती बांधे थे॥ २२। और दाऊद अपने पात्रों को रखवाल को सोंप के सेना को दौड़ गया और अपने भाइयों से कुशल पूछा॥ २३। और वुह उन से बातें करताही था कि देखो वुह महाबीर जअत का फ़िलिस्ती जिस का नाम जुलिअत था फ़िलिस्तियों की सेनों में से निकल आया और उन्हीं बातों के समान बोला और दाऊद ने सुना॥ २४। और इसराएल के सारे लोग उसे देख के उस के सन्मुख से भागे और निपट डर गये॥ २५। तब इसराएल के लोगों ने कहा कि तुम उस जन को देखते हो जो निकला है कि यह निश्चय इसराएल को तुच्छ करने को निकल आया है और यों होगा कि जो जन उसे मारेगा राजा उसे बहुत धन से धनमान करेगा और अपनी बेटी उसे देगा और उस के पिता के घराने को इसराएल में निर्बंध करेगा॥ २६। तब दाऊद ने अपने आस पास के लोगों से पूछा कि जो जन उस फ़िलिस्ती को मारेगा और इसराएल से कलंक को दूर करेगा उसे क्या मिलेगा क्योंकि यह अखतनः फ़िलिस्ती कौन है जो जीवते ईश्वर की सेना को तुच्छ समझे॥ २७। सो लोगों ने इस रीति से उत्तर देके उसे कहा जो इसे मारेगा उसे यह मिलेगा॥ २८। तब उस के बड़े भाई इलिअब ने उस की बात सुनी जो वुह लोगों से करता था और इलिअब का क्रोध दाऊद पर भड़का और वुह बोला कि तू इधर क्यों आया है और बन में उन थोड़ी सी भेड़ों को किस पास छोड़ा मैं तेरे घमंड और तेरे मन की नटखटी को जानता हूं क्योंकि तू संग्राम देखने को उतर आया है॥ २९। तब दाऊद बोला कि मैं ने क्या किया क्या कारण नहीं॥ ३०। और वुह वहां से दूसरी ओर गया और फिर वही बात कही तब लोगों ने उसे आगे के समान फेर उत्तर दिया॥ ३१। और जब उन बातों की जो दाऊद ने कहीं थीं चर्चा हुई तब साऊल लों संदेश पहुंचा और उस ने उसे लिया।

३२। और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस के कारण किसी का मन न घटे तेरा दास जाके उस फिलिस्ती से लड़ेगा॥ ३३। तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तुझ में यह सामर्थ्य नहीं कि उस फिलिस्ती से लड़े क्योंकि तू लड़का है और वुह लड़कपन से योद्धा है॥ ३४। तब दाऊद ने साऊल से कहा कि तेरा सेवक अपने पिता की भेड़ों की रखवाली करता था और एक सिंह और एक भालू निकला और झुंड में से एक मेम्ना ले गया॥ ३५। और मैं ने उस के पीछे निकल के उसे मारा और उसे उस के मुंह से छुड़ाया और जब वुह मुझ पर झपटा तब मैं ने उस की दाढ़ पकड़ के उसे मारा और नाश किया॥ ३६। तेरे सेवक ने उस सिंह और भालू दोनों को मार डाला फेर यह अखतनः फिलिस्ती उन में से एक के समान होगा कि उस ने जीवते ईश्वर की सेना को तुच्छ जाना॥ ३७। और दाऊद ने यह भी कहा कि जिस परमेश्वर ने मुझे सिंह के और भालू के पंजे से बचाया वही मुझे उस फिलिस्ती के हाथ से बचावेगा तब साऊल ने दाऊद से कहा कि जा और परमेश्वर तेरे साथ होवे॥ ३८। और साऊल ने अपना वस्त्र दाऊद को पहिनाया और पीतल का एक टोप उस के सिर पर रक्खा और उसे झिलम भी पहिनाई॥ ३९। और दाऊद ने अपनी तलवार झिलम पर लटकाई और जाने का मन किया क्योंकि उस ने उसे न जांचा था तब दाऊद ने साऊल से कहा कि इन से मैं नहीं जा सक्ता क्योंकि मैं ने इन्हें नहीं परखा तब दाऊद ने उन्हें उतार दिया॥ ४०। और उस ने अपना लट्ठ हाथ में लिया और नाले में से पांच चिकने पत्थर चुन लिये और उन्हें अपने गड़रिया के पात्र में अर्थात् झोले में रक्खा और अपना ढिलवांस अपने हाथ में लिया और उस फिलिस्ती की ओर बढ़ा॥ ४१। और फिलिस्ती चला और दाऊद के निकट आने लगा और जो जन उस की ढाल उठाता था सो उस के आगे आगे गया॥ ४२। और जब उस फिलिस्ती ने इधर उधर ताका तब दाऊद को देखा और उसे तुच्छ जाना क्योंकि वुह तरुण लाल और सुंदर रूप था॥ ४३। और फिलिस्ती ने दाऊद से कहा कि क्या मैं कुक्कर हूं जो तू लट्ठ लेके मुझ पास आता है और फिलिस्ती ने अपने देवतों के नाम से उसे धिक्कारा॥ ४४। और फिलिस्ती ने दाऊद से

कहा कि मुझ पास आ और मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों को और बनैले पशुओं को देऊंगा॥ ४५। तब दाऊद ने उस फिलिस्ती को कहा कि तू तलवार और बरछा और ढाल लेके मुझ पर आता है परंतु मैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम से जो इसराएल के सेनाओं का ईश्वर है जिस को तू ने निंदा किई है तुझ पास आता हूं॥ ४६। आज ही परमेश्वर तुझे मेरे हाथ में सौंप देगा और मैं तुझे मार लूंगा और तेरा सिर तुझ से अलग करूंगा और मैं आज फिलिस्तियों की सेना की लोथों को आकाश के पक्षियों को और बनैले पशुओं को देऊंगा जिसतें समस्त पृथिवी जाने कि इसराएल में एक ईश्वर है॥ ४७। और यह समस्त मंडली जानेगी कि परमेश्वर तलवार और भाले से नहीं बचाता क्योंकि संग्राम परमेश्वर का है और वही तुम्हें हमारे हाथों में सौंप देगा॥ ४८। और ऐसा हुआ कि जब फिलिस्ती उठा और दाऊद पास पहुंचने को आगे बढ़ा तब दाऊद ने चालाकी किई और सेना की ओर फिलिस्ती पर पहुंचने दौड़ा॥ ४९। और दाऊद ने अपने थैले में हाथ डाला और उस में से एक पत्थर लिया और ढेलवांस से उस फिलिस्ती के माथे पर मारा और वुह पत्थर उस के माथे में गड़ गया और वुह भूमि पर मूंह के बल गिरा॥ ५०। सो दाऊद ने एक पत्थर और ढेलवांस से उस फिलिस्ती को जीता और उसे मारा और घात किया परंतु दाऊद के हाथ में तलवार न थी॥ ५१। इस लिये दाऊद लपक के फिलिस्ती के निकट आया और उस की तलवार लेके काठी से खींची और उसे नाश किया और उसी से उस का सिर उतारा और जब फिलिस्तियों ने देखा कि हमारा सूरमा मारा गया तब वे भाग निकले॥ ५२। और इसराएल के और यहूदाह के लोग उठे और ललकारे और अक्रून के फाटक लों और तराई लों फिलिस्तियों को रगेदा और मारा और फिलिस्तियों के घायल सगरीम अर्थात् जअत और अक्रून लों जूझ गये॥ ५३। तब इसराएल के संतान फिलिस्तियों के खदेने से फिर आये और उन के तंबुओं को लूट लिया॥ ५४। और दाऊद उस फिलिस्ती का सिर लेके यरूसलम में आया परंतु अपने हथियारों को तंबू में रक्खा॥ ५५। और जब साऊल ने

दाऊद को फ़िलिस्ती के साम्ने होते देखा तब उस ने सेना के प्रधान अबिनेयिर से पूछा कि हे अबिनेयिर यह गभरू किस का बेटा है अबिनेयिर बोला कि हे राजा आप के जीवन सों मैं नहीं जानता॥ ५६। राजा ने कहा कि बूझ यह गभरू किस का लड़का है॥ ५७। और जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को मार के फिरा तब अबिनेयिर उसे राजा पास ले गया और फ़िलिस्ती का सिर उस के हाथ में था॥ ५८। तब साऊल ने उसे पूछा कि तू किस का लड़का और दाऊद ने उत्तर दिया कि मैं तेरे सेवक बैतलहमी यस्सी का लड़का हूं॥

१८ अठारहवां पर्ब्ब॥

और ऐसा हुआ कि जब वुह साऊल से बात कह चुका तब यहूनतन का मन दाऊद के मन से बंध गया और यहूनतन ने उसे अपने ही प्राण के तुल्य प्रेम किया॥ २। और साऊल ने तब से उसे अपने साथ रक्खा और फिर उस के पिता के घर जाने न दिया॥ ३। तब यहूनतन और दाऊद ने आपुस में बाचा बांधी क्योंकि वुह उसे अपने प्राण के तुल्य प्रेम करता था॥ ४। तब यहूनतन ने अपना बागा और अपने वस्त्र उतारे और अपनी तलवार और धनुष और अपने पटुका लों दाऊद को दिया॥ ५। और जहां कहीं साऊल उसे भेजता था दाऊद जाया करता था और भाग्यमान होता था और साऊल ने उसे जोधाओं का प्रधान किया और वुह सारे लोगों की दृष्टि में और साऊल के समस्त सेवकों की दृष्टि में भी ग्राह्य हुआ॥ ६। और उन के आते हुए ऐसा हुआ कि जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को मार के फिर आया तब सारी इसराएली स्त्रियां नगरों से गातीं नाचतीं आनंद से तबले और चितारे लेके साऊल राजा से भेंट करने को निकलीं॥ ७। उन के बजाने से स्त्रियां उत्तर देके कहती थीं कि साऊल ने अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को॥ ८। और साऊल अति क्रोधित हुआ और वुह कहावत उस की दृष्टि में बुरी लगी और वुह बोला कि उन्हों ने दाऊद के लिये दस सहस्रों को ठहराया और मेरे लिये सहस्रों को अब केवल राज्य भर उसे पाना है॥ ९। और साऊल ने उसी दिन से दाऊद

को तक रक्खा॥ १०। और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि ईश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा साऊल पर उतरा और वुह अपने घर में भविष्य कहने लगा और दाऊद आगे की नाईं हाथ से बजाने लगा और साऊल के हाथ में एक सांग थी॥ ११। तब साऊल ने सांग फेंकी क्योंकि उस ने कहा कि मैं दाऊद को भीत ही में गोदूंगा पर दाऊद दो बार उस के आगे से बच निकला॥

१२। और साऊल दाऊद से डरा करता था इस कारण कि परमेश्वर उस के साथ था और साऊल से जाता रहा॥ १३। इस लिये साऊल ने उसे अपने पास से अलग किया और सहस्र का प्रधान किया और वुह लोगों के आगे आया जाया करता था॥ १४। और दाऊद अपने सारे मार्ग में बुद्धिमान था और परमेश्वर उस के साथ था॥ १५। इस लिये जब साऊल ने देखा कि वुह अति बुद्धिमान है तब वुह उस्से डरता था॥ १६। पर सारे इसराएल और यहूदाह दाऊद को चाहते थे इस लिये कि वुह उन के आगे आया जाया करता था॥

१७। तब साऊल ने दाऊद को कहा कि मेरी बड़ी बेटी मैरब को देख मैं उसे तुझे बियाह देऊंगा केवल तू मेरे लिये बली पुत्र हो और परमेश्वर का संग्राम किया कर क्योंकि साऊल ने कहा कि मेरा हाथ उस पर न पड़े परंतु फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े॥ १८। तब दाऊद ने साऊल से कहा कि मैं कौन और मेरा प्राण क्या और इसराएल में मेरे पिता का घराना क्या जो मैं राजा का जवांई हूं॥ १९। परंतु यों हुआ कि जब साऊल की बेटी मैरब को दाऊद के देने का समय आया तब वुह महूलती अद्रिएल से बियाही गई॥ २०। और साऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखती थी और उन्हों ने साऊल से कहा और वुह उस की दृष्टि में अच्छी लगी॥ २१। तब साऊल ने कहा कि मैं उसे उस को देऊंगा जिसतें वुह उस के लिये फंदा होवे और जिसतें फ़िलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े इस लिये साऊल ने दाऊद से कहा कि तू आज इन दोनों में से मेरा जवांई होगा॥ २२। और साऊल ने अपने सेवकों को आज्ञा किई कि दाऊद से गुप्त में बात चीत करो और कहो कि देख राजा तुझ

से प्रसन्न है और उस के सारे सेवक तुझे चाहते हैं और अब तू राजा का जवांई हो॥ २३। सो साऊल के सेवकों ने ये बातें दाऊद से कह सुनाईं दाऊद बोला कि तुम राजा का जवांई होना छोटा समझते हो मैं तो कंगाल होके तुच्छ गिना जाता हूं॥ २४। और साऊल के सेवकों ने इन बातों के समान उसे कहा॥ २५। तब साऊल ने कहा कि तुम दाऊद से यों कहियो कि राजा कुछ दाएजा नहीं चाहता परंतु केवल एक सो फ़िलिस्तियों की खलड़ियां जिसतें राजा के बैरियों से पलटा लिया जाय परंतु साऊल ने चाहा कि दाऊद को फ़िलिस्तियों से मरवा डाले॥ २६। और जब उस के सेवकों ने इन बातों को दाऊद से कहा तब राजा का जवांई होना दाऊद को अच्छा लगा और दिन बीत न गये थे॥ २७। और दाऊद उठा और अपने लोगों को लेके गया और दो सौ फ़िलिस्ती को मारा और दाऊद उन की खलड़ियों को लाया और उन्हों ने उन्हें राजा के आगे पूरा गिन के धर दिया जिसतें वुह राजा का जवांई होवे और साऊल ने अपनी बेटी मीकल उसे बियाह दिई॥ २८। और जब साऊल ने देखा और जाना कि परमेश्वर दाऊद के साथ है और साऊल की बेटी मीकल उस्से प्रीति रखती है॥ २९। तब साऊल दाऊद से अधिक डर गया और साऊल सदा दाऊद का बैरी रहा॥ ३०। तब फ़िलिस्तियों के प्रधान निकले और उन के निकलने के पीछे यों हुआ कि दाऊद साऊल के सारे सेवकों से अधिक चौकसी करता था यहां लों कि उस का बड़ा नाम हुआ।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

तब साऊल ने अपने बेटे यहूनतन से और अपने समस्त सेवकों से कहा कि दाऊद को मार लेओ॥ २। परंतु साऊल का बेटा यहूनतन दाऊद से अति प्रसन्न था और यहूनतन दाऊद से कहके बोला कि मेरा पिता तुझे बधन करने चाहता है सो अब बिहान लों अपनी चौकसी करियो और गुप्त स्थान में छिप रहियो॥ ३। और मैं जाके चौगान में जहां तू होगा अपने पिता के पास खड़ा हूंगा और अपने पिता से तेरी चर्चा करूंगा और जो मैं देखूंगा सो तुझे कह देऊंगा॥

४। और यहूनतन ने दाऊद के विषय में अपने पिता साऊल से अच्छी कही कि राजा अपने दास दाऊद से बुराई न कीजिये इस कारण कि उस ने आप का कुछ अपराध नहीं किया और इस कारण कि उस के कर्म्म आप के लिये अति उत्तम हैं॥ ५। क्योंकि उस ने अपना प्राण हथेली पर रक्खा और उस फिलिस्ती को घात किया और परमेश्वर ने सारे इसराएल के लिये बड़ी मुक्ति दिई और आप ने देखा और आनंद हुए सो आप किस लिये निर्दोष से बुराई किया चाहते हैं और अकारण दाऊद को मारा चाहते हैं॥ ६। और साऊल ने यहूनतन की बात सुनी और साऊल ने किरिया खाई कि ईश्वर के जीवन सों दाऊद मारा न जायगा॥ ७। और यहूनतन ने दाऊद को बुलाया और सारी बातें उसे बताईं और यहूनतन दाऊद को साऊल पास लाया और कल परसों के समान फेर उस के पास रहने लगा॥ ८। और फिर लड़ाई हुई और दाऊद निकला और फिलिस्तियों से लड़ा और बड़ी मार से उन्हें मारा और वे उस के आगे से भागे॥ ९। और ज्यों साऊल अपने घर में एक सांग हाथ में लिये हुए बैठा था परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा उस पर उतरा और दाऊद हाथ से बजा रहा था॥ १०। और साऊल ने चाहा कि दाऊद को भीत में सांग से गोद देवे परंतु दाऊद साऊल के आगे से अलग हो गया और सांग भीत में जा लगी और दाऊद भाग के उस रात बच गया॥ ११। तब साऊल ने दाऊद के घर पर दूतों को भेजा कि उसे अगोरें और बिहान को उसे मार डालें तब दाऊद की पत्नी मीकल यह कहके उसे बोली कि यदि आज रात तू अपना प्राण न बचावे तो बिहान को मारा जायगा॥

१२। तब मीकल ने खिड़की में से दाऊद को उतार दिया और वुह भाग के बच गया॥ १३। और मीकल ने एक पुतला लेके बिछौने पर रक्खा और बकरियों के रोम की तकिया उस के सिर तले रक्खी और कपड़ा से ढांप दिया॥ १४। और जब साऊल ने दाऊद को पकड़ने को दूत भेजे तब वुह बोली कि वुह रोगी है॥ १५। और साऊल ने यह कहके दूतों को दाऊद को देखने भेजा कि उसे खाट सहित मुझ

पास लाओ जिसतें मैं उसे मार डालूं॥ १६। और जब दूत भीतर आये तब क्या देखते हैं कि बिछौने पर एक पुतला पड़ा है और उस के सिर तले बकरियों के रोम की तकिया है॥ १७। तब साऊल ने मीकल से कहा कि तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया और मेरे बैरी को निकाल दिया और वुह बच गया सो मीकल ने साऊल को उत्तर दिया कि उस ने मुझे कहा कि मुझे जाने दे नहीं तो मैं तुझे मार डालूंगा।

१८। और दाऊद भागा और बच रहा और रामात में समूएल पास गया और जो कुछ कि साऊल ने उसे किया था सब उसे कहा तब वुह और समूएल दोनों नायूत में जा रहे॥ १९। और साऊल को यह कहा गया कि देख दाऊद रामात में नायूत में है॥ २०। और साऊल ने दूतों को भेजा कि दाऊद को पकड़ें और जब उन्हों ने देखा कि आगमज्ञानियों की जथा भविष्य कहती है और समूएल ठहराये हुए के समान उन में खड़ा है तब ईश्वर का आत्मा साऊल के दूतों पर उतरा और वे भी भविष्य कहने लगे॥ २१। और जब साऊल को कहा गया उस ने और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे तब साऊल ने तीसरे बार और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे॥ २२। तब वुह आप रामात को गया और उस बड़े कूए पर जो सैकू में है पहुंचा और उस ने पूछा कि समूएल और दाऊद कहां हैं एक ने कहा कि देख वे नायूत में हैं॥ २३। तब वुह रामात नायूत की ओर चला और ईश्वर का आत्मा उस पर भी पड़ा और वुह बढ़ा गया और रामात के नायूत लों भविष्य कहता गया॥ २४। और उस ने भी अपने कपड़े उतार फेंके और समूएल के आगे उस के समान भविष्य कहा और उस रात दिन भर नंगा पड़ा रहा इसी लिये यह कहावत हुई कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है।

२० बीसवां पर्ब्ब॥

तब दाऊद नायूत रामात से भाग के यहूनतन पास आया और उसे कहा कि मैं ने क्या किया मेरा क्या अपराध है मैं ने तेरे पिता का कौन सा पाप किया है जो वुह मेरे प्राण का गांहक है॥ २। और वुह

बोला कि ऐसा न होवे तू मारा न जायगा देख मेरा पिता बिना मुझ पर प्रगट किये कोई छोटी बड़ी बात न करेगा और यह बात किस कारण से मेरा पिता मुझ से छिपावे यह नहीं॥ ३। तब दाऊद ने फिर किरिया खाके कहा कि तेरा पिता निश्चय जानता है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और वृह कहता है कि यहूनतन यह न जाने न हो कि वुह शोकित हो परंतु परमेश्वर सें और तेरे जीवन सें मुझ में और मृत्यु में केवल डग भर का अन्तर है॥ ४। तब यहूनतन ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जी चाहे मैं तेरे लिये करूंगा॥ ५। और दाऊद ने यहूनतन से कहा कि देख कल अमावास्या है और मुझे उचित है कि राजा के साथ भोजन करूं सो मुझे जाने दीजिये कि मैं तीसरी सांझ लों खेत में जा छिपूं॥ ६। यदि तेरा पिता मेरी खोज करे तो कहियो कि दाऊद यत्न से मुझे पूछ के अपने नगर बैतलहम को दौड़ गया क्योंकि समस्त घराने के लिये बरसयन का बलिदान है॥ ७। यदि वुह यों बोले कि अच्छा तो तेरे सेवक के लिये कुशल है परंतु यदि वुह अति क्रोध करे तो निश्चय जानियो कि उस के मन में बुराई है॥ ८। इस कारण अपने सेवक पर दया से व्यवहार कीजियो क्योंकि तू अपने दास को अपने साथ परमेश्वर की वाचा में लाया है तथापि यदि मुझ में अपराध होवे तो तू मुझे बधन कर किस कारण मुझे अपने पिता पास ले जायगा॥ ९। तब यहूनतन ने कहा कि तुझ से दूर होवे क्योंकि यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने ठाना है कि तेरी बुराई करे तो क्या मैं तुझे न बताता॥ १०। फिर दाऊद ने यहूनतन से कहा कि कौन मुझे कहेगा अथवा क्या जाने तेरा पिता तुझे घुरक के कहे॥ ११। तब यहूनतन ने दाऊद से कहा कि आ खेत में चलें सो वे दोनों खेत को गये॥ १२। और यहूनतन ने दाऊद से कहा कि जब मैं कल अथवा परसों अपने पिता को बूझ लेऊं और देखों कि दाऊद के विषय में भला है और भेज के तुझे न बताऊं हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर॥ १३। तो परमेश्वर ऐसा ही और इस्से अधिक यहूनतन से करे और यदि तेरी बुराई करने को मेरे पिता की इच्छा होवे तो मैं तुझे बताऊंगा और तुझे बिदा करूंगा कि तू कुशल से चला जाय और जैसा परमेश्वर मेरे पिता के साथ ऊआ

है वैसा तेरे साथ होवे॥ १४। और न केवल मेरे जीवन लों परमेश्वर की कृपा मुझे न दिखाइयो जिसतें मैं न मरूं॥ १५। परंतु जब परमेश्वर दाऊद के हर एक शत्रु को पृथिवी पर से नाश करे तो मेरे घरानों पर से भी अनुग्रह उठा न लीजियो॥ १६। सो यहूनतन ने दाऊद के घराने से बाचा बांधी और कहा कि परमेश्वर दाऊद के शत्रुन के हाथ से पलटा लेवे॥ १७। और यहूनतन ने दाऊद से फिर किरिया खिलाई इस लिये कि वुह उसे अपने प्राण ही के तुल्य प्रेम रखता था॥ १८। तब यहूनतन ने दाऊद से कहा कि कल अमावास्या और तेरी खोज होगी इस कारण कि तेरा आसन सूना रहेगा॥ १९। और जब तू तीन दिन अलग रहे तब तू शीघ्र उतर के उसी स्थान में जाइयो जहां तू ने आप को कार्य्य के दिन छिपाया था और तू असल के चटान पास रहियो॥ २०। और मैं उस अलंग तीन बाण मारूंगा जैसा कि चिन्ह मारता हूं॥ २१। और देख मैं यह कहके एक छोकरे को भेजूंगा कि जा बाणों को खोज यदि मैं निश्चय छोकरे को कहूं कि देख बाण तेरे इस अलंग हैं उन्हें ले तब निकल आइयो क्योंकि परमेश्वर के जीवन सों तेरे लिये कुशल है और कुछ नहीं॥ २२। पर यदि मैं उस तरुण से कहूं कि देख बाण तेरे आगे हैं तब तू मार्ग लीजियो क्योंकि परमेश्वर ने तुझे बिदा किया है॥ २३। रही वुह बात जो आपुस में ठहराई है सो देख परमेश्वर सदा मेरे और तेरे मध्य में है॥ २४। सो दाऊद खेत में जा छिपा और जब अमावास्या हुई तब राजा भोजन पर बैठा॥ २५। और राजा अपने व्यवहार के समान भीत के लग अपने आसन पर बैठा और यहूनतन उठा और अबिनैयिर साऊल की एक अलंग में बैठा था और दाऊद का स्थान सूना था॥ २६। तथापि उस दिन साऊल ने कुछ न कहा क्योंकि उस ने समझा था कि उस पर कुछ बीता है वुह अपवित्र होगा निश्चय वुह अपावन होगा॥ २७। और बिहान को मास की दूसरी तिथि को ऐसा हुआ कि दाऊद का स्थान सूना रहा तब साऊल ने अपने बेटे यहूनतन से कहा कि किस कारण यस्सी का बेटा कल और आज भोजन को नहीं आया है॥ २८। तब यहूनतन ने साऊल को उत्तर दिया कि दाऊद मुझ से पूछ के बैतलहम को गया॥

२९। और उस ने कहा कि मुझे जाने दे कि नगर में हमारे घराने में बलि है और मेरे भाई ने मुझे बुलाया है यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखूं इस लिये वुह राजा के भोजन पर नहीं आता॥ ३०। तब साऊल का कोप यहूनतन पर भड़का और उस ने उसे कहा कि हे ढीठ और दंगइत के पुत्र क्या मैं नहीं जानता कि तू ने अपनी लज्जा के लिये और अपनी माता की नगापन की लज्जा के लिये यस्सी के बेटे को चुना है॥ ३१। क्योंकि जब लों यस्सी का बेटा भूमि पर जीता है तब लों तू और तेरा राज्य स्थिर न होगा सो अब भेज के उसे मुझ पास ला क्योंकि वुह निश्चय मारा जायगा॥ ३२। तब यहूनतन ने अपने पिता को उत्तर देके कहा कि वुह किस कारण मारा जायगा उस ने क्या किया है॥ ३३। तब साऊल ने मारने को उस की और सांग फेंकी उस्से यहूनतन को निश्चय हुआ कि उस के पिता ने दाऊद के मारने को ठाना है॥ ३४। सो यहूनतन बहुत रिसिया के मंच से उठ गया और मास की दूसरी तिथि में भोजन न किया क्योंकि वुह दाऊद के लिये निपट उदास हुआ क्योंकि उस के पिता ने उसे लज्जित किया॥ ३५। और बिहान को यहूनतन उसी समय जो दाऊद से ठहराया था खेत को गया और एक छोकरा उस के साथ था॥ ३६। और उस ने उसे आज्ञा किई कि दौड़ और जा बाण मैं चलाता हूं उन्हें ढूंढ़ और ज्योंहीं वुह दौड़ा त्योंहीं एक बाण उस के परे मारा॥ ३७। और जब वुह छोकरा उस स्थान में पहुंचा जहां यहूनतन ने बाण मारा था तब यहूनतन ने छोकरे को पुकार के कहा कि क्या वुह बाण तुझ से परे नहीं॥ ३८। और यहूनतन ने छोकरे को पुकारा कि चटक कर और ठहर मत सो यहूनतन के छोकरे ने बाणों को एकट्ठा किया और अपने स्वामी पास आया॥ ३९। परंतु उस छोकरे ने कुछ न जाना केवल दाऊद और यहूनतन उस का भेद जानते थे॥ ४०। फिर यहूनतन ने अपने हथियार उस छोकरे को दिये और कहा कि नगर में ले जा॥ ४१। छोकरे के जाने के पीछे दाऊद दक्खिन की ओर से निकला और भूमि पर औंधे मुंह गिरा और तीन बार दंडवत किई और उन्हों ने आपुस में एक दूसरे को

चूमा और परस्पर यहां लों बिलाप किये कि दाऊद ने जीता॥ ४२। और यहूनतन ने दाऊद को कहा कि कुशल से चला जा और उस बाचा पर जो हम ने किरिया खाके आपस में किई है मेरे तेरे मध्य में और हमारे बंश के मध्य में सदा लों परमेश्वर साक्षी होवे सो वुह उठ के चला गया और यहूनतन नगर में आया॥

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

तब दाऊद नूब को अख़िमलिक याजक पास आया और अख़िमलिक दाऊद की भेंट करने से डरा और बोला कि तू क्यों अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं॥ २। और दाऊद ने अख़िमलिक याजक से कहा कि राजा ने मुझे एक काम को भेजा है और कहा है कि यह काम जो मैं ने तुझे कहा है किसी को मत जनाइयो और मैं ने सेवकों को अमुक स्थान को भेज दिया है॥ ३। सो अब तेरे हाथ तले क्या है मुझे पांच रोटी अथवा जो कुछ धरा हो सो मेरे हाथ में दीजिये॥ ४। और याजक ने दाऊद को कहा कि मेरे हाथ तले सामान्य रोटी नहीं परंतु पवित्र रोटी है यदि तरुण लोग स्त्रियों से अलग रहे हों॥ ५। तब दाऊद ने उत्तर दे के याजक को कहा कि निश्चय तीन दिन हुए होंगे जब से मैं निकला हूं स्त्री हम से अलग है और तरुणों के पात्र पवित्र हैं और यद्यपि रोटी आज पात्र में पवित्र किई गई हो तथापि सामान्य के तुल्य है॥ ६। सो याजक ने पवित्र किई गई रोटी उसे दिई क्योंकि भेंट की रोटी को छोड़ वहां कोई रोटी न थी जो परमेश्वर के आगे से उठाई गई थी जिसतें उस की संती वहां ताती रोटी रक्खी जावे॥ ७। अब उस दीन साऊल के सेवकों में से एक जन अदूमी परमेश्वर के आगे रोका गया था जिस का नाम दोयेग था वुह साऊल के अहीरों का प्रधान था॥ ८। फिर दाऊद ने अख़िमलिक से पूछा कि यहां तेरे हाथ तले कोई भाला अथवा खड्ग तो नहीं क्योंकि मैं अपनी तलवार अथवा हथियार साथ नहीं लाया हूं इस कारण कि राजा के काम की शीघ्रता थी॥ ९। तब याजक ने कहा कि फ़िलिस्ती जुलिअत का खड्ग जिसे तू ने ईला की तराई में मारा एक कपड़े में लपेटा हुआ अफूद के पीछे धरा है यदि तू उसे लिया चाहे तो

ले क्योंकि उसे छोड़ यहां दूसरा नहीं तब दाऊद बोला कि उस के तुल्य दूसरा नहीं वही मुझे दे।

१०। और दाऊद उठा और साऊल के सन्मुख से उसी दिन भागा चला गया और जअत के राजा अकीस पास आया॥ ११। तब अकीस के सेवकों ने उसे कहा कि क्या यह दाऊद उस देश का राजा नहीं और क्या यह वही नहीं जिस के बिषय में वे आपस में गा गाके और नाच नाचके कहती थीं कि साऊल ने अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को॥ १२। और दाऊद ने ये बातें अपने मन में जुगा रक्खीं और जअत के राजा अकीस से अति डरा॥ १३। तब उस ने उन के आगे अपनी चाल पलट डाली और उन में आप को बौड़हा बनाया और फाटक के द्वारों पर लकीरें खींचने लगा और अपनी लार को दाढ़ी में बहने दिया॥ १४। तब अकीस ने अपने सेवकों से कहा कि लेओ यह जन तो सिड़ी है तुम उसे मुझ पास क्यों लाये॥ १५। क्या मुझे सिड़ी का प्रयोजन है कि तुम इसे मुझ पास लाये कि सिड़ीपन करे क्या यह मेरे घर में आवेगा।

२२ बाईसवां पर्ब्ब॥

इस लिये दाऊद वहां से निकल के भागा और अदूलाम की कंदला में गया और उस के भाई और उस के पिता का सारा घराना यह सुन के उस पास वहां गये॥ २। और हर एक दुःखी और ऋणी और उदासी उस के पास एकट्ठे ज़ए और वुह उन का प्रधान ज़आ और उस के साथ चार सौ मनुष्य के लगभग हो गये॥ ३। और वहां से दाऊद मोअब के मिसफा को गया और मोअब के राजा से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मेरे माता पिता निकल के आप के पास रहें जब लों मैं जानों कि ईश्वर मेरे लिये क्या करता है॥ ४। और वुह उन्हें मोअब के राजा के आगे लाया और जब लों दाऊद ने अपने तईं दृढ़ स्थानों में छिपाया था वे उसी के साथ रहे॥ ५। तब जद आगमज्ञानी ने दाऊद को कहा कि दृढ़ स्थानों में मत रह यहूदाह के देश को जा तब दाऊद चला और हारित के बन में पज़ंचा॥ ६। और जब

साऊल ने सुना कि दाऊद दिखाई दिया और लोग उस के साथ हैं [अब साऊल उस समय रामात के जिबअः में एक कुंज के नीचे अपने हाथ में भाला लिये था और उस के सारे दास उस के आस पास खड़े थे]॥ ७। तब साऊल ने अपने आस पास के सेवकों से कहा कि सुनो हे बिनयमीनो क्या यस्सी का बेटा तुम्में से हर एक को खेत और दाख की बारी देगा और तुम सब को सहस्रों और सैकड़ों का प्रधान करेगा॥ ८। जो तुम सब ने मेरे बिरुद्ध परामर्श किया है और किसी ने मुझे नहीं सुनाया कि मेरे बेटे ने यस्सी के बेटे से बाचा बांधी है और तुम्में कोई नहीं जो मेरे लिये शोक करे अथवा मुझे संदेश देवे कि मेरे बेटे ने मेरे सेवक को उभारा है कि ढके में रहे जैसा आज के दिन है॥ ९। तब अदूमी दोयेग ने जो साऊल के सेवकों का प्रधान था यों कहा कि मैं ने यस्सी के बेटे को नूब में अख़ितूब के बेटे अख़िमलिक पास देखा है॥ १०। और उस ने उस के लिये परमेश्वर से बूझा और उसे भोजन दिया और फ़िलिस्ती जुलिअत का खड्ग उसे दिया॥ ११। तब राजा ने अख़ितूब के बेटे अख़िमलिक याजक को और उस के पिता के सारे घराने और याजकों को जो नूब में थे बुला भेजा और वे सब के सब राजा पास आये॥ १२। और साऊल ने कहा कि हे अख़ितूब के बेटे सुन वुह बोला मेरे प्रभु मैं हूं॥ १३। और साऊल ने उसे कहा कि तू ने मेरे बिरुद्ध पर यस्सी के बेटे के साथ क्यों एक मता किई और तू ने उसे रोटी और खड्ग दिया और उस के लिये परमेश्वर से बूझा जिसतें वुह मेरे बिरोध में उठे और घात में लगे जैसा कि आज के दिन है॥ १४। तब अख़िमलिक ने राजा को उत्तर देके कहा कि आप के सारे सेवकों में दाऊद सा बिश्वस्त कौन है जो राजा का जवाई और आज्ञापालक है और आप के घर में प्रतिष्ठित है॥ १५। क्या मैं ने उस के लिये परमेश्वर से बूझा यह मुझ से परे होवे राजा अपने सेवक पर और उस के पिता के सारे घराने पर यह दोष न लगावें क्योंकि आप का सेवक इन बातों में से घट बढ़ नहीं जानता॥ १६। तब राजा बोला अख़िमलिक तू और तेरे पिता का सारा घराना निश्चय मारा जायगा॥ १७। फिर राजा ने उन पादातों को जो पास खड़े थे आज्ञा

फिरे कि फिरे। और परमेश्वर के याजकों को मार डालो इस कारण कि इन के हाथ भी दाऊद से मिले हुए हैं और उन्हों ने जाना कि वुह भागा है और मुझे संदेश न दिया परंतु राजा के सेवकों ने परमेश्वर के याजकों पर हाथ न बढ़ाया॥ १८। तब राजा ने दोयग को कहा कि तू फिर और उन याजकों को घात कर सो अदूमी दोयग फिरा और याजकों पर लपका उस दिन उस ने पचासी मनुष्यों को जो सूती अफूद पहिनते थे घात किया॥ १९। और उस ने याजकों के नगर नब के पुरुषों और स्त्रियों और लड़कों और दूध पीवकों को और बैलों और गदहों और भेड़ों को तलवार की धार से घात किया॥ २०। और अखतूब के बेटे अखिमलिक के बेटों में से एक जन जिस का नाम अबियतर था बच निकला और दाऊद के पीछे भागा॥ २१। और अबियतर ने दाऊद को संदेश दिया कि साऊल ने परमेश्वर के याजकों को मार डाला॥ २२। और दाऊद ने अबियतर को कहा कि जिस दिन अदूमी दोयग वहां था मैं ने उसी दिन जाना था कि वुह निश्चय साऊल को कहेगा मैं तेरे पिता के सारे घराने के मारे जाने का कारण हुआ॥ २३। सो तू मेरे साथ रह और मत डर क्योंकि जो तेरे प्राण का गांहक है सो मेरे प्राण का गांहक है परंतु मेरे पास बचा रह।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

तब उन्हों ने यह कहके दाऊद को संदेश दिया कि देख फिलिस्ती कईलः से लड़ते हैं और खलिहानों को लूटते हैं॥ २। इस लिये दाऊद ने परमेश्वर से यह कहके बूझा कि मैं जाऊं और उन फ़िलिस्तियों को मारूं और परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि जा फ़िलिस्तियों को मार और कईलः को बचा॥ ३। और दाऊद के मनुष्यों ने उसे कहा कि देख हम तो यहूदाह में होते हुए डरते हैं तो कितना अधिक कईलः में जाके फ़िलिस्तियों की सेनाओं का साम्ना करें॥ ४। तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर बूझा और परमेश्वर ने उत्तर देके कहा कि उठ कईलः को उतर जा क्योंकि मैं फ़िलिस्तियों को तेरे हाथ में सौंपूंगा॥ ५। सो दाऊद और उस के लोग कईलः को गये और फ़िलिस्तियों से लड़े और

उन के ढोर ले आये और उन्हें बड़ी मार से मारा यों दाऊद ने क़ओील: के बासियों को बचाया॥ ६। और ऐसा हुआ कि जब अख़िमलिक का बेटा अबियतर भाग के क़ओील: में दाऊद पास गया तब उस के हाथ में एक अफ़ूद था॥ ७। और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद क़ओील: में आया और साऊल बोला कि ईश्वर ने उसे मेरे हाथ में सौंप दिया क्योंकि वुह ऐसे नगर में जिस में फाटक और अड़ंगे हैं पहुंच के बंद हो गया॥ ८। और साऊल ने समस्त लोगों को युद्ध के लिये एकट्ठा किया कि क़ओील: में उतर के दाऊद को और उस के लोगों को घेर लेवें॥ ९। और दाऊद ने जाना कि साऊल चाहता है कि चुपके से मेरी बुराई करे तब उस ने अबियतर याजक से कहा कि अफ़ूद मुझ पास ला॥ १०॥ तब दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे सेवक ने निश्चय सुना है कि साऊल का बिचार है कि क़ओील: में आके मेरे कारण नगर को नष्ट करे॥ ११। क्या क़ओील: के लोग मुझे उस के हाथ में सौंप देंगे क्या जैसा तेरे दास ने सुना है साऊल उतर आवेगा हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने सेवक को बता तब परमेश्वर ने कहा कि वुह उतर आवेगा॥ १२। तब दाऊद ने कहा क्या क़ओील: के लोग मुझे और मेरे लोगों को साऊल की बंधुआई में सौंप देंगे और परमेश्वर ने कहा कि वे सौंप देंगे॥ १३। तब दाऊद अपने लोग सहित जो मनुष्य छः सौ एक थे उठा और क़ओील: से निकल गया और जिधर जा सका गया और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद क़ओील: से बच निकला तब वुह जाने से रह गया॥ १४। और दाऊद ने अरण्य में दृढ़ स्थानों में बास किया और ज़ैफ़ के बन में एक पहाड़ के बीच रहा और साऊल प्रति दिन उस की खोज में लगा हुआ था परंतु ईश्वर ने उसे उस के हाथ में सौंप न दिया॥ १५। और दाऊद ने देखा कि साऊल उस के मारने के कारण निकला उस समय दाऊद ज़ैफ़ के अरण्य के बीच एक बन में था॥ १६। और साऊल का बेटा यहूनतन उठा और बन में दाऊद पास गया और ईश्वर पर उसे दृढ़ किया॥ १७। और उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू मेरे पिता साऊल के हाथ में न पड़ेगा और तू इसराएल का राजा होगा और तेरे पीछे

मैं हूंगा और मेरा पिता साऊल भी यह जानता है॥ १८। और उन दोनों ने परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और दाऊद बन में ठहर रहा और यहूनतन अपने घर गया॥ १९। तब जैफ के लोग जिबिआः में साऊल पास चढ़ आके बोले कि क्या दाऊद दृढ़ स्थानों में हमारे मध्य एक बन में हकील: पहाड़ पर जो यसीमून की दक्षिण दिशा में है नहीं रहता॥ २०। सो हे राजा अब तू चल और अपने मन के समान उतर आ और हमें उचित है कि उसे राजा के हाथ में सौंप देवें॥ २१। तब साऊल बोला कि परमेश्वर तुम्हें आशीष देवे क्योंकि तुम ने मुझ पर दया किई॥ २२। अब जाओ और और भी जुगत करो और देखो कि उस के लुकने का स्थान कहां है और किसने उसे वहां देखा है क्योंकि मुझे कहा गया कि वुह बड़ी चौकसी करता है॥ २३। सो देखो और उन लुकने के सारे स्थानों को जहां वुह छिपता है जानो और ठीक संदेश लेके मुझ पास फिर आओ और मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा और यों होगा कि यदि वुह देश में होवे मैं उसे यहूदाह के सारे सहस्रों में से ढूंढ़ लेऊंगा॥ २४। तब वे उठे और साऊल से आगे जैफ को गये परंतु दाऊद अपने लोगों सहित मऊन के बन में यसीमून के दक्षिण दिशा को एक चौगान में था॥ २५। साऊल और उस के लोग भी उस की खोज को निकले और दाऊद को समाचार पहुंचा इस लिये वुह पहाड़ी से उतर के मऊन के बन में जा रहा और साऊल ने यह सुन के मऊन के बन में दाऊद का पीछा किया॥ २६। और साऊल पर्बत की इस अलंग चला गया और दाऊद और उस के लोग पर्बत की उस अलंग और दाऊद ने साऊल के डर से हाली किया कि निकल जाय क्योंकि साऊल और उस के लोगों ने दाऊद को और उस के लोगों को पकड़ने को चारों ओर से घेर लिया॥ २७। उस समय एक दूत ने साऊल पास आके कहा कि हाली आ कि फिलिस्ती देस में फैल गये॥ २८। सो इस लिये साऊल दाऊद के खेदने से फिरा और फिलिस्तियों के सन्मुख हुआ इस कारण उन्हों ने उस स्थान का नाम बिभाग का चटान धरा।

२४ चौबीसवां पर्व्व।

और दाऊद वहां से चल के अनगदी के दृढ़ स्थानों में जा रहा॥ २। और यों हुआ कि जब साऊल फिलिस्तियों के पीछे से फिरा तब उसे कहा गया कि देख दाऊद अनगदी के अरण्य में है॥ ३। तब साऊल समस्त इसराएली में से तीन सहस्र चुने हुए पुरुष लेके दाऊद की और उस के लोगों की खोज को बनैली बकरियों के पहाड़ों पर गया॥ ४। तब वुह मार्ग के भेड़शाला में आया जहां एक खोह थी और साऊल उस खोह में अपने पांव दाबने और लेटने के लिये गया और दाऊद और उस के लोग खोह की अलंगों में रहे॥ ५। और दाऊद के लोगों ने उसे कहा कि देखिये यह वुह दिन है जिस के विषय में परमेश्वर ने आप को कहा था कि देख मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंपूंगा जिसतें तू अपनी बांछा के समान उस्से करे तब दाऊद उठा और चुपके से साऊल के वस्त्र का खूंट काट लिया॥ ६। और उस के पीछे यों हुआ कि दाऊद के मन में खटका हुआ इस कारण कि उस ने साऊल का खूंट काटा॥ ७। और उस ने अपने लोगों से कहा कि परमेश्वर न करे कि मैं अपने स्वामी पर जो परमेश्वर का अभिषिक्त है ऐसा करूं कि अपना हाथ उस पर बढ़ाऊं क्योंकि वुह परमेश्वर का अभिषिक्त है॥ ८। सो दाऊद ने इन बातों से अपने लोगों को रोक रक्खा और उन्हें साऊल पर हाथ चलाने न दिया परंतु साऊल ने खोह से निकल के अपना मार्ग लिया॥ ९। और उस के पीछे दाऊद भी उठा और उस खोह से बाहर आया और साऊल से यह कहके पुकारा कि हे मेरे स्वामी राजा और जब साऊल ने पीछे फिर के देखा तब दाऊद ने भूमि पर झुक के दंडवत किई॥ १०। और दाऊद ने साऊल से कहा कि लोगों की ये बातें आप क्यों सुनते हैं कि देखिये दाऊद आप की बुराई चाहता है॥ ११। देखिये आज ही के दिन आप ने अपनी आंखों से देखा कि परमेश्वर ने आज आप को खोह में मेरे हाथ में सौंप दिया और कितनों ने आप को मारने कहा परंतु मैं ने आप को छोड़ा और अपने मन में बिचारा कि अपने स्वामी पर अपना हाथ न बढ़ाऊंगा क्योंकि वुह परमेश्वर का

अभिषिक्त है॥ ११। इस्से अधिक हे मेरे पिता देखिये हां अपने बस्त्र के खूंट को मेरे हाथ में देखिये क्योंकि मैं ने जो आप के बस्त्र का खूंट काट लिया और आप को न मारा इस्से जानिये और देखिये कि मेरे मन में बुराई और किसी प्रकार का अपराध नहीं है और मैं ने आप के बिरुद्ध पाप न किया तथापि आप मेरे प्राण का अहेर करने को निकले हैं॥ १२। परमेश्वर मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और परमेश्वर आप से मेरा पलटा लेवे परंतु मेरा हाथ आप पर न पड़ेगा॥ १३। जैसा प्राचीनों की कहावत में कहा गया है कि दुष्ट से दुष्टता निकलती है परंतु मेरा हाथ आप पर न उठेगा॥ १४। इसराएल का राजा किसके पीछे निकला है और आप किसके पीछे पड़े हैं क्या मरे हुए कूकर के अथवा एक पिस्सू के॥ १५। सो परमेश्वर बिचार करे और मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और देखे और मेरे पद का पक्ष करे और आप के हाथ से मुझे बचावे॥ १६। और जब दाऊद ये बातें साऊल से कह चुका तब साऊल ने कहा कि मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरा शब्द है और साऊल ने बड़े शब्द से बिलाप किया॥ १७। और दाऊद से कहा कि तू मुझ से अधिक धर्म्मी है क्योंकि तू ने बुराई की संती मेरी भलाई किई॥ १८। और तू ने आज के दिन दिखाया है कि तू ने मुझ से भलाई किई है यद्यपि परमेश्वर ने मुझे तेरे हाथ में सौंप दिया और तू ने मुझे मार न डाला॥ १९। क्योंकि यदि कोई अपने बैरी को पावे तो क्या वुह उसे कुशल से छोड़ देगा इस लिये जो तू ने आज मुझ से किया है परमेश्वर इस का प्रतिफल देवे॥ २०। और अब मैं ठीक जानता हूं कि तू निश्चय राजा होगा और इसराएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा॥ २१। इस लिये तू मुझ से परमेश्वर की किरिया खा कि तेरे पीछे मैं तेरे बंश को काट न डालूंगा और तेरे पिता के घराने में से तेरे नाम को मिटा न डालूंगा॥ २२। तब दाऊद ने साऊल से किरिया खाई और साऊल घर को चला गया परंतु दाऊद और उस के लोग दृढ़ स्थान में गये॥

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

और समूएल मर गया और समस्त इसराएलियों ने एकट्ठे होके उस पर बिलाप किया और रामात में उस के घर में उसे गाड़ा और दाऊद उठ के फ़ारान के अरण्य में उतर गया॥ २। और वहां मऊन में एक पुरुष था जिस की संपत्ति करमिल में थी वुह महाजन था और उस के तीन सहस्र भेड़ और एक सहस्र बकरी थीं और वुह अपनी भेड़ों का रोम करमिल में कतरता था॥ ३। और उस का नाम नबाल और उस की स्त्री का नाम अबिजैल था वुह स्त्री बुद्धिमती और सुंदरी थी परंतु वुह पुरुष कठोर और कुकर्म्मी था और कालिब के बंश के घराने में से था॥ ४। और दाऊद ने अरण्य में सुना कि नबाल भेड़ों के रोम कतरता है॥ ५। तब दाऊद ने दस तरुण भेजे और उन्हें कहा कि नबाल पास करमिल को चढ़ जाओ और मेरे नाम से उस का कुशल पूछो॥ ६। और उस भरे पूरे जन से कहियो कि तुझ पर कुशल और तेरे घर पर कुशल और तेरी समस्त बस्तु पर कुशल होवे॥ ७। मैं ने अब सुना है कि तुझ पास रोम कतरवैये हैं और तेरे गड़रिये हमारे संग थे और हम ने उन्हें दुःख न दिया और जब लों वे करमिल में हमारे साथ थे उन का कुछ जाता न रहा॥ ८। तू अपने तरुणों से पूछ और वे तुझे कहेंगे इस लिये तरुण लोग तेरी दृष्टि में अनुग्रह पावें क्योंकि हम अच्छे दिन में आये हैं सो मैं तेरी बिनती करता हूं कि जो तेरे हाथ आवे सो तेरे सेवकों और अपने बेटे दाऊद को दीजिये॥ ९। और दाऊद के तरुणों ने आके नबाल को दाऊद का नाम लेके उन सारी बातों के समान कहा और चुप हो रहे॥ १०। तब नबाल ने दाऊद के सेवकों को उत्तर देके कहा कि दाऊद कौन और यस्सी का बेटा कौन इन दिनों में बहुत सेवक हैं जो अपने स्वामियों से भाग निकलते हैं॥ ११। क्या अपनी रोटी और पानी और मांस जो मैं ने अपने कतरवैयों के लिये मारा है लेके उन मनुष्यों को देऊं जिन्हें मैं नहीं जानता कि कहां से हैं॥ १२। सो दाऊद के तरुणों ने अपना मार्ग लिया और आके उन सब बातों को उस्से कहा॥ १३। तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा कि हर

एक तुम में से अपना अपना खड्ग बांधे सो उन्हों ने अपना अपना खड्ग बांधा और दाऊद ने भी अपना खड्ग बांधा और दाऊद के पीछे पीछे चार सौ जन गये और दो सौ सामग्री के साथ रहे॥ १४। परंतु तरुणों में से एक ने नबाल की पत्नी अबिजैल से कहा कि देख दाऊद ने अरण्य में से हमारे स्वामी पास दूतों को भेजा कि नमस्कार करें पर वुह उन पर झपटा॥ १५। परंतु उन्हों ने हम से भलाई किई कि हमें कुछ दुःख न हुआ और जब लों हम चौगान में थे और उन से परिचय रखते थे तब लों हम ने कुछ न खोया॥ १६। जब लों हम उन के साथ भेड़ की रखवाली करते रहे रात दिन वे हमारे लिये एक आड़ थे॥ १७। सो अब जान रख और सोच कि तू क्या करेगी क्योंकि हमारे स्वामी पर और उस के सब घराने पर बुराई ठहराई गई क्योंकि वुह ऐसा बुरा जन है कि कोई उस्से बात नहीं कर सक्ता॥ १८। तब अबिजैल हाली से दो सौ रोटियां और दो कुप्पे दाख रस और पांच भेड़ं बनी बनाईं और मन सताईस एक भूना और एक सौ गुच्छा आंगूर और दो सौ गूलर की लिट्टी लिई और उन्हें गदहों पर लादा॥ १९। और अपने सेवकों को कहा कि मेरे आगे आगे बढ़ो देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूं परंतु उस ने अपने पति नबाल से न कहा॥ २०। और ज्योंहीं वुह गदहे पर चढ़ के पहाड़ के आड़ से उतरी तो क्या देखती है कि दाऊद अपने लोगों समेत उतर के उस के सन्मुख आया और उस्से भेंट हुई॥ २१। अब दाऊद ने कहा था कि निश्चय मैं ने इस जन की समस्त वस्तुन की जो अरण्य में थीं वृथा रखवाली किई यहां लों कि उस के सब में से कुछ नष्ट न हुआ और भलाई की संती मुझ से बुराई किई॥ २२। सो यदि बिहान लों उस के समस्त पुरुषों में से मैं एक को जो भीत पर मूत्ता है छोड़ूं तो ईश्वर उस्से और उस्से भी अधिक दाऊद के शत्रुन से करे॥ २३। और ज्योंहीं अबिजैल ने दाऊद को देखा त्योंहीं वुह गदहे से उतरी और दाऊद के आगे औंधी गिरी और भूमि पर दंडवत किई॥ २४। और उस के चरणों पर गिर के कहा कि हे मेरे प्रभु मुझी पर अपराध रखिये मैं तेरी बिनती करती हूं कि अपनी दासी को कान में बात करने दीजिये और अपनी दासी की बात

सुनिये॥ २५। मैं आप से बिनती करती हूं कि मेरे प्रभु इस बुरे पुरुष की अर्थात् नबाल की चिंता न करिये क्योंकि जैसा उस का नाम वैसा ही वुह उस का नाम नबाल और मूर्खता उस के साथ परंतु मैं जो तेरी दासी हूं अपने प्रभु के तरुणों को जिन्हें आप ने भेजा था न देखा॥ २६। सो अब हे मेरे प्रभु परमेश्वर के जीवन सों और आप के प्राण के जीवन सों जैसा कि परमेश्वर ने आप को लोहू बहाने से और अपने ही हाथ से प्रतिफल लेने से रोका है वैसा ही अब आप के शत्रु और वे जो मेरे प्रभु की बुराई चाहते हैं नबाल के समान होवें॥ २७। अब यह भेंट आप की दासी अपने प्रभु के आगे लाई है सो उन तरुणों को दिया जाय जो मेरे प्रभु के पश्चातगामी हैं॥ २८। और अब मैं आप को बिनती करती हूं कि अपनी दासी का पाप क्षमा कीजिये क्योंकि निश्चय परमेश्वर मेरे प्रभु के लिये दृढ़ घर बनावेगा इस कारण कि मेरा प्रभु परमेश्वर की लड़ाइयां लड़ता है और आप के दिनों में आप में बुराई न पाई गई॥ २९। तथापि एक जन उठा है कि आप का पीछा करे और आप के प्राण का गांहक होवे परंतु मेरे प्रभु का प्राण आप के ईश्वर परमेश्वर के संग जीवन की ढेर में बांधा जायगा और तेरे शत्रुन के प्राण ढेलवांस से फेंके जायेंगे॥ ३०। और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर अपने बचन के समान सब भलाई मेरे प्रभु से कर चुके और आप को इसराएल पर आज्ञाकारी करे॥ ३१। तब आप के लिये यह कुछ डगमगाने का अथवा मेरे प्रभु के मन की ठोकर का कारण न होगा कि आप ने अकारथ लोहू बहाया अथवा कि मेरे प्रभु ने अपना पलटा लिया परंतु जब परमेश्वर मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण कीजियो॥ ३२। और दाऊद ने अबिजैल से कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने तुझे मेरी भेंट के लिये आज के दिन भेजा है॥ ३३। और तेरा मंत्र धन्य और तू धन्य है जिस ने मुझे आज के दिन लोहू से और अपने हाथ से पलटा लेने से रोक रक्खा है॥ ३४। क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के जीवन सों जिस ने तुझे दुःख देने से मुझ से अलग रक्खा और यदि तू शीघ्र न करती और मुझ पास चली न आती तो निःसंदेह बिहान लों नबाल का एक भी पुरुष

जो भीत पर मूत्ता है न छूटता॥ ३५। और जो कुछ कि वुह उस के निमित्त लाई थी दाऊद ने उस के हाथ से लिया और उसे कहा कि अपने घर कुशल से जा देख मैं ने तेरा बचन माना है और तुझे ग्रहण किया है॥ ३६। तब अबिजैल नबाल पास आई और देखा कि उस ने अपने घर में राजा का सा एक जेवनार किया और नबाल का मन मगन हो रहा था क्योंकि वुह बड़ा मतवाला था सो इस कारण उस ने उसे बिहान लों कुछ घट बढ़ न कहा॥ ३७। परंतु ऐसा हुआ कि बिहान को जब नबाल का मद उतरा और उस की स्त्री ने सब समाचार उसे कहा तब उस का मन मृतक सा हो गया और वुह पत्थर हो गया॥

३८। और ऐसा हुआ कि दस दिन के पीछे परमेश्वर ने नबाल को मारा और वुह मर गया॥ ३९। और जब दाऊद ने सुना कि नबाल मर गया तब उस ने कहा कि परमेश्वर धन्य है जिस ने नबाल के हाथ से मेरे कलंक का पलटा लिया और अपने दास को बुराई से अलग रक्खा है क्योंकि परमेश्वर ने नबाल की दुष्टता को उसी के सिर पर डाला और दाऊद ने भेजा और अबिजैल से बात चीत करवाई कि अपनी पत्नी करे॥ ४०। और जब दाऊद के सेवक करमिल को अबिजैल पास आये वे यह कहके उस्से बोले कि दाऊद ने हमें तुझ पास भेजा है कि तुझे अपनी पत्नी करे॥ ४१। तब वुह उठी और भूमि पर झुक के बोली कि देख तेरी दासी अपने स्वामी के सेवकों के चरण धोने के लिये दासी होवे॥ ४२। और अबिजैल शीघ्रता करके उठी और गदहे पर चढ़ी और अपनी पांच दासियां साथ लिईं और दाऊद के दूतों के साथ चली और उस की पत्नी हुई और दाऊद ने यज़रअएल में से अख़िनूअम को भी लिया॥ ४३। और वे दोनों उस की पत्नियां हुईं॥ ४४। परंतु साऊल ने अपनी बेटी मीकल को जो दाऊद की पत्नी थी लैशके बेटे फल्ती को दिया जो जल्लीम का था॥

२६ छबीसवां पर्ब्ब॥

अब जैफी जिबिअः में साऊल पास आ बोले क्या दाऊद हकीलः पहाड़ में यसीमून के आगे छिपा हुआ नहीं॥ २। तब साऊल उठके तीन

सहस्र चुने ज़ए इसराएली लेके जैफ़ के अरण्य में उतरा कि दाऊद को जैफ़ के अरण्य में ढूंढ़े ॥ ३। और हकीलः के पहाड़ में जो यसीमून के आगे है मार्ग की ओर डेरा किया परंतु दाऊद अरण्य में रहा और उस ने देखा कि साऊल उस का पीछा किये ज़ए अरण्य में आया ॥ ४। इस लिये दाऊद ने भेदिये भेजे और बूझ लिया कि साऊल सच मुच आया है ॥ ५। तब दाऊद उठ के साऊल के डेरा को चला और दाऊद ने उस स्थान को देख रखा जहां साऊल पड़ा था और नेयिर का बेटा अबिनेयिर उस की सेना का प्रधान था और साऊल खाई में सोता था और उस के लोग उस के चारों ओर डेरा किये थे ॥ ६। तब दाऊद ने हित्ती अखिमलक और ज़रूयाह के बेटे अबिशै को जो यूअब का भाई था कहा कि कौन मेरे साथ छावनी में साऊल पास चलेगा और अबिशै बोला कि मैं आप के साथ उतरूंगा ॥ ७। सो दाऊद और अबिशै रात को सेना में घुसे और क्या देखते हैं कि साऊल खाई के भीतर सोता है और उस का भाला उस के सिरहाने भूमि में गड़ा था परंतु अबिनेयिर और उस के लोग चारों ओर सोते थे ॥ ८। उसी समय अबिशै ने दाऊद से कहा कि ईश्वर ने आज आप के शत्रु को आप के हाथ में कर दिया अब इस लिये मुझे भाले से एक ही बार मार के भूमि में उसे गोदने दीजिये और दूसरी बार न मारूंगा ॥ ९। तब दाऊद ने अबिशै से कहा कि उसे नाश न कर क्योंकि कौन परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ बढ़ा के निर्दोष ठहर सके ॥ १०। और दाऊद ने यह भी कहा कि परमेश्वर के जीवन सों परमेश्वर उसे मारेगा अथवा उस का दिन आवेगा और वुह मर जायगा अथवा युद्ध पर उतरेगा और मारा जायगा ॥ ११। परमेश्वर न करे कि मैं परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ बढ़ाऊं पर तू उस के सिरहाने के भाले को और पानी की झारी को ले लेना और हम चल निकलें ॥ १२। सो दाऊद ने भाला और पानी की झारी साऊल के सिरहाने से ले लिई और चल निकले और किसी ने न देखा और न जना और कोई न जागा क्योंकि सब के सब सोते थे इस कारण कि परमेश्वर की ओर से भारी निद्रा उन पर पड़ी थी ॥ १३। तब दाऊद दूसरी ओर गया और एक पहाड़ की चोटी पर

दूर जा खड़ा हुआ और उन में बड़ा बीच था॥ १४। और दाऊद ने लोगों को और नैयिर के बेटे अबिनैयिर को पुकार के कहा कि हे अबिनैयिर तू उत्तर नहीं देता तब अबिनैयिर ने उत्तर देके कहा कि तू कौन है जो राजा को पुकारता है॥ १५। तब दाऊद ने अबिनैयिर से कहा कि क्या तू बलवंत नहीं और इसराएल में तेरे समान कौन सो किस लिये तू ने अपने प्रभु राजा की रक्षा न किई क्योंकि लोगों में से एक जन तेरे प्रभु राजा के मारने को निकला था॥ १६। सो तू ने यह काम कुछ अच्छा न किया परमेश्वर के जीवन सों तुम मार डालने के योग्य हो इस कारण कि तुम ने अपने स्वामी की जो परमेश्वर का अभिषिक्त है रक्षा न किई और अब देख कि राजा का भाला और पानी की झारी जो उस के सिरहाने थी कहां है॥ १७। तब साऊल ने दाऊद का शब्द पहिचाना और कहा कि हे मेरे बेटे दाऊद यह तेरा शब्द है तब दाऊद बोला कि हे मेरे प्रभु हे राजा यह मेरा ही शब्द॥ १८। और उस ने कहा कि मेरे प्रभु क्यों इस रीति से अपने दास के पीछे पड़े हैं क्योंकि मैं ने क्या किया और मेरे हाथ से क्या पाप हुआ॥ १९। सो अब मैं आप की बिनती करता हूं हे मेरे प्रभु राजा अपने सेवक की बातों पर कान धरिये यदि परमेश्वर ने मुझ पर आप को उभाड़ा है तो वुह भेंट ग्रहण करे परंतु यदि यह मनुष्य के बंश से है तो परमेश्वर का स्राप उन पर पड़े क्योंकि उन्हों ने आज मुझे परमेश्वर के अधिकार से यह कहके हांक दिया है कि जा उपरी देवतों की सेवा कर॥ २०। इस लिये अब परमेश्वर के आगे मेरा लोहू भूमि पर न बहे क्योंकि इसराएल का राजा एक पिस्सू की खोज को निकला है जैसा कोई तीतर के अहेर को पहाड़ों पर निकलता है॥ २१। तब साऊल ने कहा कि मैं ने पाप किया हे मेरे बेटे दाऊद फिर आ क्योंकि फेर तुझे न सताऊंगा इस लिये कि मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में बहुमूल्य हुआ देख मैं ने मूढ़ता किई और अति चूक किई॥ २२। तब दाऊद ने उत्तर देके कहा की देख यह राजा का भाला है सो तरुणों में से एक आके इसे ले जावे॥ २३। परमेश्वर हर जन को उस के धर्म्म का और सच्चाई का प्रतिफल देवे क्योंकि परमेश्वर ने आज आप को मेरे हाथ में सौंप दिया पर मैं ने न

चाहा कि परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ बढ़ाऊं॥ २४। और देख जिस रीति से आप का प्राण मेरी आंखों में आज के दिन प्रिय ज़ुआ वैसा ही मेरा प्राण ईश्वर की दृष्टि में प्रिय होवे और वुह मुझे सब कष्टों से बचावे॥ २५। तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तू धन्य है हे मेरे बेटे दाऊद तू महा कार्य्य करेगा और तदभी तू भाग्यमान होगा सो दाऊद ने अपना मार्ग लिया और साऊल अपने स्थान को फिरा।

२७ सत्ताईसवां पर्व्व।

और दाऊद ने अपने मन में कहा कि अब मैं किसी दिन साऊल के हाथ से मारा जाऊंगा सो मेरे लिये इस्से अच्छा कुछ नहीं कि मैं शीघ्रता से भाग के फ़िलिस्तियों के देश में जा रहूं और साऊल इसराएल के सिवानों में मुझे खोजने से निरास हो जायगा यों मैं उस के हाथ से बच जाऊंगा॥ २। तब दाऊद अपने साथ के छः सौ तरुणों को लेके जअ्त के राजा मऊक के बेटे अकीश की ओर गया॥ ३। और दाऊद अपने लोगों के साथ जिन में से हर एक अपने घराने समेत था अपनी दोनों स्त्री अखिनुअम को जो यज़्रअएली थी और करमिली अबिजैल को जो नबाल की पत्नी थी लेके जअ्त में अकीश के साथ रहा॥ ४। और साऊल को संदेश पज़ुंचा कि दाऊद जअ्त को भाग गया तब उस ने फिर उस का पीछा न किया॥ ५। और दाऊद ने अकीश से कहा कि यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो वे इस देश में मुझे किसी बस्ती में स्थान देवें जहां मैं बसूं क्योंकि आप का दास किस लिये आप के राज्य नगर में रहे॥ ६। तब अकीश ने उस दिन सिक़्लाज उसे दिया इस लिये सिक़्लाज आज के दिन लों यहूदाह के राजाओं के बश में है॥ ७। और दाऊद फ़िलिस्तियों के देश में एक बरस चार मास लों रहा॥ ८। और दाऊद ने अपने लोगों को लेके जस्सूरी और जरिज़ी और अमालीकियों को घेर लिया क्योंकि वे जस्सूर के सिवाने से लेके मिस्र के सिवाने लों आगे से बस्ते थे॥ ९। और दाऊद ने देश को नष्ट किया और न पुरुष को न स्त्री को जीता छोड़ा और उन के भेड़ और ढोर और गदहे और ऊंट और कपड़े लिये और अकीश

पास फिर आये॥ १०। और अकीश ने पूछा कि आज तुम ने मार्ग किधर खोला दाऊद ने कहा कि यहूदाह के दक्षिण और यरहमिएली के दक्षिण और कैनी के दक्षिण दिशा पर॥ ११। और दाऊद ने उन में से कोई स्त्री पुरुष को जीता न छोड़ा जो जअ्त को संदेश ले जाय यह कहके कि न होवे कि हमारे विरुद्ध सदेश पहुंचावें कि दाऊद ने ऐसा वैसा किया और जब से वुह फिलिस्तियों के राज्य में आ रहा तब से उस का व्यवहार ऐसा ही था॥ १२। और यह कहके अकीश ने दाऊद को सञ्चा जाना कि उस ने आप को अपने इसराएली लोगों से अत्यंत निंदा करवाई इस लिये वुह मेरा दास सदा होगा।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि फिलिस्तियों ने इसराएल से लड़ने को अपनी सेनाओं को एकट्ठी किया तब अकीश ने दाऊद से कहा कि तू निश्चय जान कि तुझे और तेरे लोगों को मेरे साथ लड़ाई पर चढ़ने होगा॥ २। तब दाऊद ने अकीश से कहा निश्चय आप जानियेगा जो कुछ आप के दास से बन पड़ेगा और अकीश ने दाऊद से कहा कि मैं अपने सिर का रक्षक तुझे करूंगा॥ ३। और समूएल मर गया और समस्त इसराएल उस पर रोते थे और उसे उसी के नगर रामात में गाड़ा था और साऊल ने उन्हें जो भुतहे और टोनहे थे देश से निकाल दिया था॥ ४। और फिलिस्ती एकट्ठे होके आये और सूनेम में डेरा किया और साऊल ने भी सारे इसराएल को एकट्ठा किया और जिलबूअः में डेरा किया॥ ५। और जब साऊल ने फिलिस्तियों की सेना को देखा तब डरा और उस का मन अत्यंत कंपित हुआ॥ ६। और जब साऊल ने परमेश्वर से बूझा परमेश्वर ने उसे कुछ उत्तर न दिया न तो दर्शन से न ऊरीम से न आगमज्ञानियों के द्वारा से॥ ७। तब साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि किसी स्त्री को खोजो जो भुतही होवे जिसतें मैं उस पास जाऊं और उससे बूझूं तब उस के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये ऐनदोर मे एक भुतही स्त्री है॥ ८। तब साऊल ने अपना भेष बदल के दूसरा बस्त्र पहिना और गया और

दो जन उस के साथ ऊए और रात को उस स्त्री पास पऊंचा और उसे कहा कि कृपा करके मेरे लिये अपने भूत से बिचार पूछ और जिसे मैं कहूं उसे मेरे लिये उठा॥ ९। और उस स्त्री ने उसे कहा कि देख तू जानता है कि साऊल ने क्या किया कि उस ने उन्हें जो भुतहे थे और टोनहों को किस रीति से देश से काट डाला सो मुझे मरवा डालने के लिये तू क्यों मेरे प्राण के लिये जाल डालता है॥ १०। तब साऊल ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि परमेश्वर के जीवन सों इस बात के लिये तुझ पर कोई दंड न पड़ेगा॥ ११। तब वुह स्त्री बोली मैं किसे तेरे लिये उठाऊं वुह बोला कि समूएल को मेरे लिये उठा॥ १२। और जब उस स्त्री ने समूएल को देखा वुह बड़े शब्द से चिल्लाई और साऊल से कहा कि आप ने मुझ से क्यों छल किया आप तो साऊल हैं॥ १३। तब राजा ने उसे कहा कि मत डर तू ने क्या देखा और उस स्त्री ने साऊल से कहा कि मैं ने देवों को पृथिवी से उठते देखा॥ १४। तब उस ने उसे कहा कि उस का डौल क्या वुह बोली कि एक वृद्ध पुरुष ऊपर आता है और दोहर ओढ़े है तब साऊल ने जाना कि वुह समूएल है और वुह मुंह के बल निऊड़के भूमि पर झुका॥ १५। तब समूएल ने साऊल से कहा कि तू ने क्यों मुझे उठा के बेचैन किया साऊल ने कहा कि मैं अति दुःखी हूं क्योंकि फिलिस्ती मुझ से लड़ते हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है और कुछ उत्तर नहीं देता न तो आगमज्ञानियों के द्वारा से न दर्शन से इस लिये मैं ने तुझे बुलाया जिसतें तू मुझे बतावे कि मैं क्या करूं॥ १६॥ और समूएल ने कहा कि जब परमेश्वर ने तुझे छोड़ दिया और तेरा बैरी बना तब मुझ से किस लिये पूछता है॥ १७। और जैसा परमेश्वर ने मेरे द्वारा से कहा उस ने उस के लिये वैसा ही किया है क्योंकि परमेश्वर ने तेरे राज्य को फाड़ा है और तेरे परोसी दाऊद को दिया है॥ १८। इस लिये कि तू ने परमेश्वर के शब्द को नहीं माना और अमालीकियों पर उस के अति कोप को पूरा न किया इसी कारण से परमेश्वर ने आज के दिन तुझ से यह व्यवहार किया है॥ १९। इस्से अधिक परमेश्वर इसराएल को तेरे संग फिलिस्तियों के हाथ में सौंपेगा और तू और तेरे बेटे कल मेरे साथ होंगे और परमेश्वर

इसराएली सेना को भी फ़िलिस्तियों के हाथ में सौंपेगा॥ २०। तब साऊल तुरंत भूमि पर गिरा और समूएल की बातों से बहुत डर गया और उस में कुछ सामर्थ्य न रही क्योंकि उस ने दिन भर और रात भर रोटी न खाई थी॥

२१। तब वुह स्त्री साऊल पास आई और देखा कि वुह अति व्याकुल है तब उस ने उसे कहा कि देख आप की दासी ने आप का शब्द सुना और मैं ने अपना प्राण अपनी हथेली पर रक्खा और जो कुछ आप ने मुझे कहा मैं ने उसे माना॥ २२। सो अब आप भी कृपा करके अपनी दासी की बात सुनिये और मुझे अपने आगे एक ग्रास रोटी धरने दिजिये और खाइये जिसतें आप को इतनी सामर्थ्य हो कि अपने मार्ग जाइये॥ २३। पर उस ने न माना और कहा कि मैं न खाऊंगा परंतु उस के दासों ने उस स्त्री सहित उसे बरबस खिलाया और उस ने उन का कहा माना और भूमि पर से उठा और खाट पर बैठा॥ २४। और उस स्त्री के घर में एक मोटा बछड़ा था सो उस ने चटक किया और उसे मारा और पिसान लेके गूंधा और उस्से अख़मीरी रोटियां पकाईं॥ २५। और साऊल और उस के सेवकों के आगे लाई और उन्हों ने खाया और उठे और उसी रात वहां से चले गये॥

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

सो फ़िलिस्ती की सब सेना अफ़ीक़ में एकट्ठी हुई और इसराएली यज़रअएल के सोते के पास डेरा किये हुए थे॥ २। और फ़िलिस्तियों के अध्यक्ष सैकड़ां सैकड़ों और सहस्र सहस्र आगे बढ़ते गये परंतु दाऊद और उस के लोग अकीश के पीछे पीछे गये॥ ३। तब फ़िलिस्तियों के अध्यक्षों ने कहा कि इन इबरानियों का क्या काम और अकीश ने फ़िलिस्ती अध्यक्षों को कहा कि क्या यह इसराएल के राजा साऊल का सेवक दाऊद नहीं जो इतने दिनों और इतने बरसों से मेरे साथ है और जब से वुह मुझ पास आया है आज लों उस में कुछ दोष नहीं पाया॥ ४। तब फ़िलिस्तियों के अध्यक्ष उस्से क्रुद्ध हुए और उन्हों ने उसे कहा कि इस जन को यहां से फेर दे जिसतें वुह अपने

स्थान को जो तू ने उसे दिया है फिर जाय और हमारे साथ युद्ध में न उतरे क्या जाने युद्ध में वुह हमारा बैरी होवे क्योंकि वुह अपने स्वामी से किस बात से मेल करेगा क्या इन लोगों के सिरों से नहीं॥ ५। क्या यह वही दाऊद नहीं जिस के विषय में वे नाचती ऊई गाती थीं कि साऊल ने तो अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को॥ ६। तब अकीश ने दाऊद को बुलाया और उसे कहा कि निश्चय परमेश्वर के जीवन सों तू खरा है तेरा आना जाना सेना में मेरे साथ मेरी दृष्टि में अच्छा है क्योंकि जिस दिन से तू मुझ पास आया मैं ने आज लों तुझ में कुछ बुराई नहीं पाई तथापि अध्यक्षों की दृष्टि में तू अच्छा नहीं॥ ७। सो अब फिर और कुशल से चला जा और फ़िलिस्तियों के अध्यक्षों की दृष्टि में बुराई न कर॥ ८। परंतु दाऊद ने अकीश से कहा कि मैं ने क्या किया है और जब से मैं आप के साथ रहा और आज लों आप ने अपने सेवक में क्या पाया कि मैं अपने प्रभु राजा के बैरियों से लड़ाई न करूं॥ ९। तब अकीश ने दाऊद को उत्तर दिया कि मैं जानता हूं और तू मेरी दृष्टि में ईश्वर के दूत के समान है परंतु फ़िलिस्ती के अध्यक्षों ने कहा है कि वुह हमारे साथ युद्ध में न जाय॥ १०। सो अब बिहान को तड़के अपने स्वामी के दासों समेत जो तेरे साथ यहां आये हैं उठ के शीघ्र तड़के चले जाइये॥ ११। तब दाऊद अपने लोगों सहित तड़के उठा कि प्रातःकाल को वहां से चल के फ़िलिस्तियों के देश को फिर जाय और फ़िलिस्ती यज़रऐल को चढ़ गये॥

३० तीसवां पर्व्व॥

और ऐसा ऊआ कि जब दाऊद और उस के लोग तीसरे दिन सिक़लाज में पऊंचे क्योंकि अमालीकी दक्षिण दिशा से सिक़लाज पर चढ़ आये थे और उन्हों ने सिक़लाज को मारा और उसे आग से फूंक दिया॥ २। और उस में की स्त्रियों को पकड़ लिया पर उन्हों ने छोटी बड़ी को न मारा परंतु उन्हें लेके अपने मार्ग चले गये॥ ३। जब दाऊद और उस के लोग नगर में पऊंचे तो क्या देखते

हैं कि नगर जला पड़ा है और उन की पत्नियां और उन के बेटे बेटियां बंधुआई में पकड़ी गईं हैं॥ ४। तब दाऊद और उस के साथ के लोग चिल्लाये और बिलाप किया यहां लें कि उन में रोने की सामर्थ्य न रही॥ ५। और दाऊद की दोनें पत्नियां यज़रऐली अख़िनुअम और करमिली नबाल की पत्नी अबिजैल बंधुआई में पकड़ी गईं॥ ६। और दाऊद अति दुःखी हुआ क्योंकि लोग उस पर पत्थरवाह करने की बातचीत करते थे इस लिये कि उन में से हर एक अपने बेटों और बेटियों के लिये निपट उदास था पर दाऊद ने परमेश्वर अपने ईश्वर से हियाव पाया॥ ७। और दाऊद ने अख़िमलिक के बेटे अबियतर याजक से कहा कि कृपा करके अफ़ूद मुझ पास ला से अबियतर अफ़ूद दाऊद पास ले आया॥ ८। और दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से बूझा कि मैं इस जथा का पीछा करूं क्या मैं उन्हें जा ही लूंगा उस ने उत्तर दिया कि पीछा कर क्योंकि तू निश्चय उन्हें जा ही लेगा और निःसंदेह उन्हें छुड़ावेगा॥ ९। सो दाऊद अपने साथ के छः सौ तरुणों को लेके चला और बसूर के नाले लों आया और जो पीछे छोड़े गये वहां पर रहि गये॥ १०। पर दाऊद चार सौ तरुणों से उन का पीछा किये चला गया क्योंकि दो सौ पीछे रह गये थे जो ऐसे थक गये थे कि बसूर के नाले पार जा न सके॥ ११। और उन्हों ने खेत में एक मिस्री को पाया और उसे दाऊद पास ले आये और उसे रोटी खाने को दिई और उस ने खाई और उन्हों ने उसे पानी भी पिलाया॥ १२। और उन्हों ने गूलर की लिट्टी और दो गुच्छे अंगूर उसे दिये और जब वुह खा चुका तब उस के जी में जी आया क्योंकि उस ने तीन रात दिन न रोटी खाई न पानी पीया था॥ १३। तब दाऊद ने उसे पूछा कि तू कौन और कहां का है वुह बोला कि मैं एक मिस्री तरुण और एक अमालीकी का सेवक हूं मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया क्योंकि तीन दिन हुए कि मैं रोगी हुआ॥ १४। हम करीती के दक्षिण ओर चढ़ गये और यहूदाह के सिवाने पर और कालिब की दक्षिण ओर चढ़ गये थे और हम ने सिक़लाज को आग से फूंक दिया॥ १५। और दाऊद ने उसे कहा कि तू मुझे इस जथा लों ले जा सक्ता है वुह बोला कि मुझ से ईश्वर की किरिया खाइये कि मैं तुझे प्राण से न मारूंगा और तुझे

तेरे स्वामी के हाथ न सौंपूंगा तो मैं आप को इस जथा लों ले जाऊंगा॥ १६। जब वुह उसे वहां ले गया तो क्या देखते हैं कि वे समस्त पृथिवी पर फैले हुए खाते पीते और नाचते थे क्योंकि फिलिस्तियों के और यहूदाह के देश से बहुत लूट लाये थे॥ १७। और दाऊद ने उन्हें गोधूली से दूसरे दिन की सांझ लों मारा और उन में से एक भी न बचा केवल चार सौ तरुण ऊंटों पर चढ़ के भाग निकले॥ १८। और जो कुछ कि अमालीकी ले गये थे दाऊद ने फेर पाया और अपनी दोनों पत्नियों को भी दाऊद ने छुड़ाया॥ १९। और उन के छोटे बड़े और बेटा बेटी और धन संपत्ति जो लूटी गई थी दाऊद ने सब फेर पाया॥ २०। और दाऊद ने सारे झुंड और ढोर ले लिये जिन्हें उन्हों ने ढोरों के आगे हांक लिया और बोले कि यह दाऊद की लूट॥ २१। और दो सौ तरुण ऐसे थके थे जो दाऊद के साथ न जा सके थे और बसूर के नाले पर रह गये थे दाऊद उन पास फिर आया और वे दाऊद को और उस के लोगों को आगे से लेने को निकले और जब दाऊद उन लोगों के पास पहुंचा तब उस ने उन का कुशल पूछा॥ २२। उस समय दुष्टों ने और कुकर्म्मियों ने जो दाऊद के साथ गये थे यह कहा कि ये लोग हमारे साथ न गये हम इन्हें इस लूट में से जो हम ने पाया है भाग न देंगे केवल हर एक अपनी पत्नी और बेटा बेटी को लेके बिदा होवे॥ २३। तब दाऊद बोला कि हे मेरे भाइयो जो कुछ कि परमेश्वर ने हमें दिया है और उस ने हमें बचाया और जथा को जो हम पर चढ़ आये थे हमारे हाथ में कर दिया सो तुम उस में से ऐसा न करो॥ २४। क्योंकि इस विषय में कौन तुम्हारी सुनेगा परंतु जैसा जिस का भाग है जो युद्ध में चढ़ जाता है वैसा उस का भाग होगा जो संपत्ति पास रहती है दोनों एक समान भाग पावेंगे॥ २५। और ऐसा हुआ कि उस दिन से आगे यही बिधि और व्यवस्था इसराएल के लिये आज के दिन लों हुई॥ २६। और जब दाऊद सिक़लाज में आया उस ने लूट में से यहूदाह के प्राचीन और अपने मित्रों के लिये भाग भेजा और कहा कि देखो परमेश्वर के शत्रुन की लूट में से यह तुम्हारी भेंट है॥ २७। और जो बैतएल में और जो दक्षिण रामात में और जो जतीर

में॥ २८। और जो अरआयर में और जो सिफमोत में और जो इस्तिमाअ में॥ २९। और जो रकल में और जो यरमिएली के नगरों में और जो कैनी के नगरों में॥ ३०। और जो हुरमः में और जो खरशान में और जो अताक में॥ ३१। और जो हबरून में और उन सब स्थानों में जहां जहां दाऊद और उस के लोग फिरे करते थे भेजे।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

अब फ़िलिस्ती इसराएल से लड़े और इसराएल फ़िलिस्ती के आगे से भागे और जिलबूअ पहाड़ पर जूझ गये॥ २। और फ़िलिस्ती साऊल के और उस के बेटों के पीछे पीछे पिलचे गये और फ़िलिस्तियों ने उस के बेटे यहूनतन को और अबिनदाब और मलकीसूअ को मार लिया॥ ३। और साऊल से बड़ी लड़ाई हुई और धनुषधारियों ने उसे ऐसा बेधा कि वुह धनुषधारियों के हाथ से अत्यंत घायल हुआ॥ ४। तब साऊल ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे गोद दे जिसतें ये अख़तनः आके मुझे गोद न लेवें और मेरी दुर्दशा न करें पर उस के अस्त्रधारी ने न माना इस लिये कि वुह अत्यंत डरा तब साऊल ने तलवार लिई और उस पर गिरा॥ ५। और जब उस के अस्त्रधारी ने देखा कि साऊल मर गया तब वुह भी अपनी तलवार पर गिरा और उस के साथ मर गया॥ ६। सो साऊल और उस के तीनों बेटे और उस का अस्त्रधारी और उस के सारे लोग उसी दिन एक साथ मर गये।

७। जब इसराएल के लोगों ने जो तराई के उस अलंग थे और जो यरदन के पार थे देखा कि इसराएल के लोग भागे और साऊल और उस के बेटे मारे गये बस्तियां छोड़ छोड़ भाग निकले और फ़िलिस्ती आये और उन में बसे॥ ८। और बिहान को ऐसा हुआ कि जब फ़िलिस्ती आये कि जूझे हुओं को लूटें तब उन्हों ने साऊल को और उस के तीन बेटों को जिलबूअ पहाड़ पर पड़ा पाया॥ ९। तब उन्हों ने उस का सिर काट लिया और उस के हथियार लेके फ़िलिस्तियों के देश

में चारों ओर भेज दिये कि उन की मूरतों के मंदिर में और लोगों में प्रचार होवे॥ १०। और उन्हों ने उस के हथियार को इस्तारात के मंदिर में रक्खा और उस की लोथ को बैतशान की भीत पर लटकाया॥

११। और जब यबीसजिलिअद के बासियों ने सुना कि फिलिस्तियों ने साऊल से यों किया॥ १२। तब उन में के सारे महाबीर उठे और रात भर चले गये और बैतशान की भीत पर से साऊल की और उस के बेटों की लोथों को लेके यबीस में फिर आये और वहां उन्हें जला दिया॥ १३। और उन की हड्डियों को लेके यबीस के पेड़ तले गाड़ दिया और सात दिन लों ब्रत किया।

समूएल की दूसरी पुस्तक जो राजाओं की दूसरी पुस्तक कहाती है।
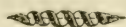
१ पहिला पर्ब्ब ॥

साऊल के मरने के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद अमालीकियों को मार के फिर आया और दो दिन सिकलाज में रहा॥ २। और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि देखो एक जन साऊल की छावनी से अपने बस्त्र फाड़े हुए और सिर पर धूल डाले हुए आया और दाऊद के पास पहुंच के भूमि पर गिरा और दंडवत किई॥ ३। तब दाऊद ने उसे कहा कि तू कहां से आता है और वुह बोला कि इसराएल की छावनी से मैं बच निकला हूं। ४। तब दाऊद ने उस्से पूछा कि क्या हुआ मुझे कह और उस ने उत्तर दिया कि लोग संग्राम से भागे हैं और बहुत से जूझ गये हैं और साऊल और उस का बेटा यहूनतन भी मर गया है॥ ५। तब उस तरुण से जिस ने उसे कहा था दाऊद ने पूछा कि तू क्योंकर जानता है कि साऊल और उस का बेटा यहूनतन मर गये हैं॥ ६। तब उस तरुण ने उसे कहा कि मैं संयोग से जिलबूअ पहाड़ पर था तो क्या देखता हूं कि साऊल अपने भाले पर टेक रहा था और देखो कि रथ और घोड़चढ़े उस के पीछे धाये गये॥ ७। और जब उस ने पीछे फिर के मुझे देखा तब उस ने मुझे बुलाया और मैं ने उत्तर दिया कि यहीं हूं॥ ८। तब उस ने मुझे कहा कि तू कौन मैं ने उसे कहा कि मैं एक अमालीकी हूं॥ ९। फिर उस ने मुझे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं निकट

खड़ा होके मुझे बधन कर क्योंकि व्याकुलता ने मुझे पकड़ा है कि मेरा प्राण अब लों मुझ में पूर्ण है॥ १०। सो मैं उस के निकट खड़ा हुआ और उसे मार डाला इस कारण कि मुझे निश्चय हुआ कि गिरने के पीछे वुह जी न सक्ता था और मैं ने उस के सिर का मुकुट और बिजायठ जो उस की भुजा पर था लिया और उन्हें अपने स्वामी पास इधर लाया हूं॥ ११। तब दाऊद ने अपने कपड़े को पकड़ा और उन्हें फाड़ डाला और उस के साथ के समस्त मनुष्यों ने भी ऐसा ही किया॥ १२। और वे साऊल और उस के बेटे यहूनतन और परमेश्वर के लोगों और इसराएल के घराने के लिये जो तलवार से मारे पड़े थे रोये पीटे और सांझ लों ब्रत किया॥ १३। फिर दाऊद ने उस तरुण से जिस ने उसे संदेश पहुंचाया था पूछा कि तू कहां का है उस ने उत्तर दिया कि मैं परदेशी का लड़का एक अमालीकी हूं॥ १४। तब दाऊद ने उसे कहा कि क्या परमेश्वर के अभिषिक्त पर नाश करने को हाथ उठाते हुए न डरा॥ १५। फिर दाऊद ने तरुणों में से एक को बुलाया और कहा कि उस पास जाके उस पर लपक सो उस ने उसे ऐसा मारा कि वुह मर गया॥ १६। और दाऊद ने उसे कहा कि तेरा लोहू तेरे ही सिर पर क्योंकि तेरे ही मुंह ने तुझ पर यह कहके साक्षी दिई कि मैं ने परमेश्वर के अभिषिक्त को घात किया॥ १७। और दाऊद ने साऊल और उस के बेटे यहूनतन पर इस बिलाप से बिलाप किया॥ १८। [और उस ने यह भी उन्हें आज्ञा किई कि यहूदाह के संतान को धनुष सिखावें देख यशर की पुस्तक में लिखा है॥ १९।] कि इसराएल की सुंदरता तेरे ऊंचे स्थानों पर जूझ गई बलवंत कैसे मारे पड़े हैं॥ २०। जअत में मत कहो और अस्कलून की सड़कों में मत प्रचारो न हो कि फिलिस्तियों की बेटियां आनंद करें न हो कि अखतनों की लड़कियां जय जय करें॥ २१। हे जिलबूअ के पहाड़ो ओस और मेंह तुम पर न पड़ें और न भेंटों का खेत होवे क्योंकि वहां बलवंत की ढाल तुच्छता से फेंकी गई साऊल की ढाल जैसे कि वुह अभिषिक्त न हुआ॥ २२। जूझे हुए के लोहू और बलवंत की चिकनाई से यहूनतन का धनुष उलटा न फिरा और साऊल की तलवार छूछी न फिरी॥ २३।

साऊल और यहूनतन अपने जीवन में प्रिय और शोभित थे और अपनी मृत्यु में वे अलग न किये गये वे गिद्ध से अधिक फुरतीले थे वे सिंहों से बलवंत थे॥ २४। हे इसराएल की बेटियो साऊल पर रोओ जिस ने तुम्हें बैजनी बस्त्र पहिनाया जिस ने सोने के आभूषण तुम्हारे बस्त्र पर संवारा॥ २५। संग्राम के मध्य बलवंत कैसे गिर गये हे यहूनतन त अपने ऊंचे स्थानों में मारा गया॥ २६। हे मेरे भाई यहूनतन तेरे लिये मैं दुःखित हूं तू मेरे लिये अति शोभित था तेरी प्रीत मुझ पर अचंभित थी स्त्रियों की प्रती से अधिक॥ २७। बलवंत कैसे गिर गये और संग्राम के हथियार नष्ट हुए।

२ दूसरा पर्ब्व।

और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से बूझा कि मैं यहूदाह के किसी नगरों में चढ़ जाऊं परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़ जा तब दाऊद ने कहा कि किधर चढ़ जाऊं उस ने कहा कि हबरून को॥ २। सो दाऊद उधर चढ़ गया और उस की दोनों पत्नी भी यअज़रएली अख़िनुअम और नबाल की पत्नी करमिली अबिजैल॥ ३। और उस के लोग जो उस के साथ थे दाऊद हर एक जन को उस के घराने समेत ऊपर लाया और वे हबरून के नगरों में आ बसे॥ ४। तब यहूदाह के लोग आये और उन्हों ने वहां दाऊद को यहूदाह के घराने पर राज्याभिषेक किया और लोगों ने दाऊद से कहा कि यबीस-जिलिअद के मनुष्यों ने साऊल को गाड़ा॥ ५। तब दाऊद ने यबीस-जिलिअद के लोगों को दूत से कहला भेजा कि परमेश्वर का धन्य क्योंकि तुम ने अपने प्रभु साऊल पर यह अनुग्रह किया और उसे गाड़ा॥ ६। अब परमेश्वर तुम पर अनुग्रह और सच्चाई करे और मैं भी इस अनुग्रह का पलटा तुम्हें देऊंगा इस कारण कि तुम ने यह काम किया है॥ ७। सो अब तुम्हारी भुजा बली होवें और शूरता के बेटे होओ क्योंकि तुम्हारा प्रभु साऊल मर गया और यहूदाह के घराने ने भी मुझ अपने पर राज्याभिषेक किया॥ ८। परंतु नैयिर के बेटे अबिनैयिर ने जो साऊल का सेनापति था साऊल के बेटे अश्बोशीश को लिया और उसे महनैन में

पहुंचाया॥ ९। और उसे जिलिअद और अशूरी और यज़रअएल और इफ़रायम और बिनयमीन और समस्त इसराएल पर राजा किया॥ १०। और साऊल के बेटे अशबोशीश की बय चालीस बरस की थी जब वुह इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने दो बरस राज्य किया परंतु यहूदाह के घराने ने दाऊद का पीछा किया॥ ११। और जिन दिनों में दाऊद यहूदाह के घराने पर हबरून में राजा था सो साढ़े सात बरस था॥ १२। फिर नैयिर के बेटे अबिनैयिर और साऊल के बेटे अशबोशीश के सेवक महनैन से निकल के जिबऊन को गये॥ १३। और ज़रूयाह का बेटा यूअब दाऊद के सेवकों को लेके निकला और जिबऊन के कुंड पर दोनों मिल गये और बैठ गये एक कुंड की इस अलंग दूसरा कुंड की उस अलंग॥ १४। तब अबिनैयिर ने यूअब से कहा कि तरुणों को उठने और हमारे आगे लीला करने दीजिये यूअब बोला कि उठें॥ १५। तब गिनती में बिनयमीन के बारह जन जो साऊल के बेटे अशबोशीश की ओर से थे उठे और दाऊद के सेवकों में से बारह जन निकले॥ १६। सो उन में से हर एक जन ने अपने अपने संगी का सिर पकड़ा और अपने संगी के पंजर में तलवार गोद दिई सो वे एकट्ठे गिर पड़े इस लिये उस स्थान का नाम हलकात हसुरीम हुआ जो जिबऊन में है॥ १७। और उस दिन बड़ा संग्राम हुआ और अबिनैयिर और इसराएल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे हार गये॥ १८। और ज़रूयाह के तीन बेटे यूअब और अबिशै और असहेल वहां थे और असहेल बनैली हरिणी की नाईं दौड़ता था॥ १९। और असहेल ने अबिनैयिर का पीछा किया और वुह अबिनैयिर के पीछे से दहिने बायें न मुड़ा॥ २०। तब अबिनैयिर ने पीछे देख के कहा कि तू असहेल है वुह बोला हां॥ २१। और अबिनैयिर ने उसे कहा कि दहिनी अथवा बाईं ओर फिर और तरुणों में से एक को पकड़ और उसे लूट ले परंतु उस का पीछा करने से असहेल न फिरा॥ २२। और अबिनैयिर ने असहेल को फिर कहा कि मेरा पीछा करने से मुड़ किस कारण मैं तुझे भूमि पर मारके डाल देऊं फेर क्योंकर मैं तेरे भाई यूअब को अपना मुंह दिखाऊं॥ २३। तथापि उस ने मुड़ने को न माना तब अबिनैयिर ने उलटे भाले से

पांचवीं पसुली के नीचे मारा और भाला उस के पीछे से निकल पड़ा और वहां गिर के उसी स्थान में वुह मर गया और ऐसा ऊआ कि जितने उस स्थान में आते थे जहां असहेल गिर के मर गया था खड़े रहते थे॥ २४। तब यूअब और अबिशै भी अबिनैयिर के पीछे पड़े और जब वे अम्मः के टीले को जो जिबऊन के बन के मार्ग में जीहा के आगे है पऊंचे तब सूर्य्य अस्त ऊआ॥ २५। और बिनयमीन के संतानों ने एकट्ठे होके अबिनैयिर की सहाय किई और सब के सब मिल के एक जथा बन के एक पहाड़ की चोटी पर खड़े ऊए॥ २६। तब अबिनैयिर ने यूअब को पुकार के कहा कि क्या तलवार सदा लों नाश करेगी क्या तू नहीं जानता है कि अंत में कड़ुवाहट होगी कब लों तू लोगों को अपने भाइयों का पीछा करने से न रोकेगा॥ २७। तब यूअब ने कहा कि जीवते ईश्वर की किरिया यदि तू न कहता तो निश्चय लोगों में से हर एक अपने भाई का पीछा छोड़ के भोर ही को फिर जाता॥ २८। फिर यूअब ने नरसिंगा फूंका और सब लोग ठहर गये और इसराएल का पीछा न किया और लड़ाई भी थम गई॥ २९। और अबिनैयिर अपने लोगों समेत चौगान से होके रात भर चला गया और यरदन पार उतरा और समस्त बितरून से चल के महनैन में पऊंचा॥ ३०। और यूअब अबिनैयिर का पीछा करने से उलटा फिरा और उस ने सारे लोगों को एकट्ठा किया तब दाऊद के सेवकों में से असहेल को छोड़ उन्नीस जन घटे थे॥ ३१। परंतु दाऊद के सेवकों ने बनयमीनियों में से और अबिनैयिर के लोगों में से तीन सौ साठ जन मारे॥ ३२। और उन्हों ने असहेल को उठाया और उस के पिता की समाधि में जो बैतलहम में है गाड़ा और यूअब अपने लोगों समेत रात भर चला गया और पौ फटते ऊए हबरून में पऊंचा॥

३ तीसरा पर्ब्ब॥

सो साऊल के और दाऊद के घरानों में बऊत दिन लों लड़ाई होती रही परंतु दाऊद बलवंत होता गया और साऊल का घराना निर्बल होता गया॥ २। और हबरून में दाऊद के बेटे उत्पन्न ऊए उस

का पहिलौंठा अमनून जो यज़रअएली अखिनुअम से था॥ ३। और दूसरा किलिअब जो करमिली नबाल की पत्नी अबिजैल से ज़ुआ और तीसरा अबिसलुम जो जश्‌र के राजा तलमी की बेटी मअक: से था ४। और चौथा हगीस का बेटा अदूनियाह और पांचवां अबितल का बेटा शफ़तियाह॥ ५। और छठवां यातिरिआम जो दाऊद की पत्नी एगल: से था ये सब दाऊद के लिये हबरून में उत्पन्न ज़ुए॥ ६। और जब लों साऊल और दाऊद के घरानों में युद्ध होता रहा ऐसा ज़ुआ कि अबिनैयिर ने आप को साऊल के घराने के लिये बली किया॥ ७। और साऊल की एक दासी थी जिस का नाम रिसफ: था अयाह की बेटी और इसबुसत ने अबिनैयिर से कहा कि तू क्यों मेरे पिता की दासी के पास गया है॥ ८। तब अबिनैयिर ने इसबुसत की बातों से अति कोपित होके कहा कि क्या मैं कूकर का सिर ह्रूं कि मैं यहूदाह का साम्ना करके आज के दिन लों तेरे पिता साऊल के घराने पर और उस के भाइयों और उस के मित्रों पर दया करता ह्रूं और तुझे दाऊद के हाथ में नहीं सौंपा है कि तू मुझे इस स्त्री के विषय में दोष लगाता है॥ ९। सो अब जैसी परमेश्वर ने दाऊद से बाचा बांधी है वैसा ही यदि मैं न करूं तो परमेश्वर अबिनैयिर से ऐसा ही और उसे अधिक करे॥ १०। कि साऊल के घराने से राज्य पलट डालूं और दाऊद के सिंहासन को इसराएल पर और यहूदाह पर दान से लेके बिअरसबः लों स्थिर करूं॥ ११। तब वुह अबिनैयिर को एक बात का उत्तर न दे सका क्योंकि वुह उसे डरता था॥ १२। और अबिनैयिर ने अपने विषय में दाऊद पास दूत से कहला भेजा कि देश किसका है मुझ से बाचा बांध और देख कि मेरा हाथ तेरे साथ होगा कि सारे इसराएलियों को तेरी ओर फेरूं॥ १३। तब वुह बोला अच्छा मैं तुझ से बाचा बांधूंगा परंतु मुझ से एक बात चाहता ह्रूं और वुह जो यह है कि तू मेरा मुंह न देखेगा जब लों पहिले साऊल की बेटी मिकल को अपने साथ लावे जब तू मेरा मुंह देखेगा॥ १४। और दाऊद ने साऊल के बेटे इसबुसत के पास यह कहके दूतों को भेजा कि मेरी पत्नी मिकल को जिसे मैं ने फिलिस्तियों की सौ खलड़ियां देके बियाहा है सौंप दे॥ १५। तब इसबुसत ने भेज के उस के पति लाईश के बेटे फ़लतिएल से उसे

मंगवाया॥ १६। और उस का पति उस के पीछे पीछे बहूरीम लों रोता चला गया तब अबिनैयिर ने उसे कहा कि चल फिर जा तब वुह फिर गया॥ १७। और अबिनैयिर ने इसराएल के प्राचीनों से संवाद करके कहा कि तुम तो पहिले ही चाहते थे कि दाऊद को अपना राजा करो॥ १८। दाऊद के विषय में कहा है कि मैं अपने दास दाऊद की ओर से अपने इसराएली लोगों को फिलिस्तियों के और उन के सब बैरियों के हाथ से बचाऊंगा॥ १९। और अबिनैयिर ने बिनयमीनों के कानों में भी कहा और फिर अबिनैयिर हबरून को चला कि दाऊद के कानों में भी कहे कि इसराएलियों को और बिनयमीनियों के सारे घराने को अच्छा लगा॥ २०। सो अबिनैयिर हबरून में दाऊद पास आया और बीस जन उस के साथ थे और दाऊद ने अबिनैयिर का और उन लोगों का जो उस के साथ थे नेउंता किया॥ २१। और अबिनैयिर ने दाऊद से कहा कि अब मैं उठ के जाऊंगा और सारे इसराएल को अपने प्रभु राजा के लिये एकट्ठा करूंगा जिसतें वे तुझ से बाचा बांधें और तू अपनी इच्छा के समान उन पर राज्य करे तब दाऊद ने अबिनैयिर को बिदा किया और वुह कुशल से चला गया॥ २२। और देखो कि उस समय दाऊद के सेवक और यूअब एक जथा से बहुत सी लूट अपने साथ लेके आये परंतु अबिनैयिर हबरून में दाऊद पास न था क्योंकि उस ने उसे बिदा किया था और वुह कुशल से चला गया था॥ २३। जब यूअब और सेना के लोग जो उस के साथ थे पहुंचे तब उन्हों ने यह कहके यूअब से कहा कि नैयिर का बेटा अबिनैयिर राजा पास आया था और उस ने उसे फेर दिया और वुह कुशल से चला गया॥ २४। तब यूअब राजा पास गया और बोला कि आप ने क्या किया देखिये अबिनैयिर आप के पास आया और आप ने उसे क्यों छोड़ दिया कि वुह चल निकला॥ २५। आप नैयिर के बेटे अबिनैयिर को जानते हैं कि वुह आप को छल देने और आप के बाहर भीतर आने जाने से और सब जो आप करते हैं जान्ने को आया था॥ २६। तब यूअब ने दाऊद पास से निकल के अबिनैयिर के पीछे दूत भेजे जो उसे हासीरः के कूयें से फेर लाये परंतु दाऊद ने न जाना॥ २७। और जब अबिनैयिर हबरून को फिर आया यूअब उसे फाटक

की एक अलंग निराले में उसे बात करने को ले गया और वहां उस की पांचवीं पसुली के तले यहां लों गोदा कि वुह मर गया क्योंकि उस ने उस के भाई असहेल को मारा॥ २८। और उस के पीछे जब दाऊद ने सुना वुह बोला कि मैं और मेरा राज्य परमेश्वर के आगे नैयिर के बेटे अबिनैयिर के लोहू से सदा निर्दोष हैं॥ २९। वुह यूअब के सिर पर और उस के पिता के समस्त घराने पर होवे और यूअब के घराने में एक भी ऐसा न हो जो प्रमेही अथवा कोढ़ी और जो लाठी टेक के न चले और तलवार से मारा न जाय और रोटी का आधीन न हो॥ ३०। सो यूअब और उस के भाई अबिशै ने अबिनैयिर को घात किया क्योंकि उस ने उन के भाई असहेल को जिबऊन के बीच रण में मारा था॥ ३१। और दाऊद ने यूअब को और उस के सारे साथियों को कहा कि अपने कपड़े फाड़ो और टाट ओढ़ो और अबिनैयिर के आगे आगे बिलाप करो और दाऊद राजा आप अर्थी के पीछे पीछे गया॥ ३२। और उन्हों ने अबिनैयिर को हबरून में गाड़ा और राजा अपना शब्द उठा के अबिनैयिर की समाधि पर रोया और सब लोग रोये॥ ३३। और राजा ने अबिनैयिर पर यों बिलाप करके कहा कि अबिनैयिर मूढ़ की नाईं मूआ॥ ३४। तेरे हाथ बंधे न थे तेरे पाओं में पैकड़ियां पड़ीं न थीं तू यों गिरा जैसा कोई दु ं के संतान के हाथ में पड़के गिरता है तब उस पर सब के सब दोहरा के रोये॥ ३५। और जब सब लोग आये और चाहा कि दाऊद को दिन रहते कुछ खिलावें दाऊद ने किरिया खाके कहा कि यदि मैं सूर्य्य अस्त होने से आगे रोटी खाऊं अथवा कुछ चीखूं तो ईश्वर मुझ से ऐसा और इस्से अधिक करे॥ ३६। और सभों ने सोचा और उन की दृष्टि में अच्छा लगा क्योंकि जो कुछ राजा करता था सो सब को अच्छा लगता था॥ ३७। क्योंकि सब लोगों ने और सारे इसराएलियों ने उस दिन बूझा कि नैयिर के बेटे अबिनैयिर को मारना राजा की ओर से न था॥ ३८। और राजा ने अपने सेवकों से कहा कि क्या तुम नहीं जानते हो कि आज के दिन एक कुंअर और एक महाजन इसराएल में से गिर गया॥ ३९। और मैं आज के दिन दुर्बल हूं यद्यपि राज्याभिषिक्त

हूं और ये लोग अर्थात् ज़रूयाह के बेटे मुझ से अति बली हैं परमेश्वर दुष्ट को उस की दुष्टता के समान फल देगा ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

और जब साऊल के बेटे ने सुना कि अबिनेयिर हबरून में मर गया तो उस की बांह टूट गई और सारे इसराएल व्याकुल हुए॥ २। और साऊल के बेटे के दो जन थे जो जथा के प्रधान थे एक का नाम बअ़ना और दूसरे का रैकाब दोनों बिनयमीन के संतान में बिअ़राती रूम्मान के बेटे थे क्योंकि बरूत भी बिनयमीन में गिना जाता था॥ ३। तब बिअ़राती जत्तैन को भाग गये और आज के दिन लों वे वहीं रहते हैं॥ ४। और साऊल के बेटे यहूनतन का एक बेटा था जो पांव का लंगड़ा था जब से साऊल और यहूनतन यज़रअ़एल का संदेश आया तब वुह पांच बरस का था और उस की दाई उसे लेके भाग गई और उस ने भागने में शीघ्रता किई तब ऐसा हुआ कि वुह गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया और उस का नाम मिफ़िबूसत था॥ ५। और रूम्मान के बेटे बिअ़राती रैकाब और बअ़ना आये और दिन के घाम के समय में इसबुसत के घर में पहुंचे जो दो पहर को बिछौने पर लेटा था॥ ६। और वे घर के मध्य में ऐसा आये जैसा कि गोहूं लेने जाते हैं और उन्हों ने उस की पांचवीं पसुली के नीचे मारा और रैकाब और उस के भाई बअ़ना बच निकले॥ ७। क्योंकि जब वे घर में पैठे वुह अपने शयन स्थान में बिछौने पर पड़ा था सो उन्हों ने उसे मारा और घात किया और उस का सिर काटा और सिर ले लिया और रात भर चौगान के मार्ग भागे चले गये॥ ८। और इसबुसत का सिर हबरून में दाऊद पास लाये और राजा को कहा कि यह साऊल के बेटे आप के बैरी इसबुसत का सिर है जो आप के प्राण का गांहक था सो परमेश्वर ने आज के दिन मेरे प्रभु राजा का पलटा साऊल और उस के वंश से लिया॥ ९। तब दाऊद ने रैकाब और उस के भाई बअ़ना को जो बिअ़रात रूम्मान के बेटे थे उत्तर दिया और कहा कि परमेश्वर के जीवन सों जिस ने मेरे आत्मा को समस्त बिपत्ति से छुड़ाया॥ १०। जब किसी ने मुझे

कहा कि देख साऊल मर गया और समझा कि सुसंदेश पहुंचाता है तब मैं ने उसे पकड़ा और सीकलग में घात किया यह मैं ने उसे उस के संदेश लाने का पलटा दिया॥ ११। कितना अधिक जब दुष्टों ने एक धर्म्मी जन को उस के घर में घुस के उस के बिछौने पर मारा तो क्या मैं अब उस का पलटा तुम से न लूंगा और तुम्हें पृथिवी पर से उठा न डालूंगा॥ १२। तब दाऊद ने अपने तरुणों को आज्ञा किई कि उन्हें मार डालें और उन के हाथ और पांव काट डालें और उन्हें हबरून के कुंड पर लटका देवें परंतु इसबुसत के सिर को उन्हों ने लेके हबरून के बीच अबिनैयिर की समाधि में गाड़ दिया।

५ पांचवां पर्ब्ब।

तब इसराएल की समस्त गोष्ठी हबरून में दाऊद पास आई और उसे कहा कि देख हम तेरी हड्डी और तेरा मांस हैं॥ २। और अगिले समय में भी जब साऊल हमारा राजा था तब तू इसराएल को बाहर भीतर ले जाया करता था और परमेश्वर ने तुझे कहा है कि तू मेरे इस-राएली लोगों को चरावेगा और तू इसराएल का प्रधान होगा॥ ३। सो इसराएल के सारे प्राचीन हबरून में राजा पास आये और दाऊद राजा ने हबरून में उन के साथ परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और उन्हों ने दाऊद को इसराएल पर राज्याभिषेक किया॥ ४। और जब दाऊद राज्य करने लगा तब तीस बरस का था और उस ने चालीस बरस राज्य किया॥ ५। उस ने हबरून में सात बरस छः मास यहूदाह पर राज्य किया और यरूसलम में सारे इसराएल और यहूदाह पर तेंतीस बरस॥ ६। तब राजा और उस के लोग उस देश के बासी यबूसियों कने गये उन्हों ने दाऊद को कहा कि जब लों तू अंधों और लंगड़ों को दूर न करे यहां आने न पावेगा यह समझ के कि दाऊद यहां न आ सकेगा॥ ७। तिस पर भी दाऊद ने सैहून का गढ़ ले लिया वही दाऊद का नगर हुआ॥ ८। और दाऊद ने उस दिन कहा कि जो कोई पनाले लों पहुंचे और यबूसियों और लंगड़ों और अंधों को जिस्से दाऊद को घिन है मारे सोई सेना का प्रधान होगा इस लिये यह कहावत कहते हैं कि अंधे और लंगड़े

घर में पैठने न पावेंगे॥ ९। और दाऊद गढ़ में रहा और उस ने उस का नाम दाऊद का नगर रक्खा और दाऊद ने मिल्लो की चारों ओर और उस के भीतर बनाये॥ १०। और दाऊद बढ़ता गया और परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर उस के साथ था॥

११। तब सूर के राजा हीराम ने आरज वृक्ष और बढ़ई और पत्थर के गढ़वैये दूतों के साथ दाऊद पास भेजे और उन्हों ने दाऊद के लिये भवन बनाया॥ १२। और दाऊद को सूझ पड़ा कि परमेश्वर ने मुझे इसराएल पर राजा स्थिर किया और मेरे राज्य को अपने लोग इसराएल के लिये स्थिर किया॥ १३। और दाऊद ने हबरून से आके यरूसलम में और सहेलियां और पत्नियां किईं और दाऊद के और भी बेटा बेटी उत्पन्न ऊए॥ १४। और उस के उन बेटों के नाम जो यरूसलम में उत्पन्न ऊए ये थे शमूअ और शोबाब और नातन और सुलेमान॥ १५। और इबहार और इलीसूअ: और नफग और यफीअ॥ १६। और इलिसम: और इलयदः और इलिफ़लत॥

१७। परंतु जब फ़िलिस्तियों ने सुना कि उन्हों ने दाऊद को अभिषेक करके इसराएल का राजा किया तब सारे फ़िलिस्ती दाऊद की खोज को चढ़ आये और दाऊद सुन के गढ़ में उतरा॥ १८। और फ़िलिस्ती आये और रिफ़ाइम की तराई में फैल गये॥ १९। तब दाऊद ने परमेश्वर से यह कहके बूझा कि मैं फ़िलिस्तियों पर चढ़ जाऊं तू उन्हें मेरे बश में कर देगा परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं निःसंदेह फ़िलिस्तियों को तेरे हाथ में सौंपूंगा॥ २०। तब दाऊद बअल-फरसीन में आया और वहां उन्हें मार के कहा कि परमेश्वर मेरे आगे मेरे बैरियों पर ऐसा टूट पड़ा जैसा पानियों का दरार इस लिये उस ने उस स्थान का नाम बअलफरासीन दरारों का चौगान रक्खा॥ २१। और उन्हों ने अपनी मूर्त्तिन को वहीं छोड़ा और दाऊद और उस के लोगों ने उन्हें जला दिया॥ २२। और फ़िलिस्ती फिर चढ़ आये और रिफ़ाइम की तराई में फैल गये॥ २३। और जब दाऊद ने परमेश्वर से बूझा उस ने कहा कि तू मत चढ़ जा परंतु उन के पीछे से घूम और तूत के पेड़ों के साम्ने होके उन पर जा पड़॥ २४। और यों होवे कि जब

तू तूत के पेड़ों के ऊपर जाने का शब्द सुने तो आप को चौकस कर क्योंकि तब परमेश्वर तेरे आगे आगे चलेगा कि फ़िलिस्तियों की सेना को मारे॥ २५। और जैसी कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी दाऊद ने वैसा ही किया और फ़िलिस्तियों को जिबऊ से लेके जज़र लों मारा।

६ छठवां पर्ब्ब।

फिर दाऊद ने इसराएल में से तीस सहस्र चुने ऊओं को एकट्ठा किया॥ २। और दाऊद सारे लोगों को लेके यहूदाह के बअ़ली से चला कि वहां से ईश्वर की मंजूषा को लावे जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर कहाता है जो करोबियों में रहता है॥ ३। और उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा को नई गाड़ी पर धराया और उसे अबिनदाब के घर से जो जिबअ़: में था निकाल लाये और उस नई गाड़ी को अबिनदाब के बेटों ने जो उज़्ज़: और अख़यू थे हांका॥ ४। और वे अबिनदाब के घर से जो जिबअ़: में था उसे निकाल लाये और ईश्वर की मंजूषा के साथ साथ गये और अख़यू मंजूषा के आगे आगे चला॥ ५। और दाऊद और इसराएल के सारे घराने देवदारु की लकड़ी के सब भांति के बाजे जैसे कि बीणा और सारंगियां और तबले और तंबूरे और झांझ लेके परमेश्वर के आगे आगे बजाते चले॥ ६। और जब वे नकून के खलिहान पर पहुंचे तब उज़्ज़: ने हाथ बढ़ा के ईश्वर की मंजूषा को थाम लिया क्योंकि बैलों ने उसे हिलाया था॥ ७। तब परमेश्वर का क्रोध उज़्ज़: पर भड़का और ईश्वर ने उसे उस की ढिठाई के कारण मारा और वुह ईश्वर की मंजूषा के लग मर गया॥ ८। और इस कारण कि परमेश्वर ने उज़्ज़: पर दरार किया दाऊद उदास ऊआ और उस ने उस स्थान का नाम आज लों परज़ उज़्ज़ा का दरार रक्खा॥ ९। और दाऊद उस दिन परमेश्वर से डरा और बोला कि परमेश्वर की मंजूषा मुझ पास क्योंकर आवेगी॥ १०। और दाऊद ने न चाहा कि परमेश्वर की मंजूषा को अपने नगर में ले जाके अपने पास रक्खे परंतु दाऊद उसे एक अलंग आ़बिदएदूम गाती के घर ले गया॥ ११। और परमेश्वर की मंजूषा आ़बिदएदूम गाती के घर में तीन मास लों रही और परमेश्वर ने आ़बिद

एदूम को और सारे घराने को आशीष दिया॥ १२। और यह दाऊद राजा से कहा गया कि परमेश्वर ने आबिदएदूम को और उस की हर एक बस्तु को अपनी मंजूषा के लिये आशीष दिया तब दाऊद गया और ईश्वर की मंजूषा को आबिदएदूम के घर से अपने नगर में आनंद से चढ़ा लाया॥ १३। और यों हुआ कि जब परमेश्वर की मंजूषा के उठवैये छः डग चलते थे तब दाऊद बैल और पलेरुओं को बलि करता था॥ १४। और दाऊद परमेश्वर के आगे सूती अफूद कटि में बांधे हुए अपनी शक्ति भर नाचते नाचते चला॥ १५। और दाऊद और इसराएल के सारे घराने परमेश्वर की मंजूषा को ललकारते और नरसिंगे के शब्द के साथ ले आये॥ १६। और ज्यों परमेश्वर की मंजूषा दाऊद के नगर में पहुंची साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से दृष्टि किई और दाऊद राजा को परमेश्वर के आगे उछलते और नाचते देखा और उस ने अपने मन में उस की निंदा किई॥ १७। और वे परमेश्वर की मंजूषा को भीतर लाये और उसे उस के स्थान पर उस तंबू के मध्य जो दाऊद ने उस के लिये खड़ा किया था रख दिया और दाऊद ने होम की भेंटें और कुशल की भेंटें परमेश्वर के आगे चढ़ाईं॥ १८। और जब दाऊद होम की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ा चुका तब उस ने लोगों को सेनाओं के परमेश्वर के नाम से आशीष दिया॥ १९। और उस ने सारे लोगों को अर्थात् इसराएल की सारी मंडली को क्या स्त्री क्या पुरुष हर एक को एक एक रोटी और एक एक बोटी और एक एक कटोरा दाखरस दिया और समस्त लोग अपने अपने घर को चले गये॥ २०। तब दाऊद अपने घराने को आशीष देने को फिरा उस समय साऊल की बेटी मीकल दाऊद की भेंट को निकली और बोली कि इसराएल का राजा आज क्या ही ऐश्वर्यमान था जिस ने आज अपने सेवकों की दासियों की आंखों में आप को ऐसा उघारा जैसा कि तुच्छ जन आप को निर्लज्जा से उघारता है॥ २१। तब दाऊद ने मीकल से कहा कि यह परमेश्वर के आगे था जिस ने मुझे तेरे पिता के और उस के सारे घराने के आगे चुना और अपने इसराएल लोग पर मुझे आज्ञाकारी किया इस लिये मैं परमेश्वर के आगे लीला करूंगा॥ २२। और मैं इस्से भी अधिक तुच्छ हूंगा और अपनी दृष्टि में नीचा हूंगा और

जिन दासियों के विषय में तू ने कहा है मैं उन से प्रतिष्ठा पाऊंगा॥ २३। इस लिये साऊल की बेटी मीकल अपने जीवन भर निर्वंश रही।

७ सातवां पर्ब्ब।

और ऐसा हुआ कि जब राजा घर में बैठा था और परमेश्वर ने उसे उस के सारे बैरियों से चारों ओर चैन दिया॥ २। तब राजा ने नातन आगमज्ञानी को कहा कि देख मैं आरज वृक्ष के घर में रहता हूं परंतु ईश्वर की मंजूषा ओझलों में रहती है॥ ३। तब नातन ने राजा से कहा कि जा जो कुछ तेरे मन में है उसे कर क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है॥ ४। और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वर का वचन यह कहके नातन को पहुंचा॥ ५। कि जा और मेरे सेवक दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मेरे निवास के लिये तू एक घर बनावेगा॥ ६। जब से इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल लाया मैं ने तो आज के दिन लों घर में बास न किया परंतु तंबू में और डेरे में फिरा किया॥ ७। जहां जहां मैं सारे इसराएल के संतान के साथ फिरता रहा क्या मैं ने इसराएल की किसी गोष्ठियों से कहा जिसे मैं ने आज्ञा किई कि मेरे इसराएल लोगों को चरावे कि तुम मेरे लिये आरज काष्ठ का घर क्यों नहीं बनाते॥ ८। अब इस लिये तू मेरे सेवक दाऊद से कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे भेड़शाले में से भेड़ का पीछा करने से लेके अपने इसराएली लोगों पर अध्यक्ष किया॥ ९। और जहां जहां तू गया मैं तेरे साथ साथ रहा और तेरे सारे बैरियों को तेरे साम्ने से मार गिराया है और मैं ने जगत के महान लोगों के नाम के समान तेरा नाम बढ़ाया है॥ १०। इस्से अधिक मैं अपने इसराएली लोगों के लिये एक स्थान ठहराऊंगा और उन्हें लगाऊंगा जिसतें वे अपने ही स्थान में बसें और फिर अस्थिर न होवें और दुष्टता के वंश आगे की नाईं उन्हें न सतावें॥ ११। और उस समय की नाईं जब से मैं ने न्यायियों को अपने इसराएली लोगों पर ठहराया और तुझे तेरे सारे बैरियों से चैन दिया परमेश्वर तुझे यह भी कहता है कि मैं तेरे लिये घर बनाऊंगा॥ १२। जब तेरे दिन पूरे होंगे और तू अपने पितरों के साथ शयन

करेगा तब मैं तेरे पीछे तेरे बंश को उभारूंगा जो तेरे ही उदर से होगा और उस के राज्य को स्थिर करूंगा॥ १३। मेरे नाम के लिये वही घर बनावेगा और मैं उस के राज्य के सिंहासन को सदा लों स्थिर करूंगा॥ १४। मैं उस का पिता हूंगा और वुह मेरा बेटा होगा यदि वुह अपराध करे तो मैं उसे मनुष्यों की छड़ी से और मनुष्यों के संतान की मार से ताड़ना करूंगा॥ १५। परंतु मेरी दया उस्से अलग न होगी जिस रीति से कि मैं ने साजल से उठा लिई जिसे मैं ने तेरे आगे से अलग किया॥ १६। परंतु तेरा घर और तेरा राज्य तेरे आगे सनातन लों स्थिर रहेगा और तेरा सिंहासन नित्य स्थिर रहेगा॥ १७। सो नातन ने इस समस्त दर्शन के समान और समस्त बचन के तुल्य दाऊद से कहा॥ १८। तब दाऊद राजा भीतर गया और परमेश्वर के आगे बैठ के कहा कि हे ईश्वर परमेश्वर मैं कौन और मेरा घर क्या कि तू ने मुझे यहां लों पहुंचाया॥ १९। और तेरी दृष्टि में हे ईश्वर परमेश्वर यह भी छोटी बात थी परंतु तू ने अपने सेवक के घर के बिषय में आगे को बहुत दिन के लिये कहा और हे ईश्वर परमेश्वर क्या मनुष्य का यह व्यवहार है॥ २०। और दाऊद तुझे क्या कह सक्ता है क्योंकि हे ईश्वर परमेश्वर तू अपने सेवक को जानता है॥ २१। क्योंकि अपने मन के और अपने बचन के कारण तू ने ये सारे महत्कार्य्य किये कि अपने सेवक को जनावे॥ २२। इस कारण हे ईश्वर परमेश्वर तू महान है क्योंकि तेरे समान कोई नहीं और तुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं उन सभों के समान जो हम ने अपने कानों से सुना है॥ २३। और जगत में तेरे इसराएल लोग के समान पृथिवी में कौन सी जाति है जिसे अपना ही लोग बनाने के लिये ईश्वर छुड़ाने गया कि अपना नाम करे और जिसतें तुम्हारे लिये बड़े बड़े और भयंकर कार्य्य अपने देश के लिये अपने लोगों के आगे करे जिन्हें तू ने मिस्र से जातिगणों से और उन के देवतों से छुड़ाया॥ २४। क्योंकि तू ने अपने लिये अपने इसराएल लोग को दृढ़ किया कि अपने लिये सनातन के लोग होवें और हे परमेश्वर तू उन का ईश्वर हुआ॥ २५। और अब हे ईश्वर परमेश्वर उस बात को जो तू ने अपने सेवक के बिषय में और उस के घराने के

विषय में कहा है सदा लों स्थिर रख और अपने कहने के समान कर॥ २६। और यह कहके तेरा नाम सनातन लों बढ़ जाय कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर और तेरे सेवक दाऊद का घर तेरे आगे स्थिर होवे॥ २७। क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तू ने अपने सेवक के कान यह कहके खोले हैं कि मैं तेरे लिये घर बनाऊंगा सो तेरे सेवक ने अपने मन में पाया कि तेरे आगे यह प्रार्थना करे॥ २८। और अब हे ईश्वर परमेश्वर तू वही ईश्वर है और तेरी बातें सच्ची हैं और तू ने अपने सेवक से इस भलाई की बाचा दिई है॥ २९। सो इस लिये अनुग्रह करके अपने सेवक के घराने पर आशीष दे जिसतें वुह सनातन लों तेरे आगे बना रहे क्योंकि हे ईश्वर परमेश्वर तू ने कहा है सो तेरे आशीष से तेरे सेवक का घर सनातन लों आशीष पावे॥

८ आठवां पर्ब्ब।

और इस के पीछे दाऊद ने फ़िलिस्तियों को मारा और उन्हें बश में किया और दाऊद ने मिथेग अम्मः फ़िलिस्तियों के हाथ से लिया॥ २। और उस ने मोअब को मारा और उन्हें भूमि पर गिरा के रस्सी से नापा अर्थात् दो रस्सियों से बंधन करने को और एक पूरी रस्सी से जिलाने को और मोअबी दाऊद के सेवक हुए और भेंट लाये॥ ३। और दाऊद ने सूबः के राजा रिहोब के बेटे हददअ़ज़र को भी जब कि वुह अपना सिवाना छुड़ाने को फुरात नदी को गया मार लिया॥ ४। और दाऊद ने उस के एक सहस्र रथ और सात सौ घोड़चढ़ और बीस सहस्र पैदल लिये और समस्त रथों के घोड़ों की घोड़नसें काट डालीं परंतु उन में से सौ रथों के लिये रख छोड़ा॥ ५। और जब कि दमिश्क़ के सुरियानी हददअ़ज़र सूबः के राजा की सहाय को आये तब दाऊद ने सुरियानियों में से बाईस सहस्र लोग मार डाले॥ ६। तब दाऊद ने दमिश्क़ के सुरिया में चौकियां बैठाईं और सुरियानी दाऊद के सेवक हुए और भेंटें लाये और जहां कहीं दाऊद गया परमेश्वर ने उस की रक्षा किई॥ ७। और दाऊद ने हददअ़ज़र के सेवकों की सोने की ढालें लेके

यरूसलम में पक्कंचाईं॥ ८। श्रीर बतह से श्रीर बिश्ररानी से जो हदद-अज़र के नगर हैं दाऊद राजा बक्रत सा तांबा लाया॥ ९। श्रीर जब कि हमात के राजा तुग़ी ने सुना कि दाऊद ने हददअज़र की सारी सेना मारी॥ १०। तब तुग़ी ने अपने बेटे यूराम को दाऊद राजा पास भेजा श्रीर उस का कुशल पूछा श्रीर बधाई दिई इस कारण कि उस ने संग्राम करके हददअज़र को मार डाला क्योंकि हददअज़र तुग़ी से लड़ा करता था श्रीर अपने हाथ में चांदी के श्रीर सोने के श्रीर तांबे के पात्र लाये॥ ११। दाऊद राजा ने उन्हें उस चांदी श्रीर सोने सहित जो उस ने सब जातिगणों से जिन्हें उस ने बश में किया॥ १२। अर्थात् सुरिया से श्रीर मोअब से श्रीर अम्मून के संतान से श्रीर फिलस्तियों से श्रीर अमालीक से श्रीर सूबः के राजा रिहोब के बेटे हददअज़र से लूट में ले लिया था परमेश्वर को समर्पण किया॥ १३। श्रीर जब दाऊद अठारह सहस्र सुरियानियों को नोन की तराई में मार के फिर आया तब उस की कीर्त्ति फैली॥ १४। श्रीर उस ने अटूम में चौकियां बैठाईं श्रीर सारे अटूम में चौकियां श्रीर सारे अटूमी भी दाऊद के सेवक क्रए श्रीर जहां कहीं दाऊद गया परमेश्वर ने उस की रक्षा किई॥ १५। श्रीर दाऊद सारे इसराएल पर राज्य करता रहा श्रीर दाऊद अपनी समस्त प्रजा के लिये बिचार श्रीर न्याय करता था॥ १६। श्रीर ज़रूयाह का बेटा यूअब सेना पर था श्रीर अखिलूद का बेटा यह्रसफ़त स्मारक था॥ १७। अखितूब का बेटा सदूक श्रीर अबियतर का बेटा अखिमलक याजक थे श्रीर शिरायाह लेखक था॥ १८। श्रीर यह्रयदः का बेटा बिनायाह करीती श्रीर पलीती पर था श्रीर दाऊद के बेटे प्रधान आज्ञाकारी थे।

९ नवां पर्ब्ब।

फिर दाऊद ने कहा कि अब भी साऊल के घराने में से कोई बचा है कि मैं उस पर यह्रनतन के लिये क्रपा करूं॥ २। श्रीर साऊल के घराने का एक सेवक सीबा नाम था श्रीर जब उन्हों ने उसे दाऊद पास बुलाया राजा ने उसे कहा कि तू सीबा है वुह बोला मैं आप का सेवक॥ ३। तब राजा ने पूछा कि साऊल के घराने में से श्रीर कोई भी है जिसतें

मैं उस पर ईश्वरीय कृपा दिखाऊं ग्रीर सीबा ने राजा से कहा कि अब लों यहूनतन का एक लंगड़ा बेटा है॥ ४। तब राजा ने उसे पूछा वुह कहां है सीबा ने राजा से कहा कि देखिये अमिएल के बेटे मकीर के घर लोदीबार में है॥ ५। तब दाऊद राजा ने भेज के अमिएल के बेटे मकीर के घर से जो लोदीबार में है उसे मंगवा लिया॥ ६। ग्रीर जब साऊल के बेटे यहूनतन का बेटा मिफिबूसत दाऊद पास पहुंचा तब उस ने ग्रींधा गिर के दंडवत किई तब दाऊद ने कहा कि मिफिबूसत ग्रीर उस ने उत्तर दिया देखिये तेरा सेवक है॥ ७। ग्रीर दाऊद ने उसे कहा कि मत डर क्योंकि निश्चय तेरे पिता यहूनतन के लिये तुझ पर अनुग्रह करूंगा ग्रीर तेरे पिता साऊल की सारी भूमि तुझे फेर देऊंगा ग्रीर तू मेरे मंच पर नित भोजन किया कर॥ ८। तब उस ने दंडवत किई ग्रीर कहा कि तेरा सेवक क्या कि ग्राप मुझ से मरे हुए कुत्ते पर दृष्टि करें॥ ९। तब राजा ने साऊल के सेवक सीबा को बुलाया ग्रीर उसे कहा कि मैं ने सब जो कुछ कि साऊल का ग्रीर उस के घराने का था तेरे स्वामी के बेटे को दे दिया है॥ १०। सो तू अपने बेटों ग्रीर सेवकों समेत उस के लिये भूमि जोत ग्रीर ले ग्रा जिसतें तेरे स्वामी के खाने को रहे परंतु मिफिबूसत जो तेरे स्वामी का बेटा है नित मेरे मंच पर भोजन किया करेगा ग्रीर सीबा के पंद्रह बेटे ग्रीर बीस सेवक थे॥ ११। तब सीबा ने राजा से कहा कि सब जो मेरे प्रभु राजा ने अपने सेवक को कहा सो तेरा सेवक करेगा परंतु मिफिबूसत जो है सो मेरे मंच पर राज पुत्रों में से एक के समान खायगा॥ १२। ग्रीर मिफिबूसत का एक छोटा बेटा था जिस का नाम मीका था ग्रीर सब जितने कि सीबा के घर में रहते थे मिफिबूसत के सेवक थे॥ १३। सो मिफिबूसत यरूसलम में रहा क्योंकि वुह राजा के मंच पर सदा भोजन करता था ग्रीर दोनों पाग्रों से लंगड़ा था॥

१० दसवां पर्ब्ब।

उस के पीछे ऐसा हुग्रा कि अम्मून के संतान का राजा मर गया ग्रीर उस का बेटा हनून उस के राज्य पर बैठा॥ २। तब दाऊद

ने कहा कि मैं नाहस के बेटे हनून पर अनुग्रह करूंगा जैसा उस के पिता ने मुझ पर अनुग्रह किया सो दाऊद ने अपने सेवक को भेजा कि उस के पिता के लिये उसे शांति देवे और दाऊद के सेवक अम्मून के संतान के देश में पहुंचे॥ ३। और अम्मून के संतान के अध्यक्षों ने अपने प्रभु हनून को कहा कि तेरी दृष्टि में क्या दाऊद तेरे पिता की प्रतिष्ठा करता है कि उस ने शांतिदायकों को तेरे पास भेजा है क्या दाऊद ने अपने सेवकों को तेरे पास इस लिये नहीं भेजा है कि नगर को देख लेवें और उस का भेद लेवें और उसे नाश करें॥ ४। तब हनून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और हर एक की आधी दाढ़ी मुंड़वाई और उन के बस्त्रों को बीच से अर्थात् पुट्ठे लों काटा और उन्हें फेर भेजा॥ ५। सो दाऊद को संदेश पहुंचा और उस ने उन्हें आगे से लेने के लिये लोग भेजे इस कारण कि वे अत्यंत लज्जित थे सो राजा ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ियां बढ़ें यरीहो में रहो उस के पीछे चले आओ॥ ६। और अम्मून के संतान ने ज्यों देखा कि हम दाऊद के आगे दुर्गंध हैं तो अम्मून के संतान ने भेज के बैतरहूब के सुरियानियों के और सूबः के सुरियानियों के बीस सहस्र पैदल और मअकः के राजा से सहस्र जन और तूब के बारह सहस्र जन भाड़े पर लिये॥ ७। और दाऊद ने यह सुन के यूअब और सूरों की सारी सेना को भेजा॥ ८। तब अम्मून के संतान निकले और नगर के फाटक की पैठ में युद्ध के लिये पांती बांधी और सूबः के और रहूब के सुरियानी और तूब और मअकः आपी आप चौगान में थे॥ ९। जब यूअब ने अपने आगे पीछे लड़ाई का साम्ना देखा तब उस ने इसराएल के चुने हुए में से चुन लिये और सुरियानियों के साम्ने पांती बांधी॥ १०। और उबरे हुए लोगों को अपने भाई अबिशै को सोंपा कि अम्मून के संतान के आगे पांती बांधे॥ ११। और कहा कि यदि सुरियानी मुझ पर प्रबल होवें तो तू मेरी सहाय कीजियो परंतु यदि अम्मून के संतान तुझ पर प्रबल होवें तो मैं आके तेरी सहाय करूंगा॥ १२। ढाढ़स कर और अपने लोगों के लिये और अपने ईश्वर के नगरों के लिये पुरुषार्थ कर और परमेश्वर जो भला जाने सो करे॥ १३। तब यूअब और उस के साथ के लोग सुरियानियों के

सन्मुख बढ़े और वे उस के आगे से भागे॥ १४। और अम्मून के संतान भी यह देख के कि सुरियानी भागे वे भी अबिशै के आगे से भागे और नगर में घुसे सो यूअब अम्मून के संतान के पीछे से फिर के यरूसलम को आया॥ १५। और जब सुरियानियों ने देखा कि हम इसराएल के आगे मारे गये वे एकट्ठे बटुर गये॥ १६। और हददअज़र लोग भेज के नदी पार से सुरियानियों को ले आया और वे हीलम में आये और साबिक जो हददअज़र की सेना का प्रधान था उन के आगे आगे चला॥ १७। और जब दाऊद को कहा गया वुह सारे इसराएलियों को एकट्ठा करके यरदन पार उतरा और हिल्म को आया और सुरियानी ने दाऊद के सन्मुख पांती बांधी और उस्से लड़े॥ १८। और सुरियानी इसराएल के साम्ने से भागे और दाऊद ने सात सो रथों के सुरियानी और चालीस सहस्र घोड़चढ़े मारे और उन की सेना के प्रधान साबिक को मार लिया और वुह वहीं मर गया॥ १९। और जब उन राजाओं ने जो हदद-अज़र के सेवक थे देखा कि वे इसराएल के आगे मारे गये तब उन्हों ने इसराएलियों से मिलाप किया और उन की सेवा किई सो सुरियानी फेर अम्मून के संतान की सहाय करने को डरे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

और जब बरस बीत गया कि राजा लड़ाई पर चढ़ते हैं यों हुआ कि दाऊद ने अपने सेवकों को और समस्त इसराएल को यूअब के साथ भेजा और उन्हों ने अम्मून के संतान को नाश किया और रब्बः को घेर लिया परंतु दाऊद यरूसलम में रह गया॥ २। और एक संध्या काल को यों हुआ कि दाऊद अपने बिछौने पर से उठा और राज भवन की छत पर टहलने लगा और वहां से उस ने एक स्त्री को स्नान करते देखा और वह देखने में अत्यंत सुंदरी थी॥ ३। और दाऊद ने भेज के उस स्त्री का खोज किया किसी ने कहा कि क्या वुह इलिआम की बेटी बित्तसबअ़ ऊरियाह हित्ती की पत्नी नहीं है॥ ४। और दाऊद ने दूत भेज के उसे बुला लिया और वुह दाऊद पास आई सो उस ने उस्से रति किया क्योंकि वुह अपनी अपवित्रता से पवित्र हुई थी फिर वुह अपने घर को चली

गई॥ ५। और वुह स्त्री गर्भिणी ऊई और दाऊद को कहला भेजा कि मैं गर्भिणी हूं॥ ६। और दाऊद ने यूअब को कहला भेजा कि हित्ती ऊरियाह को मुझ पास भेज दे सो यूअब ने ऊरियाह को दाऊद पास भेज दिया॥ ७। और जब ऊरियाह उस पास आया तब दाऊद ने यूअब का और लोगें का कुशल क्षेम और लड़ाई का समाचार पूछा॥ ८। फिर दाऊद ने ऊरियाह को कहा कि अपने घर जा और अपने पांव धो तब ऊरियाह राजा के घर से निकला और उस के पीछे पीछे राजा के घर से भोजन गया॥ ९। पर ऊरियाह राजा के घर की डेवढ़ी पर अपने प्रभु के सेवकों के साथ सो रहा और अपने घर को न गया॥ १०। और जब दाऊद को कहा गया कि ऊरियाह अपने घर नहीं गया तब दाऊद ने ऊरियाह से कहा कि क्या तू यात्रा से नहीं आया फेर तू अपने घर क्यों न गया॥ ११। और ऊरियाह ने दाऊद से कहा कि मंजूषा और इसराएल और यहूदाह तंबूओं में रहते हैं और मेरा प्रभु यूअब और मेरे प्रभु के सेवक खुले चैागान में पड़े ऊए हैं और मैं क्योंकर अपने घर जाऊं और खाऊं पीऊं और अपनी स्त्री के साथ सो रहूं तेरे जीवन सों और तेरे प्राण के जीवन सों मैं ऐसा न करूंगा॥ १२। फिर दाऊद ने ऊरियाह को कहा कि आज के दिन भी यहीं रह जा और कल मैं तुझे भेजूंगा सो ऊरियाह उस दिन भी प्रातःकाल लों यरूसलम में रह गया॥ १३। तब दाऊद ने उसे बुला के अपने साम्ने खिलाया पिलाया और उसे उन्मत्त किया सांझ को वुह बाहर जाके अपने प्रभु के सेवकों के साथ अपने बिछैाने पर सो रहा परंतु अपने घर न गया॥ १४। और प्रातःकाल यों ऊआ कि दाऊद ने यूअब को चिट्ठी लिख के ऊरियाह के हाथ भेजी॥ १५। और उस ने चिट्ठी में यह लिखा कि ऊरियाह को भारी लड़ाई के आगे करो और उस के पीछे से हट जाओ जिसतें वुह मारा जाय॥ १६। और ऐसा ऊआ कि जब यूअब ने उस नगर का भेद ले लिया तो उस ने ऊरियाह को ऐसे स्थान में ठहराया जहां वुह जानता था कि सूरमा हैं॥ १७। और उस नगर के लोग निकले और यूअब से लड़े और दाऊद के सेवकों में से गिरे और हित्ती ऊरियाह भी मारा गया॥

१८। तब यूअब ने युद्ध का समस्त समाचार दाऊद को कहला भेजा॥ १९। और दूत को आज्ञा किई कि जब तू राजा से युद्ध का समाचार कह चुके॥ २०। तो यदि ऐसा हो कि राजा का क्रोध भड़के और वुह तुझे कहे कि जब तुम लड़ाई पर चढ़े तो नगर के निकट क्यों आये क्या तुम न जानते थे कि वे भीत पर से मारेंगे॥ २१। यरुब्बुसत के बेटे अबिमलिक को किसने मारा एक स्त्री ने चक्की का पाट भीत पर से उस पर नहीं दे मारा कि वुह तैबीज़ में मरा तुम भीत के नीचे क्यों गये थे तब कहियो कि तेरा सेवक हित्ती ऊरियाह भी मारा गया॥ २२। सो दूत बिदा ज़ुआ और आया और जो कुछ कि यूअब ने कहला भेजा था सो दाऊद को सुनाया॥ २३। और दूत ने दाऊद से कहा कि लोग हम पर प्रबल ज़ुए और वे चौगान में हम पर निकले और हम उन्हें रगेदे ज़ुए फाटक की पैठ लों चले गये॥ २४। तब धनुषधारियों ने भीत पर से तेरे सेवकों को बाण से मारा और राजा के कितने ही सेवक मारे गये और आप का सेवक हित्ती ऊरियाह भी मारा गया॥ २५। तब दाऊद ने दूत से कहा कि यूअब को जाके उभाड़ और कह कि यह बात तेरी दृष्टि में बुरी न लगे क्योंकि खड्ग जैसा एक को वैसा दूसरे को काटता है तू नगर के साम्ने संग्राम को दृढ़ कर और उसे ढा दे॥ २६। और ऊरियाह की स्त्री अपने पति ऊरियाह का मरना सुन के बिलाप करने लगी॥ २७। और जब शोक के दिन बीत गये तब दाऊद ने उसे अपने घर बुलवा लिया और वुह उस की पत्नी ज़ुई और वुह उस के लिये बेटा जनी परंतु जो कुछ कि दाऊद ने किया परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था।

१२ बारहवां पर्ब्ब ॥

और परमेश्वर ने नातन को दाऊद पास भेजा और उस ने उस पास आके कहा कि नगर में दो जन थे एक तो धनी दूसरा कंगाल॥ २। उस धनी के पास बज़ुत से झुंड और ढोर थे॥ ३। परंतु उस कंगाल के पास भेड़ की एक पठिया को छोड़ कुछ न था उसे उस ने मोल लिया और पाला था और वुह उस के और उस के बालबच्चों के साथ बढ़ी

ओर उसी ही का कौर खाती और उसी ही के कटोरे से पीती थी ओर उस की गोद में सोती थी ओर उस के लिये कन्या के समान थी॥ ४। ओर उस धनमान के पास एक पथिक आया तब उस ने उस के लिये सिद्ध करने का अपने ही झुंड ओर अपने ही ढोर को बचा रक्खा परंतु उस कंगाल की पठिया लिई ओर उस पुरुष के लिये जो उस पास आया था पकवाया॥ ५। तब दाऊद का क्रोध उस पुरुष पर बहुत भड़का ओर उस ने नातन से कहा कि परमेश्वर के जीवन सों जिस पुरुष ने यह काम किया से निश्चय मार डालने के योग्य है॥ ६। ओर वुह पठिया चैागुनी उसे फेर दे इस कारण कि उस ने ऐसा काम किया ओर कुछ मया न किई॥ ७। तब नातन ने दाऊद से कहा कि वुह पुरुष तू ही है परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक किया है ओर मैं ने तुझे साऊल के हाथ से छुड़ाया॥ ८। ओर मैं ने तेरे स्वामी का घर तुझे दिया ओर तेरे स्वामी की स्त्री को तेरी गोद में दिया ओर इसराएल ओर यहूदाह का घराना तुझे दिया ओर यदि यह थोड़ा था तो मैं तुझे ऐसी वैसी वस्तु भी देता॥ ९। तू ने क्यों परमेश्वर की आज्ञा की निंदा किई कि उस की दृष्टि में बुराई करे तू ने हित्ती ऊरियाह को खड्ग से मरवाया ओर उस की पत्नी को लेके अपनी पत्नी किया ओर उसे अम्मून के संतान के खड्ग से मरवा डाला॥ १०। इस लिये अब तेरे घर से खड्ग कभी जाता न रहेगा इस कारण कि तू ने मुझे तुच्छ किया ओर हित्ती ऊरियाह की पत्नी को लेके अपनी पत्नी किया॥ ११। परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तेरे ही घर से तुझ पर बुराई उभारूंगा ओर मैं तेरी आंखों के आगे तेरी पत्नियों को लेके तेरे परोसी को देऊंगा ओर वुह इस सूर्य के साम्ने तेरी पत्नियों के साथ अकर्म करेगा॥ १२। क्योंकि तू ने छिप के किया पर मैं यह सारे इसराएल के साम्ने ओर सूर्य के साम्ने करूंगा॥ १३। तब दाऊद ने नातन से कहा कि मैं ने परमेश्वर का अपराध किया ओर नातन ने दाऊद से कहा कि परमेश्वर ने भी तेरे अपराध को दूर किया तू न मरेगा॥ १४। तथापि इस काम के कारण से तू ने परमेश्वर के बैरियों को उस की अपनिंदा करने का कारण दिया लड़का भी जो तेरे लिये उत्पन्न है निश्चय मर जायगा॥

१५। सो नातन अपने घर को गया और परमेश्वर ने उस लड़के को जो जरियाह की पत्नी दाजद के लिये जनी थी मारा कि वुह बड़ा रोगी हुआ॥ १६। इस लिये दाजद ने उस लड़के के लिये ईश्वर से बिनती किई और ब्रत रक्खा और भीतर जाके सारी रात भूमि पर पड़ा रहा॥ १७। और उस के घर के प्राचीन उसे भूमि पर से उठाने को आये परंतु उस ने न चाहा और न उन के साथ भोजन किया॥ १८। और सातवें दिन वुह लड़का मर गया और दाजद के सेवक उसे कहने से डरे कि लड़का मर गया क्योंकि उन्हों ने कहा कि देखो जब लड़का जीता ही था तब हम ने उसे कहा और उस ने हमारी बात न मानी और यदि हम उसे कहें कि लड़का मर गया फेर वुह आप को कैसा कष्ट देगा॥ १९। पर जब दाजद ने देखा कि उस के सेवक फुसफुसा रहे हैं उस ने बूझा कि लड़का मर गया इस लिये दाजद ने सेवकों को कहा कि क्या लड़का मर गया वे बोले कि मर गया॥ २०। तब दाजद भूमि पर से उठा और नहाया और सुगंध लगाया और वस्त्र बदला और परमेश्वर के घर में आया और दंडवत किई तब वुह अपने घर गया और जब उस ने चाहा तब उस के आगे रोटी धरी गई और उस ने खाई॥ २१। तब उस के सेवकों ने उसे कहा कि आप ने यह कैसा किया है जब लों लड़का जीता था आप ने ब्रत करके बिलाप किया परंतु जब लड़का मर गया तब उठके रोटी खाई॥ २२। और उस ने कहा कि जब लों लड़का जीता ही था तब लों मैं ने ब्रत करके बिलाप किया क्योंकि मैं ने कहा कि कौन जानता है कि ईश्वर मुझ पर अनुग्रह करेगा जिसतें लड़का जीये॥ २३। पर अब तो वुह मर गया सो मैं किस लिये ब्रत करूं क्या मैं उसे फेर ला सक्ता हूं मैं उस पास जाऊंगा पर वुह मुझ पास फिर न आवेगा॥

२४। और दाजद ने अपनी पत्नी बिन्तसबअ को शांति दिई और उस पास गया और वुह बेटा जनी और उस ने उस का नाम सुलेमान रक्खा और परमेश्वर उस्से प्रीति रखता था॥ २५। और उस ने नातन आगमज्ञानी के द्वारा से कहला भेज के उस का नाम परमेश्वर के कारण परमेश्वर का प्रिय रक्खा॥ २६। और यूअब अम्मून के संतान के रब्बः से लड़ा और राज नगर ले लिया॥ २७। फिर यूअब ने दूतों को भेज के दाजद

को कहला भेजा कि मैं रब्बः से लड़ा और मैं ने पानियों के नगर को ले लिया॥ २८। अब आप उबरे हुए लोगों को एकट्ठा करिये और इस नगर के आगे छावनी करके उसे लीजिये न हो कि मैं उस नगर को लेऊं और मेरा नाम उस पर होवे॥ २९। तब दाऊद ने सारे लोग एकट्ठे किये और रब्बः पर चढ़ा और लड़ के उसे ले लिया॥ ३०। और उस ने वहां के राजा का मुकुट उस के सिर पर से लिया उस का तौल रत्न सहित एक तोड़ा सोने का था और वुह दाऊद के सिर पर था और उस ने उस नगर से बहुत सी लूट निकाली॥ ३१। और उस ने उस में के लोगों को बाहर निकाल के आरों और लोहे के दावने की गाड़ी से और कुल्हाड़ों के नीचे किया और उन्हें ईंटों के पैजावे में से चलाया और उस ने अम्मून के संतान के सारे नगरों से ऐसा ही किया और दाऊद सेना समेत यरूसलम को फिरा।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबिसलुम की एक सुंदर बहिन थी जिस का नाम तमर और दाऊद के बेटे अमनून ने उस पर मन लगाया था॥ २। और अमनून ऐसा बिकल हुआ कि अपनी बहिन तमर के लिये रोगी हुआ क्योंकि वुह कुंआरी थी पर कुछ बन न पड़ता था॥ ३। परंतु अमनून का एक मित्र था जिस का नाम यूनदब जो दाऊद के भाई सिमआह का बेटा था और यूनदब एक अति चतुर जन था॥ ४। सो उस ने उसे कहा कि राजा का बेटा होके तू क्यों प्रति दिन दुर्बल होता जाता है क्या तू मुझ से न कहेगा तब अमनून ने उसे कहा कि मेरा जीव अपने भाई अबिसलुम की बहिन तमर पर लगा है॥ ५। तब यूनदब ने उसे कहा कि तू अपने बिछौने पर पड़ा रह और आप को रोगी ठहरा और जब तेरा पिता तुझे देखने आवे तो उसे कहियो कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मेरी बहिन तमर को आने दीजिये कि मुझे कुछ खिलावे और मेरे आगे भोजन बनावे जिसतें मैं देखूं और उस के हाथ से खाऊं॥ ६। सो अमनून पड़ा रहा और आप को रोगी ठहराया और जब राजा उसे देखने को आया

तो अमनून ने राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मेरी बहिन तमर को आने दीजिये कि मेरे आगे दो फुलके पकावे जिस्ते मैं उस के हाथ से खाऊं॥ ७। तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि अभी अपने भाई अमनून के घर जा और उस के लिये भोजन बना॥ ८। सो तमर अपने भाई अमनून के घर गई और वुह पड़ा हुआ था और उस ने पिसान लेके गूंधा और उस के आगे फुलके बनाये और पकाये॥ ९। और उस ने एक पात्र लिया और उन्हें उस के आगे उंड़ेला पर उस ने खाने को नाह किया तब अमनून ने कहा कि सब जन मुझ पास से बाहर निकल जाओ सो हर एक उस पास से बाहर गया॥ १०। और अमनून ने तमर को कहा कि भोजन कोठरी के भीतर ला कि मैं तेरे हाथ से खाऊं सो तमर फुलके जो उस ने बनाये थे उठा के कोठरी में अपने भाई अमनून पास लाई॥ ११। और जब वुह खिलाने के लिये उस के आगे लाई उस ने उसे पकड़ा और उसे कहा कि आ बहिन मेरे संग लेट जा॥ १२। पर वुह बोली नहीं भाई मुझे निंदित मत कर क्योंकि इसराएलियों में यह बात उचित नहीं सो ऐसी मूर्खता मत कर॥ १३। और मैं किधर अपना कलंक छुड़ाऊं और तू जो है सो इसराएलियों में एक मूढ़ की नाईं होगा सो मैं तेरी बिनती करती हूं कि राजा से कहिये वुह मुझे तुझ से न रोकेगा॥ १४। तथापि उस ने उस की बात न मानी परंतु उस्से प्रबल होके बरबस किया और उस्से अकर्म्म किया॥ १५। तब अमनून ने उस्से अति घिन किया यहां लों कि जिस घिन से घिन किया उस प्रीति से जो वुह उस्से रखता था अधिक हुआ और अमनून ने उसे कहा कि उठ दूर हो॥ १६। और उस ने उसे कहा कि यह बुराई कि तू ने मुझे निकाल दिया उस्से जो तू ने मुझ से किई अधिक है पर उस ने न माना॥ १७। तब अमनून ने अपने सेवा करवैये एक दास को बुला के कहा कि अब इसे मुझ पास से निकाल दे और उस के पीछे द्वार में अगरी लगा॥ १८। और उस पर बहुरंग बस्त्र था क्योंकि राजा की कुंआरी बेटियां ऐसा ही बस्त्र पहिनती थीं तब उस के सेवक ने उसे बाहर कर दिया और उस के पीछे द्वार पर अगरी लगाई॥ १९। और तमर ने सिर पर धूल डाली और अपना

बहुरंगी वस्त्र फाड़ा और सिर पर हाथ धर के रोती चली गई॥ २०। और उस के भाई अबिसलुम ने उसे कहा कि क्या तेरा भाई अमनून तेरे संग हुआ परंतु हे बहिन अब चुपकी हो रह वुह तेरा भाई है उस बात पर अपना मन मत लगा तब तमर अपने भाई अबिसलुम के घर में अति उदासीन पड़ी रही॥ २१। परंतु दाऊद राजा इन सब बातों को सुन के अति क्रुद्ध हुआ॥ २२। और अबिसलुम ने अपने भाई अमनून को कुछ भला बुरा न कहा इस लिये कि अबिसलुम अमनून से घिन करता था क्योंकि उस ने उस की बहिन तमर से बरबस किया था॥ २३। और पूरे दो बरस के पीछे ऐसा हुआ कि बअल हसूर में जो इफ्रायम के लग है अबिसलुम की भेड़ों के रोम कतरवैये थे तब अबिसलुम ने राजा के सब बेटों को नेउंता दिया॥ २४। और अबिसलुम राजा पास आया और कहा कि देखिये अब तेरे सेवक की भेड़ों के ऊन कतरवैये हैं सो अब मैं तेरी बिनती करता हूं कि राजा और उस के सेवक भी तेरे दास के साथ चलें॥ २५। तब राजा ने अबिसलुम से कहा कि नहीं बेटे हम सब के सब न जायें जिस्तें न हो कि तुझ पर भार होवे और उस ने उसे बहुत मनाया परंतु तद्भी वुह न गया पर उसे आशीष दिया॥ २६। तब अबिसलुम ने कहा कि यदि नहीं तो मैं आप की बिनती करता हूं कि मेरे भाई अमनून को हमारे साथ जाने दीजिये तब राजा ने उसे कहा कि वुह किस लिये तेरे साथ जाय॥ २७। परंतु अबिसलुम ने उसे बहुत मनाया तब उस ने अमनून को और सारे राज पुत्रों को उस के साथ जाने दिया॥ २८। और अबिसलुम ने अपने सेवकों को कह रक्खा था कि चौन्ह रक्खो कि जब अमनून का मन मदिरा से मगन होवे और मैं तुम्हें कहूं कि अमनून को मारो तब उसे घात कीजियो डरियो मत क्या मैं ने तुम्हें आज्ञा नहीं किई सो ढाढ़स और सूरता कीजियो॥ २९। और जैसी कि अबिसलुम ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा ही उस के सेवकों ने अमनून से किया तब समस्त राज पुत्र उठे और हर एक जन अपने अपने खच्चर पर चढ़ भागा॥ ३०। और ऐसा हुआ कि उन के मार्ग में होते ही दाऊद पास यह समाचार पहुंचा कि अबिसलुम ने सारे राज पुत्रों को मार डाला और

उन में से एक भी न बचा॥ ३१। तब राजा उठा और अपने कपड़े फाड़े और भूमि पर लोट गया और उस के सारे सेवक भी कपड़े फाड़ के उस के आगे खड़े ज़ए। ३२। तब दाऊद के भाई सिमआह का बेटा यूनदब उत्तर देके बोला कि मेरे प्रभु ऐसा न समझें कि समस्त तरुण अर्थात् राज पुत्र मारे गये क्योंकि अमनून अकेला मारा गया इस लिये कि जिस दिन से अमनून ने अबिसलुम की बहिन तमर की पत खोई उस ने यह बात ठान रक्खी थी॥ ३३। सो अब मेरा प्रभु राजा इस बात को न समझे कि समस्त राज पुत्र मारे गये क्योंकि केवल अमनून मारा गया॥ ३४। परंतु अबिसलुम भागा और उस तरुण ने जो पहरे पर था आंखें उठाईं और दृष्टि किई और क्या देखता है कि बज़त से लोग मार्ग में पहाड़ की ओर से उस के पीछे आते हैं॥ ३५। तब यूनदब ने राजा से कहा कि देखिये तेरे दास के कहेके समान राज पुत्र आये॥ ३६। और ऐसा ज़आ कि जब वुह कह चुका तब राज पुत्र आ पज़ंचे और चिल्ला चिल्ला विलाप किये राजा और उस के समस्त सेवकों ने बज़त विलाप किया॥

३७। पर अबिसलुम जसूर के राजा अम्मिहूर के बेटे तलमी पास गया और दाऊद प्रतिदिन अपने पुत्र के लिये रोता था। ३८। और अबि-सलुम भाग के जसूर में गया और तीन बरस लों वहां रहा॥ ३९। और दाऊद राजा का मन अबिसलुम पास जाने को बज़त था क्योंकि अमनून के मरने के विषय में उस का मन शांत ज़आ॥

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

आब जरूयाह के बेटे यूअब ने देखा कि राजा का मन अबिसलुम की ओर है॥ २। तब यूअब ने तकूअ में भेज के वहां से एक बुद्धिमती स्त्री बुलवाई और उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि उदासी का भेष बना और उदासी वस्त्र पहिन और अपने पर तेल मत लगा परंतु ऐसा हो जैसे कोई स्त्री जिस ने बज़त दिन से मृतक के लिये बिलाप किया है॥ ३। और राजा पास आ और इस रीति से उस्से कह सो यूअब ने उस के मुंह में बातें डालीं॥ ४। और जब तकूअ की

स्त्री राजा से बोली वुह भूमि पर औंधे मूंह गिरी और दंडवत करके बोली कि हे राजा छुड़ाइये॥ ५। तब राजा ने उसे कहा कि तुझे क्या हुआ और वुह बोली मैं निश्चय बिधवा स्त्री हूं और मेरा पति मर गया है॥ ६। और आप की दासी के दो बेटे थे उन दोनों ने खेत में झगड़ा किया और उन में कोई न था कि छुड़ावे और एक ने दूसरे को मारा और बध किया॥ ७। और देखिये कि सारे घराने आप की दासी पर उठे हैं और वे कहते हैं कि जिस ने अपने भाई को मार डाला उसे हमें सौंप दे जिसतें हम उस के भाई के प्राण की संती जिसे उस ने घात किया उसे मार डालें और हम अधिकारी को भी नाश करेंगे और यों वे मेरी बची हुई चिनगारी को भी बुझा डालेंगे और मेरे पति के नाम और बचे हुए को भूमि पर न छोड़ेंगे॥ ८। तब राजा ने उस स्त्री से कहा कि अपने घर जा और मैं तेरे बिषय में आज्ञा करूंगा॥ ९। तब तक़ूअ की उस स्त्री ने राजा से कहा कि मेरे प्रभु राजा सारी बुराई मुझ पर और मेरे पिता के घराने पर होवे और राजा और उस का सिंहासन निर्दोष रहे॥ १०। तब राजा ने कहा कि जो कोई तुझे कुछ कहे उसे मुझ पास ला और वुह फिर तुझे न छूयेगा॥ ११। तब वुह बोली मैं बिनती करती हूं कि राजा अपने ईश्वर परमेश्वर को स्मरण करे कि रुधिर का पलटा दायक मेरे बेटे को घात करने को न बढ़े तब वुह बोला परमेश्वर के जीवन सों तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर न गिरेगा॥ १२। तब उस स्त्री ने कहा कि मैं तेरी बिनती करती हूं कि अपनी दासी को एक बात अपने प्रभु राजा से कहने दीजिये वुह बोला कहे जा॥ १३। तब उस स्त्री ने कहा कि आप ने किस लिये ईश्वर के लोगों के बिरुद्ध ऐसी चिंता किई क्योंकि राजा ऐसी बात कहते हैं जैसा कोई इस बात में दोषी है कि राजा भेज के अपने निकाले हुए को घर में फेर नहीं लाते॥ १४। क्योंकि हमें मरने पड़ेगा और पानी के समान हैं जो भूमि पर गिराया जाके बटोरा नहीं जा सक्ता और ईश्वर भी मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता तथापि वुह युक्ति करता है कि उस का निकाला हुआ उस्से अलग न रहे॥ १५। सो अब जो मैं अपने प्रभु राजा पास इस बात के बिषय में कहने आई हूं इस कारण कि लोगों ने

मुझे डराया और आप की दासी ने कहा कि मैं आप राजा से कहूंगी कदाचित राजा अपनी दासी की बिनती सुनें॥ १६। क्योंकि राजा अपनी दासी को उस पुरुष के हाथ से छुड़ाने को सुनेंगे जो मुझे और मेरे बेटे को ईश्वर के अधिकार से निकाल के मार डाला चाहता है। १७। तब तेरी दासी बोली कि मेरे प्रभु राजा की बात कुशल की होगी क्योंकि मेरे प्रभु राजा भला बुरा सुन्ने में ईश्वर के दूत के समान हैं इस कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ होगा॥ १८। तब राजा ने उस स्त्री को कहा कि जो कुछ मैं तुझ से पूछूं तू मुझ से मत छिपा और स्त्री बोली कि मेरे प्रभु राजा कहिये॥ १९। तब राजा ने कहा कि क्या इन सब बातों में यूअब भी तेरे साथ नहीं उस स्त्री ने उत्तर दिया कि तेरे प्राण की किरिया हे मेरे प्रभु राजा कोई इन बातों में से जो प्रभु राजा ने कहीं हैं दहिने अथवा बायें जा नहीं सक्ती क्योंकि तेरे सेवक यूअब ही ने मुझे यह कहा है और उसी ने यह सब बातें तेरी दासी के मूंह में डालीं॥ २०। तेरे सेवक यूअब ने यह बात इस लिये किई जिसतें इस कहने का डौल बनावे और पृथिवी के समस्त ज्ञान में मेरा प्रभु ईश्वर के दूत के समान बुद्धिमान है॥ २१। तब राजा ने यूअब को कहा कि देख मैं ने यह बात किई है सो जा और उस तरुण अबिसलुम को फेर ला॥ २२। सो यूअब भूमि पर औंधा गिरा और दंडवत किई और राजा का धन्य माना और यूअब बोला कि आज तेरे सेवक को निश्चय हुआ कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया कि हे मेरे प्रभु राजा आप ने अपने सेवक की बिनती मानी॥ २३। फिर यूअब उठ के जसूर को गया और अबिसलुम को यरूसलम में लाया॥ २४। तब राजा ने कहा कि उसे कह कि अपने घर जाय और मेरा मूंह न देखे सो अबिसलुम अपने घर गया और राजा का मूंह न देखा॥ २५। परंतु समस्त इसराएल में कोई जन अबिसलुम के तुल्य सुंदर और प्रशंसा के योग्य न था क्योंकि तलवे से लेके चांदी लों उस में कोई पय न थी॥ २६। और जब वुह अपने सिर के बाल मुंड़ाता था [क्योंकि हर बरस के अंत में उस का यह बंधेज था इस लिये कि उस के बाल बहुत घने थे] तोल में दो सौ शिकाल राजा के बटखरे से होते थे॥ २७। और

अबिसलुम के तीन बेटे उत्पन्न हुए और एक बेटी जिस का नाम तमर था वुह बहुत सुंदर थी॥ २८। सो अबिसलुम पूरे दो बरस यरूसलम में रहा और राजा का मूंह न देखा॥ २९। इस लिये अबिसलुम ने यूअब को बुलवाया कि उसे राजा पास भेजे परंतु वुह न चाहता था कि उस पास आवे फिर उस ने दूहरा के बुलवाया तब भी वुह न आया॥ ३०। तब उस ने अपने सेवकों से कहा कि देखो यूअब का खेत मेरे खेत से लगा है और वहां उस का जव है सो जाओ और उस में आग लगाओ तब अबिसलुम के सेवकों ने खेत में आग लगाई॥ ३१। तब यूअब उठा और अबिसलुम के घर आया और उस्से कहा कि तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई॥ ३२। तब अबिसलुम ने यूअब को उत्तर दिया कि देख मैं ने तुझे कहला भेजा कि यहां आ कि मैं तुझे राजा पास भेजके कहूं कि मैं जसूर से क्यों यहां आया मेरे लिये तो वहीं रहना अच्छा था सो अब तू मुझे राजा का मूंह दिखा और यदि मुझ में अपराध होवे तो वुह मुझे मार डाले॥ ३३। तब यूअब ने राजा पास जाके यह कहा और उस ने अबिसलुम को बुलाया सो वुह राजा पास आया और राजा के आगे औंधा गिरा और राजा ने अबिसलुम को चूमा।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलुम ने अपने लिये रथ और घोड़े और पचास मनुष्य अपने आगे दौड़ने को सिद्ध किया॥ २। और अबिसलुम तड़के उठा और फाटक की अलंग खड़ा हुआ और यों होता था कि जब कोई झगड़ा रखके राजा के न्याय के लिये आता था तब अबिसलुम उसे बुलाके पूछता था कि तू किस नगर का है उस ने कहा कि तेरा सेवक इसराएल की एक गोष्ठी में का है॥ ३। और अबिसलुम ने उसे कहा कि देख तेरा पद भला और ठीक है परंतु राजा की ओर से कोई श्रोता नहीं है॥ ४। और अबिसलुम ने कहा हाय कि मैं देश में न्यायी होता कि जिस किसी का पद अथवा कारण होता मुझ पास आता और मैं उस का न्याय करता॥ ५। और जब कोई उस पास आता था कि उसे नमस्कार करे तो वुह हाथ बढ़ाके उसे पकड़

लेता था और उस का चूमा लेता था॥ ६। और इस रीति से अबिसलुम सारे इसराएल से करता था जो राजा पास बिचार के लिये आते थे सो अबिसलुम ने इसराएल के मनुष्यों के मन चुराये॥ ७। और चालीस बरस के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलुम ने राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मुझे जाने दीजिये कि अपनी मनैाती का जा मैं ने परमेश्वर के लिये मानी है हबरून में पूरी करूं॥ ८। क्योंकि आप के दास ने जब अराम जसूर में था यह मनैाती मानी थी कि यदि परमेश्वर मुझे यरूसलम में निश्चय फेर ले जायगा तो मैं परमेश्वर की सेवा करूंगा॥ ९। तब राजा ने उसे कहा कि कुशल से जा सो वुह उठके हबरून को गया।

१०। परंतु अबिसलुम ने इसराएल के संतान की सारी गोष्ठियों में भेदियों के द्वारा से कहला भेजा कि जब तुम नरसिंगे का शब्द सुनो तब बोल उठो कि अबिसलुम हबरून में राज्य करता है॥ ११। और अबि-सलुम के साथ यरूसलम से दो सै मनुष्य निकल आये और वे भोलाई से गये थे वे कुछ न जानते थे॥ १२। और अबिसलम ने जैलो अखितुफ्फल दाऊद के मंत्री को उस के नगर जैला से बुलाया जब वुह बलि चढ़ाता था और गुष्ट दृढ़ हो रहा था क्योंकि अबिसलुम पास लोग बढ़ते जाते थे॥ १३। तब एक दूत ने आके दाऊद को कहा कि इसराएल के लोगों के मन अबिसलुम के पीछे लगे हैं॥ १४। तब दाऊद ने अपने समस्त सेवकों को जो यरूसलम में उस के साथ थे कहा कि उठो भागें क्योंकि अबिसलुम से हम न बचेंगे शीघ्र चलो न हो कि वुह अचानक हम पर आ पड़े और हम पर बुराई लावे और तलवार की धार से नगर को नाश करे॥ १५। तब राजा के सेवकों ने राजा से कहा कि देखिये आप के सेवक जो कुछ कि प्रभु राजा की इच्छा होय॥ १६। तब राजा निकला और उस का सारा घराना उस के पीछे हुआ और राजा ने दस स्त्रियां जो उस की दासियां थीं घर देखने को छोड़ीं॥ १७। और राजा अपने सब लोगों समेत बाहर निकलके दूर स्थान में जा ठहरा॥ १८। और उस के सारे सेवक उस के साथ साथ निकल गये और सारे करीती और पलीती और जअती छः सै जन जो जअत से उस के पीछे आये थे

राजा के आगे आगे गये॥ १९। तब राजा ने जअती इत्ती से कहा कि तू भी हमारे साथ क्यों आता है अपने स्थान को फिर जा और राजा के साथ रह क्योंकि तू परदेशी और निकाला हुआ है॥ २०। कल ही तू आया है और आज मैं तुझे भ्रमाके चलाऊं और मेरे जाने का कहीं ठिकाना नहीं सो तू फिर जा और अपने भाइयों को ले जा और दया और सत्य तेरे साथ होवे॥ २१। तब इत्ती ने राजा को उत्तर देके कहा कि परमेश्वर के और मेरे प्रभु राजा के जीवन सों निश्चय जिस स्थान में मेरा प्रभु राजा होवेगा चाहे मृत्यु में चाहे जीवन में वहीं आप का सेवक भी होगा॥ २२। और दाऊद ने इत्ती को कहा कि पार उतर जा तब इत्ती जअती पार उतर गया और उस के सारे मनुष्य और उस के साथ सब लड़के बाले चले॥ २३। और सारे देश ने चिल्ला चिल्लाके बिलाप किया और सारे लोग उतर गये और राजा भी किद्रून के नाले पार उतर गया और समस्त लोगों ने पार उतरके बन का मार्ग लिया॥ २४। और देखो कि सदूक भी और समस्त लावी ईश्वर की साक्षी की मंजूषा लिये हुए उस के साथ थे सो उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा को रख दिया और अबियतर चढ़ गया जब लों कि सारे लोग नगर से निकल आये॥ २५। तब राजा ने सदूक से कहा कि ईश्वर की मंजूषा नगर को फेर ले जा यदि परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर होगी तो वुह मुझे फेर लावेगा और उसे और अपने निवास को मुझे दिखावेगा॥ २६। पर यदि वुह यों कहे कि अब मैं तुझ से प्रसन्न नहीं देख मैं जो वुह भला जाने सो मुझ से करे॥ २७। और राजा ने सदूक याजक को फिर कहा क्या तू दर्शी नहीं नगर को कुशल से फिर और तेरे संग तेरे दो बेटे अखिमअज़ और यहूनतन अबियतर का बेटा॥ २८। देख मैं उस बन के चौगान में ठहरूंगा जब लों कि तुम्हारे पास से कुछ संदेश आवे॥ २९। सो सदूक और अबियतर ईश्वर की मंजूषा को यरूसलम में फेर लाये और वहीं रहे॥ ३०। और दाऊद जलपाई के पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ता गया और चढ़ते चढ़ते बिलाप करता गया उस का सिर ढंपा हुआ और नंगे पांव था और उस के साथ के सारे लोग अपने सिर ढांपे हुए बिलाप करते चढ़ते चले जाते थे॥ ३१। एक ने

दाऊद से कहा कि अखितुफफ़ल भी अबिसलुम के गुष्टकारियों में है तब दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर तेरी बिनती करता हूं कि अखितुफफ़ल के मंत्र को मढ़ता की संती पलट दे॥ ३२। और ऐसा हुआ कि जब दाऊद चोटी पर पहुंचा जहां उस ने ईश्वर की पूजा किई तो हूसी अरकी अपना बस्त्र फाड़े हुए और अपने सिर पर धूल डाले हुए उस्से भेंट करने को आया॥ ३३। तब दाऊद ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ पार उतरेगा तो मुझ पर भार होगा॥ ३४। परंतु यदि तू नगर में फिर जाय और अबिसलुम से कहे कि हे राजा मैं तेरा सेवक हूंगा मैं अब लों तेरे पिता का सेवक था उसी रीति तेरा भी सेवक हूंगा तब तू मेरे कारण से अखितुफफ़ल के मंत्र को भंग कर सक्ता है॥ ३५। और क्या तेरे साथ सदूक़ और अबियतर याजक नहीं हैं सो ऐसा होवे कि जो कुछ तू राजा के घर में सुने सो सदूक़ और अबियतर याजकों से कह दे॥ ३६। देख उन के साथ उन के दो बेटे अखिमअज़ सदूक़ का और यहूनतन अबियतर के बेटे हैं और जो कुछ तुम सुन सको सो उन के द्वारा से मुझे कहला भेजो॥ ३७। सो दाऊद का मित्र हूसी नगर को आया और अबिसलुम भी यरूसलम में पहुंचा॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब॥

और जब दाऊद चोटी पर से तनिक पार गया तब देखा कि मिफ़िबूसत का सेवक सीबा दो गदहे काठी कसे हुए जिन पर दो सौ रोटी और दाख के एक सौ गुच्छे और अंजीर के फल के सौ गुच्छे और एक कुप्पा मदिरा का लदा हुआ था उसे मिला॥ २। और राजा ने सीबा को कहा कि इन बस्तुन से तुम्हारा क्या अभिप्राय है तब सीबा बोला कि ये गदहे राजा के घराने के चढ़ने के लिये और रोटियां और अंजीर फल तरुणों के भोजन के लिये और यह मदिरा उन के लिये जो अरण्य में थके हुए हों॥ ३। तब राजा ने कहा कि तेरे स्वामी का बेटा कहां है सीबा ने राजा से कहा कि देखिये वुह यरूसलम में ठहरा है क्योंकि उस ने कहा है कि आज इसराएल के घराने मेरे पिता का राज्य मुझे फेर देंगे॥ ४। तब राजा ने सीबा से कहा कि देख मिफ़िबूसत का सब कुछ

तेरा है तब सीबा ने कहा कि मैं आप को दंडवत करता हूं कि मैं अपने प्रभु राजा की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं॥ ५। और जब दाऊद राजा बहूरीम में पहुंचा वहां से साऊल के घराने में से एक जन निकला जिस का नाम शमीय जैरा का पुत्र धिक्कारते हुए चला आता था॥ ६। और वुह दाऊद पर और दाऊद राजा के सारे सेवकों पर पत्थर फेंकने लगा और समस्त लोग और समस्त बीर उस के दहिने बायें थे॥ ७। और धिक्कारते हुए शमीय यों कहता था कि निकल आ निकल आ हे हत्यारे मनुष्य हे दुष्ट जन॥ ८। परमेश्वर ने साऊल के घर की सारी हत्या को तुझ पर फेरा जिस की संती तू ने राज्य किया है और परमेश्वर ने राज्य को तेरे बेटे अबिसलुम के हाथ में सौंप दिया और देखो आप को अपनी बुराई में इस कारण कि तू हत्यारा है॥ ९। तब ज़रूयाह के बेटे अबिशै ने राजा से कहा कि यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को किस लिये धिक्कारे मैं आप की बिनती करता हूं कि मुझे पार जाने दीजिये कि उस का सिर उतार डालूं॥ १०। तब राजा ने कहा कि हे ज़रूयाह के बेटे मुझे तुम से क्या काम उसे धिक्कारने देओ इस कारण कि परमेश्वर ने उसे कहा है कि दाऊद को धिक्कार फेर उसे कौन कहेगा कि तू ने ऐसा क्यों किया है॥ ११। और दाऊद ने अबिशै और अपने सारे सेवकों से कहा कि देख मेरा बेटा जो मेरी कटि से निकला मेरे प्राण का गांहक है तो कितना अधिक यह बिनयमीनी उसे छोड़ देओ धिक्कारने देओ क्योंकि परमेश्वर ने उसे कहा है॥ १२। क्या जाने परमेश्वर मेरे दुःख पर दृष्टि करे और परमेश्वर आज उस के धिक्कार की संती मेरी भलाई करे॥ १३। और ज्यों दाऊद अपने लोग लेके मार्ग से चला जाता था शमीय पहाड़ के अलंग उस के सन्मुख धिक्कारता हुआ चला जाता था और उसे पत्थर मारता था और धूल फेंकता था॥ १४। और राजा और उस के सारे लोग थके हुए आये और वहीं उन्हों ने अपने को संतुष्ट किया॥ १५। तब अबिसलुम और उस के सारे लोग इसराएल समेत यरूसलम में आये और अखितुफ़ल उस के साथ॥ १६। और यों हुआ कि जब दाऊद का मित्र हूसी अरकी अबिसलुम पास पहुंचा तो हूसी ने अबिसलुम से कहा कि राजा जीता रहे राजा जीता रहे॥

१७। और अबिसलूम ने हूसी से कहा कि क्या अपने मित्र पर यही अनुग्रह किया तू अपने मित्र के साथ क्यों न गया॥ १८। हूसी ने अबिसलुम से कहा कि नहीं परंतु जिसे परमेश्वर और ये लोग और सारे इसराएल चुनें मैं उसी का हूं और उस के साथ रहूंगा॥ १९। और फिर किस की सेवा करूं यदि उस के बेटे की नहीं तो जैसे मैं ने आप के पिता के सन्मुख सेवा किई है वैसा ही आप के सन्मुख हूंगा॥ २०। तब अबिसलुम ने अखितुफ्फल से कहा कि मंत्र देखो कि हम क्या करें॥ २१। तब अखितुफ्फल ने अबिसलुम से कहा कि अपने पिता की दासियों के पास जाइये जिन्हें वुह घर की रक्षा को छोड़ गया है और सारे इसराएल सुनेंगे कि आप अपने पिता से घिनित हैं तब आप के सारे साथियों के हाथ दृढ़ होंगे॥ २२। सो उन्हों ने कोठे की छत पर अबिसलुम के लिये तंबू खड़ा करवाया और अबिसलुम सारे इसराएल की दृष्टि में अपने पिता की दासियों के पास गया॥ २३। और अखितुफ्फल का मंत्र जो उन दिनों में वुह देता था ऐसा था जैसा कि कोई ईश्वर के बचन से बूझता था अखितुफ्फल का समस्त मंत्र दाऊद और अबिसलुम के विषय में ऐसा ही था॥

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

और अखितुफ्फल ने अबिसलम से यह भी कहा कि मुझे बारह सहस्र पुरुष चुन लेने दीजिये और मैं उठके इसी रात दाऊद का पीछा करूंगा॥ २। और थका और दुर्बल होते हुए मैं उस पर जा पड़ूंगा और उसे डराऊंगा और उस के साथ के सारे लोग भाग जायेंगे और केवल राजाही को मार लेऊंगा॥ ३। और मैं सब लोगों को आप की ओर फेर लाऊंगा और जब इसे छोड़ जिसे आप खोजते हैं सब फिर आए तो सब कुशल से रहेंगे॥ ४। और वुह कहना अबिसलुम और इसराएल के समस्त प्राचीन की दृष्टि में अच्छा लगा॥ ५। तब अबिसलुम ने कहा कि हूसी अरकी को भी बुला और उस के मूंह में जो है सो भी सुनें॥ ६। और जब हूसी अबिसलुम पास पहुंचा तब अबिसलुम यह कहके बोला कि अखितुफ्फल ने यों कहा है उस के बचन के समान हम

करें अथवा नहीं तू क्या कहता है॥ ७। तब हूसी ने अबिसलुम से कहा कि यह मंत्र जो अख़ितुफ़्फ़ल ने दिया है इस समय भला नहीं॥ ८। और हूसी ने कहा कि आप अपने पिता को और उस के साथियों को जानते हैं कि वे शूर हैं और वे अपने मन में ऐसे उदास हैं जैसे जंगली भालु जिस का बच्चा चुराया जाये और आप का पिता योडा पुरुष है और लोगों के साथ न रहेगा॥ ९। देखिये वुह किसी गड़हे में अथवा किसी स्थान में छिपा है और यों होगा कि जब प्रथम उन में से कितने मारे पड़ेंगे जो कोई सुने सो कहेगा कि अबिसलुम के साथी जूझ गये हैं॥ १०। और वुह भी जो शूर है जिस का मन सिंह के मन की नाई है सर्बथा पिघल जायगा क्योंकि सारे इसराएली जानते हैं कि आप का पिता बलवंत है और उस के साथ के लोग शूर हैं॥ ११। इस लिये मैं यह मंत्र देता हूं कि सारे इसराएल दान से लेके बिअरसबः लों बालू के समान जो समुद्र के तीर पर हो जिस का लेखा नहीं आप के साथ बटोरे जावें और कि आप लड़ाई पर चढ़िये॥ १२। यों जहां वुह होगा हम उस पर जा पहुंचेंगे और ओस की नाईं जो भूमि पर गिरती है उस पर टूट पड़ेंगे तब वुह आप और उन लोगों में से जो उस के साथ हैं एक भी न बचेगा॥ १३॥ इस्से अधिक यदि वुह किसी नगर में पैठा होगा तब सारे इसराएल उस नगर पर रस्सी लावेंगे और उसे नदी में खींच ले जायंगे यहां लों कि एक रोड़ा पाया न जाय॥ १४। तब अबिसलूम और इसराएल के सारे लोग बोले कि हूसी अरकी का मंत्र अख़ितुफ़्फ़ल के मंत्र से भला है क्योंकि परमेश्वर ने ठहराया था कि अख़ितुफ़्फ़ल का भला मंत्र खंडित होवे जिसतें परमेश्वर अबिसलुम पर बुराई लावे॥

१५। तब हूसी ने सदूक़ और अबियतर याजक से कहा कि अख़ितुफ़्फ़ल और इसराएल के प्राचीनों ने अबिसलुम को एसा एसा मंत्र दिया और मैं ने ऐसा ऐसा॥ १६। इस लिये अब चटक से भेज के दाऊद से कहो कि आज की रात बन के चौगान में मत टिकिये परंतु बेग से पार उतर जाइये न हो कि राजा और उस के साथ के समस्त लोग निगले जावें॥ १७। अब यहूनतन और अख़िमअज़ ऐनराजिल के लग ठहरे थे [क्योंकि उन्हें नगर में दिखाई देना न था] और एक स्त्री ने जाके उन्हें

कहा सो वे निकलके दाजद राजा से बाले॥ १८। तथापि एक छोकरे ने उन्हें देखके अबिसलुम से कहा परंतु वे दोनों के दोनों चटक से चले गये और बहूरीम में पहुंचके एक पुरुष के घर में घुसे जिस के चौक में एक कूआं था उस में वे उतर पड़े॥ १९। और स्त्री ने उस कूए के मुंह पर एक ओढ़ना बिछाया और उस पर पीसा हुआ अन्न बिछाया और वह बात प्रगट न हुई॥ २०। और जब अबिसलुम के सेवक उस स्त्री के घर आये और पूछा कि अखिमअज़ और यहूनतन कहां हैं तब उस स्त्री ने उन्हें कहा कि वे नाली पार उतर गये और जब उन्हों ने उन्हें ढूंढ़ा और न पाया तो यरूसलम को फिर आये॥ २१। और यों हुआ कि जब वे चले गये तो वे कूए से निकलके चले और दाजद राजा से कहा कि उठिये और शीघ्र जल से पार उतर जाइये क्योंकि अखितुफ़ल ने आप के बिरोध में यों यों मंत्र दिया है॥ २२। तब दाजद और उस के सारे लोग उठे और यरदन के पार उतर गये और बिहान होते होते एक भी न रहा जो यरदन के पार न उतरा था॥ २३। और जब अखितुफ़ल ने देखा कि उस का मंत्र न चला तो उस ने अपने गदहे पर काठी बांधी और चढ़के अपने नगर और अपने घर गया और अपने घर के बिषय में आज्ञा किई और आप फांसी लगाके मर गया और अपने पिता की समाधि में गाड़ा गया॥ २४। तब दाजद महनैन को गया और अबिसलुम और उस के साथ इसराएल के सारे मनुष्य यरदन के पार उतरे॥ २५। और अबिसलुम ने यूअब की संती अमासा को सेना का प्रधान बनाया और अमासा एक जन का बेटा था जिस का नाम इथरा इसराएली था जो नाहस की बेटी यूअब की मैासी अबिजैल के पास गया॥ २६। सो इसराएल और अबिसलुम ने जिलिअद के देश में डेरा किया॥ २७। और यों हुआ कि जब दाजद महनैन में पहुंचा तो अम्मून के संतान के रब्ब: नाहस का बेटा शोबी और लादिबार अमीअल का बेटा मकीर और राजिलीम जिलिअद बरजिल्ली॥ २८। खाट और बासन और माटी के पात्र और गोहूं और जव और पिसान और भूना और फलियां और मसूर और भूने चने॥ २९। और मधु और माखन और भेड़ और ढोर का

खोआ दाऊद के और उस के लोगों के खाने के लिये लाये क्योंकि उन्हों ने कहा कि लोग अरण्य में भूखे और थके और प्यासे हैं।

१८ अठारहवां पर्व्व।

और दाऊद ने अपने संग के लोगों को गिना और सहस्रों पर और सैकड़ों पर प्रधान ठहराया॥ २। और दाऊद ने लोगों के तिहाई भाग को यूअब के अधीन और तिहाई यूअब के भाई ज़रूयाह के बेटे अबिशै के अधीन और तिहाई को जअती इत्ती के अधीन किया और उन्हें भेजा और राजा ने लोगों से कहा कि मैं भी निश्चय तुम्हारे साथ जाऊंगा॥ ३। परंतु लोगों ने उत्तर दिया कि आप न जाइये क्योंकि यदि हम भाग निकलें तो उन्हें कुछ हमारी चिंता न होगी और यदि हम्में से आधे मारे जायें तो उन्हें कुछ चिंता न होगी परंतु आप हम्में से दस सहस्र के तुल्य हैं सो अच्छा यह है कि आप नगर में रहके हमारी सहायता कीजिये॥ ४। तब राजा ने उन्हें कहा कि जो तुम्हें सब से अच्छा लगे सो मैं करूंगा और राजा फाटक की अलंग खड़ा हुआ और समस्त लोग सैकड़ों सैकड़ों और सहस्र सहस्र होके बाहर निकले॥ ५। और राजा ने यूअब और अबिशै और इत्ती को कहा कि मेरे कारण उस युवा जन अर्थात् अबिसलुम से कोमलता कीजियो और जो कुछ राजा ने समस्त प्रधानों से अबिसलुम के विषय में कहा सो सब लोगों ने सुना॥ ६। तब लोग निकलके चौगान में इसराएल के साम्ने हुए और संग्राम इफ़रायम के बन में हुआ॥ ७। जहां इसराएल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे मारे गये और उस दिन वहां बड़ा जूझ अर्थात् बीस सहस्र का हुआ॥ ८। क्योंकि संग्राम समस्त देश में फैल गया था और उस दिन बन ने खड्ग से अधिक लोगों को नाश किया॥ ९। और अबिसलुम दाऊद के सेवकों से मिला और अबिसलुम खच्चर पर चढ़ा था और खच्चर उसे लेके बलूत वृक्ष की घनी डारों के तले घुसा और उस का सिर पेड़ में फंसा और वुह अधर में टंग गया और खच्चर उस के नीचे से चला गया॥ १०। और कोई देखके यूअब से कहके बोला कि मैं ने अबिसलुम को एक बलूत वृक्ष पर टंगा देखा॥ ११। तब यूअब उस कहवैये से

बोला कि जब तू ने उसे देखा तो मारके भूमि पर क्यों न डाल दिया कि मैं तुझे दस टुकड़े चांदी और एक पटुका देता॥ १२। और उस जन ने यूअब को उत्तर दिया कि यदि तू सहस्र टुकड़े चांदी मुझे तौल देता तो भी मैं राजा के बेटे पर हाथ न उठाता क्योंकि राजा ने हमें सुना के तुझे और अबिशी और इत्ती को आज्ञा करके चिताया कि चौकस हो कोई उस तरुण अबिसलुम को न छूवे॥ १३। नहीं तो मैं अपने प्राण ही के बिरोध में झूठा होता क्योंकि कोई बस्तु राजा से छिपी नहीं और तू भी मेरे बिरोध पर खड़ा होता॥ १४। तब यूअब ने कहा कि मैं तेरे आगे न ठहरूंगा और अब लों अबिसलुम जीता हुआ बलूत वृक्ष के मध्य में लटका था तब यूअब ने तीन बाण हाथ में लेके अबिसलुम के अंतःकरण में गोदा॥ १५। और दस तरुणों ने जो यूअब के अस्त्रधारी थे आ घेरा और अबिसलुम को मारके बधन किया॥ १६। तब यूअब ने नरसिंगा फूंका और लोग इसराएल का पीछा करने से फिरे क्योंकि यूअब ने लोगों को रोक रक्खा॥ १७। और उन्हों ने अबिसलुम को लेके उस को बन के एक बड़े गड़हे में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर किया और सारे इसराएल भागके अपने अपने तंबू को गये॥ १८। अब अबिसलुम ने जीते जी अपने लिये राजा की तराई में एक खंभा बनाया क्योंकि उस ने कहा था कि मेरे कोई बेटा नहीं जिस्से मेरा नाम चले और उस ने अपना ही नाम खंभे पर रक्खा और आज के दिन लों वुह अबिसलुम का स्थान कहाता है॥ १९। तब सदूक़ के बेटे अखिमअ़ज़ ने कहा कि मैं दौड़के राजा को संदेश पहुंचाऊं कि परमेश्वर ने किस रीति से उस के बैरियों के हाथ से उस का प्रतिफल लिया॥ २०। तब यूअब ने उसे कहा कि आज तू संदेशी मत होना परंतु दूसरे दिन संदेश पहुंचाइयो परंतु आज तू संदेश मत ले जा इस कारण कि राजा का पुत्र मर गया है॥ २१। फिर यूअब ने कूशी को कहा कि जा और जो कुछ तू ने देखा है सो राजा से कह तब कूशी यूअब को प्रणाम करके दौड़ा॥ २२। फिर सदूक़ के बेटे अखिमअ़ज़ ने दूसरी बार यूअब से कहा कि जो कुछ हो परंतु मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ने दीजिये तब यूअब बोला कि हे पुत्र तू किस लिये दौड़ेगा तू देखता है कि कोई संदेश

धरा नहीं॥ २३। परंतु जो होय मैं दौड़ता हूं तब उस ने कहा कि दौड़ तब अख़िमअ़ज़ ने चौगान का मार्ग लिया और कूशी से आगे बढ़ गया॥ २४। और दाऊद दो फाटकों के बीच बैठा था और पहरू नगर की भीत की छत पर फाटक के ऊपर चढ़ गया था और आंख उठाके देखा और क्या देखता है कि एक जन अकेला दौड़ता आता है॥ २५। और पहरू ने पुकारके राजा को कहा सो राजा ने कहा यदि अकेला है तो उस के मुंह में संदेश हैं और वुह बढ़ते बढ़ते पास आया॥ २६। तब पहरू ने दूसरे जन को दौड़ते देखा और पहरू ने द्वारपालक को पुकार के कहा कि देख पुरुष अकेला दौड़ा आता है और राजा बोला कि वुह संदेश लाता है॥ २७। तब पहरू ने कहा कि मैं देखता हूं कि अगले कि दौड़ सदूक़ के बेटे अख़िमअ़ज़ की दौड़ की नाईं है तब राजा बोला कि वुह भला मनुष्य है और मंगल संदेश लाता है॥ २८। और अख़िमअ़ज़ पहुंचा और राजा से कहा कि सब कुशल है और राजा के आगे औंधे मुंह गिरा और बोला कि परमेश्वर आप का ईश्वर धन्य है जिस ने उन लोगों को जिन्हों ने मेरे प्रभु राजा के बिरोध में हाथ उठाये सौंप दिया॥ २९। तब राजा बोला कि अबिसलुम कुशल से है और अख़िमअ़ज़ ने कहा कि जब राजा के सेवक यूअब ने टहलू को भेजा तो उस समय मैं ने एक बड़ी भीड़ देखी पर मैं ने न जाना वुह क्या है॥ ३०। तब राजा ने कहा कि अलग होके यहां खड़ा हो और वुह अलग जाके खड़ा हो रहा॥ ३१। और वहीं कूशी आया और कूशी ने कहा कि मेरे प्रभु राजा संदेश है क्योंकि परमेश्वर ने आज के दिन आप को उन सभों से जो आप के बैर में उठे थे पलटा लिया॥ ३२। तब राजा ने कूशी से पूछा कि अबिसलुम तरुण कुशल से है और कूशी ने उत्तर दिया कि मेरे प्रभु राजा के बैरी और सब जो आप को दुःख देने में उठते हैं आप उस तरुण की नाईं हो जायें॥ ३३। तब राजा अति व्याकुल हुआ और उस कोठरी पर चढ़ गया जो फाटक के ऊपर थी और बिलाप किया जाते जाते यों कहा कि हाय मेरे बेटे अबिसलुम हाय मेरे बेटे हाय मेरे बेटे अबिसलुम भला होता जो तेरी संती मैं ही मरता हाय अबिसलुम हाय मेरे बेटे हाय मेरे बेटे।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब

और यूअब से कहा गया कि देख राजा अबिसलुम के लिये रोता और बिलाप करता है॥ २। और उस दिन का बचाव सभों के लिये बिलाप का दिन हुआ क्योंकि लोगों ने उस दिन सुना कि राजा अपने बेटे के लिये खेद में है॥ ३। और लोग उस दिन लज्जितों के समान जो लड़ाई से भाग निकलते हैं चोरों से नगर में चले गये॥ ४। परंतु राजा ने अपना मूंह ढांपा और चिल्ला चिल्ला रोया कि हाय अबिसलुम मेरे बेटे हाय अबिसलुम मेरे बेटे मेरे बेटे॥ ५। तब यूअब घर में राजा पास आया और कहा कि तू ने आज के दिन अपने सब सेवकों के मूंह को लज्जित किया जिन्हों ने आज तेरे प्राण और तेरे बेटे बेटियों के प्राण और तेरी पत्नियों के प्राण और तेरी दासियों के प्राण बचाये॥ ६। क्योंकि तू अपने शत्रुन को प्यार करके अपने मित्रों से बैर करता है क्योंकि तू ने आज दिखाया है कि तुझे न प्रधानों की न सेवकों की चिंता है क्योंकि आज मैं देखता हूं कि यदि अबिसलुम जीता होता और हम सब आज मर जाते तो तू अति प्रसन्न होता॥ ७। सो अब उठ बाहर निकल और अपने सेवकों का बोध कर क्योंकि मैं परमेश्वर की किरिया खाता हूं कि यदि तू बाहर न जायगा तो रात लों एक भी तेरे साथ न रहेगा और यह तेरे लिये उन सब बिपतों से जो युवावस्था से अब लों हुई अधिक होगी॥ ८। तब राजा उठा और फाटक में बैठा और सब लोगों को कहा गया कि देखो राजा फाटक में बैठा है तब सब लोग राजा के आगे आये क्योंकि सारे इसराएल अपने अपने तंबू को भाग गये थे॥ ९। और इसराएल की सारी गोष्ठियों में सारे लोग झगड़के कहने लगे कि राजा ने हमें हमारे शत्रुन के हाथ से और फ़िलिस्तियों के हाथ से बचाया और अब वुह अबिसलुम के कारण देश से भाग निकला है॥ १०। और अबिसलुम जिसे हम ने अपने ऊपर अभिषिक्त किया था रण में मारा गया सो अब राजा के फेर लाने में चुपके क्यों हो॥ ११। तब दाऊद राजा ने सदूक और अबियतर याजक को कहला भेजा कि यहूदाह के प्राचीनों को कहो कि राजा को उस के घर में फेर लाने में क्यों

सब से पीछे हो देखते हो कि समस्त इसराएल की बोली राजा के हां उस के घर के पास पहुंची॥ १२। तुम मेरे भाई मेरी हड्डी और मेरे मांस हो सो राजा को फेर लाने में क्यों सब से पीछे हो॥ १३। और अमासा से कहो क्या तू मेरी हड्डी और मेरा मांस नहीं सो यदि मैं तुझे यूअब की संती सदा के लिये सेना का प्रधान न करूं तो ईश्वर मुझ से ऐसा और उस्से अधिक करे॥ १४। और उस ने सारे यहूदाह के समस्त लोगों का मन ऐसा फेरा जैसा कि एक का मन होता है यहां लों कि उन्हों ने राजा कने भेजा कि आप अपने सारे सेवकों समेत फिर आइये॥ १५। तब राजा फिरा और यरदन को आया और यहूदाह जिलजाल में राजा की भेंट को आये कि उसे यरदन पार लावें॥

१६। और जैरा के बेटे शमीय बिनयमीनी बहूरीम से शीघ्र चले और यहूदाह के मनुष्यों के साथ मिलके दाऊद राजा से भेंट करने आये॥ १७। और उस के साथ बिनयमीनी एक सहस्र जन थे और साऊल के घराने का सेवक अपने पंद्रह बेटे और बीस टहलुओं समेत आया और वे राजा के आगे यरदन के पार उतर गये॥ १८। और राजा के घराने को पार उतारने और उस की इच्छा के समान करने के लिये घटवाही की एक नाव पार गई और जैरा का बेटा शमीय यरदन पार आते ही राजा के आगे औंधे मूंह गिरा॥ १९। और राजा से कहा कि मेरे प्रभु मुझ पर पाप मत धरिये उस बात को स्मरण करके मन में मत लाइये जो आप के सेवक ने जिस दिन कि मेरा प्रभु राजा यरूसलम से निकल आया था बैर में कहा था॥ २०। क्योंकि आप का सेवक जानता है कि मैं ने पाप किया इस लिये देखिये आज के दिन मैं यूसुफ़ के समस्त घराने में से पहिले आया हूं कि उतरके अपने प्रभु राजा से भेंट करूं॥ २१। परंतु ज़रूयाह के बेटे अबिशै ने उत्तर में कहा क्या शमीय इस कारण मारा न जायगा कि उस ने परमेश्वर के अभिषिक्त को धिक्कारा॥ २२। तब दाऊद ने कहा कि हे ज़रूयाह के बेटे मुझे तुम से क्या कि तुम आज के दिन मेरे बैरी हुआ चाहते हो क्या इसराएल में आज कोई मारा जायगा क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इसराएल का राजा हूं॥ २३। तब राजा ने शमीय से कहा कि तू मारा न जायगा

और राजा ने उस के लिये किरिया खाई॥ २४। फिर साऊल का बेटा मिफ़िबसत राजा को आगे से मिलने को उतरा जब से राजा निकला था उस दिन लों कि वुह कुशल से फिर न आया अपने पांव न धोये थे न अपनी दाढ़ी सुधारी थी और न अपने कपड़े धोलवाये थे॥ २५। और ऐसा हुआ कि जब वुह यरूसलम में राजा से मिलने आया तो राजा ने उसे कहा कि हे मिफ़िबुसत किस लिये तू हमारे साथ न गया॥ २६। और उस ने उत्तर दिया कि हे प्रभु राजा मेरे सेवक ने मुझे छला क्योंकि आप के सेवक ने कहा था कि मैं अपने लिये गदहे पर काठी बांधूंगा जिसतें उस पर चढ़के राजा के पास जाऊं क्योंकि आप का सेवक लंगड़ा है॥ २७। और उस ने तेरे सेवक को मेरे स्वामी राजा के आगे अपबाद लगाया परंतु मेरा प्रभु राजा ईश्वर के दूत के समान है सो आप की दृष्टि में जो अच्छा लगे सो कीजिये॥ २८। क्योंकि मेरे पिता के घराने मेरे प्रभु राजा के आगे मृतक थे तथापि आप ने अपने सेवक को उन में बैठाया जो आपही की मंच पर भोजन करते थे इस लिये मेरा क्या पद है कि अब भी मैं राजा के आगे पुकारूं॥ २९। तब राजा ने कहा कि तू अपना समाचार क्यों अधिक बर्णन करता है मैं कह चुका कि तू और सीबा भूमि को बांट लो॥ ३०। तब मिफ़िबुसत ने राजा से कहा कि हां सब वही लेवे जैसा कि मेरा प्रभु राजा अपने ही घर में फिर कुशल से पहुंचा॥ ३१। और राजिलीम से जिलिअदी बरजिल्ली उतरके राजा के साथ यरदन पार गया कि यरदन पार पहुंचावे॥ ३२। और यह बरजिल्ली अस्सी बरस का अति वृद्ध था और जब कि राजा महनैन में पड़ा था वुह जीविका पहुंचाता था क्योंकि वुह अति महत जन था॥ ३३। सो राजा ने बरजिल्ली से कहा कि तू मेरे साथ पार उतर और मैं यरूसलम में अपने साथ तेरा पालन करूंगा॥ ३४। और बरजिल्ली ने राजा को उत्तर दिया कि अब मेरे जीवन के बरस कितने दिन के हैं कि राजा के साथ साथ यरूसलम को चढ़ जाऊं॥ ३५। आज मैं अस्सी बरस का हुआ और क्या मैं भलाई बुराई का अंतर जान सक्ता हूं और क्या आप का सेवक जो कुछ खाता पीता है उस का स्वाद जान सक्ता है और क्या मैं गायकों

ग्रोर गायिकाग्रों का शब्द सुन सक्ता हूं फेर आप का सेवक अपने प्रभु राजा पर क्यों बोझ होवे॥ ३६। आप का सेवक राजा के संग थोड़ी दूर यरदन के पार चलेगा ग्रोर किस कारण राजा ऐसे फल से प्रतिफल देवे॥ ३७। अपने सेवक को बिदा कीजिये कि फिर जाये जिसतें मैं अपने ही नगर में अपने माता पिता की समाधि पास मरूं परंतु देखिये आप का सेवक किमहाम मेरे प्रभु राजा के साथ पार जाय जो कुछ आप भला जानें सो उस्से कीजिये॥ ३८। तब राजा ने उत्तर दिया कि किमहाम मेरे साथ पार चले ग्रोर जो कुछ मुझे अच्छा लगे सोई उस के लिये करूंगा ग्रोर जो कुछ तेरी इच्छा होय सोई तेरे लिये करूंगा॥ ३९। ग्रोर समस्त लोग यरदन पार गये ग्रोर जब राजा पार आया तो राजा ने बरज़िल्लो को चूमा ग्रोर उसे आशीष दिया ग्रोर वुह अपने ही स्थान को फिर गया॥ ४०। तब राजा जिलजाल को चला ग्रोर किमहाम उस के साथ साथ गया ग्रोर सारे यहूदाह के लोगों ने ग्रोर इसराएल के आधे लोगों ने भी राजा को पहुंचाया॥ ४१। ग्रोर देखो कि सारे इसराएल राजा के पास आये ग्रोर राजा से कहा कि हमारे भाई यहूदाह के लोगों ने आप को हम से क्यों चुराया है ग्रोर राजा को ग्रोर उस के घराने को ग्रोर दाऊद के समस्त लोग सहित यरदन पार लाये हैं॥ ४२। ग्रोर समस्त यहूदाह के मनुष्यों ने इसराएल के मनुष्यों को उत्तर दिया इस कारण कि राजा हमारे कुटुम्ब हैं सो इस बात में तुम क्यों क्रुद्ध होते हो क्या हम ने राजा का कुछ खाया है अथवा क्या उस ने हमें कुछ दान दिया है॥ ४३। फिर इसराएल के मनुष्यों ने यहूदाह के मनुष्यों को उत्तर दिया ग्रोर कहा कि राजा में हम दस भाग रखते हैं ग्रोर दाऊद पर हमारा पद तुम से अधिक है सो तुम ने क्यों हमें हलुक समझा कि राजा के फेर लाने में पहिले हम से क्यों नहीं पूछा ग्रोर यहूदाह के मनुष्यों की बातें इसराएल के मनुष्यों की बातों से प्रबल हुईं।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

ओर संयोग से वहां एक दुष्ट पुरुष था जिस का नाम सबअ जो बिनयमीन बिकरी का बेटा था और उस ने नरसिंगा फूंकके कहा कि हम दाऊद में कुछ भाग नहीं रखते और हम यस्सी के बेटे में कुछ अधिकार नहीं रखते हैं हे इसराएल हर एक जन अपने अपने तंबू में जाय॥ २। सो इसराएल का हर एक जन दाऊद के पीछे से चला गया और बिकरी के बेटे सबअ के पीछे हो लिया परंतु यहूदाह के मनुष्य यरदन से लेके यरूसलम लों अपने राजा के साथ बने रहे॥ ३। और दाऊद यरूसलम में अपने घर को पहुंचा और राजा ने अपनी दस दासियों को जिन्हें वुह घर की रखवाली के लिये छोड़ गया था लेके दृष्टि बंध किया और उन्हें भोजन दिया परंतु उन के पास न गया सो वे जीवन भर जीवन के रंड़ापे में बंद रहीं॥ ४। तब राजा ने अमासा को कहा कि तीन दिन के भीतर यहूदाह के मनुष्यों को मुझ पास यहां एकट्ठा कर और तू भी यहां हो॥ ५। सो अमासा यहूदाह को एकट्ठा करने गया परंतु ठहराये हुए समय से उसे अबेर हुआ॥ ६। तब दाऊद ने अबिशै से कहा कि अब बिकरी का बेटा सबअ अबिसलुम से हमारी अधिक बुराई करेगा सो तू अपने प्रभु के सेवकों को ले और उस का पीछा कर न हो कि वुह बाड़े के नगरों में पैठे और हमारी दृष्टि से बच निकले॥ ७। सो उस के साथ यूअब के मनुष्य और करीती और पलीती और समस्त बीर निकले और यरूसलम से बाहर गये कि बिकरी के बेटे सबअ का पीछा करें॥ ८। और जब वे जिबऊन में बड़े पत्थर के पास पहुंचे तो अमासा उन के आगे आगे जाता था और यूअब का बस्त्र जो वुह पहिने था सो उस पर लपेटा हुआ था और उस के ऊपर एक कटिबंध और एक खड्ग काठी समेत उस की कटि पर कसा हुआ था और उस के जाते जाते निकल पड़ा॥ ९। सो यूअब ने अमासा को कहा कि भाई तू कुशल से है और यूअब ने अमासा को चूमने को अपने दहिने हाथ से उस की दाढ़ी पकड़ी॥ १०। परंतु यूअब के हाथ के खड्ग को अमासा ने सुर्त न किया सो उस ने उसे उस के पांजर में मारा कि उस की अंतड़ियां भूमि पर निकल पड़ीं और

दुहराके न मारा से वुह मर गया फिर यूअब और उसका भाई अबिशै बिकरी के बेटे सबअ् का पीछा किया ॥ ११ । और यूअब के जनों में से एक जो उस पास खड़ा था यों बोला कि जिस को यूअब भला लगे और जो दाऊद की ओर है सो यूअब के पीछे जाय ॥ १२ । और अमासा मार्ग के मध्य में लोहू से बोरा हुआ था और जब उस पुरुष ने देखा कि सब लोग खड़े होते हैं तो वुह अमासा को राज मार्ग से खेत में खींच ले गया और जब उस ने देखा कि जो कोई पास आता है सो खड़ा होता है उस ने उस पर कपड़ा डाल दिया ॥ १३ । जब वुह मार्ग में से अलग किया गया तो सब लोग यूअब के पीछे पीछे गये कि बिकरी के बेटे सबअ् को खेदें ॥ १४ । और वुह इसराएल की सारी गोष्ठियों में से होके अबील और बैतमअ्कः और सारे बरीती लों गया और वे भी एकट्ठे होके उस के पीछे पीछे गये ॥ १५ । और उन्हों ने आके उसे बैतमअ्कः के अबील में घेरा और नगर पर एक मेंड़ बांधा जो बाहर की भीत के सन्मुख था और सब लोग जो यूअब के साथ थे खोद खाद करते थे कि भीत को गिरावें ॥ १६ । तब एक बुद्धिमती स्त्री ने नगर में से पुकारा कि सुनो सुनो अनुग्रह करके यूअब से कहो कि इधर पास आवे कि मैं उसे कुछ कहूं ॥ १७ । और जब वुह उस पास आया तो उस स्त्री ने उसे कहा कि आप यूअब हैं और उस ने उत्तर दिया कि हां तब उस ने उसे कहा कि अपनी दासी की बात सुनिये वुह बोला मैं सुनता हूं ॥ १८ । तब वुह कहके बोली कि आरंभ में यों कहा करते थे कि वे निश्चय अबील से पूछेंगे और यों समाप्त करते थे ॥ १९ । मैं इसराएलियों में शांति कारिणी और बिश्वस्त हूं सो आप एक नगर और इसराएल में एक माता को नाश किया चाहते हैं क्या आप परमेश्वर के अधिकार को निंगला चाहते हैं ॥ २० । तब यूअब ने उत्तर देके कहा कि यह परे होवे यह मुझ से परे होवे कि निंगलूं अथवा नाश करूं ॥ २१ । यह बात ऐसी नहीं परंतु इफ़रायम पर्ब्बत के एक जन बिकरी के बेटे ने जिस का नाम सबअ् है राजा पर अर्थात् दाऊद पर बिरोध का हाथ उठाया है सो केवल उसी को सोंप दे और मैं नगर से जाता रहूंगा तब उस स्त्री ने यूअब को कहा कि देखिये उस का मस्तक भीत पर फेंक दिया जायगा ॥ २२ । तब

वुह स्त्री अपनी चतुराई से सब लोगों के पास गई और उन्हों ने बिकरी के बेटे सबअ का मस्तक काटके बाहर यूअब की ओर फेंक दिया तब उस ने नरसिंगा फूंका और लोग नगर में से छूटके अपने अपने तंबू को गये और यूअब फिरके यरूसलम में राजा पास आया॥ २३। और यूअब इसराएल की समस्त सेना का प्रधान था और यहूयदः का बेटा बिनायाह करीती और पलीती का प्रधान था॥ २४। और अदूराम कर पर था और अखिलूद का बेटा यहूसफ़त स्मारक था। २५॥ और शिया लेखक और सदूक और अबियतर याजक॥ २६। और भी दाऊद का एक याजक था ईरायाइरी।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब॥

फिर दाऊद के दिनों में तीन बरस लगातार अकाल पड़ा और दाऊद ने परमेश्वर से पूछा सो परमेश्वर ने कहा कि यह साऊल के और उस के हत्यारे घराने के कारण है क्योंकि उस ने जिबऊनियों को बधन किया॥ २। तब राजा ने जिबऊनियों को बुलाके उन्हें कहा [अब जिबऊनी इसराएल के संतानों में के न थे परंतु अमूरियों के उबरे हुए थे और इसराएल के संतान ने उन से किरिया खाई थी और साऊल ने चाहा कि इसराएल के संतान और यहूदाह के ज्वलन के लिये उन्हें नाश करे]॥ ३। इस लिये दाऊद ने जिबऊनियों से कहा कि मैं तुम्हारे लिये क्या करूं और किस्से मैं प्रायश्चित्त करूं जिसतें तुम परमेश्वर के अधिकार को आशीष देओ॥ ४। तब जिबऊनियों ने उसे कहा कि हम साऊल से और उस के घराने से सोना चांदी नहीं चाहते हैं और न हमारे लिये इसराएल में किसी जन को बधन कीजिये फिर वुह बोला जो कहोगे सो मैं तुम्हारे लिये करूंगा॥ ५। तब उन्हों ने राजा को उत्तर दिया कि जिस जन ने हमें नाश किया और इसराएल के सिवानों में से हमें नाश करने की युक्ति किई थी॥ ६। उस के सात बेटे हमें सौंपे जायें और हम उन्हें परमेश्वर के लिये साऊल के जिबअः में जो परमेश्वर का चुना हुआ है फांसी देंगे तब राजा बोला मैं देऊंगा॥ ७। परंतु राजा ने साऊल के बेटे यूनतन के बेटे मिफ़िबूसत को उस

किरिया के कारण जो साऊल के बेटे यूनतन के और दाऊद के मध्य में थी बचा रक्खा॥ ८। परंतु राजा ने ऐयाह की बेटी रिसफः के दो बेटों को जिन्हें वुह साऊल के लिये जनी थी अर्थात् अरमूनी और मिफिबूसत को और साऊल की बेटी मीकल के पांच बेटे को जिन्हें वुह महलाती बरजिल्ली के बेटे अद्रिएल के लिये जनी थी॥ ९। और उस ने उन्हें जिबऊनियों के हाथ सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर परमेश्वर के आगे फांसी दिई और वे सातों कटनी के दिनों में एक साथ मारे गये यह जव कटने के आरंभ में था॥ १०। तब ऐयाह की बेटी रिसफः ने टाट वस्त्र लिया और कटनी के आरंभ से लेके आकाश में से उन पर पानी टपकने लों अपने लिये पहाड़ पर बिछा दिया और दिन को आकाश के पंछी और रात को बनैले पशु को उन पर ठहरने न देती थी॥ ११। और दाऊद को कहा गया कि साऊल की दासी ऐयाह की बेटी रिसफः ने यों किया॥ १२। सो दाऊद ने जाके साऊल की हड्डियों और उस के बेटे यूनतन की हड्डियों को यबीस जिलिअद के मनुष्यों से फेर लिया जिन्हों ने उन्हें बैतशान की सड़क से जहां फिलिस्तियों ने उन्हें टांगा था तब फिलिस्तियों ने साऊल को जिलबूअ में मारा था चुरा लिया॥ १३। और वुह वहां से साऊल की हड्डियां को और उस के बेटे यूनतन की हड्डियों को ले आया और जो टांगे गये थे उन की हड्डियों को एकट्ठा करवाया॥ १४। और उन्हों ने साऊल और यूनतन की हड्डियों को ज़िलअ के बिनयमीन के देश में उस के पिता कीस की समाधि में गाड़ा और सब जो राजा ने उन्हें आज्ञा किई थी उन्हों ने किया और उस के पीछे देश के कारण ईश्वर ने बिनय को मान लिया॥ १५। और फिलिस्ती इसराएल से फिर लड़े और दाऊद अपने सेवकों के साथ उतरके फिलिस्तियों से लड़ा और दाऊद दुर्बल हुआ॥ १६। अब यसबूबन्नूब ने जो रफा के बेटों में से था जिस की बरछी के फल का पीतल सवा दस सेर एक का और नया खड्ग बांधे था चाहा कि दाऊद को मार डाले॥ १७। पर ज़रुयाह के बेटे आबिशै ने सहाय किई और उस फिलिस्ती को मारके बधन किया तब दाऊद के लोग उस्से किरिया खाके बोले कि आप फिर कभी हमारे साथ लड़ाई

परमेश्वर को छोड़ ईश्वर कौन और हमारे ईश्वर को छोड़ चटान कौन। ३३। ईश्वर मेरा बूता और पराक्रम वही मेरी चाल सिद्ध करता है॥ ३४। वुह हरिणी के से मेरे पांव बनाता है वुह मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर बैठाता है॥ ३५। वुह मेरे हाथों को युद्ध के लिये सिखाता है ऐसा कि पोलाद का धनुष मेरी भुजाओं से टूटता है॥ ३६। तू ही ने अपने बचाव की ढाल भी मुझे दिई है और तेरी कोमलता ने मुझ बढ़ाया है॥ ३७। तू ने मेरे डग को मेरे तले बढ़ाया है यहां लों कि मेरी घुट्ठीयां फिसल न गईं॥ ३८। मैं ने अपने बैरियों का पीछा किया और उन्हें नाश किया और उलटा न फिरा जब लों मैं ने उन्हें संहार न किया॥ ३९। और मैं ने उन्हें नाश किया और उन्हें घायल किया ऐसा कि वे उठ न सके हां वे मेरे पांव तले पड़े हैं॥ ४०। क्योंकि तू ने संग्राम के लिये बल से मेरी कटि बांधी जो मुझ पर चढ़ आये थे तू ने उन्हें मेरे नीचे झुकाया॥ ४१। तू ही ने मेरे बैरियों के गले भी मुझे दिये हैं जिसतें मैं अपने बैरियों को नाश करूं॥ ४२। उन्हों ने ताका पर कोई बचवैया न था परमेश्वर की ओर देखा परंतु उस ने उन्हें उत्तर न दिया॥ ४३। तब मैं ने उन्हें पृथिवी की धूल की नाईं बुकनी किया मैं ने उन्हें मार्ग के चहले की नाईं रौंदा और उन्हें बिछा दिया॥ ४४। तू ने मुझ मेरे लोगों के झगड़े से भी छुड़ाया है तू ने मुझे अन्यदेशियों का प्रधान किया है एक लोग जिसे मैं ने नहीं जाना मेरी सेवा करेंगे॥ ४५। परदेशियों के पुत्र कपट से मुझे मानेंगे सुनते ही वे मेरे अधीन हो जायेंगे॥ ४६। परदेशी कुम्हला जायेंगे और वे अपने सकेत स्थानों में से डर निकलेंगे॥ ४७। परमेश्वर जीता है और मेरा चटान धन्य मेरी मुक्ति का चटान ईश्वर महान होवे॥ ४८। ईश्वर मेरे लिये प्रतिफल देता है और लोगों को मेरे नीचे उतारता है॥ ४९। और मुझे मेरे बैरियों में से निकाल लाता है तू ने मुझे उन से ऊपर उभार लिया है जो मुझ पर चढ़ आये थे तू ने मुझे अंधेरी मनुष्य से छुड़ाया है॥ ५०। हे परमेश्वर मैं अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानूंगा और तेरे नाम की स्तुति गाऊंगा॥ ५१। वुह अपने राजा की मुक्ति का गर्गज है और अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उस के बंश पर सदा लों दया करता है॥

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

ये दाऊद के अंत की बातें यस्सी के बेटे दाऊद ने कहा और उस पुरुष ने जो उभारा गया यअ़क़ूब के ईश्वर के अभिषिक्त ने जो इसराएल में मधुर गायक है कहा॥ २। ईश्वर का आत्मा मेरी ओर से बोला और उस का बचन मेरी जीभ पर था॥ ३। इसराएल के ईश्वर ने कहा इसराएल के चटान ने मुझे कहा मनुष्यों पर राज्य कर तू धर्म्मी होके ईश्वर के डर से प्रभुता करता है॥ ४। और प्रातःकाल की ज्योति की नाईं बिना मेंघों के बिहान सूर्य्य उदय होता है और मेंह के पीछे पृथिवी में से कोमल घास उगने की नाईं॥ ५। यद्यपि मेरा घर ईश्वर के आगे ऐसा न हो तथापि उस ने मेरे साथ समस्त बिषय में सनातन की एक सत्य बाचा बांधी मेरी सारी मुक्ति और सारी बांछा के लिये यद्यपि वुह उसे न उगावे॥ ६। परंतु दुष्ट सब के सब कांटों के समान दूर किये जायेंगे क्योंकि वे हाथों से पकड़े नहीं जा सके॥ ७। परंतु जो जन उन्हें छूवे उसे अवश्य है कि लोहे और बरछी के छड़ से पूर्ण होवे और वे उसी स्थान में सर्बथा जलाये जायेंगे॥

८। दाऊद के बीरों के नाम ये हैं तहकमूनी जो प्रधानों में श्रेष्ठ आसन पर बैठता था वही अज़नी अ़दिनू था उसी ने आठ सौ के सन्मुख होके उन्हें एक साथ घात किया॥ ९। और उस के पीछे अहोही दूदू का बेटा इलिअ़ज़र जो उन तीन बीरों में से जो दाऊद के संग थे उन्हों ने उन फ़िलिस्तियों को तुच्छ समझा जो इसराएली लोगों से लड़ने के लिये एकट्ठे थे॥ १०। उस ने उठके फ़िलिस्तियों को मारा यहां लों कि उस का हाथ थक गया और मूठ हाथ में चिपक गई और परमेश्वर ने उस दिन बड़ा जय दिया और लोग केवल लूटके लिये उस के पीछे फिर गये॥ ११। और उस के पीछे हरारी अजी का बेटा शम्मः फ़िलिस्ती मसूर के खेत में कहीं लेने को एकट्ठे हुए और लोग फ़िलिस्तियों के आगे से भाग गये॥ १२। परंतु वुह खेत के मध्य में खड़ा रहा और उसे बचाया और फ़िलिस्तियों को मार डाला और परमेश्वर ने बड़ा जय दिया॥ १३। और तीस में से तीन प्रधान निकले और कटनी के समय में दाऊद

अदुल्लम की कंदला में गये और फिलिस्तियों की जथा ने रिफ़ाइम की तराई में डेरा किया था॥ १४। और दाऊद उस समय गढ़ में था और फिलिस्तियों की चैकी बैतलहम में॥ १५। और दाऊद ने लालसा करके कहा हाय कि कोई मुझे उस कूए का एक घेंट पानी पिलावे जो बैतलहम के फाटक पास है॥ १६। उन तीन शूरों ने फिलिस्तियों की सेना को आरंपार तोड़के बैतलहम के कूए से जो फाटक के पास था पानी निकाल लाके दाऊद को दिया तथापि वुह उस्से पीने न चाहा परंतु परमेश्वर के आगे उसे उंड़ेल दिया॥ १७। और उस ने कहा कि हे परमेश्वर मुझ से परे होवे कि मैं ऐसा करूं क्या यह उन लोगों का लोहू नहीं जो अपने प्राण को जोखिम में लाये हैं इस लिये उस ने पीने न चाहा इन तीन शूरों ने ऐसे ऐसे काम किये॥ १८। और ज़रूयाह के बेटे यूअब का भाई अबिशै भी तीन में प्रधान था उस ने तीन सौ पर भाला चलाया और उन्हें मार डाला और तीन में नामी हुआ॥ १९। क्या वुह तीनों में सब से प्रतिष्ठित न था इस लिये वुह उन का प्रधान हुआ तथापि वुह पहिले तीन लों न पहुंचा॥ २०। क़बज़िएल में एक बलवन्त पुरुष था उस ने बड़े बड़े कार्य किये उस का बेटा यहूयदः जिस के बेटा बिनायाह ने मोअब के दो जन को जो सिंह के तुल्य थे मारा और जाके पाला के समय में गड़हे के बीच एक सिंह को मारा॥ २१। और उस ने एक सुंदर मिस्री को मार डाला उस मिस्री के हाथ में एक भाला था परंतु वह लट्ठ लेके उस पर उतरा और मिस्री के हाथ से भाला छीन लिया और उसी के भाले से उसे मार डाला॥ २२। यहूयदः के बेटे बिनायाह ने यह यह किये और तीन शूरों में नामी था॥ २३। वुह उन तीसों से अधिक प्रतिष्ठित था पर वह उन तीन लों न पहुंचा और दाऊद ने उसे अपने मंत्रियों का प्रधान किया॥ २४। यूअब का भाई असाहिल उन तीस में एक इलहनान बैतलहमी दूदू का बेटा॥ २५। शम्मः हरूदी इलिका हरूदी॥ २६। फ्लीती खालिस तक़ूई अक़ीस का बेटा ईरा॥ २७। अनाताती अबिअज़र हूशाती मबनाई॥ २८। अहोही सलमून नीतोफाती महरी॥ २९। नीतोफाती बअना का बेटा हलिब बिनयमीन के संतान के जिबआ में से रैबी का बेटा इत्ती॥

३०। हिरायूनी बनाया नाहाली गाश की हिद्दई॥ ३१। अरबाती अबिसलुम बरह्नी अस्मावत॥ ३२। शआलबूनी बनियाशन यूनतन॥ ३३। हरारी शम्मा और हरारी शरार का बेटा अहयाम॥ ३४। महाकाती का बेटा अहशबई का बेटा इलीफलत गलूनी अखितुफ्फल का बेटा इलियम॥ ३५। करमली हसराई अरबी पाराई॥ ३६। सूबा से नतन का बेटा ऐगाल गादी बानी॥ ३७। अमूनी सिलक बीरूती नहराई जरूयाह के बेटे यूअब का अस्त्रधारी था॥ ३८। इथरी ऐरा इथरी गारीब॥ ३९। हित्ती ओरिया सब समेत सैंतीस।

२४ चौबीसवां पर्व्व॥

और फेर परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने दाऊद को उन पर उभारा कि इसराएल को और यहूदाह को गिनावे॥ २। क्योंकि राजा ने सेना के प्रधान यूअब को जो उस के साथ था आज्ञा किई कि इसराएल की सारी गोष्ठियों में से दान से बिअरशबअ लों जा और लोगों को गिन जिसतें मैं लोगों की गिनती को जानूं॥ ३। तब यूअब ने राजा से कहा कि परमेश्वर आप का ईश्वर उन लोगों को जितने वे होवें सौ गुना अधिक करे जिसतें मेरे प्रभु राजा की आंख देखें परन्तु किस कारण मेरे प्रभु राजा यह काम किया चाहते हैं॥ ४। तथापि राजा की बात यूअब के और सेना के प्रधानों की बात पर प्रबल ऊई और यूअब और सेना के प्रधान राजा के पास से इसराएल के लोगों को गिन्ने को निकल गये॥ ५। और यरदन पार उतरे और अरूईर में नगर की दहिनी ओर जो जाद की तराई के मध्य में याएजर की ओर है डेरा किया॥ ६। वहां से जिलिअद और नये बसे ऊए नीचे के देश में आये और दानजान को और घूम के सैदून को आये॥ ७। और सूर के गढ़ को आये और हवियों के सारे नगरों को और कनआनियों के और वे यहूदाह के दक्षिण को बिअरशबअ लों निकल गये॥ ८। सो जब वे सारे देश में से होके गये नव मास बीस दिनके पीछे यरूसलम को आये॥ ९। और यूअब ने लोगों की गिनती का पत्र राजा को दिया सो इसराएल में आठ लाख खड्गधारी बीर थे और

यहूदाह के लोग पांच लाख॥ १०। ओर लोगों के गिनाने के पीछे दाऊद के मन में खटका हुआ ओर दाऊद ने परमेश्वर से कहा कि मैं ने इस काम में बड़ा पाप किया है ओर अब हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं की अपनी कृपा से अपने दास का पाप क्षमा कर क्योंकि मैं ने अति मूढ़ता किई है। ११। इस लिये कि जब दाऊद बिहान को उठा तो परमेश्वर का बचन दाऊद के दर्शी जाद भविष्यद्वक्ता पर यह कहके पहुंचा॥ १२। कि जा ओर दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे आगे तीन बात धरता हूं तू उन में से एक को चुन कि मैं तुझ पर भेजूं॥ १३। सो जाद दाऊद पास आया ओर उसे कहके बोला कि तेरे देश में तुझ पर सात बरस का अकाल पड़े अथवा तू तीन मास लों अपने शत्रुन के आगे भागा फिरे ओर वे तुझे रगेदें अथवा तेरे देश में तीन दिन की मरी पड़े अब सोच ओर देख कि मैं उसे जिस ने मुझे भेजा क्या उत्तर देऊं॥ १४। तब दाऊद ने जाद से कहा कि मैं बड़े सकेत में हूं हम परमेश्वर के हाथ में पड़ें क्योंकि उस की दया बहुत है ओर मनुष्यों के हाथ में मैं न पड़ूं॥ १५। सो परमेश्वर ने इसराएल पर बिहान से ठहराये हुए समय लों मरी भेजी ओर दान से लेके बिअरशबअ लों लोगों में से सत्तर सहस्र जन मर गये॥ १६। ओर जब दूत ने नाश करने के लिये यरूसलम पर अपना हाथ बढ़ाया तब परमेश्वर बुराई से फिर गया ओर उस दूत से कहा जिस ने लोगों को नाश किया कि बस है अब अपना हाथ रोक ले ओर परमेश्वर का दूत यबूसी अराना के खलिहान के लग था॥ १७। ओर जब दाऊद ने उस दूत को देखा जिस ने लोगों को मारा तो परमेश्वर से कहा कि देख पाप तो मैं ने किया है ओर दुष्टता मैं ने किई है परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है सो मुझ पर ओर मेरे बाप के घराने पर तेरा हाथ पड़े॥ १८। ओर उस दिन जाद ने दाऊद पास आके उसे कहा कि चढ़ जा ओर यबूसी अराना के खलिहान में परमेश्वर के लिये एक वेदी बना॥ १९। ओर जाद के कहने पर दाऊद परमेश्वर की आज्ञा के समान चढ़ गया॥ २०। ओर अराना ने ताका ओर राजा को ओर उस के सेवकों को अपनी ओर आते देखा सो अराना निकला ओर राजा के आगे झुकके भूमि पर प्रणाम किया॥ २१।

और कहा कि मेरे प्रभु राजा अपने सेवक के पास किस लिये आये हैं तब दाऊद ने कहा कि तुझ से खलिहान मोल लेके परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाऊं जिसतें लोगों में से मरी थम जाय॥ २२। और अराना ने दाऊद से कहा कि मेरे प्रभु राजा लेवें और जो अच्छा जानें से भेंट करें और देखिये कि होम के बलिदान के लिये बैल और पीटने की सामग्री बैलों की सामग्री समेत इंधन के लिये हैं॥ २३। सो जैसा राजा राजा को देता है अराना ने सब कुछ किया और अराना ने राजा से कहा कि परमेश्वर आप का ईश्वर आप को ग्रहण करे॥ २४। तब राजा ने अराना से कहा कि यों नहीं परन्तु मैं निश्चय दाम देके उसे मोल लेऊंगा और मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये ऐसी होम की भेंट न चढ़ाऊंगा जो सेंत की हो सो दाऊद ने वुह खलिहान और बैल पचास शेकल चांदी देके मोल लिये॥ २५। और दाऊद ने वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और होम की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और परमेश्वर देश के लिये मनाया गया और मरी इसराएल में से थम गई॥

राजाओं की पहिली पुस्तक जो राजाओं की तीसरी पुस्तक कहाती है।

पहिला पर्ब्ब।
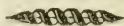
अब दाऊद राजा दिनी और पुरनिया हुआ और उन्हों ने उसे कपड़े उढ़ाये परंतु वुह न गरमाता था॥ २। इस लिये उस के सेवकों ने उसे कहा कि मेरे प्रभु राजा के लिये एक कन्या ढूंढ़ी जाय जिसतें वुह राजा के आगे खड़ी रहे और उस के लिये सेविका होवे और वुह आप की गोद में पड़ी रहे जिसतें मेरा प्रभु राजा गरमा जाय॥ ३। सो उन्हों ने इसराएल के समस्त सिवानों में एक सुंदरी कन्या ढूंढ़ी और शुनामी अबिशाग को पाया और उसे राजा पास लाये॥ ४। और वुह कन्या अति रूपवती थी और राजा की सेवा और उस की टहल करती थी परंतु राजा उस्से अज्ञान रहा॥ ५। तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने यह कहके आप को बढ़ाया कि मैं राज्य करूंगा और अपने लिये रथ और घोड़चढ़े और पचास मनुष्य अपने आगे आगे दौड़ने को सिद्ध किये॥ ६। और उस के बाप ने उसे यह कहके कधी उदास न किया कि तू ने ऐसा क्यों किया और वुह भी बहुत सुंदर था और उस की मा उसे अबिसलुम के पीछे जनी थी॥ ७। और वुह ज़रूयाह के बेटे यूअब और अबियतर याजक से बातचीत करता था और यह दोनों अदूनियाह के पीछे सहायता करते थे॥ ८। परंतु सदूक याजक और यहूयदः का

बेटा बिनायाह और नतन आगमज्ञानी और शमीय और रेई और दाऊद के महाबीर अदूनियाह के साथ न थे॥ ९। और अदूनियाह ने भेड़ और बैल और पले ऊए ढोर ज़ुहलत के पत्थल पर जो रूगल के कूए के लग है बधन किये और अपने सारे भाई अर्थात् राजा के बेटों का और यहूदाह के सारे लोगों का राजा के सेवकों का नेउंता किया॥ १०। परंतु नतन आगमज्ञानी और बिनायाह और महाबीरों को और अपने भाई सुलेमान को न बुलाया।

११। इस लिये नतन सुलेमान की माता बिन्तसबअ़ को यह कहके बोला कि क्या तू ने नहीं सुना कि हज्जीत का बेटा अदूनियाह राज्य करता है और हमारा प्रभु दाऊद नहीं जानता॥ १२। अब इस लिये आइये मैं आप को मंत्र देउं जिसतें आप ही का प्राण और आप के बेटे सुलेमान का प्राण बचे॥ १३। आप दाऊद राजा पास जाइये और उसे कहिये कि मेरे प्रभु राजा क्या आप ने अपनी दासी से किरिया खाके नहीं कहा कि निश्चय तेरा बेटा सुलेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और वही मेरे सिंहासन पर बैठेगा फेर अदूनियाह क्यों राज्य करता है॥ १४। देख आप के राजा से बातें करते ही मैं भी आप के पीछे आ पऊंचूंगा और आप की बातों को दृढ़ करूंगा॥ १५। सो बिन्तसबअ़ भीतर कोठरी में राजा पास गई और राजा तो बऊत बृद्ध था और शुनामी अबिशाग राजा की सेवा करती थी॥ १६। और बिन्तसबअ़ झुकी और राजा के आगे दंडवत किई तब राजा ने कहा कि तुझे क्या है॥ । १७। और उस ने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु आप ने परमेश्वर अपने ईश्वर की किरिया खाके अपनी दासी से कहा कि निश्चय मेरे पीछे तेरा बेटा सुलेमान राज्य करेगा और वुह मेरे सिंहासन पर बैठेगा॥ १८। सो अब देखिये अदू-नियाह राज्य करता है और अब लों मेरा प्रभु राजा नहीं जानता॥ १९। और उस ने बऊत से बैल और पले ऊए ढोर और भेड़ें बधन किये और राजा के सब बेटों और अबियतर याजक और सेना के प्रधान यूअब का नेउंता किया है परंतु उस ने आप के दास सुलेमान को नहीं बुलाया॥ २०। और अब हे मेरे प्रभु राजा समस्त इसराएल की दृष्टि तुझ पर है जिसतें तू उन्हें कहे कि मेरे प्रभु राजा के सिंहासन

पर उस के पीछे कौन बैठेगा॥ २१। नहीं तो यह होगा कि जब मेरा प्रभु राजा अपने पितरों के साथ शयन करेगा तब मैं और मेरा बेटा सुलेमान दोनों दोषी गिने जायेंगे॥

२२। और देखो कि वुह राजा से बातें कर रही थी कि नतन आगमज्ञानी भी आ पहुंचा॥ २३। और उन्हों ने यह कहके राजा को जनाया कि नतन आगमज्ञानी आया है और जब वुह राजा के आगे आया तो उस ने राजा के आगे भूमि लों झुकके प्रणाम किया॥ २४। और बोला हे मेरे प्रभु राजा क्या तू ने कहा है कि मेरे पीछे अदूनियाह राज्य करके मेरे सिंहासन पर बैठेगा॥ २५। क्योंकि वुह आज उतरा और बहुत से बैल और पले हुए ढोर और भेड़ें मारीं और समस्त राजकुमारों का और सेना के प्रधानों का और अबियतर याजक का नेउंता किया और देखिये वे उस के साथ खाते पीते हैं और कहते हैं कि अदूनियाह राजा जीये॥ २६। परंतु आप के दास मुझे और सदूक याजक और यहूयदः के बेटे बिनायाह को और तेरे दास सुलेमान को न बुलाया॥ २७। क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से है और तू ने अपने दास को न जनाया कि मेरे प्रभु राजा के पीछे उस के सिंहासन पर कौन बैठेगा॥

२८। तब दाऊद राजा ने उत्तर देके कहा कि बित्तसबअ को मेरे पास बुलाओ और वुह राजा के आगे आई और राजा के संमुख खड़ी हुई॥ २९। राजा ने किरिया खाके कहा कि उस परमेश्वर के जीवन सों जिसने मेरे प्राण को समस्त दुःख से छुड़ाया॥ ३०। जैसा मैं ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाके तुझे कहा था कि निश्चय तेरा बेटा सुलेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और मेरी संती मेरे सिंहासन पर वही बैठेगा वैसा ही मैं आज निश्चय करूंगा॥ ३१। तब बित्तसबअ ने भूमि लों झुकके प्रणाम किया और बोली कि मेरा प्रभु राजा दाऊद सर्बदा जीता रहे॥ ३२। तब दाऊद राजा ने आज्ञा किई कि सदूक याजक और नतन आगमज्ञानी और यहूयदः के बेटे बिनायाह को पास बुलाओ और वे राजा के आगे आये॥ ३३। तब राजा ने उन्हें भी कहा कि अपने प्रभु के सेवकों को अपने साथ लेओ और मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ही खच्चर पर चढ़ाओ और उसे जैहून को ले जाओ॥ ३४।

श्रीर सदूक याजक श्रीर नतन आगमज्ञानी उसे वहां इसराएल पर राज्याभिषेक करें श्रीर तुरही फूंकके बोलो कि ईश्वर सुलेमान राजा को जीता रक्खे॥ ३५। तब उस के पीछे पीछे चले आश्रो जिसतें वुह आवे श्रीर मेरे सिंहासन पर बैठे क्योंकि मेरी संती वही राजा होगा श्रीर मैं ने ठहराया है कि इसराएल पर श्रीर यहूदाह पर वही प्रभुता करे॥ ३६। तब यहूयदः के बेटे बिनायाह ने राजा को उत्तर देके कहा कि आमीन मेरे प्रभु राजा का ईश्वर परमेश्वर भी ऐसा ही कहे॥ ३७। जिस रीति से परमेश्वर मेरे प्रभु राजा के संग था उसी रीति से सुलेमान के संग होवे श्रीर उस के सिंहासन को मेरे प्रभु दाऊद राजा के सिंहासन से श्रेष्ठ करे॥ ३८। सो सदूक याजक श्रीर नतन आगमज्ञानी श्रीर यहूयदः का बेटा बिनायाह श्रीर करीती श्रीर पलीती आये श्रीर सुलेमान को दाऊद राजा के खच्चर पर चढ़ाया श्रीर उसे जैहून को लाये॥ ३९। श्रीर वहां सदूक याजक ने तंबू से एक सींग में तेल लिया श्रीर सुलेमान को अभिषेक किया तब उन्हों ने तुरही फूंकी श्रीर सब के सब बोले की सुलेमान राजा को ईश्वर जीता रक्खे॥ ४०। श्रीर समस्त लोग उस के पीछे पीछे चढ़ आये श्रीर लोग बांसली बजाते बजाते बड़े आनंद करने लगे ऐसा कि भूमि उन के शब्द से फट गई॥ ४१। श्रीर अदूनियाह ने श्रीर उस के साथ के समस्त नेउंतहरी ने सुना श्रीर ज्यों वे खा चुके श्रीर यूअब ने तुरही का शब्द सुना तो बोला कि नगर में यह क्या कोलाहल श्रीर होरा है॥ ४२। वुह यह कह रहा था कि देखो अबियतर याजक का बेटा यहूनतन आया श्रीर अदूनियाह ने उसे कहा कि आ क्योंकि तू बीर है श्रीर सुसंदेश लाता है॥ ४३। तब यहूनतन ने अदूनियाह से कहा कि निश्चय हमारे प्रभु राजा दाऊद ने सुलेमान को राजा किया है॥ ४४। श्रीर राजा ने सदूक याजक को श्रीर नतन आगमज्ञानी को श्रीर यहूयदः के बेटे बिनायाह को श्रीर करीती श्रीर पलीती को उस के साथ भेजा श्रीर उन्हों ने राजा के खच्चर पर उसे चढ़ाया॥ ४५। श्रीर सदूक याजक श्रीर नतन आगमज्ञानी ने जैहून में उसे राज्याभिषेक किया श्रीर वे वहां से ऐसा आनंद करते हुए फिरे हैं कि नगर गूंज गया तुम ने वही शब्द सुना है॥ ४६। श्रीर सुलेमान राज्य सिंहासन पर भी बैठा

है॥ ४७। श्रीर इसे अधिक राजा के सेवक हमारे प्रभु राजा दाऊद को यह कहके बधाई दे रहे हैं कि ईश्वर सुलेमान को तेरे नाम से अधिक बढ़ावे श्रीर उस के सिंहासन को तेरे सिंहासन से अधिक श्रेष्ठ करे श्रीर राजा ने बिछौने पर दंडवत किई॥ ४८। श्रीर राजा ने भी कहा है कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने आज के दिन मेरे सिंहासन का बैठवैया दिया श्रीर मेरी आंखों ने देखा॥ ४९। तब सारे नेउंतहरी जो अटूनियाह के साथ थे डरके उठे श्रीर हर एक अपने अपने मार्ग चला गया॥ ५०। श्रीर अटूनियाह सुलेमान के डरके मारे उठा श्रीर जाके बेदी के सींगों को पकड़ा॥ ५१। श्रीर सुलेमान को संदेश पङंचा कि देखिये अटूनियाह सुलेमान राजा से डरता है क्योंकि वुह बेदी के सींगों को पकड़े ऊए कहता है कि सुलेमान राजा आज मुझ से किरिया खाके कहे कि मैं अपने सेवक को खड्ग से घात न करूंगा॥ ५२। तब सुलेमान बोला यदि वुह आप को योग्य पुरुष दिखावेगा तो उस का एक बाल भूमि पर न गिरेगा परंतु यदि उस में दुष्टता पाई जाय तो वुह मारा जायगा॥ ५३। सो सुलेमान राजा लोग भेजके उसे बेदी पर से उतार लाया उस ने आके सुलेमान राजा के आगे दंडवत किई श्रीर सुलेमान ने उसे कहा कि अपने घर जा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

जब दाऊद के मरने के दिन आ पङंचे तब उस ने अपने बेटे सुलेमान को यह कहके उपदेश किया॥ २। कि मैं समस्त पृथिवी की रीति पर जाता ऊं सो तू दृढ़ हो श्रीर अपना पुरुषार्थ दिखा॥ ३। श्रीर परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन करके उस के मार्गों में चल श्रीर उस की व्यवस्थों श्रीर आज्ञाओं श्रीर बिधिन श्रीर उस की साक्षी की रक्षा कर जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है जिसतें तू अपने कार्यों में श्रीर जिधर तू फिरे भाग्यवान होवे॥ ४। जिसतें परमेश्वर अपने बचन पर बना रहे जो उस ने मेरे बिषय में कहा कि यदि तेरे बंश अपने मार्ग में चौकस रहके अपने सारे मन से श्रीर सारे प्राण से मेरे आगे सच्चाई से चलेंगे तो इसराएल के संतान का सिंहासन तुझ से अलग

न होगा॥ ५। और जो कुछ कि जरूयाह के बेटे यूअब ने मुझ से और इसराएली सेना के दो प्रधानों अर्थात् नैयिर के बेटे अबिनैयिर और यतर के बेटे अमासा से किया तू जानता है उस ने उन्हें मार डाला और मिलाप में संग्राम का लोहू बहाया और संग्राम के लोहू को अपनी कटि के पटुके पर और अपने पांओं की जूतियों पर छिड़का॥ ६। सो तू अपनी बुद्धि के समान कर और उस का पक्का बाल कुशल से समाधि में उतरने न दे॥ ७। परंतु जिलिअदी बरजिल्ली के बेटों पर दया कर और वे उन में होवें जो तेरे मंच पर भोजन करते हैं इस लिये कि जब मैं तेरे भाई अबिसलुम से भागा था वे मुझ पास आये॥ ८। और देख बहूरीमी बिनयमीनी जैरा का बेटा शमीय तेरे साथ है जिस ने मुझे भारी साप दिया जिस दिन मैं महनैन में गया परंतु वुह यरदन पर मुझ से भेंट करने को आया और मैं ने यह कहके उसे परमेश्वर की किरिया खाई कि मैं तुझे तलवार से घात न करूंगा॥ ९। पर उसे निर्दोष मत जानियो क्योंकि तू बुद्धिमान है और जानता है जो कुछ उसे किया चाहे परंतु उस का पक्का बाल लोहू के साथ समाधि में उतारियो॥ १०। उस के पीछे दाऊद ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में गाड़ा गया॥ ११। और दाऊद ने इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस हबरून में और तेंतीस बरस यरूसलम में उस ने राज्य किया॥ १२। तब सुलेमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा और उस का राज्य बहुत स्थिर हुआ॥ १३। तब हज्जीत का बेटा अदूनियाह सुलेमान की माता बिन्तसबअ पास आया उस ने पूछा कि तू कुशल से आता है वुह बोला कि कुशल से॥ १४। फिर उस ने कहा कि मैं तुझ से कुछ कहा चाहता हूं वुह बोली कह॥ १५। उस ने कहा कि तू जानती है कि राज्य मेरा था और समस्त इसराएल ने मुझ पर रुख किया था कि मैं राज्य करूं परंतु राज्य पलट गया और मेरे भाई का हुआ क्योंकि परमेश्वर की ओर से उसी का था॥ १६। सो मेरी तुझ से एक बिनती है उसे मुंह न फेरियो वुह बोली कह॥ १७। उस ने कहा कि अनुग्रह करके सुलेमान राजा से कहिये [क्योंकि वुह आप को नाह न करेगा] कि शूनामी अबिशाग को मुझे ब्याह देवे॥ १८। सो बिन्तसबअ

बोली कि अच्छा मैं तेरे लिये राजा से कहूंगी॥ १९। इस लिये बित्सबअ् सुलेमान राजा पास अदूनियाह के लिये कहने गई राजा उसे मिलने को उठा और उसे प्रणाम किया फिर अपने सिंहासन पर बैठ गया और राजा ने अपनी माता के लिये एक आसन मंगवाया और वुह उस की दहिनी ओर बैठी॥ २०। तब वुह बोली कि मैं एक छोटी बात चाहती हूं मुझ से नाह न कीजियो राजा ने उसे कहा कि हे माता मांगिये क्योंकि मैं तुझ को नाह न कहूंगा॥ २१। और वुह बोली कि शूनामी अबिशाग तेरे भाई अदूनियाह से ब्याही जाय॥ २२। तब सुलेमान राजा ने अपनी माता को उत्तर दे के कहा कि तू केवल शूनामी अबिशाग को अदूनियाह के लिये क्यों मांगती है उस के लिये राज्य भी मांग क्योंकि वुह मेरा बड़ा भाई है हां उस के लिये और अबियतर याजक के और ज़रूयाह के बेटे यूअब के लिये भी॥ २३। तब सुलेमान राजा ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि यदि अदूनियाह ने यह बात अपने प्राण पर खेलने को नहीं कही तो ईश्वर मुझ से ऐसा ही और उस्से अधिक करे॥ २४। सो अब परमेश्वर के जीवन सों जिस ने मुझे मेरे पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठाया और स्थिर किया और जिस ने अपनी बाचा के समान मेरे लिये घर बनाया आज ही अदूनियाह मारा जायगा॥ २५। और सुलेमान राजा ने यहूयदः के बेटे बिनायाह को भेजा उसने उस पर लपकके उसे मार डाला॥ २६। फिर राजा ने अबियतर याजक को कहा कि अनातूत को अपने खेतों में जा क्योंकि तू मृत्यु के योग्य है परंतु इस जून मैं तुझे मार न डालूंगा इस कारण कि तू मेरे पिता दाऊद के आगे परमेश्वर ईश्वर की मंजूषा उठाता था और इस लिये कि तू उन सब दुःखों में जो मेरे पिता पर पड़े संगी था॥ २७। सो सुलेमान ने अबियतर को परमेश्वर का याजक होने से दूर किया जिसतें वुह परमेश्वर के बचन को संपूर्ण करे जो उस ने सैला में एली के घराने के बिषय में कहा था।

२८। तब यूअब को संदेश पहुंचा। क्योंकि यूअब अदूनियाह के पीछे हुआ था यद्यपि वुह अबिसलूम की ओर न फिरा था सो उस ने परमेश्वर के तंबू में भागके बेदी के सींगों को धरा॥ २९। और सुलेमान को संदेश पहुंचा कि यूअब भागके परमेश्वर के तंबू में गया और देखो कि

वुह बेदी के लग है तब सुलेमान ने यहूयद: के बेटे बिनायाह को कहला भेजा कि उसे मार डाले॥ ३०। सो बिनायाह परमेश्वर के तंबू में गया और उसे कहा कि राजा की आज्ञा है कि तू बाहर निकल वुह बोला कि नहीं मैं यहीं मरूंगा तब बिनायाह फिर गया और राजा से कहा कि यूअब यों कहता है और उस ने मुझे यों उत्तर दिया॥ ३१। राजा ने उसे आज्ञा किई कि जैसा उस ने कहा है वैसा ही कर और उस पर लपक और उसे गाड़ जिसतें तू उस निष्पाप लोहू को जो यूअब ने बहाया मुझ से और मेरे पिता के घराने से मिटा देवे॥ ३२। और परमेश्वर उस का लोहू उसी के सिर पर धरेगा जिस ने दो मनुष्यों पर जो उस्से अधिक धर्म्मी और भले थे लपकके उन्हें तलवार से घात किया और मेरा पिता न जानता था अर्थात् इसराएली सेना के प्रधान नेयिर के बेटे अबिनेयिर को और यहूदाह की सेना के प्रधान यतर के बेटे अमासा को॥ ३३। सो उन का लोहू यूअब के सिर पर और उस के वंश के सिर पर सनातन लों पलटे परंतु दाऊद पर और उस के वंश पर और उस के घराने पर और उस के सिंहासन पर परमेश्वर की ओर से सदा कुशल होगा॥ ३४। सो यहूयद: के बेटे बिनायाह ने जाके उस पर लपकके उसे मार डाला और वुह अरण्य में अपने ही घर में गाड़ा गया॥ ३५। फिर राजा ने यहूयद: के बेटे बिनायाह को उस की संती सेना का प्रधान किया और सदूक् याजक को राजा ने अबियतर के स्थान पर रक्खा॥ ३६। फिर राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि यरूसलम में अपने लिये घर बना और वहीं रह और वहां से कहीं बाहर मत निकल॥ ३७। क्योंकि जिस दिन तू बाहर निकलेगा और किदरून की नाली के पार जायगा निश्चय जानियो कि अवश्य मारा जायगा तेरा लोहू तेरे ही सिर पर होगा॥ ३८। और शमीय ने राजा से कहा कि आज्ञा उत्तम है जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है वैसा ही तेरा सेवक करेगा सो शमीय बहुत दिन लों यरूसलम में रहा॥ ३९। और तीसरे बरस के अंत में ऐसा हुआ कि शमीय के दो सेवक जअत के राजा मअक: के बेटे अकीस कने भाग गये और शमीय से कहा गया कि देख तेरे सेवक जअत में हैं॥ ४०। तब शमीय ने उठके अपने गदहे पर काठी बांधी और

अपने सेवकों के ढूंढ़ने को जअत में अकीस पास गया और जअत से अपने सेवकों को ले आया॥ ४१। यह संदेश सुलेमान को पहुंचा कि शमीय यरूसलम से जअत को गया था और फिर आया॥ ४२। तब राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि क्या मैं ने तुझे परमेश्वर की किरिया न दिलाई थी और तुझ से बाचा लेके न कहा था कि तू निश्चय जानियो कि जिस दिन तू बाहर जायगा या कहीं फिरेगा तू अवश्य मारा जायगा और तू ने मुझे कहा था कि यह बचन जो मैं ने सुना उत्तम है॥ ४३। सो तू ने परमेश्वर की किरिया को और उस आज्ञा को जो मैं ने तुझे किई क्यों नहीं माना॥ ४४। फिर राजा ने शमीय से कहा कि तू उन सब दुष्टता को जानता है जो तू ने मेरे पिता दाऊद से किई जिन से तेरा मन जानकार है सो परमेश्वर तेरी दुष्टता को तेरे ही सिर पर पलटेगा॥ ४५। और सुलेमान राजा भाग्यवान होगा और दाऊद का सिंहासन परमेश्वर के आगे सर्वदा स्थिर रहेगा॥ ४६। सो राजा ने यहूयदः के बेटे बिनायाह को आज्ञा किई और उस ने बाहर जाके उस पर लपकके उसे मार डाला तब राज्य सुलेमान के हाथ में स्थिर हुआ॥

३ तीसरा पर्व्व॥

और सुलेमान ने मिस्र के राजा फिरऊन से नाता किया और फिरऊन की कन्या को ब्याहा और अपने भवन और परमेश्वर के मंदिर और यरूसलम की भीत चारों ओर बनाके समाप्त करने लों उसे दाऊद के नगर में लाया॥ २। केवल उस समय लों लोग ऊंचे स्थानों में बलिदान चढ़ाते थे इस कारण कि उस दिन लों कोई मंदिर परमेश्वर के नाम के लिये बनाया न गया था॥ ३। और सुलेमान परमेश्वर से प्रेम करके अपने पिता के बिधिन पर चलता था केवल ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाता था और धूप जलाता था॥ ४। और बलिदान चढ़ाने को राजा जिबऊन को गया क्योंकि महा ऊंचा स्थान वहीं था और उस बेदी पर सुलेमान ने होम के सहस्र बलिदान चढ़ाये॥ ५। जिबऊन में परमेश्वर ने रात को सुलेमान को स्वप्न में दर्शन दिया और ईश्वर ने कहा कि मांग मैं तुझे क्या देऊं॥ ६। तब सुलेमान ने

बिनती किई कि तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद को बड़ा दान दिया इस कारण कि वुह तेरे आगे सचाई और धर्म्म और मन की खराई से चला था और तू ने उस पर यह बड़ा अनुग्रह किया कि तू ने उस के सिंहासन पर बैठने के लिये एक बेटा दिया जैसा आज के दिन है। ७। सो अब हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने मेरे पिता दाऊद की संती अपने सेवक को राजा किया और मैं बालक हूं बाहर भीतर आने जाने नहीं जानता॥ ८। और तेरा सेवक तेरे लोगों के मध्य में है जिन्हें तू ने चुना है बड़े लोग जो अगण्य और बहुत हैं ऐसा कि गिने नहीं जा सक्ते हैं॥ ९। सो अपने लोगों के न्याय करने के लिये अपने सेवक को सुन्ने का मन दे जिसतें मैं भले और बुरे में बिबेक करूं क्योंकि तेरे ऐसे बड़े लोगों का न्याय कौन कर सक्ता है॥ १०। और यह बात परमेश्वर को अच्छी लगी कि सुलेमान ने ऐसी बस्तु मांगी॥ ११। और ईश्वर ने उसे कहा इस कारण कि तू ने यह बस्तु मांगी है और अपनी बड़ी आयुर्दा न चाही और न अपने लिये धन मांगा है और न अपने बैरियों का प्राण चाहा है परंतु अपने लिये न्याय करने को बुद्धि चाही॥ १२। देख मैं ने तेरी बातों के समान किया है मैं ने एक बुद्धिमान और ज्ञानवान मन तुझे दिया है ऐसा कि तेरे आगे तेरे तुल्य कोई न था और तेरे पीछे तेरे तुल्य कोई न होगा॥ १३। और मैं ने तुझे वह भी जो तू ने नहीं मांगा अर्थात् धन और प्रतिष्ठा यहां लों दिया है कि राजाओं के बीच तेरे जीवन भर तेरे तुल्य नहीं हुआ है॥ १४। और यदि तू मेरे मार्गों पर चलके मेरी बिधिन और आज्ञाओं को पालन करेगा जिस रीति से तेरा पिता दाऊद चलता था तो मैं तेरी वय बढ़ाऊंगा॥ १५। तब सुलेमान जागा और देखा कि स्वप्न है फिर वुह यरूसलम को आया और परमेश्वर के नियम की मंजूषा के आगे खड़ा हुआ और होम के बलिदान और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और अपने समस्त सेवकों के लिये जेवनार किया।

१६। उस समय में दो बेश्या राजा पास आईं और उस के आगे खड़ी हुईं॥ १७। और एक बोली कि हे मेरे प्रभु मैं और यह स्त्री एक घर में रहती हैं और मैं उस के साथ घर में रहते हुए एक बालक जनी॥ १८। और मेरे जन्ने के तीसरे दिन पीछे यों हुआ कि यह स्त्री भी जनी और

हम एक साथ थीं और घर में हम दोनों को छोड़ कोई उपरी हमारे संग न था॥ १९। और इस स्त्री का बालक रात को मर गया इस लिये कि वुह इस के नीचे दब गया॥ २०। तब वुह आधी रात को उठी और जब कि तेरी लौंडी सोती थी मेरे पास से मेरे पुत्र को ले गई और अपनी गोद में रक्खा और अपने मरे हुए बालक को मेरी गोद में धर दिया॥ २१। बिहान को जब मैं उठी कि अपने बालक को दूध पिलाऊं तो क्या देखती हूं कि वुह मरा पड़ा है पर बिहान को जब मैं ने सोचा तो देखा कि यह मेरा जना हुआ लड़का नहीं॥ २२। फिर वुह दूसरी स्त्री बोली नहीं परंतु जीता पुत्र मेरा है और मरा हुआ तेरा है और यह बोली कि नहीं मरा हुआ तेरा पुत्र और जीता मेरा पुत्र यों उन्हों ने राजा के आगे बातें किईं। २३। तब राजा बोला कि एक कहती है जीता पुत्र मेरा है और मृतक तेरा पुत्र और दूसरी कहती है कि नहीं परंतु मृतक तेरा पुत्र और जीता मेरा पुत्र॥ २४। तब राजा ने कहा कि मुझ पास एक खड्ग लाओ तब वे राजा के आगे खड्ग लाये॥ २५। फिर राजा ने कहा कि इस जीते बालक को दो भाग करो और आधा एक को देओ और आधा दूसरी को॥ २६। तब जिस स्त्री का जीता बालक था उस ने राजा से कहा [क्योंकि उस की मया अपने पुत्र के लिये तपित हुई] हे मेरे प्रभु जीता बालक उसी को दीजिये और किसी भांति से न मारिये परंतु दूसरी बोली कि यह न मेरा हो न तेरा परंतु भाग किया जाय॥ २७। तब राजा ने कहके आज्ञा किई कि जीता बालक इसी को देओ और उसे किसी भांति से मत मारो उस की माता यही है॥ २८। और समस्त इसराएल ने यह न्याय सुना जो राजा ने किया और राजा से डरे क्योंकि उन्हों ने देखा कि ईश्वर की बुद्धि न्याय करने के लिये उस के मन में है।

४ चौथा पर्ब्ब।

सो सुलेमान राजा सारे इसराएल का राजा हुआ॥ २। और उस के अध्यक्ष ये थे सदूक याजक का बेटा अज़रियाह॥ ३। इलीहुरिफ़ और अख़ियाह शीशा लेखक के बेटे थे और अख़िलूद का बेटा यहूशफ़त स्मारक॥ ४। और यहूयदः का बेटा बिनायाह सेना का प्रधान

और सदूक और अबिवतर याजक॥ ५। और नतन का बेटा अजरियाह प्रधानों पर और नतन का बेटा जबूद श्रेष्ठ प्रधान और राजा का मित्र॥ ६। और अख़िशार घर का प्रधान और अबदा का बेटा अदुनीराम कर का प्रधान॥

७। और सारे इसराएल पर सुलेमान के बारह प्रधान थे जो राजा के और उस के घराने के भोजन सिद्ध करते थे उन में से हर एक जन बरस भर में एक मास भोजन सिद्ध करता था॥ ८। उन के नाम ये हैं हूर का बेटा इफ़रायम पहाड़ में॥ ९। दिक़्र का बेटा मक़स में और शअल-बीम में और बैतशमश और ऐलून बैतहनान में॥ १०। हसद का बेटा अरूबूत में शोकः और हिफ़र का समस्त देश उस के बश में था॥ ११। अबिनदाब का बेटा दार के समस्त देश में और सुलेमान की बेटी ताफ़त उस की पत्नी थी॥ १२। अख़िलूद का बेटा बअना तअनाक और जिद्दो और समस्त बैतशान जो जरंतान के लग यजरअऐल के नीचे बैतशान से लेके अबील महूलः लों युक़मिआम के पार लों उस के बश में था॥ १३। और जब्र का बेटा रामात जिलिअद में मनस्सी के बेटे याइर के नगर जो जिलिअद में हैं अरजूग के देश समेत जो बशन में है अर्थात् जो भीत से घेरे और जिन में पीतल के अड़ंगे थे साठ नगर उस्से प्रयोजन रखते थे॥ १४। ईदू का बेटा अख़िनदब महनैन रखता था॥ १५। अख़िमअज नफ़ताली में वुह भी सुलेमान की बेटी बसत को पत्नी किये था॥ १६। हूशी का बेटा बअनः यसर और अलूत में॥ १७। फरूह का बेटा यहूशफ़त इशकार में॥ १८। आला का बेटा शमयी बिनयमीन में॥ १९। जरी का बेटा जब्र जिलिअद के देश में था जो अमूरी के राजा सैहून का राज्य और बशन के राजा ऊग का राज्य था और उस देश का केवल वही प्रधान था॥ २०। यहूदाह और इसराएल बहुताई में समुद्र की बालू की नाईं थे वे खाते पीते और आनंद करते थे॥ २१। और सुलेमान समस्त राज्यों पर राज्य करता था नदी से फ़िलिस्तियों के देश लों और मिस्र के सिवाने लों वे उस पास भेंट लाते थे और उस के जीवन भर उस की सेवा करते थे॥ २२। और सुलेमान के दिन भर का भोजन यह था तीस पैमानः

चोखा पिसान और साठ पैमानः आटा॥ २३। और दस मोटे बैल और चराई के बीस बैल एक सै भेड़ें और उस्से अधिक चिकारे और हरिण और काले हरिण और मोटे मोटे पंछी को छोड़के॥ २४। क्योंकि वुह नदी के इस पार तिफसह से लेके गज्ज़ह लों उन सारे राजाओं पर जो समुद्र की इसी ओर थे राज्य करता था और चौदिसा से मेल रखता था॥ २५। और यहूदाह और इसराएल हर एक पुरुष अपने अपने दाख और अपने गूलर के पेड़ तले दान से लेके बिअरसबः लों सुलेमान के जीवन भर कुशल से रहता था॥ २६। और सुलेमान के रथों के लिये चालीस सहस्र घोड़शाला थीं और बारह सहस्र घोड़ चढ़े॥ २७। और उन बारह प्रधानों में से हर एक जन अपने अपने मास में सुलेमान राजा के लिये और उन सब के लिये जो सुलेमान राजा के भोजन में आते थे भोजन सिद्ध करता था उन को किसी बात की घटती न थी॥ २८। और घोड़ों और चालाक पशुन के लिये जव और पुआल भी हर एक जन आज्ञा के समान उसी स्थान में लाता था॥ २९। और ईश्वर ने सुलेमान को अत्यंत बुद्धि और ज्ञान और मन का फैलावा समुद्र के तीर की बालू की नाईं दिया था॥ ३०। और सुलेमान की बुद्धि सारे पूर्वियों की बुद्धि से और मिस्रियों की सारी बुद्धि से श्रेष्ठ थी॥ ३१। क्योंकि वुह इज्राकी ऐतान से और हैमान से और खलकूल से और दरदअ से जो मह्लूल के बेटे थे और समस्त मनुष्य से अधिक बुद्धिमान था और उस की कीर्त्ति चारों ओर के समस्त जातिगणों में फैल गई थी॥ ३२। और उस ने तीन सहस्र दृष्टांत कहा और उस के गीत एक सहस्र और पांच थे॥ ३३। और उस अरज वृक्ष से लेके जो लुबनान में है उस ज़ूफ़ा लों जो भीतों पर जमती है उस ने सब वृक्षों का वर्णन किया और पशुन और पक्षियों और रेंगवैयों और मछलियों के विषय में कहा॥ ३४। और सारे लोगों में से और पृथिवी के समस्त राजाओं से जिन्हों ने उस की बुद्धि का संदेश पाया था सुलेमान की बुद्धि सुन्ने को आते थे।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

और सूर के राजा हीराम ने सुलेमान के पास अपने सेवकों को भेजा क्योंकि उस ने सुना था कि उन्हों ने उस के पिता की संती उसे राज्याभिषेक किया क्योंकि हीराम दाऊद से सदा प्रीति रखता था॥ २। और सुलेमान ने हीराम को कहला भेजा॥ ३। कि तू जानता है कि उन लड़ाइयों के कारण जो उस के आस पास चौदिशा थीं मेरा पिता दाऊद परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम के लिये एक मंदिर न बना सका जब लों कि परमेश्वर ने उन सभों को उस के पांओं तले न कर दिया॥ ४। परंतु अब परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे चारों ओर से चैन दिया यहां लों कि अब न बैरी न उपद्रवी है॥ ५। सो देख मैं ने ठाना है कि परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से एक मंदिर बनाऊं जैसा कि परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि तेरा बेटा जिसे मैं तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा वही मेरे नाम का मंदिर बनावेगा॥ ६। सो तू आज्ञा कर कि मेरे लिये लुबनान से आरज वृक्ष काटें और मेरे सेवक तेरे सेवकों के साथ होंगे और तेरे कहने के समान तेरे सेवकों की बनी देऊंगा क्योंकि तू जानता है कि हम्में यह गुण नहीं कि सैदानियों के समान लट्ठा काटें॥ ७। और ऐसा हुआ कि जब हीराम ने सुलेमान की बातों को सुना तब उस ने अत्यंत मगन होके कहा कि आज परमेश्वर का धन्यबाद होवे जिस ने अपने महत् लोग पर दाऊद को एक बुद्धिमान बेटा दिया॥ ८। तब हीराम ने सुलेमान को कहला भेजा कि जो जो बात के लिये तू ने मुझे कहलाया है मैं ने समझा और मैं आरज के लट्ठे और देवदारु के लट्ठे के विषय में तेरी समस्त इच्छा करूंगा॥ ९। मेरे सेवक उन्हें लुबनान से समुद्र पर लावेंगे और उन्हें बेड़ों में समुद्र पर से उस स्थान लों जहां तू कहे पहुंचाऊंगा और वहां डलवा देऊंगा और तू पावेगा और तू मेरी इच्छा के समान मेरे घराने के लिये भोजन दे॥ १०। सो हीराम ने सुलेमान को आरज वृक्ष और देवदारु वृक्ष अपनी समस्त बांछा के समान दिये॥ ११। और सुलेमान ने हीराम को उस के घराने के भोजन के लिये बरस बरस बीस सहस्र पैमानः गोहूं और बीस पैमानः निराला

तेल देता था॥ १२। और परमेश्वर ने सुलेमान को अपनी बाचा के समान बुद्धि दिई और हीराम और सुलेमान में मिलाप था और उन दोनों ने आपुस में मेल किया॥ १३। और सुलेमान राजा ने सब इसराएल के संतान से मनुष्यों का कर लिया और तीस सहस्र मनुष्य ऊए॥ १४। और वुह उन्हें लुबनान को हर मास पारी पारी दस सहस्र भेजा किया मास भर लुबनान में रहते थे और दो मास अपने घर में और अदूनीराम उन का प्रधान था॥ १५। और सुलेमान के सत्तर सहस्र बोझिये थे और अस्सी सहस्र पेड़ कटवैये पर्ब्बतों में थे॥ १६। और सुलेमान के श्रेष्ठ प्रधानों से अधिक जो कार्य्य पर थे तीन सहस्र तीन सौ थे जो कार्य्य करवैयों से काम लेते थे॥ १७। और राजा ने आज्ञा किई और वे बड़े बड़े पत्थर और बड़मूल्य पत्थर और गढ़े ऊए पत्थर लाये जिसतें घर की नेंव डाले॥ १८। और सुलेमान के थवई और हीराम के थवई और पत्थर के सुधरवैये उन्हें काटते थे सो घर बनाने के लिये उन्हों ने लट्ठे और पत्थर सुधारे।

६ छटवां पर्ब्ब।

और मिस्र के देश से इसराएल के संतान के निकलने से चार सौ अस्सी बरस पीछे इसराएल पर सुलेमान के राज्य के चौथे बरस ज़ीफ़ के मास में जो दूसरा मास है ऐसा ऊआ कि उस ने ईश्वर का मंदिर बनाना आरंभ किया॥ २। और वुह घर जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के लिये बनाया उस की लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊंचाई तीस हाथ थी॥ ३। और उस घरके मंदिर के ओसारे की लम्बाई बीस हाथ घर की चौड़ाई के समान थी और उस की चौड़ाई घर के आगे दस हाथ थी॥ ४। और घर के लिये उस ने झरोखे बनाये बाहर की ओर से सकेत और भीतर चौड़ा॥ ५। और घर की भीत से मिली ऊई कोठरियां चारों ओर बनाईं अर्थात् घर की भीतों के चारों ओर क्या मंदिर का क्या ईश्वरीय बाणी का और उस ने चारों ओर कोठरियां बनाईं॥ ६। और नीचे की कोठरी पांच हाथ चौड़ी और बीच की छः हाथ चौड़ी और तीसरी सात हाथ चौड़ी थी क्योंकि घर के बाहर बाहर

उस ने चारों ओर सकेत सकेत स्थान बनाये जिस्तें लट्ठे घर की भीतों में जमाये न जावें॥ ७। और जब घर बन रहा था वहां लाने से आगे पत्थर सुधारा हुआ था यहां लों कि न हथौड़ा और न कुल्हाड़ी और न लोहे का कोई हथियार घर बनाने में सुना गया॥ ८। बीच की कोठरी का द्वार घर की दहिनी अलंग रक्खा और वे घूमती सीढ़ी से बीच में और उस्से तीसरी अटारी में चढ़ते थे॥ ९। सो उस ने उस घर को बनाया और समाप्त किया उस की छत आरज के लट्ठे की पटरियों से पाटी॥ १०। और उस ने समस्त घरके आस पास पांच पांच हाथ की ऊंची कोठरियां बनाईं और वे आरज के लट्ठों से घर पर थंभी हुई थीं॥ ११। तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए सुलेमान पर उतरा॥ १२। कि यदि तू मेरी बिधिन पर चलेगा और मेरे बिचारों को पूर्ण करेगा और मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करके उन पर चलेगा तो इस घर के बिषय में जो तू बनाता है मैं अपने बचन को जो तेरे बाप दाऊद से कहा था तेरे साथ पूरा करूंगा॥ १३। और मैं इसराएल के संतानों में बास करूंगा और अपने इसराएली लोगों को त्याग न करूंगा॥ १४॥ सो सुलेमान ने घर बनाके समाप्त किया॥ १५। और उस ने घर की गच से लेके भीत से छत लों आरज काष्ठ के पटरे लगाये और उस ने भीतर की अलंग काष्ठ से ढांप दिया और घर की गच को देवदारु की पटरियों से ढांपा॥ १६। और उस ने घर की गच और भीतें आरज के पटरों से घर की अलंगों में बीस बीस हाथ की बनाईं उस ने उस के भीतर के लिये अर्थात् ईश्वरीय बाणी के लिये अर्थात् अत्यंत पवित्र स्थान के लिये बनाये॥ १७। और घर अर्थात् आगे का मंदिर चालीस हाथ था॥ १८। और घर के भीतर आरज की खोदी हुई कली और खिले हुए फूल थे सब के सब आरज के थे कोई पत्थर दिखाई न देता था॥ १९। और घर के भीतर परमेश्वर के नियम की मंजूषा रखने के लिये ईश्वरीय बाणी का स्थान सिद्ध किया॥ २०। और ईश्वरीय बाणी के आगे की ओर लम्बाई में बीस हाथ और चौड़ाई में बीस हाथ और ऊंचाई में बीस हाथ और उसे निर्मल सोने से मढ़ा और आरज की बेदी को भी मढ़ा॥ २१। और सुलेमान ने घर के भीतर भीतर निर्मल सोने

से मढ़ा और उस में ईश्वरीय बाणी के आगे सोने की सीकरों के लग एक आड़ बनाया और उस पर सोना मढ़ा॥ २२। और सारे घरको सोने से मढ़ा यहां लों कि समस्तघर बन गया और समस्त बेदी को जो ईश्वरीय बाणी के लग थी सोने से मढ़ा॥ २३। और ईश्वरीय बाणी के भीतर तैल वृक्ष के दस दस हाथ ऊंचे दो करोबी बनाये॥ २४। और करोबी का एक पंख पांच हाथ का और दूसरा पंख पांच हाथ का एक के पंख के एक खूंट से लेके दूसरे पंख के खूंट लों दस हाथ थे॥ २५। और दूसरा करोबी दस हाथ का दोनों करोबियों को एक ही नाप और एक ही डील का बनाया॥ २६। एक करोबी की ऊंचाई दस हाथ और वैसी ही दूसरी करोबी की भी॥ २७। और उस ने दोनों करोबियों को भीतर के घर में रक्खा और करोबी अपने डैने फैलाये ज़ए थे यहां लों कि एक का डैना एक भीत को छूता था और दूसरे करोबी का डैना दूसरी भीत को छूता था और उन के डैने एक दूसरे को घर के बीच में छूता था॥ २८। और उस ने करोबियों को सोने से मढ़ा॥ २९। और घर की सारी भीतों को चारों ओर खोदे ज़ए करोबियों की सूरतों से और खजूर पेड़ों से और खिले ज़ए फूलों से बाहर भीतर खोदा॥ ३०। और घर की गच को बाहर भीतर सोने से मढ़ा॥ ३१। और ईश्वरीय बाणी में पैठने के लिये उस ने जलपाई पेड़ के केवाड़े बनाये और सहोट और साह भीत के पांचवें भाग थे॥ ३२। और केवाड़े के पाट जलपाई काष्ठ के थे उस ने उन पर करोबियों को और खजूर पेड़ों को और खिले ज़ए फूलों को खोदा और करोबियों और खजूर पेड़ों पर सोना मढ़ा॥ ३३। वैसा उस ने मंदिर के द्वार के लिये जिस की चौखट जलपाई काष्ठ की थी भीत को चौथा भाग बनाया॥ ३४। और उस के दो केवाड़े देवदारु काष्ठ से बनाये और उन दोनों केवाड़ों के दो दो पाट दोहराए जाते थे॥ ३५। और उन पर करोबियों और खजूर पेड़ और खिले ज़ए फूल खोदे और उन खोदे ज़ए कार्यों को सोने से मढ़ा॥ ३६। और उस ने भीतर के आंगन की तीन पांती खोदे ज़ए पत्थर की बनाई और एक पांती आरज के काष्ठ की॥ ३७। चौथे बरस ज़ीफ़ के मास में परमेश्वर के मंदिर की नेंव डाली गई॥ ३८। और ग्यारहवें बरस बुल के मास में

जो आठवां मास है घर उस की समस्त सामग्री समेत और उस के सारे डौल के समान बन गया और उस के बनाने में सात बरस लगे॥

७ सातवां पर्ब्ब।

परंतु सुलेमान को अपना ही घर बनाने में तेरह बरस लगा और जब वुह अपना सारा घर बना चुका॥ २। तो उस ने लुबनान के बन का भी आरज काष्ठ के खंभों की चार पांती पर बनाया और खंभों पर आरज काष्ठ के लट्ठे थे उस घर की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ॥ ३। और उस की छत आरज काष्ठ से बनाई और कड़िओं को उस काष्ठ पर रक्खा जो पैंतालीस खंभों के ऊपर थी हर एक पांती में पंदरह पंदरह खंभे थे॥ ४। और खिड़कियों की तीन पांती थीं तीनों पांतो आम्ने साम्ने थीं॥ ५। समस्त द्वार और चौखट देखने में चौकोर थे और तीन पांतियों में खिड़की के सन्मुख खिड़की थी॥ ६। और उस ने खंभों का एक ओसारा बनाया जिस की लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ और ओसारा उस के सन्मुख था और खंभे और मोटा लट्ठा उन के सन्मुख॥ ७। तब उस ने सिंहासन के लिये एक ओसारा बनाया अर्थात् न्याय का ओसारा और उस की एक अलंग दूसरी लों आरज काष्ठ से पाटा॥ ८। और उस के रहने के घर के ओसारे में वैसा ही कार्य का एक दूसरा आंगन था और सुलेमान ने फ़िरऊन की बेटी के लिये जिसे उस ने ब्याहा था इस ओसारे की नाईं एक घर बनाया॥ ९। और उस की नेंव सारे बहुमूल्य पत्थर से थी जो गढ़े और आरे से चीरे गये थे और उसी रीति से घर के भीतर और बाहर नेंव से लेके छत लों और उसी भांति घर के बाहर आंगन लों बनाया॥ १०। और नेंव बहुमूल्य बड़े बड़े पत्थरों की थी दस दस और आठ आठ हाथ के पत्थर॥ ११। और गढ़े हुए पत्थरों के समान ऊपर भी बहुमूल्य पत्थरों का और आरज काष्ठ का था॥ १२। और चारों ओर के बड़े आंगन तीन पांती गढ़े हुए पत्थर की और एक पांती आरज लट्ठे की परमेश्वर के घर के भीतर के आंगन के लिये और घर के ओसारे के लिये। १३। और सुलेमान राजा ने सूर से हीराम को बुला भेजा॥

१४। और वुह नफ़ताली की गोष्ठी की एक बिधवा स्त्री का बेटा था और उस का बाप सूर का एक ठठेरा और पीतल के समस्त कार्य्य में बिद्या और ज्ञान से निपुण और परिपूर्ण था और वुह सुलेमान पास आया और उस का समस्त कार्य्य किया॥ १५। और उस ने पीतल के दो खंभे अठारह अठारह हाथ के ढाले और बारह हाथ की डोरी उन की चारों ओर का नाप था॥ १६। और उस ने खंभों के ऊपर धरने के लिये ढले हुए पीतल के दो झाड़ बनाये हर एक की ऊंचाई पांच हाथ की॥ १७। और झाड़ों के लिये जो खंभों के ऊपर थे चौघरे कार्य्य के और गुथी हुई सीकरें हर एक झाड़ के लिये सात सात बनाये॥ १८। और उस ने खंभे और उन के मथाल के झाड़ों को अनारों से ढांपने के लिये जाल कार्य्य के चारों ओर दो पांतियां बनाईं वैसा ही दूसरे झाड़ के लिये बनाया॥ १९। और खंभे के झाड़ों के ऊपर ओसारे में चार हाथ के सोसन फूल के कार्य्य॥ २०। और वैसा ही दोनों खंभों के झाड़ों के ऊपर जो जाल कार्य्य के लग थे बीच के आम्ने साम्ने और दूसरे झाड़ पर चारों ओर पांती पांती दो सौ अनार थे॥ २१। और उस ने मंदिर के ओसारे में खंभे खड़े किये और उस ने दहिना खंभा खड़ा किया और उस का नाम यख़ीन रक्खा [वुह स्थिर करेगा] और दूसरा खंभा बाईं ओर उस का नाम बोअज़ रक्खा [कि इस में दृढ़ता है]॥ २२। और खंभों के ऊपर सोसन फूल का कार्य्य सो खंभों का कार्य्य बन गया।

२३। फिर उस ने ढला हुआ एक समुद्र बनाया जिस का एक कोर दूसरे कोर से दस हाथ का था वुह चारों ओर गोल था और उस की ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की डोरी उस की चारों ओर जाती थी॥ २४। और उस के कोर की चारों ओर के नीचे हाथ भर में दस कलियां घेरीं जो समुद्र की चारों ओर घेरती थीं दो दो पांती में कलियां ढाली गईं॥ २५। वुह बारह बैलों पर धरा गया था तीन के मूंह उत्तर की ओर और तीन के पश्चिम की ओर और तीन के दक्षिण की ओर और तीन के पूर्ब की ओर और समुद्र उन सभों के ऊपर और उन के पुट्ठे भीतर की अलंग थे॥ २६। और उस की मोटाई चार अंगुल की और उस का कोर कटोरे के कोर की नाईं सोसन के फूलों से बना

ज्ञआ था और उस में दो सहस्र मन की समाई थी॥ २७। और उस ने पीतल के दस आधार बनाये एक एक आधार चार हाथ का लम्बा चार हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा॥ २८। और उन आधारों का कार्य ऐसा था उन के छोर थे और छोर कोरों के मध्य में थे॥ २९। और कोरों के मध्य में छोर के ऊपर सिंह और बैल और करोबी थे और कोरों के ऊपर एक आधार था और सिंहों और बैलों के नीचे कई एक अच्छे चोखे कार्य बनाये॥ ३०। और हर एक आधार के लिये पीतल की चार चार पहिया और पीतल के पत्र थे और उन के चार कोनों के लिये नीचे के आधार थे और स्नान पात्र के नीचे हर एक साज की अलंग ढले ज्ञए नीचे के आधार थे॥ ३१। और उस का मुंह झाड़ के भीतर और ऊपर हाथ भर का परंतु उस का मुंह गोल उस के आधार के कार्य की नाईं डेढ़ हाथ का था और उस के मुंह पर चित्रकारी और चौकोर गोट थे गोल नहीं॥ ३२। और गोट के नीचे चार पहिया थीं और पहियों की धुरी आधार में थी और हर एक पहियों की ऊंचाई डेढ़ हाथ की थी॥ ३३। और पहियों का काम रथ के पहियों के कार्य के समान उन की धुरी और माझा और पुट्ठी और आरा सब ढले ज्ञए थे॥ ३४। और हर एक आधार के चारों कोनों के नीचे के चार आधार थे और नीचे के आधार उसी आधार ही से थे॥ ३५। और आधार के सिरे पर चारों ओर आधा हाथ ऊंचा और आधार के सिरे पर उस के कोर और उस के गोट एक ही थे॥ ३६। क्योंकि उस के कोरों का पत्तर और उन के गोटों पर करोबी और सिंह और खजूर पेड़ हर एक के डौल और चारों ओर के साज के समान उस ने खोदा॥ ३७। इस डौल से उस ने दस आधार को बनाया और उन सब का नाप जोख और ढाल एक ही था॥ ३८। तब उस ने पीतल के दस स्नान पात्र बनाये हर एक स्नान पात्र में मन चालीस एक की समाई थी और हर एक स्नान पात्र चार हाथ का था उन दसों आधारों में हर एक पर एक स्नान पात्र था॥ ३९। और उस ने पांच आधार दहिनी अलंग और पांच बाईं अलंग रक्खे और उस ने समुद्र को पूर्व ओर घर की दहिनी अलंग दक्खिन के सन्मुख रक्खा॥ ४०। और हीराम ने पात्र और फावड़ियां

और बासन बनाये और हीराम ने परमेश्वर के मंदिर के लिये सुलेमान के लिये समस्त कार्य समाप्त किया॥ ४१। दो खंभे और झाड़ के कटोरे जो दोनों खंभों के मथाले पर थे और दोनों जाल कार्य झाड़ों के कटोरों के ढांपने के लिये दोनों खंभों के मथाले पर थे॥ ४२। और दोनों जाल कार्य के लिये चार सौ अनार अनारों की दो पांतियां एक एक जाल कार्य के लिये जिसतें खंभों के ऊपर के झाड़ों के दोनों टोंक ढांपे जायें। ४३। और दस आधार और आधारों पर दस स्नान पात्र॥ ४४। और एक समुद्र और बारह बैल समुद्र के नीचे॥ ४५। और हांड़ियां और फावड़ियां और बासन और यह समस्त पात्र जो हीराम ने सुलेमान राजा के लिये परमेश्वर के मंदिर के निमित्त बनाये ओपे ऊए पीतल के थे॥ ४६। राजा ने उन्हें यरदन के चौगान में और सुक्कात और जरतान के मध्य भूमि की गहिराई में ढाला॥ ४७। और सुलेमान ने उन सब पात्रों को उन की बक़ताई के मारे बेतौल छोड़ा और उस पीतल की तौल कधी जांची न गई॥ ४८। और सुलेमान ने परमेश्वर के मंदिर के लिये सब पात्र बनाये अर्थात् सोने की बेदी और सोने का मंच जिस पर भेंट की रोटी रक्खी जाती थी॥ ४९। और चोखे सोने की दीअटें पांच दहिनी और पांच बाईं अलंग और उस के फूल और दीये और चिमटे सोने के ईश्वरीय बाणी के आगे॥ ५०। और कटोरे और कतरनियां और बासन और चमचे और धूपदान निर्मल सोने के और भीतर के अत्यंत पवित्र स्थान के द्वारों के लिये और घर के अर्थात् मंदिर के द्वारों के लिये सोने की चूलें बनाईं॥ ५१। सो सब कार्य जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के मंदिर के लिये किये बन गये तब सुलेमान अपने पिता दाऊद की समर्पण किई ऊई बस्तें भीतर लाया अर्थात् चांदी सोना और पात्र परमेश्वर के घर के भंडारों में रक्खा।

८ आठवां पर्ब्ब।

तब सुलेमान ने इसराएल के प्राचीनों को और गोष्ठियों के सारे प्रधानों को और इसराएल के पितरों के अध्यक्षों को अपने पास यरूसलम में एकट्ठा किया जिसतें वे परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को

दाऊद के नगर सेहून से लावें॥ २। तब इसराएल के सारे लोग सुलेमान राजा के पास जेवनार में इथानिम मास में जो सातवां मास है एकट्ठे ऊए॥ ३। और इसराएल के सारे प्राचीन आये और याजकों ने मंजूषा उठाई॥ ४। और परमेश्वर की मंजूषा को और मंडली के तंबू को और तंबू में के समस्त पवित्र पात्रों को याजक और लावी उठा लाये॥ ५। और सुलेमान राजा ने और इसराएल की सारी मंडली ने जो उस पास एकट्ठी ऊई और उस के साथ मंजूषा के आगे थे भेड़ और बैल इतने बलि किये जिन का लेखा और गिनती बऊताई के मारे न किई गई॥ ६। और याजकों ने परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को लाके उस के स्थान में ईश्वर की बाचा के मंदिर के मध्य अत्यंत पवित्र में करोबियों के डैनों के नीचे रक्खा॥ ७। क्योंकि करोबी अपने डैने मंजूषा पर फैलाये थे और करोबियों ने मंजूषा को और उस के बहंगरों को ढांप लिया॥ ८। और बहंगरों के सारे पवित्र स्थान ईश्वरीय बाणी के आगे दिखाये जाने के लिये उन्हों ने बहंगरों को निकाला इस लिये वे बाहर देखे न जाते थे और वे आज लों वहां हैं॥ ९। पत्थर की उन दो पटियों को छोड़ जिन्हें मूसा ने उस में हरिब में रक्खा था जहां परमेश्वर ने इसराएल के संतान से जब वे मिस्र के देश से निकल आये थे बाचा बांधी थी मंजूषा में कुछ न था॥

१०। और यों ऊआ कि जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आये तब परमेश्वर का मंदिर मेघ से भर गया॥ ११। यहां लों कि मेघ के कारण याजक सेवा के लिये ठहर न सके क्योंकि परमेश्वर के बिभव से परमेश्वर का मंदिर भर गया था॥ १२। तब सुलेमान ने कहा कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं अंधकार मेघ में बास करूंगा॥ १३। मैं ने निश्चय तेरे निवास के लिये घर बनाया है एक सनातन के रहने के लिये एक स्थिर स्थान॥ १४। तब राजा ने अपना मूंह फेर के इसराएल की सारी मंडली को आशीष दिया और इसराएल की सारी मंडली खड़ी ऊई॥ १५। फेर उस ने कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य जिस ने मेरे पिता दाऊद से अपने मूंह से कहा और यह कहके अपने हाथ से पूरा किया है॥ १६। जब से मैं अपने इसराएल लोगों को मिस्र से निकाल लाया मैं ने सारे इसराएल की गोष्ठियों में से किसी नगर को नहीं चुना

कि घर बनावे जिसतें मेरा नाम उस में होवे परंतु मैं ने दाऊद को चुना कि मेरे इसराएल लोगों पर प्रधान होवे॥ १७। और मेरे पिता दाऊद के मन में था कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये एक घर बनावे॥ १८। और परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि मेरे नाम के लिये एक घर बनाना तेरे मन में था सो तू ने अच्छा किया कि तेरे मन में था॥ १९। तिस पर भी तू मेरे लिये घर न बनाना परंतु तेरा बेटा जो तेरी कटि से निकलेगा सो मेरे नाम के लिये घर बनावेगा॥ २०। और परमेश्वर ने अपने कहे हुए बचन को पूरा किया और मैं अपने पिता दाऊद के स्थान में उठा हूं और परमेश्वर की बाचा के समान इसराएल के सिंहासन पर बैठा हूं और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के नाम का एक घर बनाया है॥ २१। और मैं ने उस में मंजूषा के लिये एक स्थान बनाया जिस में परमेश्वर की बाचा है जो उस ने हमारे पितरों से किई जब वुह उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया॥ २२। और सुलेमान ने इसराएल की सारी मंडली के आगे और परमेश्वर की बेदी के आगे खड़े होके अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाये॥ २३। और कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे समान कोई ईश्वर ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में नहीं जो अपने सेवकों के साथ जो तेरे आगे अपने सारे मन से चलते हैं बाचा और दया को रखता है॥ २४। जिस ने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से अपने कहे के समान रक्खी तू ने अपने मुंह से भी कहा है और अपने हाथ से आज के दिन पूरा किया है॥ २५। इस लिये अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर अपने सेवक मेरे पिता दाऊद के साथ पालन कर जो तू ने यह कहके प्रण किया कि केवल यदि तेरे संतान अपनी चाल में चौकस होके तेरे समान मेरे आगे चलें तो तेरे लिये इसराएल के सिंहासन पर बैठने को मेरी दृष्टि में पुरुष कट न जायगा॥ २६। और अब हे इसराएल के ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं अपने उस बचन को जो तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद से कहा पूरा कर॥ २७। परंतु क्या सचमुच ईश्वर पृथिवी पर बास करेगा देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तेरी समाई नहीं रखते तो फिर क्या यह घर जो मैं ने बनाया है॥ २८। हे परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने सेवक की प्रार्थना और

बिनती पर सुरत लगा और अपने दास का गिड़गिड़ाना और प्रार्थना सुन जो तेरे सेवक ने आज के दिन तेरे आगे किई है॥ २९। जिसतें रात दिन तेरी आंखें इस स्थान की ओर खुली रहें उस स्थान की ओर जिस के बिषय में तू ने कहा है कि मेरा नाम वहां होगा जिसतें तू उस प्रार्थना को सुने जो तेरा सेवक इस स्थान में करेगा॥ ३०। अपने सेवक की बिनती सुन और जब तेरे इसराएल लोग इस स्थान में प्रार्थना करें तो अपने निवास स्थान स्वर्ग में से सुन और सुनके क्षमा कर॥ ३१। यदि कोई पुरुष अपने परोसी का अपराध करे और वुह उससे किरिया लेने चाहे और इस घर में तेरी बेदी के आगे किरिया खाई जावे॥ ३२। तो तू स्वर्ग पर से सुन और कर और अपने सेवकों का बिचार कर और दुष्ट को दोषी ठहराके उस का पाप उसी के सिर पर ला और धर्मियों को निर्दोष ठहराके उस धर्म्म के समान उसे प्रतिफल दे॥ ३३। और जब तेरे इसराएल लोग तेरे बिरोध पाप करने के कारण अपने बैरियों के आगे मारे जायें और फिर तेरी ओर फिरें और तेरे नाम को मान लेवें और प्रार्थना करें और इस घर की ओर तेरी बिनती करें॥ ३४। तो तू स्वर्ग में सुन और अपने इसराएल लोगों के पाप को क्षमा कर और उन्हें उस देश में जो तू ने उन के पितरों को दीया था फेर ला॥

३५। जब तेरे बिरोध पाप करने के कारण से स्वर्ग बंद हो जावे और मेंह न बरसे यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे नाम को मान लेवें और अपने पाप से फिरें इसलिये कि तू ने उन्हें दुःख दिया॥ ३६। तो तू स्वर्ग में सुन और अपने सेवक और अपने इसराएल लोग के पाप को क्षमा कर जिसतें उन्हें सच्चे मार्ग में जिन में उन्हें चलना उचित है सिखावे और अपने देश पर जो तू ने अपने लोगों को अधिकार के लिये दिया है मेंह बरसा॥ ३७। यदि देश में अकाल पड़े और यदि मरी होय और खेती झुलस जाय और लेढ़ा लगे अथवा टिड्डी अथवा यदि कीड़े लगें यदि उन के बैरी उन के देश में उन के किसी नगरों में उन्हें घेरें और जो कुछ मरी अथवा रोग होय॥ ३८। कोई मनुष्य से अथवा तेरे समस्त इसराएल लोग से जो जन अपने ही मन की बुराई को जाने और प्रार्थना और बिनती करे और अपने हाथ इस घर की ओर

फैलावे॥ ३९। तब तू स्वर्ग पर से अपने निवास स्थान से सुन और क्षमा कर और संपूर्ण कर और हर एक जन को जिस के मन को तू जानता है उस की चालों के तुल्य प्रतिफल दे [क्योंकि केवल तू ही समस्त मनुष्यों के संतान के अंतःकरण को जानता है]॥ ४०। जिसतें वे जीवन भर उस देश में जो तू ने उन के पितरों को दिया है तुझ से डरते रहें॥

४१। और उस परदेशी के विषय में जो तेरे इसराएल लोग में से नहीं है परंतु तेरे नाम के कारण परदेश से आवे॥ ४२। [क्योंकि वे तेरा बड़ा नाम और बलवंत भुजा और फैली हुई बांह को सुनेंगे] जब वुह आवे और इस घर की ओर प्रार्थना करे॥ ४३। तो स्वर्ग पर से अपने निवास स्थान से सुन और परदेशी की समस्त यांचना के समान उसे पूरा कर जिसतें पृथिवी के समस्त लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराएल लोग की नाईं तुझे डरें और जिसतें वे जानें की तेरा नाम इस घर पर जिसे मैं ने बनाया है पुकारा जाता है॥ ४४। यदि तेरे लोग अपने बैरी पर संग्राम के लिये निकलें जहां कहीं तू उन्हें भेजे और परमेश्वर की प्रार्थना इस नगर की ओर करें जिसे तू ने चुना है और इस घर की ओर जिसे मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया है॥ ४५। तब तू स्वर्ग पर से उन की प्रार्थना और बिनती सुन और उन का पद स्थिर कर॥ ४६। यदि वे तेरे विरुद्ध पाप करें [क्योंकि कोई निष्पापी नहीं] और तू उन से क्रुद्ध होके बैरी को सौंप देवे यहां लों कि वे उन्हें अपने देश में दूर अथवा निकट ले जायें॥ ४७। जिस देश में वे बंधुआई में पहुंचाये गये यदि वे फिर के सोचें और पश्चात्ताप करें और उन के देश में जो उन्हें बंधुआई में ले गये यह कहके बिनती करें कि हम ने पाप किया है हम ने हठ किया है हम ने दुष्टता किई है॥ ४८। और अपने सारे मन से और सारे प्राण से अपने बैरी के देश में जो उन्हें बंधुआई में लेगये थे तेरी ओर फिरें और अपने देश की ओर जो तू ने उनके पितरों को दिया और उस नगर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया तेरी प्रार्थना करें॥ ४९। तो तू अपने निवास स्थान स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और बिनती सुन और उन का पद स्थिर कर॥ ५०। और अपने लोगों को जिन्हों ने तेरे विरुद्ध पाप किया है क्षमा कर और सारे अपराधों को जो उन्हों ने तेरे विरुद्ध अपराध

किया है क्षमा कर और जो उन्हें बंधुआई में ले गये हैं वे उन पर दया करें और उन पर दयाल होवें॥ ५१। इस लिये कि जिन्हें तू मिस्र से अर्थात् लोहे की भट्ठी के मध्य में से निकाल लाया वे तेरे लोग और अधिकार हैं॥ ५२। जिसतें तेरे सेवक की प्रार्थना पर तेरी आखें खुली रहें और तेरे इसराएल लोगों की बिनती पर हर बात के लिये जो वे तुझे पुकारते हैं तू सुने॥ ५३। क्योंकि हे परमेश्वर ईश्वर जब तू हमारे पितरों को मिस्र से निकाल लाया जैसा तू ने अपने सेवक मूसा के द्वारा से कहा था वैसा तू ने उन्हें समस्त पृथिवी के लोगों से अपने अधिकार के लिये अलग किया॥ ५४। फिर ऐसा हुआ कि जब सुलेमान परमेश्वर के आगे बिनती और समस्त प्रार्थना कर चुका तो वुह परमेश्वर की बेदी के आगे से अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाने के साथ घुटना टेकने से उठा॥ ५५। फिर खड़ा होके यह कहके बड़े शब्द से इसराएल की सारी मंडली को आशीष दिई॥ ५६। कि परमेश्वर धन्य जिस ने अपने बचन के समान अपने इसराएल लोगों को बिश्राम दिया और उस ने जो अपने सेवक मूसा के द्वारा से प्रतिज्ञा किई थी उन में से एक बात भी न घटी॥ ५७। परमेश्वर हमारा ईश्वर जिस रीति से हमारे पितरों के साथ था हमारे साथ होवे वुह हमें न छोड़े और त्याग न करे॥ ५८। जिसतें वुह अपने समस्त मार्गों में चलाने को और अपनी आज्ञाओं को और बिधिन को और उस के बिचारों को जो उस ने हमारे पितरों से आज्ञा किई थी पालन करने को हमारे मन अपनी ओर झुकावे॥ ५९। और मेरे ये बचन जिस के लिये मैं ने परमेश्वर के आगे बिनती किई है सो रात दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के पास होवे कि जैसा प्रयोजन होय वैसा वुह अपने सेवक के पद को और अपने इसराएल लोगों के पद को प्रतिदिन स्थिर करे॥ ६०। जिसतें पृथिवी के समस्त लोग जानें कि परमेश्वर को छोड़ और कोई ईश्वर नहीं है॥ ६१। इस लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर की बिधि पर चलने को और आज के दिन की नाईं उस की आज्ञा पालन करने को हमारा अंतःकरण उस के आगे सिद्ध होवे॥ ६२। और राजा और उस के साथ सारे इसराएल ने परमेश्वर के आगे बलिदान चढ़ाये॥ ६३। और सुलेमान ने परमेश्वर

के लिये बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेड़ बकरी से कुशल का बलि किया और राजा ने और सारे इसराएल के समस्त संतानों ने इस रीति से परमेश्वर के मंदिर की स्थापना किई॥ ६४। उस दिन राजा ने परमेश्वर के मंदिर के आगे मध्य के आंगन को पवित्र किया क्योंकि वहां उस ने होम की भेंटें और मांस की भेंटें और कुशल की भेंटों की चिकनाई चढ़ाई क्योंकि परमेश्वर के सन्मुख जो पीतल की बेदी है सो होम की भेंटों के और मांस की भेंटों के और कुशल की भेंटों की चिकनाई के लिये छोटी ऊई॥ ६५। तब सुलेमान ने और उस के साथ इसराएल के समस्त लोगों ने हमात के पैठ से मिस्र की नदी लों बड़ी मंडली ने सात दिन और सात दिन अर्थात् चौदह दिन पर्व्व किया॥ ६६। आठवें दिन उस ने उन लोगों को बिदा किया और उन्हों ने राजा का धन्य माना और परमेश्वर ने जो अपने दास दाऊद के कारण और अपने इसराएल लोगों के कारण समस्त भलाई किई थी उस्से आनंदित और मगन होके अपने अपने डेरे गये।

९ नवां पर्व्व॥

और यों ऊआ कि जब सुलेमान ने परमेश्वर के मंदिर और राजा के भवन और सुलेमान ने जो समस्त इच्छा किई सो बना के समाप्त किया॥ २। परमेश्वर ने जैसा जिबजन में सुलेमान को दर्शन दिया था वैसा दोहराके उसे दर्शन दिया॥ ३। और परमेश्वर ने उसे कहा कि जो तू ने मेरे आगे प्रार्थना और बिनती किई है सो मैं ने सुनी है और जिस घर को तू ने मेरे नाम को नित्य स्थापन करने के लिये बनाया है मैं ने उसे पवित्र किया है और मेरी आंखें और मेरा अंतःकरण उस में नित्य रहेंगे॥ ४। और यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मेरे आगे मन की खराई से और सच्चाई से चलेगा जिसतें मेरी समस्त आज्ञा के समान करे और मेरी बिधि और बिचार को पालन करेगा॥ ५। तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन को इसराएल पर सदा के लिये स्थिर करूंगा जैसा मैं ने तेरे पिता दाऊद से यह कहके बाचा बांधी और कहा कि तेरे बंश से राज्य कभी न जायगा॥ ६। परंतु यदि तुम मेरा पीछा करने से किसी

रीती से हटोगे अथवा तुम अथवा तुम्हारे बंश मेरी आज्ञाओं और बिधिन को जो मैं ने तुम्हारे आगे रक्खीं पालन न करोगे परंतु जाके उपरी देवों की सेवा और दंडवत करोगे॥ ७। तब मैं इसराएल को इस देश से जो मैं ने उन्हें दिया है उखाड़ डालूंगा और इस घर को जिसे मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूंगा और इसराएल एक कहावत और कहानी सारे लोगों में होगा॥ ८। और हर एक पथिक इस महत मंदिर से बिस्मित होके फुफकारी मारके कहेगा कि परमेश्वर ने किस कारण इस देश से और इस घर से ऐसा किया है॥ ९। तब वे उत्तर देंगे इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर को छोड़ दिया जो उन के पितरों को मिस्र से निकाल लाया और उपरी देवों को ग्रहण किया और उन की दंडवत और सेवा किई है इस लिये परमेश्वर ने उन पर ये सब बुराइयां लाया॥ १०। और यों हुआ कि बीस बरस के अंत में जब सुलेमान दोनों घरों को अर्थात् परमेश्वर का घर और राजा का भवन बना चुका॥ ११। सूर के राजा हीराम ने सुलेमान की समस्त इच्छा के समान उसे आरज हच्च और देवदारु हच्च और सोना पहुंचाया था तब सुलेमान राजा ने हीराम को जलील के देश में बीस नगर दिये॥ १२। और हीराम सूर से उन नगरों को जो सुलेमान ने उसे दिये थे देखने को आया और वे नगर उस की दृष्टि में ठीक न थे॥ १३। और उस ने उसे कहा कि हे भाई कैसे नगर हैं जो आप ने मुझे दिये हैं और उस ने उन का नाम कबूल देश रक्खा॥ १४। और हीराम ने छः कोरी तोड़े सोने राजा कने भेजे॥ १५। और सुलेमान राजा के कर ठहराने का यह कारण था कि परमेश्वर के घर और अपने भवन और मिल्लो और यरूसलम की भीत और हसूर और मजिद्दो और जज़र बनावे॥ १६। मिस्र का राजा फ़िरऊन चढ़ गया था और जज़र को लेके आग से फूंक दिया और उस नगर के बासी कनआनियों को घात किया और अपनी बेटी को सुलेमान की पत्नी होने के लिये उसे दिया॥ १७। इस लिये सुलेमान ने जज़र और नीचे के बैतहूरून को बनाया॥ १८। और देश के बन से बालात और तद्मूर को॥ १९। और सुलेमान के समस्त भंडार के नगर और उस के रथों के नगर

ग्रोर घोड़चढ़ों के नगर के लिये ग्रोर सुलेमान की बांछा जा उस ने बांछा किई थी यरूसलम ग्रोर लुबनान में ग्रोर ग्रपने राज्य के सारे देश में बनाये॥ २०। सारे लोग जा ग्रमूरियों ग्रोर हित्तियों ग्रोर फरज्जियों ग्रोर हवियों ग्रोर यबूसियों से बच रहे थे जा इसराएल के संतान न थे॥ २१। उन के संतान जा देश में उन के पीछे बचे रहे जिन्हें इसराएल के संतान सर्वथा मिटा न सके उन्हें से सुलेमान ने ग्राज के दिन लें दासत्व की सेवा का कर लिया॥ २२। परंतु इसराएल के संतानों में से किसी का सुलेमान ने दास न बनाया परंतु वे उसके योद्धा ग्रोर सेवक ग्रोर ग्रध्यक्ष ग्रोर सेनापति ग्रोर सारथी ग्रोर घोड़चढ़े थे॥ २३। ग्रोर सुलेमान के कार्य्यां पर पांच सो पचास श्रेष्ठ प्रधान थे जा बनिहारों पर ग्राज्ञाकारी थे॥ २४। परंतु फिरऊन की कन्या दाऊद के नगर से निकलके ग्रपने घर में ग्राई जा सुलेमान ने उस के लिये बनाया तब उस ने मिल्लो का बनाया॥ २५। ग्रोर जा यज्ञबेदी सुलेमान ने परमेश्वर के कारण बनाई थी उस पर बरस में तीन बार होम की भेंटें ग्रोर कुशल की भेंटें चढ़ाईं थीं ग्रोर उस ने उस पर परमेश्वर के ग्रागे सुगंध जलाया सो वुह उस घर का बना चुका।

२६। फिर सुलेमान राजा ने ग्रदूम के देश में लाल समुद्र के तीर पर ग्रसयूनजब्र में जा ईलूत के पास है जहाजों की बहीर बनाई॥ २७। ग्रोर हीराम ने सुलेमान के सेवकों के साथ उसी बहीर में ग्रपने सेवक मल्लाहों का जा समुद्र के जानकार थे भेजे। २८। ग्रोर वे ग्राफीर का गये ग्रोर वहां से चार सो बीस ताेड़े सोने लेके राजा सुलेमान पास ग्राये॥

१० दसवां पर्ब्ब।

ग्रोर जब सिबा की रानी ने परमेश्वर के नाम के विषय में सुलेमान का यश सुना तो वुह गूढ़ प्रश्नों से उस की परीक्षा लेने ग्राई॥ २। वुह बहुत से लोगों के ग्रोर सुगंध द्रव्य लदे हुए ऊंट ग्रोर बहुत सोना ग्रोर मणि के साथ बड़ी भीड़ से यरूसलम में ग्राई ग्रोर उस ने सुलेमान पास ग्राके सब जा उस के मन में था उस्से पूछा॥ ३। ग्रोर सुलेमान ने उस के समस्त प्रश्नों का उत्तर दिया ग्रोर राजा से कोई बस्तु छिपी न

थी जो उस ने उसे न बताया॥ ४। और जब सिबा की रानी ने सुलेमान की समस्त बुद्धि को और उस घर को जो उस ने बनाया था॥ ५। और उस के मंच के भोजन को और उस के सेवकों का बैठना और उस के दासों का खड़ा होना और उन का पहिरावा और उस के कटोरे के देवैयों उस का चढ़ावा जो वुह लेके परमेश्वर के मंदिर को जाता था देखा तब वुह मूर्छित हो गई॥ ६। और उस ने राजा से कहा कि आप की कहावत और बुद्धि जो मैं ने अपने ही देश में सुना था सो सत्य समाचार था॥ ७। तिस पर भी जब लों मैं ने अपनी आंखों से न देखा तब लों उन बातों की प्रतीत न किई और देखिये कि आधा मुझे न कहा गया था क्योंकि तू ने बुद्धि और भलाई उस यश से अधिक बढ़ाई॥ ८। धन्य तेरे जन और धन्य सेवक जो तेरे आगे खड़े होके तेरा ज्ञान सुनते हैं॥ ९। परमेश्वर तेरा ईश्वर धन्य जिस ने तुझ से प्रसन्न होके इसराएल के सिंहासन पर तुझे बैठाया इस कारण कि परमेश्वर ने इसराएल से प्रीति रक्खी इस लिये उस ने तुझे न्याय और धर्म्म के लिये राजा किया॥

१०। और उस ने एक सौ बीस तोड़े सोने और अति बज़त सुगंध द्रव्य और मणि राजा को दिये और इन के समान जो सिबा की रानी ने सुगंध द्रव्य सुलेमान राजा को बज़ताई से दिया ऐसा कभी न आया॥ ११। और हीराम की बहीर भी जो ओफ़ीर से सोना लाये थे और ओफ़ीर से चंदन के बज़त वृक्ष और मणि लाये॥ १२। और राजा ने परमेश्वर के मंदिर के लिये और अपने भवन के लिये चंदन वृक्ष के खंभे बनवाये और गायकों के लिये बीणा और खंजड़ी बनवाई और चंदन के ऐसे वृक्ष न कभी आये न आज लों देखे गये॥ १३। और सुलेमान राजा ने सिबा की रानी को उस की समस्त बांछा जो उस ने मांगी दिई और सुलेमान ने राजकीय दान उसे दिया और वुह अपने सेवकों समेत अपने ही देश को फिर गई।

१४। बेपारी और सुगंध द्रव्य के बेपारी॥ १५। और अरब के समस्त राजा और देश के अध्यक्ष जो सोना लाते थे उस्से अधिक एक बरस में छः सौ छयासठ तोड़े सोने सुलेमान पास पज़ंचाये गये॥ १६। और सुलेमान राजा ने सोना गढ़वाके दो सौ ढालें बनवाईं हर एक ढाल में

सवा पांच सो मोहर के लग भग लगा॥ १७। श्रोर सोना गढ़वाके तीन सो ढालें बनवाईं एक एक ढाल डेढ़ डेढ़ सेर सोने की थी सो राजा ने उन्हें उस घर में जो लुबनान के बन में था रक्खा।

१८। श्रोर राजा ने हाथी दांत का एक बड़ा सिंहासन बनवाके उसे अत्युत्तम सोने से मढ़वाया॥ १९। उस सिंहासन की छः सीढ़ी श्रोर सिंहासन के ऊपर पीछे की श्रोर गोल था श्रोर आसन की दोनें श्रोर टेक था श्रोर दोनें हाथें की अलंग दो सिंह खड़े थे॥ २०। श्रोर उन छः सीढ़ियें के ऊपर दोनें अलंग सिंह खड़े थे किसी राज्य में ऐसा न बना था॥ २१। श्रोर सुलेमान के समस्त पीने के पात्र सोने के थे लुबनान के बन में जो घर था उस के भी समस्त पात्र चोखे सोने के थे एक भी रूपे का न था सुलेमान के समय में उस की कुछ गिनती न थी॥ २२। क्योंकि हीराम के बहीरों के साथ राजा के तरसीसी बहीर समुद्र में थे श्रोर तरसीस के बहीर तीन तीन बरस में एक बार सोना श्रोर रूपा श्रोर हाथी दांत श्रोर बंदर श्रोर मोर लाते थे॥ २३। सो सुलेमान राजा धन श्रोर बुद्धि में पृथिवी के सारे राजाश्रों से अधिक था॥ २४। श्रोर ईश्वर ने सुलेमान के अंतःकरण में जो ज्ञान दिया था उसे सुन्ने के लिये सारी पृथिवी उस के दर्शन की बांछा करती थी॥ २५। श्रोर हर एक जन बरस बरस अपनी अपनी भेंट लाया अर्थात् सोने श्रोर रूपे के पात्र श्रोर पहिरावा श्रोर हथिआर श्रोर सुगंध द्रव्य श्रोर घोड़े श्रोर खच्चर॥ २६। श्रोर सुलेमान ने रथ श्रोर घोड़चढ़े एकट्ठे किये श्रोर उस के पास चैादह सो रथ श्रोर बारह सहस्र घोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने रथों के नगरों में श्रोर राजा के संग यरूसलम में रक्खा॥ २७। श्रोर राजा ने यरूसलम में चांदी को पत्थरों के तुल्य श्रोर आरज वृक्ष बहुताई में चोगान के गूलर पेड़ों के समान किया॥ २८। श्रोर सुलेमान के पास घोड़े मिस्र से लाये गये थे श्रोर राजा के बेपारी भाव से लाते थे॥ २९। श्रोर एक रथ छः सो टुकड़े चांदी को मिस्र से निकलते श्रोर ऊपर आते थे श्रोर एक घोड़ा डेढ़ सो को श्रोर हित्ती के सारे राजाश्रों के लिये श्रोर अराम के राजाश्रों के लिये उन के द्वारा से ऐसा ही लाते थे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

परंतु सुलेमान राजा ने फिरऊन की बेटी को छोड़ बहुत उपरी स्त्रियों से प्रीति किई अर्थात् मोअबी अम्मूनी अटूमी सैदूनी और हित्ती की स्त्रियों से॥ २। उन जातिगणों से जिन के बिषय में परमेश्वर ने इसराएल के संतान को आज्ञा किई थी कि तुम उन के पास मत जाओ और न वे तुम्हारे पास आवें निश्चय वे तुम्हारे मन को अपने देवों की ओर फिरावेंगी पर सुलेमान प्रीति से उन्हीं से लिपटा रहा॥ ३। और उस की सात सौ राज कुमारी पत्नियां और तीन सौ सहेलियां थीं और उस की पत्नियों ने उस के मन को फेर दिया॥ ४। और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान वृद्ध हुआ तब उस की पत्नियों ने उस के मन को भिन्न देवों की ओर फेर दिया और उस का मन अपने ईश्वर परमेश्वर की ओर अपने पिता दाऊद के मन के समान सिद्ध न था॥ ५। क्योंकि सुलेमान ने सैदानियों की देवता इसतारात का और अम्मूनी के घिनित मिलकूम का पीछा पकड़ा॥ ६। और सुलेमान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उस ने परिपूर्णता से अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर का पीछा न पकड़ा॥ ७। तब सुलेमान ने यरूसलम के सन्मुख की पहाड़ी पर मोअबियों की घिनित कमूस के लिये और अम्मून के संतानों की घिनित मालक के लिये ऊंचा स्थान बनाया॥ ८। इसी रीति से अपनी सारी उपरी पत्नियों के लिये जो अपने देवतों के लिये धूप जलाती और बलि करती थीं उस ने बनाया॥ ९। और परमेश्वर सुलेमान पर इस कारण क्रुद्ध हुआ कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर से जिस ने उसे दोबार दर्शन दिया था उस का मन फिर गया॥ १०। और उसे इस बिषय में आज्ञा किई थी कि वुह आन देवों का पीछा न पकड़े परंतु उस ने परमेश्वर की आज्ञा को पालन न किया॥ ११। इस कारण परमेश्वर ने सुलेमान से कहा जैसा कि तुझ से यह हुआ है और तू ने मेरे नियम और बिधिन को और जो मैं ने तुझे आज्ञा किई पालन नहीं किया है निश्चय मैं राज्य तुझ से फाड़ूंगा और तेरे सेवक को देऊंगा॥ १२। तथापि तेरे जीते जी ऐसा न करूंगा परंतु तेरे बेटे

के हाथ से उसे फाड़ूंगा॥ १३। तथापि मैं सारा राज्य न फाड़ लेऊंगा परंतु अपने सेवक दाऊद के कारण और अपने चुने हुए यरूसलम के लिये तेरे बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा॥ १४। तब परमेश्वर ने सुलेमान के एक बैरी को उभारा अर्थात् अदूमी हदद को वुह अदूम में राजाओं के बंश से था॥ १५। क्योंकि जब दाऊद अदूम में था और सेनापति यूअब अदूम के समस्त पुरुष को घात करके उन्हें गाड़ने गया॥ १६। [क्योंकि यूअब छः मास लों समस्त इसराएलियों के संग वहीं रहा यहां लों कि उस ने अदूम में एक पुरुष को जीता न छोड़ा]॥ १७। तब हदद अपने पिता के कई एक अदूमी सेवकों के साथ मिस्र को भाग गया और तब वुह छोटा बालक था॥ १८। फिर वे मिदयान से निकलके फ़ारान में आये और फ़ारान से लोगों को साथ लेके मिस्र में मिस्र के राजा फ़िरऊन पास पहुंचे जिस ने उसे घर दिया और उस के लिये भोजन ठहराया और उसे भूमि दिई॥ १९। और हदद ने फ़िरऊन की दृष्टि में बड़ा अनुग्रह पाया यहां लों कि उस ने अपनी पत्नी तिहफ़निहीस रानी की बहिन उसी को बियाह दिई॥ २०। और तिहफ़निहीस की बहिन उस के लिये जनूबत जनी जिस का दूध तिहफ़निहीस ने फ़िरऊन के घर में छुड़ाया और जनूबत फ़िरऊन के बेटों के साथ फ़िरऊन के घराने में रहता था॥ २१। और जब हदद ने मिस्र में सुना कि दाऊद ने अपने पितरों में शयन किया और सेनापति यूअब मर गया तब उस ने फ़िरऊन से कहा कि मुझे बिदा कीजिये कि मैं अपने ही देश को जाऊं॥ २२। तब फ़िरऊन ने उसे कहा कि तुझे मेरे पास कौन सी घटती है कि तू अपने ही देश को जाने चाहता है उस ने उत्तर दिया कुछ नहीं तथापि मुझे किसी रीति से जाने दीजिये॥ २३। फिर ईश्वर ने उस के लिये बैरी खड़ा किया अर्थात् इलियदः के बेटे रजून को जो सूबः के राजा अपने स्वामी हददअज़र पास से भागा था॥ २४। और जब दाऊद ने उन्हें घात किया उस ने अपने पास लोगों को एकट्ठा किया और एक जथा पर प्रधान हुआ और दमिश्क में जाके बास किया और दमिश्क में राज्य किया॥ २५। और हदद की बुराई से अधिक सुलेमान के जीवन भर वुह इसराएल का बैरी था और वुह इसराएल से

घिन रखता था और अराम पर राज्य करता था॥ २६। और सरीदः के एक इफ़राती नबात के बेटे यरुबिआम सुलेमान का सेवक जिस की माता का नाम सरुअः बिधवा थी उसी ने राजा के बिरोध हाथ उठाया॥ २७। और राजा के बिरोध हाथ उठाने का यह कारण था कि सुलेमान ने मिल्लो को बनाया और अपने बाप दाऊद के नगर के दरारों को बंद किया॥ २८। और यरुबिआम अति बलवान बीर था और उस तरुण को फुरतीला देखके सुलेमान ने उसे यूसूफ़ के घराने पर प्रधान किया॥ २९। और उस समय में ऐसा हुआ कि जब यरुबिआम यरूसलम से बाहर गया तब शैलूनी अख़ियाह भविष्यद्वक्ता ने उसे मार्ग में पाया और वुह एक नया बस्त्र पहिने था और केवल ये दोनों चौगान में थे॥ ३०। तब अख़ियाह ने उस पर के नये बस्त्र को पकड़ा और फाड़के बारह टुकड़े किये॥ ३१। और उस ने यरुबिआम को कहा कि दस टुकड़े तू ले क्योंकि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं सुलेमान के हाथ से राज्य फाड़ूंगा और दस गोष्ठियां तुझे देऊंगा॥ ३२। [परंतु मेरे सेवक दाऊद के कारण और यरूसलम नगर के कारण जिसे मैं ने इसराएल की समस्त गोष्ठियों में से चुन लिया वुह एक गोष्ठी पावेगा]॥ ३३। इस कारण कि उन्हों ने मुझे त्याग के सैदानियों की देवता इसतारात की और मोअबियों के देव कमुस की और अम्मून के संतान के देव मिलकूम की पूजा किई है और अपने पिता दाऊद की नाईं मेरी दृष्टि में जो भला है मेरे मार्गों में नहीं चला और मेरी बिधि और बिचारों को पालन नहीं किया॥ ३४। तथापि मैं समस्त राज्य को उस के हाथ से निकाल न लेऊंगा परंतु मैं अपने सेवक दाऊद के कारण जिसे मैं ने इस कारण चुना कि उस ने मेरी आज्ञा और बिधिन को पालन किया उस के जीवन भर में उस को राजा कर रक्खूंगा॥ ३५। परंतु उस के बेटे के हाथ से मैं राज्य लेऊंगा और दस गोष्ठी तुझे देऊंगा॥ ३६। और मैं उस के बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा जिसतें यरूसलम नगर में जिसे मैं ने अपने नाम के लिये चुना है मेरा दास दाऊद एक दीपक रक्खा करे॥ ३७। और मैं तुझे लेऊंगा और तू अपने मन की समस्त इच्छा के समान राज्य करेगा और इसराएल का

राजा होगा॥ ३८। और ऐसा होगा कि यदि तू मेरी समस्त आज्ञाओं को सुनेगा और मेरे मार्गों पर चलेगा और जिस रीति से मेरा दास दाऊद करता था वैसा मेरी बिधि और आज्ञा पालने के लिये मेरी दृष्टि में भलाई करेगा तो मैं तेरे साथ होऊंगा और तेरे लिये एक दृढ़ घर बनाऊंगा जैसा मैं ने दाऊद के लिये बनाया और इसराएल को तुझे देऊंगा॥ ३९। और इस लिये मैं दाऊद के बंश को दुःख देऊंगा परंतु सदा लों नहीं॥ ४०। इस लिये सुलेमान ने यरुबिआम को बधन करने चाहा तब यरुबिआम उठा और भागके मिस्र के राजा शिशाक के पास मिस्र में गया और सुलेमान के मरने लों वहीं रहा॥ ४१। और सुलेमान का रहा हुआ कार्य्य और सब जो उस ने किया और उस की बुद्धि क्या सुलेमान की क्रिया की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ ४२। और यरूसलम में सारे इसराएलियों पर सुलेमान के राज्य के दिन चालीस बरस थे॥ ४३। और सुलेमान अपने पितरों में सो गया और अपने बाप दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे रहबिआम ने उस की संती राज्य किया।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

और रहबिआम सिकम को गया क्योंकि समस्त इसराएल सिकम में आये कि उसे राजा बनावें॥ २। और ऐसा हुआ कि जब नबात के बेटे यरुबिआम ने जो अब लों मिस्र में था यह सुना [क्योंकि वुह सुलेमान राजा के आगे से भागा था और मिस्र में जा रहा]॥ ३। उन्हों ने भेजके उसे बुलवाया तब यरुबिआम और इसराएल की सारी मंडली आये और यह कहके रहबिआम से बोले॥ ४। कि तेरे पिता ने हमारे जूए को कठिन किया इस लिये अब तू अपने पिता की कठिन सेवा को और उस के भारी जूए को जो उस ने हम पर रक्खा हलका कर और हम तेरी सेवा करेंगे॥ ५। तब उस ने उन्हें कहा तीन दिन लों चले जाओ तब मुझ पास फिर आओ और लोग चले गये॥ ६। तब रहबिआम राजा ने पुरनियों से जो उस के पिता सुलेमान के जीते जी उस के आगे होते थे परामर्श किया और कहा कि तुम्हारा क्या मंत्र है मैं इन

लोगों को क्या उत्तर देऊं॥ ७। और वे उसे कहके बोले कि यदि आज के दिन तू इन लोगों का सेवक होके उन की सेवा करेगा और उत्तर देके उन्हें अच्छी बात कहेगा वे सर्व्वदा तेरे सेवक हो रहेंगे॥ ८। परंतु उस ने प्राचीनों के मंत्र को त्यागके उन युवा पुरुषों के संग जो उस के साथ साथ बैठे थे और उस के आगे खड़े होते थे परामर्श किया॥ ९। ये लोग मुझ से यह कहके बोले और उस ने उन्हें कहा कि तेरे पिता ने जो जूआ हम पर रक्खा है उसे कुछ हलका कीजिये तुम क्या मंत्र देते हो मैं उन्हें क्या उत्तर देऊं॥ १०। तब उन युवा पुरुषों ने जो उस के साथ साथ बढ़े थे उसे कहके बोले कि जिन लोगों ने तुझ से यह कहा है कि तेरे पिता ने हमारे जूए को भारी किया है परंतु तू हमारे लिये उसे हलका कर तू उन्हें यों कहियो कि मेरी छिंगुली मेरे पिता की कटि से अधिक मोटी होगी॥ ११। और जैसा कि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था मैं तुम्हारे जूए को बढ़ाऊंगा मेरे पिता ने कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई परंतु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना करूंगा॥ १२। सो जैसा राजा ने ठहराके कहा था कि तीसरे दिन फेर मेरे पास आना वैसा ही यरुबिआम और सारे लोग तीसरे दिन रहबिआम के पास आये॥ १३। तब राजा ने उन लोगों को कठोरता से उत्तर दिया और जो मंत्र प्राचीनों ने दिया था उसे त्याग किया॥ १४। और युवा पुरुषों के मंत्र के समान उन्हें कहा कि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था परंतु मैं उस जूए को और भारी करूंगा मेरे पिता ने तुम्हें कोड़ों से दंड दिया था परंतु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना करूगा॥ १५। सो राजा ने उन लोगों की बात न सुनी क्योंकि यह ईश्वर की ओर से था जिसतें वुह अपने बचन को जो परमेश्वर ने शैलूनी अखियाह की ओर से नबात के बेटे यरुबिआम से कहा पूरा करे।

१६। सो जब सारे इसराएलियों ने देखा कि राजा ने उन लोगों की न सुनी तब लोगों ने यह कहके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या भाग है और यस्सी के बेटे के साथ हमारा कुछ अधिकार नहीं है हे इसराएल अपने अपने तंबू को जाओ हे दाऊद अपने घर को देख सो इसराएल अपने तंबूओं को चले गये॥ १७। परंतु इसराएल के

संतान जो यहूदाह के नगरों में बस्ते थे रहबिआम ने उन पर राज्य किया॥ १८। तब रहबिआम राजा ने अदूराम को जो कर का स्वामी था भेजा और समस्त इसराएलियों ने यहां लों उसे पत्थरों से पथरवाह किया कि वुह मर गया इस लिये रहबिआम राजा आप को दृढ़ करके यरूसलम को भागने के लिये रथ पर चढ़ा॥ १९। सो इसराएल आज के दिन लों दाऊद के घराने से फिर गये॥ २०। और ऐसा ज़ुआ कि जब सारे इसराएलियों ने सुना कि यरुबिआम फिर आया तो उन्हों ने भेजके उसे मंडली में बुलवाया और उन्हों ने उसे सारे इसराएलियों पर राजा किया केवल यहूदाह की गोष्ठी को छोड़ कोई दाऊद के घराने की ओर न ज़ुआ॥ २१। और जब रहबिआम यरूसलम में पज़ुंचा तो उस ने यहूदाह के सारे घराने को बिनयमीन की गोष्ठी समेत जो सब एक लाख अस्सी सहस्र चुने ज़ुए जन लड़ाक थे एकट्ठा किया कि इसराएल के घराने से लड़ के राज्य को सुलेमान के बेटे रहबिआम की ओर लावें॥ २२। परंतु ईश्वर के जन शमाया के पास ईश्वर का वचन यह कहके पज़ुंचा॥ २३। कि यहूदाह के राजा सुलेमान के बेटे रहबिआम को और सारे यहूदाह और बिनयमीन के घराने को और उबरे ज़ुए लोगों को कहके बोल॥ २४। कि परमेश्वर यों कहता है कि चढ़ाई न करो और अपने भाई इसराएल के संतान से लड़ाई न करो परंतु हर एक तुम्हें से अपने अपने घर को फिरे क्योंकि यह बात मेरी ओर से है सो उन्हों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और परमेश्वर के वचन के समान उलटे फिरे॥ २५। तब यरुबिआम इफ़रायम पहाड़ में सिकम को बनाके उस में बसा उस के पीछे वहां से निकलके फनुएल को बनाया॥ २६। तब यरुबिआम ने अपने मन में कहा कि अब राज्य दाऊद के घराने को फिर जायगा॥ २७। यदि ये लोग बलि चढ़ाने के लिये परमेश्वर के मंदिर में यरूसलम को चढ़ेंगे तब उन लोगों का मन अपने प्रभु यहूदाह के राजा रहबिआम की ओर फिरेगा और वे मुझे मार लेंगे और यहूदाह के राजा रहबिआम की ओर फिर जायेंगे॥ २८। इस लिये राजा ने परामर्श करके सोने की दो बछिया बनवाईं और उन्हें कहा कि तुम्हारे लिये अति क्लेश है कि तुम यरूसलम को जाओ

हे इसराएल अपने देवों को देख जो तुझे मिस्र की भूमि से निकाल लाये॥ २९। और उस ने एक को बैतएल में और दूसरे को दान में स्थापित किया॥ ३०। और यह बात एक पाप हुआ क्योंकि लोग दान में जाके एक की पूजा करते थे॥ ३१। और उस ने ऊंचे स्थानों में एक घर बनाया और नीच लोगों में से याजक बनाये जो लावी के बेटों में से न थे॥ ३२। और यरुबिआम ने यहूदाह के एक पर्ब की नाईं आठवें मास की पंद्रहवीं तिथि में पर्ब ठहराया और बेदी पर बलिदान चढ़ाया और ऐसा ही उस ने उन बछियों के आगे जो उस ने बनाई थीं बैतएल में किया और उस ने उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जिन्हें उस ने बनाया था रक्खा॥ ३३। सो आठवें मास की पंद्रहवीं तिथि को अर्थात् उस मास में जो उस ने अपने मन में रोपा था बैतएल में अपनी बनाई हुई बेदी पर बलिदान चढ़ाया और इसराएल के संतानों के लिये एक पर्ब्ब ठहराया और उस ने उस बेदी पर चढ़ाया और धूप जलाया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

और देखो कि परमेश्वर के बचन से ईश्वर का एक जन यहूदाह से बैतएल में आया और यरुबिआम बेदी के पास धूप जलाने के लिये खड़ा था॥ २। और उस ने परमेश्वर की बचन से बेदी के बिरुद्ध में पुकारके कहा कि हे बेदी हे बेदी परमेश्वर यों कहता है कि देख यूसियाह नाम एक बालक दाऊद के घराने में उत्पन्न होगा और वुह ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं तुझी पर चढ़ावेगा और मनुष्यों के हाड़ तुझ पर जलाये जायेंगे॥ ३। और उस ने उसी दिन यह कहके एक पता दिया कि परमेश्वर ने यह कहके यह पता दिया है कि देख बेदी फट जायगी और उस पर की राख उंडेली जायगी।

४। और ऐसा हुआ कि जब यरुबिआम राजा ने ईश्वर के जन का कहना सुना जिस ने बैतएल की बेदी के बिरुद्ध पुकारा था तो उस ने बेदी पर से अपना हाथ बढ़ाके कहा कि उसे पकड़ लेओ सो उस का हाथ जो उस ने उस पर बढ़ाया था झुरा गया ऐसा कि वुह उसे फिर सकेड़

न सका ॥ ५। और उस लक्षण के समान जो ईश्वर के उस जन ने परमेश्वर के बचन से दिया था बेदी फट गई और राख बेदी पर से उंड़ेली गई ॥ ६। तब राजा ने ईश्वर के उस जन को कहा कि अब अपने ईश्वर परमेश्वर से बिनती करिये और मेरे लिये प्रार्थना करिये कि मेरा हाथ चंगा किया जाय तब ईश्वर के जन ने परमेश्वर के रुख बिनती किई और राजा का हाथ चंगा किया गया और आगे की नाईं हो गया ॥ ७। तब राजा ने ईश्वर के उस जन से कहा कि मेरे साथ घर में चलके सुस्ताइये मैं तुझे प्रतिफल देऊंगा ॥ ८। परंतु ईश्वर के जन ने राजा से कहा कि यदि तू अपना आधा घर मुझे देवे तथापि मैं तेरे साथ भीतर न जाऊंगा और इस स्थान में न रोटी खाऊंगा न जलपान करूंगा ॥ ९। क्योंकि परमेश्वर के बचन से मुझे यों कहा गया कि न रोटी खाइयो न जलपान करियो और जिस मार्ग से होके तू जाता है उसी से फेर मत आना ॥ १०। सो वुह जिस मार्ग में होके बैतएल में आया था उस मार्ग से न गया वुह दूसरे मार्ग से चला गया ॥ ११। उस समय बैतएल में एक वृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था और उस के बेटे उस पास आये और उन कार्यों को जो ईश्वर के जन ने उस दिन बैतएल में किये उसे कह सुनाया और उस की उन बातों को जो उस ने राजा से कही थीं अपने पिता के आगे बर्णन किया ॥ १२। और उन के पिता ने उन से पूछा कि वुह किस मार्ग से गया क्योंकि उस के बेटों ने देखा था कि ईश्वर का वुह जन जो यहूदाह से आया किस मार्ग से फिर गया ॥ १३। फिर उस ने अपने बेटों से कहा कि मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो सो उन्हों ने उस के लिये गदहे पर काठी बांधी और वह उस पर चढ़ा ॥ १४। और ईश्वर के उस जन के पीछे चला और उसे बलूत वृक्ष तले बैठे पाया तब उस ने उसे कहा कि तू ईश्वर का वुह जन है जो यहूदाह से आया वुह बोला हां ॥ १५। तब उस ने उसे कहा कि मेरे घर चल और रोटी खा ॥ १६॥ और वुह बोला मैं तेरे साथ नहीं फिर सक्ता और न तेरे साथ जा सक्ता और न मैं तेरे साथ इस स्थान में रोटी खाऊंगा न जल पीऊंगा ॥ १७। क्योंकि परमेश्वर के बचन से मुझे यों कहा गया कि तू वहां न रोटी खाना न जल पीना और जिस मार्ग से तू जाता है उस मार्ग से होके न फिरना ॥

१८। तब उस ने उसे कहा कि मैं भी तेरी नाईं एक भविष्यद्वक्ता हूं श्रीर परमेश्वर के बचन के द्वारा से एक दूत ने मुझे कहा कि उसे अपने साथ अपने घर में फिरा ला जिसतें वुह रोटी खाय श्रीर पानी पीये उस ने उस्से झूठ कहा॥ १९। सो वुह उस के साथ फिर गया श्रीर उस के घर में रोटी खाई श्रीर जल पीया॥ २०। श्रीर यों हुश्रा कि ज्यों वे मंच पर बैठे थे तब परमेश्वर का बचन उस भविष्यद्वक्ता पर जो उसे फिरा लाया था उतरा॥ २१। श्रीर उस ने ईश्वर के उस जन से जो यहूदाह से आया था चिल्लाके कहा कि परमेश्वर यह कहता है कि इस कारण तू ने परमेश्वर के बचन को उलंघन किया है श्रीर जो तेरे ईश्वर परमेश्वर ने तुझे आज्ञा किई है तू ने उसे पालन न किया॥ २२। परंतु फिर आया श्रीर उस ने जिस स्थान के विषय में तुझे कहा कि कुछ रोटी न खाना न जल पीना उसी स्थान में तू ने रोटी खाई श्रीर जल पीया सो तेरी लोथ तेरे पितरों की समाधि में न पहुंचेगी॥ २३। श्रीर ऐसा हुश्रा कि जब वुह खा पी चुका तब उस ने उस के लिये अर्थात् उस भविष्यद्वक्ता के लिये जिसे वुह फेर लाया था गदहे पर काठी बांधी॥ २४। जब वुह वहां से गया तो मार्ग में उसे एक सिंह मिला जिस ने उसे मार डाला श्रीर उस की लोथ मार्ग में पड़ी थी श्रीर गदहा उस पास खड़ा रहा श्रीर सिंह भी उस लोथ के पास खड़ा था॥ २५। श्रीर देखो कि लोगों ने उधर से जाते जाते लोथ को मार्ग में पड़ी देखा श्रीर कि सिंह भी लोथ पास खड़ा है तब उन्हों ने नगर में आके जहां वुह वृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था कहा॥ २६। श्रीर जब उस भविष्यद्वक्ता ने जो उसे मार्ग में से फिरा लाया था सुना तो कहा कि यह ईश्वर का वुह जन है जिस ने परमेश्वर का बचन न माना इस लिये परमेश्वर ने उसे सिंह को सोंप दिया जिस ने उसे परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने कहा था फाड़ा श्रीर मार डाला है॥ २७। फिर वुह अपने बेटों से यह कहके बोला कि मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो श्रीर उन्हों ने बांधी॥ २८। तब उस ने जाके उस की लोथ मार्ग में पड़ी पाई श्रीर गदहा श्रीर सिंह लोथ पास खड़े थे सिंह ने लोथ को न खाया था न गदहे को फाड़ा था॥ २९। तब उस भविष्यद्वक्ता ने ईश्वर के जन

की लोथ को उठाके उस गदहे पर लादा श्रीर फेर लाया श्रीर उस के लिये शोक करते ज्ञए ब्रुद्ध भविष्यद्वक्ता नगर में पज्ञंचा कि उसे गाड़े॥ ३०। फिर उस ने उस की लोथ को अपनी ही समाधि में रक्खा श्रीर यह कहके उस के लिये उन्हों ने बिलाप किया कि हाय मेरे भाई॥ ३१। श्रीर उस के गाड़ने के पीछे यों ज्ञश्रा कि वुह यह कहके अपने बेटों से बोला कि जब मैं मरूं तो मुझे ईश्वर के इस जन की समाधि में गाड़ियो श्रीर मेरी हड्डियां उस की हड्डियों के पास रखियो॥ ३२। क्योंकि वुह बचन जो परमेश्वर ने बैतएल की बेदी श्रीर सिमरून के नगरों के ऊंचे स्थानों के समस्त घरों के बिरोध में कहा सो अवश्य पूरा होगा॥ ३३। इस के पीछे यरुबिश्राम अपनी बुराई से न फिरा परन्तु फिर नीच लोगों को ऊंचे स्थानों का याजक बनाया जिस ने चाहा उसे उस ने स्थापित किया श्रीर वुह ऊंचे स्थानों का एक याजक ज्ञश्रा॥ ३४। श्रीर यही बस्तु यरुबिश्राम के घराने के लिये यहां लों पाप ज्ञश्रा कि उसे उखाड़े श्रीर पृथिवी पर से नष्ट करे॥

१४ चैादहवां पर्ब्ब॥

उस समय में यरुबिश्राम का बेटा अबियाह रोगी ज्ञश्रा॥ २। श्रीर यरुबिश्राम ने अपनी पत्नी से कहा कि उठके अपना भेष बदल जिसतें न जाना जाय कि तू यरुबिश्राम की पत्नी है श्रीर शीलो को जा श्रीर देख वहां अखियाह भविष्यद्वक्ता है जिस ने मुझे कहा था कि तू इन लोगों का राजा होगा॥ ३। श्रीर अपने हाथ में दस रोटियां श्रीर लड्डू श्रीर एक पात्र मधु लेके उस पास जा श्रीर वुह तुझे बतावेगा कि इस लड़के को क्या होगा॥ ४। तब यरुबिश्राम की पत्नी ने वैसाही किया श्रीर उठके शीलो को गई श्रीर अखियाह के घर में पज्ञंची परन्तु अखियाह देख न सक्ता था क्योंकि बुढ़ापे के कारण उस की आखें बैठ गई थीं॥ ५। तब परमेश्वर ने अखियाह से कहा कि देख यरुबिश्राम की पत्नी अपने बेटे के बिषय में तुझ से कुछ पूछने को आती है क्योंकि वुह रोगी है तू उसे यों यों कहियो क्योंकि यों होगा कि जब वुह भीतर आवेगी वुह अपना भेष बदल डालेगी॥ ६। श्रीर यों ज्ञश्रा कि जब

वह द्वार पर पहुंची और अखियाह ने उस के पांओं का शब्द सुना तो उस ने उसे कहा कि हे यरुबिआम की पत्नी भीतर आ तू अपना भेष क्यों बदलती है क्योंकि मैं कठिन समाचार के लिये तुझ पास भेजा गया हूं॥ ७। सो जा यरुबिआम से कह कि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं ने लोगों में से तुझे बढ़ाया और अपने इसराएल लोग पर अध्यक्ष किया॥ ८। और दाऊद के घराने से राज्य फाड़के तुझे दिया तथापि तू मेरे सेवक दाऊद के समान न हुआ जिस ने मेरी आज्ञाओं को पालन किया और जिस ने अपने सारे मन से केवल वही किया जो मेरी दृष्टि में अच्छा था॥ ९। परन्तु सभों से जो तेरे आगे थे अधिक बुराई किई है क्योंकि मुझे क्रुद्ध करने को तू ने जाके अपने लिये और देवों को और ढाली हुई मूर्त्तिन को बनाया और मुझे अपने पीछे डाल दिया है॥ १०। सो देख मैं यरुबिआम के घराने पर बुराई लाऊंगा और यरुबिआम के हर एक को जो भीत पर मूत्ता है और इसराएलियों में बन्द हैं और बचे हैं नष्ट करूंगा और उन को जो यरुबिआम के घर में बच रहेंगे यों मिटा डालूंगा जैसा कोई जन कूड़े को यहां लों ले जाता है कि सब जाता रहे॥ ११। यरुबिआम का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के पच्छी खायेंगे क्योंकि परमेश्वर ने यों कहा है॥ १२। सो तू उठके अपने ही घर जा और नगर में तेरे पांव पहुंचते ही लड़का मर जायगा॥ १३। और उस के लिये सारे इसराएल बिलाप करेंगे और उसे गाड़ेंगे क्योंकि यरुबिआम की समाधि में केवल वही पहुंचेगा इस कारण कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की ओर यरुबिआम के घराने में से उस में भलाई पाई गई॥ १४। और परमेश्वर इसराएलियों पर एक राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन यरुबिआम के घराने को नष्ट करेगा परंतु क्या अर्थात् अभी॥ १५। और परमेश्वर इसराएलियों को मारेगा जिस रीति से जल में सेंठा हिलता है और इसराएल को उस अच्छी भूमि से जो उस ने उन के पितरों को दिई है उखाड़ फेंकेगा और उन्हें नदी के पार लों बिथरायेगा इस कारण कि उन्हों ने अपना अपना कुंज बनाके परमेश्वर को खिजाके रिसाया॥ १६। और

वुह यरुबिआम के पाप के कारण इसराएल को दूर करेगा क्योंकि उस ने पाप किया और इसराएल से पाप करवाया॥ १७। तब यरुबिआम की पत्नी उठ चली और तिरज: में आई और ज्योंहीं वुह देहली पर पहुंची त्योंहीं लड़का मर गया॥ १८। और जैसा परमेश्वर ने अपने सेवक अख़ियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था उन्हों ने उसे गाड़ा और सारे इसराएलियों ने उस के लिये बिलाप किया॥ १९। और यरु-बिआम की रही हुई क्रिया जिस रीति से उस ने युद्ध किया और कि जिस रीति से उस ने राज्य किया सो देखो इसराएल के राजाओं के समाचार की पुस्तक में लिखा है॥ २०। और यरुबिआम ने बाईस बरस राज्य किया तब अपने पितरों में सो गया और उस का बेटा नदब उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥ २१। और सुलेमान के बेटे रहबिआम ने यहूदाह पर राज्य किया उस ने एकतालीस बरस की अवस्था में राज्य करना आरंभ किया और यरूसलम में अर्थात् उस नगर में जिसे परमेश्वर ने अपना नाम रखने के लिये इसराएल की समस्त गोष्ठियों में से चुन लिया था सत्रह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम नअमः जो अम्मूनी थी॥ २२। और यहूदाह ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन्हों ने अपने पितरों के पाप से अधिक पाप करके परमेश्वर को खिजाके क्रोध दिलाया॥ २३। क्योंकि उन्हों ने भी अपने लिये हर एक ऊंचे पहाड़ पर और एक एक हरे पेड़ तले ऊंचा स्थान और मूर्त्ति और कुंज बनाया॥ २४। और देश में सदूमी भी थे और उन्हों ने अन्यदेशियों के समस्त घिनित कार्यों के समान किया जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तानों के आगे से दूर किया॥ २५। और रहबिआम राजा के पांचवें बरस ऐसा हुआ कि मिस्र का राजा शीशाक यरूसलम के बिरोध में चढ़ आया॥ २६। और वुह परमेश्वर के मंदिर का धन और राजा के घर का धन लेके चला गया और वुह सब कुछ ले गया जो सोने की ढालें सुलेमान ने बनाई थीं वुह सब ले गया॥ २७। और रहबिआम राजा ने उन की सन्ती पीतल की ढालें बनाईं और प्रधान दौड़हों को जो राजा के भवन के द्वार की रक्षा करते थे दिया॥ २८। और ऐसा हुआ कि जब राजा परमेश्वर के मंदिर में जाता था तब पहरू उन्हें उठा लेते थे फिर उन्हें लाके पहरू की

कोठरी में रख छाड़ते थे॥ २९। अब रहबिआम की रही ऊई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया सो क्या यहूदाह के राजावली के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा॥ ३०। और रहबिआम में और यरुबिआम में जीवन भर सर्वदा युद्ध रहा॥ ३१। और रहबिआम ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों के साथ गाड़ा गया और उस की माता का नाम नअमः जो अम्मूनी थी और उस के बेटे अबियाम ने उस की संती राज्य किया॥

१५ पन्दरहवां पर्ब्ब

और नबात के बेटे यरुबिआम के राज्य के अठारहवें बरस अबियाम ने यहूदाह पर राज्य किया॥ २। उस ने यरूसलम में तीन बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मअकः था जो अबिसलुम की बेटी थी॥ ३। और जैसा उस के पिता ने उस्से पहिले पाप किया वैसे उस ने भी किये और उस का मन परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर सिद्ध न था जैसा कि उस के पिता दाऊद का था॥ ४। तथापि दाऊद के कारण उस के ईश्वर परमेश्वर ने उसे यरूसलम में एक दीपक दिया कि उस के बेटे को उस के पीछे बैठावे और जिसतें यरूसलम को स्थिर करे॥ ५। इस कारण कि दाऊद ने वही कार्य किया जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक था अपने जीवन भर केवल ऊरियाह हित्ती की बात को छोड़ और किसी आज्ञा से न मुड़ा॥ ६। और रहबिआम और यरुबिआम के मध्य में जीवन भर युद्ध रहा। ७॥ अब अबियाम की रही ऊई क्रिया और सब जो उस ने किया था सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है। ८॥ और अबियाम और यरुबिआम में लड़ाई थी तब अबियाम ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा और उस का बेटा असा उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥ ९। और इसराएल के राजा यरुबिआम के राज्य के बीसवें बरस असा यहूदाह पर राज्य करने लगा॥ १०। उस ने यरूसलम में एकतालीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मअकः था जो अबिसलुम की बेटी थी॥ ११। और असा ने अपने पिता दाऊद की नाईं

परमेश्वर की दृष्टि में ठीक किया॥ १२। और उस ने गांड़ुओं को देश से दूर किया और उन मूर्त्तिन को जिन्हें उस के पितरों ने बनाया था निकाल फेंका॥ १३। और उस ने अपनी माता मअ्‌कः को भी रानी होने के पद से अलग किया क्योंकि उस ने कुंज में एक मूर्त्ति बनाई थी और असा ने उस की मूर्त्ति को ढा दिया और कैदरून के नाले के तीर जला दिया॥ १४। परंतु ऊंचे स्थान अलग न किये गये तथापि उस का मन जीवन भर परमेश्वर के आगे सिद्ध था॥ १५। और जो जो बस्तु उस के पिता ने समर्पण किई थी और जो जो बस्तु उस ने आप समर्पण किई थी अर्थात् रूपा और सोना और पात्र उस ने उन्हें परमेश्वर के मंदिर में पहुंचाया॥ १६। और असा में और इसराएल के राजा बअ्‌शा में उन के जीवन भर युद्ध रहा॥ १७। और इसराएल का राजा बअ्‌शा यहूदाह के बिरोध में चढ़ गया और रामः को बनाया जिसतें यहूदाह के राजा असा पास किसी को जाने न देवे॥ १८। तब असा ने परमेश्वर के मंदिर के भंडार का बचा हुआ रूपा और सोना और राजा के घर का धन लेके अपने सेवकों के हाथ में सौंपा और असा राजा ने उन्हें अराम हज़यून के बेटे तबरिम्मून के बेटे बिनहदद पास जो दमिश्क में रहता था यह कहके भेजा॥ १९। कि मेरे और तेरे मध्य में और मेरे बाप के और तेरे बाप के बीच मेल है देख मैं ने तेरे लिये रूपा और सोना भेंट भेजी सो आइये और इसराएल के राजा बअ्‌शा से मेल तोड़िये जिसतें वुह मेरी ओर से चढ़ जाय॥ २०। तब बिनहदद ने असा राजा की बात मानके अपने सेनापतिन को इसराएल के नगरों के बिरोध में भेजा और ऐयून और दान को और अबिल बैतमअ्‌कः को और समस्त किन्नारात को नफताली के समस्त देश सहित मारा॥ २१। और ऐसा हुआ कि जब बअ्‌शा ने सुना तब रामः का बनाना छोड़के तिरजः में जा रहा॥ २२। तब असा राजा ने सारे यहूदाह में प्रचारा और कोई न रहा सो वे रामः के पत्थरों को और उस के लट्ठों को जिन्हें से बअ्‌शा ने बनाया था उठा ले गये और असा राजा ने बिनयमीन के जिबअ् को और मिसफ़ा को उन से बनाया॥ २३। और असा की समस्त उबरी हुई क्रिया और उस के समस्त पराक्रम और सब जो उस ने किया था और उस

ने जो जो नगर बनाये सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है तथापि उस के बुढ़ापे में उस के पांव में रोग था॥ २४। तब असा ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पितरों में दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस का बेटा यहूशफात उस की सन्ती राजा हुआ॥ २५। और यहूदाह के राजा असा के राज्य के दूसरे बरस यरुबिआम का बेटा नदब इसराएल के संतान का राजा हुआ और उस ने इसराएल पर दो बरस राज्य किया॥ २६। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता के मार्ग में और उस के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया चला॥ २७। तब इशकार के घराने में से अख़ियाह के बेटे बअशा ने उस के बिरोध में गुष्ट बांधी और फ़िलिस्तियों के जिबतून में उसे घात किया [क्योंकि नदब और सारे इसराएल ने जिबतून को घेरा था]। २८। अर्थात् यहूदाह के राजा असा के तीसरे बरस बअशा ने उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया॥ २९। और ऐसा हुआ कि उस ने राज्य पर स्थिर होके यरुबिआम के सारे घराने को बध किया और उस ने यरुबिआम के लिये एक श्वासधारी को न छोड़ा जब लों उसे नाश न कर डाला जैसा कि परमेश्वर ने अपने सेवक अख़ियाह शैलूनी के द्वारा से कहा था॥ ३०। क्योंकि यरुबिआम ने आप बहुत पाप किये थे और इसराएल से भी पाप करवाये थे और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को निपट क्रोधित किया था रिसियाके खिजाया था॥ ३१। और नदब की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था सो इसराएल के राजाओं के समय के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ ३२। और असा और इसराएल के राजा बअशा में उन के जीवन भर लड़ाई रही॥ ३३। और यहूदाह के राजा असा के राज्य के तीसरे बरस अख़ियाह का बेटा बअशा तिरज़ः में समस्त इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने चौबीस बरस राज्य किया॥ ३४। उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और यरुबिआम के मार्ग में और उस के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया चलता था॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब ॥

तब बअशा के बिरोध में हनानी के बेटे याहू पर परमेश्वर का बचन उतरा ॥ २। जैसा कि मैं ने तुझे धूल में से उठाया और अपने लोग इसराएलियों पर अध्यक्ष किया परन्तु तू यरुबिआम के पथ पर चला और तू ने मेरे इसराएली लोगों से पाप करवाया ॥ ३। देख मैं बअशा के बंश को और उस के घराने के बंश को दूर करूंगा और मैं तेरे घराने को नबात के बेटे यरुबिआम के घराने के समान करूंगा ॥ ४। बअशा के घर का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और जो चौगान में मर जायगा उसे आकाश के पच्छी खायेंगे ॥ ५। अब बअशा की रही ऊई क्रिया और जो कुछ उस ने किया और उस की सामर्थ्य इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं ॥ ६। सो बअशा अपने पितरों में सो गया और तिरजः में गाड़ा गया और उस के बेटे एला ने उस की सन्ती राज्य किया ॥ ७। और हनानी के बेटे याहू भविष्यद्वक्ता के द्वारा से परमेश्वर का बचन बअशा के बिरोध में और उस के घराने के बिरोध में आया अर्थात् समस्त बुराइयों के कारण जो उस ने परमेश्वर की दृष्टि में करके अपने हाथ के कार्यों से जो यरुबिआम के घराने की नाईं था और इस कारण कि उसे मार डाला था उसे रिस दिलाया ॥ ८। और यहूदाह के राजा असा के राज्य के छब्बीसवें बरस बअशा के बेटे एला ने तिरजः में इसराएल पर दो बरस राज्य किया ॥ ९। और जब वुह तिरजः में अपने घर के प्रधान अरजा के घर में पीके मतवाला रहा था तब उस के आधे रथों के प्रधान उस के सेवक जिमरी ने उस के बिरोध में गुष्ट किई ॥ १०। तब जिमरी ने भीतर पैठके उसे मारा और यहूदाह के राजा असा के सताईसवें बरस उसे मार डाला और उस की सन्ती राज्य किया ॥ ११। और यों ऊआ कि जब वुह राज्य करने लगा तो सिंहासन पर बैठते ही उस ने बअशा के सारे घराने को घात किया तब उस ने उस के लिये न तो एक पुरुष को जो भीत पर मूत्ता है न उस के कुटुम्ब को न मित्र को छोड़ा ॥ १२। यों जिमरी ने परमेश्वर की बाचा के समान जो

उस ने बअशा के बिषय में याहू भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा और बअशा के समस्त घराने का नष्ट किया॥ १३। बअशा के सारे पापों के कारण और उस के बेटे एला के पापों के कारण जो उन्हों ने किये और जिन से उन्हों ने इसराएल से पाप करवाये यों अपनी मूढ़ता से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को रिस दिलाया॥ १४। अब एला की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया था सो इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा।

१५। यहूदाह के राजा असा के सताईसवें बरस ज़िमरी ने तिरजः में सात दिन राज्य किया और लोगों ने फिलिस्तियों के जिबतून के बिरोध में छावनी किई॥ १६। और जब छावनी के लोगों ने सुना कि ज़िमरी ने गुष्ट करके राजा को भी बधन किया है इस लिये समस्त इसराएल ने सेनापति उमरी को छावनी में उसी दिन इसराएल पर राजा किया॥ १७। और उमरी ने सारे इसराएल समेत जिबतून से चढ़के तिरजः को घेरा॥ १८। और यों हुआ कि जब ज़िमरी ने देखा कि नगर लिया गया तो वुह राजा के भवन में गया और अपने ऊपर राजा के भवन में आग लगाके जल मरा॥ १९। उस के पापों के कारण जो उस ने यरुबिआम के मार्ग पर चलने में और अपने पाप में जो उस ने इसराएल से पाप करवाके किया था बुराई किई॥ २०। और ज़िमरी की रही हुई क्रिया और उस का छल जो उस ने किया इसराएल के राजाओं के समय के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा॥ २१॥ उस के पीछे इसराएल लोग दो भाग हुए आधे लोग गिनात के बेटे तिबनी को राजा करने के उस की ओर और आधे लोग उमरी के पीछे हुए॥ २२। परन्तु जो लोग उमरी के पीछे हुए थे उन लोगों ने गिनात के बेटे तिबनी की ओर के लोगों को जीता और तिबनी मारा गया और उमरी ने राज्य किया॥ २३॥ और यहूदाह के राजा असा के राज्य के एकतीसवें बरस उमरी इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने बारह बरस राज्य किया तिरजः में छः बरस राज्य किया॥ २४। फेर उस ने दो तोड़ा चांदी पर समरून का पहाड़ समर से मोल लेके उस पहाड़ पर एक नगर बसाया और उस नगर का नाम जो उस ने बनाया था समरून

रक्खा जो समर के पहाड़ का स्वामी था॥ २५। परन्तु उमरी ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन सब से जो उस्से आगे थे अधिक बुराई किई॥ २६। क्योंकि वुह नबात के बेटे यरुबिआम के सारे मार्ग में और उस के पाप में चलता था जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाके परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को अपनी मूढ़ता से रिस दिलाया॥ २७। अब उमरी की रही हुई क्रिया और उस का पराक्रम जो उस ने दिखाया सो इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा॥ २८। उस के पीछे उमरी अपने पितरों में सो गया और समरून में गाड़ा गया और उस के बेटे अखिअब ने उस की सन्ती राज्य किया॥

२९। और यहूदाह के राजा असा के राज्य के अठतीसवें बरस उमरी का बेटा अखिअब इसराएल पर राज्य करने लगा और उमरी के बेटे अखिअब ने बाईस बरस समरून में इसराएल पर राज्य किया॥ ३०। और उमरी के बेटे अखिअब ने उन सब से जो उस्से आगे थे परमेश्वर की दृष्टि में अधिक बुराई किई॥ ३१। और यों हुआ कि उस ने इतने पर बस न किया कि नबात के बेटे यरुबिआम के से पाप करता था परंतु वुह सैदानियों के राजा इतबअल की बेटी ईजबिल को ब्याह लाया और जाके बअल को पूजा और उस के आगे दंडवत किई॥ ३२। और बअल के मन्दिर में जो उस ने समरून में बनाया था बअल के लिये एक बेदी बनाई॥ ३३। और अखिअब ने कुंज बनाया और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का उन सब इसराएली राजाओं से जो उस्से आगे थे अधिक रिस उभाड़ा॥ ३४। उस के दिनों में हैएल बैत-एली ने यरीहो को बनाया उस ने उस की नेंव अपने पहिलौंठे अबिराम पर डाली और उस के फाटक अपने लहुरे सगूब पर खड़े किये जैसा कि परमेश्वर ने नून के बेटे यहूसूअ के द्वारा से बचन दिया था॥

१७ सत्तरहवां पर्व्व।

तब जिलिअद के बासियों में से इलियाह तिसबी ने अखिअब से कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के जीवन सों जिस के आगे मैं

खड़ा हूं कई एक बरस लों न ओस पड़ेगी न मेंह बरसेगा परंतु जब मैं कहूंगा॥ २। और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन उस पर उतरा॥ ३। कि यहां से चलके पूर्ब्ब की ओर जा और करीथ की नाली के पास जो यरदन के आगे है आप को छिपा॥ ४। और ऐसा होगा कि तू उस नाली से पीजियो और मैं ने जंगली कौव्वों को आज्ञा किई है कि वे तुझे वहां खिलावें॥ ५। सो उस ने जाके परमेश्वर के बचन के समान किया और यरदन के आगे करीथ नाली के पास जा रहा॥ ६। और सांझ बिहान जंगली कौव्वे उस पास रोटी और मांस लाया करते थे और वुह उस नाली से पीता था॥ ७। और कुछ दिन के पीछे ऐसा हुआ कि देश में मेंह न बरसने के कारण से नाली का जल सूख गया॥ ८। तब परमेश्वर का बचन यह कहके उस पर उतरा॥ ९। कि उठके सैदानियों के सरफत को चला जा और वहां रह देख मैं ने तेरे प्रतिपाल के लिये एक रांड़ को आज्ञा किई है॥ १०। सो वुह उठके सरफत को गया और जब वुह नगर के फाटक पर पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बिधवा वहां लकड़ियां बटोर रही थी और उस ने उसे पुकारके कहा कि कृपा करके मुझे एक घोंट पानी किसी पात्र में लाइये कि पीऊं ११। और जब वुह लाने चली तो इतने में वुह उसे पुकारके बोला कि मैं बिनती करता हूं कि अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी मेरे लिये लेती आइयो॥ १२। तब उस ने उसे कहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के जीवन सों मेरे पास एक भी फुलका नहीं परंतु केवल मुट्ठी भर पिसान एक मटके में है और पात्र में थोड़ा तेल और देखिये कि मैं दो लकड़ियां बटोर रही हूं जिसतें घर जाके अपने और अपने बेटे के लिये पोऊं और सिद्ध करूं कि हम खायें और मर जायें॥ १३। तब इलियाह ने उसे कहा कि मत डर जा और अपने कहने के समान कर परंतु पहिले मेरे लिये उस्से एक लिट्टी बना और मुझ पास ला और पीछे अपने और अपने बेटे के लिये पोइयो॥ १४। क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि परमेश्वर पृथिवी पर जब लों मेंह न बरसावे मटके में का पिसान न घटेगा और पात्र में का तेल न चुकेगा॥ १५। और उस ने जाके इलियाह के कहने के समान किया और आप और वुह और उस का घराना बहुत दिन लों

खाते रहे॥ १६। और परमेश्वर की बचन के समान जो उस ने इलि-याह के द्वारा से कहा था मटके का पिसान और पात्र का तेल न घटा॥ १७। और इस के पीछे ऐसा ज्ञआ कि घर की स्वामिनी का बेटा रोगी ज्ञआ और उस का रोग ऐसा बढ़ा कि उस में प्राण न रहा॥ १८। तब उस स्त्री ने इलियाह से कहा कि हे ईश्वर के जन तुझ से मुझ से क्या प्रयोजन तू मेरे पाप स्मरण कराने को और मेरे बेटे को नाश करने को आया है॥ १९। और उस ने उस्से कहा कि अपना बेटा मुझे दे और वुह उस की गोद से लेके उसे कोठे पर जहां वुह रहता था चढ़ा ले गया और उसे अपने बिछौने पर लेटाया॥ २०। और उस ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि हे मेरे ईश्वर परमेश्वर क्या तू ने इस रांड़ पर भी बिपत्ति भेजी जिस के यहां मैं उतरा ह्रं कि उस के बेटे को नाश करे॥ २१। तब उस ने आप को तीन बार उस बालक पर फैलाया और परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि हे मेरे ईश्वर परमेश्वर मैं बिनती करता ह्रं कि इस बालक का प्राण इस में फिर आवे॥ २२। तब परमेश्वर ने इलियाह की प्रार्थना सुनी और बालक का प्राण उस में फिर आया और वुह जी उठा॥ २३। तब इलियाह उस बालक को उठाके कोठरी में से घर के भीतर ले गया और उसे उस की माता को सौंप दिया और इलियाह ने कहा कि देख तेरा बेटा जीता है॥ २४। तब उस स्त्री ने इलियाह से कहा कि अब इस्से मैं जानती ह्रं कि तू ईश्वर का जन है और तेरे मूंह से परमेश्वर का बचन सत्य है।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

और बज्जत दिन के पीछे ऐसा ज्ञआ कि तीसरे बरस परमेश्वर का बचन इलियाह पर उतरा कि आप को अखिअब पर प्रगट कर और मैं देश में मेंह बरसाऊंगा॥ २। और जब इलियाह अपने तईं अखिअब को दिखाने गया तब समरून में बड़ा अकाल था॥ ३। तब अखिअब ने अपने घर के अध्यक्ष अबदियाह को बुलाया अब अबदियाह ईश्वर से बज्जत डरता था॥ ४। क्योंकि यों ज्ञआ कि जब ईजबिल ने ईश्वर के भविष्यद्वक्तों को मार डाला तो अबदियाह ने सौ भविष्यद्वक्तों को लेके

पचास पचास करके एक खोह में छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला॥ ५। और अखिअब ने अबदियाह से कहा कि देश में फिर और समस्त जल के सोताओं और नालों में जा क्या जाने कि घोड़े और खच्चर के जीते रखने के लिये घास मिल जाये न हो कि पशु हम्से से नष्ट होवें॥ ६। सो उन्हों ने आपुस में देश का बिभाग किया कि आरंपार जायें अखिअब आप एक ओर गया और अबदियाह आप दूसरी ओर॥ ७। और ज्यों अबदियाह मार्ग में था इलियाह उसे मिला और उस ने उसे पहिचाना और औंधा गिरा और बोला कि आप मेरे प्रभु इलियाह हैं॥ ८। और उस ने उसे उत्तर दिया कि मैं हीं हूं जा अपने प्रभु से कह कि इलियाह है॥ ९। वुह बोला कि मैं ने क्या अपराध किया है जो तू अपने दास को बध करने के लिये अखिअब के हाथ सौंपा चाहता है॥ १०। परमेश्वर तेरे ईश्वर के जीवन सों कोई जाति अथवा राज्य नहीं है जहां प्रभु ने तेरी खोज के लिये न भेजा हो और जब उन्हों ने कहा कि वह नहीं है तब उस ने जाति की और राज्य की किरिया लिई कि हम ने उसे नहीं पाया॥ ११। और अब तू कहता है कि जाके अपने प्रभु से कह कि देख इलियाह है॥ १२। और जब मैं तेरे पास से चला जाऊंगा तब ऐसा होगा कि परमेश्वर का आत्मा तुझे क्या जाने कहां ले जायगा और जब मैं जाके अखिअब से कहूंगा और वुह तुझे न पा सके तब मुझे बधन करे परंतु मैं तेरा सेवक लड़काई से परमेश्वर से डरता हूं॥ १३। मेरे प्रभु से नहीं कहा गया कि जब ईज़बिल ने परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों को मार डाला तब मैं ने क्या किया कि परमेश्वर के सौ भविष्यद्वक्तों को लेके पचास पचास करके एक खोह में छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला॥ १४। और अब तू कहता है कि जाके अपने प्रभु को जनाव कि देख इलियाह है और वुह मुझे बधन करेगा॥ १५। तब इलियाह ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर के जीवन सों जिस के आगे मैं खड़ा रहता हूं मैं अवश्य आज उस पर अपने को दिखाऊंगा॥ १६। सो अबदियाह अखिअब से भेंट करने को गया और उसे कहा और अखिअब इलियाह की भेंट को गया॥ १७। और ऐसा हुआ कि जब अखिअब ने इलियाह को देखा तो उसे कहा कि क्या तू वही है जो इसराएलियों को

सताता है॥ १८। उस ने उत्तर दिया कि मैं ने नहीं परन्तु तू ने और तेरे पिता के घराने ने इस बात में इसराएलियों को सताया है कि तुम ने परमेश्वर की आज्ञाओं को छोड़के बअलीम का पीछा पकड़ा है॥ १९॥ इस लिये अब भेज और सारे इसराएल को करमिल पहाड़ पर मेरे लिये एकट्ठा कर और बअल के साढ़े चार सौ भविष्यद्वक्तों को और कुंजों के चार सौ भविष्यद्वक्तों को जो ईज़बिल के मंच पर भोजन करते हैं॥ २०। सो अख़िअब ने इसराएल के समस्त सन्तान के पास भेजा और भविष्यद्वक्तों को करमिल पहाड़ पर एकट्ठा किया॥ २१। तब इलियाह ने सारे लोगों के पास जाके कहा कि कब लों अधर में पड़े रहोगे यदि परमेश्वर ईश्वर है तो उसे गहो परन्तु यदि बअल तो उसे गहो पर लोगों ने उसे तनिक उत्तर न दिया॥ २२। तब इलियाह ने लोगों से कहा कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों में से मैं ही अकेला बचा हूं परन्तु बअल के भविष्यद्वक्ता साढ़े चार सौ जन हैं॥ २३। सो वे अब हमें दो बैल देवें और अपने लिये एक बैल चुनें और उसे टुकड़ा टुकड़ा करें और लकड़ी पर धरें परन्तु आग न लगावें और दूसरा बैल मैं सिद्ध करूंगा और उसे लकड़ी पर धरूंगा परन्तु आग न लगाऊंगा॥ २४। और तुम अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो और मैं परमेश्वर के नाम से प्रार्थना करूंगा जो ईश्वर आग के द्वारा से उत्तर देगा वही ईश्वर होवे तब सब लोगों ने उत्तर देके कहा कि यह अच्छी बात है॥ २५। और इलियाह ने बअल के भविष्यद्वक्तों से कहा कि तुम अपने लिये एक बैल चुनके पहिले उसे सिद्ध करो क्योंकि तुम बहुत हो और अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो परन्तु उस में आग मत लगाओ॥ २६। तब उन्हों ने एक बैल को जो उन्हें दिया गया लिया और उसे सिद्ध किया और बिहान से दो पहर लों यह कहके बअल के नाम से प्रार्थना किई कि हे बअल उत्तर दे परन्तु न कुछ शब्द हुआ न किसी ने सुना और वे उस बनाई हुई बेदी पर कूद पड़े॥ २७। और ऐसा हुआ कि दो पहर को इलियाह ने उन्हें चिढ़ाके कहा और बोला कि चिल्लाके पुकारो क्योंकि वुह देव है वुह किसी से बातें कर रहा है अथवा कहीं गया है अथवा किसी यात्रा में है और क्या जाने वुह सोता है और उसे जगाना अवश्य है॥

२८। तब वे बड़े शब्द से चिल्लाये और अपने व्यवहार के समान आप को छूरियों और गोदनियों से यहां लों गोदा कि वे लोहू लुहान हो गये॥ २९। और ऐसा हुआ कि दो पहर ढल गया और बलिदान चढ़ाने के समय लों भविष्य कहते रहे परन्तु न कुछ शब्द हुआ न कोई उत्तर देवैया न बुझवैया ठहरा॥ ३०। तब इलियाह ने सारे लोगों से कहा कि मेरे पास आओ और सारे लोग उस के पास गये तब उस ने परमेश्वर की ढाई हुई बेदी को सुधारा॥ ३१। और यअकूब के सन्तान की गोष्ठियों के समान जिनके पास यह कहके परमेश्वर का बचन आया था कि तेरा नाम इसराएल होगा इलियाह ने बारह पत्थर लिये॥ ३२। और उन पत्थरों से उस ने परमेश्वर के नाम के लिये एक बेदी बनाई और बेदी के आस पास उस ने ऐसी बड़ी खांई खोदी जिस में दो नपुए बीज अमावें॥ ३३। और लकड़ियों को चुना और बैल को काट के टुकड़ा टुकड़ा किया और लकड़ियों पर धरा और कहा कि चार पीपा पानी से भर दओ और उस होम के बलिदान पर और लकड़ियों पर उंड़ेलो॥ ३४। और उस ने कहा कि दूसरी बेर उंड़ेलो उन्हों ने दूसरी बेर उंड़ेला फिर उस ने कहा कि तीसरी बेर उंड़ेलो और उन्हों ने तीसरी बेर उंड़ेला॥ ३५। और पानी बेदी की चारों ओर बहा और खांई को भी पानी से भर दिया॥ ३६। और बलिदान चढ़ाने के समय ऐसा हुआ कि इलियाह भविष्यद्वक्ता ने पास आके कहा कि हे परमेश्वर अबिरहाम और इज़हाक़ और इस-राएल के ईश्वर आज जाना जाय कि इसराएल में तू ईश्वर है और कि मैं तेरा सेवक हूं और मैं ने तेरे बचन से यह सब किया॥ ३७। हे परमेश्वर मेरी सुन मेरी सुन जिसतें ये लोग जानें कि तू ही परमेश्वर ईश्वर है और उन के अंतःकरण को फेर दिया है॥ ३८। तब परमेश्वर की आग उतरी और होम के बलिदान को और लकड़ी को और पत्थरों को और धूल को भस्म किया और खांई के जल को चाट लिया॥ ३९। और जब सारे लोगों ने यह देखा तब वे औंधे मुंह गिरे और बोले कि परमेश्वर वही ईश्वर है परमेश्वर वही ईश्वर है॥ ४०। तब इलियाह ने उन्हें कहा कि बअल के भविष्यद्वक्ता को पकड़ो उन में से एक भी न बचने पावे सो उन्हों ने उन्हें पकड़ा और इलियाह उन्हें क़िसून की

नाली पर उतार लाया और वहां उन्हें बधन किया॥ ४१। फिर इलियाह ने अखिअब को कहा कि चढ़ जा खा और पी क्योंकि मेंह का बड़ा शब्द है॥ ४२। सो अखिअब खाने पीने को उठ गया और इलियाह करमिल की चोटी पर चढ़ गया और आप को भूमि पर झुकाया और अपना मूंह दोनों घुटनों के बीच में किया॥ ४३। और उस ने अपने सेवक को कहा कि अब चढ़ जा और समुद्र की ओर देख और उस ने जाके देखा और कहा कि कुछ नहीं उस ने कहा कि फेर सात बेर जा॥ ४४। और सातवें बेर ऐसा हुआ कि वुह बोला कि देख मनुष्य के हाथ की नाईं मेघ का एक छोटा सा टुकड़ा समुद्र में से उठता है तब उस ने कहा कि चढ़ जा और अखिअब को कह कि सिद्ध हो और उतर जा न हो कि मेंह तुझे रोके॥ ४५। और इतने में ऐसा हुआ कि आकाश मेघों से और पवन से अंधेरा हो गया और अति वृष्टि होने लगी और अखिअब चढ़के यजरअऐल को गया॥ ४६। और परमेश्वर का हाथ इलियाह पर था और वुह अपनी कटि कसके अखिअब के आगे आगे यजरअऐल लों दौड गया॥

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब॥

तब जो कुछ कि इलियाह ने किया था अखिअब ने ईज़बिल से कहा और कि किस रीति से उस ने समस्त भविष्यद्वक्तों को तलवार से बध किया था॥ २। तब ईज़बिल ने दूत की ओर से इलियाह को कहला भेजा कि यदि मैं तेरे प्राण को उन में से एक की नाईं कल इस जून लों न करूं तो देवगण मुझ से वैसा ही और उससे अधिक भी करें॥ ३। और जब उस ने देखा तो वुह उठा और अपने प्राण के लिये गया और यहूदाह के बिअरसबः में आया और वहां अपने सेवक को छोड़ा॥ ४। परन्तु आप एक दिन के मार्ग बन में पैठ गया और एक रतम वृक्ष तले बैठा और अपने प्राण के लिये मृत्यु मांगी और कहा अब हे परमेश्वर हो चुका है अब मेरा प्राण उठा ले क्योंकि मैं अपने पितरों से भला नहीं॥ ५। और ज्यों वुह रतम वृक्ष के तले लेटा और सो गया तो देखो कि एक दूत ने आके उसे छूआ और कहा कि उठ खा॥ ६।

उस ने दृष्टि किई तो देखो कि उस के सिरहाने एक फुलका कोइलों पर का पका ऊआ है और एक पात्र जल धरा है तब वुह खा पीके फेर लेट गया॥ ७। फिर परमेश्वर का दूत दोहराके आया और उसे छूके कहा कि उठ खा क्योंकि तेरी यात्रा तेरे बल से अधिक है॥ ८। सो उस ने उठके खाया और पीया और उसी भोजन के बल से चालीस दिन रात चल के ईश्वर के पहाड़ हरिब को गया॥ ९। और वहां एक खोह में टिका और देखो कि परमेश्वर का बचन उस पास आया और उस ने उसे कहा कि हे इलियाह तू यहां क्या करता है॥ १०। वुह बोला कि मैं सेनाओं के ईश्वर परमेश्वर के लिये अति ज्वलित ऊआ हूं क्योंकि इसराएल के संतानों ने तेरी बाचा को त्यागा और तेरी बेदियों को ढा के तेरे भविष्यद्वक्तों को तलवार से घात किया है और मैं ही केवल मैं ही बचा और वे मेरे प्राण को भी लेने चाहते हैं॥ ११। और उस ने कहा कि बाहर निकल और पहाड़ पर परमेश्वर के आगे खड़ा हो और देख वहां परमेश्वर जा निकलता है और परमेश्वर के आगे एक बड़ी और प्रचंड पवन पर्ब्बतों को तड़काती है और चटानों को टुकड़ा टुकड़ा करती है परंतु परमेश्वर पवन में नहीं और पवन के पीछे भुइंडोल आया और परमेश्वर भुइंडोल में नहीं॥ १२। और भुइंडोल के पीछे एक आग परंतु परमेश्वर आग में नहीं और आग के पीछे एक किंचित शब्द॥ १३। और ऐसा ऊआ कि इलियाह ने सुना तो उस ने अपना मूंह अपने ओढ़ने से ढांप लिया और बाहर निकल के कन्दरा की पैठ पर खड़ा ऊआ और देखो कि यह कहके उस पास एक शब्द आया कि इलियाह तू यहां क्या करता है॥ १४। वुह बोला कि मुझे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लिये बड़ा ज्वलन ऊआ है इस कारण कि इसराएल के संतानों ने तेरी बाचा को त्यागा और तेरी बेदियां ढाईं और तेरे भविष्यद्वक्ता को तलवार से घात किया और एक मैं हीं अकेला जीता बचा सो वे मेरे भी प्राण को लेने चाहते हैं॥ १५। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि दमिश्क के अरण्य की ओर फिर जा और पऊंचते ही अराम पर हजाएल को राज्याभिषेक कर॥ १६। और निमशी के बेटे याहू को इसराएल पर राज्याभिषेक कर और अबीलमहूलः सफ़त के

बेटे इलीशत्र्य को अभिषेक कर कि तेरी सन्ती भविष्यद्वक्ता होवे॥ १७। और ऐसा होगा कि जो हज़ाएल की तलवार से बच निकलेगा उसे याहू मार डालेगा और जो याहू की तलवार से बच रहेगा उसे इलीशत्र्य घात करेगा॥ १८। तथापि इसराएल में मेरे सात सहस्र जन बच रहे हैं जिनके घुटने बत्र्यल के आगे नहीं झुके और हर एक मुंह जिस ने उसे नहीं चूमा॥ १९। सो उस ने वहां से चलके सफ़त के बेटे इलीशत्र्य को पाया जो अपने आगे बारह जोड़े बैल के हल से जोत्ता था और बारहवें जोड़ के संग आप था और इलियाह ने उस के पास से जाते जाते अपना ओढ़ना उस पर डाल दिया॥ २०। तब उस ने बैलों को छोड़ के इलियाह के पीछे दौड के कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे छुट्टी दीजिये कि अपने माता पिता को चूमों और तेरे पीछे हो लेऊंगा उस ने कहा कि फिर जा क्योंकि मैं ने तुझे क्या किया है॥ २१। तब वुह उस पास से फिर गया और उस ने एक जोड़ी बैल लेके उन्हें बधन किया और हल की लकड़ियों से उन के मांस को उसिना और लोगों को दिया और उन्हों ने खाया तब वुह उठा और इलियाह के पीछे हो लिया और उस की सेवा किई।

२० बीसवां पर्व्व।

तब अराम के राजा बिनहदद ने अपनी समस्त सेना को एकट्ठे किया और उस के साथ बत्तीस राजा और घोड़े और रथ थे और उस ने जाके समरून को घेर लिया और उस्से लड़ाई किई॥ २। और उस ने इसराएल के राजा अख़िअब के पास नगर में दूतों को भेज के कहा कि बिनहदद यों कहता है॥ ३। कि तेरा रूपा और तेरा सोना मेरा है तेरी सुंदर सुंदर पत्नियां और तेरे बालक भी मेरे हैं॥ ४। तब इसराएल के राजा ने उत्तर देके कहा कि मेरे प्रभु राजा तेरे बचन के समान मैं और मेरा सब कुछ तेरा है॥ ५। और दूतों ने फिर आके कहा कि बिनहदद यों कहता है कि यद्यपि मैं ने तेरे पास यह कहला भेजा है कि अपना रूपा और सोना और अपनी पत्नियां और बाल बच्चे मुझे सौंपना॥ ६। तथापि मैं कल इस जून अपने सेवकों को तुझ

पास भेजूंगा और वे तेरे घर और तेरे सेवकों के घर को खोजेंगे और ऐसा होगा कि जो कुछ तेरी दृष्टि में मनभावनी होगी वे अपने हाथ में करके ले आवेंगे॥ ७। तब इसराएल के राजा ने देश के समस्त प्राचीनों को बुला के कहा कि चीन्ह रक्खो और देखो कि वुह कैसा बिरोध ढूंढ़ता है क्योंकि उस ने मेरी पत्नियों और बालकों के और मेरे रूपा और सोना के लिये लोगों को भेजा और मैं ने उसे न रोका॥ ८। तब सारे प्राचीन और सारे लोगों ने उसे कहा कि मत सुनिये और मत मानिये॥ ९। इस लिये उस ने बिनहदद के दूतों से कहा कि मेरे प्रभु राजा से कहो कि जो तू ने अपने सेवक को कहला भेजा सो सब मैं करूंगा परन्तु यह कार्य्य मैं न कर सकूंगा तब दूतों ने जाके सन्देश दिया॥ १०। तब बिनहदद ने उस पास यह कहला भेजा कि देवगण मुझ से ऐसा ही करें और उस्से अधिक यदि समरून की धूल सारे लोगों के लिये जो मेरे चरण पर हैं मुट्ठी भर भर होवे॥ ११। फिर इसराएल के राजा ने उत्तर देके कहा कि तुम कहो कि जो जन कटि कसता है सो उस के समान जो कटि खोलता है गर्ब न करे॥ १२। और यों हुआ कि जब वुह राजाओं के साथ तंबूओं में पी रहा था उस ने यह बचन सुना तो अपने सेवकों को कहा कि नगर के बिरुद्ध लैस हो रहो और वे नगर के बिरुद्ध लैस हो रहे॥

१३। और देखो कि इसराएल के राजा अखिअब पास एक भविष्यद्वक्ता ने आके कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या तू ने इस बड़ी मंडली को देखा है सो देख मैं आज सभों को तेरे हाथ में सौंपूंगा और तू जानेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं॥ १४। तब अखिअब ने पूछा कि किनके द्वारा से वुह बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि देश देश के अध्यक्षों के द्वारा से फिर उस ने पूछा कि संग्राम में कौन पांती बंधावे उस ने उत्तर दिया कि तू॥ १५। तब उस ने देशों के अध्यक्षों के तरुणों को गिना और वे दो सौ बत्तीस जन हुए फिर उस ने इसराएल के समस्त सन्तान को भी गिना और वे सात सहस्र जन हुए॥ १६। और वे सब दो पहर को निकले परन्तु बिनहदद और बत्तीस राजा जो उस के सहायक थे तंबूओं में पी पी के मतवाले होते थे॥ १७। तब देशों के अध्यक्षों के

तरुण पहिले निकले और बिनहदद ने भेजा और वे कहके उसे बोले कि समरून से लोग निकल आये हैं॥ १८। वुह बोला कि यदि वे मिलाप के लिये निकले हैं तो उन्हें जीता पकड़ो अथवा यदि युद्ध के लिये निकले हैं तो उन्हें जीता पकड़ो॥ १९। तब देशों के अध्यक्षों के तरुण लोग नगर से निकले और सेना उन के पीछे पीछे॥ २०। और उन में से हर एक ने एक एक को घात किया और अरामी भागे और इसराएलियों ने उन्हें खेदा और अराम का राजा बिनहदद घोड़े पर घोड़चढ़ों के साथ भाग के बचा॥ २१। और इसराएल के राजा ने निकल के घोड़ों और रथों को मार लिया और अरामियों को बना के मारा॥ २२। तब उस भविष्यद्वक्ता ने इसराएल के राजा पास आके उसे कहा कि तू फिर जा और आप को दृढ़ कर और चीन्ह रख जो किया चाहता है सो देख क्योंकि अराम का राजा पीछे तेरे बिरोध में चढ़ आवेगा॥ २३। तब अराम के राजा के सेवकों ने उसे कहा कि उन के देव पहाड़ों के देव हैं इस लिये वे हम से बलवान् हुए परन्तु आओ हम चैागान में उन से युद्ध करें तो निश्चय हम उन पर प्रबल होंगे॥ २४। और तू एक काम कर कि हर एक राजा को उस के स्थान से अलग कर और उन की सन्ती सेनापतिन को खड़ा कर॥ २५। और अपनी जूझी हुई सेना की नाईं एक सेना गिन ले घोड़े की सन्ती घोड़ा और रथ की सन्ती रथ और हम चैागान में उन से संग्राम करेंगे और निश्चय उन पर प्रबल होंगे सो उस ने उन का कहा माना और वैसा ही किया॥ २६। और ज्योंहीं बरस बीता त्योंहीं बिनहदद ने अरामियों को गिना और इसराएलियों से युद्ध करने को अफीकः को चढ़ा॥ २७। और इसराएल के सन्तान गिने हुए और सब एकट्ठे थे सो उन का साम्ना किया और इसराएल के सन्तान ने उन के आगे ऐसा डेरा किया जैसा मेम्ना का दो झुंड हो परन्तु अरामियों से देश भर गया॥

२८। उस समय ईश्वर का एक जन इसराएल के राजा पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि अरामियों ने कहा है कि परमेश्वर पहाड़ों का ईश्वर परन्तु तराई का ईश्वर नहीं इस लिये मैं इस बड़ी मंडली को तेरे हाथ में सैांपूंगा और तुम जानोगे

कि मैं परमेश्वर हूं ॥ २९। सो उन्हों ने एक दूसरे के सन्मुख सात दिन लों छावनी किई और सातवें दिन ऐसा हुआ कि संग्राम हुआ और इसराएल के सन्तान ने दिन भर में अरामियों के एक लाख पगइत मारे॥ ३०। परन्तु उबरे हुए अफ़ीक: के नगर में पैठे और वहां एक भीत सत्ताईस सहस्र बचे हुए पर गिर पड़ी और बिनहदद भाग के नगर में आया और भीतर की कोठरी में घसा॥ ३१। और उस के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हम ने सुना है कि इसराएल के घरानों के राजा बड़े दयाल राजा हैं सो हमें आज्ञा दीजिये कि अपनी कटि पर टाट लपेटें और अपने सिरों पर रस्सियां धरें और इसराएल के राजा पास जायें कदाचित वुह तेरा प्राण बचावे॥ ३२। सो उन्हों ने कटि पर टाट और सिर पर रस्सियां बांधीं और इसराएल के राजा पास आके बोले कि तेरा सेवक बिनहदद यों कहता है कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे जीता छोड़िये वुह बोला कि वुह अब लों जीता है वुह मेरा भाई है॥ ३३। और वे चौकसी से सोच रहे थे कि वुह क्या कहता है और झट उस बात को पकड़के कहा कि हां तेरा भाई बिनहदद तब उस ने कहा कि जाओ उसे ले आओ तब बिनहदद उस पास निकल आया और उस ने उसे रथ पर उठा लिया॥ ३४॥ और उस ने उसे कहा कि जो जो नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से ले लिया मैं फेर देऊंगा और जिस रीति से मेरे पिता ने समरून में सड़कें बनाईं तू दमिशक में बना तब अखिअब बोला कि मैं तुझे इसी बाचा से बिदा करूंगा सो उस ने उस्से बाचा बांधी और बिदा किया॥ ३५। और भविष्यद्वक्तों के सन्तानों में से एक जन ने परमेश्वर के बचन से अपने परोसी को कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे मार डाल परन्तु उस जन ने उसे मारने से नाह किया॥ ३६। तब उस ने उसे कहा इस कारण कि तू ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी देख ज्योंहीं तू मुझ पास से बिदा होगा त्योंहीं एक सिंह तुझे मार लेगा और ज्योंहीं वुह उस के पास से बिदा हुआ त्योंहीं उसे एक सिंह ने पाया और उसे फाड़ डाला॥ ३७। तब उस ने एक दूसरे को बुला के कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे मार डाल उस ने उसे मारा और मार के घायल किया। ३८। तब वुह भविष्यद्वक्ता चला गया और

मार्ग में राजा की बाट जोहने लगा और अपने मूंह पर राख मल के अपना भेष बदला॥ ३९। और राजा के उधर जाते जाते उस ने राजा को पुकारा और कहा कि तेरा सेवक संग्राम के मध्य में गया था और देखिये एक जन फिरा और मुझ पास एक जन यह कहके लाया कि इस की चौकसी कर यदि किसी रीति से यह पाया न जायगा तो इस के प्राण की सन्ती तेरा प्राण जायगा और नहीं तो तू एक तोड़ा चांदी देगा॥ ४०। और जिस समय तेरा सेवक इधर उधर और काम में लिप्त था वुह जाता रहा तब इसराएल के राजा ने उसे कहा कि तेरा यही बिचार है तू ही ने चुकाया है॥ ४१। फिर उस ने फुरती करके अपने मूंह की राख पोंछी तब इसराएल के राजा ने उसे पहिचाना कि वुह भविष्यद्वक्तों में से है॥ ४२। तब उस ने कहा कि परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि तू ने उस जन को अपने हाथ से जाने दिया जिसे मैं ने सर्बथा नाश के लिये ठहराया था इस कारण उस के प्राण की सन्ती तेरा प्राण और उस के लोगों की सन्ती तेरे लोग॥ ४३। तब इसराएल का राजा उदास और भारी मन होके अपने घर को गया और समरून में आया।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब।

फिर ऐसा हुआ कि नबात यज़रअऐली की एक दाख की बारी समरून के राजा अख़िअब के भवन से लगी हुई यज़रअएल में थी॥ २। और अख़िअब ने नबात से कहा कि अपनी दाख की बारी मुझे दे कि उसे तरकारी की बारी बनाऊं क्योंकि वुह मेरे भवन के लग है और मैं उस की सन्ती तुझे उस्से अच्छी दाख की बारी देऊंगा अथवा यदि तेरी दृष्टि में अच्छा लगे तो मैं तुझे उस का दाम रोकड़ देऊंगा॥ ३। और नबात ने अख़िअब से कहा कि परमेश्वर ऐसा न करे कि मैं अपने पितरों का अधिकार तुझे देऊं॥ ४। तब यज़रअऐली नबात की बात से अख़िअब उदास और भारी मन होके अपने घर में आया क्योंकि उस ने कहा था कि मैं अपने पितरों का अधिकार तुझे न देऊंगा और अपने बिछौने पर पड़ा रहा और अपना मूंह फेर लिया और रोटी न खाई॥ ५। परंतु उस की पत्नी ईज़बिल ने उस पास आके कहा कि तू ऐसा उदास क्यों है

कि रोटी नहीं खाता॥ ६। तब उस ने उसे कहा इस कारण कि मैं ने यज़रअ़एली नबात से कहा था कि अपनी दाख की बारी मेरे हाथ बंच और नहीं तो यदि तेरा मन होवे तो में तुझे उस की सन्ती दाख की बारी देजंगा उस ने उत्तर दिया कि मैं तुझे अपनी दाख की बारी न दूजंगा॥ ७॥ तब उस की पत्नी ईज़बिल ने उसे कहा कि क्या तू इसराएलियों पर राज्य करता है उठिये रोटी खाइये और मन को मगन करिये में तुझे अज़रअ़एली नबात की दाख की बारी देजंगी॥ ८। तब उस ने अखिअब के नाम से पत्रियां लिखीं और उस की छाप से छाप करके नबात के नगर के बासियों के अध्यक्षों और प्राचीनों के पास भेजीं॥ ९। और उस ने पत्रियों में यह बात लिखी कि ब्रत को प्रचारो और लोगों पर नबात को बैठाओ॥ १०। और दुष्टों के पुत्रों में से दो जन ठहराओ कि यह कहके उस पर साक्षी देवें कि तू ने ईश्वर की और राजा की अपनिन्दा किई तब उसे बाहर ले जाके पथरवाह करो कि मर जाय॥ ११। और उस नगर के लोगों ने अर्थात् प्राचीन और अध्यक्षों ने जो नगर के बासी थे ईज़बिल के कहने के समान जैसा पत्रियों में जो उस ने उन पास भेजी थी लिखा था किया॥ १२। उन्हों ने ब्रत को प्रचारा और लोगों पर नबात को बैठाया॥ १३। तब दुष्टों के पुत्रों में से दो जन भीतर आये और उस के आगे बैठे और दुष्ट जनों ने नबात के बिरोध में यह कहके लोगों के सोंहीं साक्षी दिई कि नबात ने ईश्वर की और राजा की अपनिन्दा किई है तब वे उसे नगर से बाहर ले गये और उस पर ऐसा पथरवाह किया कि वुह मर गया॥ १४। तब उन्हों ने ईज़बिल को कहला भेजा कि नबात पथरवाह किया गया और मर गया॥ १५। और ऐसा हुआ कि जब ईज़बिल ने सुना कि नबात पथरवाह किया गया और मर गया तो ईज़बिल ने अखिअब को कहा कि उठिये और यज़रअ़एली नबात की बारी को बश में करिये जिसे उस ने रोकड़ की सन्ती तुझे देने को नाह किया क्योंकि नबात जीता नहीं है परन्तु मर गया॥ १६। और यों हुआ कि जब अखिअब ने सुना कि नबात मर गया तो अखिअब उठा कि यज़रअ़एली नबात की दाख की बारी में उतरे जिसतें उसे बश में करे॥

१७। तब परमेश्वर का बचन तिसबी इलियाह पास यह कहके आया॥ १८। कि उठ और जाके इसराएल के राजा अखिअब से जो समरून में है भेंट कर देख कि वुह नबात की दाख की बारी में है जिधर वुह उसे बश में करने को उतरा है॥ १९। और तू उसे यह कहना कि परमेश्वर यों कहता है कि तू ने घात किया है और बश में भी किया है तू उसे कह कि परमेश्वर आज्ञा करता है कि जिस स्थान में कुत्तों ने नबात का लोहू चाटा उसी स्थान में तेरा भी लोहू कुत्ते चाटेंगे॥ २०। और अखिअब ने इलियाह को कहा कि हे मेरे बैरी तू ने मुझे पाया है उस ने उत्तर दिया कि मैं ने पाया है क्योंकि तू ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई करने के लिये आप को बेच डाला॥ २१। देख मैं तुझ पर बुराई लाऊंगा और तेरे बंश को दूर करूंगा और अखिअब में से हर एक पुरुष को जो भीत पर मूत्ता है और जो जन इसराएल में से बंधुआ और बचा हुआ है उसे भी मैं मिटा डालूंगा॥ २२। उस खिजाव के कारण जिस्से तू ने मुझे खिजाया है और इसराएल से पाप करवाया है मैं तेरे घराने को नबात के बेटे यरुबिआम के घराने की नाईं और अखियाह के बेटे बअशा के घराने की नाईं करूंगा॥ २३। और परमेश्वर ईज़बिल के बिषय में भी यह कहके बोला कि यज़रअएल के खाईं के पास ईज़बिल को कुत्ते खायेंगे॥ २४। अखिअब का जो जन नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खायेंगे॥ २५। परन्तु अखिअब के समान कोई न था जिस ने परमेश्वर की दृष्टि में दुष्टता के लिये आप को बेचा और उस की पत्नी ईज़बिल ने उसे उभाड़ा॥ २६। और उस ने अमूरियों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएलियों के आगे से दूर किया था अति घिनित बस्तुन में मूर्त्तों का पीछा पकड़ा॥ २७। और ऐसा हुआ कि जब अखिअब ने ये बातें सुनीं तो अपने कपड़े फाड़े और अपने शरीर पर टाट रक्खा और ब्रत किया और टाट पहिने हुए हौले हौले चलने लगा॥ २८। तब परमेश्वर का बचन तिसबी इलियाह पर यह कहके उतरा॥ २९। क्या तू देखता है कि अखिअब मेरे आगे आप को कैसा दीन करता है इस कारण कि वुह आप को मेरे आगे दीन करता है मैं यह बुराई उस के

दिनों में न लाऊंगा परन्तु उस के बेटों के समय में उस के घराने पर बुराई लाऊंगा॥

२२ बाईसवां पर्ब्ब ॥

और तीन बरस लों बिश्राम किया कि अरामियों इसराएलियों में कोई लड़ाई न ऊई॥ २। और तीसरे बरस ऐसा ऊआ कि यहूदाह का राजा यहूसफ़त इसराएल के राजा पास गया॥ ३। तब इसराएल के राजा ने अपने सेवकों से कहा कि तुम जानते हो कि जिलिअ़द के रामात हमारे हैं और हम उसे लेने में चुपके हो रहे हैं और अराम के राजा के हाथ से उसे नहीं लेते हैं॥ ४। फिर उस ने यहूसफ़त से कहा कि मेरे साथ लड़ने को तू रामात जिलिअ़द पर संग्राम के लिये चढ़ेगा यहूसफ़त ने इसराएल के राजा को उत्तर दिया कि तेरी नाईं मैं हूं और तेरे लोग मेरे लोगों की नाईं और तेरे घोड़े मेरे घोड़े की नाईं॥ ५। और यहूसफ़त ने इसराएल के राजा से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि आज परमेश्वर के बचन से बूझिये॥ ६। तब इसराएल के राजा ने भविष्यद्वक्तों को एकट्ठा किया जो चार सौ जन के लगभग थे और उन्हें कहा कि मैं रामात जिलिअ़द पर लड़ने चढ़ूं अथवा अलग रहूं वे बोले कि चढ़ जाइये क्योंकि परमेश्वर उसे राजा के हाथ में सौंपेगा॥ ७। तब यहूसफ़त ने कहा कि यहां कोई परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं है कि हम उस्से बूझें॥ ८। तब इसराएल के राजा ने यहूसफ़त से कहा कि अब भी एक जन है यिमलः का बेटा मीकायाह जिस के द्वारा से हम परमेश्वर से बूझ सक्ते हैं परन्तु मैं उस्से बैर रखता हूं क्योंकि वुह मेरे बिषय में अच्छी बात नहीं कहता परन्तु बुरी तब यहूसफ़त बोला कि राजा ऐसा न कहें॥ ९। तब इसराएल के राजा ने एक प्रधान को बुला के कहा कि यिमलः के बेटे मीकायाह को शीघ्र ले आ॥ १०। तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफ़त राजबस्त्र पहिने ऊए समरून के फाटक की पैठ में अपने अपने सिंहासन पर जा बैठे और समस्त भविष्यद्वक्ता उन के आगे भविष्य कहने लगे॥ ११। और कनआनः के बेटे सदक़ियाह ने अपने लिये लोहे के सींग

बनाये और बाला कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन से अरामियों को गोदेगा यहां लों कि उन्हें नाश करेगा॥ १२। तब सारे भविष्यद्वक्तों ने यह कहके भविष्य कहा कि रामात जलिअद् पर चढ़ जाइये और भाग्यमान हूजिये क्योंकि उसे परमेश्वर राजा के हाथ में सोंपेगा॥ १३। और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस ने उस्से यह कहा कि देख भविष्यद्वक्तों का बचन एक सां राजा के लिये भला है इस लिये मैं बिनती करता हूं तेरा बचन उन में से एक के बचन की नाईं होवे और भला कहियो॥ १४॥ और मीकायाह बोला कि परमेश्वर के जीवन सों परमेश्वर जो मुझे कहेगा वही मैं कहूंगा॥ १५। सो वुह राजा पास आया और राजा ने उसे कहा कि हे मीकायाह हम लड़ने को रामात जिलिअद् पर चढ़ें अथवा रह जायें तब उस ने उसे उत्तर दिया कि चढ़ जा और भाग्यवान हो क्योंकि परमेश्वर उसे राजा के हाथ में कर देगा॥ १६। फिर राजा ने उसे कहा कि मैं के बेर तुझे किरिया खिलाया करूं कि तू परमेश्वर के नाम से सच्ची बात से अधिक कुछ न कह॥ १७। तब उस ने कहा कि मैं ने सारे इसराएल को बिन चरवाहे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर बिथरे हुए देखा और परमेश्वर ने कहा कि कोई उन का स्वामी नहीं सो उन में से हर एक जन अपने अपने घर कुशल से चला जाय॥ १८। तब इसराएल के राजा ने यहूसफ़त से कहा मैं ने तुझ से नहीं कहा कि वुह मेरे बिषय में भला भविष्य न कहेगा परन्तु बुरा॥ १९। फिर मीकायाह ने कहा कि परमेश्वर के बचन को सुनो मैं ने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे और स्वर्ग की सारी सेना को उस के दहिने बायें खड़ी देखा॥ २०। तब परमेश्वर ने कहा कि अखिअब को कौन छलेगा जिसतें वुह रामात जिलिअद् पर चढ़के जूझ जाय तब उन में से एक ने कुछ कहा दूसरे ने कुछ॥ २१। उस समय में एक आत्मा निकल के परमेश्वर के आगे आ खड़ा हुआ और बोला कि मैं उस का बोध करूंगा। २२। फिर परमेश्वर ने कहा कि किस्से वुह बोला मैं जाऊंगा और उस के सारे भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्या आत्मा हूंगा तब उस ने कहा कि तू उस का बोध करेगा और प्रबल भी होगा बाहर जा और ऐसा कर॥ २३। सो देख परमेश्वर ने तेरे उन सब

भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्या आत्मा को डाला है और परमेश्वर ही ने तेरे बिषय में बुरा कहा है॥ २४। परन्तु कनआन का बेटा सदकयाह पास आया और मीकायाह के गाल पर थपेड़ा मार के बोला कि परमेश्वर का आत्मा मुझ से निकल के किधर से तुझे कहने गया॥ २५। तब मीकायाह बोला कि देख तू उस दिन जब तू आप को छिपाने को एक कोठरी से दूसरी कोठरी में घुसता फिरेगा तब देखेगा॥ २६। तब इसराएल के राजा ने कहा कि मीकायाह को लेओ और नगर के अध्यक्ष अम्मन और राजपुत्र यूआस के पास फिर ले जाओ॥ २७। और कहो कि राजा की आज्ञा है कि इसे बंधन में रक्खो और जब लों मैं कुशल से न आऊं तब लों उसे कष्ट की रोटी और कष्ट का जल दिया करो॥ २८। तब मीकायाह बोला यदि तू किसी रीति से कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर ने मेरे द्वारा से नहीं कहा फिर वुह बोला हे लोगो तुम में से हर एक जन सुन रक्खे।

२९। तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफ़त रामात जिलिअद पर चढ़ गये॥ ३०। और इसराएल के राजा ने यहूसफ़त से कहा कि मैं संग्राम में अपना भेष पलट के प्रवेश करूंगा परन्तु तू अपना राज बस्त्र पहिनियो सो इसराएल के राजा ने अपना भेष पलट के युद्ध में प्रवेश किया।

३१। परन्तु अरामी के राजा ने अपने रथों के बत्तीस प्रधानों को कहके आज्ञा किई कि छोटे बड़े किसी से मत लड़ियो परंतु केवल इसराएल के राजा के संग॥ ३२। और ऐसा हुआ कि रथों के प्रधानों ने यहूसफ़त को देख के यों कहा कि निश्चय इसराएल का राजा यही है और उन्हों ने एक ओर होके चाहा कि उस्से युद्ध करें तब यहूसफ़त चिल्लाया॥ ३३। और जब रथ के प्रधानों ने जाना कि यह इसराएल का राजा नहीं तो वे उस के खेदने से हट आये॥ ३४। और अकस्मात् एक जन ने बाण चलाया और वुह संयोग से इसराएल के राजा को झिलम के जोड़ में लगा तब उस ने अपने सारथी से कहा कि बाग फेर और सेना में से मुझे निकाल ले जा क्योंकि मैं घायल हुआ॥ ३५। परंतु उस दिन संग्राम बढ़ गया और राजा अरामियों के सन्मुख रथ पर

ठहरा रहा श्रीर सांझ होते होते मर गया श्रीर लोहू उस के घाव से रथ में बहि निकला॥ ३६। श्रीर सूर्य्य अस्त होते ऊए समस्त सेना में प्रचार ऊआ कि हर एक जन अपने अपने नगर श्रीर अपने अपने देश को जाय॥ ३७। सो राजा मर गया श्रीर उसे समरून में ले गये श्रीर समरून में राजा को गाड़ दिया॥ ३८। श्रीर रथ को समरून के कुंड में धोया श्रीर कुत्तों ने उस का लोहू चाटा श्रीर बेश्यायें धोती थीं उस बचन के समान जैसा परमेश्वर ने कहा था॥ ३९। श्रीर अखिअब की रही ऊई क्रिया श्रीर सब जो उस ने किया था श्रीर हाथी दांत का भवन जो उस ने बनाया श्रीर जो जो नगर उस ने बनाये सो क्या इसराएल के राजाश्रों के समयों के समाचारों की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ ४०। श्रीर अखिअब ने अपने पितरों में शयन किया श्रीर उस का बेटा अखज़याह उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥ ४१। श्रीर इसराएल के राजा अखिअब के चौथे बरस आसा का बेटा यहूसफ़त यहूदाह पर राज्य करने लगा॥ ४२। यहूसफ़त पैंतीस बरस का होके राज्य करने लगा श्रीर उस ने यरूसलम में पचीस बरस राज्य किया उस की माता का नाम अजूबः था वुह सोलही की बेटी थी॥ ४३। श्रीर वुह अपने बाप आसा के सारे मार्गों में चलता था वुह उस्से परमेश्वर की दृष्टि में भलाई करने से न मुड़ा तथापि ऊंचे स्थान अलग न किये गये श्रीर उन ऊंचे स्थानों पर लोग भेंट चढ़ाते श्रीर धूप जलाते रहे॥ ४४। श्रीर यहूसफ़त ने इसराएल के राजा से मिलाप किया॥ ४५। अब यहूसफ़त की रही ऊई क्रिया श्रीर उस के पराक्रम जो उस ने दिखाया श्रीर किस रीति से युद्ध किया सो क्या यहूदाह के राजाश्रों के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा॥ ४६। श्रीर उस ने गांडुश्रों को जो उस के बाप आसा के समय में रह गये थे देश में से दूर किया॥ ४७। उस समय अदूम में कोई राजा न था परंतु एक उपराजा राज्य करता था॥ ४८। यहूसफ़त ने तरके जहाज़ बनवाये जिसतें श्रोफ़ीर से सोना मंगवावे परन्तु वे वहां लों न गये क्योंकि असयूनजब्र में जहाज मारे गये॥ ४९। तब अखिअब के बेटे अखज़याह ने यहूसफ़त से कहा कि जहाज़ों पर अपने सेवकों के साथ मेरे सेवकों को भी जाने दीजिये परन्तु यहूसफ़त ने न माना॥ ५०।

तब यहूसफ़त ने अपने पितरों के साथ शयन किया और अपने पितर दाऊद के नगर में अपने पितरों के मध्य में गाड़ा गया और उस का बेटा यहूराम उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

५१। अखिअब का बेटा अख़ज़याह यहूदाह के राजा यहूसफ़त के राज्य के सतरहवें बरस समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने दो बरस इसराएल पर राज्य किया॥ ५२। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता और माता के और नबात के बेटे यरुबिआम के मार्ग पर जिस ने इसराएल से पाप करवाया चलता था॥ ५३। क्योंकि अपने पिता के सारे कार्य के समान उस ने बअल की सेवा किई और उस को दंडवत किई और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को रिस दिलाई॥

राजावली की दूसरी पुस्तक जो राजाओं की चौथी पुस्तक कहाती है।
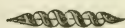
१ पहिला पर्ब्ब ॥

आखिअब के मरने के पीछे मोअबी इसराएलियां से फिर गये॥ २। और अखज़याह अपने ऊपर की कोठरी के झरोखे से जो समरून में था गिर पड़ा और रोगी ज़ुआ और उस ने दूतों को भेजा और उन्हें कहा कि जाओ और अकरून के देव बअलज़बूब से पूछो कि मैं इस रोग से चंगा ज़ूंगा कि नहीं॥ ३। परन्तु परमेश्वर के दूत ने तिसबी इलियाह को कहा कि उठ और समरून के राजा के दूतों से भेंट कर और उन्हें कह कि क्या इसराएल में कोई ईश्वर नहीं जो तुम अकरून के देव बअलज़बूब से पूछने जाते हो॥ ४। सो इस कारण परमेश्वर यों कहता है कि जिस बिछौने पर तू पड़ा है उस्से न उतरेगा परन्तु निश्चय मर जायगा तब इलियाह चला गया॥ ५। और जब दूत उस पास फिर आये तब उस ने उन से पूछा कि तुम किस लिये फिर आये हो॥ ६। उन्हों ने उसे कहा कि एक जन हमें मिला और हमें कहा कि राजा पास जिस ने तुम्हें भेजा है फिर जाओ और उसे कहो कि परमेश्वर यों कहता है इस लिये नहीं कि इसराएल में कोई ईश्वर नहीं जो तू अकरून के देव बअलज़बूब से पूछने भेजता इस लिये तू उस बिछौने पर से जिस पर तू चढ़ा है उतरने न पावेगा परन्तु निश्चय मर जायगा॥ ७। उस ने

उन से पूछा कि उस जन की रीति जो तुम्हें मिला और जिस ने तुम्हें ये बातें कहीं कैसी थी॥ ८। और उन्हों ने उत्तर दिया कि वह रोआंर जन था और चमड़े के पटुके से उस की करिहांव कसी ऊई थी तब उस ने कहा कि वुह तिशबी इलियाह है॥ ९। तब राजा ने पचास के प्रधान को उस के पचास जन समेत उस पास भेजा और वुह उस पास चढ़ गया और देखो कि वुह एक पहाड़ की चोटी पर बैठा था उस ने उसे कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि उतर आ॥ १०। तब इलियाह ने उस पचास के प्रधान को उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का जन ऊं तो स्वर्ग से आग उतरे और तुझे और तेरे पचास जन को भस्म करे तब आग स्वर्ग से उतरी और उसे और उस के पचास को भस्म किया॥ ११। फिर उस ने दूसरी बेर और एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा उस ने भी जाके कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि शीघ्र उतर आ॥ १२। तब इलियाह ने उन्हें उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का जन ऊं तो स्वर्ग से आग उतरे और तुझे और तेरे पचास को भस्म करे और ईश्वर की आग स्वर्ग से उतरी और उसे और उस के पचास को भस्म किया॥ १३। फिर उस ने तीसरी बेर और एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा और तीसरा पचास का प्रधान चढ़ गया और आके इलियाह के आगे घुठने टेके और बिनती करके बोला कि हे ईश्वर के जन मैं तेरी बिनती करता ऊं कि मेरा प्राण और तेरे इन पचास दासों के प्राण तेरी दृष्टि में बऊ मूल्य होवें॥ १४। देखिये कि स्वर्गीय अग्नि ने दो पचास के प्रधानों को उन के पचास पचास समेत भस्म किया इस कारण मेरा प्राण तेरी दृष्टि में बऊ मूल्य होवे॥ १५। तब परमेश्वर के दूत ने इलियाह को कहा कि उस के साथ उतर जा उस्से मत डर तब वुह उठा और उतर के उस के साथ राजा पास गया॥ १६। और उस ने उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है जैसा कि तू ने दूतों को भेजा है कि अक्रून के देव बअलजबूब से जाके पूछें यह इस कारण नहीं कि इसराएल में कोई ईश्वर नहीं कि उस के वचन से बूझता इस लिये जिस बिछौने पर तू चढ़ा है उस्से न उतरेगा परन्तु निश्चय मर जायगा॥ १७। सो परमेश्वर के वचन के समान जो इलियाह ने कहा था वह मर गया और

यहूदाह के राजा यहूसफ़त के बेटे यहूराम के दूसरे बरस में यहूराम उस की सन्ती राज्य पर बैठा इस कारण कि उस का कोई बेटा न था॥ १८। और अख़ज़याह की रही ऊई क्रिया जो उस ने किई क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं॥

२ दूसरा पर्ब्ब॥

और यों ऊआ कि जब परमेश्वर ने चाहा कि इलियाह को बौंड़र में स्वर्ग पर ले जावे तब इलियाह इलीसाअ के साथ जिलजाल से चला॥ २। और इलियाह ने इलीसाअ को कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बैतएल को भेजा है तब इलीसाअ ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे बैतएल को उतर गये॥ ३। और बैतएल के भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने निकल आके इलीसाअ से कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे सिर पर से तेरे स्वामी को उठा लेगा वुह बोला कि हां मैं जानता ऊं तुम चुप रहो॥ ४। तब इलियाह ने इलीसाअ को कहा कि यहीं ठहरजा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरीहो को भेजा है उस ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे दोनों यरीहो को आये॥ ५। और भविष्यद्वक्तों के संतान जो यरीहो में थे इलीसाअ पास आये और उसे कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे स्वामी को तेरे सिर पर से उठा लेगा उस ने उत्तर दिया कि हां मैं जानता ऊं तुम चुप रहो॥ ६। और इलियाह ने इलीसाअ को कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरदन को भेजा है वुह बोला कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे दोनों बढ़ गये॥ ७। और पचास मनुष्य भविष्यद्वक्तों के पुत्रों में से चले और दूर खड़े होके देखने लगे और वे दोनों यरदन के तीर खड़े ऊए॥ ८। और इलियाह ने अपना ओढ़ना लिया और लपेट के पानियों को मारा और वे इधर उधर बिभाग हो गये यहां लों कि वे दोनों सूखे सूखे उतर गये॥ ९। और जब पार ऊए तो इलियाह ने इलीसाअ से कहा कि तुझ से अलग किये जाने से आगे

मांग कि मैं तेरे लिये क्या करूं तब इलीसाअ बोला कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि तेरी आत्मा से दूना भाग मुझ पर पड़े॥ १०। उस ने कहा कि तू ने मांगने में कठिन किया यदि तू मुझे आप से अलग होते हुये देखेगा तो ऐसा ही तुझ पर होगा और यदि नहीं तो न होगा॥ ११। और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वे दोनों टहलते हुए बातें करते चले जाते थे तो देखो कि एक आग की रथ और आग के घोड़े आये और उन दोनों को अलग किया और इलियाह बौंड़र में होके स्वर्ग पर जाता रहा॥ १२। और इलीसाअ देख के चिल्लाया कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता इसराएल के रथ और उस के घोड़ चढ़े और उस ने उसे फिर न देखा और उस ने अपने ही कपड़ों को लेके उन्हें दो टुकड़ा किया॥ १३। और उस ने इलियाह के ओढ़ने को भी जो उस पर से गिर पड़ा था उठा लिया और उलटा फिरा और यरदन के तीर पर खड़ा हुआ॥ १४। और उस ने इलियाह के ओढ़ने को जो उस्से गिर पड़ा था लेके पानियों को मारा और कहा कि परमेश्वर इलियाह का ईश्वर कहां और जब उस ने भी पानियों को मारा तो पानी इधर उधर हो गया और इलीसाअ पार गया॥ १५। और जब यरीहो के भविष्यद्वक्तों के संतानों ने जो देखने को निकले थे उसे देखा तो बोले कि इलियाह की आत्मा इलीसाअ पर ठहरती है और वे उस की भेंट के लिये आये और उस के आगे भूमि पर झुके॥ १६। और कहा कि देखिये अब तेरे सेवकों के साथ पचास बीर पुत्र हैं हम तेरी बिनती करते हैं कि उन्हें जाने दीजिये कि तेरे स्वामी को ढूंढ़ें क्या जाने परमेश्वर के आत्मा ने उसे उठा के किसी पर्वत पर अथवा तराई में फेंक दिया हो वुह बोला कि किसी को मत भेजो॥ १७। और जब उन्हों ने यहां लों उसे उभारा कि वुह लज्जित हुआ पचास जन को उस ने कहा कि भेजो तब उन्हों ने भेजा और उन्हों ने तीन दिन लों उसे ढूंढ़ा पर न पाया॥ १८। और जब वे उस पास फिर आये [क्योंकि वुह यरीहो में ठहरा था] तब उस ने उन्हें कहा कि मैं ने तुम्हें न कहा था कि मत जाओ॥ १९। तब उस नगर के लोगों ने इलीसाअ से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं देखिये कि इस नगर का स्थान मनभावना है जैसा मेरे प्रभु देखते हैं परंतु पानी निकम्मा और

भूमि फल हीन है॥ २०। तब उस ने कहा कि नया पात्र लाओ और उस में नोन डालो और वे उस पास लाये॥ २१। तब वुह पानियों के सोतों पर गया और नोन वहां डाल के बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने इन पानियों को अच्छा किया है फिर यहां से मृत्यु अथवा ऊसर न होगा॥ २२। और इलीसाअ के कहे ऊए बचन के समान आज लों जल अच्छे ऊए॥

२३। फिर वुह वहां से बैतएल को चढ़ा और ज्यों वुह मार्ग में ऊपर जाता था त्यों देखो कि नगर के लड़के निकले और उसे चिढ़ा चिढ़ा कहने लगे कि चढ़ जा सिर मुंडे चढ़ जा सिर मुंडे॥ २४। तब उस ने पीछे फिर के उन्हें देखा और परमेश्वर का नाम लेके उन्हें स्राप दिया वहीं बन में से दो भालु निकले और उन में से बयालीस लड़कों को मार डाला॥ २५। फिर वुह वहां से करमिल पहाड़ को गया और वहां से समरून को फिर आया।

३ तीसरा पर्ब्ब।

अब यहूदाह के राजा यहूसफ़त के अठारहवें बरस अखिअब का बेटा यहूराम समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने बारह बरस राज्य किया॥ २। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई परंतु अपने माता पिता के तुल्य नहीं इस लिये कि उस ने बअल की मूर्त्ति को जो उस के पिता ने बनाई थी दूर किया॥ ३। तथापि वुह नबात के बेटे यरुबिआम के समान पापों में जिस ने इसराएल से पाप करवाया पिलचा रहा उन से अलग न ऊआ॥ ४। और मोअब का राजा मैसा जो भेड़ों का स्वामी था और इसराएल के राजा को एक लाख मेम्ने और एक लाख मेढ़े ऊन समेत भेंट भेजता था॥ ५। परंतु यों ऊआ कि जब अखिअब मर गया तब मोअब का राजा इसराएल के राजा से फिर गया॥ ६। और यहूराम राजा समरून से निकला और उसी समय सारे इसराएलियों को गिना॥ ७। और उस ने जाके यहूदाह के राजा यहूसफ़त को कहला भेजा कि मोअब का राजा मुझ से फिर गया क्या तू मोअब से लड़ने को मेरे साथ न जायगा उस ने कहा कि मैं

चढ़ जाऊंगा जैसा मैं वैसा तू जैसे मेरे लाेग वैसे तेरे लाेग जैसे मेरे घाेड़े वैसे तेरे घाेड़े॥ ८। तब उस ने पूछा कि हम किस मार्ग से चढ़ जायें उस ने उत्तर दिया कि अदूम के बन के मार्ग में से॥ ९॥ साे इसराएल के राजा और यहूदाह के राजा और अदूम के राजा निकले और उन्हाें ने सात दिन के मार्ग का चक्कर खाया और सेना के लिये और उन के ढाेराें के लिये जल न था॥ १०। तब इसराएल का राजा बाेला हाय परमेश्वर ने इन तीन राजाओं काे एकट्ठा किया कि उन्हें माेअब के हाथ में साैंपे॥ ११। परंतु यहूसफ़त बाेला कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताें में से काेई यहां नहीं जिसतें हम उस के द्वारा से परमेश्वर से बूझें तब इसराएल के राजा के सेवकाें में से एक बाेल उठा कि सफ़त का बेटा इलीसाअ यहां है जाे इलियाह के हाथाें पर जल डालता था॥ १२। फिर यहूसफ़त बाेला कि परमेश्वर का बचन उस पास है इस लिये इसराएल का राजा और यहूसफ़त और अदूम का राजा उस पास गये॥ १३। तब इलीसाअ ने इसराएल के राजा से कहा कि मुझे तुझ से क्या काम तू अपने पिता के भविष्यद्वक्ताें और अपनी माता के भविष्यद्वक्ताें पास जा और इसराएल का राजा उस्से बाेला नहीं क्याेंकि परमेश्वर ने इन तीन राजाओं काे एकट्ठा किया कि उन्हें माेअब के हाथ में साैंपे॥ १४। फिर इलीसाअ ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की साें जिस के आगे मैं खड़ा हूं यदि यहूदाह के राजा यहूसफ़त के साक्षात हाेने काे न मानता ताे निश्चय मैं तेरी ओर न ताकता और न तुझे देखता॥ १५। परंतु अब मुझ पास एक बीणा बजवैया लाओ और जब उस ने बीणा बजाई ताे ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ उस पर आया॥ १६। और वुह बाेला कि परमेश्वर याें कहता है कि इस तराई काे गड़हाें से भर देउ॥ १७। क्याेंकि परमेश्वर याें कहता है कि तुम न बयार न मेंह देखाेगे तथापि यह तराई पानी से भर जायगी जिसतें तुम और तुम्हारे ढाेर और तुम्हारे पशु पीयें॥ १८। और यह परमेश्वर की दृष्टि में छाेटी बात है वुह माेअबियाें काे भी तुम्हारे हाथाें में साैंपेगा॥ १९। और तुम हर एक बाड़ित नगर और हर एक चुनी हुई बस्ती मारोगे और हर एक अच्छे पेड़ काे गिराओगे और पानी के सारे कुओं काे भाठाेगे और हर एक

अच्छी भूमि को पत्थरों से बिगाड़ोगे॥ २०। और बिहान को यों ज़ुआ कि जब भेंट चढ़ाई गई तो देखो कि अदूम के मार्ग से पानी आया और देश पानी से भर गया॥ २१। और मोअबियों ने यह सुन के कि राजा हम से लड़ने चढ़ आये हैं उन्हों ने ललकार के सभों को जो करिहांव बांध सक्ते थे एकट्ठा किया और अपने सिवाने पर खड़े ज़ुए॥ २२। और बड़े तड़के उठे और सूर्य पानी पर चमकने लगा और मोअबियों ने उस पार से पानी को लोहू सा लाल देखा॥ २३। तब वे बोल उठे कि वुह लोहू है निश्चय राजा नष्ट ज़ुए और एक ने दूसरे को बधन किया है हे मोअबियों अब लूटो॥ २४। और जब वे इसराएल की छावनी में आये तो इसराएली उठे और मोअबियों को यहां लों मारा कि वे उन के आगे से भाग निकले परन्तु वे मोअबियों को मारते ज़ुए बढ़ते गये अर्थात् देश में॥ २५। और उन्हों ने उन के नगरों को ढा दिया और हर एक जन ने हर एक अच्छे स्थान पर अपना पत्थर डाला और उसे भर दिया और पानी के सारे कूएं भाठ दिये और सब अच्छे पेड़ गिरा दिये यहां लों कि कीरहरासत के पत्थरों से अधिक कुछ बचा न रहा तथापि ढेलवासियों ने उसे जा घेरा और मार लिया॥ २६। और जब मोअब के राजा ने देखा कि संग्राम मेरे लिये अति भारी ज़ुआ तो उस ने अपने संग सात सौ जन खड्गधारी लिये जिसतें अदूम के राजा लों पैठे परन्तु न सके॥ २७। तब उस ने अपने जेठे बेटे को लिया जिसे उस की सन्ती राज्य पर बैठना था और उसे भीत पर होम के बलिदान के लिये चढ़ाया और इसराएलियों के बिरुद्ध बड़ा जलजलाहट ज़ुआ और वे उस्से हट गये और देश में फिर आये॥

४ चौथा पर्ब्ब।

अब भविष्यद्वक्तों के पुत्रों की पत्नियों में से एक स्त्री इलीसाअ के आगे चिल्ला के बोली कि तेरा सेवक मेरा पति मर गया है और तू जानता है कि तेरा सेवक परमेश्वर से डरता था और अब धनिक आया है कि मेरे दोनों बेटों को लेके दास बनावे॥ २। तब इलीसाअ ने उस्से कहा कि मैं तेरे लिये क्या करूं मुझे बतला तुझ पास घर में क्या है वुह

बोली कि तेरी दासी के घर में एक हांडी तेल से अधिक कुछ नहीं॥ ३। तब उस ने कहा कि बाहर जाके अपने सब परोसियों से छूंछे पात्र मंगनी ला और वे थोड़े न होवें॥ ४। और अपने घर में जाके अपने और अपने बेटों पर द्वार बन्द कर और उन सब पात्रों में उंड़ेल और जो जो भर जाय उसे अलग रख॥ ५। सो वुह उस के पास से गई और अपने पर और अपने बेटों पर द्वार मूंद लिया वे उस के पास लाते जाते थे और वुह उंडेलती थी॥ ६। और ऐसा हुआ कि जब वे पात्र भर गये तो उस ने अपने बेटे से कहा कि एक और पात्र ला वुह बोला और पात्र तो नहीं तब तेल थम गया॥ ७। और उस ने आके ईश्वर के जन से कहा तब वुह बोला जा तेल बेंच और धनिक को दे और बचे हुए से तू और तेरे सन्तान जीवें॥ ८। और एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि इलीसाअ सूनेम को गया वहां एक धनवती स्त्री थी उस ने उसे पकड़ा कि रोटी खाय सो ऐसा हुआ कि जब उस का जाना उधर होता था तब वुह वहां जाके रोटी खाता था॥ ९। फिर उस ने अपने पति से कहा कि देख मैं देखती हूं कि यह ईश्वर का पवित्र जन है जो नित्य हमारे पास से जाता है॥ १०। सो हम उस के लिये एक छोटी सी कोठरी भीत पर बनावें और वहां उस के लिये बिछौना बिछावें और एक मंच लगावें और एक पीढ़ी रक्खें और एक दीअट और जब वुह हम पास आया करे तब वहीं टिके॥ ११। सो एक दिन ऐसा हुआ कि वुह वहां गया और उस कोठरी में टिका और सोया॥ १२। तब उस ने अपने सेवक जेहाजी को कहा कि इस सूनेमी को बुला उस ने उसे बुलाया तो वुह उस के आगे आ खड़ी हुई॥ १३। फिर उस ने अपने सेवक से कहा कि तू उसे कह कि तू ने जो हमारे लिये यह सब चिन्ता किई तो तेरे लिये क्या किया जाय तू चाहती है कि राजा अथवा सेना के प्रधान से तेरे विषय में कहा जाय वुह बोली कि मैं अपने ही लोगों में रहती हूं॥ १४। फिर उस ने कहा कि इस के लिये क्या किया जाय तब जैहाजी बोला कि निश्चय यह निर्बंश है और उस का पति वृद्ध॥ १५। तब वुह बोला कि उसे बुला और उस ने उसे बुलाया तब वुह द्वार पर खड़ी हुई॥ १६। वुह बोला इसी समय से पूरे दिन पर तू एक बेटा गोद में

लेगी वुह बाली कि नहीं हे मेरे प्रभु ईश्वर के जन अपनी दासी से झूठ न कहिये ॥ १७। और वुह स्त्री गर्भिणी ऊई और उसी समय जो इलीसाअ् ने उसे कहा था जीवन के समान एक बेटा जनी॥ १८। और वुह बालक बड़ा ऊआ और एक दिन यों ऊआ कि वुह अपने पिता पास लवैयों कने गया॥ १९। और अपने पिता से कहा कि मेरा सिर मेरा सिर उस ने एक तरुण से कहा कि उसे उस की माता पास ले जा॥ २०। तब उस ने उसे लेके उस की माता के पास पऊंचाया और वुह उस के घुठनों पर पड़े पड़े मध्यान्ह को मर गया॥ २१। तब उस ने उसे ले जाके उस ईश्वर के जन के बिछौने पर डाल दिया और द्वार मूंद के निकल गई॥ २२। और अपने पति पास गई और कहा कि शीघ्र एक तरुण और एक गदहा मेरे लिये भेजिये जिसतें मैं ईश्वर के जन पास दौड़ जाऊं और फिर आऊं॥ २३। उस ने पूछा कि आज तू उस पास क्यों जाया चाहती है आज न अमावास्या है न बिश्राम वुह बाली कि कुशल होगा॥ २४। तब उस ने एक गदहे पर काठी बांधी और तरुण से कहा कि हांक और बढ़ और मेरे चढ़ने के लिये मत रोक जब लों मैं तुझे न कहूं॥ २५। सो वुह चल निकली और करमिल पहाड़ पर ईश्वर के जन पास आई और ऐसा ऊआ कि जब ईश्वर के जन ने दूर से उसे देखा तो अपने सेवक जैहाज़ी से कहा देख वुह सूनेमी है॥ २६। उसे आगे से मिलने को दौड़ और उस्से पूछ कि तू कुशल से है तेरा पति कुशल से है तेरा बालक कुशल से है उस ने उत्तर दिया कि कुशल से॥ २७। और उस ने उस पहाड़ पर आके ईश्वर के जन के चरण को पकड़ा परन्तु जैहाज़ी ने पास आके चाहा कि उसे अलग करे परन्तु ईश्वर के जन ने कहा कि उसे छोड़ दे क्योंकि इस का प्राण दुःखी है और परमेश्वर ने मुझ से छिपाया और मुझे नहीं कहा॥ २८। तब वुह बोली कि कब मैं ने अपने प्रभु से पुत्र मांगा मैं ने नहीं कहा कि मुझे मत भुला॥ २९। तब उस ने जैहाज़ी को कहा कि अपनी करिहांव कस और मेरी छड़ी हाथ में ले और चला जा यदि कोई तुझे मार्ग में मिले तो उसे नमस्कार मत कर और यदि कोई तुझे नमस्कार करे तो उसे उत्तर मत दे और मेरी छड़ी बालक के मुंह पर रख॥ ३०। तब उस की माता बोली परमेश्वर के जीवन

सें और तेरे प्राण के जीवन सें मैं तुझे न छोड़ूंगी तब वुह उठा और उस के पीछे पीछे चला॥ ३१। तब जैहाज़ी उन से आगे आगे गया और छड़ी लड़के के मूंह पर धरी परन्तु कुछ शब्द अथवा सुरत न ऊई इस लिये वुह उसे भेंट करने को फिरा और उसे कहा कि लड़का नहीं जागा॥ ३२। और जब इलीसाअ घर में पऊंचा तब वुह बालक उस के बिछौने पर मरा पड़ा था॥ ३३। तब वुह भीतर गया और दोनों पर द्वार मंद के परमेश्वर से प्रार्थना किई॥ ३४। और जाके बालक से लिपटा और उस के मूंह पर अपना मूंह रक्खा और उस की आंखों पर अपनी आंखें और उस के हाथों पर अपने हाथ और बालक पर फैल गया तब उस बालक की देह गरमाई॥ ३५। फिर वुह उठा और उस घर में इधर उधर टहलने लगा और फिर जाके उस पर फैला और बालक ने सात बेर छींका और अपनी आंखें खोलीं॥ ३६। तब उस ने जैहाज़ी को बुलाके कहा कि उस सूनेमी को बुला सो उस ने उसे बुलाया और जब वुह भीतर उस पास आई तो उस ने उसे कहा कि अपना बेटा उठाले॥ ३७। तब वुह भीतर गई और उस के पांओं पर गिरी और भूमि लों झुक के दंडवत किई और अपने बेटे को उठा के बाहर गई॥ ३८। और इलीसाअ जिलजाल को फिर आया और उस देश में अकाल पड़ा था और वहां भविष्यद्वक्तों के पुत्र उस के साम्ने बैठे ऊए थे और उस ने अपने सेवक से कहा कि बड़ा हंडा चढ़ा और भविष्यद्वक्तों के पुत्रों के लिये लपसी पका॥ ३९। और एक जन चौगान में गया कि कुछ तर-कारी चुन लावे और उस ने बनैले दाख पाये और उस्से गोद भर के जंगली तुंबियां बटोरीं और आके लपसी के हांड़ी में डाल दिईं क्योंकि वे न जानते थे॥ ४०। सो उन्हों ने लोगों के खाने के लिये उंडेला और यों ऊआ कि जब वे वह लपसी खाने लगे तो चिल्ला उठे कि हे ईश्वर के जन खाने में मृत्यु है और खा न सके॥ ४१। तब उस ने पिसान मंग-वाया और उस हांड़े में डाल दिया और कहा कि लोगों के खाने के लिये उंडेल तब हांड़े में कुछ अवगुण न ऊआ॥ ४२। उसी समय बअल-सलीसः से एक पुरुष ईश्वर के जन पास पहिले अन्न की रोटी जव के बीस फुलके और अन्न से भरीऊई बालें अपने अंचल में लाया और बोला कि

लोगें को खाने को दे॥ ४३। तब उस का सेवक बोला कि क्या मैं इसे सो मनुष्यें के आगे रक्खूं उस ने फिर कहा कि लोगें को खाने को दे क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि वे खायेंगे श्रीर बच रहेगा॥ ४४। तब उस ने उन के आगे रक्खा श्रीर उन्हें ने खाया श्रीर परमेश्वर के बचन के समान बच रहा॥

५ पांचवां पर्ब्ब॥

अब नअ्मान जो अरामी के राजा की सेना का प्रधान था अपने प्रभु के आगे महान पुरुष श्रीर प्रतिष्ठित था क्योंकि परमेश्वर ने उस के द्वारा से अरामियों को जय दिया था वुह महावीर श्रीर बली था परन्तु कोढ़ी॥ २। श्रीर अरामी जथा जथा होके निकल गये थे श्रीर इसराएल के देश में से एक छोटी कन्या को बंधुआई में लाये थे श्रीर वह नअ्मान की पत्नी के पास रहती थी॥ ३। श्रीर उस ने अपनी स्वामिनी से कहा हाय कि मेरा स्वामी उस भविष्यद्वक्ता के आगे जाता जो समरून में है क्योंकि वुह उसे उस के कोढ़ से चंगा करता॥ ४। श्रीर वुह जाके अपने प्रभु से कहके बोली इसराएल के देश की कन्या यों कहती है॥ ५। सो अरामी के राजा ने कहा कि चल निकल मैं इसराएल के राजा को पत्री लिख भेजूंगा सो वुह चला श्रीर दस तोड़े चांदी श्रीर छः सहस्र टुकड़े सोना श्रीर दस जोड़े वस्त्र अपने साथ ले चला॥ ६। श्रीर वुह उस पत्री को यह कहके इसराएल के राजा पास लाया कि यह पत्री जब तेरे पास पहुंचे तब देख मैं ने अपने सेवक नअ्मान को तुझ पास भेजा है जिसतें तू उसे कोढ़ से चंगा करे॥ ७। श्रीर यों हुआ कि जब इसराएल के राजा ने उस पत्री को पढ़ा तो अपने कपड़े फाड़े श्रीर बोला कि क्या मैं ईश्वर हूं जो मारूं श्रीर जिलाऊं कि यह जन मुझ पास भेजता है कि एक जन को उस के कोढ़ से चंगा करो सो तुम्हीं बिचारो श्रीर देखो कि वुह मुझ से झगड़ा ढूंढ़ता है॥ ८। श्रीर जब ईश्वर के जन इलीसाअ् ने सुना कि इसराएल के राजा ने अपने कपड़े फाड़े तो राजा को कहला भेजा कि तू ने अपने कपड़े क्यों फाड़े अब वुह मुझ पास आवे श्रीर उसे जान पड़ेगा कि इसराएल में एक भविष्यद्वक्ता है॥ ९। सो नअ्मान

अपने घोड़े और अपने रथ समेत आया और इलीसाअ के घर के द्वार पर खड़ा हुआ॥ १०। तब इलीसाअ ने उस पास दूत भेज के कहा कि जा और यरदन में सात बेर नहा और तेरा शरीर फिर पवित्र हो जायगा॥ ११। परन्तु नअमान यह कहके क्रुद्ध होके चला गया देख मैं ने कहा था कि वुह निश्चय मुझ पास निकल आवेगा और खड़ा होके अपने ईश्वर परमेश्वर का नाम लेगा और उस स्थान पर हाथ फेरेगा और कोढ़ को चंगा करेगा॥ १२। क्या अमानः और फ़रफ़र दमिशक की नदियां इसराएल के सारे पानियों से कितनी अच्छी नहीं मैं उन में नहा के शुद्ध नहीं हो सक्ता वुह फिरा और कोपित चला गया॥ १३। तब उस के सेवक उस पास आये और यह कहके बोले कि हे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कुछ भारी बात बताता तो तू उसे न मानता फेर कितना अधिक जब वुह तुझे कहता है कि नहा और शुद्ध हो॥ १४। तब वुह उतरा और जैसा कि ईश्वर के जन ने कहा था यरदन में सात बेर डुबकी मारी और उस का शरीर बालक के शरीर के समान फिर हो गया और वुह पवित्र हुआ॥ १५। तब वुह अपनी सारी जथा समेत ईश्वर के जन के पास फिर आया और उस के आगे खड़ा हुआ और यों कहा कि देखिये अब मैं जानताहूं कि समस्त पृथिवी में इसराएल में छोड़ कोई ईश्वर नहीं है इस लिये अब अनुग्रह करके अपने सेवक की भेंट लीजिये॥ १६। परन्तु उस ने कहा कि उस परमेश्वर के जीवन सों जिस के आगे मैं खड़ा हूं मैं कुछ न लेऊंगा और उस ने उसे बहुत सकेती में डाला कि लेवे परन्तु उस ने न माना॥ १७। और नअमान ने कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं तेरे सेवक को दो खच्चर भर के मिट्टी न मिलेगी क्योंकि तेरा सेवक आगे को परमेश्वर को छोड़ दूसरे देवों के लिये न बलिदान न होम की भेंट चढ़ावेगा॥ १८। परन्तु इस बात में परमेश्वर तेरे सेवक को क्षमा करे कि जब जब मेरा स्वामी पूजा के लिये रिम्मन के मन्दिर में जाय और वुह मेरे हाथ पर ओठंगे और मैं रिम्मन के मन्दिर में झुकों सो जब मैं रिम्मन के मन्दिर में झुकों तब परमेश्वर इस बात में तेरे सेवक को क्षमा करे॥ १९। उस ने उसे कहा कि कुशल से जा सो वुह उस्से थोड़ी दूर गया॥ २०। परन्तु ईश्वर के जन इलीसाअ के सेवक जैहाज़ी ने कहा

कि देख मेरे स्वामी ने इस अरामी नअमान को छोड़ दिया और जो कुछ वुह लाया था उस के हाथ से ग्रहण न किया परन्तु परमेश्वर के जीवन सों मैं तो उस के पीछे दौड़ जाऊंगा और उस्से कुछ लेऊंगा॥ २१। सो जैहाज़ी नअमान के पीछे गया और नअमान ने जो देखा कि वुह पीछे दौड़ा आता है तो वुह उस की भेंट के लिये रथ पर से उतरा और बोला कि सब कुशल॥ २२। उस ने कहा कि सब कुशल मेरे स्वामी ने यह कह के मुझे भेजा है कि देख भविष्यद्वक्ता के सन्तान में से दो तरुण पुरुष इफ़रायम पहाड़ से आये हैं सो अनुग्रह करके उन्हें एक तोड़ा चांदी और दो जोड़े वस्त्र दीजिये॥ २३। तब नअमान ने कहा कि प्रसन्न हो और दो तोड़े ले और उस ने उसे सकेत करके दो तोड़े चांदी दो थैलियों में दो जोड़े वस्त्र सहित बांधे और अपने दो सेवकों पर धरा और वे उठा के उस के आगे आगे गये॥ २४। और उस ने एकान्त में आके उन के हाथ से उन्हें ले लिया और घर में रख के उन पुरुषों को बिदा किया सो वे चले गये॥ २५। परन्तु वुह जाके अपने स्वामी के साम्ने खड़ा हुआ तब इलीसाअ ने उसे कहा कि जैहाज़ी कहां से वुह बोला कि तेरा सेवक तो इधर उधर नहीं गया था॥ २६। फिर उस ने उसे कहा कि मेरा मन न गया था जब वुह जन अपने रथ पर से उतर के तेरी भेंट को फिरा क्या यह रोकड़ और वस्त्र और जलपाई और दाख की बारी और भेड़ें और बैल और दास और दासियां लेने का समय है॥ २७। इस लिये नअमान का कोढ़ तुझे और तेरे वंश को सदा लगा रहेगा तब वुह उस के आगे से पाला की नाईं कोढ़ी चला गया।

६ छटवां पर्व्व।

और भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने इलीसाअ से कहा कि अब देखिये यह स्थान जहां हम तेरे संग बसते हैं हमारे लिये अति सकेत है॥ २। अब अनुग्रह कर के यरदन को चलिये और वहां से हर एक जन एक एक बल्ला लावे और वहां एक बसगित बनावें वुह बोला कि जाओ॥ ३। तब एक ने कहा कि मान लीजिये और अपने सेवकों के साथ चलिये उस ने उत्तर दिया कि मैं जाऊंगा॥ ४। सो वुह उन के साथ साथ गया और

उन्हों ने यरदन पर आके लकड़ियां काटीं॥ ५। परंतु ज्यों एक जन बल्ला काटता था कुल्हाड़ा पानी में गिर पड़ा तब उस ने चिल्ला के कहा कि हे स्वामी यह तो मंगनी का था॥ ६। और ईश्वर का जन बोला कि कहां गिरा उस ने उसे वुह स्थान बताया तब उस ने टहनी काट के उधर डाल दिई और कुल्हाड़ा उतरा उठा॥ ७। तब उस ने कहा कि उठा ले और उस ने हाथ बढ़ा के उठा लिया।

८। तब अराम का राजा इसराएल से लड़ा और उस ने अपने सेवकों से परामर्श करके कहा कि मैं उस स्थान में डेरा करूंगा॥ ९। तब ईश्वर के जन ने इसराएल के राजा को कहला भेजा कि चैाकस हो और अमुक स्थान से मत जाइयो क्योंकि वहां अरामी उतर आये हैं॥ १०। और इसराएल के राजा ने उस स्थान में भेजा जिस के बिषय में ईश्वर के जन ने उसे कहके चैाकस किया था और आप को बारंबार बचा रक्खा॥ ११। इस लिये इस बात के कारण अराम के राजा का मन अति व्याकुल हुआ और उस ने अपने सेवकों को बुला के कहा मुझे न बताओगे कि हम्में से इसराएल के राजा की ओर कैान है॥ १२। तब उस के एक सेवक ने कहा कि हे मेरे प्रभु राजा नहीं परंतु इलीसाअ भविष्यद्वक्ता जो इसराएल में है तेरी हर एक बात जो तू अपने शयन स्थान में करता है इसराएल के राजा को कहता है॥ १३। सो उस ने कहा कि जा और भेद ले कि वुह कहां है जिसतें मैं भेज के उसे बुलाऊं उसे यह कहके संदेश पहुंचाया कि देखिये वुह दूतान में है॥ १४। इस लिये उस ने उधर घोड़े और रथ और भारी सेना भेजी और उन्हों ने रात को आ कर उस नगर को घेर लिया॥ १५। और जब ईश्वर के जन का सेवक तड़के उठा और बाहर निकला तो क्या देखता है कि सेना और घोड़ चढ़े और रथ नगर को घेरे हुए हैं तब उस के सेवक ने उसे कहा कि हाय हे मेरे स्वामी हम क्या करें॥ १६। उस ने उत्तर दिया कि मत डर क्योंकि जो हमारे साथ हैं सो उन के साथियों से अधिक हैं॥ १७। तब इलीसाअ ने प्रार्थना किई और कहा कि हे परमेश्वर कृपा करके इस की आंखें खोल जिसतें देखे सो परमेश्वर ने उस तरुण की आंखें खोलीं और उस ने जो दृष्टि किई तो देखा कि इली

साअ की चारों ओर पहाड़ आग के घोड़ों और गाड़ियों से भरा ज्ञआ है॥ १८। और जब वे उस पर उतर आये तो इलीसाअ ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि इन लोगों को अन्धा कर डाल और इलीसाअ के बचन के समान उस ने उन्हें अन्धा कर डाला॥ १९। फिर इलीसाअ ने उन्हें कहा कि यह मार्ग नहीं यह नगर नहीं तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ और मैं तुम्हें उस जन पास पज्ञंचाऊंगा जिसे तुम ढूंढ़ते हो और वुह उन्हें समरून में ले गया॥ २०। और जब वे समरून में पज्ञंचे तो यों ज्ञआ कि इलीसाअ ने कहा कि हे परमेश्वर इन की आंखें खोल जिसतें वे देखें तब परमेश्वर ने उन की आंखें खोलीं और वे देखने लगे और क्या देखते हैं कि समरून के मध्य में हैं॥ २१। और इसराएल के राजा ने उन्हें देख के इलीसाअ से कहा कि हे पिता मैं बधन करूं मैं बधन करूं॥ २२। और उस ने कहा कि बधन मत कर क्योंकि जिन्हें तू ने अपने तलवार और धनुष से बन्धुआ किया तू उन्हें बधन करता उन के आगे खाना पीना धर दे जिसतें वे खा पीके अपने स्वामी पास जायें॥ २३। सो उस ने उन के लिये बज्ञत सा भोजन सिद्ध करवाया और जब वे खा पी चुके तो उस ने उन्हें बिदा किया और वे अपने स्वामी पास चले गये और फिर कभी अराम की जथा इसराएल के देश में न आई॥ २४। इस के पीछे ऐसा ज्ञआ कि अराम के राजा बिनहदद ने अपनी समस्त सेना एकट्ठी किई और चढ़ के समरून को घेरा॥ २५। तब समरून में बड़ा अकाल पड़ा और वे उसे घेरे रहे यहां लों कि गदहे का एक सिर नब्बे रुपये के ऊपर बिकता था और कपोत की बीट पाव भर से कुछ ऊपर पांच रुपये से अधिक को बिकती थी॥ २६। और यों ज्ञआ कि जब इसराएल का राजा भीत पर जाता था एक स्त्री उस के आगे चिल्ला के बोली कि हे मेरे प्रभु राजा सहाय कीजिये॥ २७। तब वुह बोला कि यदि परमेश्वर ही तेरी सहाय न करे तो मैं तेरी सहाय क्योंकर करूं क्या खत्ते से अथवा अंगूर के कोल्हू से॥ २८। फिर राजा ने उसे कहा कि तुझे क्या ज्ञआ उस ने उत्तर दिया कि इस स्त्री ने मुझे कहा कि आओ तेरे बेटे को आज खायें और अपने बेटे को कल खायेंगे॥ २९। सो हम ने अपने बेटे को उसिन के खाया और मैं ने दूसरे दिन उसे कहा कि अपना बेटा ला जिसतें हम उसे खावें

परंतु उस ने अपना बेटा छिपा रक्खा है॥ ३०। राजा ने उस स्त्री की बातें सुन के अपने कपड़े फाड़े और भीत पर चला जाता था और लोगों ने जो दृष्टि किई तो देखो अपने शरीर पर भीतर उदासी बस्त्र पहिने था॥ ३१। तब उस ने कहा कि ईश्वर मुझ से वैसा और उस्से भी अधिक करे यदि आज सफत के बेटे इलीसाअ का सिर उस पर ठहरे॥ ३२। और इलीसाअ अपने घर में बैठा था और प्राचीन भी उस के साथ बैठे थे और राजा ने अपने साथ का एक जन अपने आगे भेजा परंतु दूत न पहुंचा था कि इलीसाअ ने प्राचीनों से कहा कि देखो इस बधिक के बेटे ने कैसा भेजा है कि मेरा सिर काटे सो देखो जब दूत आवे तो द्वार बन्द करो और उसे दृढ़ता से द्वार पर पकड़े रहो क्या उस के पीछे पीछे उस के स्वामी के पांव का शब्द नहीं॥ ३३। और वुह उन से यह कहीं रहा था तो क्या देखता है कि दूत उस पास आ पहुंचा और उस ने कहा कि देखो यह बिपत्ति परमेश्वर की ओर से है अब आगे मैं परमेश्वर की बाट क्यों जोहूं।

७ सातवां पर्ब्ब।

तब इलीसाअ ने कहा कि परमेश्वर का बचन सुनो परमेश्वर यों कहता है कि कल इसी जून समरून के फाटक पर चोखा पिसान पांच सूकी का एक पैमानः बिकेगा और जव दो पैमानः पांच सूकी को॥ २। तब राजा के एक प्रतिष्ठित ने जिस के हाथों पर राजा उठंगता था ईश्वर के जन को उत्तर दिया और कहा कि देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनाता तो क्य ऐसा हो सक्ता तब उस ने कहा कि देख तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर उस्से न खायगा॥ ३। और नगर के फाटक की पैठ में चार कोढ़ी थे उन्हों ने आपुस में कहा कि मरने लों हम यहां क्यों बैठें॥ ४। यदि हम कहें कि नगर में जायेंगे तो नगर में अकाल है और हम वहां मर जायेंगे और यदि यहीं बैठे रहें तो भी मरेंगे सो अब चलो हम अरामी सेना में जावें यदि वे हमें जीवते छोड़ेंगे तो हम बचेंगे और यदि वे हमें बधन करें तो मर ही जायेंगे॥ ५। सो वे गोधूली में उठ के अरामियों की सेना को चल निकले और जब वे अरामियों

की छावनी के बाहर ही बाहर पज़ंचे तो देखो वहां कोई न था ॥ ६। क्योंकि परमेश्वर ने रथें का और घोड़ें का और एक बड़ी सेना का शब्द अरामियों की सेना को सुनाया तब उन्हों ने आपुस में कहा कि देखो इसराएल का राजा हित्तियों के राजाओं को और मिस्रियों के राजाओं को हमारे बिरुद्ध भाड़े में चढ़ा लाया ॥ ७। इस लिये वे उठ के गोधूली में भाग निकले और अपने डेरे और अपने घोड़े और अपने गदहे अर्थात् अपनी छावनी को जैसी की तैसी छोड़ छोड़ अपने अपने प्राण ले भागे॥ ८। और जब कि कोढ़ी छावनी में पज़ंचे तो वे एक तंबू में घुसे और वहां खाया और पीया और वहां से रूपा और सोना और बस्त्र लिया और एक स्थान पर जाके छिपा रक्खा और फिर आके दूसरे तंबू में घुसे और वहां से भी ले गये और छिपा रक्खा॥ ९। फिर उन्हों ने आपस में कहा कि हम अच्छा नहीं करते आज मंगल समाचार का दिन है और हम चुप हो रहे हैं यदि हम बिहान की ज्योति लों ठहरें तो दंड पावेंगे सो आओ हम जाके राजा के घराने को सन्देश पज़ंचावें ॥ १०। तब उन्हों ने आके नगर के द्वारपाल को पुकारा और यह कहा कि हम अरामियों की छावनी में गये और देखो कि वहां न मनुष्य न मनुष्य का शब्द परन्तु घोड़े और गदहे बंधे ज़ए और तंबू जैसे के तैसे हैं॥ ११। और उस ने द्वार-पालकों को कहा और उन्हों ने राजा के भवन में भीतर संदेश पज़ंचाया॥ १२। और राजा रात ही को उठा और अपने सेवकों से कहा कि मैं तुम्हें बताता ज़ं कि अरामियों ने हम से क्या किया वे जानते हैं कि हम भूखे हैं इस लिये वे छावनी से निकल के चौगान में यह कहके छिपे हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे तब हम उन्हें जीता पकड़ लेंगे और नगर में घुसेंगे॥ १३। और उस के सेवकों में से एक ने उत्तर देके कहा कि हम उन घोड़ों में से जो बचे हैं पांच घोड़ लेवें देख वे इसराएल की बची ज़ई मंडली के समान [जो नष्ट ज़ए हैं] आओ उन्हें भेजें और बूझें॥ १४। सो उन्हों ने रथों के दो घोड़े लिये और राजा ने अरामियों की सेना के पीछे लोगों को यह कहके भेजा कि जाओ और बूझो॥ १५। वे उन के पीछे पीछे यरदन लों चले गये और क्या देखते हैं कि सारे मार्ग में बस्त्र और पात्र जो अरामी अपनी उतावली में फेंक गये थे भरपूर थे तब दूत फिर

आके राजा से बोले॥ १६। तब लोगों ने निकल के अरामियों के तंबूओं को लटा सो परमेश्वर के बचन के समान चोखा पिसान पांच सूकी का एक पैमानः बिका और जव पांच सूकी का दो पैमानः और राजा ने उस प्रतिष्ठित को जिस के हाथ पर वुह ओठगता था फाटक की चौकसी दिई और लोगों ने फाटक में उसे लताड़ा और जैसा कि परमेश्वर के जन ने कहा था वुह मर गया जब राजा उस पास आया था वुह मर गया॥ १८। और जैसा कि ईश्वर का जन यह कहके राजा को बोला कि दो पैमानः जव पांच सूकी को और एक पैमानः चोखा पिसान पांच सूकी को कल इसी जन समरून के द्वार पर होगा सो पूरा हुआ॥ १९। और उस प्रतिष्ठित ने ईश्वर के जन को उत्तर देके कहा था अब देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनावे ऐसा हो सक्ता है तब उस ने कहा कि तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर उस्से न खायगा॥ २०। उस पर ऐसा ही कुछ बीता क्योंकि लोगों ने फाटक पर उसे लताड़ डाला और वुह मर गया।

८ आठवां पर्ब्ब।

तब इलीसाअ ने उस स्त्री को कहा जिस के बेटे को उस ने जिलाया था कि उठ और अपने घराने समेत जा और जहां कहीं बास कर सके बास कर क्योंकि परमेश्वर एक अकाल लाता है सो देश में सात बरस लों अकाल रहेगा॥ २। तब वुह स्त्री उठी और उस ने ईश्वर के जन के कहने के समान किया और अपने घराने समेत फिलिस्तियों के देश में सात बरस लों बास किया॥ ३। और सातवें बरस के अन्त में ऐसा हुआ कि वुह स्त्री फिलिस्तियों के देश से फिर आई और राजा पास चली गई जिसतें अपने घर और अपनी भूमि के लिये चिल्लावे॥ ४। तब राजा ईश्वर के जन के सेवक जैहाज़ी से यह कहके बोला कि सारे बड़े बड़े कार्य्य जो इलीसाअ ने दिखलाये हैं उन्हें मेरे आगे बर्णन कर॥ ५। और ज्यों वुह राजा से कह रहा था कि उस ने एक मृतक को किस रीति से जिलाया देखो कि वुह स्त्री जिस के बेटे को उस ने जिलाया था आके राजा के आगे अपने घर और भूमि के लिये चिल्लाई तब जैहाज़ी बोल उठा कि हे मेरे प्रभु राजा वुह स्त्री और उस का बेटा जिसे इलीसाअ ने

जिलाया यही है॥ ६। और जब राजा ने उस स्त्री से पूछा तो उस ने बताया तब राजा ने एक प्रधान को उस के संग करके कहा कि उस का सब कुछ और उस के अन्न जिस दिन से उस ने यह भूमि छोड़ी है आज के दिन लों फेर दिलाओ॥ ७। तब इलीसाअ दमिश्क में आया और अराम का राजा बिनहदद रोगी था और उसे सन्देश पहुंचा कि ईश्वर का जन यहां आया है॥ ८। और राजा ने हजाएल को कहा कि कुछ दान हाथ में ले और ईश्वर के जन से भेंट करके उस के द्वारा से परमेश्वर से बूझ और कह क्या मैं इस रोग से चंगा होऊंगा॥ ९। सो हजाएल उस्से भेंट करने चला और उस ने दमिश्क की समस्त अच्छी बस्तु भेंट के लिये हाथ में लिई अर्थात् चालीस ऊंट लदे हुए और उस के आगे खड़े होके कहा कि तेरे बेटे बिनहदद अराम के राजा ने मुझे यह कहके तेरे पास भेजा है और पूछा है कि मैं इस रोग से चंगा हूंगा॥ १०। तब इलीसाअ ने उसे कहा कि जाके उसे कह कि तू निश्चय चंगा होगा तथापि परमेश्वर ने मुझे दिखाया है कि वुह निश्चय मर जायगा॥ ११। और उस ने रूप स्थिर करके यहां लों रक्खा कि वुह लज्जित हुआ और ईश्वर के जन ने बिलाप किया॥ १२। तब हजाएल ने कहा कि मेरा प्रभु क्यों रोता है और उस ने उत्तर दिया इस लिये कि मैं जानता हूं कि तू इसराएल के सन्तान से कैसी बुराई करेगा और उन के दृढ़ गढ़ों को फूंक देगा और उन के तरुणों को तलवार से घात करेगा और उन के बालकों को दे दे पटकेगा और उन की गर्भिणियों को फाड़ेगा॥ १३। तब हजाएल बोला क्या तेरा सेवक कुत्ता है कि वुह ऐसी बुरी बात करे तब इलीसाअ बोला परमेश्वर ने मुझे बताया है कि तू अराम का राजा होगा॥ १४। फिर वुह इलीसाअ पास से अपने स्वामी के पास गया जिस ने उसे पूछा कि इलीसाअ ने तुझे क्या कहा उस ने कहा कि उस ने मुझे बताया कि तू अवश्य चंगा होगा॥ १५। और बिहान को ऐसा हुआ कि उस ने एक मोटा कपड़ा लिया और उसे पानी में चभोड़ के उस के मूंह पर यहां लों फैलाया कि वुह मर गया और हजाएल ने उस की सन्ती राज्य किया॥ १६। और अखिअब के बेटे इसराएल के राजा यूराम के राज्य के पांचवें बरस जब यहूसफ़त यहूदाह का राजा था तब

यहूसफात का बेटा यहूराम यहूदाह के राज्य पर बैठने लगा॥ १७। जब कि वुह राज्य करने लगा उस की बय बत्तीस बरस की थी उस ने यरूसलम में आठ बरस राज्य किया॥ १८। और वुह अखिअब के घराने के समान इसराएली राजाओं की चाल पर चलता था क्योंकि अखिअब की बेटी उस की पत्नी थी और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥ १९। तथापि परमेश्वर ने न चाहा कि यहूदाह को नाश करे क्योंकि उसे अपने सेवक दाऊद का पक्ष था कि उस ने उसे बाचा दिई थी कि मैं तुझ और तेरे बंश को सर्वदा के लिये एक दीपक दूंगा॥ २०। उस के समय में अदूम यहूदाह के बश से फिर गये और उन्हों ने अपने लिये एक राजा बनाया॥ २१। तब यराम सगीर में आया और सारे रथ उस के साथ थे और उस ने रात को उठ के अदूमियों को जो उसे घेरे हुए थे और रथों के प्रधानों को मारा और लोग अपने अपने तंबूओं को भाग गये॥ २२। परन्तु अदूम आज के दिन लों यहूदाह के बश से फिरा है उसी समय में लिबनः भी फिर गये॥ २३। और यराम की उबरी हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया था सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं है॥ २४। फिर यूराम ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा गया और उस का बेटा अखज़याह उस की सन्ती राज्य पर बैठा। २५।

और इसराएल के राजा अखिअब के बेटे यूराम के बारहवें बरस यहूदाह का राजा यहूराम का बेटा अखज़याह राज्य पर बैठा॥ २६। जब अखज़याह राज्य पर बैठा तब वुह बाईस बरस का था और यरूसलम में एक बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अतलीयाह था जो इसराएल के राजा उमरी की बेटी थी॥ २७। और वुह अखिअब के घराने की चाल पर चलता था और उस ने अखिअब के घराने के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई क्योंकि वुह अखिअब के घराने का जवांई था॥

२८। और वुह अखिअब के बेटे यूराम के साथ अराम के राजा हज़ाएल से लड़ने को रामात जिलिअद पर चढ़ा और अरामियों ने यूराम को घायल किया॥ २९। सो राजा यूराम यज़रअएल को फिर

गया जिसतें उन घावें से चंगा होवे जो अरामियों से जब वुह अराम के राजा हजाएल से लड़ा था उसे लगा था और यहूराम का बेटा यहूदाह का राजा अज़ख़याह यज़रअ़एल को गया जिसतें अखिअ़ब के बेटे यराम को देखे क्योंकि वुह घायल था॥

९ नवां पर्ब्ब ।

तब इलीसाअ़ भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वक्ताओं के सन्तानों में से एक को बुलाया और कहा कि अपनी कटि बान्ध और तेल की यह कुप्पी अपने हाथ में ले और रामात जिलिअ़द को जा॥ २। और जब तू वहां पहुंचे तो निमसी के बेटे यहूसफ़त के बेटे याहू को ढूंढ़ ले और भीतर जाके उसे अपने भाईयों में से उठा के भीतर की कोठरी में ले जा॥ ३। और कुप्पी का तेल लेके उस के सिर पर ढाल और कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक किया तब तू द्वार खोल के भाग और ठहर मत॥ ४। सो वुह तरुण अर्थात् वुह तरुण भविष्यद्वक्ता रामात जिलिअ़द को गया॥ ५। और जब वह आया तो क्या देखता है कि सेनापति बैठे हैं तब उस ने कहा कि हे सेनापति तेरे लिये मुझ पास संदेश है और याहू ने कहा कि हम सभों में से किस के लिये उस ने कहा कि तेरे लिये हे सेनापति॥ ६। और वुह उठ के घर में गया और उस ने उस के सिर पर वुह तेल ढाल के उसे कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे ईश्वर के लोगों पर अर्थात् इसराएल पर राज्याभिषेक किया॥ ७। और तू अपने स्वामी अखिअ़ब के घराने को मारेगा जिसतें मैं अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं के लोहू का और परमेश्वर के सारे सेवकों के लोहू का ईज़बिल के हाथ से पलटा लेऊं॥ ८। क्योंकि अखिअ़ब का सारा घर नष्ट होगा और मैं अखिअ़ब से हर एक पुरुष को जो भीत पर मुत्ता है क्या निरबंध क्या दास इसराएल में काट डालूंगा॥ ९। और मैं अखिअ़ब के घर को नबात के बेटे यरुबिआ़म के घर के समान और अखियाह के बेटे बअ़शा के घर के समान करूंगा॥ १०। और ईज़बिल को यज़रअ़एल के भाग में कुत्ते खायेंगे वहां कोई गड़वैया न होगा और वुह द्वार खोल के भागा॥ ११। तब याहू निकल

के अपने प्रभु के सेवकों के पास आया और एक ने उसे कहा कि सब कुशल है यह बौड़हा तेरे पास किस लिये आया तब उस ने उन्हें कहा कि तुम उस पुरुष को और उस के संदेश को जानते हो॥ १२। वे बोले कि झूठ हमें अब बता तब उस ने कहा कि वुह मुझे यों कहके बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक किया॥ १३। तब उन्हों ने फुरती किई और हर एक ने अपना अपना वस्त्र लिया और अपने नीचे सीढ़ी पर रक्खा और यह कहके नरसिंगा फूंका कि याहू राज्य करता है॥ १४। सो निमसी के बेटे यहूसफ़त का बेटा याहू ने यूराम के बिरोध में गुष्ट बान्धी [अब अराम के राजा हज़ाएल के कारण यूराम और सारे इसराएल रामात जिलिअद की रक्षा करते थे॥ १५। परंतु राजा यहूराम ने उन घाओं से जो अरामियों ने उसे मारा था जब वुह अराम के राजा हज़ाएल से लड़ा था चंगा होने फिर आया] तब याहू ने कहा कि यदि तुम्हारे मन होवे तो नगर से किसी को न निकलने न बचने दो न होवे कि यज़रअएल में हमारा समाचार पहुंचावे॥ १६। सो याहू रथ पर चढ़ के यज़रअएल को गया क्योंकि यूराम वहां था और यहूदाह का राजा अख़ज़याह यूराम को देखने को उतर आया था॥ १७। और यज़रअएल की बुर्ज पर एक पहरू था उस ने ज्यों याहू की जथा को आते देखा त्यों कहा कि मैं एक जथा को देखता हूं यूराम ने कहा कि एक घोड़चढ़े को लेके उन की भेंट के लिये भेज और पूछ कि कुशल है॥ १८। सो उस की भेंट के लिये एक जन घोड़े पर चढ़ के आगे बढ़ा और जाके उस ने कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है याहू ने कहा कि तुझे कुशल से क्या मेरे पीछे होले फिर पहरू यह कहके बोला कि दूत उन पास पहुंचा परंतु फिर नहीं आता॥ १९। तब उस ने दूसरे को घोड़े पर भेजा उस ने भी उन पास पहुंच के कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है और याहू ने उत्तर दिया कि तुझे कुशल से क्या मेरे पीछे होले॥ २०। फिर पहरू यह कहके बोला कि वुह भी उन पास पहुंचा और फिर नहीं आता और हांकना निमसी के बेटे याहू के हांकने के समान है क्योंकि वुह बौड़ाहपन से हांकता है॥ २१। तब यूराम ने कहा कि जोतो सो उस का रथ जोता गया तब इसराएल का राजा

यूराम और यहूदाह का राजा अखज़याह अपने अपने रथ पर बाहर गये और वे याहू के विरोध में बाहर गये और उसे यज़रअऐली नबात के भाग में पाया॥ २२। तब यूराम ने याहू को देख के कहा कि याहू कुशल है याहू बाला कैसा कुशल कि जब तेरी माता ईज़बिल का छिनाला और उस के टोने इतने हैं॥ २३। तब यूराम अपने हाथ फेर के भागा और अखज़याह से कहा कि हे अखज़याह छल है॥ २४। तब याहू ने अपना हाथ धनुष से भरा और यहूराम की भुजाओं के मध्य में मारा और बाण उस के हृदय में पैठ गया और वुह अपने रथ में झुक गया॥ २५। तब उस ने अपने प्रधान बिदकर से कहा कि उसे उठा के यज़रअऐली नबात के खेत के भाग में डाल दे क्योंकि चेत कर कि जब मैं और तू उस के बाप अखिअब के पीछे चढ़े जाते थे परमेश्वर ने यह बोझ उस पर धरा था॥ २६। परमेश्वर कहता है कि निश्चय मैं ने नबात के लोहू और उस के बेटों के लोहू को कल देखा है और परमेश्वर कहता है कि मैं तुझ से इसी भाग में पलटा लेऊंगा सा परमेश्वर के बचन के समान उसे लेके उसी स्थान में डाल दे॥ २७। परन्तु जब यहूदाह के राजा अखज़याह ने यह देखा तो वुह घर की बारी के मार्ग से निकल भागा और याहू ने उस का पीछा किया और कहा कि उसे भी रथ में मार लेओ सो उन्हों ने जूर के मार्ग में जो इबलिआम के लग है उसे मारा और वुह भाग के मजिद्दो में आया और वहां मर गया॥ २८। और उस के सेवक उसे रथ में डाल के यरूसलम को ले गये और उसे उस की समाधि में दाऊद के नगर में उस के पितरों के साथ गाड़ा॥ २९। और अखिअब के बेटे यूराम के ग्यारहवें बरस अखज़याह यहूदाह पर राज्य करने लगा॥ ३०। और जब याहू यज़रअऐल को आया तो ईज़बिल ने सुना और अपनी आंखों में अंजन लगाया और अपना मस्तक सवांरा और एक झरोखे से झांकने लगी॥ ३१। और ज्यों हीं याहू ने फाटक में से प्रवेश किया और वुह बोली कि क्या ज़िमरी को कुशल मिला जिस ने अपने प्रभु का बधन किया॥ ३२। तब याहू ने झरोखे की ओर मस्तक उठाया और कहा कि मेरी ओर कौन कौन है और उस की ओर दो तीन शयन स्थान के प्रधानों ने देखा॥ ३३। तब उस ने कहा कि उसे गिरा दो सो उन्हों ने उसे नीचे गिरा

दिया और उस का लोहू भीत पर और घोड़ों पर पड़ा और उस ने उसे लताड़ा॥ ३४। और भीतर आके खा पी के कहा कि जाओ और उस स्रापित को देखा और उसे गाड़ो क्योंकि वुह राज पुत्री है॥ ३५। और वे उसे गाड़ने गये परंतु उन्हों ने उस की खोपड़ी और उस के पांओं और हथेलियों से अधिक कुछ न पाया॥ ३६। तब वे फिर आये और उसे सन्देश दिया वुह बोला कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने अपने सेवक इलियाह तिसबी से कही थी कि यज़रअएल के भाग में कुत्ते ईज़बिल का मांस खायेंगे॥ ३७। और ईज़बिल की लोथ यज़रअएल के भाग में खेत पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी और न कहेंगे कि यह ईज़बिल है।

१० दसवां पर्ब्ब।

और समरून में अखिअब के सत्तर बेटे थे सो याहू ने पत्र लिखे और जरअएल के आज्ञाकारियों के और प्राचीनों के और अखिअब के सन्तानों के पालकों के पास समरून को यह कहके भेजा॥ २। जैसा कि तुम्हारे प्रभु के बेटे और रथ और घोड़े और बाड़ित नगर और नगर भी और अस्त्र हैं सो इस पत्र के तुम्हारे पास पहुंचते ही॥ ३। जो तुम्हारे स्वामी के बेटों में से सब से अच्छा और योग्य होवे देख के उस के पिता के सिंहासन पर उसे बैठाओ और अपने स्वामी के घर के लिये लड़ाई करो॥ ४। परन्तु वे अत्यन्त डर गये और बोले कि देखो दो राजा तो उस का साम्ना न कर सके फिर हम क्योंकर ठहरेंगे॥ ५॥ तब जो घर का प्रधान था और जो नगर का प्रधान था और प्राचीन और पालकों ने याहू को कहला भेजा कि हम तेरे सेवक हैं तू जो कुछ कहेगा सो सब हम मानेंगे हम राजा न बनावेंगे जो तुझे अच्छा लगे सो कर॥ ६। तब उस ने उन के पास यह कहके दूसरी पत्री लिखी कि यदि तुम मेरी ओर हो और मेरा शब्द मानोगे तो अपने स्वामी के बेटों के मस्तकों को लेके कल इसी समय मुझ पास यज़रअएल में चले आओ अब राजा के बेटे सत्तर जन होके नगर के महत लोगों के साथ थे जो उन के पालक थे॥ ७। और जब यह पत्री उन के पास पहुंची तो उन्हों ने सत्तर जन

राजपुत्रों को मार डाला और उन के मस्तकों को टोकरों में रख के उस पास यज़रअऐल में भेजा॥ ८। तब एक दूत आया और यह कह के उसे बोला कि वे राजपुत्रों के मस्तक लाये हैं वुह बोला कि नगर के फाटक की पैठ में बिहान लों उन की दो ढेर कर रक्खो॥ ९। और यों हुआ कि प्रातःकाल को वुह बाहर जाके खड़ा हुआ और सब लोगों से कहा कि तुम धर्म्मी हो देखो मैं ने तो अपने स्वामी के बिरुद्ध गुष्ट बांध के उसे बधन किया पर इन सभों को किस ने घात किया॥ १०। अब जानो कि परमेश्वर के बचन में से जो परमेश्वर ने अखिअब के घर के बिषय में कहा था कोई बात भूमि पर न गिरेगी क्योंकि परमेश्वर ने जो कुछ कि अपने सेवक इलियाह के द्वारा से कहा था उसे पूरा किया॥ ११। सो याहू ने उन सब को जो अखिअब के घराने से यज़रअऐल में बच रहे थे और उस के समस्त महत जनों को और उस के कुटुम्बों को और उस के याजकों को मार डाला यहां लों कि एक को भी न छोड़ा॥ १२। फिर वुह उठा और चल के समरून को आया और ज्यों वुह बैतएक़द गड़रीयों के मार्ग के निकट पहुंचा॥ १३। तब याहू ने यहूदाह के राजा अख़ज़याह के भाइयों को पाया और कहा कि तुम कौन और वे बोले कि हम अख़ज़याह के भाई राजा और रानी के पुत्रों के कुशल के लिये जाते हैं॥ १४। तब उस ने आज्ञा किई कि उन्हें जीते पकड़ लेओ सो उन्हों ने उन्हें जीते पकड़ लिया और उन्हें अर्थात् बयालीस को बैतएक़द के गड़हे पर मार डाला उन में से एक को न छोड़ा॥ १५। फिर वहां से चला और रैक़ाब के बेटे यहूनदब को पाया जो उस के भेंट करने को आता था तब उस ने उसे आशीष दे के पूछा कि जैसा मेरा मन तेरे मन के साथ है क्या वैसा तेरा मन ठीक है तब यहूनदब ने उत्तर दिया कि है यदि होवे तो अपना हाथ मुझे दे सो उस ने अपना हाथ दिया और उस ने उसे रथ पर अपने साथ बैठा लिया॥ १६। और कहा कि मेरे साथ चल और परमेश्वर के लिये मेरा ज्वलन देख सो वुह उस के साथ रथ पर बैठ लिया॥ १७। और जब वह समरून में पहुंचा तो उस ने उन सभों को जो अखिअब के बच हुए थे मार डाला यहां लों कि जैसा परमेश्वर ने इलियाह के द्वारा से कहा था उस ने उसे नष्ट कर दिया॥

१८। फिर याहू ने सब लोगों को इकट्ठा किया और उन्हें कहा कि अखिअब ने बअल की थोड़ी पूजा किई याहू उस की बहुत सी पूजा करेगा॥ १९। सो अब बअल के सारे भविष्यद्वक्तों को और उस के सारे सेवकों और उस के सारे याजकों को मुझ पास बुलाओ उन में से एक भी न छूटे क्योंकि मैं बअल के लिये बड़ा बलि चढ़ाऊंगा और जो कोई घटेगा सो जीवता न बचेगा परन्तु याहू ने चतुराई से किया जिसतें बअल के सेवकों को नाश करे॥ २०। और याहू ने कहा कि बअल के लिये पर्ब्ब शुद्ध करो और उन्हों ने प्रचारा॥ २१। और याहू ने समस्त इसराएलियों में भेजा और बअल के सारे सेवक आये ऐसा कोई न था जो न आया हो और वे बअल के मन्दिर में गये और बअल का मन्दिर इस सिरे से उस सिरे लों भर गया॥ २२। फिर उस ने बस्त्र के घर के प्रधान को कहा कि सारे बअल के सेवकों के लिये बस्त्र निकाल ला सो वुह उन के लिये बस्त्र निकाल लाया॥ २३। तब याहू और रैकाब का बेटा यहूनदब बअल के मन्दिर में गये और बअल के सेवकों से कहा कि खोजो और देखो कि यहां तुम्हारे मध्य में परमेश्वर के सेवकों में से कोई न हो परन्तु केवल बअल के सेवक॥ २४। और जब वे भेंट और बलिदान चढ़ाने को भीतर गये याहू ने बाहर बाहर अस्सी जन को ठहरा रक्खा और उन्हें कहा कि यदि कोई इन लोगों में से जिन्हें मैं ने तुम्हारे हाथ में कर दिया है बच निकले तो उस का प्राण उस के प्राण की सन्ती होगा॥ २५। और ऐसा हुआ कि ज्यों वुह होम की भेंट चढ़ा चुका तो याहू ने पहरू को और प्रधानों को आज्ञा किई कि घुसो और उन्हें मार डालो एक भी बाहर निकलने न पावे सो उन्हों ने उन को तलवार की धार से मार डाला और पहरू और प्रधान उन की लोथों को बाहर फेंक के बअल के मन्दिर के नगर में गये॥ २६। और उन्हों ने बअल के मन्दिर की मूर्त्तों को निकाला और उन्हें जला दिया॥ २७। और बअल की मूर्त्ति को चकनाचूर किया और बअल का मन्दिर ढा दिया और आज के दिन लों दिशा फिरने का घर बनाया॥ २८। यों याहू ने बअल को इसराएल में से नष्ट किया॥

२९। परन्तु याहू ने उन पापों को जो नबात के बेटे यरुबिआम ने

इसराएलियों से करवाया था छोड़ न दिया अर्थात् सोने के बछड़ों को जो बैतएल और दान में थे रहने दिया॥ ३०। तब परमेश्वर ने याह्न से कहा इस कारण कि जो मेरी दृष्टि में अच्छा था तू ने उसे किया है और जो कुछ कि मेरे मन में था तू ने अखिअब के घराने पर किया है सो तेरे सन्तान चौथी पीढ़ी लों इसराएल के सिंहासन पर बैठेंगे॥ ३१। पर याह्न इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था पर अपने सारे मन से न चला क्योंकि उस ने यरुबिआम के पापों को न छोड़ा जिस ने इसराएलियों से पाप करवाया॥ ३२। उन दिनों में परमेश्वर ने इसराएलियों को काट काट के घटाना आरंभ किया और हज़ाएल ने उन्हें इसराएल के सारे सिवानों में मारा॥ ३३। यरदन से लेके उदय की ओर सारे जिलिअद के देश और जद और रूबीनी और मुनस्सी अरआयर से लेके जो अरनून की नदी के लग है अर्थात् जिलिअद और बसन लों॥ ३४। अब याह्न की रही ऊई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस के सारे पराक्रम क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा॥ ३५। उस के पीछे याह्न अपने पितरों में सो रहा और उन्हों ने उसे समरून में गाड़ा और उस के बेटे यहूअखज़ ने उस की सन्ती राज्य किया॥ ३६। और जिन दिनों में याह्न ने समरून में इसराएल पर राज्य किया सो अट्ठाईस बरस थे॥

११ ग्यारहवां पर्ब्ब॥

तब अख़ज़याह की माता अतलीयाह ने ज्यों देखा कि मेरा बेटा मूआ तो उठी और राजा के सारे बंश को मार डाला॥ २। परन्तु अख़ज़याह की बहिन यराम राजा की बेटी यहूसबअ ने अखज़याह के बेटे यूआस को लिया और उसे उन राज पुत्रों में से जो मारे गये थ चुरा के उसे और उस की दाई को शयन स्थान में अतलीयाह से छिपाया यहां लों कि वुह मारा न गया॥ ३। और वुह उस के साथ परमेश्वर के मन्दिर में छः बरस लों छिपा रहा और अतलीयाह देश पर राज्य करती रही॥ ४। और सातवें बरस यहूयदः ने सौ सौ के अध्यक्षों को और प्रधानों को पहरुओं समेत बुला भेजा और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में

अपने पास बुला के उन से बाचा बांधी और परमेश्वर के मन्दिर में उन से किरिया लिई और राजा के बेटे को उन्हें दिखाया ॥ ५ । और उस ने यह कहके उन्हें आज्ञा किई कि तुम यह काम करो कि तुम्हारा तीसरा भाग जो बिश्राम में भीतर जाता है राजा के भवन का रक्षक होवे ॥ ६ । और तीसरा भाग सूर के फाटक पर रहे और तीसरे फाटक पर पहरुओं के पीछे इस रीति से भवन की रक्षा करो और रोको ॥ ७ । और तुम सभों में से दो जथा जो बिश्राम में निकलती हैं राजा के आस पास होके परमेश्वर के मन्दिर की रखवाली करें ॥ ८ । और राजा की चारों ओर रहो और हर एक जन शस्त्र हाथ में लिये रहे और जो बाड़े के भीतर आवे सो मारा जाय और बाहर भीतर आते जाते राजा के साथ रहो ॥ ९ । तब जैसा यहूयदः याजक ने समस्त आज्ञा किई थी शतपतियों ने वैसा ही किया और उन में से हर एक ने अपने अपने जनों को जो बिश्राम में बाहर भीतर आने जाने पर थे लिया यहूयदः याजक पास आये ॥ १० । तब याजक ने राजा दाऊद की बरछियां और ढालें जो परमेश्वर के मन्दिर में थीं शतपतियों को दिईं ॥ ११ । और पहरू अपने अपने शस्त्र हाथ में लेके हर एक जन मन्दिर के दहिने कोने से लेके बायें कोने लों और बेदी की और मन्दिर की और राजा की चारों ओर खड़े हुए ॥ १२ । फिर वुह राज पुत्र को निकाल लाया और उस पर मुकुट रख के उसे साक्षी दिई और उसे राजा बनाया और अभिषेक किया और उन्हों ने तालियां बजाईं और बोले कि राजा जीवे ॥ १३ । और जब अतलीयाह ने पहरुओं और लोगों का शब्द सुना तो वुह लोगों में परमेश्वर के मन्दिर में पहुंची ॥ १४ । और क्या देखती है कि ब्यवहार के समान राजा खंभे से लगा हुआ खड़ा है और अध्यक्ष और नरसिंगे के बजवैये राजा के लग खड़े हैं और देश के सारे लोग आनन्द में हैं और नरसिंगे फूंकते हैं तब अतलीयाह ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्ला के बोली कि छल छल ॥ १५ । परन्तु यहूयदः याजक ने शतपतियों को और सेना के अध्यक्षों को आज्ञा किई और कहा कि उसे बाड़ों से बाहर करो और जो उस का पीछा करे उसे तलवार से मार डालो क्योंकि याजक ने कहा था कि वुह परमेश्वर के मन्दिर में मारी न जाय ॥ १६ ।

तब उन्हों ने उस पर हाथ चलाये और वुह उस मार्ग में जिस मार्ग से घोड़े राजा के भवन में आते थे जाती थी और वहां मारी गई॥ १७। और यहूयदः ने परमेश्वर के और राजा के और लोगों के मध्य में एक बाचा बांधी कि वे परमेश्वर के लोग होवें और राजा और लोगों के मध्य में बाचा बांधी॥ १८। तब देश के सारे लोग बअल के मन्दिर में आये और उसे ढाया और उन्हों ने उस की मूर्त्तों और उस की बेदियों को चकनाचूर किया और बअल के याजक मत्तान को बेदियों के सन्मुख घात किया और याजक ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये पदों को ठहराया॥ १९। फिर उस ने शतपतियों को और प्रधानों को और पहरुओं को और देश के सारे लोगों को लेके वे राजा को परमेश्वर के मन्दिर से उतार के पहरुओं के फाटक के मार्ग से राज भवन में लाये और वुह राजाओं के सिंहासन पर बैठा॥ २०। और देश के सारे लोग आनंदित हुए और नगर में चैन हुआ और उन्हों ने अतलीयाह को राज भवन के लग खड्ग से घात किया॥ २१। और जब यूआस राजा सिंहासन पर बैठा तब वुह सात बरस का था॥

१२ बारहवां पर्ब्ब॥

और याहू के सातवें बरस यूआस राज्य करने लगा और उस ने यरूसलम में चालीस बरस राज्य किया उस की माता का नाम बिअरसबः की ज़िबयः था॥ २। जब लों यहूयदः याजक यूआस को उपदेश करता रहा उस के जीवन भर उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई॥ ३। परंतु ऊंचे स्थान दूर न किये गये थे और लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और सुगंध जलाते थे॥ ४। और यूआस ने याजकों से कहा कि पवित्रता के सारे रोकड़ जो परमेश्वर के मंदिर में पहुंचाये जाते हैं अर्थात् वुह विशेष रोकड़ जो प्राण का मोल ठहरता है और समस्त रोकड़ जो हर एक अपनी इच्छा से परमेश्वर के मंदिर में लाता है॥ ५। सो याजक हर एक अपने अपने जान पहिचान से लेवें और घर के दरारों को जहां कहीं दरार पाये जायें सुधारें॥ ६। परंतु ऐसा हुआ कि यूआस के राज्य के तेईसवें बरस लों याजकों ने मंदिर

के दरारों को न सुधारा॥ ७। तब यूआस राजा ने यहूयदः याजक को अरु और याजकों को बुला के उन्हें कहा कि घर के दरारों को क्यों नहीं सुधारते हो सो अब अपने अपने जान पहिचानों से रोकड़ मत लेओ परंतु उसे घर के दरारों के लिये सौंपो॥ ८। और याजकों ने लोगों से रोकड़ न लेने को मान लिया कि घर के दरारों को न सुधारें॥ ९। परंतु यहूयदः याजक ने एक मंजूषा लिई और उस के ढपने पर एक छेद किया और उसे बेदी के लग परमेश्वर के मन्दिर में जाने की दहिनी ओर रक्खा और याजक जो डेवढ़ी की रक्षा करता था सब रोकड़ को जो परमेश्वर के मन्दिर में लाये जाते थे उस में रखता था॥ १०। और ऐसा था कि जब मंजूषा में बहुत रोकड़ होता था तो राजा का लेखक और प्रधान याजक आके रोकड़ को थैलियों में बांधते थे और उस रोकड़ को जो परमेश्वर के मन्दिर में पाते थे गिनते थे॥ ११। और वे उन गिने हुए रोकड़ को उन के हाथ में देते थे जो काम करते थे जो ईश्वर के मन्दिर पर करोड़े थे और वे बढ़इयों को और थवइयों को जो परमेश्वर के मन्दिर का काम बनाते थे॥ १२। और पत्थरियों को और पत्थर के गढ़वैयों को और लट्ठे और ढाए हुए पत्थर के लिये उठान करते थे जिसतें परमेश्वर के मन्दिर के दरारों को सुधारें और सब के लिये जो घर के सुधारने के लिये उठाये जाते थे॥ १३। तथापि उस रोकड़ से जो परमेश्वर के मन्दिर में आता था परमेश्वर के मन्दिर के लिये चांदी के कटोरे और कतरनियां और थालियां और तुरुहियां कोई सोने का पात्र अथवा चांदी का पात्र नहीं बनाया गया॥ १४। परंतु बनिहारों को देते थे और उस्से परमेश्वर के मन्दिर को सुधारते थे॥ १५। और जिनके हाथ रोकड़ को बनिहारों के लिये सौंपते थे वे उन से लेखा न लेते थे क्योंकि वे सच्चाई से उठाते थे॥ १६। अपराध के रोकड़ और पाप के रोकड़ परमेश्वर के मन्दिर में न लाते थे परंतु वे याजक के थे॥ १७। उसी समय अराम का राजा हजाएल चढ़ गया और जअत से लड़के उसे ले लिया और फिर यरूसलम की ओर फिरा कि उसे भी लेवे॥ १८। तब यहूदाह के राजा यूआस ने समस्त पवित्र किई गई बस्तें जो उस के पितर यहूसफ़त और यूराम और

अखज़याह यहूदाह के राजाओं ने भेंटें चढ़ाई थीं और उस की अपनी पवित्र किई हुई वस्तु उस सब सोने समेत जो परमेश्वर के मन्दिर के भंडारों और राजा के भवन में पाया गया लेके अराम के राजा हज़ाएल पास भेजी तब वुह यरूसलम से चला गया॥ १९। और यूआस की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं है॥ २०। तब उस के सेवकों ने उठ के युक्ति बांधी और यूआस को मिल्लो के घर में जो सिल्ला को उतरता है घात किया॥ २१। और सिमआत के बेटे यूज़कर और सामिर के बेटे यहूज़बद उस के सेवकों ने उसे मारा और वुह मर गया और उन्हों ने उस के पितरों के संग दाऊद के नगर में उसे गाड़ा और उस का बेटा अमसियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

यहूदाह के राजा अखज़याह के बेटे यूआस के तेईसवें बरस याहू के बेटे यहूअख़ज़ ने समरून में इसराएल पर राज्य करना आरंभ किया और सत्रह बरस राज्य किया॥ २। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे यरुबिआम के पापों का पीछा किया जिस ने इसराएल से पाप करवाया वुह उन से अलग न हुआ॥ ३। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें अराम के राजा हज़ाएल को और हज़ाएल के बेटे बिनहदद को उन के जीवन भर सौंप दिया॥ ४। और यहूअख़ज़ ने परमेश्वर की बिनती किई और परमेश्वर ने उस की सुनी इस लिये कि उस ने इसराएल का सताय जाना देखा क्योंकि अराम का राजा उन्हें सताता था॥ ५। [और परमेश्वर ने इसराएल को एक उद्धारक दिया यहां लों कि वे अरामियों के वश से निकल गये और इसराएल के सन्तान आगे की नाईं अपने अपने डेरों में रहने लगे॥ ६। तथापि उन्हों ने यरुबिआम के घर के पापों को न छोड़ा उस ने इसराएल से पाप करवाया परंतु उसी चाल पर चलता रहा और समरून में भी कुंज बना रहा]॥ ७। और उस ने लोगों में से किसी को यहूअख़ज़ के साथ न छोड़ा परंतु पचास घोड़

चढ़े और दस रथ और दस सहस्त्र पगइत क्योंकि अराम के राजा ने उन्हें नाश किया और उन्हें पीट पीट के धूल की नाईं बनाया॥ ८। अब यहूअखज़ की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस का पराक्रम क्या इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ ९। और यहूअखज़ ने अपने पितरों में बिश्राम किया और उन्हों ने उसे समरून में गाड़ा तब उस का बेटा यहूआश उस की सन्ती राजा हुआ॥ १०। और यहूदाह के राजा यूआस के सैंतीसवें बरस यहूअखज़ का बेटा यूआस समरून में इसराएलियों पर राज्य करने लगा सोलह बरस उस ने राज्य किया॥ ११। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और वुह नबात के बेटे यरूबिआम के सारे पापों से अलग न हुआ जिस ने इसराएलियों से पाप करवाया वुह उस में चलता था॥ १२। और यूआस की उबरी हुई क्रिया और सब जो उस ने किया और उस का पराक्रम जिस्से यहूदाह के राजा अमसियाह के बिरोध में लड़ता था सो क्या इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ १३। और यूआस ने अपने पितरों में शयन किया और यरूबिआम उस के सिंहासन पर बैठा और यूआस समरून में इसराएल के राजाओं में गाड़ा गया॥ १४। अब इलीसाअ एक रोग से रोगी पड़ा जिस्से वुह मर गया और इसराएल का राजा यूआस उस पास उतर आया और उस के मुंह पर रोके कहा कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता हे इसराएल के रथ और उस के घोड़ चढ़े॥ १५। और इलीसाअ ने उसे कहा कि धनुष बाण अपने हाथ में ले और उस ने धनुष बाण लिये॥ १६। फिर उस ने इसराएल के राजा को कहा कि धनुष पर हाथ धर उस ने धरा और इलीसाअ ने राजा के हाथ पर अपना हाथ रक्खा॥ १७। और उसे कहा कि पूर्ब की ओर की खिड़की खोल सो उस ने खोली तब इलीसाअ ने कहा कि मार और उस ने मारा तब उस ने कहा कि यह परमेश्वर के बचाव का बाण और अराम से बचाव का बाण है क्योंकि तू अरामियों को अफ़ीक़ में ऐसा मारेगा कि उन्हें मिटा डालेगा॥ १८। फिर उस ने उसे कहा कि बाणों को ले और उस ने लिया तब उस ने इसराएल के राजा से कहा कि भूमि

पर बाण मार और वुह तीन बेर मार के रहि गया॥ १९। तब ईश्वर के जन ने उस्से क्रुद्ध हो के कहा उचित था कि पांच अथवा छः बेर मारता तब तू अरामियों को यहां लों मारता कि उन्हें मिटा डालता परन्तु अब तो तू अरामियों को तीन बेर मारेगा॥ २०। तब इलीसाअ् मर गया और उन्हों ने उसे गाड़ा और बरस के आरंभ में मोअबियों की जथाओं ने देश को घेर लिया॥ २१। और ऐसा हुआ कि जब वे एक जन को गाड़ते थे तो क्या देखते हैं कि एक जथा तब उन्हों ने उस मृतक को इलीसाअ् की समाधि में फेंका और वुह गिरा और इलीसाअ् की लोथ पर पड़ा और वुह जी उठा और अपने पांव से खड़ा हो गया॥ २२। परन्तु अराम का राजा हज़ाएल यहूअख़ज़ के जीवन भर इसराएलियों को सताता रहा॥ २३। और परमेश्वर ने उन पर अनुग्रह किया और उन पर दयाल हुआ और उस ने अबिरहाम और इज़हाक और यअ़कूब से अपनी बाचा के कारण सुधि लिई और उन्हें नाश करने न चाहा और अपने आगे से अब लों दूर न किया॥ २४। सो अराम का राजा हज़ाएल मर गया और उस के बेटे बिनहदद ने उस की सन्ती राज्य किया॥ २५। और यहूअख़ज़ के बेटे यूआस ने हज़ाएल के बेटे बिनहदद के हाथ से उन नगरों को फेर लिया जो उस ने उस के पिता यहूअख़ज़ से लड़ाई में लिये थे और यूआस ने उसे तीन बेर मारा और इसराए-लियों के नगर फेर लिये।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

इसराएल के राजा यहूअख़ज़ के बेटे यूआस के राज्य के दूसरे बरस यहूदाह के राजा यहूआश का बेटा अमसियाह राजा हुआ॥ २। जब वुह राज्य करने लगा तो पचीस बरस का था और उस ने यरूसलम में उनतीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम यहूअ़द्दान यरूसलमी था॥ ३। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई तथापि अपने पिता दाऊद के समान नहीं परंतु उस ने सब कुछ अपने पिता यूआस की नाईं किया॥ ४। तथापि ऊंचे स्थान दूर न किये गये अब लों लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और सुगन्ध जलाते थे।

५। और यों हुआ कि ज्यों राज्य उस के हाथ में स्थिर हुआ त्यों उस ने अपने सेवकों को मार डाला जिन्हों ने उस के पिता राजा को मार डाला था॥ ६। परंतु घातकों के सन्तानों को घात न किया जैसा कि मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है जिस में परमेश्वर ने यह कहके आज्ञा किई थी कि बालकों के कारण पिता मारे न जायें और न पितरों के कारण बालक परंतु हर एक जन अपने ही पाप के कारण मारा जायगा॥ ७। और उस ने नून की तराई में दस सहस्र अदूमी को घात किया और सिला को लड़ाई में ले लिया और उस का नाम आज लों युक्तिएल रक्खा॥ ८। तब अमसियाह ने याहू राजा के बेटे यहूअखज़ के बेटे यहूअस पास यह कहके दूत भेजा कि आ एक दूसरे के मूंह परस्पर देखें॥ ९। सो इसराएल के राजा यहूअस ने यहूदाह के राजा अमसियाह को कहला भेजा कि लुबनान की भटकटैया ने लुबनान के आर्ज वृक्ष से कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे से व्याह दे पर लुबनान के एक बनैले पशु ने उधर से जाते जाते उस भटकटैया को लताड़ा॥ १०। निश्चय तू ने अदूम को मारा है और तेरे मन ने तुझे उभारा है बड़ाई कर और घर में रह जा अपनी घटती के लिये क्यों छेड़ कि तू अर्थात् यहूदाह समेत ध्वस्त होवे॥ ११। परंतु अमसियाह ने उस की न सुनी इस लिये इसराएल का राजा यहूअस चढ़ गया उस ने और यहूदाह के राजा अमसियाह ने बैतशमश में जो यहूदाह का है परस्पर मूंह देखा॥ १२। सो यहूदाह का राजा इसराएल के आगे ध्वस्त हुआ और उन में से हर एक अपने अपने तंबू को भागा॥ १३। और इसराएल के राजा यहूअस ने अखज़याह के बेटे यहूअस के बेटे यहूदाह के राजा अमसियाह को बैतशमश में पकड़ लिया और यरूसलम में आया और यरूसलम की भीत इफ़रायम के फाटक से लेके कोने के फाटक लों चार सौ हाथ ढा दिई॥ १४। और उस ने सारा सोना और चांदी और सारे पात्र जो परमेश्वर के मंदिर में और राजा के भंडारों में पाये ले लिये और ओले लेके समरून को फिर गये॥ १५। अब यहूअस की रही हुई क्रिया और उस का पराक्रम कि वुह यहूदाह के राजा अमसियाह से क्योंकर लड़ा सो क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा

ऊआ नहीं है॥ १६। और यहूअस ने अपने पितरों में शयन किया और इसराएली राजाओं के संग समरून में गाड़ा गया और उस के बेटे यरुबिआम ने उस की सन्ती राज्य किया॥ १७। और यहूदाह के राजा यूआस का बेटा अमसियाह इसराएल के राजा यहूअखज़ के बेटे यहूअस के मरने के पीछे पन्द्रह बरस जीया॥ १८। और अमसियाह की रही ऊई क्रिया क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी ऊई नहीं है॥ १९। अब उन्हों ने यरूसलम में उस के विरोध में युक्ति बांधी तब वुह लकीस को भाग गया फिर उन्हों ने उस के पीछे लोग लकीस में भेजे और वहां उसे मार डाला॥ २०। और वे उसे घोड़ों पर लाये और दाऊद के नगर में यरूसलम में उस के पितरों के संग गाड़ा॥ २१। तब यहूदाह के सारे लोगों ने अज़रियाह को [जो सोलह बरस का था] लेके उस के पिता अमसियाह की सन्ती राजा किया॥ २२। उस ने एलात का नगर बनाया और यहूदाह में मिला दिया उस के पीछे राजा ने अपने पितरों में शयन किया।

२३। और यहूदाह के राजा यूआस के बेटे अमसियाह के पन्द्रहवें बरस इसराएल के राजा यहूआस का बेटा यरुबिआम समरून में इसराएल के सन्तान पर राज्य करने लगा उस ने एकतालीस बरस राज्य किया॥ २४। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे यरुबिआम के सारे पापों के कारण जिस ने इसराएल से पाप करवाया छोड़ न दिया॥ २५। और उस ने हमात की पैठ से लेके चौगान के समुद्र लों इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने अपने सेवक जअतहिफर के भविष्यद्वक्ता अमित्ते के बेटे यून के द्वारा से कहा था उस ने इसराएल के सिवाने को फेर दिया॥ २६। क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के कष्ट को देखा कि अति है क्योंकि न कोई बंधन में था न कोई छोड़ा गया और न कोई इसराएल का रक्षक था॥ २७। और परमेश्वर ने यह न कहा था कि मैं स्वर्ग के नीचे से इसराएल का नाम मिटाऊंगा परंतु उस ने उन्हें यहूअस के बेटे यरुबिआम के द्वारा से बचाया॥ २८। और अब यरुबिआम की रही क्रिया और सब जो उस ने किया और उस का पराक्रम कि क्योंकर लड़ा और दमिशक को और यहूदाह

के हमात को इसराएल के लिये फेर दिया सो क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा हुआ नहीं है॥ २९। और यरुबिआम ने अपने पितरों में अर्थात् इसराएली राजाओं के संग शयन किया और उस के बेटे ज़करियाह ने उस की सन्ती राज्य किया।

१५ पंद्रहवां पर्ब्ब।

इसराएल के राजा यरुबिआम के सताईसवें बरस यहूदाह के राजा अमसियाह का बेटा अज़रियाह राज्य करने लगा॥ २। जब वुह राज्य पर बैठा तो सोलह बरस का था उस ने यरूसलम में बावन बरस राज्य किया उस की माता का नाम यकलियाह था जो यरूसलमी थी॥ ३। उस ने अपने पिता अमसियाह की सारी क्रिया के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई॥ ४। परंतु केवल यह कि ऊंचे स्थान दूर न किये गये और लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते और धूप जलाते थे॥ ५। और परमेश्वर ने राजा को मारा कि वुह मरने के दिन लों कोढ़ी रहा और घर में अलग रहता था और उस का बेटा यताम घर का अध्यक्ष था और देश के लोगों का न्याय किया करता था॥ ६। और अज़रियाह की उबरी हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं है॥ ७। सो अज़रियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने दाऊद के नगर में उस के पितरों के संग उसे गाड़ा और उस के बेटे यताम ने उस की सन्ती राज्य किया॥ ८। और यहूदाह के राजा अज़रियाह के अठतीसवें बरस यरुबिआम के बेटे ज़करियाह ने इसराएल पर समरून में छः मास राज्य किया॥ ९। और उस ने अपने पितरों के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे यरुबिआम के पापों से जिस ने इसराएल से पाप करवाया अलग न हुआ॥ १०। और यबीस के बेटे सलूम ने उस के बिरोध में युक्ति बांधके लोगों के आगे मारा और उसे घात किया और उस की सन्ती राज्य किया॥ ११। और ज़करियाह की उबरी हुई क्रिया क्या इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी है॥ १२। और परमेश्वर का यह वचन है जो

बुह याह्व से कहके बोला कि तेरे बेटे चौथी पीढ़ी लों इसराएल के सिंहासन पर बैठेंगे वैसा ही संपूर्ण हुआ॥

१३। यहूदाह के राजा उज्जियाह के राज्य के उंतालीसवें बरस यबीस के बेटे सलूम ने राज्य करना आरंभ किया और उस ने समरून में एक मास भर राज्य किया॥ १४। क्योंकि जद्दी का बेटा मुनहिम तिरज: से समरून पर चढ़ आया और यबीस के बेटे सलूम को समरून में मारा और उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया॥ १५। और सलूम की रही हुई क्रिया और उस की युक्ति जो उस ने बांधी सो क्या इसराएली राजाओं के समयों के सामाचार की पुस्तक में नहीं लिखी है॥ १६। तब मुनहिम ने तिफ़सह को उन सब समेत जो उस में थे तिरज: से लेके उस के सिवाने लों मारा इस कारण कि उन्हों ने उस के लिये न खोला इस लिये उस ने मारा और उस में की सारी गर्भिणी स्त्रियों का पेट फाड़ा॥ १७। यहूदाह के राजा अज़रियाह के उनतालीसवें बरस जद्दी के बेटे मुनहिम ने इसराएल पर राज्य करना आरंभ किया उस ने समरून में दस बरस राज्य किया॥ १८। और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे यरुबिआम के पापों को जिस ने इसराएल से पाप करवाया अपने जीवन भर न छोड़ा॥ १९। तब असूरियों का राजा फूल देश के विरोध में चढ़ आया और मुनहिम ने चालीस लाख रुपये के लग भग फूल को दिया जिसतें उस का साथी होके उस का राज्य स्थिर करे॥ २०। और मुनहिम ने यह रोकड़ इसराएल से काढ़ा अर्थात् हर एक धनी से पचास शैकल चांदी लिई और असूरियों के राजा को दिया सो असूरियों का राजा फिर गया और देश में न ठहरा॥ २१। और मुनहिम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ २२। और मुनहिम ने अपने पितरों में शयन किया और उस के बेटे फिक़हियाह ने उस की सन्ती राज्य किया॥ २३। और यहूदाह का राजा अज़रियाह के पचासवें बरस मुनहिम का बेटा फिक़हियाह समरून में इसराएलियों पर राज्य करने लगा उस ने दो बरस राज्य किया॥ २४। और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई उस

ने नबात के बेटे यरुबिआम के पापों को जिस ने इसराएल से पाप करवाया छोड़ न दिया॥ २५। परन्तु उस के सेनापति रमलियाह के बेटे फिक़: ने उस के बिरुद्ध युक्ति बांधा और उसे समरून में अरजूब और अरिया और जिलिअदी पचास मनुष्यों समेत राजा के भवन में मारा और उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया॥ २६। और फिक़हियाह की रही ऊई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ २७। यहूदाह के राजा अज़रियाह के बावनवें बरस में रमलियाह का बेटा फिक़: समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने बीस बरस राज्य किया॥ २८। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे यरुबिआम के पापों से जिस ने इसराएल से पाप करवाया अलग न ऊआ॥ २९। इसराएल के राजा फिक़: के दिनों में असूर के राजा तिगलतपिलासर ने आके ऐयून को और अबीलबैतमअक: को और यूनहा को और क़ादिस को और हसूर को और जिलिअद को और जलील को और नफ़ताली के सारे देश को लेके उन्हें असूर को बंधुआई में ले गया॥ ३०। और एला के बेटे हूसीअ ने रमलियाह के बेटे फिक़: के बिरुद्ध में युक्ति बांधके उसे मारा और घात करके उज्ज़ियाह के बेटे यूताम के बीसवें बरस उस की सन्ती राज्य किया॥ ३१। और फिक़: की रही ऊई क्रिया और सब जो उस ने किया सो क्या इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ ३२। और इसराएल के राजा रमलियाह के बेटे फिक़: के दूसरे बरस यहूदाह के राजा उज्ज़ियाह का बेटा यूताम राज्य करने लगा॥ ३३। जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तो वह पचीस बरस का था उस ने सोलह बरस यरूसलम में राज्य किया उस की माता का नाम यरूसा था जो सदूक की बेटी थी॥ ३४। उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और जो कुछ किया सो अपने बाप उज्ज़ियाह के समान किया॥ ३५। तथापि ऊंचे स्थान अलग न किये गये और अब लों लोग ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते थे और उस ने परमेश्वर के मन्दिर का ऊंचा फाटक बनाया॥ ३६। अब यूताम की रही ऊई क्रिया और सब जो

उस ने किया से क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ ३७। उन्हीं दिनों में परमेश्वर ने अराम के राजा रसीन को और रमलियाह के बेटे फिक़: को यहूदाह पर भेजा॥ ३८। और यूताम ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पिता दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा गया और उस का बेटा आख़ज़ उस की सन्ती राज्य करने लगा॥

१६ सोलहवां पर्ब्ब॥

और रमलियाह के बेटे फिक़: के राज्य के सत्रहवें बरस यहूदाह के राजा यूताम का बेटा आख़ज़ राज्य करने लगा॥ २। जब आख़ज़ राज्य करने लगा तब वुह बीस बरस का था और उस ने सोलह बरस यरूसलम में राज्य किया और उस ने परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में अपने पिता दाऊद के समान भलाई न किई॥ ३। परन्तु वुह इसराएल के राजाओं की चाल पर चलता था और उस ने अन्यदेशियों के घिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से दूर किया था अपने बेटे को आग में से चलाया॥ ४। और ऊंचे ऊंचे स्थानों और पहाड़ों पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे बलि चढ़ाये और धूप जलाये॥ ५। तब अराम के राजा रसीन और इसराएल के राजा रमलियाह का बेटा फिक़: यरूसलम पर लड़ने चढ़े और उन्हों ने आख़ज़ को घेर लिया परन्तु जीत न सके॥ ६। उसी समय अराम के राजा रसीन ने समरून के लिये ऐलात फेर लिया और यहूदियों को ऐलात से खेद दिया और अरामी ऐलात को आये और आज लों उस में बस्ते हैं॥ ७। और आख़ज़ ने असूर के राजा तिगलतपिलासर पास दूत के द्वारा से कहला भेजा कि मैं तेरा सेवक और तेरा बेटा सो आ और मुझे अराम के राजा के हाथों से और इसराएल के राजा के हाथ से जो मुझ पर चढ़ आये हैं छुड़ा॥ ८। और आख़ज़ ने सोना चान्दी जो परमेश्वर के मन्दिर में और राजा के घर के भंडारों में था लेके असूर के राजा के लिये भेंट भेजी॥ ९। और असूर के राजा ने उस का बचन माना क्योंकि असूर का राजा दमिश्क के बिरोध में चढ़ गया और उसे ले लिया और

वहां के लोगों को बंधुआ करके कीर में लाया और रसीन को मार डाला॥ १०। तब राजा आखज़ अस्सूर के राजा तिगलतपिलासर से भेंट करने दमिशक को गया और दमिशक में एक बेदी देखी और आखज़ राजा ने उस का डौल और दृष्टान्त उस के समस्त कार्य्यकारी के समान ऊरियाह याजक के पास भेजा॥ ११। सो ऊरियाह याजक ने उन सभों के समान जो आखज़ ने दमिशक से भेजा था एक बेदी बनाई और आखज़ राजा के दमिशक से आते आते ऊरियाह याजक ने बेदी को सिद्ध किया॥ १२। और जब राजा दमिशक से आया तो राजा ने बेदी को देखा और राजा बेदी पास गया और उस पर चढ़ाया॥ १३। और उस ने अपनी होम की भेंट और मांस की भेंट चढ़ाई और पीने की भेंट उस पर ढाली और अपने कुशल की भेंट का लोहू बेदी पर छिड़का॥ १४। और उस ने पीतल की उस बेदी को जो परमेश्वर के आगे थी घर के साम्ने से अर्थात् बेदी के और परमेश्वर के घर के मध्य से लाके बेदी के उत्तर अलंग रक्खा॥ १५। और राजा आखज़ ने ऊरियाह याजक को आज्ञा करके कहा कि बिहान के होम की भेंट और सांझ के मांस की भेंट और राजा के होम के बलिदान और उस के मांस की भेंट और देश के सारे लोगों के होम की भेंट समेत और उन के मांस की भेंट और उन के पीने की भेंटें जलाव और होम की भेंट के सारे लोहू और बलिदान के सारे लोहू उस पर छिड़क और पीतल की बेदी मेरे बूझने के लिये होगी॥ १६। यों ऊरियाह याजक ने आखज़ राजा की आज्ञा के समान सब कुछ किया॥ १७। और राजा आखज़ ने आधार के कोरों को काट डाला और उन पर के स्नान पात्र को अलग किया और समुद्र को पीतल के बैलों पर से उतार के बिछे हुए पत्थरों पर रक्खा॥ १८। और बिश्राम की छत को जो उन्हों ने घर में बनाई थी और राजा के पैठ के बाहर बाहर अस्सूर के राजा के लिये उस ने परमेश्वर के मंदिर से बाहर किया॥ १९॥ अब आखज़ की रही हुई क्रिया जो उस ने किई सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी नहीं हैं॥ २०। और आखज़ ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पितरों के संग दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस का बेटा हिज़कियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

१७ सत्रहवां पर्ब्ब।

यहूदाह के राजा आखज़ के बारहवें बरस एला का बेटा हूसीअ समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने नव बरस राज्य किया॥ २। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई परंतु इसराएल के राजाओं के समान नहीं जो उस्से आगे थे॥ ३। अस्सूर का राजा शलमनाज़र उस के बिरोध में चढ़ आया और हूसीअ उस का सेवक होके उसे भेंट देने लगा॥ ४। और अस्सूर के राजा ने हूसीअ में बैर की युक्ति पाई क्योंकि उस ने मिस्र के राजा पास दूतों को भेजा था और जैसा वुह बरस बरस करता था अस्सूर के राजा के पास भेंट न भेजी इस लिये अस्सूर के राजा ने उसे बन्धन में किया और बन्दीगृह में डाला॥ ५। तब अस्सूर का राजा सारे देश पर चढ़ गया और समरून पर आके तीन बरस उसे घेरे रहा॥ ६। और हूसीअ के नवें बरस में अस्सूर के राजा ने समरून को ले लिया और इसराएलियों को अस्सूर में ले गया और उन्हें खलह और ख़बूर में जौज़ान नदी के पास और मादियों की बस्ती में बसाया॥ ७। क्योंकि इसराएल के सन्तान ने परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरोध में जिस ने उन्हें मिस्र की भूमि में से निकाल के मिस्र के राजा फ़िरऊन के हाथ से मुक्ति दिई पाप किया अरु और देवों से डरता था॥ ८। और अन्यदेशियों की बिधिन पर [जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से दूर किया था] और इसराएली राजाओं के जो उन्हों ने किईं थीं चलता था॥ ९। और इसराएल के सन्तानों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरुद्ध छिप छिप के ठीक न किया और उन्हों ने अपनी सारी बस्तियों में पहरू के गर्गज से लेके बाड़े के नगर लों ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये॥ १०। और हर एक पहाड़ पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे मूर्त्तें स्थापित किईं॥ ११। और कुंज लगाये और अन्यदेशियों के समान जिन्हें परमेश्वर ने उन के आगे से दूर किया सारे ऊंचे स्थान में धूप जलाये और दुष्टता करके परमेश्वर को रिस दिलाया॥ १२। क्योंकि उन्हों ने मूर्त्ति पूजी जिन के बिषय में परमेश्वर ने उन्हें कहा था कि तुम यह काम मत कीजियो॥ १३। तद भी परमेश्वर ने सारे

भविष्यद्वक्तों और सारे दर्शियों के द्वारा से इसराएल के सन्तान पर और यहूदाह के सन्तान पर यह कहके साक्षी दिई कि अपने बुरे मार्गों से फिरो और मेरी आज्ञाओं और मेरी बिधिन को सारी व्यवस्था के समान जो मैं ने तुम्हारे पितरों को आज्ञा किई और जिन्हें मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से तुम पास भेजा पालन करो॥ १४। तथापि उन्हों ने न माना परन्तु अपने पितरों के गले के समान जो परमेश्वर अपने ईश्वर पर बिश्वास न लाये थे अपने गले को कठोर किया॥ १५। और उन्हों ने उस की बिधिन को और उस की बाचा को जो उस ने उन के पितरों से किई और उस की साक्षियों को जो उस ने उन के विरोध में साक्षी दिई थी त्याग किया और व्यर्थ का पीछा किया और व्यर्थ होके अपने चारों ओर के अन्यदेशियों का पीछा किया जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें चिता रक्खा था कि तुम उन के समान मत कीजियो॥ १६। और उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को छोड़ दिया और अपने लिये ढाली हुई मूर्त्ति और दो बछियां बनाईं और एक कुंज लगाया और आकाश की सारी सेना की पूजा किई और बअल की सेवा करते थे॥ १७। और उन्हों ने अपने बेटों को और अपनी बेटियों को आग में से चलाया और आगम कहने और टोना करने लगे परमेश्वर की दृष्टि में उसे रिसियाने के लिये और बुराई करने के लिये आप को बेचा॥ १८। इस लिये परमेश्वर इसराएल पर निपट रिसाया और उन्हें अपनी दृष्टि से अलग किया और केवल यहूदाह की गोष्ठी को छोड़ कोई न छूटा॥ १९। और यहूदाह के सन्तान ने भी परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन न किया परन्तु इसराएलियों की किई हुई बिधिन पर चलते थे॥ २०। तब परमेश्वर ने इसराएल के सारे बंश को त्याग किया और उन्हें कष्ट दिया और उन्हें लुटेरों के हाथ में सौंप दिया यहां लों कि उस ने उन्हें अपनी दृष्टि से दूर किया॥ २१। क्योंकि उस ने इसराएल को दाऊद के घराने से निकाल दिया और उन्हों ने नबात के बेटे यरुबिआम को राजा किया और यरुबिआम ने इसराएल को परमेश्वर का पीछा करने से दूर किया और उन से बड़ा पाप करवाया॥ २२। क्योंकि इसराएल के सन्तान यरुबिआम के किये हुए

सारे पापों पर चलते थे और वे उन से अलग न ऊए॥ २३। यहां लों कि परमेश्वर ने इसराएल को अपनी दृष्टि से दूर किया जैसा उस ने अपने सारे दास भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा था सो इसराएल अपने देश से निकाले जाके आज लों असूर में पऊंचाये गये॥ २४। और असूर के राजा ने बाबुल से और कूत से और अैया से और हमात से और सिफ्रवाइम से लोगों को लाके समरून की बस्तियों में इसराएल के सन्तान की सन्ती बसाया और वे समरून के अधिकारी ऊए और उस के नगरों में बसे॥ २५। और जब वे आरंभ में वहां जा बसे तो परमेश्वर से न डरते थे इस लिये परमेश्वर ने उन में सिंहों को भेजा और वे उन्हें फाड़ने लगे॥ २६। इस लिये यह कहके वे असूर के राजा से बोले कि जिन जातिगणों को तू ने उठा लिया है और समरून की बस्तियों में बसाया है इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं जानते इस लिये उस ने उन में सिंह भेजे और देखो वे इस कारण उन्हें बधन करते हैं कि वे इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं जानते हैं॥ २७। तब असूर के राजा ने यह आज्ञा किई कि उन याजकों में से जिन्हें तुम वहां से यहां ले आये हो एक को वहां ले जाओ कि वुह जाके वहां रहा करे और उस देश के ईश्वर का व्यवहार उन्हें सिखावे॥ २८। तब उन याजकों में से जिन्हें वे समरून से ले गये थे एक आया और बैतएल में रहा और उन्हें परमेश्वर का डर सिखाया॥ २९। परन्तु हर एक जाति ने अपने अपने देव बनाये और उन्हें ऊंचे स्थानों के घरों में जो समरूनियों ने बनाये थे रक्खा हर एक जाति अपने अपने रहने के नगरों में॥ ३०। और बाबुल के मनुष्यों ने सुक्कातबिनात बनाया और कूत के मनुष्यों ने नेरगल बनाया और हमात के मनुष्यों ने असीमा बनाया॥ ३१। और अवियों ने निबहज़ और तरताक़ बनाये और सिफ़ार्वियों ने अपने बालकों को अद्रम्मलिक और अनम्मलिक सिफ़ार्वियों के देवों के लिये आग में जला दिया॥ ३२। सो वे परमेश्वर से डरे और उन्हों ने अपने लिये सब में से ले के ऊंचे स्थानों का याजक बनाया जो उन के लिये ऊंचे स्थानों के घरों में बलिदान चढ़ाते थे॥ ३३। और वे परमेश्वर से डरते थे और उन जातिगणों के समान जिन्हें वे वहां से ले गये थे अपने ही देवों की सेवा

करते थे॥ ३४। आज के दिन लों वे अगली बिधि और व्यवहार पर चलते हैं क्योंकि वे परमेश्वर से नहीं डरते और उन की बिधिन पर और व्यवस्था और आज्ञा पर जो परमेश्वर ने यअक़ूब के सन्तान के लिये आज्ञा किई जिस का नाम उस ने इसराएल रक्खा नहीं चलते॥ ३५। जिन्हें परमेश्वर ने एक बाचा बांधी और यह कहके उन्हें चिताया कि तुम और देवों से मत डरो और उन के आगे प्रणाम मत करो और उन की सेवा मत करो उन के लिये बलि मत चढ़ाओ॥ ३६। परंतु तुम परमेश्वर से जिस ने अपनी बड़ी सामर्थ्य से और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया डरियो तुम उसी की सेवा कीजियो और उस के लिये बलि चढ़ाइयो॥ ३७। और उन व्यवहारों और बिधिन और व्यवस्थों और आज्ञा को जो उस ने तुम्हारे लिये लिखवाये तुम सदा लों मानियो और और देवों से मत डरियो॥ ३८। और उस बाचा को जो मैं ने तुम से किई है मत भूलियो और और देवों से मत डरियो॥ ३९। परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और वही तुम्हारे सारे बैरियों के हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा॥ ४०। तथापि उन्हों ने न सुना परंतु अपने अगिले व्यवहारों पर चलते थे॥ ४१। सो इन जातिगणों ने परमेश्वर का भय न रक्खा और अपनी खोदी हुई मूर्त्तों की सेवा किई और उन के लड़के और उन के लड़कों के लड़के भी अपने पितरों के समान आज के दिन लों करते हैं।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

हूसीअ के राज्य के तीसरे बरस यहूदाह के राजा आख़ज़ का बेटा हिज़क़ियाह राजा हुआ॥ २। और जब कि वह राजा हुआ तब पचीस बरस का था उस ने उन्तीस बरस यरूसलम में राज्य किया उस की माता का नाम अबी था जो ज़करियाह की बेटी थी॥ ३। उस ने अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर की दृष्टि में सब बात में भलाई किई॥ ४। उस ने ऊंचे स्थानों को ढा दिया और मूर्त्तों को तोड़ा और कुंजों को काट डाला और उस पीतल के सांप को जो मूसा ने बनाया था तोड़ के टुकड़ा टुकड़ा किया क्योंकि इसराएल के सन्तान उस समय लों उस के

आगे धूप जलाते थे और उस ने उस का नाम नेहोस्थान रक्खा॥ ५। और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर पर भरोसा रखता था यहां लों कि उस के पीछे यहूदाह के सब राजाओं में ऐसा कभी न ज़आ और न उस्से आगे कोई ज़आ था॥ ६॥ क्योंकि वुह परमेश्वर से लवलीन रहा और उस के पीछे से अलग न ज़आ परंतु उस ने उन आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से किई थी पालन किया॥ ७। और परमेश्वर उस के साथ था वुह जहां कहीं जाता था भाग्यमान होता था और असूर के राजा के बिरोध में फिर गया और उस की सेवा न किई॥ ८। उस ने फिलिस्तियों को अज्ज: लों और उस के सिवानों के अन्त लों रखवालों के गर्गज से ले के घेरित नगर लों मारा॥ ९। और हिज़क़ियाह राजा के चौथे बरस जो इसराएल के राजा आला के बेटे हूसीअ के सातवें बरस था यों ज़आ कि असूर के राजा सलमनज़र के बिरोध पर चढ़ आया और उसे घेर लिया॥ १०। और तीसरे बरस के अन्त में उन्हों ने उसे ले लिया और हिज़क़ियाह के छठवें बरस जो इसराएल के राजा हूसीअ का नवां बरस है समरून लिया गया॥ ११। और असूर का राजा इसराएलियों को असूर को ले गया और उन्हें खलह में और खबूर में जो जौज़ान की नदी के लग है और मादियों के नगरों में रक्खा॥ १२। यह इस लिये ज़आ की उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बात न मानी परन्तु उस की बाचा को और उन सभों को जो परमेश्वर के दास मूसा ने कहा था टाल दिया न उस की सुनते थे न उस पर चलते थे॥ १३॥ और हिज़क़ियाह राजा के राज्य के चौदहवें बरस असूर के राजा ने सनहेरीब यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों पर चढ़ आके उन्हें ले लिया॥ १४॥ तब यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह ने असूर के राजा को जो लक़ीस में था कहला भेजा कि मुझ से अपराध ज़आ अब मुझ से फिर जाइये और जो कुछ तू धरेगा मैं उठाऊंगा और उस ने यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह पर तीन सौ तोड़ा चांदी और तीस तोड़े सोने ठहराये॥ १५। हिज़क़ियाह ने सारी चांदी जो परमेश्वर के मन्दिर में और राजा के घर के भंडारों में पाई गई उसे दिई॥ १६। उस समय हिज़क़ियाह ने परमेश्वर के मन्दिर

के द्वारों का और खंभों पर का सोना जो यहूदाह के राजा हिजकियाह ने उन पर मढ़ा था काट काट के असूर के राजा को दिया॥

१७। तब असूर के राजा ने तरतान को और रबसारीस को और रब्बसाकी को लकीस से भारी सेना सहित यरूसलम के बिरोध में भेजा और वे चढ़े और यरूसलम को आय और आके ऊपर कुंड के पनाले के लग जो धोबी के खेत के मार्ग में है खड़े ऊए॥ १८। और जब उन्हों ने राजा को बुलाया तब खिलकियाह का बेटा इलयकीम जो घराने पर था और शबना लेखक और आसफ का बेटा यूअख स्मारक उन पास आये॥ १९। तब रब्बसाकी ने उन्हें कहा कि तुम हिजकियाह से कहा कि महाराज असूर का राजा यों कहता है कि वुह क्या आसरा है जो तू रखता है॥ २०। तू होंठों की बात कहता है कि मुझ में परामर्श और युड्ड का पराक्रम है सो अब तू किस पर भरोसा रखता है कि मुझ से फिर जाता है॥ २१। अब देख तू उस मसले ऊए सेंठे के दंड पर अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है यदि कोई उस पर ओठंगे तो वुह उस के हाथ में गड़ जायगा और उसे बेधेगा सो मिस्र का राजा फिरऊन उन सब के लिये जो उस पर भरोसा रखते हैं ऐसा ही है॥ २२। परन्तु यदि तू मुझे कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है क्या वही नहीं जिस के ऊंचे स्थानों को और जिस की बेदियों को हिजकियाह ने अलग किया और यहूदाह और यरूसलम को कहा है कि तुम यरूसलम में इस बेदी के आगे सेवा करो॥ २३। अब असूर के राजा मेरे प्रभु को ओल दीजिये और मैं तुझे दो सहस्र घोड़े देऊंगा यदि तुझ में यह शक्ति हो कि तू चढ़वैयों को उन पर बैठावे॥ २४। सो किस रीति से तू मेरे प्रभु के सेवकों में से सब से छोटे प्रधान का मुंह फेरेगा और मिस्र पर रथों के और घोड़चढ़ों के लिये भरोसा रक्खे॥ २५। अब क्या मैं इस स्थान के नाश करने को बिना परमेश्वर के आया हूं परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस देश पर चढ़ जा और उसे नाश कर॥ २६। तब खिलकियाह का बेटा इलयकीम और शबना और यूअख ने रब्बसाकी से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने दासों से अरामी भाषा में कहिये क्योंकि उसे हम समझते हैं और यहूदियों की भाषा में हम से

भीत पर के लोगों के कान में न कहिये॥ २७। परन्तु रब्बसाकी ने उन्हें कहा कि मेरे प्रभु ने मुझे तेरे प्रभु के अथवा तुझ पास ये बातें कहने को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों पास जो भीति पर बैठे हैं नहीं भेजा जिसतें वे तुम्हारे साथ अपना ही मल मूत्र खायें पीयें॥ २८। तब रब्बसाकी खड़ा होके यहूदियों की भाषा में ललकार के बोला और कहा कि असूर के राजा महाराज का बचन सुनो॥ २९। राजा यह कहता है कि हिज़किय़ाह तुम्हें छल न देवे क्योंकि वुह मेरे हाथ से तुम्हें छुड़ा नहीं सक्ता॥ ३०। और हिज़किय़ाह तुम्हें यह कहके परमेश्वर का भरोसा न दिलावे कि परमेश्वर निश्चय हमें छुड़ावेगा और यह नगर असूर के राजा के हाथ में सौंपा न जायगा॥ ३१। हिज़किय़ाह की मत सुनो क्योंकि असूर का राजा यों कहता है कि मुझे भेंट देके मुझ पास निकल आओ और तुम्में से हर एक अपने अपने दाख में से और अपने अपने गूलर पेड़ में से खावे और अपने अपने कुंड का पानी पीये॥ ३२। जब लों मैं आऊं और तुम्हें यहां से एक देश में जो तुम्हारे देश की नाईं है ले जाऊं वुह अन्न और दाखरस का देश रोटी और दाख की बारी का देश जलपाई के तेल और मधु का देश है जिसतें तुम जीओ और न मरो और हिज़किय़ाह की मत सुनो जब वुह यह कहके तुम्हारा बोध करता है कि परमेश्वर हमें बचावेगा॥ ३३। भला जातिगणों के देवों में से किसी ने भी अपने देश को असूर के राजा के हाथ से छुड़ाया है॥ ३४। हमत और अरफाद के देव कहां हैं और सिफ़र्वाइम हेना और ऐवा के देव कहां क्या उन्हों ने समरून को मेरे हाथ से छुड़ाया है॥ ३५। देशों के सारे देवों में वे कौन जिन्हों ने अपने देश मेरे हाथ से छुड़ाये जो परमेश्वर यरूसलम को मेरे हाथ से छुड़ावे परन्तु लोग चुपके रहे और उस के उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा की आज्ञा यों थी कि उसे उत्तर मत दीजियो तब खिलक़याह का बेटा इलयक़ीम जो घराने पर था और शबना लेखक और आसफ़ स्मारक का बेटा यूआख़ अपने कपड़े फाड़े हुए हिज़किय़ाह के पास आये और रब्बसाकी की बातें उस्से कहीं॥

१९ उन्नोसवां पर्व्व॥

और ऐसा ज़आ कि हिज़क़ियाह राजा ने यह सुन के अपने कपड़े फाड़े और टाट बस्त्र ओढ़ के परमेश्वर के मन्दिर में गया॥ २। तब उस ने इल्नयक़ीम को जो घराने पर था और शबना लेखक और याजकों के प्राचीनों को टाट बस्त्र ओढ़े ज़ए अमूस के बेटे यशअियाह भविष्यद्वक्ता पास भेजा॥ ३। और उन्हों ने उसे कहा कि हिज़क़ियाह यों कहता है कि आज दुःख और दपट और खिझाव का दिन है क्योंकि बालक उत्पन्न होने पर हैं और जन्ने की सामर्थ्य नहीं॥ ४। क्या जाने परमेश्वर तेरा ईश्वर रब्बसाक़ी की सब बातें सुनेगा जिसे उस के स्वामी असूर के राजा ने जीवते ईश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जिन बातों को परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुना है उन पर दोष देवे इस लिये बचे ज़ओं के कारण प्रार्थना कर॥ ५। सो हिज़क़ियाह के सेवक यशअियाह पास आये॥ ६। तब यशअियाह ने उन्हें कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो कि परमेश्वर यह कहता है कि उन बातों से जिन्हें असूर के राजा के सेवकों ने मेरे विषय में पाषंड कहा है मत डर॥ ७। देख मैं उन पर एक झोंका भेजूंगा और वुह एक कोलाहल सुन के अपने ही देश को फिर जायगा और मैं उसे उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा॥ ८। सो रब्बसाक़ी फिर गया और उस ने असूर के राजा को लिबनः से लड़ते पाया क्योंकि उस ने सुना था कि वुह लकीस से चला गया॥ ९। जब उस ने यह कहते सुना कि देखिये कूश के राजा तिरहाक़: ने तुझ पर चढ़ाई किई उस ने दूतों के द्वारा से हिज़क़ियाह को फेर कहला भेजा॥ १०। यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह से यों कहियो कि तेरा ईश्वर जिस पर तू भरोसा रखता है यह कहके तुझे छल न देवे कि यरूसलम असूर के राजा के हाथ में सोंपा न जायगा॥ ११। देख तू ने सुना है कि असूर के राजाओं ने सारे देशों को सर्वथा नाश करके क्या किया और क्या तू बच जायगा॥ १२। क्या उन जातिगणों के देव जिन्हें मेरे पितरों ने नाश किया है उन्हें छुड़ा सके अर्थात् जौज़ान और हरान और रसफ़ और अदन के सन्तान जो तिलासर में थे॥ १३। हमात के

राजा और अरफाद के राजा और सिफ्रवाइम के नगर का राजा हेना और अयवा के कहां हैं॥ १४। सो हिज़किायाह ने दूतों के हाथों से पत्री पाई और पढ़ के परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गया और परमेश्वर के आगे फैलाई॥ १५। और हिज़कियाह ने परमेश्वर के आगे प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जिस का सिंहासन करोबीम पर है केवल तू ही सारी पृथिवी के राज्यों का ईश्वर है तू ही ने स्वर्ग और पृथिवी को सिर्जा है॥ १६। हे ईश्वर कान धर के सुन हे परमेश्वर अपनी आंखें खाल और देख और सनहेरीब की बातें का जा उस ने जीवते ईश्वर की निन्दा के लिये कहला भेजी है सुन॥ १७। सच है हे परमेश्वर कि असूर के राजाओं ने जातिगणों को और उन के देशों को नाश किया॥ १८। और उन के देवों को आग में डाला क्योंकि वे देव न थे परन्तु मनुष्यों के हाथों के कार्य लकड़ी और पत्थर इसी लिये उन्हों ने उन्हें नाश किया॥ १९। और अब हे परमेश्वर हमारे ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं तू हमें उस के हाथ से बचा ले जिसतें पृथिवी के सारे राज्य जानें कि परमेश्वर ईश्वर केवल तू है॥

२०। तब अमूस के बेटे यसअियाह ने हिज़कियाह को कहला भेजा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जो कुछ तू ने असूर के राजा सनहेरीब के बिरोध में प्रार्थना किई है मैं ने सुनी है॥ २१। यह वुह बचन है जो परमेश्वर ने उस के बिषय में कहा है कि सैहून की कुंआरी बेटी ने तेरी निन्दा किई और तुझ पर हंसी और यरूसलम की बेटी ने तुझ पर सिर धुना॥ २२। तू ने किसकी निन्दा किई और पाषंड कहा है और तू ने किस पर शब्द उठाया और आंखें चढ़ा के ऊपर किई अर्थात् इसराएल के पवित्रमय के बिरोध में॥ २३। तू ने अपने दूतों के द्वारा से परमेश्वर की निन्दा करके कहा है कि मैं अपने रथों की बहुताई से पहाड़ों की ऊंचाई पर और लुबनान की अलंगों पर चढ़ा और वहां के ऊंचे ऊंचे आरज पेड़ को और चुने हुए देवदारू पेड़ को काट डालूंगा और मैं उस के सिवानों के निवासों में और उस के बन के और बारी में पैठूंगा॥ २४। मैं ने खोदा है और ऊपरी पानी पीया है और मैं ने अपने पांव के तलवों से मिस्र की सारी नदियों को सुखा दिया है

२५। क्या तू ने नहीं सुना कि मैं ने अगिले समय में क्या किया है और अगिले समय से क्या क्या बनाया अब मैं ने पूरा किया है कि तू घेरित नगरों को उजाड़ और ढेर ढेर करे॥ २६। सो वहां के निवासी दुर्बल थे और बिस्मित होके घबरा गये वे तो खेत की घास और हरियाली सागपात छतों पर की घास हैं जो बढ़ने से आगे झौंस जाती है॥ २७। परन्तु मैं तेरा निवास और बाहर भीतर आना जाना और मुझ पर तेरा झुंझलाना जानता हूं॥ २८। मुझ पर तेरा झुंझलाना और तेरा ऊधम मेरे कान लों पहुंचा है इस लिये मैं अपना कांटा तेरी नाक में मारूंगा और अपनी ढाठी तेरे मुंह में देऊंगा और जिस मार्ग से तू आया है मैं तुझे उस ही से फेरूंगा॥ २९। अब तेरे लिये यही पता है कि तुम अब की बरस वही वस्तें खाओगे जो आप से आप उगती हैं और दूसरे बरस जो उसी से उगती हैं और तीसरे बरस बोओ और लओ और दाख की बारी लगाओ और उन के फल खाओ॥ ३०। और यहूदाह के घराने से जो बच निकला है फिर के जड़ पकड़ेगा और ऊपर फल लावेगा॥ ३१। क्योंकि बचा हुआ यरूसलम से और बच निकले सैहून के पहाड़ से निकलेंगे परमेश्वर का ज्वलन ऐसा करेगा॥ ३२। इस लिये परमेश्वर असूर के राजा के बिषय में यह कहता है कि वुह इस नगर में न आवेगा न यहां बाण चलावेगा और न ढाल पकड़ के उस के आगे आवेगा न इस के बिरोध में मूरचा बांधेगा॥ ३३। परमेश्वर कहता है कि जिस मार्ग से वुह आया उसी से फिर जायगा और इस नगर में न आवेगा॥ ३४। क्योंकि मैं अपने ही लिये और अपने सेवक दाऊद के लिये इस नगर का आड़ करके उसे बचाऊंगा॥ ३५। और ऐसा हुआ कि परमेश्वर के दूत ने जाके असूर की छावनी में उस रात एक लाख पचासी सहस्र मनुष्य को घात किया और तड़के उठते ही क्या देखते हैं कि सब लोथ पड़ी हैं॥ ३६। सो असूर का राजा सनहेरीब चला और फिर गया और नीनवः में जा रहा॥ ३७। और यों हुआ कि ज्यों वुह अपने देव निसरूक के मन्दिर में पूजा करता था उस के बेटे अद्रम्मलिक और शरेज़र ने उसे तलवार से मार डाला और वे बचके अरारात के देश को गये और उस का बेटा असरहद्दून उस की सन्ती राज्य पर बैठा।

२० बीसवां पर्ब्ब ॥

उन्हीं दिनों में हिजकियाह को मृत्यु का रोग हुआ तब अमूस का बेटा यसअियाह उस पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तू अपने घर का ठिकाना कर क्योंकि तू मर जायगा और न जीयेगा॥ २। तब हिजकियाह ने अपना मुंह भीत की ओर फेर के परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा॥ ३। कि हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं कि दया करके अब स्मरण करिये कि मैं क्योंकर सचाई और सिद्ध मन से तेरे आगे चला किया और तेरी दृष्टि में मैं ने भलाई किई और हिजकियाह बिलख बिलख के रोया॥ ४। और यों हुआ कि यसअियाह के आंगन के मध्य पहुंचने से आगे यह कहके परमेश्वर का बचन उस पर पहुंचा॥ ५। कि फिर जा और मेरे लोगों के प्रधान हिजकियाह को कह कि परमेश्वर तेरे पिता दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है और तेरे आंसुओं को देखा है देख मैं तुझे तीसरे दिन चंगा करूंगा और तू परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ जायगा॥ ६। और मैं तेरी बय पन्द्रह बरस बढ़ाऊंगा और तुझे और इस नगर को असूर के राजा के हाथ से छुड़ाऊंगा और अपने लिये और अपने दास दाऊद के लिये इस नगर का आड़ करूंगा॥ ७। तब यसअियाह ने कहा कि गूलर की एक टिकिया ले सो उन्हों ने लिई और फोड़े पर रक्खी और वुह चंगा हो गया॥ ८। तब हिजकियाह ने यसअियाह से कहा कि उस का लक्षण क्या कि परमेश्वर मुझे चंगा करेगा और मैं तीसरे दिन परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ जाऊंगा॥ ९। यसअियाह बोला कि परमेश्वर से तू यह लक्षण पावेगा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो करेगा कि छाया दस क्रम आगे बढ़ अथवा दस क्रम पीछे हटे॥ १०। हिजकियाह ने उत्तर दिया कि छाया का दस क्रम ढलना सहज है नहीं परन्तु छाया दस क्रम पीछे हटे॥ ११। तब यसअियाह भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और उस ने छाया को आखज की धूप घड़ी में से जो ढल गई थी दस क्रम पीछे हटाया॥ १२। उस समय बलदान के बेटे बाबुल के राजा बरेदाक बलदान ने भेंट

और पत्री हिज़किय़ाह को भेजी क्योंकि उस ने सुना था कि हिज़किय़ाह रोगी था॥ १३। सो हिज़किय़ाह ने उन की बात सुनी और अपने घर की सारी बड़ मूल्य बस्तें चांदी और सोना और सुगन्ध और सुगन्ध तेल और शस्त्र अपने सारे स्थान और सब जो उसके भंडारों में पाये गये उन्हें दिखाये उस के घर में और उस के सारे राज्य में ऐसा कोई बस्तु न थी जो हिज़किय़ाह ने उन्हें न दिखलाई॥ १४। तब यसअ्याह भविष्यद्वक्ता हिज़किय़ाह राजा पास आया और उसे कहा कि इन लोगों ने क्या कहा और ये कहां से तुझ पास आये हिज़किय़ाह ने कहा कि ये बाबुल के दूर देश से आये हैं॥ १५। फिर उस ने पूछा कि उन्हों ने तेरे घर में क्या देखा है हिज़किय़ाह बोला कि मेरे घर का सब कुछ उन्हों ने देखा है मेरे भंडार में एसी कोई बस्तु न रही जो मैं ने उन्हें न दिखलाई॥ १६। तब यसअ्याह ने हिज़किय़ाह से कहा कि परमेश्वर का बचन सुन॥ १७। देख वे दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में हैं और जो कुछ कि तेरे पितरों ने आज लों बटोर रक्खा है बाबुल को पहुंचाये जायेंगे और परमेश्वर कहता है कि कुछ न छोड़ा जायगा॥ १८। और तेरे बेटों में से जो तुझ से उत्पन्न होंगे और तुझ से जन्मेंगे उन्हें वे ले जायेंगे और बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक होंगे॥ १९। तब हिज़किय़ाह ने यसअ्याह से कहा कि परमेश्वर का बचन जो तू ने कहा है अच्छा है फिर उस ने कहा कि कुशल और सचाई मेरे दिनों में होंगी॥ २०। हिज़किय़ाह की रही हुई क्रिया और उस का सारा पराक्रम और किस रीति से उस ने एक कुंड और एक पनाला बनाया और नगर में पानी लाया सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ २१। तब हिज़किय़ाह ने अपने पितरों में शयन किया और उस का बेटा मुनस्सी उस की सन्ती राज्य पर बैठा।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

जब मुनस्सी राज्य करने लगा तब वुह बारह बरस का था उस ने पचपन बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम हिफ़्ज़िबा था॥ २। और उस ने अन्यदेशियों के घिनितों के समान

जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से दूर किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई ॥ ३ । क्योंकि उस ने उन स्थानों को जिन्हें उस के पिता हिज़किय़ाह ने ढाया था फिर बनाया और उस ने बअल के लिये बेदियां स्थापित किईं और एक कुंज लगाया जैसा कि इसराएल के राजा अखिअब ने किया था और स्वर्ग की सारी सेना की पूजा करके उन की सेवा किई ॥ ४ । और उस ने परमेश्वर के उस मन्दिर में जिस के बिषय में परमेश्वर ने कहा था कि मैं यरूसलम में अपना नाम रक्खूंगा बेदी बनाई ॥ ५ । और उस ने परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये बेदियां बनाईं ॥ ६ । और उस ने अपने बेटे को आग में से चलाया और मुहूर्त्तों को मानता था और टोना करता था और भूतहों और ओझों से व्यवहार रखता था और परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही दुष्टता करके उसे रिस दिलाया ॥ ७ । और उस ने कुंज की एक खोदी हुई मूर्त्ति बना के परमेश्वर के मन्दिर में स्थापित किई जिस के बिषय में परमेश्वर ने दाऊद और उस के बेटे सुलेमान से कहा था कि इस मन्दिर में और यरूसलम में जिसे मैं ने इसराएल की सारी गोष्ठियों में से चुन लिया है मैं अपना नाम सदा लों रक्खूंगा ॥ ८ । और मैं इसराएल के पांव को इस भूमि से जो मैं ने उन के पितरों को दिई है कभी न डोलाऊंगा केवल यदि वे मेरी सारी आज्ञाओं के समान चलें और सारी व्यवस्था के समान जो मेरे सेवक मूसा ने उन्हें दिई मानें ॥ ९ । पर उन्हों ने न माना और मुनस्सी ने उन्हें फुसलाके उन जातिगणों से जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान के आगे से नष्ट किया अधिक बुराई करवाई ॥ १० । सो परमेश्वर अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहके बोला ॥ ११ । इस कारण कि यहूदाह के राजा मुनस्सी ने ये सारे घिनित काम किये और अमूरियों से जो उस्से आगे थे अधिक बुराई किई और यहूदाह से अपनी मूरतों के कारण पाप करवाये ॥ १२ । इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं यरूसलम पर और यहूदाह पर ऐसी बिपत्ति लाता हूं कि उस का समाचार जिस के कान लों पहुंचेगा उस के दोनों कान झंझना उठेंगे ॥ १३ । और मैं यरूसलम पर समरून की

डोरी और अखिअब के घराने का साहुल डालूंगा और मैं यरूसलम को ऐसा पोंछूंगा जैसे कोई बासन को पोंछता है और औंधा देता है॥ १४। और उन के अधिकार के बचे हुओं को अलग करूंगा और उन्हें उन के बैरियों के हाथ में सौंपूंगा और वे अपने सारे बैरियों के लिये अहेर और लूट होंगे॥ १५। क्योंकि उन्हों ने मेरी दृष्टि में बुराई किई और जिस दिन से उन के पिता मिस्र से निकले उन्हों ने आज लों मुझे रिस दिलाई॥ १६। इस से अधिक मुनस्सी ने बहुत निर्दोष लोहू बहाया यहां लों कि उस ने यरूसलम को एक सिरे से दूसरे सिरे लों भर दिया यह उस पाप से अधिक है जो परमेश्वर की दृष्टि में यहूदाह से बुराई करवाई॥ १७। अब मुनस्सी की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया और यह कि उस ने कैसे पाप किये से यहूदाह के राजाओं के समयों की पुस्तक में लिखा नहीं है॥ १८। और मुनस्सी ने अपने पितरों में शयन किया और अपने घर की बाटिका में उज्ज़ा की बाटिका में गाड़ा गया और उस का बेटा अमून उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

१९। और जब अमून राज्य करने लगा तब बाईस बरस का था उस ने यरूसलम में दो बरस राज्य किया उस की माता का नाम मुसल्लिमत था जो युतब: के हरूस की बेटी थी॥ २०। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में अपने पिता मुनस्सी के समान बुराई किई॥ २१। और वुह अपने पिता की सारी चाल पर चला किया और अपने पिता की मूर्त्तों की प्रार्थना करके उन की पूजा किई॥ २२। और उस ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को त्यागा और परमेश्वर के मार्ग पर न चला॥ २३। और अमून के सेवकों ने उस के बिरोध में युक्ति बांध के राजा को उसी के घर में घात किया॥ २४। और देश के लोगों ने उन सब को घात किया जिन्हों ने अमून राजा के बिरुद्ध युक्ति बांधी और देश के लोगों ने उस के बेटे यूसियाह को उस के स्थान पर राजा किया॥ २५। और अमून की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने किया सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं है॥ २६। और वुह अपनी समाधि में उज्ज़ा की बाटिका में गाड़ा गया और उस का बेटा यूसियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ॥

जब यूसियाह राज्य करने लगा तो आठ बरस का था उस ने एकतीस बरस यरूसलम में राज्य किया उस की माता का नाम यदीदा था जो बसकत के अदायाह की बेटी थी ॥ २। उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और अपने पिता दाऊद की सारी चालों पर चलता था और दहिनी अथवा बाईं ओर न मुड़ा ॥ ३। यूसियाह के अठारहवें बरस यों हुआ कि राजा ने मुसल्लम के बेटे असलियाह के बेटे साफ़न लेखक को परमेश्वर के मन्दिर में कहला भेजा ॥ ४। कि तू प्रधान याजक खिलकियाह पास जा कि वुह परमेश्वर के मन्दिर की चांदी का लेखा करे जो द्वारपालों ने लोगों से एकट्ठा किया ॥ ५। और वे उन्हें कार्य्यकारियों के हाथ में सौंप जो परमेश्वर के मंदिर के करोड़े हैं और वे उन्हें परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्यकारियों को देवें कि वे मन्दिर के दरारों को सुधारें ॥ ६। अर्थात् बढ़ैयों को और थवैयों को और पथरियों को और लट्ठों के और गढ़े हुए पत्थर मोल लेने के लिये जिसतें घर सुधारें ॥ ७। तिस पर भी रोकड़ का लेखा जो उन के हाथ में दिया गया था उन से न लिया जाता था इस लिये कि वे धर्म्म से व्यवहार करते थे ॥

८। और प्रधान याजक खिलकियाह ने साफ़न लेखक को कहा कि मैं ने परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है और खिलकियाह ने वुह पुस्तक साफ़न को दिई और उस ने पढ़ी ॥ ९। और साफ़न लेखक राजा पास आया और राजा को संदेश पहुंचाया कि तेरे सेवकों ने वुह रोकड़ जो ईश्वर के मन्दिर में पाया गया पिघलाया है और कार्य्यकारियों के हाथ सौंपा है जो परमेश्वर के घर के करोड़े हैं ॥ १०। अब साफ़न लेखक ने राजा से कहा कि खिलकियाह याजक ने मुझे एक पुस्तक दिई है और साफ़न ने उसे राजा के आगे पढ़ी ॥ ११। और राजा ने ज्यों उस पुस्तक के अभिप्राय को सुना त्यों अपने कपड़े फाड़े ॥ १२। और खिलकियाह याजक और साफ़न के बेटे अखीक़ाम और मीका के बेटे अखबूर और साफ़न लेखक और राजा के सेवक असायाह को कहा ॥

१३। तुम जाओ मेरे और लोगों के और सारे यहूदाह के लिये परमेश्वर से इस पुस्तक के बचन के विषय में जो पाया गया है पूछो क्योंकि परमेश्वर का कोप हम पर निपट भड़का है इस कारण कि उन सभों के समान जो हमारे विषय में लिखा है हमारे पितरों ने इस पुस्तक के बचन को पालन करने को नहीं सुना है॥ १४। और खिलकियाह याजक और अखीकाम और अखबूर और साफन और असायाह हुलदा भविष्यद्वक्तिनी पास गये जो हरहास के बेटे तिकवः के बेटे सल्लूम बस्त्रों के रखवैये की पत्नी थी [अब वुह यरूसलम में एक दूसरे स्थान में रहती थी] और उन्हों ने उससे बात चीत किई॥ १५। उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम उस पुरुष से जिस ने तुम्हें मुझ पास भेजा है कहो॥ १६। कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस स्थान पर और उस के निवासियों पर उस पुस्तक की सारी बात जो यहूदाह के राजा ने पढ़ी हैं अर्थात् बुराई लाऊंगा॥ १७। क्योंकि उन्हों ने मुझे त्यागा है अरु और देवों के लिये धूप जलाया है जिसतें अपने हाथों के सारे कामों से मुझे रिस दिलावें इस लिये मेरा कोप इस स्थान के बिरोध भड़केगा और बुझाया न जायगा॥ १८। परन्तु यहूदाह के राजा को जिस ने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को भेजा उसे यों कहियो कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जिन बचन को तू ने सुना है॥ १९। इस कारण कि तेरा मन कोमल था और परमेश्वर के आगे तू ने आप को नम्र किया है जब तू ने सुना जो मैं ने इस स्थान के और उस के निवासियों के बिरोध में कहा कि वे उजाड़ित और स्रापित होंगे और अपने कपड़े फाड़े हैं और मेरे आगे बिलाप किया परमेश्वर कहता है कि मैं ने भी सुना है॥ २०। इस लिये देख मैं तुझे तेरे पितरों के साथ बटोरूंगा और तू अपनी समाधि में कुशल से समेटा जायगा और सारी बुराई को जो मैं इस स्थान पर लाऊंगा तेरी आंख न देखेगी तब वे राजा पास फेर सन्देश लाये।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

तब राजा ने भेज के यहूदाह और यरूसलम के सारे प्राचीनों को अपने पास एकट्ठा किया॥ २। और राजा और यहूदाह के सारे लोग और यरूसलम के सारे निवासी और याजकों और भविष्यद्वक्ता और सारे लोग छोटे से बड़े लों परमेश्वर के मन्दिर को उस के संग चढ़ गये और बाचा की पुस्तक के बचन को जो परमेश्वर के मन्दिर में पाया गया था उस ने उन्हें पढ़ सुनाया॥ ३। परमेश्वर का पीछा करने को और उस की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और उस की बिधिन को और अपने सारे मन और सारे जीव से पालन करने को इस बाचा के बचन को जो इस पुस्तक में लिखा है राजा ने खंभे के लग खड़ा हो के परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और सारे लोग इस बाचा पर खड़े हुए। ४। फिर राजा ने प्रधान याजक खिलकियाह को और दूसरी पाती के याजकों को और द्वारपालों को आज्ञा किई कि परमेश्वर के मन्दिर में से सारे पात्र जो बअल के लिये और कुंज के और सारी स्वर्गीय सेनाओं के लिये बनाये गये थे बाहर निकलवाये और उस ने यरूसलम के बाहर किदरून के खेतों में उन्हें जला दिया और उन की राखों को बैतएल में पहुंचा दिया॥ ५। और उन देव पूजक याजकों को जिन्हें यहूदाह के राजाओं ने यहूदाह के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यरूसलम के चारों ओर के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था उन सब समेत जो बअल के और सूर्य्य के और चन्द्रमा के और नक्षत्रों के और स्वर्गीय सारी सेनाओं के लिये धूप जलाते थे रोक लिया॥ ६। और वुह उस अशतरूत को परमेश्वर के मन्दिर से निकाल के यरूसलम के बाहर किदरून के नाले पर लाया और उसे किदरून के नाले पर जला दिया और उसे लताड़ के बुकनी किया और उस बुकनी को लोगों के सन्तान की समाधि पर फेंक दिया॥ ७। और उस ने गांडुओं के घरों को जो परमेश्वर के घर से मिले हुए थे जिन में स्त्रियां कुंज के लिये घूंघट बनातियां थीं ढा दिया॥ ८। और उस ने यहूदाह के सारे नगरों के याजकों को एकट्ठे किया ऊंचे स्थानों को जहां याजकों ने सुगन्ध जलाया

था जिबअ् से बिअरसब: लों अशुद्ध किया और फाटकों के ऊंचे स्थानों को जो नगर के अध्यक्ष यहूसूअ् के फाटक की पैठ में थे जो नगर के फाटक की बांई ओर है ढा दिया॥ ९। तथापि ऊंचे स्थानों के याजक यरूसलम में परमेश्वर की बेदी के पास चढ़ न आये परंतु उन्हों ने अख़मीरी रोटी अपने भाइयों के साथ खाई थी॥ १०। और उस ने तुफ़त को जो हिन्नूम के सन्तान की तराई में है अशुद्ध किया जिसतें कोई अपने बेटा बेटी को आग में से मोलक को न पहुंचावे॥ ११। और उस ने उन घोड़ों को जो यहूदाह के राजाओं ने सूर्य्य को चढ़ाये थे परमेश्वर के मन्दिर की पैठ में से जो नतनमलिक प्रधान की कोठरी के लग जो आस पास में था दूर किया और सूर्य्य के रथ को भस्म किया॥ १२। और उन बेदियों को जो आख़ज की उपरौटी कोठरी पर थीं जिन्हें यहूदाह के राजाओं ने बनाया था उन बेदियों को जिन्हें मुनस्सी ने परमेश्वर के मन्दिर के दो आंगनों में बनाया था राजा ने उन्हें चूर करके दूर किया और उन की राख को क़िदरून नाले में फेंक दिया॥ १३। और जो जो ऊंचे स्थान यरूसलम के आगे जो सड़ाहट के पहाड़ की दहिनी ओर थे जिन्हें इसराएल के राजा सुलेमान ने सैदानियों के घिनित अश्तरूत के और मोअबियों के घिनित कमूस के और अम्मून के सन्तान के घिनित मिलकूम के लिये बनाया था राजा ने उन्हें अशुद्ध किया॥ १४। और मूर्त्तों को तोड़ डाला और अशतरूत को काट डाला और उन के स्थानों को मनुष्यों के हाड़ से भर दिया॥ १५। बैतएल की बेदी को और उस ऊंचे स्थान को जिन्हें इसराएल के पाप करवैया नबात के बेटे यरुबिआम ने बनाया था उस बेदी को और उस ऊंचे स्थान को यूसियाह ने ढा दिया और ऊंचे स्थान को जला के चूर करके रौंदा और अशतरूत को जला दिया॥ १६। और ज्यों यूसियाह फिरा तो उस ने पहाड़ पर की समाधिन को देखा और लोग भेज के उन में की हड्डियां निकलवाईं और बेदी पर जलाईं और परमेश्वर के बचन के समान जो ईश्वर के उस जन ने प्रचारा था जिस ने इन बातों को प्रचारा उस ने अशुद्ध किया फिर उस ने पूछा कि वुह पदवी क्या है जिसे मैं देखता हूं॥ १७। नगर के लोगों ने उसे कहा कि यह ईश्वर के उस जन की समाधि है जिस ने यहूदाह

से आके इन बातें को जो तू ने किया है बैतएल की बेदी के बिरोध में प्रचारा था॥ १८। तब उस ने कहा कि उसे रहने दे कोई उस की हड्डियों को न हटावे सो उन्हों ने उस की हड्डियां उस भविष्यद्वक्ता के साथ जो समरून से आया था रहने दिईं॥ १९। और सारे ऊंचे स्थानें के घरें को भी जो समरून के नगरें में थे जिन्हें इसराएल के राजाओं ने रिसिआने के लिये बनाये यूसियाह ने दूर किया और उन से वैसा ही किया जैसा उस ने बैतएल में किया था॥ २०। और ऊंचे स्थानें के सारे याजकों को जो बेदियों पर थे बधन किया और मनुष्यों का हाड़ उन पर जलाया और यरूसलम को फिरा॥ २१। और राजा ने यह कहके सारे लोगों को आज्ञा किई कि परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पारजाने का पर्ब्ब रखो जैसा इस बाचा की पुस्तक में लिखा है॥ २२। निश्चय उन न्यायियों के समय से लेके जो इसराएल का न्याय करते थे इसराएल के राजाओं के और यहूदाह के राजाओं के दिनें में ऐसा पार जाना पर्ब्ब किसी ने न रक्खा था॥ २३। परन्तु यूसियाह राजा के अठारहवें बरस यरूसलम में परमेश्वर के लिये यही पारजाना पर्ब्ब रक्खा गया॥ २४। और भूतें को और ओझाओं को मूर्त्तों को और पुतलें को और सारे घिनितें को जो यहूदाह के देश में और यरूसलम में देखे गये थे यूसियाह ने दूर किया जिसतें व्यवस्था की वे बातें जो उस पुस्तक में जिसे खिलकियाह याजक ने परमेश्वर के मन्दिर में पाया था लिखी थी पूरी करे॥ २५। और उस के समान अगले दिनें में ऐसा कोई राजा न हुआ जो अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी सारी सामर्थ्य से मूसा की सारी व्यवस्था के समान परमेश्वर की ओर फिरा और उस के पीछे कोई उस के समान न उठा॥ २६। तिस पर भी परमेश्वर अपने महा क्रोध से जो यहूदाह के सन्तान पर भड़काया था न फिरा उन सारे रिसें के कारण जिन से मुनस्सी ने उसे रिस दिलाया था॥ २७। और परमेश्वर ने कहा कि जैसा मैं ने इसराएल को अलग किया वैसा यहूदाह को भी अपनी दृष्टि में से अलग करूंगा और मैं इस यरूसलम नगर को जिसे मैं ने चुना है और जिस घर के विषय में मैं ने कहा कि मेरा नाम वहां होगा दूर करूंगा॥ २८। अब यूसियाह

की रही ऊई क्रिया और सब जो उस ने किया सो यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है॥ २९। उस के दिनों में मिस्र का राजा फिरऊन निकोह असूर के राजा के बिरोध में फुरात की नदी को चढ़ गया और यूसियाह राजा ने उस का साम्ना किया और उस ने उसे देख के मजिद्दो में घात किया॥ ३०। और उस के सेवक उसे रथ में डाल के मजिद्दो से यरूसलम में ले गये और उसे उसी की समाधि में गाड़ा और देश के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूआखज़ को लेके अभिषेक किया और उस के पिता की सन्ती उसे राजा किया॥ ३१। और जब यहूआखज़ राज्य करने लगा वुह तेईस बरस का था उस ने यरूसलम में तीन मास राज्य किया उस की माता का नाम हमूतल था जो लिबनः के यरमियाह की बेटी थी॥ ३२। और उस ने उन सब के समान जो उस के पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥ ३३। सो फिरऊन निकोह ने उसे हमात देश के रिबलः में बन्धन में डाला जिसतें वुह यरूसलम में राज्य न करे और देश पर सौ तोड़े चांदी और एक तोड़ा सोना कर ठहराया॥ ३४। और फिरऊन निकोह ने यूसियाह के बेटे इलयाक़ीम को उस के पिता यूसियाह की सन्ती राजा किया और उस का नाम यहूयक़ीन रक्खा और यहूआखज़ को ले गया और वुह मिस्र में जाके मर गया॥ ३५। और यहूयक़ीन ने चांदी और सोना फिरऊन को दिया और फिरऊन की आज्ञा के समान रोकड़ देने को उस ने देश पर कर लगाया और देश के लोगों के हर एक जन से उस के कर के समान चांदी सोना निचोड़ा जिसतें फिरऊन निकोह को देवे॥ ३६। यहूयक़ीन जब राज्य पर बैठा तब पचीस बरस का था और उस ने यरूसलम में ग्यारह बरस राज्य किया और उस की माता का नाम ज़बूदः था जो रूमः फ़िदायाह की बेटी थी॥ ३७। और उस ने उन सब के समान जो उस के पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई।

२४ चैाबीसवां पर्ब्ब ।

उस के दिनों में बाबुल का राजा नबूखुदनज़र चढ़ आया ओर यहूयकीन तीन बरस लों उस का सेवक रहा तब वुह उस के बिरोध में फिरा ॥ २। ओर परमेश्वर ने कसदियों की ओर अरामियों को ओर मोअबियों की ओर अम्मून के सन्तान की जथाओं को अपने बचन के समान जैसा उस ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा था यहूदाह के बिरोध में उसे नाश करने को भेजा ॥ ३। निश्चय परमेश्वर की आज्ञा के समान यह सब कुछ मुनस्सी के पापों के कारण जो उस ने किये यहूदाह पर पड़ा कि उन्हें अपनी दृष्टि से दूर करे ॥ ४। ओर निर्दोष लोहू के कारण भी जो उस ने बहाया क्योंकि उस ने यरूसलम को निर्दोष लोहू से भर दिया जिस की क्षमा परमेश्वर ने न चाही ॥ ५। अब यहूयकीन की रही हुई क्रिया ओर सब जो उस ने किया था सो यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं है ॥ ६। सो यहूयकीन ने अपने पितरों में शयन किया ओर उस का बेटा यहूयकीम उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥ ७। ओर मिस्र का राजा अपने देश से फेर बाहर न गया क्योंकि बाबुल के राजा ने मिस्र की नदी से लेके फ़रात की नदी लों मिस्र के राजा का सब कुछ ले लिया ॥ ८। यहूयकीन जब राज्य करने लगा तब अठारह बरस का था ओर यरूसलम में उस ने तीन मास राज्य किया ओर उस की माता का नाम नहूसता था जो यरूसलम इल्नतन की बेटी थी ॥ ९। ओर उन सब के समान जो उस के पिता ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में उस ने बुराई किई ॥ १०। उस समय में बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के सेवक यरूसलम पर चढ़ गये ओर नगर घेरा गया ॥ ११। ओर बाबुल का राजा नबूखुदनज़र नगर के बिरोध में आया ओर उस के सेवकों ने उसे घेर लिया ॥ १२। तब यहूदाह का राजा यहूयकीन ओर उस की माता ओर उस के सेवक ओर उस के प्रधान ओर उस के नपुंसक बाबुल के राजा के पास बाहर गये ओर बाबुल के राजा ने अपने राज्य के आठवें बरस उसे लिया ॥ १३। ओर परमेश्वर के मन्दिर का सारा भंडार ओर वुह

भंडार जो राजा के घर में थे ले गया और सोने के सारे पात्रों को जो इसराएल के राजा सुलेमान ने परमेश्वर की आज्ञा के समान परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाये थे कटवाया॥ १४। और सारे यरूसलम को और सारे प्रधानों को और सारे महाबीरों को अर्थात् दस सहस्र बंधुओं को और सारे कार्य्यकारियों को और लोहारों को और देश के लोगों के छोटों से छोटों को छोड़ कोई न छूटा॥ १५। वुह यहूयकीन को और उस की माता और राजा की पत्नियों को और उस के नपुंसकोंको और देश के पराक्रमियों को यरूसलम से बंधुआई में बाबुल को ले गया॥ १६। और सारे बीरों को अर्थात् सात सहस्र को और एक सहस्र कार्य्यकारियों को और लोहारों को सब बलवन्त जो संग्राम के योग्य थे बाबुल का राजा उन्हें बंधुआई में बाबुल को ले गया॥ १७। और बाबुल के राजा ने उस के चचा मत्तनियाह को उस की सन्ती राज्य दिया और उस का नाम पलट के सिदकियाह रक्खा॥ १८। सिदकियाह जब राज्य पर बैठा तो एक्कीस बरस का था उस ने ग्यारह बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का नाम हमूतल था जो लिबनः यरमियाह की बेटी थी॥ १९। और उस ने यहूयकीन के कार्य के समान किया और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥ २०। क्योंकि परमेश्वर के कोप के कारण यरूसलम और यहूदाह पर यों बीत गया यहां लों कि उस ने उन्हें अपने आगे से दूर किया और सिदकियाह बाबुल के राजा के बिरोध में फिर गया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

और उस के राज्य के नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में यों हुआ कि बाबुल का राजा नबूखुदनजर और उस की सारी सेना यरूसलम के बिरोध चढ़ आये और उस के सन्मुख डेरा किया और उन्हों ने उस के बिरोध में उस की चारों ओर गढ़ बनाये॥ २। और सिदकियाह राजा के ग्यारहवें बरस लों नगर घेरा हुआ था॥ ३। और मास की नवीं तिथि में नगर में अकाल बढ़ा और देश के लोगों को रोटी न मिलती थी॥ ४। और नगर टूट निकला और सारे योद्धा उस फाटक

के मार्ग से जो भीतों के मध्य राजा की बारी के लग है रात को भाग गये [अब कसदी नगर को घेरे ऊए थे] और चैागान की ओर चले गये॥ ५। पर कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और उसे यरीहो के चैागानों में जा ही लिया और उस का सारा कटक उस्से छिन्न भिन्न था॥ ६। सो वे राजा को पकड़के बाबुल के राजा पास रिबलः में लाये और उन्हों ने उस का न्याय किया॥ ७। और उन्हों ने सिदकयाह के बेटों को उस की आंखों के आगे घात किया और सिदकयाह की आंखे अन्धी किईं और पीतल की बेड़ियों से उसे जकड़ा और उसे बाबुल को ले गया॥ ८। और बाबुल के राजा नबूखुदनजर के राज्य के उन्नीसवें बरस के पांचवें मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक सेवक नबूसरअद्दान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था यरूसलम में आया॥ ९॥ और उस ने परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन और यरूसलम के सारे घर और हर एक बड़े घर को जला दिया॥ १०। और कसदियों की सारी सेना ने जो उस निज सेना के अध्यक्ष के साथ थीं यरूसलम की भीतों को चारों ओर से ढा दिया॥ ११। और रहे ऊए लोगों को जो नगर में बचे थे और उन को जो भाग के बाबुल के राजा पास गये थे मंडली के उबरेऊए के साथ नबूसरअद्दान निज सेना का अध्यक्ष ले गया॥ १२। परंतु निज सेना के अध्यक्ष ने दाख के सुधरवैये और किसानों को अर्थात् देश के कंगालों को छोड़ दिया॥ १३। और परमेश्वर के मन्दिर के पीतल के खंभों को और आधारों को और पीतल के समुद्र को जो परमेश्वर के मन्दिर में था कसदियों ने तोड़ के टुकड़ा टुकड़ा किया और पीतल को बाबुल में ले गये॥ १४। और बटलोहियां और फावड़ियां और कतरनियां और चमचे और पीतल के सारे पात्र जिस्से वे सेवा करते थे ले गये॥ १५। और अंगेठियां और कटोरे और सब कुछ जो सोने चांदी का था निज सेना का अध्यक्ष ले गया॥ १६। दो खंभों को और समुद्र को और आधारों को जिन्हें सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाया था इन सारे पात्रों का पीतल बेतैाल था॥ १७। एक खंभे की ऊंचाई अठारह हाथ और उस पर का झाड़ तांबे का और झाड़ की उंचाई तीन हाथ झाड़

को चारों ओर जाल के कार्य और अनार सब पीतल के और इन्हीं के समान दूसरे खंभे में जालियों का काम था॥ १८। और प्रधान याजक शिरायाह को और दूसरे याजक सफ़नियाह को और तीनों द्वारपालों को निज सेना का अध्यक्ष ले गया॥ १९। और उस ने नगर में से एक नपुंसक को लिया जो योड्डों पर था उन में से पांच जन राजा के सन्मुख रहते थे और नगर में पाये गये थे और सेना के अध्यक्ष लेखक को जो देश के लोगों की गिन्ती करता था और देश के साठ जन को जो नगर में पाये गये लिया॥ २०। और निज सेना का अध्यक्ष नबूसरअद्दान उन्हें पकड़ के बाबुल के राजा पास रिबल: में ले गया॥ २१। और बाबुल के राजा ने हमात देश रिबल: में उन्हें घात किया सो यहूदाह अपने देश से निकाला गया॥ २२। और जो लोग यहूदाह के देश में रह गये थे जिन्हें बाबुल के राजा नबूखुद्नज़र ने छोड़ा था उन पर उस ने आज्ञाकारी साफ़न के बेटे अख़िक़ाम के बेटे जिदलियाह को उन का प्रधान किया॥ २३। और जब सेनाओं के प्रधानों ने और उन के लोगों ने सुना कि बाबुल के राजा ने जिदलयाह को अध्यक्ष किया तो नतनियाह का बेटा इसमअएल और करीह का बेटा यूहानान नतूफाती तनहूमत का बेटा शिरायाह और एक मकाती का बेटा याज़ानिया अपने लोगों समेत मिसफा में जिदलयाह पास आये॥ २४। और जिदलयाह ने उन से और उन के लोगों से किरिया खाके कहा कि कसदियों के सेवक होने से मत डरो देश में बसो और बाबुल के राजा की सेवा करो और उस में तुम्हारी भलाई होगी॥ २५। परंतु सातवें मास में ऐसा हुआ कि इलीसम: के बेटे नतनियाह का बेटा इसमअएल जो राजा के बंश से था आया और उस के साथ दस जन और जिदलयाह को और उन यहूदियों को और कसदियों को जो उस के साथ मिसफा में थे प्राण से मारा॥ २६। तब सब लोग क्या छोटे क्या बड़े और सेनाओं के प्रधान उठे और मिस्र में आ रहे क्योंकि वे कसदियों से डरते थे।

२७। और यहूदाह का राजा यहूयकीन की बंधुआई के सैंतीसवें बरस के बारहवें मास की सताईसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल का राजा अवीलमरूदक जिस बरस राज्य करने लगा उस ने यहूदाह के राजा

यहूयकीन को बंधुआई से उभारा॥ २८। और उस्से अच्छी अच्छी बातें कहीं और उस के सिंहासन को उन सब राजाओं से जो उस के साथ बाबुल में थे बढ़ाया॥ २९। और उस की बंधुआई के बस्त्र को पलट डाला और वुह अपने जीवन भर उस के मंच पर उस के संग भोजन करता रहा॥ ३०। और उस के जीवन भर उस के प्रति दिन की वृत्ति नित राजा की ओर से दिई जाती थी॥

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~